

શ્રી ચશાપજયંત્રી

જૈન ગ્રંથમાળા

દાદાશાહેબ, ભાવનગર.

ફોન : ૦૨૭૮-૨૪૨૫૩૨૨

૩૦૦૪૮૪૬

: સ્મારક ગ્રંથમાળા

ગ્રંથાંક-૨૨

સપ્તમી ચત્વારિંશત્ શતક

[તપા-ચરતર મેદ પ્રત્યુત્તર]



સપાદક

શ્રી વૃદ્ધિસાગર મળી

શ્રી મન્મોહન યશઃસ્મારક ગ્રંથમાલા. ગ્રંથાંક-૨૨

મહોપાધ્યાય શ્રીમજ્જ્યસોમજી ગણિવર રચિત

પ્રશ્નોત્તર ચત્વારિંશત્ શતક

યાને આ. જંબૂસૂરિ સંપાદિત
(તપા ખરતર ભેદ પ્રત્યુત્તર)

સંપાદક :—

પરમસુવિહિત ખરતરગચ્છવિભૂષણ શ્રીમોહનલાલજી મ. ના
પ્રશિષ્યરત્ન સ્વં અનુયોગાચાર્ય શ્રીકેશરમુનિજી ગણિવર શિષ્ય
બુદ્ધિસાગર ગણિ

પ્રકાશક :—

શાસ્ત્રાતીર્થોદ્ધારાદિ અનેકવિધ શાસનપ્રભાવકાચાર્ય શ્રીજિનર્દિ સૂરિજી
મં ના વિનીત શિષ્યરત્ન શ્રીગુલાબમુનિજી મ. ના ઉપદેશ દ્વારા
સંપ્રાપ્ત અનેક સદ્ગૃહસ્થોની દ્રવ્યસહાયથી
મુંબઈ-પામધુની મહાવીર સ્વામી જે ન મંદિર ટ્રસ્ટ ફંડના

મેનેજિંગ ટ્રસ્ટી :

શેઠ ઝવેરભાઈ કેસરીભાઈ ઝવેરી

વીર સંવત્
૨૪૮૨

કિમ્મત
૫-૦-૦

વિક્રમ સંવત્
૨૦૧૨

નિવેદન

—:૦:—

પ્રસ્તુત ગ્રંથના પ્રકાશનનું સંપૂર્ણ સૌભાગ્ય આ. જંબૂસૂરિને ફાળે જાય છે, કારણ કે જ્યારે એમણે તપાખરતર-ભેદનું સંપાદન-પ્રકાશન કર્યું ત્યારે અમારે પણ વિવશ આનું પ્રકાશન કરવું પડે છે.

તપાખરતર-ભેદમાં જેવા શબ્દપ્રહારો અમારા ગચ્છના પૂજ્ય પૂર્વાચાર્યોપર કરવામાં આવ્યા છે તેવા અમારે પણ આમાં યદ્યપિ કરવા પડ્યા છે, છતાં તેમાં અમારું લક્ષ્ય કેવળ તપાખરતર-ભેદના સંપાદક કે તેના સહયોગિયો તરફ જ છે. પણ ખીજા કોઇના તરફ નથી.

ગમે તે ગચ્છના ગમે તે મહાપુરૂષો કે જેમણે વીતરાગદેવની આજ્ઞાને વક્ષાદાર રહીને જે વિવિધ પ્રકારે શાસનસેવા બજાવવા સાથે ધર્મપ્રભાવના કરી છે, તેમના પ્રત્યે અમારે કોઇ જાતનો દ્વેષભાવ નથી, એટલું જ નહીં, બલકે તે તે મહાપુરૂષો પ્રત્યે અમારી પૂર્ણ સદ્ભાવના અને પૂજ્યભુક્તિ છે, માટે આ ગ્રંથ અવલોકી ખીજાઓએ પોતાની ચિત્તવૃત્તિને કોઇ પણ નિમિત્તે કલુષિત ન કરતાં કેવળ સત્યાન્વેષણમાં તત્પરતા દાખવવી.

આના ટિપ્પણો વિગેરે લખવામાં સ્વર્ગીય આચાર્ય શ્રીજિનરત્ન-સૂરિજી મ. અને વિ. પૂ. ઉપાધ્યાય શ્રીલલિતમુનિજી મહારાજે મૂળે ખૂબ ખૂબ દિશાસૂચન કરી બારે ઉપકાર કર્યો છે, તે ક્યારેય ભૂલાય તેમ નથી.

આ પ્રકાશન નિમિત્તે દ્રવ્યસહાયતા અપાવવામાં તેમ પ્રૂફ વાંચવામાં થાણાતીર્થોદ્ધારક આચાર્યવર્ય શ્રીજિનર્દિસૂરિજી મ. ના વિનીત શિષ્ય શ્રીમાન્ ગુલાબમુનિજીએ ભારે પરિશ્રમ કર્યો છે, તે નિમિત્તે એમને શતશઃ ધન્યવાદ છે.

આના પ્રૂફ સંશોધનની ચીવટ રાખવા છતાંય છદ્મસ્થસ્વભાવ તેમ પ્રેસની ગફલતના અંગે કેટલીએ અશુદ્ધિઓ જે દષ્ટિગત થઇ છે. તેમાંથી ખાસ સહત્વની અશુદ્ધિઓનું શુદ્ધિપત્ર આપેલ છે. એ સિવાય કાનામાત્રા આદિની જે અશુદ્ધિઓ નજરે આવે તે સુધારી વાંચવાની વાંચકોને નમ્ર પ્રાર્થના છે. ઇતિશમ્.

સં. ૨૦૧૨ મહા સુદ ૧૩
પાયધુની મ. દેરાસર,
મુંબઈ ડ.

} નિ. સ્વ. શ્રીકેશરમુનિજી ગણિવરશિષ્ય
બુદ્ધિસાગર ગણિ

દ્રવ્યસહાયકોના શુભ નામ

૩૧. ૧૦૦૧) શેઠ રાઘવજી માધવજી અને બીજાઓ. કચ્છભુજ
હ. હર્ષદરાય એન્ડ બ્રધર્સ મુંબઈ.
- ,, ૨૦૧) ,, કેશવલાલ દલપતભાઈ ઝવેરી, ખંભાત
હ. શ્રીસુંદરલાલભાઈ ઝવેરી.
- ,, ૧૫૧) ,, પૂનમચંદજી ગુલાબચંદજી, ફલોદી (મારવાડ)
- ,, ૧૫૧) ,, માનમલજી ઉત્તમચંદજી, હાપુડ (યૂ.પી.)
- ,, ૧૦૧) લાલા કપુરચંદજી શ્રીમાલ, દખણ હૈદરાબાદ
- ,, ૧૦૧) શેઠ અશ્વિનકુમાર અચરતલાલ શાહ, રાધનપુર (ગુ.)
- ,, ૧૦૧) ,, મણિલાલ ચતરભુજ ગાંધી, ભાવનગર (હા.મુલુંડ)
- ,, ૫૧) ,, હીરાભાઈ રાયચંદ ભણસાલી, પાલણપુર (ગુ.)
- ,, ૫૧) ,, વેણીલાલભાઈ હકમચંદ, ખંભાત
હ. સુંદરલાલભાઈ ઝવેરી.
- ,, ૫૧) ,, દામોદર ખાખરા, પોરબંદર
હ. અમૃતબેન, મુલુંડ
- ,, ૫૧) ,, હંસાબેન તે રતનસી નરસી-કચ્છ લાયજી
- ,, ૨૫) ,, હંસરાજજી જસરાજજી મહેતા, સાંડેરાવ (મારવાડ)
- ,, ૨૫) ,, જૂણીયા બ્રધર્સ, હ. ભભુતમલજી જૂણીયા,
ચાંચોડી (મારવાડ)
- ,, ૨૫) ,, રૂપરાજજી માંગીલાલજી મૂતા, નાડોલ (મારવાડ)
- ,, ૧૫) ,, મોરારજી લાલજી, કચ્છ મુંદ્રા.
- ,, ૧૧) ,, સાગરમલજી અચલાજી, ખીમલ (મારવાડ)

प्रस्तावना

वि. सं. २००७ में श्रीविजयप्रेमसूरिके शिष्य श्रीजंबूसूरिने सत्तरहवीं सदीके दो बोलसंग्रहोंका मूल और उसका गुजराती अनुवाद प्रकाशित करवाया, प्रथम बोलसंग्रहमें १४१ व दूसरेमें १६१ बोल हैं, दोनोंमें प्रायः वेही बातें हैं दोनों बोलसंग्रहोंकी भाषा अशिष्ट और द्वेषमूलक हैं।

अपने आचारका-समाचारीका समर्थन करना एक बात है परंतु येनकेन प्रकारेण उसका औचित्य सिद्ध करना व दूसरोंके सिद्धान्तोंका खंडन करना भी किसी हद तक क्षम्य हो सकता है किन्तु दूसरोंके लिये यह लिखना कि 'खरतर जुठा छे, शास्त्ररहित छे, निन्हव मांहि छे, सूत्र उलंघे छे,' यह जंगलीपन नहीं तो और क्या है? दोनों ही बोलसंग्रहके लेखकोंने अपना नाम नहीं दिया है, लेखक लिखता है कि-"अत्र तो एता बोल कांई दीठा, कोई सांभल्या पणि लख्या छे...कोई बोल अधिका ओछा पणि लिख्या होय ते पं. श्री मेरुबिजय गणि आगे वांचियो." इस लेखसे स्पष्ट है कि लेखक कोई अधिकारी विद्वान नहीं था ऐसे अनधिकारी गुमनाम लेखककी पुस्तक प्रकाशित करके तथा अपनी द्वेषपूर्ण टिप्पणियां लिखकर जंबू सूरिने अपनी आगमप्रज्ञाताका खोखलापन ही सिद्ध किया है।

प्रस्तावनामें लेखकने भी अपनी जिम्मेदारी नहीं समझी और असभ्य शब्दोंका प्रयोग करके इस पुस्तकको पूर्णतया द्वेषमय बना दिया है।

जैन इतिहासका एक सामान्य अभ्यासी भी यह भलीभांति जानता है कि अन्य लोगोंको जैन बनाकर जैन धर्मकी जितनी सेवा खरतर गच्छीय आचार्योंनेकी है उतनी किसी भी गच्छके आचार्योंने नहीं की, इसही लिये स्थान २ पर लोगोंने उन महापुरुषोंके चरणों की प्रतिष्ठा कराके 'दादाबाड़ीये' बनवाई हैं, तीर्थाधिराज शत्रुंजय पर 'विमलवसहि'में भी उनकी चरण उनका यशोगान कर रहे हैं।

महान इतिहास वेत्ता श्री जिन विजयजी लिखते हैं × कि "श्वेताम्बर जैन संघ जिस स्वरूपमें आज विद्यमान है, उस स्वरूपके निर्माणमें खरतर गच्छके आचार्य, यति और श्रावक-समूह का बहुत बड़ा हिस्सा है। एक तपागच्छको छोड़कर दूसरा और कोई गच्छ इसके गौरवकी बराबरी नहीं कर सकता। कई बातोंमें तपागच्छ से भी इस गच्छका प्रभाव विशेष गौरवान्वित है। भारतके प्राचीन गौरवको अश्रुण्ण रखनेवाली राजपुतानेकी वीर भूमिका पिछले एक हजार वर्षका इतिहास ओसवाल जातिके शौर्य, औदार्य, बुद्धि-चातुर्य और वाणिज्य-व्यवसाय-कौशल आदि महद् गुणोंसे प्रदीप्त है और उन गुणोंका जो विकास इस जातिमें इस प्रकार हुआ है, वह मुख्यतया खरतरगच्छके प्रभावान्वित मूल पुरुषोंके सदुपदेश तथा शुभाशिर्वादका फल है। इसलिये खरतरगच्छका उज्ज्वल इतिहास यह केवल जैनसंघके इतिहासका ही एक महत्त्वपूर्ण प्रकरण नहीं है, बल्कि समग्र राजपुताने के इतिहासका एक विशिष्ट प्रकरण है।"

ऐसे महाप्रभाविक आचार्योंको झूठा और निन्हव, कहना बुद्धिका दीवालियापन व जंगलीपन नहीं तो और क्या है ?

तपागच्छनायक श्रीविजयदानसूरिजीने धर्मसागर उपाध्यायको इसही लिए गच्छ बाहर किया था कि उसने अन्य गच्छीयोंको निन्हव कहा था, श्रीहीरविजयसूरिजीने जो बारह बोल निकाले थे + उसमें आठवां बोल यह है कि 'शास्त्रों में सात ही निन्हव कहे हैं उनके अतिरिक्त जो अन्य गच्छीयों को निन्हव कहे उसमें समकित नहीं रहता।'

इससे सिद्ध है इन बोलसंग्रहोंके लेखक अनुवादक व प्रस्तावक यह तीनों ही समकित रहित व गुरुद्रोही हैं। लोकमत प्रायः चंचल होता है, लोग प्रवाहमें आ जाते हैं इसलिए इन बोलोंका उत्तर छपना आवश्यक समझा गया, इन बोलोंकी सारी सत्य हकीकत शुद्ध

× खरतर गच्छ पट्टावली संग्रह पृ० ग

+ जैन ऐतिहासिक रास संग्रह भाग ४ पृ० १४

हृदय सरल चित्त श्रीजयसोम उपाध्यायजी ने अपने ग्रन्थकी आदि में ही दे दी है । उत्तर देनेका आशयभी कितना शुद्ध है, पाठक ! उनका भी नमूना देखिए 'हमारी मति विपक्षियोंकी समाचारी दृष्टि करनेकी नहीं है किन्तु उनके लगाये हुए दूषणोंको विच्छेद करने की है' अर्थात् आक्रमण करनेका भाव नहीं है, अपनी रक्षा का प्रयत्न मात्र है, यही वीरता और शान्तिप्रियता है, प्रत्येक उत्तरमें उनकी अगाध विद्वत्ता टपकती है । तपोमूर्ति श्रीबुद्धिमुनिजीने भी लेख के पदचिन्होंका अनुसरण करके अनुवादका कर्तव्य पालन किया है ।

इस समय श्वेताम्बर मूर्ति पूजक संघमें मुख्यतया दो ही गच्छोंके अनुयायी है, इन दोनोंकी मूर्तमें संघकी हानि व सहिष्णुतामें जैन श्वेताम्बर मूर्ति पूजक संघकी उन्नति निहित है, समाजको चाहिये कि ऐसे कदाग्रही गच्छवादी साधुओंके प्रभावमें आकर अपने द्रव्य व शक्तिका दुरुपयोग न करें, ऐसे लोगोंका जमाना लद चुका है तो भी जैन प्रजा इनके प्रपंचमें फँसहीजाती है ।

धर्म वीतरागतामें है, रागद्वेषके त्यागमें है, जो मनुष्य हमें रागद्वेषसे विमुक्त करे वही पूज्य है, जो रागद्वेषकी ओर अग्रसर करे वह आदरणीय नहीं हो सकता, कसोटी पर कस कर जैन प्रजा को आचार्य उपाध्याय साधु व पुस्तकोंकी परिचा करनी चाहिये । गच्छ रागमें धर्म नहीं है गच्छ सहिष्णुतामें ही धर्म हैं ।

आजकलका मानस विविधतामें एकता, भेद भावमें समन्वय खोजता है, जैन कवियोंमें भानन्दधनजी महाराजकी कविता पर लोग इस ही लिए मुग्ध हैं कि वे अनेकतामें एकताकी भाँकी करते हैं । उस महापुरुषने क्या ही उदात्त भाव प्रदर्शित किये हैं ।

षट् दर्शन जिन अंग भणीजे, न्यास षडंग जे साधे रे ।

नमि जिनवरना चरण उपासक, षड दर्शन आराधे रे ॥

अर्थात् भगवान नमिनाथका चरण उपासक एक जैन व्यक्ति केवल जैन दर्शन ही क्या ? सार्वव्य वेदान्त बौद्ध आदि छुओं दर्शनों

का ही अभ्यास करता है, - आराधना करता है, क्योंकि अनेकान्त का पोषक जैन दर्शन तो छाओं ही दर्शनोंको जैनदर्शनका अंग मानता है । विचार मूलक जैनदर्शनकी साधना तब ही संभव है जब वह आत्मवादी सार्वव्य और योग दर्शनको जाने, क्षणिकवादी बौद्ध तथा क्रियावादी मीमांसक दर्शनका अभ्यास करें, एवं भौतिक ब्रह्मस्पति प्रणीत चार्वाक दर्शनसे भी अनभिज्ञ न रहे।

भगवान महावीरके सच्चे उपासक इस सन्त कविने कितनी सुन्दरतासे सब विरोधी दर्शनोंका समन्वय किया है ? वीर प्रभु ने हमें आचारमें अहिंसा और विचारमें अनेकान्त रूप अमृतका पान कराया है, विचारोंमें जब तक अनेकान्त धारा प्रवाहित नहीं होती, अहिंसाकी सच्ची साधना हो ही नहीं सकती, इसही लिए प्रज्ञाचक्षु पंडित सुखलालजीने अनेकान्तको 'बौद्धिक अहिंसा' कहा है, विचारोंमें जब तक प्रत्येक दृष्टिकोणको समझनेकी शक्ति नहीं है, आचारमें अहिंसा कैसे संभव है ? अस्तु !

'तपा खरतर मेद' नामसे पुस्तकका विषय स्पष्ट है । मेद दिखलाना कोई बुरी बात नहीं है, श्रीजुगलकिशोरजी मुस्तारने 'जैनाचार्योंका शासन मेद' नामक पुस्तकमें श्वेताम्बर दिगम्बर आचार्योंका जुदी २ मान्यताओं पर सुन्दर रीतिसे प्रकाश डाला है । ऐसी पुस्तकें जिनशासनका मर्म समझनेमें बहुत उपयोगी होती है, किन्तु ऐसी पुस्तकोंमें जब सम्प्रदायवृत्ति प्रधान होकर पर निन्दा की जाती है तो वह विष बन जाती है ।

'तपा खरतर मेद'के प्रत्येक प्रश्नका शास्त्रीय दृष्टिसे अत्यन्त सुन्दर व प्रामाणिक उत्तर प्रस्तुत पुस्तकमें दिया गया है । प्रस्तावना लेखकके नाते कुछ प्रश्नों पर समन्वय दृष्टिसे तथा कुछ मान्यतायें साधारणदृष्टिसे कितनी असंगत व लोकविरुद्ध है इस पर अति संक्षेपसे प्रकाश डालना अपना कर्तव्य समझता हूँ ।

(१) खरतरगच्छी सामायिक लेकर इरियावही प्रतिक्रमते हैं तपा-

गच्छी इरियावही प्रतिक्रमके सामायिक लेते हैं. यह बात ठीक वैसी ही है जैसे गुजराती लोग महिनेके आदिमें 'सुदि' मानते हैं, अन्य लोग महिनेके आदिमें 'वदि' मानते हैं ।

(२) अन्य भेद तिथी पक्खी व संवत्सरीका है जिसके लिए श्रीमद् राजचंद्रने कहा है कि 'धर्म आराधनाके लिए तिथियां नियत की गई हैं न कि तिथियोंके लिए धर्मकी आराधना' उदाहरणके लिए यह दो ही नमूने बस होंगे अधिक के लिये यह स्थान अनुपयुक्त है । कुछ मान्यतायें बड़ी विचित्र हैं, उनका उदाहरण आगे दिया जाता है ।

(३) जिस घरमें जनम या मरण हुआ हो उस घरका व्यक्ति भी स्नान करके प्रभु पूजा कर सकता है, उसे कोई सूतक आदि नहीं लगता, किन्तु आश्चर्य है कि साधु उस घर गोचरीके लिए ११ दिन नहीं जा सकता, ऐसी मान्यता इस पुस्तककी है । सागरानन्द सूरि आदि तपागच्छीय आचार्य इस मान्यताके विरोधी हैं, इन सबको आगम प्रज्ञजीने खरतरोंकी देखा देखी करने वाला कहा है ।

(४) पुरुषोंकी सभामें साध्वियोंके व्याख्यानका निषेध 'तपा खरतर भेद'में किया गया है, किन्तु इसी तपागच्छ में श्रीविजयवल्लभसूरिजी इस चीजका निषेध नहीं करते, जैन तीर्थंकर ही ऐसे हुए हैं जिन्होंने सर्व प्रथम स्त्रियोंको पुरुषोंके समान सब अधिकार माने हैं । नम्रताके आग्रहमें दिगम्बरोंने उनका मोक्ष जानेका हक छीना और उनके मोक्षके हिमायती इन तपागच्छियों ने व्याख्यान देनेके सामान्य अधिकारसे भी उन्हें वंचित कर दिया ।

(५) पृ० १७० तपा खरतर भेद की टिप्पणी में आगमप्रज्ञजी लिखते हैं कि 'जो श्रीदेवचंद्रजीकी स्नात्र भणते हैं वे अबसे वीर विजय आदि तपागच्छियोंकी भणवें' लेखक अनुवादक और प्रस्तावक इन तीनोंकी प्रत्येक बातसे खरतरगच्छके प्रति अत्यंत द्वेषबुद्धि प्रगट होती है गुणग्राहकताका तनिक भी भाव नहीं है, तब ही श्रीदेवचन्द्रजीकी स्नात्रका निषेध करते हैं । देवचन्द्रजीकी स्नात्र

सबसे पुरानी व सबसे श्रेष्ठ हैं, अन्य सब स्नात्र पूजायें उसकी नकल मात्र हैं, जो फरक हीरे व काचमें होता है वही उनमें है ।

एक बात और ध्यान देने योग्य है— यद्यपि खरतरगच्छीयोंकी भी अनेक शाखायें हैं पर समाचारी सबकी एकसी है, इससे सिद्ध होता है कि इनका कुछ मूल आधार है, किन्तु तपागच्छके आचार्यों की समाचारी भिन्न है इस लिए “अपनी२ डकनी और अपनी२ राग” वाली कहावत यहाँ पूर्णतया चरितार्थ होती है ।

(५) प्रथम बोल संग्रह बोल १३६ में कहा है कि ‘अभयदेव सूरि के गुरु श्रीजिनेश्वरसूरिको जो श्रीदुर्लभराज ने ‘खरतर’ विरुद्ध दिया होता तो अभयदेवसूरि नवांग टीकामें इसका वर्णन अवश्य करते, उन्हें जानना चाहिए कोई भी शिष्ट पुरुष अपने मुखसे अपनी (व अपने गुरु आदिकी भी) प्रशंसा नहीं करता । दूसरे अभयदेवसूरिने अपनी आगमों की टीकाका लेखन संशोधन चैत्यवासी आचार्य श्रीद्रणाचार्यसे कराया था, यदि वे उसमें खरतर विरुद्धका उल्लेख करते तो आगमोंकी टीकाके लेखन व प्रचारमें चैत्यवासी आचार्योंका जो सहयोग प्राप्त हुआ था वह न होता ।

वे अपना उत्तराधिकारी किसी अत्यन्त शक्तिशाली विद्वान शिष्य को बनाना चाहते थे, उनके औपसंपदिक शिष्य जिनवल्लभ गण्ठिमें ये सब गुण थे, किन्तु वे प्रथम चैत्यवासी आचार्यके शिष्य थे, इनसे तो उन्होंने ने सिद्धान्त वांचना व उपसंपदा पाई थी । उस समय चैत्यवासीयोंका बहुत जोर था, सुविहित मुनिओ नाम मात्रके रहे थे अधिकांश मठाधिपती बने हुए थे । इससे कहीं चैत्यवासियोंको अपने प्रचारका मोका न मिल जाए ! श्रीअभयदेव सूरिजीने अपने अत्यन्त विश्वस्त शिष्य प्रसन्नचन्द्रसूरिसे कहा कि जब लोगों पर जिन वल्लभ गणिका प्रभाव प्रगट हो जावे, जन समुदाय इसके महत्वको जान लें, तो इस को गच्छ नायक बनाना अभी तो वर्धमान सूरिजी को ही मेरा उत्तराधिकारी जानना ।

प्रसन्नचन्द्रसूरिने यह भार अपने सुयोग्य शिष्य देवभद्राचार्य पर छोड़ा और स्वर्ग सिधारे । उस समय देवभद्राचार्य इस समुदाय में बहुत प्रभावशाली आचार्य थे, उन्होंने वीर चरित्र पार्श्वनाथ चरित्र आदि कई ग्रन्थ बनाये थे ।

इधर जिनवल्लभ गणिने पिंडविशुद्धि संघपट्टक आदि अनेक ग्रन्थ बनाये । वागड़ देशमें दस हजार नूतन जैन बनाये, उनकी महानता सब पर प्रगट हो गई, समुदाय उनका पूर्ण भक्त हो गया तब देवभद्राचार्यने ११६७ में गच्छका नेतृत्व उनके हाथ सौंप कर दादा गुरु श्रीअभयदेवसूरिके आदेशका पालन किया । जिनवल्लभसूरिके स्वर्गारोहण पश्चात् इन्हीं देवभद्राचार्यने जिनदत्तासूरिको गच्छनायक बनाया ।

११६७ से १२११ तक युगप्रधान जिनदत्तासूरिजीका शासन काल था । 'खरतर' विरुद्धसे चैत्यवासियोंकी पराजयका संकेत मिलता है । दूसरेका दिल दुखाना उचित न जानकर इन महापुरुषों ने स्वयं इसका प्रयोग नहीं किया किन्तु जब भक्तिवश अन्य लोग विरुद्धका प्रयोग करने लगे तो फिर इस विरुद्धका प्रयोग होने लगा ।

श्रीअभयदेवसूरिजीको खरतरगच्छसे पृथक् रखनेका विचार सबसे पहले, तपागच्छी धर्मसागर उपाध्यायके दिमागमें आया । श्रीअभयदेवसूरिने नवअंगसूत्रोंपर टीकाकी थी, इसलिये इनका खरतरगच्छमें होना धर्मसागरको बहुत अखरता था । खोजनेपर उसको इसका कूट उपाय भी मिल गया, क्योंकि खरतरगच्छ पञ्चवली—गणधर सार्द्धशतकवृत्तिमें जैसा कि ऊपर कहा जा चुका है अभयदेवसूरिने वर्धमानसूरिको अपना उत्तराधिकारी निश्चित किया था । इस ग्रंथकी इस बातको तो ये लोग मान लेते हैं किन्तु प्रसन्नचन्द्रसूरिको जो आदेश दिया गया था उसे नहीं मानते † इसे ही द्वेष बुद्धि कहते हैं । क्या एक आचार्य के २ पट्टधर नहीं हो सकते ? क्या जगच्चन्द्रसूरिजीके दो पट्टधर

नहीं हुए ? श्रीअभयदेवसूरिके ज्येष्ठ गुरुबंधु श्रीजिनचन्द्रसूरिने अपनी बनाई संवेगरंगशालाका संशोधन श्रीअभयदेवसूरि शिष्य जिनवल्लभ गणिसे कराया था, इसका स्पष्ट उल्लेख उन्होंने किया है चित्रकूट प्रशस्ति में जिनवल्लभ गणि ने (१) प्रसन्नचंद्रसूरि (२) वर्धमानसूरि (३) हरिभद्रसूरि और (४) देवभद्रसूरिकी स्तुतिकी है ।

इससे स्पष्ट है अपने गुरुबंधु वर्धमानसूरिके प्रति भी उन्हें काफी आदर था और श्रीजिनचंद्रसूरिजीने उन्हें अभयदेवसूरिजीका शिष्य कहा है ।

इन सब बातोंसे यह भी स्पष्ट है जिनवल्लभसूरि इसी परंपरा में थे, उनके सब ग्रन्थोंमें उन्होंने श्रीअभयदेवसूरीको अपना गुरु माना है ।

श्रीअभयदेवसूरिके पाट पर तो २ आचार्य थे इसलिए छिद्रान्वेषियोंको कुछ कहनेका अवसर मिल गया किन्तु जिनवल्लभसूरिके पाट पर तो एकमात्र युगप्रधान जिनदत्तसूरिजी थे, ऐसी अवस्थामें जिनवल्लभ(सूरि)गणीको इस परंपरामें न मानना सिवा इतिहासके अज्ञानके क्या हो सकता है । x

श्रीजगच्चन्द्रसूरिको उदयपुर दरबारने 'तपा' विरुद्ध दीया इसका उल्लेख केवल तपागच्छीय पट्टावलिमें है, फिर भी हम तो इसपे आक्षेप नहीं करते, फिर श्रीजिनेश्वरसूरिको गुर्जरनरेश श्रीदुर्लाराजने 'खरतर' विरुद्ध दीया इससे चिढ़ क्यों है ? वीर वंशवली आदि अनेक स्थलो पर तपागच्छीय लोगोंने भी इस चीजको माना है पर द्वेषबुद्धि मनुष्य को अंदा बना देती है । इसीसे उन्हें सत्यके दर्शन नहीं होते ।

सूर्यसप्तमी सं० २०१२]

[उमरावचन्द जरगड]

x तपा खरतर भेद पृ० २ ।

ગ્રંથકારે, ને ટિપ્પણકારે આપેલ પ્રમાણ ગ્રંથોનું અકારાદિ અનુક્રમ

	પાના		પાના
૧	અનુયોગદ્વાર સૂત્ર ૧૬૬	૧૫	આચારવિધિ સામાન્ય પ્ર. ૪૬,
૨	અનુયોગદ્વાર ટીકા ૧૬૭		૫૧, ૨૪૦, ૧૮, ૨૦, ૧૩૬,
૩	આવશ્યક ભૂળ (તાડપ. પ્ર.) ૬૭		૨૪૫, ૨૮૧, ૩૨૪, ૩૪૪
૪	આવશ્યક બુ. વૃ. ૬, ૧૫, ૩૨, ૫૩, ૭૩, ૧૦૬, ૩૬૦, (૧૧, ૨૬.)	૧૬	ધરિયાવહિ છત્રીસી ૫૪
૫	આવશ્યક લઘુવૃત્તિ ૫૬	૧૭	ઉવવાઘ સૂત્ર ૬
૬	આવશ્યક ટિપ્પનક ૧૫, ૧૦૨	૧૮	ઉવવાઘ ટીકા ૩૪૨
૭	આવશ્યક ચૂર્ણ ૫૩, ૭૩, ૬૩, ૧૧૮, ૧૩૮, ૨૦૪. ૩૫૬, ૬૩, ૮૪, ૧૪૨	૧૯	ઉત્તરાધ્યયન સૂત્ર ૨૨, ૨૦૫, ૨૭૬
૮	આવ. બાલા. (સોમસુંદર સૂરિ) ૬૩	૨૦	ઉત્તરાધ્યયન વૃત્તિ ૨૩
૯	આવ. સિત્તરી. ટી. ૩૪૮	૨૧	” ” બુ. વૃ. ૨૦૫, ૩૩૩, ૩૧૧
૧૦	આચારાંગનિયુક્તિ ૨૬૩	૨૨	ઉત્તરાધ્યયન સર્વાર્થસિ ૨૭૬
૧૧	આચારાંગ ટીકા ૧૫૮, ૨૬૪, ૩૪૪	૨૩	ઓધનિયુક્તિ ટી. ૫૦, ૬૧, ૩૪૬
૧૨	આચારાંગ બાલા. ૨૫૬	૨૪	કલ્પનિયુક્તિ ૨૫૬
૧૩	આચાર દિનકર ૫૬, ૮૩, ૩૨૫	૨૫	કલ્પચૂર્ણ ૨૬૪
૧૪	આચાર પ્રદીપ ૫૬, ૧૩, ૨૪૨	૨૬	કલ્પવૃત્તિ (સં દેહ વિ.) ૨૫૪
		૨૭	કલ્પટિપ્પન ૨૫૬
		૨૮	કલ્પનિરૂકત ૨૫૬
		૨૯	કલ્પાંતર્વાચ્ય (તપાન્યયંદ્ર સૂરિ) ૨૫૭
		૩૦	કલ્પટીકા (પ્રાચીન) ૨૫૭

	પાના		પાના
૩૧	કલ્પસૂત્રાંતર્વાચ્ય ૨૫૭	૪૬	જિનવશ્વલ સ. પ્રતિ. સામા. ૩૩, ૬૩
૩૨	કલ્પ લઘુટીકા (આં. ઉદય સાગર) ૨૫૮	૪૭	જ્યોતિષકરં ૩૬ ટી. ૭૮, ૧૮૮
૩૩	કલ્પ બૂ. ટીકા (આં. માણિ-કર્ષિ લિ.) ૨૫૮	૪૮	દાણાંગ સૂત્ર ટીકા ૫, ૧૫૮
૩૪	કલ્પ બાલાવબોધ (કમલા ગચ્છીય) ૨૫૮	૪૯	દાણા પ્રકરણ ૩૭, ૫૭
૩૫	કલ્પદીપિકા (ત. જયવિજયોપા.) ૨૬૨	૫૦	તત્ત્વાર્થ લાખ્ય વૃત્તિ ૬
૩૬	કલ્પકિરણાવલી ૨૧, ૨૫૫	૫૧	તત્ત્વતરંગિણી વૃત્તિ ૪૦૭
૩૭	કલ્પસુબોધિકા તેનું ટિ. ૨૧, ૨૫૪	૫૨	તિથોગ્ગાલિય પચન્નો ૨૭
૩૮	કથાકોશ (જિનેશ્વર સૂરિ) ૩૪૩	૫૩	વિજય પંહુત સ્તોત્ર ૩૩૯
૩૯	કલ્યાણક સ્તોત્ર ૩૬૫	૫૪	દશવૈકાલિક તિ. ટી. ૧૮૮
૪૦	ગુરુતત્ત્વ પ્રદીપ ૨૧, ૨૫૫	૫૫	દ્વાદશકુલક ટી. ૫૬
૪૧	ગુર્વાવલી-ત્રિદશતરંગિણી ૧૬૬, ૩૮૩, ૩૯૫, ૪૦૭	૫૬	નવપદ પ્ર. બૂ. ૬, ૫૫, ૨૦૩, ૨૦૫
૪૨	ચૈત્યવંદનાદિ. ભા. ૧. ૮૩	૫૭	,, ,, લઘુષ્ટ. ૫૫, ૨૦૩
૪૩	ચૈત્યવંદન ભા. અવચૂર્ણિ (જ્ઞાન સા. સૂ.) ૨૬	૫૮	નવતત્ત્વસંવેદન પ્ર. ટી. ૫૬
૪૪	જંબુદ્વીપ પત્રતિ ટી. ૨૫૩, ૩૫૦	૫૯	નિશીથલાખ્ય ૯૧
૪૫	જંબુદ્વીપ-ચંદ્ર-સૂરપત્રતિ ૭૯	૬૦	નિશીથચૂર્ણિ ૭૯, ૧૭૪, ૧૭૯, ૧૮૮
		૬૧	નિર્વાણ કલિકા ૨૪૦
		૬૨	પર્યુષણા કલ્પસુત્ર ૬, ૧૭૭, ૨૧૦, ૨૬૨, ૩૦૭
		૬૩	પચ્ચક્ષુઆણુ લાખ્ય ૮૫, ૨૮૬

પાના	પાના
૬૪ પટ્ટાવલી (ધર્મસાગર) ૧૮૬	૮૦ મૃહત્સંગ્રહણી (ગિનભદ્રીય) ૨૬૬
૬૫ પંચાશક પ્રકરણ ૨૬૪, ૨૬૬	૮૧ મૃહત્ શાંતિસ્તવ ૩૩૮
૬૬ પંચાશક ટીકા ૩૦, ૫૩, ૩૩૫, ૩૫૪	૮૨ ભગવતીસૂત્ર ૩૧૧, ૩૩૩
૬૭ પંચાશક ચૂલ્લિ ૫૩, ૧૧૩ ૧૧૮, ૨૧૬, ૨૬, ૮૭, ૧૧૧, ૨૪૪, ૨૬૮, ૨૮૯, ૩૦૧	૮૩ ભગવતીસૂત્ર ટીકા ૩૩૧-૩૨, ૩૪૨
૬૮ પંચવસ્તુક ટીકા ૩૨, ૭૩, ૬૯ પિંડનિયુક્તિ ટી. ૯૨	૮૪ મહાનિશીથસૂત્ર ૫૮, ૧૪૮, ૨૪૩
૬૦ પુણ્યસાર કથા પ્રશસ્તિ ૧૮૫	૮૫ મહાવીર પંચક. પૂજન (વલ્લભસૂરિ) ૨૬૫
૭૧ પ્રતિક્રમણ હેતુગર્ભ ૨૧૪, ૨૭૨, ૩૦૨, ૩૧૫	૮૬ યતિદિનચર્યા ૩૧૩, ૩૪૯
૭૨ પ્રતિક્રમણસૂત્ર ટી. (શ્રીચંદ્રસૂરિ) ૧૮	૮૭ યતિદિનચર્યા ટીકા ૩૧૩, ૩૪૯
૭૩ પ્રતિષ્ઠાકલ્પ (ઉમા.) ૨૪૦	૮૮ યોગવિધિ પ્રકરણ (પ્રાચીન) ૧૩
૭૪ પ્રતિષ્ઠાવિધિ (સમુદ્ર) ૨૪૦	૮૯ યોગશાસ્ત્ર મૂળ ૧૦૧
૭૫ પ્રવચન સારોદ્ધાર મૂળ ૧૨૯, ૮૪, ૮૬, ૨૪૪	૯૦ યોગશા. બાલાવ. ૧૦૧
૭૬ પ્રવચન સારોદ્ધાર ટી. ૯૨, ૧૨૯, ૩૨૧, ૩૪૫	૯૧ યોગશાસ્ત્ર ટીકા ૩૪, ૫૬
૭૭ મૃહત્કલ્પચૂલ્લિ ૧૮૭	૯૨ લલિત વિસ્તાર ૩૩૫
૭૮ મૃહત્કલ્પભાષ્ય ૯૩	૯૩ લઘુ શત્રુજય મહાત્મ્ય ૨૪૦
૭૯ મૃહત્કલ્પવિશેષ ભા. ૮૩	૯૪ લઘુ શાંતિસ્તવ ૩૩૮
	૯૫ વસુદેવહિંદી ૨૨૮
	૯૬ વર્ધમાન વિદ્યાકલ્પ ૨૫૮
	૯૭ વંદાશ્રવણ ૪૧૯
	૯૮ વંદનક ભાષ્ય ૨૭૩

પાના	પાના
૯૯ વિશેષાવશ્યક ભા. ૪. ૩૫૪	૧૧૪ સમવાયાંગ સૂત્ર ૭૮
૧૦૦ વિધિપ્રપા ૨૮, ૫૬, ૭૩	૧૧૫ સમવાયાંગ સૂત્ર ટીકા ૨૬૦
૧૦૧ વિચારમૃત સંગ્રહ ૫૪	૧૧૬ સચિતાચિત વસ્તુકાલમાનસ ૩૪૫
૧૦૨ વ્યવહાર ભાષ્ય ટી. ૫૦, ૨૨૮, ૨૫૦	૧૧૭ સમ્યક્ત્વશલ્યોધ્ધાર ૧૮૦
૧૦૩ ષડાવશ્યક બાળાવબોધ (તરણુ પ્રભ સૂ.) ૪૭	૧૧૮ સંબોધ પ્રકરણ ૨૬૬
૧૦૪ ષડાવશ્યક બાળા (તપા-હેમહંસગણિ) ૧૩૯, ૧૪૦, ૨૧૭, ૩ ૩૫	૧૨૧ સંધ્યાચાર ભાષ્ય ૧૪૦
૧૦૫ પશ્ચિ સતક મૂળ ૧૬૦	૧૨૦ સામાચારી (તિલકાચાર્ય) ૫૬
૧૦૬ „ „ મૂ. બા.	૧૨૧ સાધુદિન ચર્યા (ઉકેશગ) ૭૩
૧૦૭ યતુન્નય મહાત્મ્ય ૨૪૦, ૨૬૮	૧૨૨ સાધુદિનકૃત્ય ૨૪૬
૧૦૮ શ્રાવક પ્રશ્નપિ વૃત્તિ ૫, ૫૬	૧૨૩ સીમંધરજિન સ્તવન ૧૬૧
૧૦૯ શ્રાધ્ધપ્રતિ. ૪. અર્થાદી. ૧૦, ૩૫૯	૧૨૪ સુલસાચરિત્ર ૨૫૨
૧૧૦ શ્રાધ્ધપ્રતિ કલ્પ મૂ. ટી. ૪૬	૧૨૫ સુબોધા સામાચારી ૧૮, ૧૧૧, ૨૪૫
૧૧૧ શ્રાધ્ધપ્રતિ ચૂલ્હિ ૫૬, ૨૦૪, ૩૬૦	૧૨૬ સૂચ્યગંગા સૂત્ર ૫
૧૧૨ શ્રાધ્ધવિધિ ૩૧૫, ૩૪૩	૧૨૭ સેન પ્રશ્ન ૧૨. ૧૭, ૩૫, ૫૯, ૬૨, ૧૧૨, ૧૬૩, ૧૭૧, ૧૭૨, ૧૮૦, ૧૮૯, ૧૯૧, ૩૦૮, ૩૦૯, ૩૪૫
૧૧૩ શ્રાધ્ધવિધિ વિનિશ્ચય ૧૩૯, ૨૧૬	૧૨૮ હીર પ્રશ્ન ૬૮, ૨૨૪
	૧૨૯ જ્ઞાતાધર્મ કથાંગ સૂત્ર ૧૮૪
	૧૩૦ જ્ઞાતાધર્મ કથાંગ ટીકા ૩૦૬-૭, ૩૪૨

॥ ॐ अर्हं नमः ॥



नमोत्थुणं अविस्त्र्वाइणो समणस्स भगवन्त्रो महावीरस्स ।

नमोनमः परमगुरु श्रीमदभयदेव-जिनदत्त-कुशल-

मोहन-यशो-ऋद्धिः-केशर पादपद्मेभ्यः ।

श्रीमन्मोहन-यशः स्मारक ग्रन्थालायां

वादिकन्दकुदाल-सकलसूरिशेखर-युगप्रधानाचार्यप्रवर-श्रीमज्जिनचन्द्र-

सूरि साम्राज्यवर्त्ती वाचनाचार्य श्रीमत्प्रमोदमणिक्यगणपुंगव-

विनेयावतंस श्रीमदकब्बरसुलतानसंसल्लब्धजय महोपाध्याय

श्रीमज्जयसोम गणिवर विनिमित्त रामबंधु जंबूसंपादित

‘तपाखरतरभेद’ प्रत्युत्तररूप—

प्रश्नोत्तर चत्वारिंशत् शतक

श्रीवामेयममेय-प्रमेयपरिकलनकलितमतिविभवं ।

करणत्रययुतवन्दन-करणोनानम्य रम्यतमं ॥ १ ॥

श्रीमज्जिनदत्तगुरु-श्रीजिनकुशलसूरिगुरुराजौ ।

विघ्नव्यूहविघात, कुरुतां सत्प्रीतिमाधाय ॥ २ ॥ ❀

* उपा० श्रीसुभसागरजी प्रतिभां २-३ ने ४ थे। श्लो३ नथी.

ગુરવોઽપિ દયાતિલકાઃ, પ્રમોદમાણિક્યવાચનાગુરવઃ ।
 વિદધતુ બોધવિકાશં, વિખ્યાતાઃ ક્ષેમશાસ્ત્રાયાં ॥ ૩ ॥
 શ્રુતદેવતે ! પ્રસાદં, વિધાય મયિ બોધવૃદ્ધિમાધાય ।
 અસ્થલિતયુક્તિવિભવં, વિતનુ તનુકૃત્ય પરપક્ષં ॥ ૪ ॥
 વિદધતિ પ્રશ્નપદાના-મુત્તરવાક્યાનિ સમયમયમત્યા ।
 યુગવરજિનચન્દ્રાણાં, વાક્યાઞ્જયસોમનામાનઃ ॥ ૫ ॥
 અસ્માકમસામ્ભોગિક-સામાચારિષુ દૂષણે ન મતિઃ ।
 તદ્દત્તદૂષણાનાં, વિચ્છેદાય પ્રવૃત્તિરિયં ॥ ૬ ॥
 વાર્તાંબિહિતવાક્યાનાં, સમાધાનાય કેવલં ।
 વાર્તાભિરેવ તત્તેષા-મુત્તરં દાતુમુદ્યમઃ ॥ ૭ ॥

ભાષા:-અપરિમિત પદાર્થોના જ્ઞાનયુક્ત મતિવિભવવાળા શ્રીપાર્શ્વ-
 પ્રભુને મન વચન અને કાયાથી વંદન કરવા પૂર્વક સારી રીતે નમસ્કાર
 કરીને (પ્રશ્નપદોના ઉત્તર લખીએ છીએ) ॥૧॥ શ્રીમન્નિજનદત્તસૂરિ
 અને શ્રીન્નિકુશલસૂરિ આ બન્ને ગુરુદેવો ઉત્તમ પ્રસન્નતા કરીને વિધ્ન-
 સમૂહનો નાશ કરનારા થાઓ ॥૨॥ ક્ષેમધાડ શાખામાં વિખ્યાત એવા
 ગુરૂમહારાજ દયાતિલક (ગણિ) તથા પ્રમોદમાણિક્ય વાચના ગુરુ-
 આ બન્ને ગુરુઓ પણ બોધનો વિકાસ કરનારા થાઓ ॥ ૩ ॥
 હે શ્રુતદેવતે ! (તમે) પ્રસન્નતા પૂર્વક મહારામાં બોધ (સમ્યક્જ્ઞાન) ની વૃદ્ધિ
 કરી પરપક્ષને અલ્પ કરીને અસ્થલિત યુક્તિવિભવને વિસ્તારો ॥૪॥
 (આવી રીતે નમસ્કારાદિ કરીને) યુગપ્રધાન આચાર્ય શ્રીન્નિયન્દ્ર
 સૂરિજીના આદેશથી જયસોમ નામના પાઠક સમયાનુસારિણી મતિએ
 પ્રશ્નપદોના ઉત્તર વાક્યો રચે છે ॥ ૫ ॥ અમારી મતિ વિપક્ષિયોની

સામાચારીને દૂષિત કરવાની નહીં, પણ તેણે આપેલ દૂષણોનો વિચ્છેદ કરવાને આ પ્રવૃત્તિ છે ॥ ૬ ॥ ભાષામાં લખેલ વાક્યોના સમાધાન માટે ભાષાથી તેઓનો ઉત્તર દેવાનો ઉદ્દેશ છે ॥ ૭ ॥

શ્રીઅહમ્મદાવાદમાંહે શ્રીજેસલમેરુ વાસ્તવ્ય વહરા ગોત્રીય સાહ સુજઈ સંવત્ ૧૬૨૬ વર્ષે જ્યેષ્ઠસુદિ ૫ દિને અમ્હારા ગુરુ વાચનાચાર્ય શ્રીપ્રમોદમાણિક્ય ગણિને શ્રીમુખિ અમ્હજ સમીપિ ચર્ચા કરી ૧૬ શ્રાવકાં સાંથ સમક્ષી શ્રીજિનપ્રતિમા મહામહો-ચ્છવપૂર્વક જુહારી । પછઈ વલી ૪૮ બોલ શ્રીસ્વરતરગચ્છ સામાચારીના સર્વ ગચ્છના ગીતાર્થ યતિયાંનઈ મિદ્ધાંતનઈ ન્યાયે પૂછી તથા ચર્ચા કરી ઋષિ મેઘજી પ્રમુખ ૨૮ લુંકા યતિયાં સાથિ શ્રીસ્વરતરગચ્છની સામાચારી સર્વ શાસ્ત્રસંમત જાણી. આદરતાં થકાં લુંકા ઋષિ મેઘજીનઈ પોથાનઈ માંમલઈ [મ્હગઢૈ] લુંકાં શ્રાવકાં ૩૫ સાથિ પોથાના મ્હગઢા કરિવાનઈ નિમિત્તિ તપેઈ મ્હગઢાના બોલ કબૂલ કીયઈ થકઈ શ્રીસ્વરતર સંઘનાયક મત્યવાદી શ્રીમારંગધર સુહંતઈ નિષેધતાં લુંકા ઋષિ મેઘજી ૨૮ ઠાણઈ તપામાંહિ ગયા । પછઈ ૧૬ શ્રાવકાં સાથિ શ્રીસ્વરતરગચ્છની સામાચારી વહરઈ સૂજઈ આદરી । હિવે તેહ વહરા સાં સૂજાના પુત્ર સાં રાજસી, તિણઈ પુણિ ચરચા કરી શ્રીજિનપ્રતિમા જુહારીનઈ શ્રીસ્વરતરગચ્છની સામાચારી ભાવઈ આદરી સ્વરતર થયાં, પછી મુલતાંન માંહિ કિણેકઈ મેલિ સ્વરતર શ્રાવકાં સાથિ મન અણમિલતાં તપા શ્રાવકાંનઈ આદરઈ અણચર્ચ્યાં સુણસઈ (?) તપાની સામાચારી મુલતાંનમાંહિ તે મહ્યઈ

આદરી । પછી એતલા બોલ લિખી કરી શ્રીલાહોરિ તપાનાં શ્રાવકાં-
નહ સ્વરતરાં ભણી પૂછિવાનહ કાજિ મૂંઝ્યા, લાહૌરમધ્યે તે બોલ
કિણહી ચર્ચ્યા નહીં, પૂછ્યા નહીં, ઇમજિ લિખ્યા રહ્યા । પછી
તે બોલ આપણહ હાથિ આવ્યા, પરં તે બોલ લિખિતાં દ્વેષનહ
વાહ્યહ ઘણા અસંબદ્ધ બોલ લિખ્યા છહ, તે બોલ ન લિખાયહ ।
હિવહ શ્રીજિનચન્દ્રસૂરિ યુગપ્રધાનજીનહ આદેશહ આચાર્ય
શ્રીજિનસિંહસૂરિજીનહ કથનિ આપણહ કાજિ ઉતરસેતી તે
પ્રશ્નરા બોલ લિખીયહ છીંહ ।

ભાષા—શ્રીજેસલ્લમેર નિવાસી શા. સૂળ વહોરાએ શ્રીઅમદા-
વાદમાં સંવત્ ૧૬૨૯ વર્ષે જેહ સુદ ૫ ના રોજ અમારા ગુરૂ
વાચનાચાર્ય શ્રીપ્રમોદમાણિક્ય ગણિના સમક્ષ અમારી પાસે ચર્ચા
કરીને ૧૬ શ્રાવકો સાથે સમજીને મહામહોત્સવે શ્રીજિનપ્રતિમા
જીહારી (વાંદી), ત્યાર બાદ ૪૮ બોલ ખરતરસામાચારીના સર્વ
ગચ્છના ગીતાર્થ યતિયોને સિદ્ધાંત ન્યાયે પૂછી અને ચર્ચા કરી ઋષિ
મેઘજી આદિ લૂંકાના ૨૮ યતિઓ સાથે ખરતર ગચ્છની સામાચારી
સર્વ શાસ્ત્રસંમત જાણી આદરતાં થકાં લૂંકા ઋષિ મેઘજીને પોથાને
માંમલે (પુસ્તકોની બાબત) લૂંકાના ૩૫ શ્રાવકો સાથે ઝગડા
કરવા નિમિત્તે તપાઓએ ઝગડાના બોલ (મેઘજીની ઇચ્છાનુકૂળ મદદ
કરવા આદિ બાબત) કબૂલ કરતાં શ્રીખરતર સંઘનાયક સત્યવાદી
શ્રીસારંગધર મુહુંતાએ નિષેધવાથી ઋષિ મેઘજી ૨૮ હાણા તપામાં ગયા,
પછી ૧૬ શ્રાવકો સાથે ખરતર ગચ્છની સામાચારી સૂળ વહોરાએ
આદરી । હવે તે સૂળ વહોરાના પુત્ર રાજસી, તેણે પણ ચર્ચા કરી

શ્રીજિનપ્રતિમા જીહારીને ખરતર ગચ્છની સામાચારી ભાવે આદરી. ખરતર થયા, ત્યારપછી મુલતાંનમાંહી કોઈ કારણવશ ખરતર શ્રાવકો સાથે મનનો મેલાપ ન રહેવાથી અને તપાશ્રાવકો તરફના આદરથી કોઈ પણ વાતની ચર્ચા કર્યા વગર તેણે મુલતાનમાં તપાની સામાચારી આદરી. પછી એટલાં (જે આગળ લખાય છે, તે) બોલ લખીને લાહોરનાં તપા શ્રાવકો ઉપર ખરતરોને પૂછવા માટે મોકલ્યા, પણ તે બોલ લાહોરના તપા શ્રાવકોએ કોઈએ ચર્ચ્યા નહીં તેમ કોઈનેય પૂછ્યા પણ નહીં, એમના એમ લખ્યા પણ રહ્યા, પછી તે બોલ આપણા હાથે આવ્યા, પરંતુ તે બોલ લખતાં દ્વેષના કારણે એવા અસંબદ્ધ રીતે લખ્યા છે કે જે લખાય નહીં છતાં હમણાં યુગપ્રધાન આચાર્ય શ્રીજિનચંદ્ર સૂરિજીના આદેશથી અને આચાર્ય શ્રીજિનસિંહ સૂરિજીના કહેવાથી મહારા પોતાના નિમિત્તે ઉત્તર સહિત તે પ્રશ્નોના બોલ લખીએ છીએ ।

(તપા. ખરતર ભેદ ગ્રંથ ૧-૨, બોલ પહેલો)

૧ પ્રશ્ન-તપા દિન દિન પ્રતિ પોસહ વ્રત કરઈ, સ્વરતર સદા પોસહ ન કરઈ, પર્વતિથિઈંજિ કરઈ, તે સ્યું ? ।

ભાષા-તપા પ્રતિદિન-દરરોજ પોસહ કરે, ખરતર સદા પોસહ ન કરે, પર્વતિથિએજ કરે, તે શું ?

તત્રાર્થે—શ્રીસિદ્ધાંતમાંહિ પોસહોવવાસ નામઐ ઇગ્યારમા વ્રત શ્રાવકના કહ્યાછઈ તે પોષધોપવાસ આઠમિ ચવદિસિ પૂનમિ અમા-વસિ ઈંપ પર્વતિથિયે કરિવા કહ્યા, યદુક્તં શ્રીસૂયગઢાંગે (આગમો૦ સ. પ્ર. પત્ર ૪૦૮) - “સેનં ચાઉદસઽટ્ટમુદ્દિટ્ટપુણ્ણમાસિણીસુ

पडिपुणं पोसहं सग्गं अणुपालेमाणे विहरति” तथा ‘उववाइ’ उपांगमांहि श्रावक वर्णनाधिकारि तथा श्रीठाणांगमांहि च्यार विसामानइ अधिकारी विधिवादइ तथा श्रीआवश्यक बृहद्वृत्तिमांहि तथा श्रावकप्रज्ञप्तिवृत्तिमांहि “ पौषधोपवासातिथिसंविभागौ तु प्रतिनियतदिवसानुष्ठेयौ, न प्रतिदिवसाचरणीयौ ” एहवे अक्षरे करी नियत नियत दिवसे पोसहव्रत लेवा श्रीहरिभद्रसूरिइं प्ररूप्या, अनइं प्रतिदिनइ पोसहव्रत लेवा निषेध्या छइ. कल्याणक तिथिना पोसह श्रीदशाश्रुत(स्कंध-पर्यूषणाकल्प) सिद्धांतमांहि “पाराभोयं पोसहोववासं पटुविंसु” इति पाठेन, तथा “अट्टा-हियपज्जुसणे” इति गाथाये पजुसणना पोसह श्रीतत्त्वार्थवृत्तिइ तथा ‘नवपद(प्रकरण) वृत्ति. मांहि कह्या, तथा! ‘सूयगडांगवृत्ति’ मांहि श्रीशीलांकाचार्यइं “ पूर्णमासिषु ” इति वृत्तिइ १८ (मा) अध्ययने विधिवादइं कल्याणकना पोसह प्ररूप्या छइ ।

उपधानना पोसह जे श्रावक श्राविका पासि निरंतर-पर्व पाखइं करावियइ छइ ते गीतार्थे आपांपणा सामाचारी ग्रंथांमांहि उपधान वहतां पोसह लिख्याछे, तेह भणी आचरणाना पोसह कहियइ छइ, तद्यथा—“ येन प्रागूनमस्कारादिसूत्राण्यधीतानि तेनापि यथायोगं निर्विलम्बमेवोपधानानि यथाशक्तितपसा पौषधग्रहणादिविधिनाऽवश्यं वहनीयानि” इति तपा (श्रीरत्न-शेखरसूरिकृत) श्रीआचारप्रदीपग्रंथे (१९ पत्रे) । एतावता आगमोक्त पोसह (व्रत) पर्वदिवसेजि करिवा, अपर्वदिवसे न करिवा । तथा ऋषिमतियां तपांग गुरु श्रीदेवेन्द्रसूरिइं “ अथ पौषधलक्षणं

તૃતીયં શિક્ષાવ્રતમુચ્યતે-તત્ર ‘પૌષ’ પુષ્ટિં પ્રક્રમાદ્ધર્મસ્ય
 ‘ધત્તે’ કરોતીતિ પૌષધઃ અષ્ટમીચતુર્દશીપૂર્ણિમાશ્રમાવાસ્યાદિ
 પર્વદિ વસાનુષ્ઠેયો વ્રતવિશેષઃ ” इति धर्मरत्नप्रकरणवृत्तौ ।
 તથા શ્રાવકદિનકૃત્યસૂત્રમાંહિ “ છુદ્ધં તિહીણ મજ્જમ્મિ, કા
 તિહી ? અજ્જ વાસરે । કિં વા કલ્લાણગં ? અજ્જ,
 લોગનાહાણ સંતિઅં ॥૧॥ “ एहवइं पाठइं करि २ आठमी २
 चवइमि १ पुनिमं १ अमवासि, एवं छ तिथि तथा कल्याणकतिथि
 सर्व एतली तिथि पोसह लेवानी कही-वृत्तिमांहिवखाणी छइ,
 तउ आगमोक्त एह पोसह लेवानी तिथि थकी अधिकी पोसह
 लेवानी तिथि मानइं छइ ते आगमे तथा आचरणा थकी विरुद्ध
 जाणिवुं, राग-द्वेषना वाह्या कहइ प्रमाण न थाइं, एतलइ
 आगमोक्त पोसह व्रत पर्वतिथेजि सदा लेवउ, परं पर्वतिथि पखइ
 न लेवउ, एवं शास्त्रनी हुंडीना पाठ विशेषार्थीयइं पोसहछत्रीसीनी
 वृत्ति थकी जोइवा ॥ १ ॥

ભાષા:-સિદ્ધાંતમાં ‘ પોસહોવવાસ ’ નામનો જે અચાર્યો વ્રત
 શ્રાવકનો કહ્યો છે તે પૌષઘોષવાસ, આઠમ, ચૌદસ, પૂનમ અને
 અમાસ, આ પર્વતિથિએ કરવાનું કહ્યું છે, જેમ કે સૂયગાંગ સૂત્ર
 (આગમેદય સમિતિએ પ્રકાશિતના પાના ૪૦૮) માં લખ્યું છે કે
 “ તે લેપ નામનો શ્રાવક ચૌદસ આઠમ તથા ઉદિષ્ટા તિથિ એટલે
 અમાસ અને તીર્થ કરદેવોની કલ્યાણકતિથિઓ, તથા પૂનમ. આ બધી

પર્વતિથિઓએ સંપૂર્ણ એટલે આહારનો ત્યાગ દેશથી કે x સર્વથી

x જે વ્રતરૂપ પૌષધમાં ચાર પ્રકારના આહાર પૈકી એક દેશરૂપ માત્ર પાણીનો આહાર વાપરવાનું છૂટું હોય તેવો ત્રેવિહાર ઉપવાસ જે કરાય તે દેશથી આહાર પૌષધ અને જેમાં ચારે પ્રકારના આહારનો ત્યાગ રૂપ ચોવિહાર ઉપવાસ હોય તે સર્વથી આહાર પૌષધ કહેવાય.

આથી વિપક્ષિઓ જે આજે એકાસણાથીય વ્રતરૂપ પૌષધ કરવાનું માને છે, ને તે પ્રમાણે ચોસઠ પહોરીયા પોસા એકાસણા આદિથી કરાવે છે તે શાસ્ત્રાનુસાર નહીં, પણ સ્વમતિકલ્પનાએ ઘડી કાઢેલ ધરના આચાર છે. અને પંડિત વીરવિજયજીએ પૌષધ વ્રતની પૂજામાં જે “ એકાસણુ કહું રે શ્રીસિદ્ધાંતમાં ” એમ લખ્યું છે, તે શાસ્ત્રકારોના અભિપ્રાયની અગ્નણતાએ તેમ સ્વગચ્છાચારના આગ્રહવશ લખ્યું છે, શાસ્ત્રકારોએ જે દેશથી આહાર પૌષધમાં એકાસણાને લીધું છે. તે વ્રતરૂપ ચારે પ્રકારના સંપૂર્ણ પૌષધમાં નહીં, પણ માત્ર આહારના ત્યાગરૂપ દેશપૌષધમાં લીધું છે, અને તેમાંય એકાસણાને લીધું છે. એટલું જ નહીં કિંતુ બિઆસણાને તેમ એકાદિ વિગયત્યાગને પણ શાસ્ત્રકારોએ દેશથી આહારપૌષધ કહ્યું છે, જુઓ આ ગ્રંથકારે પ્રશ્નોત્તર ખીજામાં આપેલ આવશ્યક બૃહદ્વૃત્તિ તથા તેના ટિપ્પણનો પાઠ.

ન્યારે શાસ્ત્રકારોએ બિઆસણો અને વિગયત્યાગ માત્રને પણ દેશથી આહાર પૌષધ કહેલ છે ત્યારે, જોકે રામપંથી આગમપ્રજ્ઞજી તથા તેમના પૂર્વ લેખકો તો ‘તપા ખરતર ભેદ’ ૫૦ ૨ તથા ૯૬, અને ૧૨૫. બોલ ત્રીજા તથા ૧૧૪ માં, દિવસમાં ગમે તેટલી વાર જમીને પણ રાત્રે પૌષધ કરવાની રૂપરૂઢિ માયતી કરી રહ્યા છે.

૮ અને સ્નાનાદિ વડે શરીરસત્કાર ૨, અબ્રહ્મચર્ય ૩ તથા સાંસારિક વ્યાપાર આ ત્રણનો સર્વથી, ત્યાગ કરવા રૂપ ચારે પ્રકારનો પૌષ્ઠ સાારી રીતે પાલન કરતો વિચરે છે. ” તેમજ ઉવવાખ ઉપાંગ સૂત્રમાં

છતાં તેમનો ટટ્ટુ ચાલે તેમ લાગતો નથી, કારણ કે એકાંત મના-
ગ્રહની રાગાંધતા શિવાય આ વાત (ગમે તેટલી વાર જમીને રાત્રે
પૌષ્ઠ કરવાની) કાઢનેય ગળે ઉતરે તેમ નથી, પણ આજના
સાગરપંથી આદિ તપાઓ, જે એકાસણાએ વ્રતરૂપ પૌષ્ઠ કરવાના
પૂરા હિમયતીઓ છે, તેઓ બિયાસણાએ અને વિગયત્યાગ માત્ર કરી
વ્રતરૂપ પૌષ્ઠ કરવાનું કેમ નથી માનતા ? તેમ પૂજનની ઢાળમાં
દેશથી આહારપૌષ્ઠ એકાસણા સુધીજ કેમ કહ્યું ? બિયાસણા
અને વિગયત્યાગ કરીને પણ દેશથી આહારપૌષ્ઠ થઈ શકે એમ
કહેવામાં શું વાંધો આવતો હતો ?

વસ્તુતઃ શાસ્ત્રકારોના અભિપ્રાયે અગ્યારમા વ્રતરૂપ પૌષ્ઠમાં
નહીં, પણ માત્ર આહારના ત્યાગરૂપ દેશથી આહારપૌષ્ઠમાં
એકાસણું બિયાસણું, ને વિગય ત્યાગ સુધાં લેવાનાં છે જો એમ ન
ન હોય તો શાસ્ત્રકારોએ તો ચારે પ્રકારના પૌષ્ઠોમાં દેશથી, ને
સર્વથી એવા બે બેદો રાખ્યા છે. છતાં પૌષ્ઠ દંડકમાં માત્ર
આહારપૌષ્ઠ માટેજ ‘દેસઞ્ચો સઞ્ચો વા’ અને બાકીના ત્રણે
પૌષ્ઠ માટે એકજ ‘સઞ્ચો’ શબ્દ કેમ બોલાય છે ? એનું
કારણ એ કે—અમુક અંશે શરીર સત્કાર, અબ્રહ્મચર્ય અને ઘર
વ્યાપારના ત્યાગને શાસ્ત્રકારોના અભિપ્રાયે દેશથી તે તે પૌષ્ઠ કહી

શ્રાવકના ગુણવર્ણન પ્રસંગે તેમ કાણાંગ સૂત્રમાં ૪ વિસામાના અધિકારે તથા હારિભદ્રીય આવશ્યકવૃત્તિમાં, તેમ શ્રાવકપ્રતિવૃત્તિમાં વિધિવાદથી કહ્યું છે કે-“ પૌષ્ઠોપવાસ અને અતિથિસંવિભાગ, આ બન્ને પ્રતો પ્રતિનિયત (અષ્ટમ્યાદિ પર્વ) દિવસોએ અનુષ્ઠેય કરવાનાં છે, પરંતુ પ્રતિદિવસ-નિત્ય આચરવા યોગ્ય નથી.”

* આવા અનેક શાસ્ત્ર પાઠોથી શ્રીહરિભદ્રસૂરિ જેવા મહાપ્રરૂપોએ

શકાવા છતાં જેમ પ્રતરૂપ પૌષ્ઠમાં આહાર શિવાય આકીના ત્રણે પૌષ્ઠો સર્વથીજ કરાય છે તેમ આહાર પૌષ્ઠ દેશથી ત્રેવિહાર ઉપવાસે અને સર્વથી ચોવિહાર ઉપવાસેજ થવું યુક્તિયુક્ત કહેવાય, અન્યથા એનું નામ ‘પૌષ્ઠોપવાસ’ એ કોઇ પણ રીતે સાર્થક ન બની શકે, એટલે અચારમા પ્રતરૂપ પૌષ્ઠમાં જન્મવું કે ગમે તેટલી વાર જમીને રાત્રે પૌષ્ઠ કરવું એ શાસ્ત્રોક્ત નહીં. પણ તપાઓની ગચ્છ રૂઢી-શાસ્ત્ર નિરપેક્ષ સ્વમતિ કલ્પનાએ ઘડી કાઢેલ ધરનો આચાર છે. રાગ દ્વેષના પ્રબલોદયે તેમ મતાગ્રહના તીવ્ર અભિનિવેશથી તપા ધર્મકીર્તિ તથા રત્નશેખરસૂરિ આદિ, અને મોટે ભાગે અનુમાનતઃ સાગરનાજ પૂર્વભવીય ધર્મસાગરે શાસ્ત્રોક્ત સુવિહિત સામાચારીઓમાં ઘણો ફેરફાર કરી નાખ્યો છે.

* રત્નશેખર સૂરિએ વંદિત સૂત્રની ટીકા અર્થદીપિકામાં પર્વશિવાયની દરેક તિથિએ પૌષ્ઠની સિદ્ધિ કરી બતાવવાને શ્રાવકની પાંચમી પડિમાને લગતો આવશ્યક વૃત્તાદિના નામે “દિવૈવ બ્રહ્મચારી, ન તુ રાત્રૌ” આવો તદ્દન નવોજ કલ્પિત પાઠ ઘડી કાઢતાં ભવભિરૂતાને તો સર્વથા આભરાઇએજ મૂકી દીધી છે, આ કલ્પિત પાઠને અર્થ થાય છે કે-“ પાંચમી પડિમાધારી શ્રાવકે દિવસેજ

અષ્ટમ્યાદિ પર્વાદિવસે પોસહ લેવા પ્રરૂપ્યા છે, ને તે શિવાય પ્રતિદિન-
દરરોજ લેવા નિષેધ્યા છે. કલ્યાણક તિથિઓના પૌષધ પર્યુષણા-
કલ્પસૂત્ર મૂળના “ પારામોયં પોમહોવવાસં પટ્ઠવિસુ ” આ પાઠથી
અને “ અટ્ટાહિયપજ્જુમણે ” આ ગાથાએ તત્ત્વાર્થવૃત્તિ તથા નવપદ-

અહ્મચારી રહેવું પણ રાત્રે ન રહેવું. ’ આવા કલ્પિત પાઠ તૈયાર
કરી બતાવવામાં રત્નશેખરસૂરિના આશય આવશ્યકવૃત્ત્યાદિ પ્રમાણિક
સર્વામાન્ય ગ્રંથોમાં પૌષધના અંગે હરિભદ્રસૂરિ જેવા સમર્થ મહા-
પુરૂષોએ લખેલ “ પૌષધોપવાસાતિથિસંવિભાગૌ તુ પ્રતિનિયતદિવસા-
નુષ્ટેયૌ, ન પ્રતિદિવસા(નુષ્ટેયૌ)ચરણીયૌ ” આ પાઠની સમાનતા
બતાવવાનો છે. પરંતુ સુર પાંચકોએ ધ્યાનમાં રાખવું કે આવશ્યકવૃત્તિ
કે બીજા કોઈ પણ પ્રમાણિક સર્વામાન્ય ગ્રંથમાં “ દિવૈવ બ્રહ્મચારી,
ન તુ રાત્રૌ ” એવા પાઠનો નામ નિશાણ સરખુંએ નથી, ત્યાં
(આવશ્યકવૃત્તિ પાના ૬૪૭ માં) તો પાઠ છે- “ દિયા બંધચારી,
રાત્રીપરિમાણકહે અપોસહિષ । પેસહિષ રત્તિમ્મિ ચ, નિયમેણ
બંધચારી ચ ॥ ૧ ॥ ’

અર્થાત્-‘ પાંચમી પડિમાને વહન કરનાર આવકે પૌષધ સહિત
હોય ત્યારે દિવસે અહ્મચારી, ને રાત્રે સ્ત્રીયોનો કે તેના ભોગોનો પ્રમાણ
કરી રહેવું, અને પૌષધ સહિત હોય ત્યારે રાત્રે પણ અહ્મચારી
રહેવું ’ આથી પાઠકોની જાણમાં આવી ગયું હશે કે-ઉપર લખેલ
આવશ્યકવૃત્તિના વાસ્તવિક પાઠની અંદર રત્નશેખરસૂરિના કહ્યા
મુજબ પાંચમી પડિમાધારી આવકે રાત્રિએ અહ્મચર્ય ન પાળવું
એવા અર્થનું સૂચન સરખુંએ નથી. અને આ ઉપરોક્ત
વાસ્તવિક પાઠનો સમર્થન ‘ સેનપ્રશ્ન ’ કે જે જૈનેતરોને અને જેમ
ગીતા તેમ આગમપ્રજ્ઞા આદિ બધાએ તપાસીને મન પરમપૂજ્ય,

પ્રકરણવૃત્તિમાં (પચુષણુ + તિથિના પોસક) કહ્યા છે, તેમ સૂચગાંગ્રીકા ૧૮ માં અધ્યયનમાં “પૂર્ણમાસીષુ” આ પાઠથી શ્રીશીલાંકાચાર્યે (પૂર્ણિમાના, આ રીતે) કલ્યાણુક (આદિ તિથિઓના) પોસક વિધિવાદથી કહ્યા છે.

ને પ્રમાણભૂત ગ્રંથ છે, તેમાં આચાર્ય વિજયસેન સૂરિણ પણ કરે છે. જુઓ—“શ્રાદ્ધપ્રતિક્રમણસૂત્રસ્ય વૃત્તૌત્ત્યાદૌ તથા (?) આવશ્યક વૃત્ત્યાદૌ ચ (?) શ્રાદ્ધપશ્ચમપ્રતિમાધિકારે ‘દિવૈવ બ્રહ્મચારી, ન તુ રાત્રા’વિત્યુક્તતયા લિખિતમસ્તિ, પરમાવશ્યકવૃત્ત્યાદૌ તાદ્વિલોક્યમાનં નોપલભ્યતે તત્કથમિતિ પ્રશ્નોડ્ગોત્તરં—“દિયા બમ્મચારી રાઈપરિમાણકહે” इत्यक्षराणि आवश्यकवृत्तौ सन्तीति ॥ ६२ ॥” (સેન પ્રશ્ન પત્ર ૯) આ પાઠમાં આચાર્ય વિજયસેનસૂરિ આવશ્યકવૃત્તિમાં “દિયા બમ્મચારી રાઈપરિમાણકહે” એજ પાઠ હોવાનું સ્પષ્ટ કથે છે, આટલા વિચાર વિનિમયથી ક્ષિતાર્થ એ થયું કે રત્નશેખર સૂરિએ એન કેન (ગમે તેમ કરીને) અપર્વ પૌષધની સ્વમાન્યતાને અંધશ્રદ્ધાળુ ભદ્ર જનતા સમક્ષ શાસ્ત્રસંમત સિદ્ધ કરવાનેજ “દિવૈવ બ્રહ્મચારી, ન તુ રાત્રૌ” આ કલ્પિત નવો પાઠ આવશ્યકવૃત્તિના નામે ધડી કાઢેલ છે.

+ તપા ખં ભેદ પૃં ૫૦ તથા ૧૪૪ માં લખેલ ખોલ નં. ૫૭ અને ૫૯ નો ઉત્તર આ ગ્રંથકારે પ્રશ્નોત્તર ૫૬ માં યદ્યપિ સ્વતંત્ર આપેલ છે. છતાં પ્રસંગવશ આ શાસ્ત્રપ્રમાણોથી તે આશયનેજ સ્પષ્ટ કરતાં એ બતાવવામાં આવે છે કે ખરતરગચ્છાળાઓ કલ્યાણુક અને પળુસણુની તિથિએ પણ પૌષધ તપાઓની માફક મતિ કલ્પનાએ નહીં, પણ શાસ્ત્રસંમતજ કરે છે.

ઉપધાનના પોસહ શ્રાવક શ્રાવિકાઓ પાસે નિત્ય પર્વવગર જે કરાવીએ છીએ. તે (બધાએ ગચ્છેના) ગીતાર્થાએ પોતપોતાના સામાચારી ગ્રંથોમાં x ઉપધાનના પોસહ લખ્યા છે, એટલે (તે) આચરણના પોસહ કહેવાય, તપા રત્નશેખરસૂરિકૃત આચારપ્રદીપમાં કહ્યું છે કે—“જેણે નવકારમંત્ર આદિ સૂત્રો ભણી લીધા હોય. તેણે પણ સંયોગ મલ્યે કોઈ જાતનો વિલંબ કર્યા (ટાઇમ ગમાવ્યા) વગર યથાશક્તિ તપસ્યા પૂર્વક પૌષધાદિ વિધિએ ઉપધાન અવશ્ય વહન કરવા” એતાવતા આગમમાં વર્ણવેલ (વ્રતરૂપ) પોસહ પર્વદિવસેજ કરવા, પણ અપર્વદિવસે ન કરવા, ઋષિમતિ તપાના ગુરુ દેવેન્દ્રસૂરિ ધર્મરત્ન પ્રકરણની ટીકામાં લખે છે કે—“હવે પૌષધરૂપ ત્રીભું શિક્ષાવ્રત કહેવાય છે, તેમાં જે ધર્મની પુષ્ટિ કરે તે પૌષધ, એટલે અષ્ટમી. ચતુર્દશી. પૂનમ. અમાસ આદિ પર્વદિવસે કરવા યોગ્ય વ્રતવિશેષ (ને પૌષધ કહે છે). એવીજ રીતે શ્રાવકદિનકૃત્યમાં

x યદ્યપિ શ્રીમહાનિશીથાદૌ ઉપધાને સદા પૌષધગ્રહણં નોક્તં તથાપિ સર્વગચ્છીયગીતાર્થાચરણયા ઉપધાને પૌષધગ્રહણં પ્રમાણીકૃતમસ્તીતિ દૃશ્યતે ।” (યોગવિધિ પ્રકરણ પૂર્વાચાર્યકૃત)

“પૌષધગ્રહણક્રિયા તુ યદ્યપિ મહાનિશીથે સાક્ષાન્નોક્તા તથાપિ યથા સાધોર્યોગેષ્વતિશાયિક્રિયાવત્ત્વં સર્વપ્રતીતં તથા શ્રાદ્ધાનામપ્યુપધાનેષુ વિલોક્યતે ।” (આચાર પ્રદીપ પત્ર ૧૯)

મતલબ અન્ને પાકોનો આ છે કે—ઉપધાનમાં સદા પૌષધ લેવું યદ્યપિ મહાનિશીથમાં સાક્ષાત્ કહ્યું નથી, છતાં સાધુઓને યોગોદ્ધનમાં જેમ વિશિષ્ટ ક્રિયા હોય છે. તેમ શ્રાવકોને પણ ઉપધાનમાં હોવી જોઈએ, એટલે બધા ગચ્છના ગીતાર્થોની આચરણાએ ઉપધાનમાં પૌષધ લેવાનું પ્રમાણ કયું છે.

લખેલ “ છઠ્ઠું તિહીણ ” આ ગાથાથી એ આત્મ એ ચૌદસ, ને એકેક પૂનમ. અમાસ, આ છ પર્વતિથિઓ તથા તીર્થ કર લગવંતોની કલ્યાણક તિથિઓ. આ બધી તિથિઓ પોસહ વ્રત લેવાની કહી છે. વૃત્તિમાં પણ એજ વ્યાખ્યા કરી છે. એથી પોસહ વ્રત લેવાની એ આગમોક્ત તિથિઓ કરતાં અધિક તિથિઓ પોસહ લેવાની (જે) માને છે તે આગમ તથા આચરણથી વિરુદ્ધ જાણવો, રાગદ્વેષને વશ થયેલા કહે તે પ્રમાણ ન થાય, એટલે આગમોક્ત રીતિએ પોસહ વ્રત પર્વતિથિએજ લેવો. પર્વશિવાય ન લેવો, + આ બાબતમાં શાસ્ત્રના નામ પાઠ (વિગેરે) વિશેષ જાણવાની ઇચ્છાવાળાએ ‘પૌષધપદ્મત્રિશિકા’ સટીક જેઠ લેવી (તેમ અનુવાદકના ગુરુદેવ પંન્યાસપ્રવર શ્રીકિશર મુનિજી ગણિયર લિખિત હિંદી ‘ પ્રશ્નોત્તર વિચાર ’ જેવા લલામણ છે.)

(તપા ખરતર ભેદ ગ્રંથ ૧-૨, બોલ ૨ જે)

૨ પ્રશ્ન-તથા સ્વરતર આંબિલ નીવી એકાસણઈ પોસહ ન કરઈ, તે સ્યું ?

ભાષા-ખરતર આંબિલ નીવી. એકાસણાએ પોસહ ન કરે, તે શું ?

તત્રાર્થે સ્વરતરને પુણિ આચરણાના પોસહ જે છઈ તેહમાંહિ આંબિલ નીવી એકાસણા કરઈજિ છઈ, જઈ પોસહમાંહિ જિમિવડ ન હવઈ તઓ કિમ જીમાઈ ?, તથા શાસ્ત્રે દેશત

+ અરે અપર્વદિવસે પૌષધના હિમાયતિઓ ! ખરતર ગચ્છવાળાઓ તો અપર્વના પૌષધનો નિષેધ કરે છે. છતાં, છે તે ઉપર બતાવ્યા પ્રમાણે શાસ્ત્રાનુસાર, પરંતુ તમે પોતાના પગતળે બળતીને કાંઈ જુઓ છે ? લૌકિક પંચાંગ કે જેના આધારે આજે આખો જૈન સમાજ તિથિ આદિનો વ્યવહાર માની રહ્યો છે. તેમાં તે જ્યોતિષના

આહાર પોસહમાંહિ બ્યાસણા પુણિ કહ્યા છડ, તચથા—“ આહાર પોસહો ડુવિહો—દેસે ય સન્ને ય, દેસે અમુગા વિગતી આયં બિલં વા એક્કસિં વા દો વા ” ઇત્યાદિ શ્રીઆવશ્યક બૃહદ્વૃત્તૌ (પત્ર૮૩૬)।‘એકમક્તં દ્વિમક્તં વા કરોતી’તિ ટિપ્પનકે × (પત્ર૧૧૬) પરં તપાનઈ બ્યાસણાના પોસહની આચરણા નથી, એવં સ્વરતરાંનઈ

મણિતાનુસાર થતી તિથિની વૃદ્ધિ પ્રસંગે સૂર્યોદયથી સંપૂર્ણ અહો—રાત્રિના ભોગવટાવાલી સાઠ ઘડીની આઠમ કે ચૌદસ પર્વતિથિને રામપંચિમ્યો ફલ્ગુ કહીને તેમ સાગરપંચિમ્યો પોતાની કપોલ કલ્પનાએ સાતમ કે તેરસ બનાવીને સંપૂર્ણ અહોરાત્રિ ૬૦ ઘડીની આઠમ કે ચૌદસ પર્વતિથિએ પણ પૌષઘાદિ ધર્મકાર્યોનો નિષેધ છડેયોક કરી રહ્યા છો. એટલુંજ નહીં પણ તે તે પહેલી પર્વ—તિથિએને ફલ્ગુ કે અપર્વતિથિ માનીને કહીને અર્થાપત્તિએ ગૃહસ્થોને વનસ્પતિના છેદન ભેદનનો તેમ અશ્રદ્ધ સેવનનો ઉપદેશ દઈ રહ્યા છો. આ તે કંઈ જાતનો તમારો ધર્મોપદેશ ?

જો કહો કે પર્વતિથિઓ મહિનાની આરજ શાસ્ત્રકારોએ કહી છે તે તેર કેમ કરાય ? તો તમને પ્રશ્ન કરવાનું કે અપર્વ તિથિઓ ૧૮ ને બદલે ૧૯ કરવાનું ફરમાન ક્યા જૈન શાસ્ત્રકારોએ તમને આપ્યું છે ? લીલવણીના છેદન ભેદન અને અશ્રદ્ધસેવન માટે અપર્વ તિથિની વૃદ્ધિ થાય તો ભલે થાય. પરંતુ તે સાવધવ્યાપારના ત્યાગરૂપ ધર્મ—સાધન માટે એકે તિથિની વૃદ્ધિ ન થવા દેવી આવું કથન ક્યા જૈન સિદ્ધાંતનું છે ? મહાશયજી ! પહેલાં પોતાનું ધર તપાસી. પછી બીજાને કંઈ પણ કહેવું ઉચિત કહેવાય.

× આ બે પાઠોના વિવેચન માટે પ્રશ્નો. ૧ ની પહેલી કુટનોટ જુઓ.

પણ જિયડ તીયડ પોસહમાંહિ જિમતા નથી. પોસહવિશેષડં જિમિવડ સહીયડ છડ, શ્રીજિનવલ્લભ સૂરિજીયડ પુણિ ત્રિહું પોસહનડ (?) સાધારણડ પોસહમાંહિ જિમિવાની વિધિ કહી છડ, પુણિ આગમોક્ત પોસહનડ નામ નથી કહ્યડ ।

ભાષા:-ખરતરોને પણ (ઉપધાન આદિ) આચરણાના જે પોસહ છે, તેમાં આંખિલ. નીવી. એકાસણા કરેજ છે, યદિ પોસહમાં જમવાનું ન હોય તો કેમ જમાય ? અને શાસ્ત્રોમાં દેશત આહાર પોસહમાં ખિયાસણું પણ કહ્યું છે, તે આવી રીતે-“ આહાર પોસહ જે પ્રકારનો-દેશથી અને સર્વથી, દેશથી અમુક વિગય અથવા આંખિલનો આહાર એકવાર યા બે વાર (ખાય) ” ઇત્યાદિ આવશ્યક બૃહદ્વૃત્તિમાં, તથા “ એક ભક્ત (એકાસણું) અથવા બે ભક્ત (ખિયાસણું) કરે ” આ રીતે આવશ્યક ટિપ્પનમાં કહેલ છતાં તપાને ખિયાસણાના પોસહની આચરણા (જેમ) નથી, તેમ ખરતરોને જે તે પોસહમાં નથી જમતા પણ પોસહવિશેષ (ઉપધાનાદિ) માં જમવું માનીએ છીએ. શ્રીજિનવલ્લભસૂરિજીએ + પણ બન્ને પોસહને (?) સાધારણ પોસહમાં જમવાની વિધિ કહી છે પણ આગમોક્ત (અગ્નિ-રમા વ્રતરૂપ) પોસહનું નામ નથી કહ્યું.

+ તપા ખ. ભેદ પૃ. ૨ માં જંબ્યાચાર્ય લખે છે કે-“ શ્રીજિન-વલ્લભસૂરિ (કૃત) ‘પૌષધ વિધિ પ્રકરણમાં ઉપધાન વિના પોસહમાં જમવું કહ્યું (છે), ઉપધાનનું કાંઈ કહ્યું નથી” આના ઉત્તરમાં જણાવાનું કે જે ઉપધાન વિના પોસહમાં જમવાનું કહ્યું છે તો તેનો તે પાઠ કેમ ન મૂક્યો ? અને ‘ઉપધાનનું કાંઈ કહ્યું નથી, છતાં દરેક પોસહમાં

(તપા ખરતર ભેદ ગ્રંથ ૧-૨, બોલ ૩ જે)

૩ પ્રશ્ન-તથા સ્વરતર ગચ્છ શ્રાવક શ્રાવિકા વિ પહર પછીઃ
જિમીને પર્વદિનઃ રાતિનઃ પોસહ ન કરઃ, તે સ્યુ ? ।

જમવાનું માની લેવામાં સ્વમતાગ્રહ શિવાય બિજું કોઈ કારણ ન હોઈ શકે, વળી એજ પૃ. ૨ માં જિનવક્ત્રલ સૂરિજના નામ પર ટિપ્પણ લખનાં જમવાચાર્ય ' સેનપ્રશ્ન ' નાં તે પ્રશ્નોત્તરને ' ઘણો સૂચક ' માની કહીને ઉધ્ધૃત કરે છે કે જેની અંદર " પિંગ્વિશુદ્ધિના કર્તા જિનવક્ત્રલ ગણિનું ખરતર ગચ્છીયપણું સંભવતું નથી " એવો ફરમાન આચાર્ય વિજયસેનસૂરિ જાહેર કરે છે. એ બાબતમાં તેમણે લગાવેલ એ હેતુઓ પૈકી પહેલો હેતુ આ છે કે- " તેમણે (જિનવક્ત્રલ ગણિએ) કરેલ ' પૌષધવિધિ પ્રકરણ ' માં ' ઉપવાસ કરવાની શક્તિના અભાવે શ્રાવકોને [પૌષધમાં] જમવા-એકાસણું વિગેરે કરવાનું કહેલ છે " આ ઉપરના અવતરણમાં ભાષાંતરકારનું જે લખવું કે " ઉપવાસ કરવાની શક્તિના અભાવે " એ કેવળ પોતાની મતિ કલ્પના છે. ' સેનપ્રશ્ન ' મૂળમાં એવી વાતજ નથી. ત્યાં તો પાઠ છે " તત્ક્રંતે પૌષધવિધિપ્રકરણે શ્રાદ્ધાનાં પૌષધમધ્યે જેમનાત્તરદર્શનાત્ " અર્થાત્ " તેમણે કરેલ ' પૌષધવિધિ પ્રકરણ ' માં શ્રાવકોને પૌષધમાં જમવાનું કહેલ છે. "

આથી સમજવાનું કે એક તો ' સેન પ્રશ્ન ' મૂળમાં " ઉપવાસ કરવાની શક્તિના અભાવે " એમ આચાર્ય વિજયસેનસૂરિ લખતા નથી. છતાં ભાષાંતરકારે પોતાની કપોલકલ્પિત માન્યતાને પુષ્ટ કરવા ફાવે

ભાષા—ખરતર ગચ્છમાં શ્રાવક શ્રાવિકાઓ બે પહર પછી જમીને પર્વદિને રાતનું પોસહ ન કરે, તે શું ?

તેમ મતઘડંત ભાષાંતર કરેલ છે અને આગમપ્રજ્ઞ જન્મ્યાચાર્ય પણ સ્વમાન્યતાની સિદ્ધિ બતાવવા ‘સેનપ્રજ્ઞ’ મૂળને જોયા—તપાસ્યા વગર આંખો મીચીને માત્ર ભાષાંતરનો અવતરણ લખીને ખુશ થઇ ગયા. પરંતુ આચાર્ય વિજયસેનસૂરિનું કથન “ઉપવાસ કરવાની શક્તિના અભાવે પૌષ્ઠમાં જમવાનું ‘પૌષ્ઠવિધિ પ્રકરણ’ માં કહ્યું છે” એવું જરાએ નથી. તેમનું કથન તો એટલુંજ કે “પૌષ્ઠ વિધિ પ્રકરણમાં શ્રાવકોને જમવાનું લખ્યું છે.” હવે ‘પૌષ્ઠવિધિ પ્રકરણ’ માં એ બાબત કેમ છે ? તે તપાસીએ, ત્યાં તો “જઈ પારણિક્તો” એવું ચોક્કસ પાઠ છે, એનો મતલબ છે કે “જો પારણવાલો હોય તો પચ્ચક્રખાણ પારે ને ભોજન કરે” આવેજ પાઠ પૌષ્ઠમાં જમવા બાબતનો તમારા તપાસોને માન્ય આચારવિધિ નામનું સામાચારી પ્રકરણ કે જે સુરતના ઝવેરી મંછુભાઈ જીવણચંદ તરફથી સાગરાનંદે પ્રકાશિત કરાવેલ છે, તેના પાના ૧૨ માં તેમ સુબોધા સામાચારી, કે જે દે. લાલ ભાઈ પુ. ફંડ તરફથી પ્રકાશિત થયેલ છે, તેના પણ પત્ર ૩૬ માં છે જુઓ “જઈ પારણિક્તો તો પચ્ચક્રખાણે પુણ્યે સ્વમાસમણપુવ્વં પુત્તિં પેહિયં” છત્યાદિ, આ બધા પાઠોમાં પારણવાલાને પૌષ્ઠમાં ભોજન કરવાનું વિધાન છે. હવે વિચારવાનું એ છે કે પારણવાલો કોણ કહેવાય ? શું રોજનારોજ ગમે તેટલી વાર જમતો હોય, ને પૌષ્ઠના દિવસે જે આંખિલ કે એકાસણું કરે તેને પારણવાલો કહેવાય ? ના ના, આગમપ્રજ્ઞ મહારાજ ! તેને પારણવાલો કદાપિ ન કહી

તત્રાર્થે-જિમ્યાં પક્ષી પોસહવ્રત રાત્રિનત્ર ન યાદૃ, જે ભણી

શકાય, કિંતુ પારણાવાલો તેજ કહી શકાય કે જેને ઉપવાસના બીજા દિવસે આબિલ કે એકાસણું વિગેરે હોય, એટલે નિશ્ચિત થયું કે પૌષધવિધિ પ્રકરણ અને આચારવિધિ નામક સામાચારી પ્રકરણ વિગેરેનું કથન ઉપધાનના પૌષધમાં જમવા વિષયક છે ઉપધાન શિવાયના પૌષધ માટે નથી. અને એની સાથે એ પણ 'નિશ્ચિત થઈ ગયું' કે આચાર્ય વિજય સેનસૂરિ જેમ પિંડવિશુદ્ધિના કર્તાને ખરતર ગચ્છના નથી માનતા તેમ પૌષધ વિધિપ્રકરણના કર્તાને પણ ખરતર ગચ્છના નથીજ માનતા, કારણ કે તેઓ પણ આ બંને ગ્રંથોના કર્તા તો એકજ માને છે. જ્યારે આમ છે તો પછી જેમ 'પૌષધવિધિ પ્રકરણ'માં કહ્યા મુજબ પૌષધમાં જમવાની સામાચારીને તેઓ માન્ય કરે છે. તેમ પૌષધવિધિ પ્રકરણમાંજ કહેલ બીજી બીજી સામાચારીઓને તેઓ કેમ માન્ય નથી કરતા ? જેમકે-પંચાશકયૂર્ણિ આદિ પ્રાચીન સર્વ-માન્ય શાસ્ત્રોના અભિપ્રાયानુસાર જે શ્રાવકે વહેલી સવારે પૌષધ લીધો હોય તેણે ઇત્થર સામાયિકનો ઉત્કૃષ્ટ કાલ "ઉત્કૃષ્ટતસ્તુ અહોરાત્ર-કાલમાન:" આ શ્રીચંદ્રસૂરિકૃત પ્રતિક્રમણ સૂત્ર ટીકાના કથનાનુસાર ૮ પહોરનો પૂર્ણ થતો હોવાને કારણે બીજી સવારના તે સમયે પૌષધમાંજ ફરી સામાયિક લેવાની પૌષધવિધિ પ્રકરણમાં કહેલ સામાચારીને માનવાનો તેઓ ઇન્કાર કેમ કરે છે ? આ કુટનોટ વિસ્તીર્ણ થઈ જવાના ભયથી સેનપ્રશ્નનો તે મૂળ પાઠ અને એનો અર્થ અમોએ નથી લખ્યું, જાણવાની ઇચ્છાવળાએ સેનપ્રશ્ન મૂળ પાના ૮૧ માં ૩૧૯ મો પ્રશ્નોત્તર જોવો.

ઇચ્છારમા વ્રતના નામ શાસ્ત્રે ‘પોસહોવવાસ’ એવા છૂદ, તે

એ શિવાય પૌષ્ઠવિધિ પ્રકરણમાં પચ્ચક્ષ્ણાણુ પાર્યા પછી ચૈત્યવંદન તથા સજ્જાય કરવાનું કહેલ છે અને એજ વિધિ પચ્ચક્ષ્ણાણુ પાર્યા માટે તપાઓને માન્ય આચારવિધિ નામના સામાચારી પ્રકરણ પત્ર ૧૨ માં તથા સુબોધા સામાચારી પત્ર ૩૬ માં કહેલ છે, બુઝો.

“તો પચ્ચક્ષ્ણાણે પુણ્યે સ્વમાસમણં દાઝં મુહપોત્તિં પઢિલેહિત્તા તત્ત્રો સ્વમાસમણં દાઝણ મણ્ણ-પારાવહ પોરિસી પુરિમહ્હો વા ચઝહાહારહ (?) કત્ત્રો આસિ, નિવ્વિણં અંબિલેણં ઇમાસણેણં પાણાહારેણ વા, પારાવેમિ જા કાઝ વેલા તીણ, તત્ત્રો સક્કથયં મણિય વીસં સોલસ વા સિલોગે સજ્જાયં કાઝં અહાસંમવં અતિહિસંવિમાગં દાઝં મુહં હત્થપાણ (ય) પઢિલેહિત્તા નમોક્કારં પઢિય અરત્તદુટ્ઠો જેમેહ.” (સુબોધા સામાચારી પત્ર ૩૬-૩૭)

આ પાઠમાં પચ્ચક્ષ્ણાણુ પારીને પછીથી શક્રસ્તવ (ચૈત્યવંદન) તથા સજ્જાય કરવા ચોક્ષુ કથન છે, છતાં આજના તપાઓ જે ચૈત્યવંદન-સજ્જાય કરીને પછીથી પચ્ચક્ષ્ણાણુ પારે છે. તે શાસ્ત્ર-વિરુદ્ધ કપોલકલ્પિત તેમના ધરનો આચાર છે.

હવે બીજો હેતુ પિંડવિશુદ્ધિના કર્તા જિનવલ્લભ ગણિ ખરતર ગચ્છીય હોવાના અસંભવ માટે આં વિજય સેનસૂરિ એ લગાવે છે કે-“ (તેમણેજ રચેલ) કલ્યાણક સ્તોત્રમાં વીર ભગવાનના પાંચ કલ્યાણકો જણાવ્યાં છે ” આથી આં વિજયસેન સૂરિજીનો આશય એ જણાયો કે ખરતર ગચ્છી માન્યતાનુસાર વીર પ્રભુના છ કલ્યાણકો

અપવાસ ૮ પહર સીમ ત્રિવિધ તથા ચતુર્વિધ આહાર છાંડ્યાં થાઈ.

કલ્યાણકસ્તોત્રમાં નથી બતાવ્યા. એટલે જિનવલ્લભ ગણિનું ખરતર ગચ્છીયપણું નથી સંભવતું. પરંતુ આં વિજયસેન સૂરિએ તેમ તેઓના પાશ્ચાત્ય વંશજો જન્મ્યાચાર્ય તથા એમના સચોટ ઉત્તરદાતા અગ્રલેખકોએ દીર્ઘ વિચાર કરવું હતું કે-ભલે શાશ્વતા કલ્યાણકોની અપેક્ષાએ કલ્યાણક સ્તોત્રમાં ભગવાન મહાવીર પ્રભુનાં પાંચ કલ્યાણકો કહ્યા, એથી શું થયું ? ધારોકે જૈન સાધુઓ પંચમહાવ્રતધારી કહેવાય છે, એથી પદ્મી સૂત્ર તથા દશવૈકાલિક સૂત્રમાં વર્ણવેલ છટ્ટા રાત્રિભોજન વિરમણ વ્રતને શું અવ્રત કહી શકાય ? નજ કહી શકાય, જેમ એને અવ્રત કહી ન શકાય, તેમ ભગવાન મહાવીર દેવનું ઇંદ્રની આજ્ઞાથી હરિણગમેષી દેવદ્વારા ગર્ભ હરણ થઇ. દેવાનંદાની કૂખથી રાણી ત્રિશલાની કૂખમાં જે આવવું થયું, જેના અંગે પોતાની કૂખમાં તીર્થંકર દેવના આગમનને સૂચવનાર કલ્યાણકારી ચૌદ મહાસ્વપ્નાઓ ખરાખરના ત્રિશલાએ જોયા. અને ધનાદિની વર્ષા પણ તેના ધરમાં દેવતાઓએ કરી, તે ગર્ભાપહારને જેમ રામ-સાગરપંથીઓના પૂર્વજોએ “યત્તેષ્વેકમકલ્યાણં” (ગુરૂત્ત્વપ્રદીપ), “અકલ્યાણકમૂતસ્ય ગર્ભાપહારસ્ય” (કલ્પ-કિરણાવલી), “નીચૈર્ગોત્રવિપાકરૂપસ્ય અતિનિન્દ્યસ્ય આશ્ચર્યરૂપસ્ય ગર્ભાપહારસ્ય કલ્યાણકત્વં કથનમનુચિતં” (કલ્પસુખોધિકા), “ગર્ભાપહારોઽશુભઃ” (દે. લા. જૈ. પુ. ૩. મુદ્રિત કલ્પ સુ. ૮૧૫), ઇત્યાદિ પ્રમાણોથી અકલ્યાણ-અકલ્યાણકમૂત-અત્યંત નિંદનીય આશ્ચર્ય-રૂપ અને અશુભ કહીને અકલ્યાણક કહ્યું છે તેમ કલ્યાણકસ્તોત્રમાં તે

તત્ જિમ્યાં પછી રાતિનત્ પોસહ કિમ થાઈ ? જિમ્યા પછી ઉપવાસ ન પચ્ચક્ષ્વાહ । વલી જઈ જિમ્યાં પછી પુણિ પોસહ થાત તત્ શતકાદિક શ્રાવકે પુણિ જિમીને સાંખિ કાંઈ પોસહ ન કર્યત ? તિણઈ જાણીયઈ-જિમ્યાં પછે પોસહ ન થાઈ, વલી સંસ્થ શ્રાવકને અધિકારિ સંસ્થ શ્રાવકઈ શતકાદિ શ્રાવક પ્રતે કહ્યત । જે આંપણ જિમીનઈ પોસહ કરિસું. પરં ઇમ કાંઈ ન કહ્યત ? જે આંપણ જિમીનઈ ચતુર્વિધ પૌષધ વ્રત પછઈ કરીસું, તિણઈ જાણીયઈ છઈ જે જિમ્યાં પછી પોસહોવવાસ વ્રત ન થાઈ । વલી “પોસહં દુહઓ પક્ષ્વં, ઇગરાઈ ન હાવવ ।” ઇહવા

ગર્ભાપહારને અશુભ નિંદનીય કે અકલ્યાણક તો કહ્યું નથીને. જે તેમ અકલ્યાણક નથી કહ્યું તો ખરતર ગચ્છની છ કલ્યાણક માન્યતામાં કશુંએ બાધ આવતો નથી, ખરતર ગચ્છવાળાઓનો વિરોધ સંખ્યા સામે નહીં, પણ અકલ્યાણકવાદ સામે છે, તમારા પૂર્વજો ઉપરોક્ત અવતરણ પાડોથી ગર્ભાપહારને જે અકલ્યાણક-અશુભ. નિંદનીય કહે છે. તે તમારા તપ્પા-ગપ્પાઓના આચાર છે.

આટલા વિવેચનથી પાઠકો સારી રીતે સમજી ગયા હશે કે- આ. વિજય સેનસૂરિએ જે બે હેતુઓ (એક તો પૌષધ વિધિ પ્રકરણમાં કહેલ પૌષધમાં જન્મવાનો, ને બીજો કલ્યાણક સ્તોત્રમાં કહેલ ભગવાન મહાવીરદેવનાં પાંચ કલ્યાણકો) ને આગળ કરી પિંડવિશુદ્ધિના કર્તા જિનવલ્લભ ગણિને ખરતર ગચ્છીયપણું અસંભવ બતાવવા જે પ્રયાસ સેવ્યો છે. તે કેવળ પાણી વલોવવા જેવું જ ક્યું છે.

શ્રીઉત્તરાધ્યયન પાઠના એ અર્થ છૂટ-જઈ કોઈ કાર્ય વ્યવસ્થાનહ મેલિ પર્વદિવસહ દીહનહ પોસહ ન કરાણહ હવહ તહ પર્વ દિનની રાતિઈ પોસહ કરહ, પરં તે પર્વની રાત્રિ પોસહ પસહ ન ગમાહહ, એતલહ જિમીનહ પોસહ ન કહ્યહ, વિમાસિજ્યો । શ્રી ઉત્તરાધ્યયનવૃત્તૌ યથા-“ પૌષણં-પૌષઃ, સ ચ ધર્મસ્ય, તં ધત્તે इति पौषधः, આહારપૌષધાદિસ્તં ‘દુહઓ પક્ષ્વં’તિ દ્વયોરપિ સિતેતરરૂપયોઃ પક્ષયોશ્ચતુર્દશીપૌર્ણિમાઽમા(વા)સ્યાદિ-તિથિષુ ‘એગરાય’તિ અપેર્ગમ્યમાનત્વાદ્ એક રાત્રમપિ ઉપલક્ષણત્વાચ્ચૈકદિનમપિ ‘ન હાપયતિ’ ન હાનિં પ્રાપયતિ, રાત્રિગ્રહણં દિવા વ્યાકુલતયા કર્તુમશક્નુવન્ રાત્રાવપિ પૌષધં કુર્યાત્ इत्यादि ध्येयम् ।” વલી હમ સદ્દહતાં સવારિ જિમીનહ કોઈએક પોસહ કરહ, ત્રીજહ પહરિ વલી પોસહમાંહિ જિમહ, એહવા પોસહ કરતાં કિમ લોકમાંહિ શોભા પામીયહ ? જેહમણી ઋષિમતી જિમ્યાં પછી પોસહ કરિવહ માગહ અનહ પોસહ કરીનહ પુણિ જિમવહ માનહ છહ તે મણી વિચારિવહ ૩ ।

ભાષા—જમ્યા પછી રાત્રિનો પોસહવ્રત ન થાય, કારણ કે અગ્યારમાં વ્રતનું નામ શાસ્ત્રમાં ‘પૌષધોપવાસ’ છે. તે ઉપવાસ આઠ પહોર સુધી ત્રિવિધ કે ચતુર્વિધ આહારના ત્યાગે થાય, x તો જમ્યા પછી રાત્રિનો પોસહ કેમ થાય ? કારણકે જમ્યાં પછી ઉપવાસ ન પચખાય, વળી જમ્યા પછી પણ પોસહ થતો હોત તો શતકાદિ શ્રાવકાએ

x જુઓ પ્રશ્નોત્તર ૧ ની ફુટનોટ પહેલી.

પણ જમીને સાંજે કેમ પોસહ ન કર્યો ? તેથી જાણાય છે કે જમ્યા પછી પોસહ ન થાય. વળી શંખશ્રાવકના અધિકારે શંખશ્રાવકે શતકાદિકને કહ્યું કે—આંપણે જમીને પોસહ કરશું પરંતુ એમ કેમ ન કહ્યું ? કે આંપણે જમીને ચતુર્વિધ પૌષ્ઠ વ્રત કરશું, [એટલેજ તો ખરતર ગચ્છ વિભૂષણ નવાંગ ટીકાકાર શ્રીઅભયદેવ સૂરિજી મં સ્પષ્ટ કથે છે કે શંખ શ્રાવકે જમીને અવ્યાપાર પૌષ્ઠ યા તો પર્વ દિવસે ઇષ્ટજનો (સાધર્મિકા) ને ભોજન દેવા રૂપ પૌષ્ઠ કરવાનું કહેલ છે. નહીં કે વ્રતરૂપ ચતુર્વિધ પૌષ્ઠ કરવાનું] તેથી જાણીયે છીયે કે જમ્યા પછી અગ્યારમો પૌષ્ઠોપવાસવ્રત ન થાય, વળી ‘ પોસહં દુહત્ત્રો પક્ત્વં, ઇગરાઈં ન હાવણ । ’ આ ઉત્તરાધ્યયન સૂત્રના પાઠનો અર્થ એ છે કે—જો કોઈ કાર્યની વ્યગ્રતાને અંગે પર્વદિવસે દિવસનો પૌષ્ઠ ન થઈ શકે તો તે રાત્રિયે પૌષ્ઠ કરે. પરંતુ તે પર્વદિવસની રાત્રિ એક પણ પૌષ્ઠ કર્યા વગર ગમાવેજ નહીં. એટલે જમીને પોસહ કરવાનું નથી કહ્યું, વિચારજો. ઉત્તરાધ્યયનની ટીકામાં પણ લખ્યું છે કે—જો ધર્મની પુષ્ટિ કરે તે આહાર પૌષ્ઠાદિ ચાર પ્રકારનું પૌષ્ઠ શુકલ અને કૃષ્ણ પક્ષની ચતુર્દશી પૂર્ણિમા આદિ (પર્વ) તિથિઓમાંથી એક પણ તિથિની રાત્રિ કે દિન પૌષ્ઠ કર્યા વગર જવા ન દે, મતલબ કે—કોઈ કાર્યની વ્યગ્રતાના અંગે દિવસનો પૌષ્ઠ ન કરી શકે તો રાત્રિએ પણ પૌષ્ઠ કરવો. વળી જમ્યા પછી પૌષ્ઠ કરવાનું માનતાં સવારે જમીને કોઈ પૌષ્ઠ કરે ત્યાર બાદ ત્રીજા પહોરે ફરી પોસહમાં જમે. એવા પોસહ કરતાં લોકમાં શોભા શું પામે ?

કારણ ? ઋષિમતી (તપા) જમ્યા પછી પોસહ કરવું માને અને પોસહ કરીને પણ જમવું માને છે માટે વિચારવું. + ૩ ।

+ અમારે ખરતર ગચ્છમાં જમ્યા પછી જે શ્રાવકને સાવધનો ત્યાગ કરી આરંભ સમારંભથી નિવૃત્તિ મેળવવા હોય તે પોસહ ન ઉચરે પણ પોસહની માફક ‘અહરણં મંતે !’ છત્યાદિ દેસાવગાસી દંડક ઉચરવાપૂર્વક આખી રાત્રિનો દેસાવગાસી સામાયિક સહિત એકી સાથે ઉચરી લે છે, જેનો કાળમાન સામાયિકથી અધિક અને પોસહથી કમતી જઘન્ય એ ત્રણ અને ઉત્કૃષ્ટ પંદર સામાયિકનો હોય છે, એટલે પોસાની માફકજ દરેક ક્રિયાઓ કરી રાત્રિભરના માટે તમામ આરંભ સમારંભથી નિવૃત્ત થઈ સંવરભાવમાં રહે છે, એવં દિવસે પણ જેની શક્તિ યા ભાવના ઉપવાસ કરવાની ન હોય તે આખા દિવસનો દેસાવગાસી કરીને આંખિત્ર નીવી આદિ કરે છે, એથી તે આરંભાદિ સાવધત્યાગનો લાભ મેળવે છે. પરંતુ જેમ વિધર્મીઓ અનેક જાતના માત્ર મલીઘ ઉગાવીને ઉપવાસ કરે છે યા ઉપવાસ કરીને માત્ર મસાલા ઉગાવે છે. તેમ વ્રતરૂપ પોસહમાં જમવાનું કે જમીને પોસહ કરવાનું શાસ્ત્રવિરૂદ્ધ હોવાના અંગે ખરતર ગચ્છવાળાઓ નથી માનતા, અને તપાઓમાં પણ ત્રણ થુમ્બા અને નાગોરીતપાઓ આ રીતે ખરતરની માફકજ ‘અહરણં મંતે !’ દંડક ઉચરવાપૂર્વક દેસાવગાસી કરે છે, પરંતુ ગુજરાતના તપાઓ આ રીતે દેસાવગાસી નથી કરતા, કેવળ ‘દેસાવગસિયં ઉવમોગં’ પચ્ચક્ષ્ણાણુ લઘને દિવસ રાત્રિમાં છૂટા છૂટા દશ સામાયિક કરી દે છે અને કહે છે- ‘અમોએ દેસાવગાસી કયું’ પણ આવું દશ સામાયિકનું દેસાવગાસી કયા શાસ્ત્રમાં કહ્યું છે ?

(તપા ખરતર ભેદ ગ્રંથ ૧-૨, બોલ ૪ ચોથો.)

૪ પ્રશ્ન૦—તથા સ્વરતગંરઙ્ગ હિવણાં શ્રાવક શ્રાવિકાણ શ્રાવકની
૧૧ પ્રતિમાનઙ્ગ તપ ન વહીજઙ્ગ છઙ્ગ, તે સ્યું ?

ખીજું આવી રીતનું દેસાવગાસી એક દિવસમાં પ્રાયઃ તો એક વાર
અને વધારે ખેંચે તો કદાચ બે વાર થઈ શકે, એથી વધારે વાર ન
થઈ શકે, જ્યારે શાસ્ત્રકારો કહે છે. ‘ વારંવાર કરવો ’ જુઓ.

“ તત્ર પ્રતિદિવસાનુષ્ઠેયે દ્વે સામાયિકદેશાવકાશિકે પુનઃ પુનઃ
રુચ્ચાર્યે ઇતિ ભાવના । ” (હારિઃ આવઃ ટી. પાના ૮૩૯)

“ તત્થ પઙ્ગદિવસાણુટ્ઠેયાણિ મામાઇયદેસાવગાસિયાણિ પુણો
પુણો ઉચ્ચારિજ્જંતિત્તિ ભણિયં હોઙ્ગ । ” (પંચાશક ચૂર્ણિ પાના ૧૧૭)

મતલબ કે—“ દરરોજ કરવા થોડા સામાયિક અને દેસાવગાસી.
આ બંને પ્રતો વારંવાર ઉચરવા ” ખુદ તપાના આચાર્ય શ્રીદેવેન્દ્ર
સૂરિશ્ચ રચિત ભાષ્યત્રયની સાવચૂરિક પ્રતિ વીસ પાનાની સંવત્
૧૭૧૧ માં લખેલી જોધપુર (મારવાડ) માં કેસરીયા નાથજીના
ભંડારમાં છે. જેના ૮ મા પાને “ ઇતિ શ્રીજ્ઞાનસાગરસૂરિકૃતા
ચૈત્યવન્દનભાષ્યાવચૂર્ણિઃ સમાપ્તેતિ ” આવો ઉલ્લેખ છે, તેના પ્રાંતે
દશમાં દેસાવગાસી પ્રતનો દંડક આ પ્રમાણે છે—

અહણં મંતે ! તુમ્હણં સમીવે દેસાવગાસિયં અંગીકરેમિ,
દુવિહં-તિવિદેહં મણેણં વાયાણ કાણં, ન કરેમિ ન કારવેમિ ।
તં દેસાવગાસિયં ચડવ્વિહં-પણંતં, તંજહા-દવ્વઓ સ્વિત્તઓ
કાલઓ ભાવઓ, દવ્વઓણં દેસાવગાસિયદવ્વાઈં અહિગિચ્ચ

ભાષા—હમણું ખરતર આવક આવિકાઓ આવકની અચ્ચાર
પ્રતિમાઓનો તપ જે નથી વહેતા તે શું ?

તત્રાર્થ—તિત્થોગ્ગાલીય પયન્નામાંહિ इम कह्यो कहीयइ छइ जे-
“साङ्ख्यमगोयरो, वुच्छिन्नो दूसमाणुभावेणं । अज्जासं
पणवीसं, सावगधम्मो य वोच्छिन्नो ॥१॥” एहवा पाठ थकी
यतिधर्म विच्छेद विण गयां ‘श्रावकांना धर्म विच्छेद जास्यइ’ ए अर्थ
किम शास्त्रसु मिलइ ? ते भणी तिहां श्रावकधर्म शब्दइं श्रावक
प्रातमा गीतार्थे वखाणी छइ, ते भणी श्रावकनी प्रतिमा विच्छेद
गई, श्रावकनी प्रतिमा श्रावके न वहणी, तपा वहइ छइ ते स्युं ?
तथा जइ ए गाथा तित्थोग्गालीय पयन्नामांहि न लाधी तउ “चउमा-
सगपडिक्कमणं” ए गाथा तित्थोग्गालीय पयन्नामांहि किहां थकी
लाधी ? गीतार्थे बिहुं गाथा लिखीछइजि । वली ‘विधिप्रपा’

खित्तओणं जाव पोसहसाले वा, कालओणं जाव दिवसं, भाव-
ओणं जाव दिसि(परिमाण)परिणामो न परिवडइ, तस्स भंते !
पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि इति देशाव-
काशिक दंडकं । त्रलु थुधया तपा अने नागोरी तपाओ आ दंडक
उयरे छे, ने ते दश साभायिकनुं नहीं पलु भे त्रलुथी जगावी पंदर
साभायिक सुधीनुं करे छे. दश साभायिकनुं प्रमाण तो तपा पं० वीर-
विजयल पलु पूजमां नथी कहेता. अथी आजना तपाओ जे उपरोक्त
दंडक न उयरतां ‘देसावगासियं च्चभोगं’ आ पन्थकपालु उयर
उयरवे छे ते शास्त्रविद्द अमना पोताना धरनो आचार छे.

ગ્રંથમાંહિ શ્રીજિનપ્રભાચાર્યેં “ઇત્ય કેઇ આઇસ્ત્રાણં ચડણં સાવગ-
 પડિમાણં પડિવત્તિં ઇચ્છંતિ, તં ચ ન ગુરુણં સમ્મયં, જત્રો સપઇ
 પડિમારૂવં સાવગધમં વોચ્છિલ્લં વિત્તિ ગીયત્થા, અઓ ન
 તવિવહી ભણ્ણઇ ” ઇમ લિખ્યું છઇ । વલી પાંચમી પ્રતિમાઇં
 શ્રીઉપામકદશાની વૃત્તિમાંહિ ચતુર્દશી પ્રમુલ ૪ પર્વના પોસહની
 રાત્રિં શ્રાવક ચ્યારિ પહરિ રાત્રિના ચડકિ ચાચરઇ કાઝસગ્ગ
 લેઈ રહઇ ઇમ લિખ્યા છઇ । હિવણાં તપાંરઇ પંચમ પ્રતિમાધર
 શ્રાવક રાતિં ઉપામરામાંહિ પહરિ પહરિ લોગસ ૨૪ ના
 કાઝસગ્ગ કરી સૂઈ રહઇ । એવં સમસ્ત રાતિં ૬૬ લોગસનડ
 કાલ કાઝસગ્ગનડ થાઇ, તડ તે પ્રતિમાતપ કિમ કહવરાઇ ?
 એતલે ત્રિહું પ્રતિમા થકી આગિલી એ સાતે પ્રતિમાએ અણવહીએ
 શ્રાવકનડ પ્રતિમારૂપ પૂરડ તપ ન થયડ, જે પાંચમી
 પ્રતિમાયડ કાઝસગ્ગની વિધિ તે તિમઇજિ આગલી પ્રતિમાયડ
 વહિવીછઇ, વિચારિજ્યો । તપાંનડ સામાચારી ગ્રંથાંમાંહી પુણિ-
 ચારિ પ્રતિમાના ઉચ્ચારનડ પાઠ છઇ, પરં આગિલી પ્રતિમા
 વહિવાના ઉચ્ચારિવાના પાઠ નથી । તથા જે પંચાશક સૂત્રમાંહિ ઇયડ
 કાલડ દીક્ષા ગ્રાહી ગૃહસ્થ શ્રાવક પ્રતિમા વહિવાનડ અભ્યાસ
 કરડ, ઇમ જિ લિખ્યું છઇ તેહનડ એ ભાવ-જિમ જિનકલ્પ વિચ્છેદ
 ગયાંઈ થકાં શ્રીઆર્યમહાગિરિ આચાર્યે જિનકલ્પનડ અભ્યાસ કર્યડ
 તિમ પ્રતિમાના અભ્યાસ શ્રાવક કરડ, પુણિ પ્રતિમા તપ વહઇ નહીં,
 વલી શ્રાવિકા પાંહિ પ્રતિમા વહાવડ છઇ તે મહા અનર્થ થાઇ છઇ,

મિદ્ધાંતમાંહિ કિણ્ણં શ્રાવિકાઞ્ચં શ્રાવકની પ્રતિમા નથી વહી,
જે વહઈ તે જાણઈ, જાગતાનઈ કિમ જગાવિયઈ ? ૪ ।

ભાષા:-તિથોગ્ગાલીય પયન્નામાં એમ કહ્યું તે કહીએ છીએ જે
“ સાહૂણમગ્ગોયરઞ્ચો ” એ ગાથામાં “સાવગધમ્મો ય વોચ્છિન્નો”
આ પાઠથી યતિધર્મનો વિચ્છેદ થયા વગર ‘શ્રાવક ધર્મનો વિચ્છેદ
થ(યો)શે (?)’ આ અર્થ જે કરવામાં આવે તો તે શાસ્ત્રથી કેમ મલે ?
એટલે ત્યાં ‘શ્રાવક ધર્મ’ એ શબ્દથી ગીતાર્થોએ શ્રાવક પ્રતિમા કહીએ,
તેથી શ્રાવકની (અચાર)પ્રતિમા વિચ્છેદ ગઈ, એટલે શ્રાવકની પ્રતિમા
શ્રાવકે ન વહેવી. તપા વહે છે તે શું ? અને જે ‘સાહૂણમગ્ગોયરઞ્ચો’
આ ગાથા તિથોગ્ગાલીય પયન્નામાં નથી મલી ? તો “ ચત્તમાસગ-
પહિક્કમણં ” આ ગાથા (કે જેના આધારે તમે પાખીને સદા કાળથી
ચૌદસની સ્થાપવા શુષ્ક પ્રયાસ કરો છો, તે) તિથોગ્ગાલીય પયન્નામાં
ક્યાંથી મળી ? ગીતાર્થોએ બંને ગાથાઓ લખીએ. અને વિધિપ્રવામાં
આં શ્રીજિનપ્રભ સૂરિજીએ ‘અહિં’ (શ્રાવક ધર્મના પ્રસંગમાં)
કેટલાકો પહેલાની ચાર શ્રાવક પ્રતિમાઓ (વહન કરવા) ની
સ્વીકૃતિ માને છે, તે (અમારા) ગુરૂઓને સમ્મત નથી, કારણ ?
ગીતાર્થો કહે છે કે-હમણાં (પંચમ કાળમાં) પ્રતિમા વહન રૂપ
શ્રાવકધર્મ વિચ્છેદ થયો છે, એટલા માટે તે(પ્રતિમા વહન)ની
વિધિ નથી કહેતા. ’ એમ લખ્યું છે, વલી પાંચમી પ્રતિમાએ
ચતુર્દશ્યાદિ ચાર પર્વના પોસહની રાત્રિએ શ્રાવક ચૌક-ચત્વરાદિમાં
ચારે પહોર કાઉસ્સગ્ગ લઈ (ઉભો) રહે, એમ ઉપાસકદશાની
ટીકામાં લખ્યું છે, (પરંતુ) હમણાં તપાના પંચમ પ્રતિમાધર શ્રાવક

રાત્રિએ ઉપાસરામાંલિ પહોરે પહોરે ૨૪-૨૪ લોગસ્સના કાઉસગ્ગ કરી સૂઈ રહે, એમ સમસ્ત રાત્રિએ ૯૬ લોગસ્સનો કાલ કાઉસગ્ગનો થાય, તો તે પ્રતિમા તપ કેમ કહેવાય ? એટલે ત્રણ પ્રતિમાઓથી આગળની એ સાતે પ્રતિમાઓ વહ્યા વગર શ્રાવકને પ્રતિમા તપ પૂરો ન થયો, જે પાંચમી પ્રતિમાએ કાઉસગ્ગ કરવાની વિધિ છે તે તેમજ આગલી પ્રતિમાઓએ વહેવાની છે. વિચારજો, તપાના સામાચારી ગ્રંથોમાં પણ ચાર પ્રતિમા ઉચ્ચારણ પાઠ છે. પરંતુ આગળની પ્રતિમાઓ વહેવા ઉચ્ચારવાના પાઠ નથી, તથા જે પંચાશક સૂત્રમાં ' આ કાળે દીક્ષાગ્રાહી × ગૃહસ્થ શ્રાવક પ્રતિમા વહેવાનો અભ્યાસ કરે '

× “ પત્રજિતુકામેન પ્રતિમાઽભ્યાસો વિધેયઃ ” (પંચાશક ટીકા પત્ર ૧૭૬) આ ૧૧૬માં નવાંગ ટીકાકાર શ્રીઅભયદેવ સૂરિજી સ્પષ્ટ કહે છે કે-દીક્ષા લેવાની ઇચ્છાવાલાએ પ્રતિમાઓનો અભ્યાસ આ કાળમાં વિશેષતાએ કરવો જોઈએ. એટલે પૂછવાનું કે ' તપા ખરતર ભેદ 'ના પ્રકાશક આગમપ્રજ્ઞ સૂરિજીએ કેટલાઓને પ્રતિમાઓનો અભ્યાસ કરાવીને દીક્ષાઓ આપી છે?

તપા ખં. ભેદ પૃ. ૩ ની કુટનોટમાં જાંબ્યાચાર્યજી લખે છે કે- “ ખરતર ગચ્છીઓ પૂજ્ય અભયદેવ સૂરિજીને પણ માને છે, છતાં આશ્ચર્ય છે કે તેમના પ્રમાણોને નથી માનતા ” આના ઉત્તરમાં જણાવાનું કે-ખરતર ગચ્છીઓ તો સ્વગચ્છનાયક પૂજ્ય શ્રીઅભયદેવ સૂરિજી મહારાજના કથનાનુસાર જે વર્તન કરવું, તે દેશકાલને અનુસરી બનવા શક્ય હોય તેટલું કરેજ છે, પરંતુ તેઓશ્રીના

એમ લખ્યું છે, તેનો ભાવાર્થ એ કે—જેમ જિનકલ્પું વિચ્છેદ થયાં છતાંએ આચાર્ય શ્રીઆચાર્યમહાગિરિએ જિનકલ્પનો અભ્યાસ કર્યો તેમ પ્રતિમાનો અભ્યાસ આવક કરે’ પણ પ્રતિમા વહે નહી, ખીજું શ્રાવિકાઓ પાસે પ્રતિમા વહેવરાવે છે તેમાં (કેટલાંય) મહાન અનર્થો થાયછે, સિદ્ધાંતમાં ક્યાંય કોઈપણ શ્રાવિકાએ પ્રતિમા વહેવાનો ઉલ્લેખ નથી, (છતાં) જે વહે (ને વહેવરાવે) તે જાણે, જગતાને કેમ જગાડિયે ?
(તથા ખરતર ભેદ ગ્રંથ ૧-૨, બોલ ૫ મો)

૫ પ્રશ્ન—તથા સ્વરતર યતિ આવશ્યક કરતાં “ આચરિય-ઉવજ્ઞાણ ” ઇત્યાદિ ગાથા ૩ ન કહૈડ, તે સ્યું ?

ભાષા—ખરતર યતિ આવશ્યક કરતાં “ આચરિય-ઉવજ્ઞાણ ” ઇત્યાદિ ત્રણ ગાથા નથી કહેતા, તે શું ?

તત્ત્વર્થ—૧ ૩ ગાથા શ્રીઆવશ્યક સૂત્રના મૂલ પાઠમાંહિ નથી, કિંતુ સ્થામણાં કરતાં આચાર્યાદિકના ક્રમ જણાવિવા મળી ૧

કથન પ્રમાણને અમાન્ય જરાએ નથી કરતા, પણ જંજ્વાચાર્ય પોતે ક્યાં અભયદેવ સૂરિજીને નથી માનતા ? યરાયર માનેજ છે, છતાં ભારે આશ્ચર્ય છે કે પંચાશક ટીકા પત્ર ૨૩ માં તેમણે લખેલ ‘ સામાયિક ઉચર્યા બાદ ધરિયાવહિયા પડિકમવા ’ ના પ્રમાણને તેઓ નથી માનતા, એટલુંજ નહી બદકે અભયદેવ સૂરિજીના આ પ્રમાણને ઠોકરે મારીને મહાનિશીથ સૂત્રાદિમાં, જ્યાં સામાયિક વિધિની શી વાત કરવી ? સામાયિક એવા શબ્દનોએ સર્વથા અભાવ છે, તેવા પાઠો અત્ર જનતાને બતાવી સામાયિક ઉચર્યા પહેલા ધરિયાવહિયા પડિકમવાનું સમર્થન કરી રહ્યા છે, એ એમના ઘરનોજ આચાર છે.

त्रिणहे गाथा टीकाकारइं तथा चूर्णिकारइं साखिभणी आणी छइ ।
 “ उक्तं च ” इणे वचनइ करी टीकाकारइं श्रीहरिभद्रसूरिइं
 श्रीआवश्यक बृहद्वृत्तिमांहि, “ सुत्तगाथा ” इसे वचनइ करी
 श्रीआवश्यक चूर्णिकारइ ए तीनी गाथा लिखी छइ, तथा
 “ परिकट्टिऊण पच्छा, किइकम्मं काउ णवरि खामन्ति । आय-
 रियाइ सव्वे, भावेण सुए जहा भणियं ॥ ४६८ ॥ आयरिय
 उवज्जाए० ॥ ४६९ ॥ सव्वस्स समणसंघस्स० ॥ ४७० ॥ सव्वस्स
 जीवरासिस्स० ॥ ७१ ॥ एवंविहपरिणामा, भावेणं तत्थ नवरि
 आयरियं । खामिति सव्वसाहू, जइ जेट्ठो अन्नहा जेट्ठं ॥ ७२ ॥
 आयरिय उवज्जाए, काऊणं सेसगाण कायव्वं । उपपरिवाडीकरणे,
 दोसा सम्मं तहाकरणे ॥ ७३ ॥ व्याख्या-पर्याकृत्य प्रतिक्रमणं
 पश्चात्कृतिकर्म-वन्दनं कृत्वा, नवरं-क्षमयन्ति-मर्षयन्ति, कान् ?
 इत्याह-आचार्यादीन् गुणवन्तः सर्वे साधवः ‘ भावेन ’ सम्यक्प-
 रिणत्या, श्रुते तथा भणितमेतदिति गार्थः । ” (पत्र ७७)
 (आयरिय०) इत्यादि गाथात्रिकार्थः स्पष्ट एव । तदनु ‘ एवंविह-
 परिणामा ’ गाहा । “ व्याख्या-एवंविधपरिणामास्सन्तो ‘ भावेन ’
 परमार्थेन, तत्र नवरमाचार्यं प्रथमं क्षमयन्ति सर्वे साधवो यदि
 ज्येष्ठोऽसौ पर्यायेण, अन्यथा, ज्येष्ठे असति ज्येष्ठमसावपि क्षमयति
 विभाषेत्यन्ये, शिष्यकादिश्रद्धाभङ्गनिवारणार्थं कदाचिदाचार्य-
 मेवेति गार्थः ॥ ७२ ॥ ” इति पञ्चवस्तुकवृत्तौ (पत्र ७८) एइ
 गाथा लिखी छइ, परं मूलगी आवश्यक सूत्रनी ए गाथा नथी,
 किंतु आउरपच्चक्खण पयन्नानी गाथा छे, परं खमाविवाना

અનુક્રમ જણાવિવા મળી એ ૩ ગાથા ગીતાર્થે લિખી છે, તે મળી આગમ તથા આચરણાનંદ અભાવે પડિકમતાં એ ૩ ગાથા માધુ સાધવી ન કહઈ. વલી એ ત્રિણિહ ગાથા છાંયાં)હ આવશ્યકમાંહિ સદ્દહુ છૂડ ? વલી ઋષિમતિ કહઈ-જઈ યતિ એ ૩ ગાથા ન કહઈ તડ શ્રાવક શ્રાવિકા એ ૩ ગાથા સ્યા મળી કહઈ ? તત્રોત્તરં-શ્રીજિનવલ્લભસૂરિ કૃત પ્રતિક્રમણ સામાચારી ગ્રંથ-માંહિ કહ્યડ જે “સડ્ડો ગાહાતિગં પઢઈ” એવા પાઠ થકી ‘શ્રાદ્ધ’ કહતાં શ્રાવક, ઉપલક્ષણઈ શ્રાવિકા એ ૩ ગાથા મળઈ. વલી શ્રીદેમાચાર્યકૃત શ્રીયોગશાસ્ત્રની વૃત્તિમાંહિ પડિકમણાની વિધિ કહિવાનઈ અધિકારિ “ગાથાત્રિકં પઠતિ શ્રાદ્ધઃ” એવઈ પાઠઈ કરી શ્રાવક શ્રાવિકાનઈ એ ૩ ગાથા કહિવી કહી છૂડ, એવં પરિછિજ્યોપ.

ભાષા-“ આયરિયવજ્ઞાપ ” આ ત્રણ ગાથાઓ આવશ્યક સૂત્રના મૂળ પાઠમાં નથી, કિંતુ ખામવાનો ક્રમ બતાવવાને “ઉક્તં ચ” એ શબ્દ કહીને ટીકાકાર હરિભદ્રસૂરિજીએ આવશ્યક બૃહદ્વૃત્તિમાં, અને ચૂર્ણિકારે “સુત્તગાથા” કહીને પ્રમાણ તરીકે મૂકી છે, અને પંચવસ્તુકની ટીકામાં “પરિયટ્ટિક્ષણ” ઇત્યાદિ ગાથાઓની વ્યાખ્યા કરતાં આચાર્ય શ્રીહરિભદ્રસૂરિજી લખે છે કે-“પ્રતિક્રમણ સૂત્ર કહી રહ્યા પછી વાંદણા દષ્ટને આચાર્યાદિ બધા ગુણવાન સાધુઓને શુદ્ધ ભાવથી ખમાવે. જેમ કે શાસ્ત્રોમાં આમ કહેલ છે ” આમ કહી “આયરિયવજ્ઞાપ” ઇત્યાદિ ત્રણ ગાથાઓ મૂકી ને લખે છે કે “આ ત્રણ ગાથાઓનો અર્થ સ્પષ્ટજ છે ” ત્યાર પછીની “એવંવિહ-પરિણામા” આ ગાથાની ટીકામાં લખે છે કે-“ભાવથી એટલે પરમાર્થથી આવા શુદ્ધ પરિણામવાલા થઈ વંદન કરે, તેમાં સમજ-

વાનું કે જે દીક્ષા પર્યાયમાં આચાર્ય મોટા હોય ત્યારે તો બધા સાધુઓ પહેલાં આચાર્યને ખમાવે, પણ પર્યાયમાં આચાર્યથી મોટા બીજા હોય તો તે (મોટા પર્યાયવાળા) ને આચાર્ય પણ ખમાવે, વિભાગથી ખમાવાનું કેટલાકો કહે છે, કદાચિત્ નવીન શિષ્યાદિને મદ્દાભંગનું કારણ જણાય તો તેના નિવારણાર્થે આચાર્યનેજ ખમાવે ” આ રીતે આ ત્રણ ગાથાઓ લખી છે. કિંતુ એ ગાથાઓ આવશ્યક મૂળ સૂત્રની નથી. પણ આઉરપચ્ચક્ષ્પાણુ પચન્નાની છે, છતાં બોલવા માટે નહીં પણ ખમાવવાનો ક્રમ બતાવવાને ગીતાર્થોએ આ ત્રણ ગાથાઓ લખી છે, એટલે આગમ (આવશ્યક મૂળ સૂત્રની નથી) તથા આચરણના અભાવે પ્રતિક્રમણ કરતાં સાધુ-સાધ્વીઓ આ ત્રણ ગાથાઓ નથી કહેતા. બીજું તમે (તપાઓ) પણ (શું) ‘ આ ગાથાઓ આવશ્યક મૂળ સૂત્રની છે ’ એમ સદ્દહો (માનો) છે ? (જે એમ માનતા હો તો સાબીત કરી બતાવો). વળી ઋષિ-મતીઓ કહે છે કે-આ ગાથાઓ જે સાધુ (સાધ્વી) ઓ ન કહે તો શ્રાવક (શ્રાવિકાઓ) શાને કહે છે ? તેના ઉત્તરમાં માલમ થાય કે શ્રીજિનવદ્દલ્લ સૂરિકૃત પ્રતિક્રમણ સામાચારીમાં “ સદ્દહો ગાહાતિગં પઢૈ ” આવે પાઠ છે. તેના આધારે શ્રાદ્ધ-એટલે શ્રાવક, અને ઉપલક્ષણથી શ્રાવિકા એ ત્રણ ગાથાઓ કહે છે, બીજું શ્રીહેમાચાર્ય-કૃત યોગશાસ્ત્રની ટીકામાં કહેલ ‘ ગાથાત્રિકં પઠતિ શ્રાદ્ધઃ ’ x આ પાઠથી શ્રાવક-શ્રાવિકાને આ ત્રણ ગાથા કહેવાનું કહ્યું છે. આ હકીકત છે.

x યોગશાસ્ત્રની ટીકામાં આવેલ “ ગાહાતિગં પઢૈ સદ્દહો ” એજ પાઠનો સંસ્કૃત અવતરણ આ છે. પ્રતિક્રમણ હેતુર્ગર્ભમાં તપ ગચ્છ-

(તપા ખરતર બેઠા અંથ ૧, બોલ ૬ અને અંથ ૨ બોલ ૭ મો)

૬ પ્રશ્ન-તથા સ્વરતર યતિ નિષ્કારણે માર્ગે સાધુ-સાધ્વી
 એકઠા વિહાર ન કરઈ, તે સ્યું ? ।

આચાર્ય શ્રીજયચંદ્ર સૂરિએ પણ આજ ગાથા મૂકી છે, બીજી
 આખ્યાનમાં વિશેષ પ્રકાશ પાડતો ‘ સેનપ્રશ્ન ’ નો નીચેનો
 પ્રશ્નોત્તર ખાસ વાચવા જેવું છે. “ આચરિયઝવઝ્માણ ” ઇત્યાદિ
 ગાથાત્રયં કેચન ન પઠન્તિ, વદન્તિ ચ-યોગશાસ્ત્રવૃત્તૌ ‘ કાઝણ
 વંદણં તો ’ ઇત્યત્ર શ્રાદ્ધાનામેવ પ્રોક્તમસ્તિ, ન યતીનામિતિ
 પ્રશ્નોત્તર-યોગશાસ્ત્રવૃત્તિજીર્ણપુસ્તકપટ્ટકં વિલોકિતં, તત્ર
 સર્વત્રાપિ ‘ કાઝણ વંદણં તો ’ ઇતિ ગાથાયાઃ પાઠઃ ‘ સઢો ’ ઇતિ
 પદેનૈવ સંયુક્તો દૃશ્યતે, તત્ર ‘ અશઠા ’ ઇતિ વ્યાખ્યાનેન સાધુ-
 શ્રાદ્ધયોઃ સમાનમેવાવશ્યકકર્ત્તવ્યં દૃશ્યતે, તથાપિ ભાવદેવસૂરિકૃત-
 સામાચાર્યા અવચૂર્ણાવેતદ્ગાથાત્રયં કેવાંચિન્મતે સાધવો ન
 પઠન્તીતિ પ્રોક્તમસ્તીતિ, તન્મતાન્તરમ્ ॥૧૪૫॥ (સેનપ્રશ્ન પત્ર ૬૨)

આ ઉપરના પાઠથી પૂછવામાં આવ્યું કે-“ કેટલાકો ” ‘ આચરિય-
 ઝવઝ્માણે ’ ઇત્યાદિ ત્રણ ગાથાઓ નથી બોલતા, ને કહે છે કે-
 ‘ યોગશાસ્ત્ર ટીકા ’ ની “ કાઝણ વંદણં તો ” આ ગાથામાં સાધુઓને
 નહીં, પણ શ્રાવકોનેજ બોલવા કહેલ છે. (તે કેમ ?) એના ઉત્તરમાં
 આચાર્ય વિજયસેનસૂરિ કહે છે કે-“ યોગશાસ્ત્ર ટીકાની જીર્ણ છ
 પ્રતિઓ જોઈ. તે બધીએ પ્રતિઓમાં ‘ કાઝણ વંદણં તો ’ આ
 ગાથા ‘ સઢો ’ શબ્દયુક્તજ નોવાય છે. તેમાં ‘ અશઠા ’ એવો વ્યાખ્યાન
 કરવાથી સાધુ-શ્રાવક બન્નેને બોલવાનું આવશ્યક કર્ત્તવ્ય સમાનજ

ભાષા—ખરતર યતિઓ વગર કારણે માર્ગમાં સાધુ-સાધ્વી ભેગા વિહાર ન કરે, તે શું ?

જોવાય છે, છતાં ભાવદેવસૂરિ કૃત સામાચારીની અવચૂર્ણિમાં ‘કેટલાંકોના મતે આ ત્રણ ગાથાઓ સાધુઓ નથી બોલતા’ એમ કહેલ છે, એથી એ મતાંતર છે.” આ ઉત્તર કથનમાં આચાર્ય વિજય-સેન સૂરિએ કેવી સફાર્થ કરી છે ? મૂળ ગાથામાં ‘સદ્દો’ શબ્દ છે. તેના બદલે સેનપ્રશ્નકારે લીધો છે ‘સદો’. તેમાંએ ‘સદો’ શબ્દ એકવચનમાં હોવા છતાં પર્યાય શબ્દ ‘અશઠ’ એમ જે બહુવચનમાં લખ્યું તે ખરેખર હુશ્ચારીજ બતાવી છે, પરંતુ તે ગાથાને નિષ્પક્ષભાવે પૂર્વાપર વિચારતાં સ્પષ્ટ જણાય છે કે ‘અશઠ’ નહીં પણ ‘શ્રાદ્ધ’ એ અર્થજ વાસ્તવિક, તે બંધ બેસતો છે, બીજું આ બિજયસેન સૂરિના કહેવા મુજબ ‘કેટલાંકોના મતે સાધુઓ નથી બોલતા’ એમ ભાવદેવ સૂરિકૃત સામાચારીની અવચૂર્ણિમાં લખેલ છે. તેનો વિરોધ તો તે અવચૂર્ણિકાર નથી કરતા, તેમ આચાર્ય વિજયસેન સૂરિ પણ ઉપરોક્ત પ્રશ્નોત્તરમાં કશુંએ વિરુદ્ધતા નથી દર્શાવતા, છતાં ધર્મસાગરાદિ ફલેશપ્રિયોનું અનુકરણ કરતાં આજના જગ્યાચાર્ય અને તેમના અગ્રલેખકો, કોઈ પણ સર્વમાન્ય પ્રમાણ આપ્યા વગરજ શાસ્ત્રોના નામ માત્ર દહને વિરોધ કરે તો તેની સુઝ સમાજમાં શું કિંમત છે ? અને આચાર્ય વિજયસેન સૂરિ “કાઠ્ઠ્ઠ વંદણં તો” આ ગાથાનો પાઠ “સદો” શબ્દ યુક્તજ હોવાનું લખે છે. છતાં આજના મતાગ્રહીઓએ ‘યોગશાસ્ત્ર’ છપાવતાં તે ગાથામાં “સદો”

તત્રાર્થે-નિષ્કારણઈ વિહાર સાધુ-સાધ્વી એક ઠા ન કરઈ, કારણઈ
એક ઠા સાધુ-સાધ્વી વિહાર કરઈ પુણિ । ઇહાં કારણ એ જે સાધુ-
સાધ્વીનઈ ક્ષેત્રાંતરિ-વીજઈ ક્ષેત્રિ પહુચાવિવા રૂપ નિમિત્તિ, તિહાંઈ
સાધનઈ યોગિ સાથસેતી વિહાર કરઈ, જિહાં ભય ન હવઈ તિહાં
સાધ્વી પાછઈ થઈ આવઈ. જિહાં ભય હવઈ તિહાં સાધ્વી સગલાં
યતિયાં આગઈ અલગી થકી જાઈ, સમય સ્થાનકઈં ભયનઈ
કારણઈ એકઠાઈ જાઈ, એ કારણિ એકઠા વિહારની જયણા,
પહિલી જયણા એકઠા ચાલિવાની, બીજી એ જયણા જે સાધુ
સમય સ્થાનકઈ સાધ્વીનઈ આગઈ પાછઈ ન મૂકઈં કિંતુ સાથિ

શબ્દ રાખ્યોજ નથી. જુઓ દષ્ટિરાગનો માહાત્મ્ય, દષ્ટિરાગના અંગે
ગ્રંથકારોના સ્વયં લખેલા શબ્દોને ઊગડી દેતાં ભવભ્રિતા તો આભરાઈ
એ મુકાઈ જાય છે, એટલાજ માટે તો શાસ્ત્રકારો કહે છે—
“દષ્ટિરાગસ્તુ પાપીયાન્, સતામપિ હિ દુસ્ત્યજઃ ।” આતો એમનો
કુલાચારજ છે, કેમકે આ ગ્રંથના પ્રશ્નોત્તર ૧ ની પહેલી કુટનોટમાં
જણાવ્યા મુજબ જ્યારે રત્નશેખર સૂરિએ આવશ્યક વૃત્ત્યાદિના નામે
નવો પાઠ કરાવ્યો, કલિકાલ સર્વજ્ઞ શ્રીહેમચંદ્ર સૂરિના ગુરુ
શ્રીદેવચંદ્ર સૂરિ રચિત ‘દાણા પ્રકરણ’ ની ટીકાના ‘પક્ષિસ્વચ્ચાઈણિ
ચંડહસીએ આચરિયાણિ” આ પાઠના બદલે એવાજ કોઈએ
“ચાન્દમાસિયાણિ ચંડહસીએ આચરિયાણિ” આવો પાઠ લખી
નાખ્યો, ત્યારે તેમના વંશજો આજેય કોઈના ગ્રંથમાંથી પોતાની માન્ય-
તાને બાધાકારક શબ્દને કાઢી ફેંકે તે કાંઈ આશ્ચર્યની વાત નથી, અસ્તુ.

થયાં જાઈ, તિહાં સાધ્વીના આચાર્ય તથા ઉપાધ્યાય ૨ ઠાણે અથ
 ૩ ઠાણે સાધ્વીયાંનંદ તેહનંદે ત્રેત્રિ પહુચાવંદ પરં સાધ્વીયાં
 સાથિ સંઘાડાબદ્ધ થઈ વિહાર ન કરિવડ, અથવા જે સાધ્વીયાં-
 નંદે ત્રેત્રાંતરિ પહુચાવિવા જાઈ તે સાધ્વીનંદ બાપ તથા માઈ
 સાથિ થકડ પહુચાવંદ, પુણિ ગૃહવાસના સમ્બન્ધી સ્ત્રી ભર્ત્તા-
 રાદિક જે યતિનંદ થાઈ તે યતિ સાથિ થઈ ન પહુચાવંદ, અથવા
 જે યતિ સદ્સૂયોધી થાઈ તે સાધ્વીયાંનંદે ત્રેત્રાંતરિ પહુચાવંદ,
 પરં ચોરાદિ મિલ્યાં થકાં સાધ્વીનંદે છાંડી નાસી જાઈ તે કિમ
 સાધ્વીનંદે ત્રેત્રાંતરિ પહુચાવંદ ? અથવા જે યતિ વૃદ્ધવય હવંદ તે
 પહુચાવંદ, પરં મોટીયાર યતિ મોટીયાર સાધ્વી તેહ સાથિ વિહાર
 નિષેધ, એતલંદ પરિચય કરી જેહની માંહોમાંહિ એકઠા રહિવંદ
 કરી લાજ મિટી હવંદ તે એકઠા વિહાર ન કરંદ, વલી જે યતિ
 દેશ્વતાં થકાં સાધ્વી વીહંદ તે યતિ સાધ્વીનંદે ત્રેત્રાંતરિ પહુચાવંદ,
 પરં જેહને દેશ્વી સાધ્વી હસંદ સાધ્વી દેશ્વી યતિ હસંદ તે
 સાધ્વીયાંનંદે ત્રેત્રાંતરિ ન પહુચાવંદ, એવં સિદ્ધાંતમાંહિ ઘણી
 યાતનાવિધિ કહીછંદ પરં હિવણાં સંઘાડાબદ્ધ ઘરનંદ વ્યવહારંદ
 ઓલસવંદ મળંદ મળાવંદ ગુણાવંદ વારવાર ઉપાસરંદ આવંદ જાઈ
 માંહોમાંહિ લાજ ભાગી હવંદ તે યતિયાં સાધ્વીયાંનંદ (અન્ય)
 ત્રેત્રંદ ન પહુચાવંદ । આપ રાશ્વી રમિસ્યંદ તેહનંદે લાભ ઘણા થાસ્યંદ,
 વીજાઈં ગચ્છાંની સાધ્વી આપણંદ મેલિ યતના કરતી સહુ
 વિહાર કરંદે છંદે લોકાપવાદ ટાલંદે છંદે, સંયમ પુણિ પાલંદે છંદે
 એક મોટા સાથનંદે સંયોગંદે સ્વપ કરંદે છંદે । વલી સાધુ-સાધ્વી

उत्सर्गं एक निर्गम प्रवेश क्षेत्र इ एकठा चउमासि न रहइ तउ
एकठा निष्कारणे विहार किम करिस्यइ ? विचारि जोज्यो, इहां
श्रीबृहत्कल्पभाष्य (टीका) जोइवी ।

“पडिलेहियं च खित्तं, संजइवग्गस्स आणणा होइ ।
निक्कारणम्मि मग्गञ्जो, कारणे समगं तु पुरतो वा ॥ १ ॥
व्याख्या—एवं च वसतिविचारभूम्यादिविधिना प्रत्युपेक्षितं च संय-
तीप्रायोग्यं क्षेत्रं, ततः संयतीवर्गस्यानयनं तत्र क्षेत्रे भवति, कथ-
मित्याह—‘निष्कारणे’ निर्भये निराबाधे वा सति साधवः पुरतः स्थिताः
संयत्यस्तु ‘मार्गतः’ पृष्ठतः स्थिता गच्छन्ति, कारणे तु ‘समकं वा’
साधूनां पार्श्वतः ‘पुरतो वा’ साधूनामग्रतः स्थिताः संयत्यो गच्छन्ति ।”
एतलइ (अन्य) क्षेत्रि पहुचाविवानउ एक कारण, तेहमांहि वली
बीजउ कारण जाणिवउ “निप्पच्चवायसंबंधि-भाविण गणहरोऽ-
प्पबियतियञ्जो । नेइ भए पुण सत्थेण, सद्धि कयकरण-
सहितो वा ॥ ११ ॥ व्याख्या—निष्प्रत्यपाये संयतीनां ये सम्ब-
न्धिनः स्वज्ञातीया ‘भाविताश्च’ सम्यक्परिणतजिनवचना निर्वि-
काराः संयतास्तैः सहितो गणधर आत्मद्वितीय आत्मतृतीयो वा
संयतीर्विवक्षितक्षेत्रं नयति, अथ स्तेनादिभयं वर्तते ततः सार्थेन
सार्द्धं नयति, यो वा संयतः ‘कृतकरणः’ इषुशास्त्रे कृताभ्यासस्तेन
सहितः संयतीस्तत्र नयति । स च गणधरः स्वयं पुरतः स्थितो
गच्छति संयत्यस्तु मार्गतः स्थिताः, इत्यादि ज्ञेयं ।” इति श्रीबृहत्कल्प-
भाष्यवृत्तयो विशेषार्थिनाऽवलोकनीयाः । तथा ‘पंचगहं एगयरे’ति,

व्याख्या-पंचानामाचार्योपाध्यायपवर्त्तकस्थविरगणावच्छेदकानामेक-
तरः संयतीर्नयति, ताश्च स्त्रीसार्थेन समं संविग्नेन परिणतवयसा
नेतव्याः । ” इति बृहत्कल्पभाष्ये ४ उद्देशके ।

एतावता सामान्यसाधुसङ्घाटकेन सह साध्वीविहारनिषेधः

“ प्रियधर्मे दृढधर्मे, संविग्गोऽवज्जओ य तेयस्सी ।
संगहुवग्गहकुसलो, सुत्तत्थविऊ गणाहिवइ ॥ १ ॥ व्याख्या-
प्रिय-इष्टो धर्मः श्रुतचारित्ररूपो यस्य स प्रियधर्मा, यस्तु तस्मिन्नेव
धर्मे दृढो-द्रव्यक्षेत्राद्यापदुदयेऽपि निश्चलः स दृढधर्मा, राज-
दन्तादिवद्दृढशब्दस्य पूर्वनिपातः । संविग्नो द्विधा-द्रव्यतो भाव-
तश्च, तत्र द्रव्यतो मृगः, सदैव त्रस्तमानसत्वात्, भावतो यः
संसारभयोद्विग्नः पूर्वरत्रापररात्रकाले सम्प्रेक्षते-किं मया कृतं ?
किं वा शक्यमपि तपःकर्मादिकमहं न करोमि ? इत्यादि, ‘वज्ज’ति
अकारप्रश्लेषादवद्यं-पापं, सूचनात्सूत्रमिति कृत्वा, तदभीरुरवद्य-
भीरुः । ओजस्तेजश्चोभयमपि वद्यमाणलक्षणं, स्तद्विद्यते यस्य स
ओजस्तेजस्वी चेति । सङ्ग्रहो द्रव्यतो वस्त्रादिभिर्भावितः सूत्रार्थाभ्यां,
उपग्रहो द्रव्यत आषधादिभिर्भावितो ज्ञानादिभिः, एतयोः-संयती-
विषययोः सङ्ग्रहोपग्रहयोः कुशलः । तथा सूत्रार्थवित् गीतार्थः ।
एवंविधो गणाधिपतिरार्याणां गणधरः स्थापनीय” इत्यादि । एता-
वता जेहवइ (तेहवइ) यतियइ साध्वी साथि लेइ विहार न करिवउ,
थोढइ कहइ घणउ समम्फिज्यो, पोते जोइनइ रमिज्यो इत्यादि,
एवं निशीथे अष्ट(मोद्दशके)माध्ययने (?) विचारिवउ ॥ ६ ॥

ભાષા—વિનાકારણે સાધુ-સાધ્વી સાથે વિહાર ન કરે, અને કારણે કરે પણ ખરા, પરંતુ અહિં કારણ તે સમજવાનું કે જે સાધ્વીને એક ક્ષેત્રથી બીજે ક્ષેત્રે પહોંચાડવી, તેમાં (બીજાઓના સાથ વગર નહિં, પણ) સાથને યોગે સાથે વિહાર કરે, ન્યાં (ચોરાદિકનો) ભય ન હોય ત્યાં સાધ્વી (સાધુથી) પાછળ રહે (અને) ન્યાં ભય હોય ત્યાં સાધ્વી બધા સાધુઓની આગળ રહે, (એવા) ભયવાલા સ્થાનકે ભયના કારણે (આગળ પાછળ ન રહેતાં બધા) એકત્ર ચાલે, આ કારણે એકત્ર વિહારની જયણા, પહેલી જયણા એકત્ર ચાલવાની (અને) બીજી જયણા એ કે સાધુ ભયવાળા સ્થાનકે સાધ્વીને આગળ પાછળ ન છોડે, કિંતુ સાથે રહી ચાલે, ત્યાં સાધ્વીના આચાર્ય તથા ઉપાધ્યાય જે અથવા ત્રણ ઠાણાથી સાધ્વીઓને તેના ક્ષેત્રે પહોંચાડે, પરંતુ સંઘાગબદ્ધ થઈ (સાધુએ) સાધ્વીઓની સાથે વિહાર ન કરવો, અથવા જે (સાધુ) સાધ્વીને ક્ષેત્રાંતરે પહોંચાડવા જાય તે સાધ્વીનો (ગૃહસ્થપણાનો) બાપ કે ભાઈ હોય, પરંતુ સાધ્વીના ગૃહસ્થપણાના પતિ આદિ સંબંધવાળો જે સાધુ થયેલ હોય તે સાધ્વીને ક્ષેત્રાંતરે ન પહોંચાડે, તેમ જે સાધુ સહસ્રયોધી હોય તે સાધ્વીઓને ક્ષેત્રાંતરે પહોંચાડે, પરંતુ (અટવીમાં) ચોર આદિ મલ્યે (ભયના લીધે) સાધ્વીઓને છોડી જે નાસી જાય તે સાધ્વીઓને ક્ષેત્રાંતરે કેમ પહોંચાડી શકે ? અથવા જે સાધુ વૃદ્ધાવસ્થાવાળો હોય તે (સાધ્વીને) પહોંચાડે, પરંતુ યુવાન સાધુ અને યુવાને સાધ્વી. તેને સાથે વિહારનો નિષેધ છે. એટલે પરિચયના અંગે એકત્ર રહેતાં આપસમાં જેમની લગ્ન તૂટી ગઈ હોય તે (સાધુ સાધ્વીઓ) એકત્ર વિહાર ન કરે,

વક્ત્રી જે સાધુને જોતાં સાધ્વી ભય પામતી હોય તે સાધુ સાધ્વીને ક્ષેત્રાંતરે પહોંચાડે. પરંતુ જે સાધુને જોઈ સાધ્વી હસે તેમ સાધ્વીને જોઈ સાધુ હસે તે (સાધુ) સાધ્વીઓને ક્ષેત્રાંતરે ન પહોંચાડે, એવી રીતે સિદ્ધાંતમાં ઘણી યતનાવિધિ કહી છે, પરંતુ હમણાં સંઘાડા-બદ્ધ ધરના વ્યવહારે ભણે ભણાવે ગુણાવે. (સાધ્વીઓ) વારંવાર (સાધુના) ઉપાશ્રયે આવ જવ કરે, આપસમાં એક બીજાની લજ્જા તૂટી હોય તેવા સાધુઓ સાધ્વીઓને (અન્ય) ક્ષેત્રે ન પહોંચાડે, આપ રાખી રમશે તેને ઘણો લાભ થશે, બીજા અરજોનીએ સાધ્વીઓ બધી પોતાની મેળે યતનાપૂર્વક વિહાર કરે છે લોકાપવાદ ટાળે છે (અને) સંયમ પણ પાલે છે. એક મોટા (સંઘાદિક) સાથના સંયોગે ખપ કરે છે, બીજું ઉત્સર્ગ માર્ગથી જ્યાં જવા આવવાનો રસ્તો એક હોય તેવા ક્ષેત્રમાં સાધુ-સાધ્વીઓ એકત્ર ચોમાસુંએ ન રહે તો પછી વગર કારણે એકત્ર વિહાર કેમ કરશે ? વિચારી જોજો. આ વિષયમાં બૃહત્ કલ્પભાષ્યની (ટીકા) જોઈ લેવી.

“ આવી રીતે ઉપાશ્રય તથા હલ્લામાતરાની ભૂમિ જોવી આદિ વિધિએ સાધ્વીઓએ ક્ષેત્રની પ્રતિલેખના કરવી. ત્યાર બાદ સાધ્વીઓના સમુદાયને તે ક્ષેત્રમાં લાવવાનું હોય, કેવી રીતે લાવવું ? તે કહે છે—રસ્તામાં કોઈ જાતનો ભય કે બાધા ન હોય તો સાધુથી પાછળ, અને જો રસ્તામાં ચોરકે જનવરાદિકનો ભય હોય તો સાધુની જોડે ચાતો આગળ રહીને સાધ્વીઓ ચાલે ” એટલે (અન્ય) ક્ષેત્રે પહોંચાડવાનું એક કારણ (આ કહ્યું), તેમાં વળી બીજો કારણ એ જાણવો—“ નિર્ભય રસ્તામાં સાધ્વીના ગૃહસ્થપણાનાં (જે સાધુ)

સગા સંબંધી હોય તે પણ ભાવિતાત્મા (ધર્મનિષ્ઠ બુદ્ધિવાળા) અને નિર્વિકાર દૃષ્ટિવાળા હોય તેવા એક યા એ હાણા સાધુઓની સાથે આચાર્ય પોતે સાધ્વીઓને ઇચ્છિત ક્ષેત્રે પહોંચાડે, અને જે રસ્તામાં ચોરાદિકનો ભય હોય તો સથવારાની સાથે, અથવા જે સાધુ કૃતકરણ (ધનુર્વિદ્યાનો અશ્વાસી) હોય તેની સાથે આચાર્ય પોતે આગળ અને સાધ્વીઓને પાછળ રાખી ઇચ્છિત ક્ષેત્રે પહોંચાડે, ” ઇત્યાદિ વિશેષ જાણવાની ઇચ્છાવાળાએ બૃહત્કલ્પભાષ્યવૃત્તિ જેવી । બીજું સાધ્વીઓને ક્ષેત્રાંતરે પહોંચાડનાર આચાર્ય ઉપાધ્યાય. પ્રવર્તક સ્થવિર અને ગણાવચ્છેદક. આ પાંચમાંથી કોઈપણ એક હોય, તે (સાધ્વી)ઓ. પણ સ્ત્રીસમુદાય સાથે હોય, એવી રીતે સંવિગ્ન અને પરિણત અવસ્થાવાળાએ પહોંચાડવી ” ઇત્યાદિ બાબત બૃહત્કલ્પભાષ્ય ૪ થા ઉત્તરમાં છે.

એતાવતા સામાન્ય સાધુ સંઘાડા સાથે સાધ્વીના વિહારનો નિષેધ છે.

(સાધ્વીઓના આચાર્ય આવા પ્રકારના શાસ્ત્રકારોએ બતાવ્યા છે-)

“ શ્રુતધર્મ તથા ચારિત્ર-ધર્મ જેને બહુ ઇષ્ટ હોય. અને ગમે તેવી આપદામાં પણ તેજ શ્રુત-ચારિત્ર રૂપ ધર્મમાં પોતે નિશ્ચલ હોય, સંવિગ્ન (દ્રવ્યે અને ભાવે સંસાર ભયથી સદા ઉદ્વિગ્ન મનવાળો) હોય, એટલે અડધી રાત્રે જાગૃત થઈને શું મહેં કયું છે ? અથવા કરી શકાય તેવી પણ તપસ્યા આદિ હું શું નથી કરતો ? ઇત્યાદિ વિચારે. અને પાપથી બીહીન હોય તેમ ઓજસ્વી (શરીર સૌન્દર્ય-યુક્ત) તથા તેજસ્વી (શરીરની કાંતિ યુક્ત) તથા દ્રવ્યથી વસ્ત્રાદિનું

અને ભાવથી સૂત્ર તથા અર્થનો સંગ્રહ કરવામાં તથા દ્રવ્યથી ઔષધાદિ દધને તેમ ભાવથી જ્ઞાનાદિ આપીને (દરેકને) આશ્રય દેવા રૂપ ઉપગ્રહમાં કુશલ હોય અને સૂત્ર તથા અર્થને જાણનાર ગીતાર્થ હોય, એવા પ્રકારના ગુણુવાન આચાર્યને સાધ્વીઓને માટે (ગણધર) સ્થાપિત કરવો. ” ઇત્યાદિ, એતાવતા જેવા તેવા સાદુએ સાધ્વીની સાથે વિહાર ન કરવો, થોડો કહ્યે ઘણો સમજાવે, પોતે જોઈને રમજો. એવીજ રીતે નિશીથ સૂત્રના આદ્યમા ઉદ્દેશમાં પણ જોઈ લેવો. ॥૬॥ +

+ તપા ખરતર ભેદના પ્રકાશક આગમાપ્રગણ લખે છે કે-
 “ કારણિક આવા વિહારોની વિધિ હાલમાં અનુસરાતી નથી ” એટલે તેમને પૂછવામાં આવે છે આવા વિહારોની વિધિનું અનુસરણ ન કરતાં તમો, શાસ્ત્રાજ્ઞાનું નહીં પણ પોતાના પૂર્વજો ધર્મસાગર જેવાઓની આજ્ઞાઓનું સ્પષ્ટ ઉલ્લંઘન કરી રહ્યા છો. કેમકે તે તમારા પૂર્વજો આવા કારણિક વિહારના નિષેધનો પણ ચોક્કસ ઉત્સુત્ર કહે છે. તો તમો તેમના સુપુત્રો-સુશિષ્યો થઈને આવી રીતે ખરતરોનું તમારા મતે અનિચ્છનીય અનુસરણ કરી શા માટે ઉત્સુત્રભાષક બનો છો ? તમારા તે પૂર્વજોની આજ્ઞાનુસાર, ને તપા(ગપ્પા)ની સામાચારી મુજબ વર્તન કરી અજ જૈનેનર જનતામાંયે બાબા-બાપીની સાદસ્યતાએ જૈન સાધુ-સાધ્વીઓની ખ્યાતિ કરી કરાવીને જૈન ધર્મના મહાન્ પ્રભાવક (?) કેમ નથી બનતા, મહાશયજી ! વસ્તુતઃ ખીજની સત્યતાદિ દ્વારા થતી ઉત્કર્ષતાદિને જોઈ ન શકવાના કારણે થતી ઈર્ષ્યા અદેખાઈના પરિણામે આવી અપવાદ માર્ગની કારણિક બાબતોને પણ ઉત્સર્ગમાં નાખી દેવી એ તમારા તપાઓનાં ગપ્પાંજ છે, ધરના આચાર છે.

(તપા ખરતર ભેદ ગ્રંથ ૧ ખોલ ૭, ગ્રંથ ૨ ખોલ ૫૩ મો.)

૭ પ્રશ્ન-તથા તપા થાપના મૂલગી ગુરુની થાપી આગલી ક્રિયા કરઈ, પુણિ દિહાડિ દિહાડિ નવીદા નવકાર કહી થાપઈ નહીં, અનઈ સ્વરતરાંનંદ થાપનાચાર્ય વલી થાપીનઈ ક્રિયા કરઈ તે સ્યું ? ।

ભાષા:-તપા મૂળગી ગુરુની થાપેલી થાપના આગળ ક્રિયા કરે, પણ દરરોજ નવા નવા નવકાર કહી થાપે નહીં, અને ખરતરાંને થાપનાચાર્ય વળી થાપીને ક્રિયા કરે, તે શું ?

તત્રાર્થે-તપાના કીધા ‘શ્રાવકદિનકૃત્ય’ ગ્રંથમાંહિ શ્રીદેવેન્દ્ર સૂરિ ઇમ કહ્યા-“તત્રો પોસહસાલં નુ, ગંતૂર્ણં તુ પમજ્જણં । ઠાવિત્તા તત્થ સૂરિં નુ, તત્થો સામાયિકં કરે ॥૧॥” ઇહાં ટીકા-કારઈ સામાયિક લેવાનઈ અધિકારઈ-“તત્થો નમસ્કારપૂર્વકં સ્થાપયિત્વૈવ તત્ર ‘સૂરિં’ સ્થાપનાચાર્ય, તત્થો વિધિના સામાયિકં કરોતિ ।” ઇતિ વચનાત્ સ્થાપનાચાર્યનઈ નવકાર પૂર્વક સ્થાપિનઈજિ શ્રાવકનઈ સામાયિક કરિવડ કહાડ છઈ, તથા

આવા ધરના આચારોની પ્રવૃત્તિઓ તપાઓમાં પ્રચલિત ન થઈ હોત તો આચાર્ય વિજ્યદેવ સૂરિને સ્ત્રીદીક્ષા નિષેધની આજ્ઞા કરવાનું સમય ન આવતે. બીજું જેટલા ગ્રંથોના નામમાત્ર તમોએ લખ્યા છે તેમાંથી એકમાં પણ એવો પાઠ તો બતાવી દેવો હતો કે જેની અંદર ઉત્સર્ગથી ગમે તેવા સાધુઓનો વિહાર સાધ્વીઓની સાથે હોવાનું વિધાન હોય.

તપાકૃત (આચારવિધિ) સમાચારી × ગ્રંથમાર્હ—“ગુરુસમીવે નમોક્કાર
પુર્વં ઠવણાયરિયં ઠાવિત્તા ઇરિયં પઢિક્કમિય” ઇતિ વાક્યાત્
ઠવણાયરિય નવકારે કરી થાપિવડ, વલી—“ઠવણગુરુમ્મિ અઠવિણ,
ઠવિણ ય કમા પયાઇલગમ્મિમિન્નલહુ પડણાઇસુ. લહુગુરુ તહ

× આ ગ્રંથ સુરતથી ઝવેરી મંછુભાઇ જીવણચંદ દ્વારા સાગરાનંદે
પ્રકાશિત કરાવેલ છે. તેના પત્ર ૧૧ માં તથા સુબોધા સામાચારી
પત્ર ૩૬ માં પણ આ પાઠ છે, આમાં ગુરૂની પાસે અથવા નવકાર
ગણવા પૂર્વક સ્થાપનાચાર્ય સ્થાપીને ધરિયાવહિયા પડિકમવાનું ચોક્કસ
લખ્યું છે. જે ગુરૂની પ્રતિષ્ઠિત સ્થાપના આગળજ શ્રાવકને
પૌષધાદિ ક્રિયા કરવાનું હોત તો નવકાર ગણવાપૂર્વક સ્થાપનાચાર્ય
સ્થાપવાનું ગ્રંથકાર કહેતજ નહીં, પરંતુ કહ્યું છે નવકાર ગણવાપૂર્વક
સ્થાપનાચાર્ય સ્થાપવાનું, એટલે સ્પષ્ટ જણાય છે કે ગુરૂએ પ્રતિષ્ઠિત
યાવત્કથિક અક્ષાદિ સ્થાપના રાખીને બન્ને ટાઇમ નિયમિત પડિલેહણ
ન થઇ શકવાથી આશાતનાના ભાગીદાર ગૃહસ્થે ન થવું, કિંતુ ક્રિયાના
સમયે પુસ્તકાદિ ધર્મોપકરણની ઇત્વરિક (અલ્પકાળની) સ્થાપના
સ્થાપીને ક્રિયા કરવી. એથી સાખીત થયું કે આજના તપાઓ ગામેગામ.
ઉપાશ્રયે ઉપાશ્રયે જે પ્રતિષ્ઠિત સ્થાપનાઓ રાખે છે, તે તેની પડિલેહણ
ટાઇમસર બરાબર ન કરી શકવાથી આશાતના દોષના ભાગીદાર
બને છે, એટલુંજ નહીં, પણ એવો પ્રચાર કરનાર જંબ્યાચાર્ય
જેવાઓ પોતાના ગુરૂઓનીએ આજ્ઞાનું ઉલ્લંઘન કરીને જે પ્રતિષ્ઠિત
સ્થાપનાઓ ગૃહસ્થોને રખાવે છે. તે પોતાની ગાંઠનું ઉમેરે છે.

नासिए भिन्नं ॥ ६६ ॥ व्याख्या-स्थापनाचार्ये अस्थापिते-ऽकृत-
मन्त्रन्यासे स्थापिते-कृतमन्त्रन्यासे (च) पादादौ लग्ने क्रमेण
भिन्नलघु (गुरु) मासश्च, तथा तयोर्हस्तात्स्थापनाचार्यस्थानाद्वा
प्रमादेन पातने आदितोऽवज्ञामोचनादौ क्रमेण लघुमास-गुह्यमासौ”
इत्यादि श्रीश्राद्धजीतकल्पमाहे क्हाउ छइ परं ऋषीमती मानउ
तथा म मानउ । वली-पोसहशालामांहि जे स्थापनाचार्य हुस्यइ
ते यावत्कथिकजि हुस्यइ, एवं प्रीच्छेज्यो । वली जइ इरियावही
अणपडिक्कम्यां श्रावकनइ कांइ क्रिया नज सूम्हइ ? तउ तेह
श्रावकनइ वमतिनउ पूंजिवउ काजानउ उद्धरिवउ श्रीस्थापना-
चार्यनउ स्थापिवउ, एतला धर्मना कार्य किम सूम्हिस्यइ ? ए
बोल पिण प्रसंगइ जोइवउ । श्रीतरुणप्रभसूरिइं इम लिख्यु
छइ—“पंचपरमेष्ठि स्थापना निमित्ति स्थापनाचार्य आगइ मन
वचन कायानइ सावधानता निमित्ति त्रिण्ह पंचपरमेष्ठि नमस्कार
कहियइ, अथवा जिनशासनि जे कार्य कीजइ ते त्रिण्ह नमस्कार
गुणन पूर्वक कीजइ, इणइ कारणइ पुणि त्रिण्ह नमस्कार
भणियइ” एतलइ क्रिया करतां स्थापनाचार्य आगइ त्रिण्ह नव-
कार कहिवा । वली जे कह्यु—“जिनप्रतिमानइ मांडतां वली
त्रिण्ह नवकार कही कांइ न मांडीयइ ?” तत्रार्थे-श्रीजिनप्रतिमा
ते सद्भाव स्थापना छई, स्यउ भाव ? जिनप्रतिमा आकार
अंगोपांग सहित छइ, एतलइ असद्भावस्थापना नवकार कहीनइ
थापीयइ, जइ अणथाप्यां क्रिया करइ ते प्रमाद अथवा कदाग्रह
जाणीयइ छइ । वली ते आयरियांनी थापना जइ गुरुनीजि

હવે તુ તેહ આગલિ ચૈત્યવંદના કિમ કહીયઈ ? તીર્થકરની સ્થાપના પલ્લવિ તે ન કહીયઈ ॥ ૭ ॥

ભાષા-તપા દેવેંદ્ર સૂરિજી સ્વકૃત ‘આવક દિનકૃત્ય’ (ભા. ૨ પાના ૬૦)માં “તઓ પોસહસાલં નુ૦” ઇત્યાદિ ગાથાની ટીકામાં લખે છે કે- ‘ત્યાર બાદ. એટલે પૌષધશાળાનું પ્રમાર્જન કર્યા બાદ નવકાર ગણવા પૂર્વક સ્થાપનાચાર્ય સ્થાપીનેજ વિધિએ સામાયિક કરે ’ એથી નવકાર (ગણવાપૂર્વક સ્થાપનાચાર્ય સ્થાપીનેજ આવકને સામાયિક કરવો કહ્યો છે. તથા તપાકૃત (આચારવિધિ નામક) સામાચારી ગ્રંથ(પાના ૧૧)માં પણ ‘ ગુરૂ પાસે નવકાર ગણવાપૂર્વક સ્થાપનાચાર્ય સ્થાપીને ધરિયાવહી પડિછમીને ’ ઇત્યાદિ કથનથી નવકાર ગણી સ્થાપનાચાર્ય સ્થાપવાનું કહ્યું છે, તેમજ ‘સ્થાપનાચાર્ય સ્થાપ્યા વગર (ક્રિયા કરવાથી) તથા મંત્રન્યાસ કરી સ્થાપેલ સ્થાપનાને પગ વિગેરે લાગે તો અનુક્રમે લિન્નલધુ અને ગુરૂમાસ પ્રાયશ્ચિત્ત આવે, તથા હાથથી અથવા સ્થાપનાચાર્યના સ્થાનથી પ્રમાદના કારણે પડી જાય અથવા અવસ્થાએ મુકાય તો અનુક્રમે લધુમાસ અને ગુરૂમાસ પ્રાયશ્ચિત્ત આવે ’ ઇત્યાદિ શ્રાદ્ધજીતકલ્પમાં કહ્યું છે, પરંતુ ઋષિમતીઓ માને યા ન માને (એમની મરજીની વાત છે), બીજું પૌષધશાળામાં જે સ્થાપનાચાર્ય હશે તે યાવતકથિકજ હશે (એટલે તેને નવકાર ગણવાપૂર્વક સ્થાપવાની જરૂરજ શેની હોય ?) એવું પૂછજો. વળી ધરિયાવહી પડિછમ્યા વગર આવકને ક્રિયા ન સૂઝે (એમ કહો) તો (ધરિયાવહી વગર) આવકને જે કાંઈ ક્રિયા ન સૂઝે ? તો તે આવકને ઉપાશ્રયમાં કાળે કાઢવો તથા ઉદ્ધરવો અને સ્થાપનાચાર્ય સ્થાપવા. એટલા (બધા) ધર્મના કાર્યો કેમ

સૂઝશે ? આ બાબત પણ પ્રસંગે જોવી. તથા તરણપ્રભ સૂરિજીએ આમ લખ્યું છે કે ‘ પંચ પરમેષ્ઠિની સ્થાપના નિમિત્તે સ્થાપના-આર્યની આગળ મન વચન કાયાની સાવધાનતા નિમિત્તે ત્રણ નવકાર કહીયે, અથવા જિન શાસનમાં જે કાર્ય કરીયે તે ત્રણ નવકાર ગણવાપૂર્વક કરીયે, આ કારણે પણ ત્રણ નવકાર ગણીયે ’ એટલે ક્રિયા કરતાં સ્થાપનાઆર્ય આગળ ત્રણ નવકાર કહેવા । વળી જે કહ્યું કે—‘ જિનપ્રતિમાને સ્થાપનાં પણ ત્રણ નવકાર કહી કેમ નથી સ્થાપતા ? ’ ઉત્તરમાં માત્રમ થાય કે—જિનપ્રતિમા તે સદ્ભાવ સ્થાપના છે, શું ભાવ ? જિનપ્રતિમાનો આકાર અ ગોપાંગ સહિત છે, એટલે અસદ્ભાવ સ્થાપના નવકાર કહી સ્થાપીયે, અણુથાપ્યે ક્રિયા કરે તે પ્રમાદ અથવા કદાચ જાણીયે છીએ. બીજું તે આઆર્યની સ્થાપના જો ગુરૂનીજ હોય તો તેની આગળ ચૈત્યવંદન કેમ કહેવાય ? તીર્થંકરની સ્થાપના સિવાય (બીજે) તે ન કહેવાય.

(તપા-ખરતર ભેદ ગ્રંથ ૧ બોલ ૮-૯, ગ્રંથ ૨ બોલ ૬-૧૩)

૮ પ્રશ્ન—તથા સ્વરતર શ્રાવકનહ સામાયિક વ્રત ઉચરાવતાં ૩ નવકાર ૩ કરેમિ મંતે ! ઉચરાવહ, તે સ્યું ?

ભાષા:—ખરતર શ્રાવકને સામાયિક વ્રત ઉચરાવતાં ત્રણ નવકાર ત્રણ કરેમિ ભંતે ! ઉચરાવે તે શું ?

તત્રાર્થે—યતિનહ વ્રતોચ્ચાર કરાવતાં “કરેમિ મંતે ! સામાય્યં”
 હૃત્યાદિ સામાયિક પાઠ વાર ત્રણ કહીયહ, જહ ૩ વાર વ્રતોચ્ચાર
 ન કરાવીયહ તહ વ્યવહાર માણ્ય મધ્યે ચતુર્યોદેશકે

પ્રાયશ્ચિત કહ્યા છઈ, તદ્યથા-“ સામાયિક તિગુણમદ્દગહણં ચ ”
 એહવા ભાષ્યના પાઠ થકી ટીકાકારઈં શ્રીમલયગિરિઈં (પત્ર ૫૮)
 “ ત્રીન્ વારાન્ સામાયિકમુચ્ચારયતિ ત્રિકૃત્વઃ સામા-
 યિકમુચ્ચારયતિ ” એહવા વાક્યોથી યતિનઈ દીક્ષા દેતાં
 ત્રિણિહ વાર સામાયિક દંડકનડ ઉચ્ચાર કરાવિવડ ફલાયડ છઈ,
 તેહ ભણી યતિની પરઈં શ્રાવકનઈ પુણિ ૩ વાર સામાયિક
 વ્રત ઉચ્ચાર કરિવડ, વલી શ્રીવ્યવહાર ભાષ્ય (ડ. ૪ પત્ર ૫૮)
 માંહિ ટીકાકારઈ ઇમ લિખ્યું છઈ “ અપત્તે અકહિત્તા,
 અણહિગય અપરિચ્છ અતિક્રમે પાસે । એકેકેકે ચડગુરુયા ”
 ઇતિ વ્યવહાર ભાષ્યં, (ગાથા ૩૧૧) વ્યાખ્યા-“ ‘સે’તસ્ય
 ઉપસ્થાપયિતોઽતિક્રમે-એકૈકસ્ય વ્રતસ્ય વારત્રય-મનુચ્ચારણે
 × × × પ્રાયશ્ચિત્તં ચત્વારો ગુરુકાઃ ” ૪ ઉદ્દેશકેયતનઈ વ્રતોચ્ચાર
 કરાવતાં એક એક વ્રત જૂજૂઆ ૩ વાર જઈ ગુરુ ન ઉચરાવઈ
 તડ ગુરુનઈ ચતુર્ગુરુ પ્રાયશ્ચિત્ત આવઈ, તડ શ્રાવકનઈ પુણિ
 સામાયિક નવમા વ્રત ઉચરાવતાં ૩ વાર કાંઈ ન ઉચરાવીયઈ ?
 જે ભણિ વ્રતોચ્ચાર સહુનઈ સરીખું જાંણી શ્રાવકનઈ ૩ વાર
 વ્રતોચ્ચાર કરિવુંજ છઈ, વલી જિહાં સામાન્યઈ સામાયિકનડ
 ઉચ્ચાર કહ્યડં છઈ, તિહાંઈ સામાયિક ૩ ફલાયા છઈ, જિમ
 શ્રીઓઘનિર્યુક્તિમાંહિ “ સામાયઈ ઉભયકાય પઢિલેહા ”
 એહવા પાઠની વ્યાખ્યા માંહિ “ સામાયઈત્તિ સામાયિકં
 વારત્રયમાકૃષ્ય સ્વપિતિ ” ઇમ વર્ણના છઈ રાઈસંથારાનઈ
 અધિકારિ, વલી રાઈસંથારાનઈજિ અધિકારિ “ સામાયિક-

દંડકં કઢુઈ ” ઇતિ શ્રાવક પ્રતિક્રમણચૂર્ણે, એતલંદં વંડક શબ્દઈ ૩ સામાયિકના પૂરા પાઠ કહાઈ, એતલઈ વ્રતોચ્ચાર કરતાં સામાયિક શબ્દઈ ૩ સામાયિક આવઈ । એવં તિહાં માંગલિક્રય નિમિત્તિ નવકાર પુણિ ૩ કહિયઈ +, જિમ તપાના કીધા (આચારવિધિ) સામાચારી ગ્રંથ (પત્ર ૧૧) માંહિ યતિનઈ પાઠીના પઢિકમણ સૂત્ર ઉમા મણાવતાં પહિલા ૩ નવકાર કહિવા કહ્યા છઈ, જોડ્યો, એવં પાઠીનઈ પઢિકમણઈ ૩ નવકાર જઈ વંદિતુ ગુણાવતાં કહીયઈ તડ દેવસીનઈ પઢિ-

+ તપા ખરતર ભેદ પૃ. ૫ માં જગ્યાચાર્ય લખે છે કે “ શ્રીજિનવલ્લભસૂરિ પૌષ્ઠવિધિમાં પંચમંગલ કહે છે, તઠે-ત્યાં પણ ‘બહુ’ શબ્દ નથી ” એટલે એમને પૂછવાનું કે, ઓધનિયુક્તિના આ ગ્રંથકારે ઉપર આપેલ સંચારોપોરસી વિષયક પાઠમાં એક વચન હોવા છતાં ટીકાકાર શ્રીદ્રોણાચાર્યજીએ ત્રણ વાર કરેમિ ભંતે બોલવાનું કેમ લખ્યું ? તેમ ખુદ જગ્યાચાર્ય આદિ પણ ત્રણ વાર કેમ બોલે છે ? એનો ખુલાસો શાસ્ત્રાનુસારે જગ્યાચાર્ય કરે, જેમ ત્યાં નિયુક્તિમાં એક વચન હોવા છતાં ટીકાકારે પરંપરાનુસાર ત્રણ કરેમિ ભંતે ! બોલવાનું કહ્યું, ને તે જગ્યાચાર્યાદિ પણ માને છે, તેમ પૌષ્ઠવિધિ પ્રકરણમાં ભલે “ પંચ મંગલ ” આમ એક વચન કહ્યું છતાં એમ નથી કહ્યું કે ‘ એક નવકાર ને એક કરેમિ ભંતે ? બોલવા ’ એટલે નવકાર, ને કરેમિ ભંતે ! બન્ને ૩-૩ જ બોલવા શાસ્ત્રાનુસાર છે, એકેક જ બોલવા એ તપાના ધરનો આચાર છે.

કમણઈ ? નવકાર કહાવીયઈ એ સ્યઈ મેલિ ? જોડ્યો, વલી-
આપણા ગચ્છાચાર ભણી જઈ ? નવકાર ? સામાયિક દંડક ઉચરઈ
તે ઉચર્યાંજિ કરડ, વિશેષાર્થીએ ૨૬ પ્રશ્નના ઉત્તર ગ્રંથ જોડવડન ।
એવં સામાયિક પારતાંઈ ૩ નવકાર જાણિવા, ૯ ।

ભાષા—સાધુને પ્રતોચ્ચાર કરાવતાં ત્રણ વાર સામાયિક દંડકનો
પાઠ ગુરૂ કહે એમ (શાસ્ત્રોમાં) કહ્યું છે, જે સાધુઓને ત્રણ વાર
પ્રતોચ્ચાર ન કરાવાય તો શાસ્ત્રોમાં પ્રાયશ્ચિત્ત કહ્યું છે, તે આ પ્રમાણે—
વ્યવહાર ભાષ્યના ચોથા ઉદ્દેશમાં (આવેલ) “ સમાઙ્યં તિગુણ-
મદૃગહણં ચ” આ ભાષ્યપાઠની ટીકામાં (આચાર્ય) શ્રીમલયગિરિજીએ
સાધુને દીક્ષા આપતાં ત્રણ વાર સામાયિક દંડક ઉચરાવવા કહેલ છે,
માટે સાધુની માફક સાધુના અનુયાયી શ્રાવકને પણ ત્રણ વાર સામાયિક દંડક
ઉચરાવવો (જોઈએ), વલી વ્યવહાર ભાષ્ય ચોથા ઉદ્દેશના “અપ્પત્તે
અકહિત્તા” ઇત્યાદિ પાઠની વ્યાખ્યામાં કહ્યું છે કે—સાધુને પ્રતોચ્ચાર
કરાવતાં એકેક વ્રત જુદા જુદા ત્રણ ત્રણ વાર જે ગુરૂ ન ઉચરાવે
તો ગુરૂને ચતુર્ગુરૂ પ્રાયશ્ચિત્ત આવે, તો પછી શ્રાવકને પણ સામા-
યિક નામનો નવમો વ્રત ત્રણ વાર કેમ ન ઉચરાવવો ? કારણ ?
પ્રતોચ્ચાર (સાધુ—શ્રાવક) બંધાનો સરખો છે, એમ સમજીને
શ્રાવકને ત્રણ વાર સામાયિક દંડક ઉચરાવવો જ જોઈએ, વલી જ્યાં
સામાન્યે સામાયિક દંડક ખેલવાનું કહ્યું હોય ત્યાં પણ સામાયિક
દંડક ત્રણ વાર બતાવ્યા છે, જેમકે ઓધનિયુક્તિના “સામાઙ્યં
ઉભયં” ઇત્યાદિ પાઠની વ્યાખ્યામાં “સામાયિક (કરેમિ મંતે !)

ત્રણ વાર કહીને સુવે ” એમ સંધારા પોરસીને અધિકારે કહ્યું છે, તેમજ શ્રાવકપ્રતિક્રમણ ચૂર્ણિમાં પણ સંધારા પોરસીના પ્રસંગે સામાયિક દંડક ત્રણ વાર ઉચરવા કહ્યું છે એટલે, પ્રતોચ્ચાર કરતાં સામાયિક શબ્દે ત્રણ સામાયિક આવે, અને ત્યાં મંગલ નિમિત્તે નવકાર પણ ત્રણ કહે. જેમ તપાના (આચારવિધિ નામક) સામાયિકી ગ્રંથમાં સાધુને ઉભા પાખીસૂત્ર લગાવતાં પહેલાં ત્રણ નવકાર બોલવા કહ્યા છે: જેને, તેમ (શ્રાવકને) પાખી પડિકમણે (પાખી સૂત્રના સ્થાને) વંદિતુ ગુણાવતાં જે ત્રણ નવકાર ગુણાવીયે તો દેવસી પડિકમણે (વંદિતુ કહેતાં) એક નવકાર કહે એ શું ? પોતાના ગચ્છાચારનાં લીધે એક નવકાર (એક) સામાયિક દંડક ભલેન ઉચરે, આ (આત્મતની) વિશેષતા જાણવાને ૨૬ પ્રશ્નોનો ઉત્તર ગ્રંથ જોવો ૮ । એમજ સામાયિક પારતાં ત્રણ નવકાર જાણવા ॥ ૯ ॥

(તપા ખરતર ભેદ ગ્રંથ ૧-૨, બોલ ૧૦ મો)

પ્રશ્ન ૧૦—તથા સ્વરતર શ્રાવક સામાયિક લેતાં પહિલત્ર સામાયિક ઉચરી પછડ્ઝ ઇરિયાવહી પઢિકમડ્ઝ, તે સ્યું ?

ભાષા—ખરતર શ્રાવક પહેલાં સામાયિક ઉચરીને પઢી ધરિયાવહી પડિકમે, તે શું ?

તત્રાર્થે—શ્રીઆવશ્યકબૃહદ્ વૃત્તિ ૧, આવશ્યકચૂર્ણિ ૨, પંચાશકવૃત્તિ ૩, પંચાશકચૂર્ણિ ૪, ઇત્યાદિ સર્વગચ્છસમ્મત જીર્ણ ગ્રન્થાંમાંહિ સામાયિક વ્રત લેવાનડ અધિકારિ શ્રીપૂર્વાચાર્યે તથા સગલાઈ ગચ્છાંને ગીતાર્થે આંપાપણાં કીધાં ગ્રન્થાંમાંહિ નિરવિરોધ

પણહ કરેમિ મંતે ! સૂત્રના પાઠ થકી પછહ ઇરિયાવહી પઢિક-
મિવડ કહ્યડ છહ “પછા ઇરિયં પઢિકકમહ” એહવહ વચનહકરી
“ પચ્ચાત્રીયાં ગથિકાં પ્રતિકામતિ ” એહવા પ્રાકૃત સંસ્કૃત વચનહ
કરી વચ્ચાણ્યડ છહ વાચી વચાવી જોજ્યો, જેહનહ જીયહ ગુરુની
પ્રતીતિ હોવહ તેહનહ પૂછિજ્યો ! વલી તપાગચ્છીય દેવેંદ્રસૂરિકૃત
‘શ્રાવક દિનકૃત્ય’ ગ્રન્થમાંહિ “કાઝણ ય સામાઢયં, ઇરિયં પઢિ-
કમિય ગમણામાલોણ । વંદિત્તુ સૂરિમાહ, સઙ્ખયાવસ્સયં કુણઈ
॥ ૧ ॥ એ ગાથા તથા એ ગાથાની ટીકા જોજ્યો, એહ ગ્રન્થમાંહિ
તપાગચ્છીય શ્રીદેવેંદ્રસૂરિહં નિરવિરોધિયહં સામાયિક વ્રત કરતાં
કરેમિ મંતે ! કહ્યા પૂઠહ ઇરિયાવહી પઢિકમિવી કહી છહ । તથા
“ નવમઘ્વતચૂર્ણે હિ સામાયિકદંડકોચ્ચાર ઈયાંપથપ્રતિ-
ક્રમણં ગુરુચૈત્યવન્દનશ્લોકતાનિ સન્તિ ” ઇત્યાદિ પ્રતિક્રમણ
વિચારે. એવં તપાનાઈ કર્યા ‘વિચારામૃતસંગ્રહ’ ગ્રન્થમાંહિ
૫ (સામાયિક) વિચારે કરેમિ મંતે ! કહ્યા પછી ઇરિયાવહી
પઢિકકમિવી કહી છહ, પરં કદાગ્રહી મનુષ્ય આપણાં ગુરુના
કહ્યાહ હઠ થકી ન માનહ તડ સ્યું કહીયહ ? વલી વિશેષાર્થીયહ
અસ્મત્કૃત ઇરિયાવહી છત્રીસીની વૃત્તિ જોહવી, તિહાં, પાઠવદ્દહ
પછહ ઇરિયાવહી પઢિકમિવાના ગ્રન્થાંના નામ (તથા) યુક્તિ
લિખી છહ, પરં દષ્ટિરાગી મ થાસ્યડ ॥ ૧૦ ॥

ભાષા—આવશ્યક બૃહદ્વૃત્તિ (પત્ર ૮૩૨), આવશ્યકચૂર્ણિ
(ઇતિરાહ્ ૫૦ ૨૯૯), પંચાશકવૃત્તિ (પત્ર ૨૩) પંચાશકચૂર્ણિ
(પત્ર ૯૩) ઇત્યાદિ સર્વગચ્છસંમત પ્રાચીન ગ્રંથોમાં સામાયિક વ્રત લેવાના

અધિકારે (સર્વામાન્ય) પૂર્વાચાર્યોએ તથા અધ્યાય ગચ્છોના ગીતાર્થોએ પોતપોતાના રચેલ ગ્રંથોમાં નિર્વિરોધપણે કરેલિ ભંતે ! ઉચર્યા પછી ઇરિયાવહી પડિસ્કમવાનું કહ્યું છે. “પચ્છા ઇરિયં પઢિવ્કમઈ” ઇત્યાદિ તથા “પશ્ચાદીર્યાપથિકાં પ્રતિક્રામતિ” ઇત્યાદિ પ્રાકૃત સંસ્કૃત પાઠોથી (સામાયિક ઉચર્યા પછી ઇરિયાવહી પડિસ્કમવાનું) અતાવ્યું છે, વાંચી વંચાવી જ્ઞેજ્ઞે, જ્ઞેતે જ્ઞે ગુરૂની પ્રતીતિ હોય તેને પૂછિ જ્ઞેજ્ઞે, વહી તપાગચ્છીય દેવેંદ્રસૂરિકૃત શ્રાવક દિનકૃત્ય (ભા. ૨ પત્ર ૩૨) માં “કારુણ ય સામાઈયં” ઇત્યાદિ ગાથા તથા એ ગાથાની ટીકા જ્ઞેજ્ઞે, તેમાં દેવેંદ્રસૂરિજીએ નિર્વિરોધપણે સામાયિક ઉચર્યા પછી ઇરિયાવહી પડિસ્કમવી કહી છે તથા તપાગચ્છના (કુલમંડલ સૂરિએ) કરેલા ‘વિચારામૃત સંગ્રહ’ માં પ્રતિક્રમણ-સામાયિકના અધિકારે ‘નવમા વ્રતની (આવશ્યક) ચૂલિમાં સામાયિક દંડક ઉચરવું ઇરિયાવહી પડિસ્કમવી અને ગુરૂવંદના-ચૈત્યવંદના કરવી કહી છે ’ આવા કથનથી કરેલિ ભંતે ! ઉચર્યા પછી ઇરિયાવહી પડિસ્કમવી કહી છે. પરંતુ કદાચહી માણસ પોતાના ગુરૂના વચન પણ હકકદાચહથી ન માને તો શું કહીયે ? વહી વિશેષ જાણવાની ઇચ્છાવાલાએ અમારી રચેલ ઇરિયાવહી છત્રીસીની ટીકા (તથા આ ગ્રંથ સંપાદકના પૂજ્ય ગુરૂદેવ પંન્યાસપ્રવર શ્રીમત્કેશર મુનિજી ગણિવર લિખિત ‘પ્રશ્નોત્તર વિચાર’ નામની પુસ્તક) જ્ઞેધ લેવી. ત્યાં (સામાયિક ઉચર્યા બાદ) ઇરિયાવહી પડિસ્કમવાના પાઠ (તથા) યુક્તિઓ લખી છે, + પરંતુ દષ્ટિરાગી ન થશો ॥ ૧૦ ॥

+ ઉકેશ (કમળા) ગચ્છના આચાર્ય શ્રીદેવગુપ્તસૂરિ રચિત ‘નવપદ પ્રકરણ’ની સ્થોપસલધુવૃત્તિ. પત્ર ૪૨, ૨ તેમના જ શિષ્ય ઉપાધ્યાય

૧૧ પ્રશ્ન—તથા સામાયિક કરતાં તપા ઉમાં ૩ નવકારની સજ્ઞાય કરઈ સ્વરતર ગચ્છિ સામાયિક કરતાં ઉમાં સજ્ઞાય ૮ નવકારની ક્રરઈ, તે સ્યું ? ।

ભાષા—સામાયિક કરતાં તપા ત્રણ નવકારની સજ્ઞાય કરે અને ખરતર ગચ્છમાં આઠ નવકારની સજ્ઞાય કરે, તે શું ?

શ્રીયશોદેવરચિત 'નવપદ પ્રકરણ'ની બૃહદ્વૃત્તિ પત્ર ૨૪૩, ૩ આગમિક ગચ્છના શ્રીતિલકાચાર્યકૃત સામાચારી પત્ર ૧૫, ૪ તેમની રચેલ આવશ્યક લઘુવૃત્તિ, ૫ ચંદ્રગચ્છીય શ્રીવિજયસિંહાચાર્ય રચિત 'શ્રાદ્ધ પ્રતિક્રમણ (વંદિતુ)'ની ચૂર્ણિ, ૬ તપા ગચ્છના ઉપાધ્યાય શ્રીમાન વિજયજી રચિત. અને ન્યાયાચાર્ય ઉપાધ્યાય શ્રીયશોવિજયજી સંશોધિત 'ધર્મસંગ્રહ' પૂવાર્દ પત્ર ૮૪, ૭ યાકિની મહત્તર ધર્મપુત્ર આચાર્ય શ્રીહરિભદ્રસૂરિ રચિત 'શ્રાવકપ્રશ્નત્રીકા', ૮ બૃહદ્ ગચ્છીય આચાર્ય શ્રીમાનદેવસૂરિ રચિત 'શ્રાવકધર્મ પ્રકરણ ત્રીકા' પત્ર ૮૭, ૯ કલિકાલ સર્વજ્ઞ આચાર્ય શ્રીહેમચંદ્ર સૂરિ રચિત 'યોગશાસ્ત્ર'ની સ્વોપજ્ઞ ત્રીકા પત્ર ૧૭૬, ૧૦ સુવિદિત ક્રિયા રચી શ્રાવક અંબપ્રસાદ કૃત 'નવતત્ત્વ સંવેદન પ્રકરણ ત્રીકા' પત્ર ૮, ૧૧ ઉપાધ્યાય શ્રીજિનપાલગણિ રચિત 'દ્વાદશ કુલક ત્રીકા' પત્ર ૨૧, ૧૨ યવનસમ્રાટ મહમદ તુઘલક પ્રતિબોધક આચાર્ય શ્રીજિનપ્રભસૂરિ રચિત 'વિધિમાર્ગ પ્રપા' પત્ર ૬, ૧૩ રૂપદ્વીપ ખરતર ગચ્છ વિભૂષણ આચાર્ય શ્રીવર્દમાન સૂરિ રચિત આચાર દિનકર પત્ર ૩૧૬, ૧૪ અંચન્ન ગચ્છીય આચાર્ય શ્રીમાણિક્ય કુંજરસૂરિ રચિત 'શ્રાવક પ્રતિક્રમણ વિધિ' ૧૫ ઉપાધ્યાય શ્રીક્ષમાકલ્યાણ ગણિરચિત 'શ્રાવક

તત્રાર્થે-ઉભયકાલિ ઊમા સજ્ઞાય કરતાં ૩ નવકાર માંગલિક નિમિત્તિ અનઇ ૫ નવકાર સજ્ઞાયનઇ ઠામિ સંભાવીયઇ, જે મળી સાધુનઇ પુણિ જઘન્યઇ પાંચ ગાથાની સજ્ઞાય કરવી કહી છઇ,

વિધિપ્રકાશ'. ઇત્યાદિ પ્રાપ્તિ સર્વમાન્ય એવં અનેક ખીજ પણ આચાર્યોપાધ્યાયોએ સ્વસ્વરચિત ગ્રંથોમાં સામાયિક વિધિ બતાવતાં સામાયિક ઉચર્યા પછીજ ઇચ્છાવહિયા પડિકમવાનું કહ્યું છે. પણ કોઇય સર્વમાન્ય સુવિહિત આચાર્યો સામાયિક લીધા પહેલાં ઇચ્છા વહિયા પડિકમવાનું કહેતા નથી.

યદિ કોઇ કહે કે પૌષધમાં પહેલાં ઇચ્છાવહિયા કેમ પડિકમે છે ? તો એના ઉત્તરમાં જણાવવાનું કે શાસ્ત્રકારો કહે છે “આણાણ ધમ્મો” અર્થાત્ શાસ્ત્રકારોએ જે જે ક્રિયાઓ કરવામાટે જેવી જેવી વિધિ બતાવી હોય તે અધી તથાવત્ કરીને તેમની આજ્ઞાનું પાલન કરવામાંજ ધર્મ છે, નહીં કે આજ્ઞારહિત સ્વેચ્છાચારિતામાં, એટલે સ્વગચ્છ સામાચારીના દુરાગ્રહવાળા નહી, પણ સર્વમાન્ય પ્રમાણિક સુવિહિત આચાર્યોમાંથી કોઇએ પૌષધ લીધા પછી ઇચ્છાવહિયા પડિકમવાનું કહ્યું હોય તો તે પ્રમાણે કોઇ બતાવે, જ્યારે શાસ્ત્રકારો કોઇ પણ એમ કહેતા નથી તો પછી માત્ર સામાયિક વિધિના આધારે દરેક ક્રિયાઓમાં પાછળથીજ ઇચ્છાવહિયા પડિકમવાનું એટાંત હઠ કરવાની શક્તિ નહોતી અમારા પૂજ્ય પૂર્વાચાર્યોમાં તેમ નથી અમારામાંય, આ તો જન્મવાચાર્યજ ને તેમના પૂર્વ લેખકોનાજ ધરનો આચાર છે કે જે સર્વમાન્ય શાસ્ત્રકારોએ દર્શાવેલ સામાયિક ઉચર્યા

શાસ્ત્રમાંહિ ૩ નવકારની સજ્જાય નથી જાણી, તથા પોસહ લીયાં
પછી સજ્જાય કરતાં ૩ નવકાર માંગલ્ય નિમિત્તિ (અનંદ) શ્રીરૂપ-
દેશમાલ્લાની ૩૩ ગાથા સજ્જાયનંદ ઠામિ છઠ્ઠ, તથા પોસહતા

પછી ઇરિયાવહિયા પડિકમવાના વિધાનને અનેક જાતના તર્કવિતર્ક
કરવારૂપ વિતંડાદ દ્વારા ઉગાડી દેવું. અને જ્યાં સામાયિકનું નામ
નિશાન સરખુંએ નથી, તેવા મહાનિશીથ. દશવૈકલિક ટીકા આદિના
સામાન્ય આત્મો સંબંધી પાઠો અતાવી સામાયિકમાં પણ પહેલાં
ઇરિયાવહિયા પડિકવાનું સિદ્ધ કરવા વ્યર્થ પ્રયાસ કરવું. મહાનિશીથનો
પાઠ ઉપધાનનો ક્રમ અતાવનાર છે. દશવૈકલિક ટીકાનો પાઠ સાધુના
આચાર સંબંધી છે. પંચાશક ચૂર્ણિ વિગેરેના કેટલાએ પાઠો
પૌપધવિધિના છે. નહીં કે સામાયિક વિધાના, આમ સામાયિકમાં
પહેલાં ઇરિયાવહિયા પડિકમવાના સમર્થન માટે જે જે પ્રમાણપાઠો
રજી કરાય છે તે અધાય બીજા બીજા વિષયના હોવા છતાં સામાયિકમાં
પણ પહેલાં ઇરિયાવહિયા પડિકમવાની સાબીતિ માટે તે પ્રમાણપાઠો
અપાય છે. અને જે મહાનિશીથના પાઠને આગળ કરીને સામાયિકમાં
પહેલાં ઇરિયાવહિયા પડિકમવાની સિદ્ધિ કરવા મથી રહ્યા છે તે મહા-
નિશીથના પાઠમાં નામનિર્દેશ કરાયેલ હોવા છતાં સજ્જાય કરતાં પહેલાં
ઇરિયાવહિયા પડિકમતા નથી. અર્થાત્ મહાનિશીથ સૂત્રમાં ઇરિયા-
વહિયા પડિકમ્યા વગર જે જે ક્રિયાઓ અકલ્પનીય અતાવી છે તેમાં
સામાયિકનું નામ નથી, પણ સજ્જાયનું તો નામ ચોક્કસ લખેલ છે.
જીઓ-“ગોયમા ! અપ્પહિકકંતાણે ઇરિયાવહિયાણે ન કપ્પઈ ચેવ

શ્રાવક તથા વીજાઈ જે શ્રાવક માંમ્નિનઈ પઢિકમણઈ જે ૩ તવ-
વ ર કહઈ તે માંગલિક્ય નિમિત્તિ જાણિવા, પોસહતાનઈ જે
કાઠં કિંચિ વિ, ચેઈયવંદણસઙ્ખાયા(વસ્તુયાઈયં)ખાણાઈયં ”
આ પાઠમાં ધરિયાવહીયા પઢિકમ્યા વગર સગ્ગજાય કરવી અડદપનીય
કહેલ છતાં સામાયિક લીધા પછી કરાતી સગ્ગજાયની ભુદી ધરિયા-
વહિયા નથી પઢિકમતા, આ તે તપા ધણીઓના ધરનોજ આચાર છે. આ
સ્થળે ‘સેનપ્રશ્ન’ નો નીચે લખેલ પ્રશ્નોત્તર ખૂબજ વિચારવા યોગ્ય છે.

“પચ્છા ઇરિયાવહિયાણ-ઈતિ પાઠાનુસારેણ શ્રાદ્ધાનાં સામા-
યિકકરણાનન્તરમીર્યાપથિકીપ્રતિક્રમણં દૃશ્યતે, તસ્યાર્થઃ પ્રમાણ
ઈતિ પ્રશ્નોઽત્રોત્તરં-એતસ્ય વિસ્તરઃ સર્વોઽપ્યાવશ્યકચૂર્ણમધ્યેઽસ્ત્યન્યે
ગ્રન્થાસ્તુ સર્વે તદનુસારિણો વર્તન્તે । તથાઽવશ્યકચૂર્ણમધ્યે
ઈર્યાપથિકી સામાયિકસમ્બદ્ધા નાસ્તિ, યતો ‘જઈ ચેઈયાઈ અત્થિ’
ઇત્યાદિકસ્ત્ર પાઠઃ કથિતોઽસ્તિ, તસ્માચ્ચૈત્યગમનસમ્બદ્ધાઽસૌ જ્ઞાયતે,
અન્યસ્તુ સામાયિકકરણવિધિરીર્યાપથિકીપ્રતિક્રમણમુલ્લવસ્ત્રિકા-
પ્રતિલેખનાદિઃ સર્વઃ પરમ્પરયા જ્ઞાયતે, તત ઈર્યાપથિકીં પ્રતિક્રમ્યૈવ
સામાયિકં કરણીયમિતિ ૧૧૨ । (ઉ. ૩ પત્ર ૫૯)

આ ઉપર આપેલ પાઠમાં પ્રશ્નકર્તા પૂછે કે—

(આવશ્યક ચૂર્ણ તથા મોટી ટીકાના) ‘પચ્છા ઇરિયાવહિયાણ’
આ પાઠના અનુસારે શ્રાવકોને સામાયિક કર્યા પછી ધરિયાવહિયા
પઢિકમવાનું હોય એમ જોવાય છે. એટલે આ ઉપરોક્ત પાઠનો
અર્થ બતાવવા કૃપા કરશે ?” ઉત્તરમાં આ : વિગત સેન સૂચિ
કરમાન જાહેર કરે છે કે “આ આખતનો વિસ્તાર (ચર્ચા)

સજ્ઞાયની લ્વમાસમણ તે રાત્રિની સૂત્રપૌરુષી સાચવિવા નિમિત્તિ
જાણીયઙ્ છઙ્, રાત્રી પોસહતા શ્રાવકનઙ્ પહરતાંઙ્ જે સ્તવન સ્તુતિ
સજ્ઞાય ગુણિસ્યઙ્ એ સૂત્રપૌરુષી નિમિત્તિ જાણીયઙ્ છઙ્ ॥૧૧॥

આવશ્યક ચૂર્ણિમાં છે, ખીજી ગ્રંથો તો બંધ છે તેનો અનુસરણ
કરનારા છે, અને આવશ્યક ચૂર્ણિમાં કહેલ ધરિયાવહિયા સામાયિક
સંબંધી નથી, કારણ કે—ત્યાં (આ. ચૂ.માં) ‘જઙ્ ચેઙ્ચાઙ્ અત્થિ’
છત્યાદિક પાઠ કહેલ છે, એથી એ (આવશ્યક ચૂર્ણિમાં કહેલ)
ધરિયાવહિયા દેશસર જવા સંબંધી હોય એમ જણાય છે, ખીજી
તો સામાયિક કરવાની વિધિ ધરિયાવહિયા પડિકમવી મુહપત્તી
પડિલેહવી આદિ બંધી પરંપરાથી જાણવાની, માટે ધરિયાવહિયા
પડિકમીનેજ સામાયિક કરવું.”

આ ઉપરના કથનથી વાંચકોને જણાયું હશે કે—આ ઉત્તર
આપતાં સ્વમાન્યતાની પુષ્ટિના આશયથી કેવી ચાલબાજી સાથે
હુસ્યારીનો આગ્રય આચાર્યશ્રીએ લીધો છે ?

આચાર્યશ્રીએ માત્ર “જઙ્ ચેઙ્ચાઙ્ અત્થિ” એટલો અધૂરો
વાક્ય લખીને સહસા ફરમાન જાહેર કરી દીધું કે આવશ્યકચૂર્ણિમાં
“પચ્છા ઈરિયાવહિયાએ” આ વાક્યથી કહેલ ધરિયાવહિયા સામાયિક
સંબંધી નથી, કિંતુ દેશસર જવા સંબંધી જણાય છે, પરંતુ થોડી
સ્થિરતાએ વિચારપૂર્વક, ને પોતાની માન્યતાનો આગ્રહ છોડી સરલ
ભાવે જો ઉત્તર આપવાનું ધાયું હોત તો પ્રસંગ પૂરતો સંપૂર્ણ
પાઠ જરૂર લખતે, પણ સંપૂર્ણ પાઠ લખતાં આચાર્યશ્રીની માન્યતા

ભાષા:-અન્ને ટાઈમ (સામાયિકમાં) સજ્જાય કરતાં ત્રણ નવકાર મંગલ નિમિત્તે અને પાંચ નવકાર સજ્જાયના સ્થાને સંભાવિયે છીએ,

સિધ્ધ થઈ શકે તેમ નહોતી, એટલેજ મનફાવતું લખીને રાગગ્રસ્ત ભક્તોને તો યદ્યપિ સમગ્નવી દીધા, છતાં શાસ્ત્રસોની દૃષ્ટિએ તો આગિ-શતાજ નેવાય છે, કારણ કે આવશ્યકચૂર્ણિમાં સામાયિક લીધા પછી, ને ધરિયાવહિયા પડિકમવાનું કહ્યા પહેલાં ચૂર્ણિકાર લખે છે કે “જઈ ચેઈયાઈ અત્થિ તો પઢમં વંદતિ” એનો અર્થ થાય છે કે—‘જે દેરાસર હોય તો ‘પઢમં’ એટલે સામાયિક લીધા પહેલાં, પ્રભુ પ્રતિમાને વંદન કરે’ અહિં ધરિયાવહિયા પડિકમીને નહીં, પણ સામાયિક લીધા પહેલાં પ્રભુ વંદન કરવાનું કહ્યું છે, એથી પાટકો વિચારી શકે છે કે સામાયિક લીધા પછી કહેલ ધરિયાવહિયા દેરાસર જવા સંબંધી કેવી રીતે માની શકાય ? એટલે આચાર્યશ્રીએ કહ્યા મુજબ આવશ્યક-ચૂર્ણિ કથિત ધરિયાવહિયા દેરાસર જવા સંબંધી નહીં પણ સામાયિક સંબંધીજ છે, હાં ચૂર્ણિકારે ‘જઈ ચેઈયાઈ અત્થિ તો ઈરિયં પઢિકકમિય ચેઈયાઈ વંદતિ’ આમ લખ્યું હોત તો જરૂર આચાર્ય શ્રીની અભીષ્ટ સિદ્ધિ કંઈક અંશે થવી સંભવ હતી, પરંતુ તેમ લખ્યું નથી. એટલેજ અધૂરો વાક્ય લખીને સ્વભક્તોને સમગ્નવી દેવાનો પ્રયાસ યદ્યપિ કરવો પડ્યો છે, છતાં તેમાં સફળતાતો પાણી વલોવનારને મળે. એથી વધારે જરાએ નથી મળી, અસ્તુ.

એજ વિષયને લગતા સેન પ્રશ્નનાં આ બીજા પ્રશ્નોત્તર વિષે પણ થોડો વિચાર કરી લઈએ—

કારણ કે સાધુને પણ જ્યન્યે પાંચ ગાથાની સંજ્ઞાય શાસ્ત્રમાં કહી છે. પણ નવકારની સંજ્ઞાય શાસ્ત્રમાં કહી હોય તેવું જાણમાં નથી.

કાંસ્મિન્ શાસ્ત્રે શ્રાદ્ધસ્ય સામાયિકકરણાવસરે પ્રથમમીર્યા-
પથિકીં પ્રતિક્રમ્ય સામાયિકમુલ્લવસ્ત્રિકાં પ્રતિલેખ્યતીતિ ઉક્ત-
મસ્તિ ? તત્પ્રમાણમિતિ પ્રશ્નોઽત્રોત્તરં-ઈરિયાવહિયાએ અપ્પહિકકં-
તાએ ન કિંચિ કપ્પઈ, ચેઈયવંદણમજ્ઞાયાવસસયાઈ કાઠં’ इत्यक्षराणि
મહાનિશીથગ્રન્થે મન્તિ, તતઃ સામાયિકેઽપીર્યાપથિકી પૂર્વમેવ પ્રતિ-
ક્રમ્યતે इति ज्ञायते । तथा आवश्यकचूर्णौ ढङ्ढश्चावको विभातकाले
गृहान्निस्तृत्य शरीरचिन्तां विधायोपाश्रये ईर्यापथिकीं प्रतिक्रामन्
કથિતોઽસ્તિ, સા વેળા સામાયિકપ્રતિક્રમણકરણસ્યેતિ ૪૬।
ઉ. ૪ (પત્ર ૧૦૭)

આમાં પૂ. વામાં આપ્યું છે કે-“ શ્રાવકને સામાયિક કરતી
વખતે પહેલાં ઇરિયાવહિયા પડિકમીને સામાયિક મુહપત્તી પડિલેહવી’
એમ કયા શાસ્ત્રમાં કહ્યું છે ? ” આના ઉત્તરમાં આ૦ વિજય સેન
સૂરિજી ફરમાવે છે કે-“ મહાનિશીથ સૂત્રમાં ‘ ઇરિયાવહિયા પડિકમ્યા
વગર ચૈત્યવંદન સંજ્ઞાય આવશ્યકાદિ કાંઈ પણ કરવું નથી કલ્પતું ’
એમ કહેલ છે, એટલે સામાયિકમાં પણ ઇરિયાવહિયા પહેલાંજ
પડિકમવી એમ જણાય છે, તથા આવશ્યક ચૂર્ણિમાં ઢ, ઢર શ્રાવક
સવારના ટાઇમે ઘેરથી નીકળી શરીરચિન્તા કરીને ઉપાશ્રયમાં ઇરિયા-
વહિયા પડિકમતો કહેલ છે, તે વેળા સામાયિક પ્રતિક્રમણ
કરવાની છે. ” સુત્ર વાંચકો ! જોયું ને. આચાર્યશ્રી કેવ હુશ્ચારી
બાપરે છે ? વિચારવાની વાત છે કે-આવશ્યક ચૂર્ણિમાં ઢ, ઢર શ્રાવકે

તથા પોસહ લીધાં પછી સજ્જાય કરતાં ત્રણ નવકાર મંગલ નિમિત્તે (અને) ઉપદેશમાલાની તેત્રીસ ગાથા સજ્જાયના યથાને છે, અને સવારે ધરિયાવહિયા પડિકમી લખી છે, ને તે વેળા સામાયિક પ્રતિક્રમણની છે, તો શું ગુરૂવંદનની નથી ? અવશ્ય છેજ. પણ તે ઢઢરે ધરિયાવહિયા પડિકમીને શું સામાયિક લીધું છે કે ગુરૂવંદન કયું છે ? એની સ્પષ્ટતા તો આચાર્યશ્રીએ જરૂર કરી બતાવવી હતી. પણ કરે કેવી રીતે ? તેમ કરવા જતાં આચાર્ય શ્રીને પોતાની અભીષ્ટ સિદ્ધિમાં મંગળ પડીજવાની પૂરેપૂરી ધારતી હતી. કેમકે ત્યાં (આવશ્યક ચૂર્ણિમાં) સામાયિક લેવાનાં નહીં, પણ ગુરૂવંદનનોજ પ્રસંગ છે. જુઓ—

‘તત્થ ઢઢરસાવઞ્ચો, સો સરીરચિતં કાઠ્ઠણ માધૂણ પહિસસયં વચ્ચતિ, તાહે તેણ દ્વે ઠિતેણ તિણિસ નિસીહિયાઞ્ચો કતાઞ્ચો, ઇરિયાદી ઢઢરેણ સરેણ કરેતિ । સો પુણ મેહાવી, તં ઉવધારેતિ, સોવિ તેણેવ ઉવકમેણં ઉવાગતો, સવ્વેસિં સાધૂણં કતં ।’

(આવ૦ ચૂ૦ પૂ૦ પૃ૦ ૪૦૩)

આ પાઠમાં ચૂર્ણિકાર કહે છે કે—પંડિત આચાર્યશ્રી (સાધુ અવસ્થામાં આચાર્યશ્રીસૂરિ) માતાની પ્રેરણાને અંગે દષ્ટિવાદ પૂર્વ ભણવાની અભિલાષાએ તોસલિપુત્રાચાર્યના ઉપાશ્રયની બાહાર દરવાજા પાસે આવીને ‘આચાર્ય મં પાસે જઈને શું વિધિ કરવી ?’ એ ભણવાની ઇચ્છાએ ઊભા રહ્યા છે, એટલામાં “ તેજ નગરનો રહેવાસી ઢઢર નામનો શ્રાવક પોતાની શરીરશંકાથી નિવૃત્ત થઈ સાધુઓના ઉપાશ્રયમાં જાય છે, તે વખતે તે ઢઢર શ્રાવકે દૂર રહે થકે એટલે

પોસાતી તથા બીજા પણ આવક સાંજે પડિકમળમાં જે ત્રણ નવકાર કહે છે તે મંગલ નિમિત્ત ગણવા. પોસાતીને જે સજ્જાયાના

ઉપાશ્રયના દરવાજામાં પેસતાંજ ત્રણ વાર 'નિસીહિ' કહી ત્યાર બાદ ધરિયાવહિયા આદિ એટલે ધરિયાવહિયા પડિકમીને, સામાયિક નહીં, પણ ગુરુદેવ, મોટા સ્વરે બેલતો કરે છે, અને તે (આર્થ રક્ષિત) શુદ્ધિશાળી હોવાથી અઘો ક્રમ ધારીને તેના તે ક્રમે આવી બધા સાધુઓને વંદન કર્યું " આ ઉપર બતાવેલ ચૂર્ણિકારના કથનથી વાંચકોની સમજમાં આવી ગયું હશે કે હજાર આવકના અધિકારમાં સામાયિકનું પ્રસંગ જરાએ નથી. છતાં આચાર્યશ્રી સામાયિકમાં પણ પહેલાં ધરિયાવહિયા પડિકમવી સાખીત કરવા મથી રહ્યા છે. આ બધું તીવ્ર દષ્ટિરાગનો માહાત્મ્ય છે અસ્તુ.

બીજું યુક્તિથી પણ સામાયિક ઉચ્ચ પહેલાં ધરિયાવહિયા પડિકમવી ઉચિત નથી, જેમકે ઘરના બારીબારણા બંધ કરવાવડે બહારથી આવતા રજને રોક્યા શિવાય કે તે ઘરમાંથી બરાબર નીકળી શકતો નથી. જેમ કાદવમાં ખુંચાયેલ માણસ કાદવમાંથી બહાર નીકળ્યા શિવાય ગમે તેટલું ધૂવે તોય બરાબર શુદ્ધિ થઈ શકતી નથી, તેમ કરેમિ ભંતે ! ઉચરવા વડે સાવઘ યોગના દ્વાર બંધ કર્યા શિવાય કે તે સાવઘયોગ રૂપ કાદવમાંથી બહાર નીકળ્યા પહેલાં ધરિયાવહિયા પડિકમવાની શુદ્ધિ બરાબર થઈ નથી શકતી, અને જેમ ઔદરિક મળનો ત્યાગ કર્યા બાદ, નહીં કે તે પહેલાંજ, જલ શુદ્ધિ કરવી યોગ્ય લેખાય. તેમ કરેમિ ભંતે ! ઉચરવાવડે સાવઘ યોગરૂપ મળનો ત્યાગ કર્યા બાદજ જલશુદ્ધિરૂપ ધરિયાવહિયા પડિકમવી યોગ્ય લેખાય. છતાં પહેલાં ધરિયાવહિયા પડિકમવાનો જે આગ્રહ રાખવો તે તો જલશુદ્ધિ કર્યા બાદજ ઔદરિક મળના ત્યાગનો આગ્રહ રાખવા બરાબર છે. અસ્તુ.

અમાસમણા છે તે રાત્રિની સૂત્રપોરસી સાચવવા નિમિત્તે છે. (અને) રાત્રે (એક) પ્રહર સુધી પોસાતી શ્રાવક જે સ્તવન સ્તુતિ સજ્જાયા યુગ્મે તે સૂત્રપોરસી નિમિત્તે છે

(તપા ખરતર ભેદ ગ્રંથ ૧-૨, બોલ ૧૨ મો)

૧૨ પ્રશ્ન-તથા પ્રમાતિ સ્વરતર શ્રાવક પોસહ પલ્લવ પડિકમ્યાં પૂઠઈ પોસહતાની પરિ સૂત્રપૌરુષી નિમિત્તિ સજ્જાયાની સ્વમાસમણ દેહનઈ સજ્જાયા ન કરઈ, કિંતુ સામાયિક લેતાંજિ સજ્જાયાની સ્વમાસમણ દીધી હુંતી તિણઈજિ આદેશઈ બઈઠા સજ્જાયા કરઈ, તે સ્યું ? ।

ભાષા—ખરતર શ્રાવક પ્રભાતે પોસહ શિવાય પડિકમ્યા પછી પોસાતીની માફક સૂત્રપોરસી નિમિત્તે સજ્જાયાના અમાસમણા દધને સજ્જાયા ન કરે, કિંતુ સામાયિક લેતાં સજ્જાયાના અમાસમણા દીધાં હતાં તેણેજ આદેશે બેઠા સજ્જાયા કરે, તે શું ?

તત્ત્વર્થે-પડિકમણા થકી પહિલોકઈ (?) સામાયિક લેતાં સજ્જાયાની સ્વમાસમણ દીધાંઈજ છઈ, જઈ સજ્જાયાની સ્વમાસમણ વલી દેઈ સજ્જાયા કરઈ તડ વલી બઈસણાની સ્વમાસમણ કાંઈ ન દઈ ? તે સ્વમાસમણ દેતા નથી જાણ્યા, અનઈ પોસહતા શ્રાવક તે પડિલેહણ કરી વસતિ પૂંજ્યાં પછઈ સૂર્ય ઝગાં થકાં આગલી સૂત્રપોરિસીનઈ સાચવિવા કાજિ સજ્જાયા સંદિસાવી સજ્જાયા કરઈ, પરં સામાયિકધરનઈ સૂત્રપૌરુષી નથી જાણી ૧૨ ।

ભાષા:-પડિકમણાથી પહેલાં સામાયિક લેતાં સજ્જાયાનાં અમાસમણ દીધાંજ છે, (એટલે બીજી વાર અમાસમણા દેવાની

આવશ્યકતા નથી), યદિ સજ્જાયના ખમાસમણ ફરીથી આપીને સજ્જાય કરાય તો ખેસણાના ખમાસમણા ફરીથી કેમ ન દેવા ? (પરંતુ) તે ખમાસમણ દેતાં કોઇને જાણ્યા નથી. અને પોસાતી શ્રાવક પડિલેહણ કરીને વસતિ પૂજ્યા બાદ સૂર્યોદય થયા પછી આગળની (દિવસની) સૂત્રપોરસી સાચવવા નિમિત્તે (ખે ખમાસમણે) સજ્જાય સંદિસાવી સજ્જાય કરે, પરંતુ સામાયિક વાળાને સૂત્ર પોરસી જાણી નથી. x

(તપા ખરતર ભેદ ગ્રંથ ૧ ખોલ ૧૩, ગ્રંથ ૨ ખોલ ૧૫૩ મો.)

૧૩ પ્રશ્ન-તથા તપા ચવદિસઈ પાઘી કહઈ, સ્વરતર પૂનમે પાઘી આગમની માઘી કહઈ, તે સ્યું ?

ભાષા:-તપા ચૌદશે પાખી કહે, ખરતર પૂનમે પાખી આગમોક્ત કહે, તે શું ?

તત્રાર્થે-આગમોક્ત પાઘી ૧૫ પચ્છરસીયઈ હતી, આચર-ણાની પાઘી ૧૪ જાણિવી, શ્રીઠાણા ગ્રંથમાંહિ શ્રીદેમાચાર્યનઈ ગુરુ શ્રીદેવચંદ્રસૂરિઈ આચરણાયઈ ચવદિસઈ ઝઘાઢી પાઘી લિખી છઈ, આગમોક્ત પાઘી પનરસીઈ લિખી વઈ, તેહનો પાઠ-

x તપા શ્રાવક સાંજે પડિકમણ બાદ સામાયિક પારતી વખતે ચઉકસાયનું ચૈત્યવંદન કરતાં ખમાસમણ નથી દેતા તેમ આદેશ પણ નથી માગતા. તે કયા શાસ્ત્રમાં કહ્યું છે ? કે ગુરૂના આદેશ વગર ચૈત્યવંદનાદિ ક્રિયાઓ કરવી. એનો ઉત્તર જાણ્યાયાર્થે આપે.

“[તવ્વસેણ ચ] પક્ષિચ્ચયાઈણિ ચઉદ્ધસીપ આયરિયાણિ, અન્નહા
આગમુત્તાણિ પુણિમાપ” તથા તપા ગચ્છના (કુલમંડનસૂરિયે)
કીધા વિચારામૃતસંગ્રહ ગ્રન્થમાંહિ પુણિ એહજિ પાઠ છઠ્ઠ, વિશેષા-
ર્થીયઈ અસ્મત્કૃત પોસહછત્રીસીની વૃત્તિ જોડવી, અથવા ગોલવચ્છા
ઠાકુરસીના પૂછ્યા ૨૬ બોલાંરા ઉત્તરના ગ્રન્થ જોડવા તેહમાંહિ
યુક્તિ લિખી છઠ્ઠ ॥ ૧૩ ॥

ભાષા:-આગમોક્ત પાખી પનરસીએ (પૂનમ-અમાસે) હતી.
ચૌદસે આયરણાની છે, હાણા પ્રકરણમાં આચાર્ય શ્રીહેમચંદ્ર સૂરિના
ગુરુ શ્રીદેવચંદ્ર સૂરિએ આયરણાએ ચૌદસે અને આગમોક્ત પૂનમ-
અમાસે પાખી ખુદ્દી લખી છે, તેનો પાઠ-(તવ્વસેણ ચ) પક્ષિચ્ચયાઃ
અર્થાત્ ચોથની સંવત્સરી થવાના કારણે પાક્ષિકાદિ એટલે પાખી
અને ચોમાસી ચૌદસે આયરેલાં છે, અન્યથા આગમમાં પાખી-ચોમાસી
પૂનમ-અમાસે કહેલ છે, તેમ તપા ગચ્છના (કુલમંડન સૂરિએ)
રચેલ વિચારામૃત સંગ્રહમાં પણ એજ પાઠ છે, વિશેષ જાણવાની
છંદછાવાળાએ અમારી રચેલી પોસહછત્રીસીની ટીકા (સંસ્કૃત)
જોવી અથવા ઠાકુરસી ગુલેજાએ પૂછેલા ૨૬ પ્રશ્નોના ઉત્તરનો ગ્રંથ
જોવો. તેમાં બધી યુક્તિઓ લખી છે +

+ તપા ખં ભેદ પૃ. ૮ માં લખ્યું છે કે-“ ખરતર જિનપ્રલ
સૂરિકૃત ‘દુઃખમદંડિકા’ માં ચૌદસ પાખી કહી છે ” તો જંખ્વા-
ચાર્યજીએ તેનો પ્રમાણ પાઠ કેમ ન લખ્યું ? કેવળ તે ગ્રંથનું
નામ માત્ર આપી દેવાથી કેમ માની શકાય કે ‘દુઃખમદંડિકા’માં
ચૌદશે પાખી કહી છે, જે જિનપ્રલ સૂરિજી જાતે ચૌદશના ક્ષયે પૂનમ-

(તપા ખરતર બેઠે ગ્રંથ ૧ ખોલ ૧૪, ગ્રંથ ૨ ખોલ ૧૬ મો)

૧૪ પ્રશ્ન-તથા સ્વરતર સાંગરી બેકરીયા બાવલીયા આબિલી
ઇત્યાદિ વિદલ કરઈ છઈ, તે મ્યું ?

અમાસની પાખી કરવા ચોક્ખી આજ્ઞા લખે છે. તે ખોતેજ સદાથી
ચોક્ખે પાખી લખે. એ અનેજ કેમ ? અને માને પણ કોણ ?

આ આખતને લગતો ‘ હીરપ્રશ્ન ’ નો નીચે લખેલ પ્રશ્નોત્તર
ખાસ વિચારણીય છે—

यदा चतुर्मासकं पूर्णिमायामभूत्तदा प्रतिक्रमणानि पञ्चविंश-
तिरष्टाविंशतिर्वा बभूवुः ? तथा तानि शास्त्राक्षरबलेन विधीयमानानि
परम्परातो वा ? शास्त्राक्षरबलेन चेत्तदा तदभिधानं प्रसाद्यमिति
प्रश्नोऽत्रोत्तरं-वर्षमध्ये प्रतिक्रमणानि पञ्चविंशतिरष्टा-विंशतिर्वेति कापि
ज्ञातं नास्ति, शास्त्रमध्ये तु दैवસिक-રાત્રિક પાક્ષિક-ચાતુર્માસિકસાંવ-
ત્સરિકલક્ષણાનિ પચ્ચ પ્રતિક્રમણાનિ પ્રતિપાદિતાનિ સન્તીતિ ॥૧૫॥

(હીર પ્રશ્ન હં. વિ. લા. અમદા. પ્ર. પત્ર ૩૦)

પ્રશ્નકર્તા પૂછે છે કે “ જ્યારે ચોમાસી પૂનમે હતી ત્યારે (પાક્ષિ-
કાદિ) પ્રતિક્રમણો પચીસ હતા કે અઠાવીસ ? ” ઉત્તરમાં આચાર્ય
શ્રીહીરવિજય સૂરિજી મં. કરમાવે છે કે—“ વર્ષમાં પ્રતિક્રમણો પચીસ કે
અઠાવીસ જાણવામાં આવ્યા નથી, શાસ્ત્રોમાં તો દેવસી રાઘ પાખી
ચોમાસી અને સાંવત્સરી. આ રીતે પાંચ પડિક્રમણાઓ કહેલા છે, ”
આથી સુઝ વાંચકો જોઈ શકશે કે આ ઉત્તર આપતાં આચાર્યશ્રીએ
કેવી હુશ્યારી કરી છે ? પ્રસંગાગત આખતને ઉઝાડી દધને ખીજેજ

ભાષા:—ખરતર સાંગરી બેકરીયા (કુમડીયા) આવલીયા. આંબલી ધત્યાદિ વિદલ કરે છે, તે શું ?

તત્રાર્થે—અહમાંહિ ચીગટ નથી જાણતા, તેહ મળી એ વિદલ જાણીયડ છડ, વલી સાંગરી પ્રમુલ શાસ્ત્રે ફલીની પાંતિમાંહિ ગીતાર્થે લિલ્યા તે મળી ધરતર સાંગરી તથા બાવલિયા વિદલ કહડ છડ, વલી કેવલી મગવંત કહડ તે પ્રમાણ, વલી જેહનડ જેહ ગુરુના કહ્યાની પ્રતીતિ થાડ તેહ તેહ ગુરુના કહ્યા માનડ ૧૪

ભાષા—એ (સાંગરી આવલીયા આદિ) માં ચિકાસ નથી જણાતું માટે એને વિદલ માનીએ છીએ, બીજું શાસ્ત્રમાં ગીતાર્થેએ સાંગરી આદિને ફળીની પંક્તિ(શ્રેણી)માં લખેલ છે. એટલે ખરતર

ઉત્તર આપી રહ્યા છે, પ્રશ્નકર્તાનું પૂછવું છે કે—“ જ્યારે ચોમાસી પૂનમે હતી ત્યારે પ્રતિક્રમણો કેટલાં હતાં ” આનો અર્થ શું ‘પાક્ષિકાદિ પ્રતિક્રમણો’ ન લેતાં બીજા સામાન્ય પ્રતિક્રમણો લેવાનો કોઈ પણ રીતે હોઈ શકે ખરો ? કે જેથી ઉત્તર આપતાં આચાર્યશ્રીને ‘ શાસ્ત્રોમાં પાંચજ પ્રતિક્રમણો ’ હોવાનું કહેવાની ફરજ પડે છે, વસ્તુતઃ હકીકત એમ છે કે આચાર્યશ્રી જો પચીસ પડિક્રમણાં કહે તો સદ્ધર્મી ચૌદશે પાખીની સ્વમાન્યતા સિદ્ધ થઈ શકે નહીં, અને જો અઠાવીસ કહે તો પ્રશ્ન ઉદ્ભવે છે કે ‘ હમણાં ત્રણે ચોમાસીઓ ચૌદશે કરીને ત્રણ પાખીઓ કમતી કેમ કરી નાંખી ? એથી ‘ઇતો વ્યાઘ્ર ઇતસ્તદી’ના ન્યાયે બન્ને બાજુની આપત્તિ ટાળવા ખાતર આચાર્યશ્રીને આ રીતની હુશ્યારી ખતાવી ભકતોને સમજાવવા પડ્યા છે. અસ્તુ.

ગચ્છાવાળાઓ સાંગરી-આવળીયા (આદિ)ને વિદ્વ કહે છે. છતાં કેવલી ભગવાન કહે તે પ્રમાણ (છે), ખીળું જેહને જે ગુરના વચન ઉપર પ્રતીતિ હોય તેઓ તે ગુરના કહ્યા (મુજબ) માને. +

+ સર્વ માન્ય પ્રાચીન શાસ્ત્રોતો એવો પ્રમાણ જગંપ્યાચાર્ય ખતાવે કે જેમાં ‘ સાંગરી-આવળીયા કુમડીયા આદિ વિદ્વ નથી ’ એમ ચોક્કસ લખેલ હોય, અન્યથા ચોક્કસ એ દગ ભુદા થાય છે અને તેલના જેવો ચિકાસ મુદ્દલે જોવાતો નથી. છતાં તેને જે વિદ્વ ન માને તેના હૃદયમાં ત્રસ જીવોનીય દયાને સ્થાન ક્યાં રહ્યું ? ખીળું તપા ખરતર ભેદ પૃં ૮ માં લખ્યું છે કે-‘ એવું મહાજને સૌ સાંભળ્યું છે (કે) એમાં ચિકણાધ હોય છે, તેથી વિદ્વ ન થાય’ એટલે પૂછવાનું કે તે સાંગરી આવળીયા આદિમાં ચિકણાધ હોવાનું ક્યા મહાજને સાંભળ્યું છે ? જગંપ્યાચાર્યજીના પૂર્વ લેખકાએ અથવા એમના માની લીધેલ મહાજને સાંભળ્યું હોય અગરતો પક્ષપાત દષ્ટિએ જોયું પણ હોય તો તેની ના ન કહેવાય. પરંતુ વિચારક માણસ તો કદાપિ ન માની શકે કે સાંગરી આદિમાં ચિકાસ હોય છે. પૃં ૯ માં જગંપ્યાચાર્યજી લખે છે કે “ પ્રતિપક્ષિઓએ બનાવટી ઉભા કરેલ ગ્રંથો ગમે તે નામ નીચે માની થકાતા નથી ” એના ઉત્તરમાં જણાવાનું કે તમારા પ્રતિપક્ષી ખરતરોને તો કોઈ ખનાવટી ગ્રંથો ખનાવવાની આવશ્યકતા નથી. જેમ કે તમારા પૂર્વજોને આ ગ્રંથના પ્રશ્નોત્તર ૧ ની કુટનોટમાં ખતાવ્યા પ્રમાણે આવશ્યક વૃત્ત્યાદિના નામે નવો પાઠ ઉભો કરવો પડ્યો તમારા સેનસુરિજોને આનંદસુરિકૃત પ્રવચન સારોદ્ધારની ટીકા જોવામાં ન આવી અથવા હમણાં ન મળતી હોય તેથી તે ગ્રંથનું સર્વથા અભાવ કેમ માની શકાય. માટે અમારા પૂર્વજોએ ખનાવટી ગ્રંથનું નામ ક્યાંય નથી લખ્યું.

(तपा भरतर लेद भं. १ ओल १५, भं. २ ओल १८ भो)

१५ प्रश्न—तथा खरतर पडिकमणा ठावतां तथा काउसगग आवश्यक करतां १ करेमि भंते ! कहइ अनइ पडिकमणा आवश्यक करतां ३ करेमि भंते ! कहियइ, ते स्युं ?

आधा:—भरतर पडिकमणा ठावतां तथा काउसगग आवश्यक अेक अने पडिकमणा (वंदितु) आवश्यक त्रणु करेमि भंते छे, ते स्युं ?

तत्रार्थे—नवकार सहित जिहां करेमि भंते ! कहियइ तिहां शास्त्रनइ न्यायइ ३ नवकार ३ करेमि भंते ! कहियइ, तपानइ पुणि पडिकमणा आवश्यक करतां १ नवकार १ करेमि भंते ! कहइ अनइ पडिकमणा ठावतां वली काउसगग आवश्यक करतां १ नवकार न कहइ ते स्युं ? काउसगग आवश्यकनइ नवकार कहियता हवइ तउ तिहां करेमि भंते ! पिण कहियइ तथा एक [ए पुणि] विचारियइ पच्चक्खाण पारतां १ नवकार कहियइ छइ करेमि भंते ! न कहियइ, एवंकारइ नवकार पखइ करोम भंते ! १ कहियइ तिम पडिकमणाइ ठावतां तथा काउसगग नाम आवश्यक करतां नवकार न कहियइ, वली तपांइ राती पोसहता रातइं सूवतां ३ नवकार ३ करेमि भंते ! कहइ तथा श्रावकांनइ चउथउ व्रत उचरावतां ३ वार व्रत उचरावइ तथा यतिनइ महाव्रत उचरावतां ३ वार (महा)व्रत उचरावइ, तउ श्रावकांनइ सामायिक व्रत १ वार उचरावइ ते स्युं ? तथा यति जइ पा(खी)सूत्र गु(भ)-णावतां ३ नवकार कहइ तउ श्रावक पाखीसूत्र (नइ ठामइ) वंदितु गुणावतां ३ नवकार न कहइ ते विचारिवउ ॥१५॥

ભાષા:—જ્યાં નવકાર સહિત કરેમિ ભંતે ! કહેવાનું હોય ત્યાં શાસ્ત્ર દષ્ટિએ ત્રણ નવકાર અને ત્રણ કરેમિ ભંતે ! કહેવા જોઈએ, તપાને પણ પ્રતિક્રમણુ આવશ્યક કરતાં નવકાર ને કરેમિ ભંતે ! ૧-૧ કહે છે અને વલી પડિકમણુ હાવતા તથા કાઉસ્સગ્ગ કરતાં ૧ નવકાર નથી કહેતા (ફક્ત કરેમિ ભંતેજ કહે છે) તે શું ? કાઉસ્સગ્ગ આવશ્યકે નવકાર કહેવાતા હોય તો કરેમિ ભંતે ! પણ ત્રણ કહેવાય, વલી એક આ પણ વિચારવાનું કે પચ્ચક્ખાણુ પારતાં નવકાર કહીયે છીએ. પણ કરેમિ ભંતે ! નથી કહેતા, એવી રીતે નવકાર વગર કરેમિ ભંતે ! એક કહીયે, તેમ પડિકમણુ હાવતાં તથા કાઉસ્સગ્ગ નામનો આવશ્યક કરતાં નવકાર નથી કહેતા. ખીણું તપાને રાત્રિપોસાતી શ્રાવક રાત્રે સૂવાના ટાઈમે (પોરસી ભણાવતાં) ત્રણ નવકાર ને ત્રણ કરેમિ ભંતે ! કહે છે. અને શ્રાવકને ચોથો વ્રત ઉચરાવતાં તેમ સાધુને મહાવ્રત ઉચરાવતાં ત્રણ વાર ઉચરાવે તો પછી શ્રાવકને સામાયિક વ્રત એક વાર ઉચરાવે તે શું ? તથા સાધુ પાખી સૂત્ર ભણાવતાં ત્રણ નવકાર કહે છે તો શ્રાવક પાખી સૂત્રના હામે વંદિતુ ગુણાવતાં ત્રણ નવકાર ન કહે તે વિચારવું.

(તપા-ખરતર ભેદ ગ્રંથ ૧ ખોલ ૧૬, ગ્રંથ ૨ ખોલ ૧૭)

૧૬ પ્રશ્ન--તથા તપા સદા શ્રુતદેવતા-ક્ષેત્રદેવતાના ૨ કાઉસગ્ગ કરઈ, અનઈ સ્વરતર પાક્ષી-ચઝમાસા પજૂસણાંનઈ પઢિકમણઈ શ્રુત-ભવન-ક્ષેત્ર દેવતાના ૩ કાઉસગ્ગ કરઈ, તે સ્યું ?

ભાષા:—તપા શ્રુતદેવતા-ક્ષેત્રદેવતાના બે કાઉસ્સગ્ગ સદા કરે, અને ખરતર પાખી ચોમાસી અને સંવત્સરી પડિકમણામાં શ્રુતદેવતા-ભવનદેવતા, ને ક્ષેત્ર દેવતાના (એમ) ત્રણ કાઉસ્સગ્ગ કરે, તે શું ? ॥૧૫॥

तत्रार्थ—“ चाउम्मासियसंवच्छरिण य सअखित्तदेव-
याए उस्सग्गं करेति, केइ पुण चाउम्मासिए सिज्जादेवयाए
वि काउस्सग्गं करेति ” इत्यावश्यकवृत्तौ । तथा “चाउम्मा
सिए एगो उवस्सदेवताए काउस्सग्गो कीरति, संवच्छरीए
खित्तदेवताए वि कीरति अब्भहिओ ” इत्यावश्यकचूर्णिः ।
संवच्छरीए क्षेत्रदेवता-भवनदेवताना काउस्सग्ग श्रीआवश्यकवृत्ति
तथा चूर्णिमांहि कया छइ अनइ श्रीजिनप्रभाचार्यइ श्रीविधिप्रपा
ग्रंथमांहि ते काउस्सग्ग निषेध्या ते अभिप्राय नथी जाण्या,
चउम्मासइ भवनदेवताना काउस्सग्ग श्रीपंचवस्तुक वृत्ति (पत्र
८०) मांहि कया छइ, तद्यथा—“ आयरणा सुयदेवय-माईणं
होइ उस्सग्गो ॥ ४६ ॥ आचरणया इदानीं श्रुतदेवतादीनां
भवति कायोत्सर्गः । आदिशब्दात् क्षेत्र-भवनदेवतापरिग्रहः
इति गाग्रथः । ” तथा “ चाउम्मासियवरिसे, उस्सग्गो
खित्तदेवयाए उ । पक्खियसेज्जसुराए, करेति चउम्मासिए
वेगे ॥ ९१ ॥ चातुर्मासिके वार्षिके च, प्रतिक्रमणे इति गम्यते,
कायोत्सर्गः क्षेत्रदेवताया इति, पाक्षिके शय्यासुरायाः—
भवनदेवताया इत्यर्थः चातुर्मासिकेऽप्येके मुमय इति
गाग्रार्थः । ” इति पंचवस्तुकसूत्रवृत्तिः (पत्र ८०) बली पाखी
भवनदेवताना काउस्सग्ग साधुदिनचर्या ओसवालगच्छनी कीधी.
तेहमांहि छइ, अनइ श्रीजिनवल्लभसूरिनी कीधी समाचारीमांहि
भवनदेवताना काउस्सग्ग छइ । तथा तपा त्रिहुं पर्वे श्रुतदेवताना
काउस्सग्ग (न करे अने) श्रुतदेवताना थुं जि (न) कहइ तेस्युं १६।

ભાષા:- ‘યોમાસી અને સંવચ્છરીએ શ્રુદેવતા અને ક્ષેત્રદેવતાના કાઉરસગ્ગ કરે છે અને કેટલાકો યોમાસીમાં ભવનદેવતાનો પણ કાઉરસગ્ગ કરે છે’ આવી રીતે આવશ્યક ધૃષ્ટવૃત્તિમાં કહ્યું છે, તથા ‘યોમાસીમાં એક ભવનદેવતાનો કાઉરસગ્ગ કરે છે, અને સંવચ્છરીએ ક્ષેત્રદેવતાનો પણ (કાઉરસગ્ગ) અધિક કરે છે’ આ રીતે આવશ્યક ચૂલ્હિનો કથન છે । સંવચ્છરીએ ક્ષેત્રદેવતા-ભવનદેવતાના કાઉરસગ્ગ શ્રીઆવશ્યક વૃત્તિ તથા ચૂલ્હિમાં કહ્યા છે, અને શ્રીજિનપ્રભસૂરિએ વિધિપ્રપામાં તે કાઉરસગ્ગ નિષેધ્યા છે, (પણ તેમનો) અભિપ્રાય જાણ્યો નથી. યોમાસીએ ભવનદેવતાનો કાઉરસગ્ગ પંચવસ્તુકની ટીકામાં છે, તે આ પ્રમાણે છે- ‘આચરણાથી હમણાં શ્રુદેવતાદિના, એટલે શ્રુત-ભવન-ક્ષેત્ર દેવતાના કાઉરસગ્ગ કરવાનાં, તે યોમાસી અને સંવચ્છરીમાં ક્ષેત્રદેવતા તથા પાખીમાં ભવનદેવતાનાં કાઉરસગ્ગ કરવાં, કેટલાએક મુનિઓ યોમાસીમાં પણ ભવનદેવતાનો કાઉરસગ્ગ કરે છે’ આ રીતે પંચવસ્તુક ટીકા (પત્ર ૮૦) માં કહ્યું છે. ખીજું ઓસવાળ (ઉકેશ) ગચ્છવાળાઓની રચિત સાધુદિનચર્યામાં તેમજ જિનવલ્લભ સૂરિજી સ્વકૃત સામાચારીમાં પાખીએ ભવનદેવતાનો કાઉરસગ્ગ કરવા કહે છે. (એટલે ખરતર ગચ્છવાળાઓ ત્રણે પર્વમાં ભવનદેવતાનો કાઉરસગ્ગ કરે છે, પરંતુ) તપાઓ ત્રણે પર્વમાં શ્રુતદેવતાનો કાઉરસગ્ગ નથી કરતા અને તેની સ્તુતિ પણ નથી કહેતા, (તે આ શાસ્ત્રના આધારે ?) x

x તપા-ખરતર ભેદ પૃ. ૧૩૦ ખોડ ૧૭ માં મૂળ લેખક લખે છે કે-“ સ્વરતરનંદ પાણીદિને શ્રુતદેવતા કાઉસગ ૨ કરઈ, ભવન દેવતા, एवं ૩ કરઈ ॥ ” એના અનુવાદમાં આગમાપ્રત્ય પણ

(તપા ખરતર ભેદ ગ્રંથ ૧ ખોલ ૧૭, ગ્રંથ ૨ ખોલ ૧૯ મો)

૧૭ પ્રશ્ન-તથા ભાદ્રવૈવધતાં સ્વરતર પહિલૈ ભાદ્રવૈવધપૂજણા કરૈ તથા શ્રાવણ વધતાં વીજૈ શ્રાવણૈ પૂજણા કરૈ, અનઢ તપા શ્રાવણ વધતૈ ભાદ્રવૈવધપૂજણા કરૈ ભાદ્રવૈવધ વધતૈ અધિક મામનૈ અણગિણતાં વીજૈ ભાદ્રવૈવધ પૂજણા કરૈ, તે સ્યું ? ।

‘ માખીના સ્થાને માખી મૂકી દેવી ’ એ લોકોક્તિનું અનુસરણ કરતા લખે છે કે-“ ખરતર પખખી દિવસે શ્રુતદેવતાના કાઉસગ મે અને ભુવનદેવતાનો એક, એ પ્રમાણે ત્રણ કરે છે.” આ અનુવાદ લખતાં એટલુંય વિચાર ન થયું કે-શ્રુતદેવતાનાંજ કાઉસગ મે એકી વખતે કેમ કરતા હશે ? અને એજ ખોલની સરખાતમાં મૂળ લેખકે લખેલ “ શ્રુતદેવતાદિક ” શબ્દનું પણ વિચાર ન આવ્યું. અને આ લેખકની ભૂલ કે જે “ શ્રુતદેવતાદિક ” ના બદલે માત્ર ‘ શ્રુતદેવતા ’ આટલું લખીનેજ આગળ લખાણ ચલાવી દીધું એનુંય વિચાર ન આવ્યું. વાહ ધન્ય છે એમની આગમાપ્રજ્ઞતાને, અરે !! એટલી અર્થ વિચારણાની વાત તો આવી રહી. પણ પરમતાસહિષ્ણુતા-દર્ષા અને અહંપદના આવેશમાં એટલું શબ્દ વિચાર પણ ન થયું કે-અહિં ‘ ભવન ’ શબ્દ હોવું હીક કે ‘ ભુવન ’ શબ્દ, શબ્દકોષોમાં ક્યા ક્યા અર્થોમાં ‘ ભવન ’ અને ‘ ભુવન ’ શબ્દો વપરાયાં છે ? મગજને કાબુમાં રાખીને શબ્દકોષનો થોડો પણ ઉપયોગ દીધો હોત તો મૂળ લેખકે ‘ ભવનદેવતા ’ લખ્યા છતાં પોતાની વિદ્વત્તા બતાવતાં ‘ ભુવનદેવતા ’ કહી ન લખતે. આ પણ આગમાપ્રજ્ઞતાનો એક પ્રદર્શન છે. અસ્તુ.

ભાષા:-ખરતર ભાદ્રવે વધ્યે પહેલા ભાદ્રવે અને શ્રાવણ વધ્યે ખીઝ શ્રાવણે પજૂસણ કરે, (ત્યારે) તપા શ્રાવણ વધ્યે ભાદ્રવે અને ભાદ્રવે વધ્યે અધિક માસને ન ગણતાં ખીઝ ભાદ્રવે પજૂસણ કરે, તે શું?

તત્રાર્થે—શ્રાવણ વધતાં તથા ભાદ્રવડ વધતાં ચતુમાસી પઢિકમ્યા થકી ૫૦ દિનેં સિદ્ધાંતનડ ન્યાયડ પર્યુષણા કીજડ છડ, તથા “વીસહિં દિણેહિં કપ્પો” આચરણાનડ મેલિ ચતુમાસા થકી વીસે દિને પણ પર્યુષણા ન કીજડ, પંચક દિન હાનિ પુણિ ન કરવી, એ આચરણા ગચ્છવાસીનડ કરિવી, ઘલી અષાઢ વધતાં વીજડ આષાઢિં ચતુમાસાનાં પઢિકમણ કરિવા, એ શાસ્ત્રોક્ત ન્યાય છડ, અધિક માસ પુણિ શાસ્ત્રનડ ન્યાયડ ગિણીજડ, તે મળી અભિવદ્ધિત સંવચ્છરિં શાસ્ત્રે ૨૬ પર્વ (પક્ષ) કહ્યા, ચંદ્રસંવત્સરં ૨૪ પર્વ (પક્ષ) કહ્યા છડ, અનડ પજૂસણના પઢિકમણ થકી ૭૦ દિને કાતી ચતુમાસાના પઢિકમણા કીજડ, તે સહજડ એતલે દિને પઢિકમિયડ, કારણ વિશેષડ અધિકેં દિને પઢિકમણત ચતુમાસાનત સંભાવિયડ, હહાં દશ પંચકની વિચારણા કરિવી, જિમ જિમ ઓલડ ઓલં પંચકડ પજૂસણ કરિયડ તિમ તિમ આગિલા ૭૦ દિન ૫-૫ દિને વધતા થાડ “હ્ય સત્તરી જહન્ના” એ પાઠ વિચારિવડ, ઘલી શ્રીકાલકાચાર્ય યુગપ્રધાનડ પડઠાણપુરના રહેણહાર યતિયાંનડ હમ કહાવ્યડ—જે “તુમ્હે અમ્હે આવ્યા પહિલડ પર્યુષણા મ કરિસ્યડ, અમ્હે આવ્યાં પર્યુષણા કરિસ્યડ,” તે મળી હમ જાણીયડ-ભાદ્રવા સુદિ ૫ થકી ડરડેં પર્યુષણા પર્વ થાતડ,

ઝગરડ ઝગડ પર્યુષણા થાઢ ત્યારડ પર્યુષણા થકી ચતુમાસા ૭૦ દિવસાં થકી અધિકે દિને પઢિકમાડ, અપરં પજૂસણા ટં વાલી કીધાં થકી પછડ ચતુમાસા પઢિકમવાની ચાલિ છડ, જીયડ આષાઢે (વિહું થાતે વીસે દિને કરતા તડઅઈં પજૂસણાથી ૧૦૦ દિને કાતીચતુમાસા પઢિકમિતા, તથા ‘વાર માસ ચતુવીસ પક્ષ ૩૬૦ [રાત્રિ] દિન’ ઇત્યાદિ જે પાઠ છડ તે ચંદ્ર સંવત્સરને મેલડ [છડ] અન્યથા અભિવર્દિત સંવત્સરડ ૩૬૦ દિન પુણિ વરસડ થાડ છડ, ૩૦ દિનના કીધા પાપ પુણ્ય તે નહીં ગિણડ (તો] હમ્માસી યોગવહતાં અધિક માસ થાતાં તેહ માસ લેખડ અણગિણતાં સાતે માસે હમ્માસી થાસ્યડ, એવં અધિક માસના અધિક તિથિના કીધા તપ સંયમ તથા નવકલ્પી વિહાર કિમ થાસ્યે ? એ પુણિ વિચારિવડ, એવં પરિછિજ્યો ॥ ૧૭ ॥

ભાષા:—શ્રાવણ કે ભાદ્રવે વધ્યે ચોમાસી પ્રતિક્રમણથી પચાસ દિને સિદ્ધાંત સમ્મત પજૂસણ કરીએ છીએ, તથા (તિથ્યોગ્ગાનિય પચત્રા કથિત) “વીસહિં દિગેહિં કપ્પો” (આ) આચરણા સંમત ચોમાસાથી વીસ દિવસે પણ પજૂસણ ન કરીએ, પાંચક દિન હાનિ પણ ન કરવી, એ આચરણા ગચ્છવાસીએ કરવી, ખીજું આપાઠ વધ્યે ખીજા આપાઠમાં ચોમાસી કરવી શાસ્ત્ર સંમત છે, અધિક માસ પણ શાસ્ત્રન્યાયે ગણત્રીમાં છે, + એટલા માટે તો શાસ્ત્રોમાં અભિ-

+ ખીજા આખતમાં તો કહેવાનુંય શું હોય ? પણ ખાસ પજૂસણના દિવસની સંખ્યામાંએ શાસ્ત્રકારોએ તો અધિક માસને ગણત્રીમાં લીધો છે. જુઓ નિર્ણયીચૂર્ણિ તથા બૃહત્કલ્પચૂર્ણિ, આ બન્ને પ્રમાણપાઠો આ ગ્રંથનાજ આગળના ટિપ્પણમાં આપ્યા છે.

વર્ધિત (અધિકભાસવાળા) વર્ષે છવીસ અને ચંદ્ર (અધિક ભાસ વગરના) વર્ષે ચોવીસ પક્ષ x (શાસ્ત્રકારોએ સ્પષ્ટાક્ષરોમાં) કહ્યા છે. અને સંવચ્છરી બાદ સિત્તેર દિવસે જે કાર્તિક ચોમાસી કરવી તે સહેજે (વગર કારણ) એટલા દિવસે ચોમાસી પડિશ્કમવી, (પણ) કારણ વિશેષે (સિત્તેરથી) અધિક દિવસે (પણ) ચોમાસી કરવી સંભાવિત છે, અહિં દશ પંચકની વિચારણા કરવાની, જેમ જેમ પહેલે પહેલે પંચકે પગૂસણ કરીએ તેમ તેમ આગળના સિત્તેર દિવસમાં પાંચ પાંચ દિવસ વધતા થાય, “ઇય સત્તરી જહન્ના” એ પાઠ વિચારવો, અને યુગપ્રધાન શ્રીકાલકાચાર્યે પદ્મહાણુપુરમાં ચોમાસું રહેલા સાધુઓને કહેવરાવ્યું કે—‘અમારા આવ્યા પહેલાં પગૂસણ ન કરશો, અમારા આવ્યા પછી કરજો’ તેથી એમ જણાય છે કે—તે સમયે ભાદ્રવાસુદી પાંચમથી પહેલાં પગૂસણ પર્વ થતું હતું, જ્યારે પર્યુષણ પહેલાં થાય ત્યારે પગૂસણથી ચોમાસીના દિવસ સિત્તેરથી અધિક (અવશ્ય) થાય, બીજું પગૂસણ (બાદ) દીવાલી કીધાં પછી ચોમાસી પડિશ્કમવાની

x “ગોયમા ! અભિવદ્ધિયસંવચ્છરસ છવ્વીસાઈં પવ્વાઈં, ચંદસંવચ્છરસ ચઉવ્વીસાઈં પવ્વાઈં ।” (જંબુદીવ-ચંદ-સૂરપત્તી)
 “પંચસંવચ્છરિએ જુગે બાસદઠી પુણિમાઓ બાવટ્ઠી અમાવસાઓ ।”
 (સમવાયાંગ સૂત્ર)

“તેરમ ય ચંદમાસા, એ(વા)સો અભિવદ્ધિઓ ઉ નાયવ્વો ।”
 (જ્યોતિષકરંડક પથનો)

ચાલ (રીતિ) છે, બ્યારે આપાઠ બે થતા ‡ વીસદિવસે (પજૂસણ) કરતા

‡ જૈન પંચાંગોની હયાતામા “અભિવદ્ધિયમ્મિ વીસા, હય-
રેમુ સવીસઈમાસો ।” (કલ્પનિ૦), “અભિવદ્ધિયવરિસે વીસતિ-
રાતે ગતે ગિહિણાતં કરેતિ, તિસુ ચંદવરિસેસુ સવીસતિરાતે માસે
ગતે ગિહિણાતં કરેતિ ।” (નિશીથચૂર્ણિ), આદિ શાસ્ત્રાજ્ઞાનુસાર
અભિવર્ધિત વર્ષમાં આપાઠ ચોમાસીથી ૨૦ દિવસે સાંવત્સરિક પ્રતિ-
ક્રમણાદિ કૃત્યયુક્ત ગૃહીજ્ઞાત પજૂસણ થતા, ગૃહીજ્ઞાત પસજૂસણ તે કહેવાય કે
જેમાં સાંવત્સરિક પ્રતિક્રમણાદિ કૃત્યો કરવામાં આવે, એજ વાત તપગચ્છા-
ચાર્ય શ્રીકુલમંડનસૂરિજી સ્વકૃત કલ્પસૂત્રની અવચૂરિમાં લખે છે, જુઓ

“ ગૃહિજ્ઞાતા તુ સા-યસ્યાં સાંવત્સરિકાતિચારાલોચનં લુશ્ચનં
પયુષણાકલ્પસૂત્રકથનં ચૈત્યપરિપાટી બ્રષ્ટમં તપઃ સાંવત્સરિકં પ્રતિ-
ક્રમણં ચ ક્રિયતે ।” અર્થ-ગૃહિજ્ઞાત પજૂસણ તે કહેવાય કે જેમાં
વર્ષભરના અતિચારોનું આલોચન, લોચ, કલ્પસૂત્રની વાચના, ચૈત્ય-
પ્રવાડી, અદ્ભુતનું તપ અને સાંવત્સરિક પ્રતિક્રમણ, આ બધા કર્તવ્યો
કરવામાં આવે છે. ”

અધિકમાસને ગણત્રીમાં ન લેવાના હિમાયતી કલ્પસુબોધિકાદિ
ટીકાકારોએ જે “કશ્ચિત્ ‘અભિવદ્ધિયમ્મિ વીસા, હયરેસુ સવી-
સઈમાસો’ इति वचनबलेन मासाभिवृद्धौ विंशत्या दिनैरेव
लोचादिकृत्यविशिष्टां पर्युषणां करोति, तदप्ययुक्तं, येन ‘अभि-
वद्विद्यमि वीसा’ इति वचनं गृहज्ञातमात्रापेक्षया ।”

અર્થાત્-‘જે ‘અભિવદ્ધિયમ્મિ વીસા’ આ પાઠથી અભિવર્ધિત
વર્ષમાં વીસ દિવસે પજૂસણ કરવાનું કહે છે તે અયુક્ત છે, કારણ ?

ત્યારે પજૂસણથી (પાછળ) સો દિવસે કાર્તિક ચોમાસી પડિક્રમતા, તથા 'બાર માસ, ચોવીસ પક્ષ, ત્રણસે સાઠ દિવસ' ઇત્યાદિ પાઠ જે છે તે ચંદ્રવર્ષને આશ્રિત છે, અન્યથા અભિવર્દિત સંવત્સરના ત્રણસે નેહિ દિવસ પણ થાય છે, + ત્રીસ દિવસના કીધા પાપ-પુણ્ય ન ગણાય

તે કથન તો સાંવત્સરિક પ્રતિક્રમણાદિ કૃત્ય વિશિષ્ટ નહીં, પણ માત્ર ગૃહસ્થોને જણાવવા પૂરતું ગૃહિજ્ઞાતમાત્રા નામની પજૂસણની અપેક્ષાએ છે 'એમ જે લખ્યું' છે, તે શાસ્ત્રસંમત નથી, કારણ કે શાસ્ત્રકારોએ પજૂસણના ગૃહિજ્ઞાત અને ગૃહિઅજ્ઞાન. આ બે ભેદો ઉપરાંત ત્રીજો ભેદ ગૃહિજ્ઞાતમાત્રા નામનો ક્યાંએ બતાવ્યો હોય તો તે સર્વામાન્ય પ્રમાણ જાળવાયાર્થ બતાવે, અન્યથા શાસ્ત્રકારોની પ્રશ્નપણાથી વિરુદ્ધ સ્વમતિ કલ્પનાએ ત્રી ને ભેદ ઉભો કરી દેવો. એ તપાઓનાજ ધરનો આચાર છે.

+ દરેકે દરેક ચોમાસીમાં ૪ માસ ૮ પક્ષ અને ૧૨૦ રાત્રિદિવસ, તથા સંવત્ચરીમાં ૧૨ માસ ૨૪ પક્ષ અને ૩૬૦ રાત્રિ દિવસજ બોલવાનું કોઈ પણ સર્વામાન્ય શાસ્ત્રકારે કહ્યું હોય તો તે પ્રમાણ જાળવાયાર્થ બતાવે, અન્યથા આવશ્યક સૂત્રની મોટી ટીકામાં પાખીના ખામણા પ્રસંગે આ. શ્રીહરિભદ્રસૂરિજી મહારાજએ 'એગસસ પક્ષપસ પન્નરસપુલં દિવસાણં પન્નરસપુલં રાઈણં' બોલવાનું જે લખ્યું છે, તેનાજ અનુસારે જેમ ચાર માસની ચોમાસીનાં 'ચઉપુલં, અટ્ઠપુલં માસાણં પક્ષાણં, ૧૨૦ રાઈદિવસાણં' તથા બાર માસની સંવત્ચરીમાં 'બારસપુલં માસાણં, ચોવીસપુલં પક્ષાણં, ૩૬૦ રાઈદિવાણં' ની સહભૂત

તો છમ્માસી યોગ વહતાં વચમાં અધિકમાસ થાય અને તે ગણત્રીમાં ન લેવાય તો સાતે માસે છમ્માસી યોગ પૂરા થશે. એવં અધિક માસ

કલ્પના કરાય છે, અને તેમ કરતાં શાસ્ત્રાત્તાને કોઈ જાતનો આધ નથી, તેમજ પાંચ માસની ચોમાસીમાં ‘પંચપુલં માસાણં. દસપુલં પક્ષખાણં ૧૫૦ રાઈદિયાણં’ તથા તેર માસની સંવચ્છરીમાં ‘તેરસપુલં માસાણં છવીસપુલં પક્ષખાણં, ૩૯૦ રાઈદિયાણં’ કહેવામાં કશુંએ દોષનો કારણ નથી, કિંતુ તીર્થંકરોક્ત સત્ય પ્રરૂપણજ છે.

ખીજું અહિં એક વસ્તુ ખાસ વિચારણીય છે. અને તે એ કે દરેકે દરેક પાખી પ્રતિક્રમણમાં પાક્ષિક અભુદિઓ ખામતાં ત્રણ ત્રણ વખત ‘એગસ્સ પક્ષખસ્સ, પન્નરસપુલં દિવસાણં પન્નરસપુલં રઈણં’ કહીને એકેક પક્ષ અને તે દરેક પક્ષના ૧૫-૧૫ દિવસ-રાત્રિ ગણત્રીમાં ખોલી જવા છતાં તેનેજ જુદા ઠેરાવવા ખાતર ચોમાસી અને સંવચ્છરીમાં ૧ માસ ૨ પક્ષ અને ૩૦ દિવસ-રાત્રિ ઉગાડી દઈ ચોમાસી પ્રતિક્રમણમાં ચાર માસ આદિની તથા સંવચ્છરીમાં બાર માસ આદિની મિથ્યા કલ્પના કરવા છતાં ‘તપા શાસ્ત્રાનુસાર છે’ એમ જે કહેવું-માનવું, તે તો ‘ઉલ્ટો ચોર કાટવાળને દંડે’ વાળી લોકાક્તીને ચરિતાર્થ કરવાનો આચાર તપાના ધરનોજ છે.

યદિ કોઈ કહે કે-પાંચ માસે થતી ચોમાસી ખામતાં જે ‘પંચપુલં માસાણં’ ઇત્યાદિ ખોલવું તો પછી અભુદિઓ તથા વાંદણાના પાઠમાં ‘ચોમાસિયં’ ના બદલે ‘પંચમાસિયં’ કેમ ન કહેવું? એના ઉત્તરમાં જણાવવાનું કે-જેમ સંવચ્છરીમાં ૧૩ માસ થવા છતાં અને માસ આદિની સંખ્યામાં ‘તેરસપુલં માસાણં’ આદિ ખોલવા

અને અધિક તિથિના કીધા તપ સંયમ તથા નવકલ્પી વિહાર કેમ થશે ?
એ પણ વિચારવો, આ હકીકત છે.

છતાંએ અભુદિયાના પાઠમાં ‘સંવચ્છરિયં’ ના અદલે ખીજે કાઠ પણ શબ્દ નથી બોલાતો તેમ, તથા ‘છટ્લત્ત’ એ શબ્દના અર્થાનુ-સાર યદ્યપિ ઉત્તરપારણે પોરસી-સાઢ પોરસી આદિથી અને પારણે અવજ્ઞથી એકાસણું કરીને વચમાં લાગટ બે ઉપવાસ કરે તોજ બરાબર છ ટંક આહારનો ત્યાગ હોવાથી યથાર્થ ‘છટ્લત્ત’ કહી શકાય. છતાં પારણે, ને ઉત્તર પારણે ગમે તેટલી વાર જમે તોએ લાગટ બે ઉપવાસ કરતાં શાસ્ત્ર દૃષ્ટિએ જેમ એને છટ્લત્ત કહેવાય, તેમ ચોમાસી પણ પાંચ મહિને થવા છતાંએ એનું નામ ‘પંચમાસી’ નહીં પણ ‘ચોમાસી’ જ કહેવું અને અભુદિયો તથા વાંદણના પાઠમાં પણ ‘ચોમાસિયં’ એમજ બોલવું યુક્તિસંગત છે.

અથવા ઋષભમાતાએ વૃષભનું, ને વીરમાતાએ સિંહનું સ્વપ્ન પહેલું જોએલ છતાં અહુળતાની અપેક્ષાએ સૂત્રકારે જેમ હાથીના સ્વપ્નનું વર્ણન પહેલાં કર્યું છે, તેમ પાંચ વર્ષવાળા એક યુગના ત્રીજા અને પાંચમા વર્ષે માત્ર એકેકજ ચોમાસી પાંચ મહિનાની હોય, તે શિવાય અધીય ચોમાસીઓ ચાર મહિનેજ થતી હોવાથી એનું નામાભિધાન ‘ચોમાસી’ અને અમુદિયાના પાઠમાં પણ ‘ચોમાસિયં’ બોલવુંજ વ્યાજબી છે, એથી માસ-પક્ષાદિની સંખ્યા બોલવામાં સહભૂત સંખ્યાને છોડી દઈ મનઃકલ્પિત અસહભૂત સંખ્યા બોલવાનું માની લેવું એ કાઠ પણ રીતે વ્યાજબી નથી. કારણકે સર્વમાન્ય શાસ્ત્રકારોમાંથી કાઠએ પણ દરેક ચોમાસી કે સંવચ્છરીમાં નિયત સંખ્યાજ બોલવાનું નથી કહ્યું, જો કહ્યું હોય તો તે પ્રમાણ જગ્યાચાર્ય બતાવે.

(તપા ખરતર ભેદ ગ્રંથ ૧ ખોલ ૧૮, ગ્રંથ ૨ ખોલ ૯-૩૫ મો)

૧૮ પ્રશ્ન—ઘરતરારંડ શ્રાવક શ્રાવિકા પાણીના ૬ આગાર ન ઘરતર, તે સ્યું ?

ભાષા:—ખરતર શ્રાવક શ્રાવિકા પાણીના છ આગાર (‘પાણસ્સ લેવેણ વા’ ધત્યાદિ) નથી ડયરતા, તે સ્યું ? x

x તપા ખરતર ભેદ પૃ૦ ૧૩૬ ખોલ ૩૫ માં મૂળ લેખકે લખેલ “ ઘરતર શ્રાવક ંકાસણઈ તિવિહારઈ અચિત્ત પાણી લેવઈ, તે કિમ ? અન્તિ ‘પાણસ્સ’ ન પચલઈ ? ” આનો સ્પષ્ટ અનુવાદ “ ખરતર શ્રાવક ત્રેવિહાર ંકાસણામાં અચિત્ત પાણી લિયે છે, તે તેના અંતે ‘પાણસ્સ’ ના આગાર કેમ નથી ડયરતા ? ” ંમે થાય છે, છતાં આગમપ્રજ્ઞ “ ખરતર શ્રાવક ંકાસણામાં તિવિહારે અચિત્ત પાણી લે છે, તે કેમ ? છેડે પાણસ્સના આગારતો લેતા નથી ” ંમે લખે છે, આ પણ આગમપ્રજ્ઞતાનો ંકે પ્રદર્શન છે. અસ્તુ.

‘પાણસ્સ’ ના આગારો પ્રાચીન સર્વમાન્ય શાસ્ત્રોના કથનાનુસાર શ્રાવકને નહીં. પણ સાધુનેજ લેવાના છે. જુઓ “ ંં છ આગારા, સાહૂણં ન પુણ સઙ્ઢાણં । ” (ંહત્કલ્પવિશેષભાષ્ય) તેમજ સંવત ૧૧૮૩ માં રચાંલ ંત્યવંદનાદિ ભાષ્ય વૃત્તિમાં લખ્યું છે કે— “ ંતે પાનકાકારા ંતીનામેવ, ન તુ શ્રાઢ્ઢાનાં, ન લલુ શ્રાઢ્ઢાઃ સર્વવિરતય ંતિ । ” અર્થાત્—“ આ ‘પાણસ્સના’ ના આગારો સાધુઓ માટેજ છે, શ્રાવકો માટે નથી, કેમકે શ્રાવકો સર્વવિરતિ નથી ” ંટલે સર્વવિરતિ સાધુઓને લિક્ષાવૃત્તિના અંગે લિન્ન લિન્ન ંતિના અચિત્ત પાણી લેવા પડે, ંટલા માટે સાધુઓં ‘પાણસ્સ’ના આગારો લેવા. વલી આચારદિનકર પાના ૩૧૬ માં આં વર્ધ્માન સૂરિજ પણ લખે છે કે “ ંતત્પ્રત્યાંયાનં કેવલં સાધ્વર્થમેવ, નાનાવિઢસ્વ-ભાવપ્રાસુકજલપાનાત્ ” અર્થાત્—આ ‘પાણસ્સ’નો પચ્ચક્રપાણ

તત્રાયે—જે તિવિહાર પચ્ચક્ષાણમાંહિ શ્રાવક શ્રાવિકા
ધોવણના પાણી અન્નના પાણી ઉસાવણ આછણના પાણી લેવા-

કેવલ સાધુઓને માટેજ છે, કારણકે તેઓ નાનાપ્રકારના અચિત્ત પાણી
પીનારાઓ છે, તે પણ ત્રેવિહાર પચ્ચખાણમાંજ લેવા શાસ્ત્રકારો
કહે છે, જુઓ—“ જઈ તિવિહસ્સ પચ્ચક્ષાઈ તો પાણસ્સ છ આગારા
હવંતિ ” (આવં ચૂં), તથા “ યદિ તુ ત્રિવિધાહારસ્ય પ્રત્યાઘ્યાનં
કરોતિ તદા પાનમાશ્રિત્ય ષડાકારા (ભવન્તિ) ” (પ્રવ. સાં ટીકા,
પત્ર ૪૯), આવશ્યક વૃત્તિમાં પણ એમજ કથન છે, એથી આજના
તપા સાધુ-સાધ્વીઓ અને ઉન્હો પાણી પીનાર શ્રાવક શ્રાવિકાઓ
નમુકારસી આદિ ચોવિહાર પચ્ચખાણમાં પણ ‘પાણુસ્સ’ના આગારો
જે લે છે તે શાસ્ત્રાજ્ઞાબાહ્ય પોતાના ધરનો આચાર છે, કારણ કે કોઈ
પણ ત્યાગ કરેલ વસ્તુને કારણુવશ લેવી પડે તેને માટે રખાતી છૂટનો
નામ છે આગાર, જેમ કે સમ્યક્ત્વાદિ પ્રતો ઉચરતાં ‘રાયાભિયોગેણુ’
આદિ આગારો રખાય છે, તેમ ત્રેવિહાર એકાસણુ આદિમાં એક વખત
જમ્યા પછી અને ઉપવાસમાં આખા દિવસમાટે પાણી શિવાય ત્રણ
આહારનો ત્યાગ હોવાથી પાણીમાં કાંઈ પણ અનાજનો અંશ આવી
જાય તોએ પચ્ચખાણનો ભંગ ન થયા માટે ‘પાણુસ્સ’ના ૬ આગારો
ઉચરવા વ્યાજ્ઞી છે, પણ નમુકારસિ પોરસી આદિ ચોવિહાર પચ્ચ-
ખાણોમાં તે તે ટાઇમ સુધીતો ચારે આહારનો ત્યાગ છે, અને
ત્યાર પછી આખા દિવસના માટે ચારે આહારની છૂટ છે, ગમે તેટલી
વાર ગમે તે વસ્તુ ખાઈ શકે છે. છતાં ‘પાણુસ્સ’ના આગારો લેવા,
એનો અર્થ શું ? કાંઈ સમજાતું નથી,

વળી એજ તપા ખં ભેદ ૫૦ ૧૨ માં જન્જ્વાચાર્ય લખે છે કે—
“ પચ્ચખાણુભાષ્યમાં તથા આવશ્યકમાં ‘પાણુસ્સ લેવેણુ વા’ના ૬

હીયા બહલા સસિથ પાણી પીયડ તેહનડ એ આગાર ડચરણા,
વલી મિત્તાવૃત્તિ થાઈ તે એ છ આગાર ડચરડ, એ પાણી પીયડ,

આગાર છે” તો એની ના કોણ કહે છે? પચ્ચડખાણુભાષ્ય અને આવશ્યકમાંજ શું પણ જે જે શાસ્ત્રોમાં પચ્ચડખાણુનો પ્રસંગ છે, તે બધામાં ‘પાણુસ્સ’ના આગાર છે, પણ તે સાધુ-શ્રાવક બન્નેને, અને તે પણ નમુઝારસી આદિ ચોવિહાર પચ્ચડખાણુમાં પણ લેવાનું કોઈ પણ શાસ્ત્રકારોએ કહ્યું હોય તો તે પ્રમાણ જળ્યાચાર્ય બતાવે.

બીજું પચ્ચડખાણુ ભાષ્યની “તહ તિવિહપચ્ચક્ષણે, મચ્છંતિ ય પાણગસ્સ આગારા । દુવિહાહારે અચિત્ત-મોહણો તહ ય ફાસુજલે ॥૧૦॥” આ ગાથાને આગળ ધરીને ઉન્હા પાણી-વાળાને ‘પાણુસ્સ’ના આગારો લેવાનું સાખીત કરવા જે પ્રયાસ કરવું તે કેવળ પાણી વલોવવા જેવું છે, કારણકે એ ગાથાની અવચૂરિમાં આ ૦ સોમસુન્દર સૂરિએ એનો અર્થ “ત્રેવિહાર પચ્ચડખાણુમાં અને અચિત્તભોજન કરનારને દુવિહાર પચ્ચડખાણુમાં પણ, તથા એકાસણુ આદિ વિશેષ પચ્ચડખાણુના અભાવે પણ પ્રાસુકપાણી પીવાના નિયમ-વાળાને ‘પાણુસ્સ’ના છ આગારો ઉચરવાના” એવો સ્વમતાગ્રહ વશે લખ્યો છે, પરંતુ વાસ્તવિક અર્થ એ ગાથાનો “ત્રેવિહાર પચ્ચડખાણુમાં અને અચિત્ત ભોજન તથા ફાસુ પાણીના નિયમવાળાને દુવિહાર પચ્ચડખાણુમાં પણ ‘પાણુસ્સ’ના આગાર ઉચરવા” આ રીતે બરાબર થાય છે, એટલે પચ્ચડખાણુ ભાષ્યની ઉપરોક્ત ગાથાના કથનાનુસાર પણ નમુઝારસી આદિ ચોવિહાર પચ્ચડખાણુમાં નહીં, કિંતુ ત્રેવિહાર કે દુવિહાર પચ્ચડખાણુમાંજ ‘પાણુસ્સ’ના આગારો લેવાના છે, અને તે પણ પહેલાં બતાવ્યા મુજબ બૃહત્કલ્પવિશેષભાષ્ય જેવા સર્વમાન્ય પ્રમાણુનુસાર કેવળ સર્વવિરતિએનેજ, નહિં કે દેશવિરતિ કે અવિરતિએને.

૧૧ મી પંડિમાઈ ડચરડ, પરં જેહનઈ ભિજ્ઞાવૃત્તિ નહીં તે સ્યા
મણી એ પાણીની અવિરતિ રાખઈ ?, લીજઈ ? (૧ક)જિ પાણી
અનઈ રાખીયઈ સર્વ પાણી, એ અત્યંત અઘટતડ છઈ, તથા વર્ણાન્ત-
રાદિપ્રાપ્ત પાણી ઉઘણ પાણી તે ઇણ આગારે અણડચર્યેઈ
દિવસચરિમં પચ્ચક્ષાણમાંહિ સૂમયાજિ કરઈ, દિવસચરિમ
પચ્ચક્ષાણમાંહિ સચિત્તપરિહારીનઈ તિવિહાર પચ્ચક્ષાણ કરતાં
માંમ્હિં એ પાણીના ૬ આગાર કોઈ ડચરાવતા ડચરતા નહી
જાણ્યા, ઇહાં ઘણડ વિચારિવડ છઈ । તથા અણમણીયા ગૃહસ્થનઈ
સાંમ્હિં એ આગારે અણડચર્યાઈ રાતિ પ્રાસુક-ઉઘણ પાણી પાવીયઈ
છઈ, એ વિચારિવડ ॥ ૧૮ ॥

ભાષા—જે શ્રાવક શ્રાવિકા તિવિહાર પચ્ચક્ષાણમાં ધોવણના.
અન્નના કે એસામણ-આછણના પાણી અથવા લેવાડીયા બહલીયા
સસિત્થિયા પાણી પીયે તેણે એ આગારે ડચરવા, વલી જે ભિક્ષા-
વૃત્તિવાળા હોય અથવા અગ્યારમી પડિમાધારક હોય તે એ આગારે
ભલે ડચરે અને એવા પાણી ભલે પીયે, પરંતુ જેને ભિક્ષાવૃત્તિ
નથી તે આ લેવાડીયા આદિ પાણીની અવિરતિ શા માટે રાખે ?
પીયેતો એકજ પાણી અને (છૂટા) રાખે બધા પાણી, તે અત્યંત અઘટિત
છે, તથા વર્ણાન્તરાદિ પ્રાપ્ત યા ઉન્હો પાણી તો પાણુસ્સના આગારે
ડચર્યા વગર પણ દિવસચરિમ પચ્ચક્ષાણમાં કલ્પે છે, દિવસચરિમ
પચ્ચક્ષાણમાં સચિત્તપરિહારીને સાંજે તિવિહાર પચ્ચક્ષાણ કરતાં
પાણુસ્સના છ આગારે કોઈ ડચરાવતા કે ડચરતા જાણ્યા નથી. અહિં
બ્રહ્મા વિચારવાનો છે, તથા (પાણુસ્સના) આગારેથી અણસણવાળા
ગૃહસ્થને સાંજે એ આગારે વગર ડચર્યાં પણ રાત્રે (અસમાધિ
આદિના કારણે) પ્રાસુક યા ઉન્હો પાણી પાવી શકાય છે, એ વિચારવો. x

x અહિં પ્રવચન સારોધ્ધાર ટીકાનો નીચેનો પાઠ જોયો વિચારવો—

“ પ્રત્યાહ્યાતેડ્યાહારે પરીષહ્પીડિતો યદ્યસૌ કથમપ્યાહાર-

(तपा अस्तर भेद ग्रंथ १ भोअ १६ भो)

१६ प्रश्न-तथा स्वरतरांरइ पच्चक्खाण करावतां द्रव्य १ द्रव्य २ द्रव्य संख्या ३ इत्यादि चोरिसइ पर्यंत पच्चक्खाण कगवीयइ छइ, आवश्यक सूत्रमांहि ए पाठ नथी, ते किम कराइ छइ ? ।

मभिलषति तदा मा कथञ्चिदमौ प्रत्यनीकदेवताऽधिष्ठितो याचते इति परीक्षार्थं प्रथमतस्तावत्पृच्छते, यथा-कस्त्वं ? गीतार्थो वा अगीतार्थो वा ? प्रतिपन्नानशन एवमेव वा ? इदानीं दिनं वर्त्तते ? रात्रिर्वेत्यादि । एवं च पृष्ठे यद्यसौ प्रस्तुतं वक्ति तदा ज्ञायते न देवताधिष्ठितः किन्तु परीग्रहपीडित इति ज्ञात्वा समाधि-सम्पादनाय किञ्चिदाहारो दीयते, ततस्तद्वलेन परिषहान् परिभूय प्रस्तुतपारगामी भवति, अथ वेदनार्दित आहारं न करोति तदाऽऽर्त्तध्यानोपगतस्तिर्यक्तु भवनपतिव्यन्तरेषु वा समुत्पद्येत, प्रत्यनीकेषु च भवनपतिव्यन्तरेषूत्पन्नः कोपवशात्कदाचित्पाश्चात्य-यतीनामुपद्रवमपि कुर्यादिति । ततश्चत्वारो मुनयस्तस्यानशनिन 'उचितं' येयं 'आहारं' 'निभायलन्ति' गवेषयन्ति ।" पत्र १७७

“ जइ कोइ छुहाए पिवासाए वा पीडिउत्ति भत्तं पाणगं वा मग्गेज्जा, तत्थ किं पढमवीयपरीसहेहिं पीडिओ ओभासइ किं वा पंतदेवयाहिठ्ठिउत्ति जाणणानिमित्तं सो भन्नइ-को तुमं ? किं गीयत्थो अगीयत्थो वा ? किं दिवसं अह राइ ?, ताहे जइ सो अवितहं भणइ तो नायव्वं-न एम पंतदेवयाहि ठिओ, किन्तु छुहादिकिलंतो ओभासइत्ति, तओ जं ओभासइ तं दायव्वं । एत्थ चोयगो भणइ-किं कारणं पच्चक्खाए पुणोवि दिज्जइ ?,

ભાષા—ખરતરો પચ્ચક્ષ્ણાણુ કરાવતાં દ્રવ્ય ૧ દ્રવ્ય ૨ દ્રવ્ય-
સંખ્યા ૩ ઇત્યાદિ વોસિરે પર્યન્ત પચ્ચક્ષ્ણાણુ કરાવે છે, આવશ્યક
સૂત્રમાં એ પાઠ નથી, + તે કેમ કરાય છે ? ।

ઈમ જે લિખયા તત્રાર્થે—આવશ્યકના પાઠ (જે) છઠ્ઠે તે
યતિયાં ઉપરિ છઠ્ઠે, પરં શ્રાવકનઈ શાસ્ત્રોક્ત ચવદે નિયમ

ઉચ્ચતે—હે ચોયગ ! પરીસહસેજં તેણ જેયવ્વં, તઓ તપ્પરાજય-
નિમિત્તં જોહસેવ કવયમ્હૂઓ પચ્ચક્ષ્ણાણુ તસ્સ આહારો
દાયવ્વો—‘જમ્હાઽઽહારેણ વિણા, સમાહિકામો ન સાહણ તં તુ ।
તમ્હા સમાહિહેઝં, દાયવ્વો તસ્સ આહારો ॥ ૧ ॥ સરીર મુજ્જિયં
જેણ, કો સંગો ? તસ્સ મોયણે । સમાહિસંધણાહેઝં, દિજ્જણ સો ડ
અંતણ ॥ ૨ ॥’ (પંચાશકચૂર્ણિ પાના ૧૩૬)

આ પાઠોમાં ચોક્ષુ કહેવાયું છે કે—અણુસણવાળાની પતિત
મનોવૃત્તિને સુધારવા ખાતર ગમે તે ટાઢમે પાણી શું ? આહાર પણ
આપવું. ખીણું આવા પ્રસંગે તપાઓ પણ પાણી આદિ આપે છે. છતાં
પોતાનો દોષ ઢાંકવા આવા છળ પ્રપંચ કરવા એ તમારા ઘરનો આચાર છે.

+ આવશ્યકાદિ શાસ્ત્રોમાં બધે ‘સૂરે ઉગ્ગએ અભત્તટ્ઠ’ના પચ્ચ-
ક્ષ્ણાણુ કહ્યા છે, પણ ‘છટ્ઠભત્તં-અઠ્ઠભત્તં’ આદિ પચ્ચક્ષ્ણાણુ ક્યાં
એ શાસ્ત્રમાં કહ્યા હોય તો તે પ્રમાણુ જગ્યાચાર્ય બતાવે, આવશ્યક
ચૂર્ણિ તથા ટીકા અને તપા દેવેંદ્રસૂરિકૃત પચ્ચક્ષ્ણાણુ ભાષ્યમાં જેમ
કહ્યું છે તેમ ઉપવાસ આદિના પચ્ચક્ષ્ણાણુ ખરતર કરે છે,
દેવેંદ્રસૂરિના સમય પછીથી તવા જોડી કાઢેલા છટ્ઠઅઠ્ઠમાદિ ભેગા
પચ્ચક્ષ્ણાણુ તપા કરે છે, તે એમના ઘરનો આચાર છે.

સંભારિગાનઃ કાજિ આગાર સહિત ઇમ દ્રવ્ય સંખ્યાદિ પચ્ચક્ષ્ણાણ રતિના પચ્ચક્ષ્ણાણ થકી અમ્હે શાસ્ત્રનંદ ન્યાયિ કરાવીયઇ છંદ દેશાવકાશિક નામ વ્રત સૂચિવાનંદ કાજિ, જે મળી આવશ્યક બૃહદ્વૃત્તિમાંહિ શ્રાવકનંદ —“ પ્રતિદિવસાનુષ્ઠેયે દ્વે-સામાયિક દેશાવકાશિકે (પુનઃ પુનરુચ્ચાર્યે) ” એ વાક્ય થકી સદા ૨ એણંદ વિધઇ દેશાવગાસિક વ્રત શ્રાવક સાચવઇ છંદ, તે દેશાવકાશિક વ્રત ગુરુમુખંદ ડચરીયંદ, તે મળી દ્રવ્યાદિકના નિયમ ગુરુ ડચરાવંદ, શ્રાવક સદા સદા ડચરંદ, “સન્નિત્ત દવ્વ-વિગંદ, વાણહ-તંબોલ-વત્થ-કુસુમેસુ । વાત્તર-સયણ-વિલેવણ-વંમ-દિસિ-ન્હાણ-મત્તેસુ ॥૧॥ ” એ ચવંદ નિયમ શ્રાવકનંદ સાંમ્મિ સવારિ સંભારિવા શ્રીઆવશ્યકચૂર્ણિમાંહિ છંદ, તથા “ સન્નિત્ત દવ્વવિગંદ ” પ્રમુખના દિનાંદયા નિયમ સંત્તેપીનંદ લ્યંદ એ દેશાવકાશિક વ્રત,” ઇત્યાદિ પાઠ તપાસંદ છંદના કીધા શ્રીઆવશ્યકના બાલબોધમાંહિ ડધાડા છંદ, ઋષિમતી માનડ તથા ન માનડ, તેહના પચ્ચક્ષ્ણાણ શ્રીગુરુ કરાવંદ શ્રાવક કરંદ, ગુરુમુખંદ પચ્ચક્ષ્ણાણ અણ ડચર્યાં ‘પચ્ચક્ષ્ણાણ ફાસિયં’ એ કિમ ડાંદ ? ડમય કાલ વાંદણા દેડં ગુરુમુખિ ડચરીયંદ તે ‘પચ્ચક્ષ્ણાણ ફાસિયં’ કહીયંદ, પચ્ચક્ષ્ણાણ માંડ્ય જોડ્યો ॥ ૧૬ ॥

ભાષા:—આવશ્યકના પાઠ (જે) છે તે સાધુઓના આશ્રિત છે. પરંતુ શ્રાવકને શાસ્ત્રોક્ત ચૌદ નિયમ સંભારતા નિમિત્તે આમ આગાર રહિત દ્રવ્યસંખ્યાદિ પચ્ચક્ષ્ણાણ સાધુના પચ્ચક્ષ્ણાણ ઉપરથી અમે

શાસ્ત્ર સંમત કરાવીએ છીએ (તે) દેશાવકાશિક નામના (દશમા) વ્રતનું સૂચન કરવાને છે, કારણ ? આવશ્યક બૃહદ્વૃત્તિમાં આવકને “પ્રતિદિવસ કરવા યોગ્ય સામાયિક અને દેશાવકાશિક વારવાર કરવા ” એ વાક્યથી હમેશાં આ વિધિએ દેશાવકાશિક આવક સાચવે, તે દેશાવકાશિક વ્રત ગુરુમુખે કેવરીયે એટલા માટે દ્રવ્યાદિકના નિયમ ગુરુ ઉચરાવે આવક સદાસદા ઉપરે, “સચિત્તદવ્વ૦” ઇત્યાદિ ચૌદ નિયમ આવકને સાંજે સવારે સંભારવાનું આવશ્યક ચૂલિમાં કહ્યું છે, તથા ‘સચિત્તદવ્વ વિગદ૦’ ઇત્યાદિ ‘દિવસના નિયમ સંક્ષેપીને હ્યે તે દેશાવકાશિક વ્રત’ ઇત્યાદિ પાઠ તપાગચ્છના આચાર્યકૃત આવશ્યક આજ્ઞાવબોધમાં સ્પષ્ટ છે. ઋષિમતી માનો યા ન માનો (એની મરજીની વાત છે), તેના પચ્ચક્ષ્ણાણુ ગુરુ કરાવે (અને) આવક કરે, પચ્ચક્ષ્ણાણુ ગુરુમુખે ઉચાર્યા વિના “પચ્ચક્ષ્ણાણુ ફાસિયં” કેમ હોય ? ઉભયકાલ વાંદણા દબને ગુરુમુખે ઉચરવું ત પચ્ચક્ષ્ણાણુ ફાસિયં કહેવાય, પચ્ચક્ષ્ણાણુ ભાષ્ય જોતે.

(તપા-ખરતર ભેદ ગ્રંથ ૧ ખોલ ૨૦, ગ્રંથ ૨ ખોલ ૧૪-૧૫ મો)

૨૦ પ્રશ્ન—તથા સ્વરતરાંરઈ ઓઘાની ઢાંડી આંગુલ ૨૦ ફલી આંગુલ ૧૨, તપાંરઈ ઓઘાની ઢાંડી આંગુલ ૨૪ ફલી આંગુલ ૮, સ્વરતર ઓઘા ડાંડી ઉપરિ લૂગડાની નિસીજ્જા કરઈ, તપા ડાંડી નિસીજ્જા કરઈ, સ્વરતરાંનઈ ઢાંડીયઈ ચલવલી ઘાલીયઈ તપાંનઈ ચલવલી ઢાંડીયઈ ન ઘાલીયઈ, તથા સ્વરતર ઓઘે ૨ બંધ થઈ તપા ૧ બંધ થઈ, સ્વરતરાંનઈ સ્ત્રીને ચલવલઈ ઢાંડી ગોલ કરઈ તપાંરઈ ચડસૂણી ઢાંડી સ્ત્રીયાંનઈ ચલવલઈ કરઈ, તે સ્યું? ।

ભાષા.—ખરતર ઓધાની ડાંડી ૨૦ આંગળ અને ફલી ૧૨ આંગળની કરે. તપા દાંડી ૨૪ આંગળ અને ફલી ૮ આંગળની કરે, ખરતર ઓધા ઉપર નિપદા લૂગાની કરે અને તપા હિનતી કરે, ખરતર (ઓધાની) ડાંડીએ (અંદર) ચરવલી રાખે. તપા તે ન રાખે, ખરતર ઓધાને અંધ બે આપે તપા એક અંધ આપે, ખરતર સ્ત્રીને ચરવલે ડાંડી ગોળ રાખે તપા ચોખ્ખૂણી રાખે, તે શું ? ।

તત્રાર્થે—ઓધાની ફલી અનઈ ડાંડી મિલી ઓધો ૩૨ આંગુલનો જોડયઈ, જઈ ૧૨ આંગુલની ફલી તડ ૨૦ આંગુલની ડાંડી જોડયઈ, જડ ૨૪ આંગુલની ડાંડી તડ ૮ આંગુલની ફલી, एवं શાસ્ત્રે ડાંડી-દસી મિલી ૩૨ આંગુલ રજોહરણા કહ્યા છઈ, યદુક્તં નિશીથભાવ્યે ઓઘનિર્યુક્તૌ ચ “વત્તીસંગુલદીહં, ચડ મીસં અંગુલઃ” દંડો સે । અટ્ટંગુલદસાઓ, ઇગયરં હીણમહિયં વા ॥૧॥”ઈતિ જ્ઞેયં । તથા તપારઈ ઓધા જાડા કરઈ છઈ તે વિરુદ્ધ છઈ, સિદ્ધાંતે તર્જની (આંગલી) અંગુઠાનઈ મૂલિ લગાવીયઈ તિતલઈ પ્રમાણઈ ઓધા જાડા જોડયઈ, યદુક્તં તત્રૈવ—“અંગં જ્યેયં અશ્રુસિરં, પોરાયામં તિપાસિયં । વ્યાખ્યા—‘ એકાઙ્ગિકં ’ તજ્જાતદશિકં સદશિકાકમ્બર્લ્લખણ- નિષ્પાદિતં, અશ્રુસિરંતિ અગ્રનિયતાદશિકા નિષ્પદ્યા ચ યસ્ય તદશ્રુષિરં, પોરાયામંતિ-અંગુષ્ઠપર્વણિ પ્રતિષ્ઠિતાયાઃ પ્રદેશિન્યાઃ યાવન્માત્રં શુષિરં ભવતિ તદાપૂરકં કર્તવ્યં, દણ્ડિકાયુક્તા નિષ્પદ્યા યથા તાવન્માત્રં પૂરયતિ તથા કર્તવ્યં, ત્રિપાશિતં-ત્રીણિ વેષ્ટિતાનિ દવરકેણ દત્વા પાશિતં-પાશબન્ધેનેત્યાદિ ।” તથા ડાંડીયઈ ગચ્છવાસી જે ચલવલી બાંધઈ છઈ તે કારણ વિશેષઈ

અચરણા છઠ્ઠે તે કારણની વાત ગરઠા જાણઈ, વલી શ્રીમલય-
ગિરિ સ્થવિરનહ વારઈ એ ચલવલી ઓઘામાંહી ડાંડીયઈ બાંધીજતી
શ્રીપિંડનિર્યુક્તિ વૃત્તિમાંહિ શ્રીમલયગિરિ લિખીછઈ ' 'હ સમ્પત્તિ
દશિકાભિઃ સહ યા દણ્ડિકા ક્રિયતે સા સૂત્રનીત્યા કેવલૈવ
ભવતિ, ન સદશિકા" ' 'ઇત્યાદિ । વલી શ્રીપ્રવચનસારોદ્ધારની
વૃદ્ધ વૃત્તિમાંહિ પુણિ લિખી છઈ, યદુક્તં-- " 'હ કિલ સમ્પત્તિ
દશિકાભિઃ સહ યા દણ્ડિકા ક્રિયતે સા સૂત્રનીત્યા કેવલૈવ
ભવતિ, ન સદશિકા" ' 'ઇતિ, તે ભણી જાણીયઈ છઈ-ત્રીયાંરઈ
વારઈ પુણિ કેતલેકે ગચ્છે ચલવલી હતી, એ આચરણનહ મેલિ
જાણીયઈ છઈ, હિવણાઈ વડગચ્છાં ચિત્રવાલા ઇ સંપ્રદાયઈ ડાંડી-
યઈ ચલવલી બંધાયઈ છઈ, અમ્હે જોઈ પૂછી દેહીનઈ એ બોલ
લિખ્યા છઈ, એ વાતનહ જે અર્થી હવઈ તે પૂછેજ્યો, પરં એહ
અચંભા થાઈ છઈ જે તપાગચ્છ કહીયઈ છઈ ચિત્રાવલના સંપ્રદાય,
તે ચિત્રવાલનઈ ચલવલી થાઈ નઈ તપાંનઈ રજોહરણઈ ચલવલી ન
થાઈ તહ એ તપા ચિત્રવાલ ગચ્છનો સંપ્રદાય કિમ કહઈ છઈ ?
એ પૂછિવહ, વલી તપાનઈ રજોહરણ ઉપરિ ડનની નિસીઝા
બાંધીયઈ છઈ, એ વડગચ્છા તથા ચિત્રવાલના સંપ્રદાય નથી, તેહનઈ
ઓઘઈ ઉપરિ સૂત્રની નિસીઝા દીસઈ છઈ, તપાનઈ ડનની નિસીઝા
ઘાતીજઈ છઈ, તે કેહના સંપ્રદાયની આચરણા છઈ? પૂછીજ્યો ।

તથા રજોહરણ ઉપરિ સૂત્રી ઘનઈ ડનની બિન્દે એ નિસીઝા
જોઈયઈ પરં ડનની જે ત્રીજી નિસીઝા છઈ તે પાઠંઘણહ છઈ,

जइ तेह विझाइनइ बइसीयइ तेह करी गुरुना पग भाटकीयइ
वली गृहस्थनइ चलवलादि अणछतइ क्रिया करतां धरती
पूजिवा य पीपइ तउ वारू, पणि बइसिवानइ काजि पूंछणा जूआ
करियइ क्रिया करतां ते ऊपरिली ऊननी निसीज्जा न विछाइयइ
तथा गुरुजीना पग जइ ऊननी निसीज्जा साथि न पूंजीयइ
गृहस्थनइ धरती पूंजिवानइ काजि न दीजइ तउ तेह ऊननी
निसीज्जानउ स्यउ प्रयोजन ? ते भणी बीजा गच्छांनी परि
अधिक उपकरण जाणी ओघा ऊपरि ऊननी निसीज्जा नही
बांधता, तथा वली “छप्पइयपणगरक्खा” इति बृहत्कल्पवचन
थकी ऊननउ वस्त्र मइलउ थाइ तिहां फूलणि थाइ, एवं ज्ञेयं ।

हिवणां संवत् १६५४नइ टांणइ पासचंदीया नागोरी तपा
तेहने यतिए पणि ओघा थकी ऊननी निसिज्जा छोडीनइ
सूत्रनीज १ निसिज्जा ओघा ऊपरि बांधीयइ छइ, पूछी जोज्यो ।
तथा श्रावक क्रिया करण कालइ रजोहरण न ल्यइ, किन्तु
पूजिवानी वेताये यति पासि मांगी ल्यइ, “साहुसगासाओ
रयहरणं निसेज्जं वा मग्गइ” इति आवश्यकचूर्णिवचनात् ।
अथवा चलवलइ करी घरे सामायिक करतां पूंजइ इम शास्त्रे
छइ, अनइ ऋषिमती क्रिया करतां वांदणा देतां काउसग्ग करतां
चलवला डावइ हाथि राखइ छइ पणि “वांदणा देतउ
श्रावक चलवलइ करी प्रमार्जिवानउ कार्य करइ, पुणि
महात्मांनी परि मुख आगलि धरइ नहीं ” इति तपागच्छीय
सोमसुन्दरसूरिकृत श्रीआवश्यक बालावबोधइ लिख्यउ छइ, तथा

પોસાલીયા જૂના તે શ્રાવકનહ ચલવલાનો મ્હાલિવડ ક્રિયા કરતાં
નિષેધહ છહ, દૃઢીનહ જોજ્યો ॥ ૨૦ ॥

ભાષા:—એ.ધાની ફલી અને ડાંડી. બન્ને મળીને ૩૨ આંગળનો
એધો હોવો જોઈએ, યદિ ૧૨ આંગળની ફલી તો ૨૦ આંગળની
ડાંડી જોઈએ, અને જો ૨૪ આંગળની ડાંડી (હોય) તો ૮ આંગળની
ફલી (હોવી), આવી રીતે ડાંડી ફલી (બન્ને) મળીને બત્રીસ
આંગળનો એધો શાસ્ત્રોમાં કહ્યો છે, જેમકે નિશીથભાષ્ય તથા એધ-
નિયુક્તિમાં કહ્યું છે કે—બત્રીસ આંગળનો લાંબો એધો હોય, તેમાં
ચોવીસ આંગળની ડાંડી અને આઠ આંગળની ફલીઓ હોય, અથવા
બન્નેમાંથી કોઈ એક હીનાધિક હોય, પણ તપાને એધા (ડાંડીના
ભાગમાં) જડા કરે છે. તે વિરુદ્ધ છે, સિદ્ધાંતમાં તર્જની (આંગળી)
અંગૂઠાના મૂળમાં લગાડીયે (વચમાં ગોળાકૃતિ છિદ્ર જેટલા પ્રમાણનો
હોય) તેટલા પ્રમાણનો જડો એધો કરવો કહ્યો છે, જેમકે પિંડ
નિયુક્ત્યાદિમાંજ કહ્યું છે કે—“ એધો એકાંગિક (ઝિનના વસ્ત્ર ખંડમાંથી
તાંતવા કાઢીને તેનીજ બનાવેલ દર્શીઓવાળો) અશુપિર (વગર ગાંઠેલ)
દર્શીઓ અને નિષદ્યા (પાદા) વાળો, પર્વાયામ (અંગૂઠાનાં મૂળમાં
તર્જની આંગળી રાખવાથી બનેલ ગોળાકૃતિમાં સમાય તેટલી જડી
ડાંડીવાળો), અને (ડાંડીના મધ્યમાં) ત્રણ પાશાના બંધનવાળો હોય ”.
જે ગચ્છવાસીઓ ડાંડીએ ચરવલી બાંધે છે તે કારણવિશેષે બાંધવાની
આચરણ છે. શા કારણથી બંધાય છે ? તે તો વૃદ્ધો જાણે, બીજા
આચાર્ય મલયગિરિજી વખતે પણ ડાંડીએ ચરવલી બંધાતી હતી.

જેમકે પિંડ નિયુક્તિની ટીકામાં કહ્યું છે કે—“ અહિં વર્તમાન કાળમાં ઓધાની ઝાંડી દર્શિઓ સહિત કરાય છે. તે સૂત્રાનુસારે દર્શિઓ સહિત નહીં પણ દર્શિઓ રહિત હતી ” આવોજ કથન પ્રવચનસારોદ્ધારની મોટી ટીકામાં છે. તે ભણી કહેવાય છે કે—તેમના સમયે પણ કેટલાક ગચ્છોમાં ચરવલી રખાતી હતી, તે આચરણને મેંચે રખાતી એમ જણાય છે, હમણાં પણ વગચ્છવાળા તેમ ચિત્રવાણ ગચ્છવાળાઓના સંપ્રદાયમાં ઝાંડીએ ચરવલી બંધાય છે, અમોએ જોઈ પૂછીને આ વાત લખી છે, આ જાણવાનો મતલબ જેને હોય તે પૂછી જુએ, પરંતુ આશ્ચર્ય છે કે તપા કહેવાય છે ચિત્રવાળ ગચ્છનો સંપ્રદાય, તે ચિત્રવાળ ગચ્છવાળાઓને ઝાંડીપે ચરવલી હોય અને તપાને રજોહરણ ચરવલી ન હોય, તો (પછી) એ તપા (પોતાને) ચિત્રવાળ ગચ્છનો સંપ્રદાય કેમ કહે છે ? તે પૂછવો, વલી તપાને રજોહરણ ઉપર ઊનની નિષદ્ધા (ઓધારીયું) બંધાય છે, એ (થી તપા) વગચ્છ તથા ચિત્રવાળ ગચ્છનો સંપ્રદાય નથી. (કારણ ?) તે (બન્ને ગચ્છવાળાઓ)ને ઓધા ઉપર સૂત્રની નિષદ્ધા દેખાય છે, તપાને ઊનની નિષદ્ધા રખાય છે. (માટે) તે કોના સંપ્રદાયની આચરણ છે ? પૂછજો.

તથા રજોહરણ ઉપર સૂતરની અને ઊનની. એ બન્ને નિષદ્ધાઓ જોઈએ (ખરી), પરંતુ ત્રીજી ઊનની નિષદ્ધા જે છે તે પાઉંછણો છે, તેને જો દિઠાવીને એસીએ તેનાથી ગુરૂમહારાજના ચરણ પ્રમાર્જિએ તેમ ગૃહસ્થને ચરવલાના અભાવે પૂંજવા માટે આપીએ ત્યારે તો સાઈ, પરંતુ એસવા માટે પાઉંછણા જુદા કરે, ક્રિયા કરતાં તે (ઓધાના) ઉપર વાળી ઊનની નિષદ્ધા ન વિઠાવે, તથા ગુરૂજના

પણ તે ઊનતી નિપદાથી ન પૂંજ્યે, અને ગૃહસ્થને ભૂમિ પૂંજવા માટે ન દેવાય, તે તે ઊનતી નિપદાનો પ્રયજન શું? તે માટે બીજા ગચ્છોની પેરે અધિક ઉપગણ જાણે તે ગોધા ત્રિપ્ત ઊનતી નિપદા નથી આંધતા, બીજું બૃહત્કલ્પસૂત્રના “હ્રસ્વદ્વિપણગરક્ષા” આ વાક્યથી ઊનતા વસ્ત્ર મેળા થાય અને તેમાં ફૂલણ થાય, એ અધી ઉકીકત સમજવાની.

હમણાં સંવત્ ૧૬૧૪ ને ટાણે પાસચંદીયા-નાગોરી તપાના યતિએ પણ ઊનતી છોડીને સૂતરનીજ એક નિપદા આંધી છે. પૂંજી જોજો. તથા આવક ક્રિયા કરવાના ટાંધમે રજોહરણ ન લે, કિંતુ પૂંજવાના ટાંધમે સાધ પાસે મળા લે. કારણકે આવશ્યક ચૂર્ણિમાં પાક છે કે-“સાહુસગાસાઓ રચહરણં નિસેઝ્જં વા મગ્ગઈ” “અથવા ઘેર સામાયિક કરતાં (પોતાના ઘરે) ચરવલાથી પૂંજે” એમ શાસ્ત્રોમાં (કથન) છે, અને ઋષિમતી (તપા) એ ક્રિયા કરતાં વાંદણા દેતાં કહિસ્સગ કરતાં ચરવલો ડાખા હાથે રાખે છે પણ “વાંદણા દેતો આવક ચરવલે કરી પ્રમાજવાનો કાર્ય કરે, પણ સાધુઓની પેરે મુખ આગળ ન ધરે” એમ તપા ગચ્છીય સોમસુન્દરસૂરિકૃત આવશ્યક બાલાવબોધમાં લખ્યું છે, તથા આવકને ક્રિયા કરતાં ચરવલો રાખવાનો જૂના પોસાલીયા નિષેધ કરે છે. (તે) પૂંજી જોજો.

(તપા ખરતર ભેદ ગ્રંથ ૧ બોલ ૨૧, ગ્રંથ ૨ બોલ ૨૦-૬૮ મો.)

૨? પ્રશ્ન-તથા સ્વરતર યતિ આંબિલમાંહિ ૨ દ્રવ્ય ન ઉચરઈ અનઈ શ્રાવક શ્રાવિકાનઈ આંબિલમાંહિ ૨ દ્રવ્ય ઉચરાવઈ, તે શું?

ભાષા:—ખરતર યતિ આંખિત્રમાં એ દ્રવ્ય ન ઉચરે અને શ્રાવક શ્રાવિકાને એ દ્રવ્ય ઉચરાવે, તે શું ? +

તત્ત્વર્થે—યતિનહ ૧૪ નિયમ ઉચરિવા નથી. તે મળી દ્રવ્યની સંખ્યા યતિ ન ઉચરે, પરં યતિ પુણિ આંબિલના પચ્ચક્ષ્ણાણમાંહિ સિદ્ધાંતોક્ત અન્ન અનહ પાણી ૧ ૨ આહાર લ્યહ, યતિનહ જે કલ્પનીક પાણી છહ તે પાણી લ્યહ, જે અન્ન પ્રાસુક મિલહ તે લ્યહ, જે મળી યતિનહ મિદ્ધાવૃત્તિ છહ, તે મળી યતિનહ એક પાણી એક અન્ન, ૧ નિયમ નહી, શ્રાવકાંનહ ઘરહ અશન ૧ પાણી (૨) જે નીપજહ તે દ્રવ્ય ૨ લ્યહ, એતલહ ૨ દ્રવ્ય ઉચરહ છહ, વલી જેસલમેરુના મંડારમાંહિ તાડપત્રની પોથીમાંહિ સંવત્ ૧૨૧૬ની લિખી શ્રીઆવશ્યકસૂત્રની પોથીમાંહિ આંબિલ પચ્ચક્ષ્ણાણના પાઠમાંહિ શ્રાવકનહ ‘દ્રવ્ય ૨ સેસ સઘ્વ નિયમ’ ૧ પાઠ છહ,

+ તપા ખં લેદ પૃં ૧૪માં લખ્યું છે કે—‘આંખેલમાં ઓદન અથવા સાથવો અથવા ખાખરા. એટલા દ્રવ્ય લેવા કહ્યા’. એથી સાખીત થયું કે આજે આંખિત્રખાતાઓમાં હિંગ મરી શુંદ આદિની ચટણી, હિંગમરીનો ઉકાળો, અનેકો જાતના પાપડો. ખીચડીઓ, દાળદોડળીઓ, ખમણ દોડળાઓ, આદિ આદિ પચાસો વાનીઓ થાય છે, ને તે બધી, તથા સૂત્રોના યોગોદ્વહનોમાં છાસની કઢી, ને થેંસ સુધાં પણ જંખ્યાચાર્ય અને તેમના વડીલો તેમ અનુયાયિઓ જે લિયે લેવરાવે છે શાસ્ત્રોક્ત નહીં પણ શાસ્ત્ર વિરુદ્ધ છે, એ ખાખતમાં કોઈ પણ સર્વમાન્ય શાસ્ત્રનો પ્રમાણ હોય તો તે જંખ્યાચાર્ય ખતાવે.

પરે સુંઠિ મરિચિ પ્રમુખ સ્વાદિમ પાપડ સ્વીચીયાદિ દ્રવ્ય તેહ-
માંહિ ન લ્યઇ. કિરિયાયતા નીંબાદિં અનિષ્ટ અનાહારની સીક કરઇ,
एवं आवश्यकवृत्ति जोइवी, वली उत्कृष्टइ कालि इग्यारमी प्रतिमा
પ્રતિપત્ર શ્રાવકનઇ મિત્તાવૃત્તિપણ થકી યતિની પરિ પાત્રમાંહિ જે
અશન-પાન મિલઇ આંબિલ પ્રાયોગ્ય તેહનડ આંબિલ કરઇ, તિહાં
દ્રવ્ય સંખ્યા ન કરિવી “पाणस्स लेवाडेण वा” ए पाठ थाइ ।

ભાષા:-યતિ (સાધુ) ને ચૌદ નિયમ ધારવા નથી. માટે દ્રવ્યની
સંખ્યા યતિ ન ઉચરે, છતાં યતિ પણ આંબિલના પચ્ચક્ષણમાં
સિદ્ધાંતમાં કહેલ અનાજ અને પાણી એ એ આહાર લિયે, યતિને
જે કલ્પનીય અને પ્રાસુક (અચિત્ત) અનાજ અને પાણી મળે તે
લિયે, કારણ કે યતિને ભિક્ષાવૃત્તિ છે, એટલે યતિને એક પાણી
એક અન્ન આ નિયમ નથી. શ્રાવક પોતાના ઘરે અશનપાન જે નીપજે
તે દ્રવ્ય એ લિયે એથી એ દ્રવ્ય ઉચરે છે. ખીલું જેસલમેરનાં
ભંડારમાં રહેલ સંવત્ ૧૨૧૫ ની લખેલ આવશ્યક સૂત્રની
તાડપત્રીય પુસ્તકની અંદર આંબિલના પચ્ચક્ષણ પાઠમાં ‘દ્રવ્ય એ,
સેસ સવ્ય નિયમ’ એવો પાઠ છે, પરંતુ સૂંઠ કાળામરી, પ્રમુખ સ્વાદિમ
તથા પાપડ ખીચીયા આદિ દ્રવ્ય તેમાં ન લિયે, કિરિયાતા નીંબ આદિ
અનિષ્ટ અનાહારની સીક કરે (?), આ રીતે આવશ્યકવૃત્તિ જોવી,
વળી ઉત્કૃષ્ટ કાળે અગ્યારમી પ્રતિમા વહન કરનાર (શ્રાવકને)
ભિક્ષાવૃત્તિના અંગે યતિની પેરે પાત્રમાં આંબિલપ્રાયોગ્ય જે અશન
પાન મળે તેનો આંબિલ કરે, ત્યાં દ્રવ્યસંખ્યા ન કરવી, (કારણ કે)
“ पाणस्स लेवाडेण वा ” નો પાઠ લેવાય છે.

(તપા ખરતર ભેદ ગ્રંથ ૧ બોલ ૨૨, ગ્રંથ ૨ બોલ ૨૧ મો)

૨૨ પ્રશ્ન-તથા સ્વરતર શ્રાવક પોસહમાંહિ સાંભિ પડિલેહણની વેલાયઈ સજ્ઞાયની ૨ સ્વમાસમણ દેહ સજ્ઞાય ન કરહ, તે સ્યું ?

ભાષા:-ખરતર શ્રાવક પોસહમાં સાંભે પડિલેહણની વેળાએ સજ્ઞાયના બે ખમાસમણુ દહ સજ્ઞાય નથી કરતા, તે સ્યું ?

તત્ત્વર્થે—તિહાં શ્રાવક સજ્ઞાય સંદિમાવિધાની તથા ઉપધિ-પડિલેહણની થંડિલા ૨૪ પહિલેહવાની પણ સ્વમાસમણ ચહછહ, પરં થંડિલા પડિલેહસ્યહ સાંભહ, તિમ સજ્ઞાયની સ્વમાસમણ પહિલી દેહનહ થંડિલા પડિલેહિવાની પરિ તીયહજિ સ્વમાસમણહ પછહ અમ્હારહ સજ્ઞાય કરહ છહ, પરં પહિલી ઓહિ(પડિલેહણ) પડિલેહી પછહ તીયજિ સજ્ઞાયની સ્વમાસમણહ સજ્ઞાય કરહ, પછહ થંડિલાની સ્વમાસમણહ રાતી પોસહતા શ્રાવક ૨૪ થંડિલા કરહ, અપરં કિણહ ગચ્છહ પછહ પહરતાંહ જે શ્રાવક સજ્ઞાય કરિસ્યહ તેહની સ્વમાસમણ તથા થંડિલાની સ્વમાસમણ પછહ તેહ કરિવાની વેલાયહ નથી આપતા, “ સૂચીકટાહન્યાયે ” ઓહિ- (પડિલેહણ) પડિલેહી સજ્ઞાય કરી તીયહ સ્વમાસમણહ થંડિલા પુણિ ક્રમહ પડિલેહીયહ છહ, એ અમ્હારા ગચ્છના સંપ્રદાય (છહ) વલી પીપલીયા સ્વરતરાંરહ પાંચ ગાથાની ઓહિ પડિલેહ્યાં પહિલી સજ્ઞાયની ૨ સ્વમાસમણ દેહ ૫ ગાથારી સજ્ઞાય કરી પછહ ઓહી થંડિલાની સ્વમાસમણ ચહ પુણિ છહ, પરં તપાના શ્રાવક તે સજ્ઞાય કરી વચ્ચ પડિલેહી પછી સજ્ઞાયની સ્વમાસમણા વિણ દિયાં કિમ સજ્ઞાય કરહ છહ ? વલી જહ યતિનહ રૂંચહ

સ્વમાસમણ્ડ તે સજ્ઞાય સૂઝઈ તડ તપા શ્રાવક પ્રભાતિ સામા-
યિક લેતાં થકાં સજ્ઞાયની સ્વમાસમણ દેહનઈ વલી પઢિકમણા
કીધા પૂઠઈ બીજી સામાયિક વિણ લિયાં સ્વમાસમણ બે દેહ
સજ્ઞાય સંદિસાવી કાંઈ સજ્ઞાય કરઈ છઈ ?, એ પુણિ વિચારિવડ,
ચતિતડ અમ્હારઈં સજ્ઞાય પહિલી ૨ સ્વમાસમણે સંદિસાવી ૫
ગાથાની સજ્ઞાય કરઈજિ છઈ, શ્રીજિનપ્રભસૂરિઈ સજ્ઞાય કરિવી કહી
પુણિ છઈ, પરં વર્ત્તમાનગુરુ જિમ કહઈ તિમ પ્રમાણ કરીયઈ ॥૨૨॥

ભાષા:-ત્યાં (પોસહમાં સાંજે પડિલેહણુ સમયે) શ્રાવક સજ્ઞાય
સંદિસાવવાનાં ઉપધિપડિલેહણુનાં અને ચોવીસ થંડિલા પડિલેહવાનાં
પણુ ખમાસમણુ આપે છે. પરંતુ (જેમ) થંડિલા પડિલેહશે સાંજે.
તેમ સજ્ઞાયના ખમાસમણુ પહેલાં આપીને (સાંજે) થંડિલા
પડિલેહવાની પેરે તેણેજ ખમાસમણુ પછી સજ્ઞાય અમારે (સંપ્રદાયે)
કરે છે, પરંતુ પહેલાં ઓહિપડિલેહણુ પડિલેહી પછી તેના તે
સજ્ઞાયના ખમાસમણુ સજ્ઞાય કરે, પછી થંડિલાના ખમાસમણુ
રાત્રિપોસાતી શ્રાવક ચોવીસ થંડિલા પડિલેહે, બીજું કોઈ એક ગચ્છે
પછી જે શ્રાવક પ્રહરસુધી સજ્ઞાય કરશે તેના તથા થંડિલાના
ખમાસમણુ તે (સજ્ઞાયાદિ) કરવાના સમયે નથી આપતા તેમ
'સૂચિકટાહ' ન્યાયે ઓહિપડિલેહણુ પડિલેહી સજ્ઞાય કરી તેજ
ખમાસમણુ અનુક્રમે થંડિલા પણ પડિલેહિએ છીએ, તે અમારા
ગચ્છનો સંપ્રદાય (છે), વલી પીંપડીયા ખરતરને ઓહિપડિલેહણુ કર્યાં
પહેલાં સજ્ઞાયના જે અમાસમણુ આપી પાંચ ગાથાની સજ્ઞાય કરીને

પછી ઓલિથિંડિસાના ખમાસમણ આપે પણ છે, પરંતુ તપાના શ્રાવક તે સજ્જાય કરી વસ્ત્ર પડિલેહીને પછી સજ્જાયના ખમાસમણ દીધા વગરજ સજ્જાય કેમ કરે છે ? વલી જો યતિને એજ ખમાસમણે તે સજ્જાય સૂઝે ? તો તપા શ્રાવક પ્રભાતે સામાયિક લેતાં સજ્જાયના ખમાસમણ દધને પડિકમણો કર્યા પછી ખીજ સામાયિક વગર લીધે જે ખમાસમણે સજ્જાય સંદિસાવી શા માટે સજ્જાય કરે છે ? એ પણ વિચારવું, યતિતો અમારે પહેલાં જે ખમાસમણે સજ્જાય સંદિસાવી પાંચ ગાથાની સજ્જાય કરેજ છે, શ્રીજિનપ્રભસૂરિજીએ સજ્જાય કરવાનું કહ્યું પણ છે, છતાં વર્તમાન ગુરુ જેમ કહે તેમ પ્રમાણ કરાય.

(તપા ખરતર ભેદ ગ્રંથ ૧-૨ બોલ ૨૩ મો)

૨૩ પ્રશ્ન—તથા સ્વરતર કાચા દૂધ સાથિ બિદલ અન્ન જિમતાં દોષ ન માનઈ, તે સ્યું ? ।

ભાષા:—ખરતર કાચા દૂધ સાથે વિદલ અન્ન જમતાં દોષ નથી માનતા, તે શું ?

તત્રાર્થે—તપારંદ ગચ્છિ જે કાચા દૂધ સાથિ બિદલ અન્ન જિમતાં દોષ કહઈ છઈ તે અનામોગઈ જણાઈ છઈ, જે મણી “આમગોરસમ્પૃક્તં, દ્વિદલં પુષ્પિતૌદનમ્ । દધ્યહર્દિતયાતીતં, કુચિતાન્નં ચ વર્જયેત્ ॥૧૥” એહ શ્રીયોગશાસ્ત્રના વચનનં અર્થ તપાગચ્છાધીશ સોમસુન્દરસૂરિં આપણા કીધા યોગ શાસ્ત્રના બાલાવબોધામાંહિ ‘આમગોરસ’નો અર્થ કાંચો દૂધ ન કહ્યો, કિન્તુ “ અણકાલ્યા દહી અણકાલી છાસિ ” ઇમ પાઠવદ્દ ફલાવ્યા છઈ, એવં સગલે ઠામે ‘આમગોરસ’ શબ્દ

અણુકાલોવા દહી તથા છાસ જાણવી, પરં કાચા દૂધ ન કહિવા, વલો કિણી મન્ય શાસ્ત્રમાંહિ ‘આમગોરસ’ શબ્દ કાચા દૂધ ફલાયા દવડ તડ જોડયડ ॥ ૨૩ ॥

ભાષા:—તપા ગચ્છમાં કાચા દૂધ સાથે એ દલવાળો (કડોળ) અનાજ જમતાં વિદ્વતો દોષ અનાભોગથી કહેતા જણાય છે, કારણ ? યોગશાસ્ત્રના “આમગોરસમમ્પૃક્ત” આ શ્લોકનો અર્થ કરતાં તપાચ્છાધીશ સોમસુન્દરસૂરિએ પોતે રચેલ યોગશાસ્ત્ર બાંધાવબોધમાં ‘આમ ગોરસ’ શબ્દનો અર્થ કાચો દૂધ નહીં. પણ “અણુ ઉકાડ્યો દહી. અણુ ઉકાડી છાસ,” સ્પષ્ટ લખેલ છે, એમ અધે સ્થાને ‘આમ ગોરસ’ શબ્દથી કાચા દહી-છાસજ લેવાના, પરં કાચો દૂધ નહી લેવાનો, x બીજું કોઈ પણ (સર્વ) માન્ય શાસ્ત્રમાં ‘આમગોરસ’ શબ્દથી જો કાચો દૂધ કહ્યો હોય તો (તે) જોઈએ.

x આવશ્યક વૃત્તિટિપ્પણ (પત્ર ૧૦૦) માં મત્તધારી આચાર્ય શ્રીહેમચંદ્રસૂરિ “ગોરસધોવણં નામ દધિસંસૃષ્ટસ્યાલ્યાદિપ્રક્તનજલં” અર્થાત્ ‘ગોરસધોવણુ’ એટલે દહિથી ખરડાએલ થાલી આદિને ધોવાનું પાણી, આ પાઠમાં ‘ગોરસ’ શબ્દથી કાચો દૂધ નથી કહેતા, તેમ તપાના છાસ પરમગુરુઓ પણ ‘આમગોરસ’ શબ્દનો અર્થ ‘કાચો દૂધ’ નથી કરતા, એટલેજ ખરતર ગચ્છવાળા તેમાં વિદ્વજ નથી માનતા. પણ સાંગરી આવળીયા આદિ કે જેમાં તેલ જેવા ચિકાસનો નામ નિશાણુ નથી અને એ દલ સ્પષ્ટ જોવાય છે. તેમ કોઈ પણ સર્વમાન્ય શાસ્ત્રકરે એમ કહ્યું નથી કે ‘સાંગરી-આવળીયા આદિ વિદ્વજ નથી.’ છતાં તેને વિદ્વજ ન માનવું એતો તપાઓનાજ ધરનો આચાર છે.

(તપા ખરતર ભેદ ગ્રં. ૧-૨, ખોલ ૨૪ મો)

૨૪ પ્રશ્ન—તથા સ્વરતર શ્રાવકજ પ્રમાતજ પડિકમણા કીધા હવજ, પજ્જજ વલી જજ તેહનજ પોસહ લેવાના ભાવ ઉપજજ પોસહ લ્યજ તડ તે વલી પડિકમણડ કરજ, તે સ્યું ?

ભાષા—ખરતર શ્રાવકે સવારે પડિકમણું ક્યું હોય. પછી જે તેની ભાવના થાય અને પોસહ લિયે તો તે વલી પડિકમણું કરે, તે શું ? +

તત્તરથે—પોસહ-પડિકમણ બિન્હજ કાલ વેલાઅજ કીજજ, યોગ વિણ મિલ્યાં પોસહ-પડિકમણા દિન ઝગાંઝે કીજજ, પરં

+ અહિં તપા ખં ભેદ પૃં ૧૬ માં લખ્યું છે કે—“ ખીજી વાર પ્રતિક્રમે (ત્યારે) કષ રાત્રિની આલોચના આલોચે ? એમ પણ એક દિનમાં ત્રીજી પડિકમણું કરે તે ધરનો આચાર છે, પણ શાસ્ત્રમાં નથી, તપા ન કરે ? ” એટલે લખવાનું કે—તપાએએ પણ સવારના પડિકમણામાં ‘ રાધ્યિ આલોઉ ’ પાઠ બોલીને રાત્રિ આલોચના તો કરી લીધી, છતાં ગુરૂવંદન કરતાં તેઓ ફરી ખીજી વાર રાધ આલોવે છે. તે કષ રાત્રિની આલોચના આલોચે છે ? એમ એક દિવસમાં ત્રણ વાર, અને ઉપધાનવાહી શ્રાવકો જે ગુરૂથી અલગ પ્રતિક્રમણ કરતા હોય, તેઓ, તેમ શ્રાવિકાઓ દેવસી પણ ગુરૂ સમક્ષ આલોચતાં એક દિવસમાં ચાર વાર આલોચના કરે. એને પણ પોતાના ધરનોજ આચાર જંખ્યાચાર્ય કેમ નથી માનતા ? જેમ આ પરંપરા માન્ય છે. તેમ પોસો લીધા પછી ફરીથી પ્રતિક્રમણ કરવાની પણ પરંપરા અમારા સંપ્રદાયમાં માન્ય છે, શાસ્ત્રોમાં આવા કારણિક ખીજી વારના પ્રતિક્રમણનો નિષેધ ક્યાંએ હોય તો તે પ્રમાણ જંખ્યાચાર્ય બતાવે.

‘ પહિલાં પઢિકમી મૂકડું પછડ હરના કામ કાજ કરીનહ ‘ હૂં પોમહ કરીસું’ એવા અતિપ્રસંગ દોષ ટાલિવા મળી પહિલા પઢિકમડ નહીં; અત્યંતાપવાદહ જહ કિણેકહ મેલિ પર્વદિવસ જાણી પઢિકમણત કીધત હવહ, અનહ જહ દિવસ ઝગાં પછી પોમહ લ્યહ તત તીયહ પઢિકમણહ સારીયહ, પરં પડણ પહરનાંહિ જહ રૂઢહ મેલિ અક્ષર પદ વિશુદ્ધ પઢિકમી સકહ તત વીજી વાર વલી પઢિકમીયહ, જહ પઢિકમણત કરતાં પડણ પહરની પઢિલેણ વડી જાણહ તત પહેલોકતજિ પઢિકમ્યું અપવાદહ પ્રમાણ કીજહ, પરં ગુરુજીને પગે વાંદણા દેઈ આલોઈ સ્વામી વાંદણા દેઈનહ પચ્ચક્ષણ કરહિજિ, અન્યથા ન સૂઝહ, એતલહ લહુડા પઢિકમણા થયાજિ જાણિવા ॥ ૨૪ ॥

ભાષા:—(વસ્તુતઃ) પોસહ (અને) પઢિકમણું એ અન્ને કાલવેલા-એજ કરવાના (છે), (તેવો) સંયોગ ન મળે તો પોસહ પઢિકમણું દિવસ ગિઆ પછી કરે, પરંતુ પહેલાં પઢિકમી લે અને પછી ધરના કામ કાજ કરીને ‘હું પોસહ કરીશ’ એવા અતિપ્રસંગદોષને ટાળવા માટે પહેલા પઢિકમે નહીં, અત્યંતાપવાદે કોઈ સંયોગ વિશેષના અંગે પર્વદિવસ ગળી પઢિકમણું કરી લીધું હોય અને જો દિવસ ગળ્યે પોસહ કિયે તો તેજ પઢિકમણે ચલાવી લેવાય, પરંતુ ઉઘાડા પોરસીના પહેલાં સારો સંયોગ મળ્યે અક્ષર પદના ઉચ્ચારણથી વિશુદ્ધ પઢિકમી શકે તો બીજી વાર વલી પઢિકમિયે, જો પઢિકમણું કરતાં ઉઘાડા પોરસી વીતિ જવાનો સંભવ હોય તો અપવાદે (પોસહ લીધા) પહેલાનો પઢિકમ્યો મંજૂર કરવો, પરંતુ ગુરુના ચરણે વાંદણા દધને આલેચી (ફરી વાંદણા દધ) ખમાવી વાંદણા દધને પચ્ચક્ષણ અવશ્ય કરે, અન્યથા ન સૂઝે, એટલે ત્રણ પ્રતિકમણુ થયા જાણવા.

(તપા ખરતર ભેદ ગ્રંથ ૧-૨, બોલ ૨૫ ભો.)

૨૫ પ્રશ્ન - તથા તપા છટ્ટ અટ્ટમાદિ ચતુત્રીસમતાંઈ ઉપવાસ
 એકટ્ટા પચ્ચક્કલ્હ, સ્વરતર જૂજૂઆ ઉપવાસ પચ્ચક્કલ્હે (તે સ્યું ?)

ભાષા-તપા^૧છટ્ટ અટ્ટમાદિ ચતુત્રીસમ (સોળભત્ત) સુધી ઉપવાસ એકી
 સાથે પચ્ચક્કલ્હે, (અને) ખરતર (એકેક) જુદા જુદા પચ્ચક્કલ્હે, તે શું ? x

તત્રાર્થે—દસાં પચ્ચક્કલ્હાણાંમાંહિ ‘અભત્તટ્ઠ’ પચ્ચક્કલ્હાણ પાંચ
 (સાત)મો શાસ્ત્રે કહ્યો છઈ, પરં છટ્ઠ અટ્ઠમાદિ પચ્ચક્કલ્હાણ
 જૂઆ નથી કહ્યા, શાસ્ત્રાંતે ન્યાયે વિહું અભત્તટ્ઠે છટ્ઠ થાઈ,
 જિમ દસે ઉપવાસે પંચક્કલ્હાણગ તપો વિશેષ થાઈ, પુણિ પંચક્કલ્હાણ
 જૂઆ તપ કો નથી, જઈ પહિલઈ દીહાડઈ છટ્ઠ પચ્ચક્કલ્હીયઈ
 તત્ત વીજઈ દિવસિ દસાં પચ્ચક્કલ્હાણાં માંહિલત્ત સ્યત્ત પચ્ચક્કલ્હાણ
 પચ્ચક્કલ્હીયઈ ? અથ છટ્ઠ પચ્ચક્કલ્હી એક ઉપવાસ કરી પછઈ
 જઈ ૨ આંબિલ લગતાં કરઈ તત્ત તે છટ્ઠ તપ થાઈ કિં ?, ન
 થાઈ, અથવા ૨ અભત્તટ્ઠે થાઈ, એવં ૩ અભત્તટ્ઠે અટ્ઠમ
 કહીયઈ, વલી જઈ છટ્ઠ કર્યા પછી ત્રીજઈ દિનઈ ઉપવાસ કરિ-
 વાની વાંછા હવંઈ તત્ત અટ્ઠમ પચ્ચક્કલ્હી કિંવા અભત્તટ્ઠ પચ્ચક્કલ્હી ?
 એ વિચારિવત્ત, વલી ચત્તથનત્ત કોડીસહિત પચ્ચક્કલ્હાણ કિમ

x શાસ્ત્રોમાં જેમ છટ્ટ અટ્ટમાદિ તપ કહ્યા છે તેમ માસખમણ
 બે માસખમણ પણ કહેલા છે, એટલે તપાઓ ચતુત્રીસમભત્ત (સોળ
 ઉપવાસ) સુધીજ કેમ પચ્ચક્કલ્હે છે ? એથી વધુ ન પચ્ચક્કલ્હવાનું
 શું કારણ છે ? તે સપ્રમાણ જાણવાયે જાહેર કરવું.

થાઈ ?, વલી “ ચતુર્થમત્તીઓ છટ્ટમં વચસઈ ? ” इत्यादि श्रीआवश्यक टीका जोड़वी, एवं इहां घणी युक्ति छइ, विशेषार्थी-यइ अस्मत्कृत २६ प्रश्नोत्तर ग्रन्थ जोड़वउ ॥ २५ ॥

ભાષા:—દશ પચ્ચક્ષ્ણાણામાં ‘ અભત્તટ્ટઃ ’ પચ્ચક્ષ્ણાણુ સાતમો શાસ્ત્રે કહ્યો છે, પરંતુ છટ્ટઃ અટ્ટમાદિના જુદા પચ્ચક્ષ્ણાણુ નથી કહ્યા, શાસ્ત્રાના મુજબ બે અભત્તટ્ટઃ છટ્ટઃ થાય, જેમકે દશ ઉપવાસે પંચકલ્યાણુ તપ કહેવાય, પણ પંચકલ્યાણુ કંઈ જુદો તપ નથી, જે પહેલાજ દિવસે છટ્ટઃ પચ્ચખીએ તો ખીજે દિવસે દશ પચ્ચક્ષ્ણાણુમાંહેનો શું પચ્ચક્ષ્ણાણુ પચ્ચખીએ ? અને (એકી સાથે) છટ્ટઃ પચ્ચખીને (પણ) એક ઉપવાસ કર્યા બાદ જો બે આંબિલ લાગટ કરે તો કેમ તે છટ્ટઃ તપ થાય ? ન થાય; (કિંતુ બે ઉપવાસ કરવાથીજ થાય), અથવા (જુદા જુદા પચ્ચખીને પણ) બે અભત્તટ્ટઃ (ઉપવાસે છટ્ટઃ) થાય, એવી રીતે ત્રણ અભત્તટ્ટઃ અટ્ટમ કહેવાય, વલી (એકી સાથે પચ્ચખીને) છટ્ટઃ કર્યા પછી ત્રીજા દિવસે ઉપવાસ કરવાની વાંછા થાય તો અટ્ટમ પચ્ચખે કે અભત્તટ્ટઃ પચ્ચખે ? તે વિચારવું, વલી (એકી સાથે પચ્ચક્ષ્ણી લેવાથી) ચતુર્થનો કોટીસહિત પચ્ચક્ષ્ણાણુ કેમ થાય ? એ બાબતની જાણ માટે આવશ્યક ટીકા જોવી. તેમાં “ ચતુર્થ ભત્તવાજો છઠના માટે વ્યવસાય કરે ” આમ લખેલ છે. એવી ઘણી યુક્તિઓ છે, વિશેષ જાણવાની ઇચ્છાવાળાએ અમારો રચેલ ૨૬ પ્રશ્નોનો ઉત્તર ગ્રંથ જોવો.

(તપા ખરતર ભેદ ગ્રંથ ૧ બોલ ૨૬, ગ્રં. ૨ બોલ ૨૭ તથા ૧૨૦ મો)

૨૬ પ્રશ્ન-તપા સામાયિક પારતાં ૧ નવકાર કહઈ, સ્વગતર ૩ નવકાર કહઈ, તે સ્યું ? ।

ભાષા—તપા સામાયિક પારતાં નવકાર એક કહે, ખરતર ત્રણ કહે, તે શું ?

તત્રાર્થે—સામાયિક પારતાં ૧ નવકાર કહિયઈ ઇમ કિયેઈ સર્વમાન્ય ગ્રન્થે હોઈ ? તડ પછે ૩ નવકારના અક્ષર દિશ્વાલીયઈ, આપણાં કીધા ગ્રન્થ આપજિ માનીયઈ ॥ ૨૬ ॥

ભાષા—સામાયિક પારતાં એક નવકાર કહેવો, એમ કોઈ સર્વમાન્ય ગ્રંથમાં હોય (તે અતાવો), તો પછી ત્રણ નવકારના અક્ષર (શાસ્ત્ર પ્રમાણ) અતાવીએ, પોતાના રચેલા ગ્રંથ પોતાનેજ માનવાના.

(તપા ખરતર ભેદ ગ્રંથ ૧-૨ બોલ ૨૭)

૨૭ પ્રશ્ન—તથા સ્વરતર પોસહ સામાયિક જૂઝા ૨ ઝૂચરઈ પિણ પારતાં વેઝું વ્રત ‘ભયવં દસણભદ્રો’ કહી એકઠા પારઈ, તપા જૂઝા વિઝું વ્રત પારઈ, એ કિમ ?

ભાષા—ખરતર પોસહ તથા સામાયિક. અન્ને વ્રતો બુદ્ધ બુદ્ધ ઉચરે અને પારતાં “ ભયવં દસણભદ્રો ” કહી એકઠા પારે, તપા અન્ને વ્રત બુદ્ધ બુદ્ધ પારે +, તે કેમ ?

તત્રાર્થે—સ્વરતર પહિલું પોસહ પારતાં થકાં ૨ સ્વમાસમણ દેઈ મુહપત્તી પડિલેહી ‘પોસહં પારાવહ-પોસહં પારેમિ’ ઇમ કહી પઢઈ ઝૂમા થઈ ૩ નવકાર કહીનઈ પોસહ પારઈ, વલી સામાયિક વ્રત

+ પોસહ પારતાં ‘સાંગર ચંદો’ કહેવું અને સામાયિક પારતાં ‘સામાઈયવય જુત્તો’ કહેવું એવું કથન કોઈ પણ સર્વમાન્ય શાસ્ત્રોમાં હોય તો તે પ્રમાણ જાળવાયાર્થે અતાવે, અન્યથા એજ બોલવું એ આજના તપાના ધરતો આચાર છે.

પારિવા નિમિત્તિ મુહપત્તી પડિલેહી ૨ સ્વમાસમણ દેઈ ૩ નવકાર
 કહી સામાયિક પારડ છઠ્ઠ, એતલઈ બિહું વ્રત પારિવાની જૂજૂઈ
 વિધિ કરઈ, અનઈ “ ભયવં દસણભદો ” ઇત્યાદિ ગાથા. તે
 બિહું વ્રત પાલ્યાની અનુમોદિવાનઈ કાજિ કહીયઈ છઠ્ઠ, પરં
 પારિવાનડ એ પાઠ નથી, પરમારથ વિણ જાણ્યા ઘણડ ન બોલી-
 યઈ । જિમ ઉપધાનતપ વહતાં શ્રાવક નવકારસી અનઈ પોરિસી
 પારતાં જૂજૂઆ નવકાર કહીનઈ બેહું પચ્ચક્ષ્ણાણ જૂજૂઆ પારડ,
 પછઈ તપારડ ‘કાસિયં પાલિયં’ ઇત્યાદિ પાઠ આંપણાં બિહું પચ્ચ-
 ક્ષ્ણાણની અનુમોદના નિમિત્તિ કહાઈ છઠ્ઠ, એતલઈ સ્યું બેહું પચ્ચ-
 ક્ષ્ણાણાંનડ એકઠો પારિવડ થયડ ? એ વિમાસિજ્યો ॥ ૨૭ ॥

ભાષા—અરતર પહેલાં પોસહ પારતાં એ ખમાસમણ દઈ મુહપત્તી
 પડિલેહી ‘પોસહ પારાવહ-પે.સહ પારેમિ’ એમ કહી ઉભા થઈ ત્રણ
 નવકાર કહીને પોસહ પારે, વલી સામાયિક પારવા નિમિત્તે મુહપત્તી
 પડિલેહી એ ખમાસમણ દઈ ત્રણ નવકાર કહી સામાયિક પારે છે,
 એટલે અન્ને વ્રતોને પારવાની વિધિ જુદી જુદી કરે છે, અને
 “ ભયવં દસણભદો ” ઇત્યાદિ જે ગાથા છે. તે અન્ને વ્રત જે પાઠ્યા
 તેની અનુમોદના નિમિત્તે કહેવાય છે. પરંતુ (પોસહ કે સામાયિક)
 પારવાનો એ પાઠ નથી, વસ્તુસ્થિતિ જાણ્યા વગર ઘણું ન બોલવું.
 જેમ ઉપધાનવાહી શ્રાવક નવકારસી અને પોરસી પારતાં જુદા જુદા
 નવકાર કહીને અન્ને પચ્ચક્ષ્ણાણ જુદા જુદા પારે છે. પછી તપાને
 “ કાસિયં પાલિયં ” ઇત્યાદિ પાઠ પોતાના અન્ને પચ્ચક્ષ્ણાણની

અનુમોદના નિમિત્તે કહેવાય છે, એટલે શું બંને પચ્ચક્ષુઓનો પારવો એકત્ર થયો ? એ (વાત) વિચારજો.

(તપા ખરતર ભેદ ગ્રંથ ૧ ખોલ ૨૮, ગ્રંથ ૨ ખોલ ૨૬-૯૨)

૨૮ પ્રશ્ન—તથા સ્વરતર આવશ્યક (સજ્ઞાય) કરતાં સહૂ જૂઝા જૂઝા આવશ્યકના પાઠ ભણઈ, નમસ્કાર થુઈ તવન એ સહૂ એક જણ કહઈ, વીજા સહૂ સાંભલઈ, તપાંનઈ પડિકમણા કરતાં ૧ શ્રાવક ગુણાવઈ, તે પૂછીવડં ।

ભાષા:—ખરતર આવશ્યક (તથા સજ્ઞાય) કરતાં આવશ્યકના પાઠ બધા જુદા જુદા ખોલે. નવકાર થુઈ તવન એ સહુ એકજણ કહે. ખીજા બધા સાંભળે. તપાને પડિકમણા કરતાં એક શ્રાવક ભણાવે, તે પૂછવું. x

તત્રાર્થે—નમસ્કાર થુઈ તવન પાઠીસૂત્ર. એતલા વાના શાસ્ત્રનઈ મેલિ આવશ્યક ચૈત્યવંદના કરણીયનઈ વિષઈ ગુરુનઈ આદેશઈ સદા એક જણ કહઈ છઈ, વીજા શ્રાવક સાંભલઈ, એ વ્યવહાર આમ્હારઈ પ્રવર્ત્તઈ છઈ, પરં જે વાંદણા દેતાં એક જણ પુકારીને બોલઈ વીજા ન બોલઈ તડ એક બોલતાનઈ ઢઢ્ઢર દોષ લાગઈ, અણબોલતા વીજાનઈ મૂક દોષ લાગઈ છઈ, તે ભણી આવશ્યક

x તપાઓ પાખી આદિ પડિકમણામાં બધા એકે અવાજે એટલા જોરથી ‘ઝંકારા’ ખોલે છે અને હાહુ કરી નાખે છે કે જોને સાંભળી પક્ષિઓ અને બાલકો સુધાં અબકી ઉઠે, તે આવી રીતે ખોલવું ક્યા શાસ્ત્રમાં લખ્યું છે ? તે જન્મવાચાર્ય બતાવે. અન્યથા એ પણ એક જાતનો તપાના ધરનોજ આચાર છે.

કરતાં મધુરૈ સ્વરૈ અમ્હારૈ સહુ શ્રાવક આવશ્યકના પાઠ કહૈ
છૈ, ઇમ કરતાં કેહનૈ અપધ્યાન શૂન્ય મન દુધ્યાન નથી થાતઠ,
મન વચન કાયાનૈ આપણા અતીચાર આલોડવા છૈ, તિહાં
વચનના અતીચાર વચનહિજિ આલોડયૈ, અણબોલ્યાં વચનના
અતીચાર કિમ આલોડયૈ ? તે મળી આવશ્યક કરતાં સહુ
મધુરિં સ્વરિ બોલૈ તઝ મલઝ છૈ, વિચારિજ્યો ॥ ૨૮ ॥

ભાષા—નમસ્કાર (ચૈત્યવાંદન) સ્તુતિ, સ્તવન, (અને) પદ્મી
સૂત્ર, એટલા વાના શાસ્ત્રાજ્ઞાનુસાર આવશ્યક વા ચૈત્યવાંદના કરવામાં
ગુરૂના આદેશથી હંમેશા એક જણ કહે. ખીજા શ્રાવક સાંભળે, એ
વ્યવહાર અમારે પ્રવર્તે છે. પરંતુ જે વાંદણા દેતાં એક જણ જોરથી
ખોલે અને ખીજા બધા ન ખોલે તો એક (ખોલનાર)ને ‘ઢશ્કર’ દોષ
અને ખીજા (નહીં ખોલનાર)ને મૂક દોષ લાગે છે, એટલે અમારે
બધા શ્રાવકો મધુર સ્વરે આવશ્યકના પાઠ ખોલે છે. આમ કરવાથી
ક્રોધનેય અપધ્યાન શૂન્યમન દુધ્યાન નથી થતું, (ખીજું) મન વચન
(અને) કાયાએ પોતાના અતિચારો આલોચવા છે. ત્યાં વચનના અતિચાર
વચનથીજ આલોચવા જોઈએ, ખોલ્યા વગર વચનના અતિચાર કેમ
આલોચાય ? , એટલે આવશ્યક કરતાં બધા જણાઓ (મંદ) મધુર
સ્વરે ખોલે તો સારો છે, વિચારજ્યો ।

(તપા ખરતર ભેદ ગ્રંથ ૧-૨ ખોલ ૨૬)

૨૯ પ્રશ્ન—તથા પોસહમાંહિ પ્રમાતિ સાંક્ષિ પડિલેહણ કરતાં
ઘરતર શ્રાવક ૩ વેલા મુહપત્તી પડિલેહૈ, તેહ સ્યું ?

ભાષા-પોસહમાં સવારે ને સાંજે પડિલેહણ કરતાં ખરતર ત્રણ વેળા મુહપત્તી પડિલેહે, તે શું ?

તત્રાથે—તપાનઈ પોસહતાનઈ ત્રિ વાર મુહપત્તી પડિલેહવાનહ સ્યહ પ્રયોજન છઈ ? તે જણાવેજ્યો, તેહ જાણ્યાં ત્રીજી મુહપત્તી પડિલેહ્યાના ભાવ જણાસ્યઈ ॥ ૨૬ ॥

ભાષા-તપા પોસાતીને બે વાર મુહપત્તી પડિલેહવાનો શું પ્રયોજન છે ? તે જણાવશે, તે જણ્યાં (આદ) ત્રીજી મુહપત્તી પડિલેહવાનો ભાવ જણાશે + .

+ “ સ્વમાસમણદુગેણ પડિલેહણં સંદિસાવિય મુહણંતયં સ્કાયં પડિલેહિય સ્વમાસમણદુગેણ અંગપડિલેહણં સંદિસાવિય કાઉં ચ તં મુહપોત્તિપેહણ-સ્વમાસમણદુગદાણપુન્નમુવહિં સંદિસાવિય વત્થકંવલાઈપોસહસાલં પમજ્જિય સ્વમાસમણદુગેણ સઙ્ખાયં સંદિસાવિય પઢઈ સુણઈ ય ” (પંચાશક ચૂર્ણિ પત્ર ૧૦૯) આ ઉપરના પાઠમાં ચૂર્ણિકારે “ સ્વમાસમણદુગેણ અંગપડિ લેહણં સંદિસાવિય કાઉં ચ ” આવા વાક્યથી તેમજ “ પઢમણમાસમણેણં અંગપડિલેહણં સંદિસાવિય વીયસ્વમાસમણેણં અંગપડિલેહણં કરેમિત્તિ મણિય તત્ત્રો અંગપડિલેહણં કરેઈ ” । (સુબોધા સાં પત્ર ૩૭) ના આ પાઠમાં ૨૫૪ સૂચન કયું છે કે—“ પડિલેહણની મુહપત્તિ પડિલેહ્યા પછી અને ઉપધિમુહપત્તિ પડિલેહ્યા પહેલાં બે ખમા ૬૪ આદેશ માગીને અંગપડિલેહણની મુહપત્તિ પડિલેહવી. એટલે ખરતર ગચ્છના શ્રાવક અને સાધુ પણ ત્રણ વાર મુહપત્તિ પડિલેહવી બરાબર શાસ્ત્રસંમત કરે

(તપા ખરતર ભેદ ગ્રંથ ૧-૨ બોલ ૩૦)

૩૦ પ્રશ્ન—સ્વરતર શ્રાવક રાત્રી પોસહતા સવારે પઢિકમ્યા પહિલત વલી સામાયિક કરઈ, તે કિહાં કહ્યા છઈ ? ।

છે. પરંતુ તપાઓ જે આ અંગ પડિલેહણના આદેશ નથી માગતા તેમ મુહપત્તિય નથી પડિલેહતા એ એમના ધરનો આચાર છે.

આ બાબતમાં ‘સેનપ્રશ્ન’ નો એક પ્રશ્નોત્તર વિચારવા જેવો છે—

“ દિનચર્યાદિષુ અંગપઢિલેહણં સંદિસાવેમીત્યાદેશમાર્ગણં
પ્રાતઃસાયં ચ દૃશ્યતે, આત્મનાં તુ ન, તત્ર કિં નિદાનમિતિ પ્રશ્નો-
ત્તરં—દિનચર્યાદિષુ અંગપઢિલેહણં સંદિસાવેમીત્યાદેશમાર્ગણં તુ
શ્રીદેવસૂરિકૃતાયાં દિનચર્યાયાં નાસ્તિ, ગચ્છાન્તરીયદિનચર્યાગતં
સમ્ભાવ્યતે ઇતિ ॥ ૩૦ ॥” (સેન પ્રશ્ન ઉ૦ ૩ પત્ર ૨૨)

પ્રશ્નકર્તા પૂછે કે—“ દિનચર્યાદિકની અંદર સાંજ-સવારની પડિલેહણમાં ‘અંગ પડિલેહણ સંદિસાઉં ?’ એવા આદેશ માગવા લખ્યું છે. ને આપણાંમાં તો નથી માગતા, એનું શું કારણ ? ” ઉત્તરમાં આ૦ વિજય સેનસૂરિ ક્રમાવે છે કે—અંગપડિલેહણ સંદિસાઉં ? આ આદેશ માગવાનું દેવસૂરિકૃત દિનચર્યામાં તો નથી, ગચ્છાન્તરીયકૃત દિનચર્યામાં હોવા સંભવ છે ” આથી આચાર્યશ્રીનું આશય એ જણાયું કે—દેવસૂરિ શિવાય અન્ય ગચ્છાન્તરીયકૃત દિનચર્યામાં હોય તો તે માન્ય નથી, પરંતુ આ તો ઉપર લખ્યા મુજબ પંચાશકયૂર્ણિ જેવા સર્વામાન્ય ગ્રંથકારનું જે કથન, તેને પણ શાસ્ત્રાનુસારીપણાનો દાવો કરનારા તપાએ કેમ નથી માનતા ? એનો યોગ્ય ઉત્તર શાસ્ત્રીય પ્રમાણસાથે જાળવવાચાર્ય આપે.

ભાષા- રાત્રિપોસાતી ખરતર શ્રાવક સવારના પ્રતિક્રમણથી પહેલાં વલી સામાયિક ઉચરે, તે કયાં કહ્યું છે ?

તત્રાર્થે- શ્રીપચ્ચાશકચૂર્ણિ(પંત્ર૧૦૮)માંહિ પૂર્વાચાર્ય શ્રીયશો દેવસૂરિં કહ્યું છઈ, તદ્યથા-“ તઓ રાઈણ ચરમજામે ઉટ્ટેઝ્ઝણ રિયાવહિયં પડિકમિય પુવ્વં વ પોત્તિં પેહિય નમોક્કારપુવ્વ સા માઈયસુત્તં કહ્ઠિય સંદિસાવિય સઙ્ગાયં કુણ્ણ અપ્પસદ્દેયં ”
ઈતિ પાઠ વિચારી જોડ્યો, ચારિત્રિયા પુણિ પ્રમાતિ કરેમિ ભંતે !
ઝચરઈ છઈ, શ્રીઓઘનિયુક્તિની વૃત્તિ જોડવી, સામાયિક થકાં બીજડ સામાયિક લેતાં સ્વોડી નહીં, ર્હાં આપણિ મતિ કેલવીયડ નહીં ૩૦ ।

ભાષા-(રાત્રીપોસાતીને સવારે સામાયિક લેવાનું) પંચાશકની ચૂર્ણિ(પાના ૧૦૮)માં પૂર્વાચાર્ય શ્રીયશોદેવસૂરિએ કહ્યું છે, તે આવી રીતે-“ રાત્રિના અંતિમ પહેરમાં ઉડીને ધરિયાવહિયા પડિછમ્મી પહેલાની માફક મુહપત્તી પડિલેહી નવકાર મંત્ર ગણવાપૂર્વક સામાયિક સૂત્ર (ઉચરીને) કહીને ‘ સંદિસાઉ ’ આદિ આદેશો માગીને મંદ શબ્દે સઙ્ગાય કરે, ’ આ રીતના (શાસ્ત્ર) પાઠને વિચારી જોજો ચારિત્રિયા પણ પ્રભાતે કરેમિ ભંતે ! ઉચરે છે. (એ માટે) ઓઘ- નિયુક્તિની ટીકા જોવી, સામાયિકની અંદર ખીજ સામાયિક લેતાં કાંઈ ખોટ નથી આવવાની. અહિં પોતાની મતિ કેળવવી નહીં x .

x રાત્રિપોસાતી સવારે ફરીથી સામાયિક કેવા સંયોગોમાં લિએ. એની તો જોને જાણ નથી, ને તપા ખં નો ભેદ બતાવવા બાહાર પડ્યા છે. એવા તે જંખ્યાચાર્યને ધન્ય છે તેમ બલિહારી છે એમની

(તપા ખરતર ભેદ ગ્રંથ ૧ બોલ ૩૧, ગ્રંથ ૨ બોલ ૩૨ માં)

૩૧ પ્રશ્ન-તથા સ્વરતર શ્રાવક શ્રાવિકા પઢિલેહણની સ્વમાસ-
મણ વિણ દિયાં સામાયિકમાંહિ મુહપત્તી પુંઘણા પઢિલેહડ, તે સ્યું ?

આગમપ્રજ્ઞતાની, મહાશય આગમ પ્રજ્ઞા ! જે શ્રાવકે બહેલી સવારના
પરોઢીએ અહોરાત્રિનો પોસો લીધેલ હોય તેણે બીજી સવારે ફરીથી
સામાયિક લેવું એ શાસ્ત્રકારોની આજ્ઞા છે, કારણ કે ઇત્તર સામા-
યિકનું કાળ ઉત્કૃષ્ટ ૮ પહોરનો તે ટાઇમે પૂર્ણ થઇ જાય છે. એટલે,
પણ બધાય રાત્રિપોસાતીઓને ફરીથી સામાયિક લેવાનું નથી અને
તે આ ગ્રંથકારે બતાવેલ પંચાશક ચૂર્ણિના આધારે ખરતર ગચ્છવાળાઓ
શાસ્ત્રસંમત કરે છે. પરંતુ તપાઓની માફક શાસ્ત્રોના કેવળ નામમાત્ર
લખી દેવા. પણ પ્રમાણ પાઠ એકે ન મળે. એવા ગપ્પગોળા નથી ચલાવતા.

એક પંચાશક ચૂર્ણિમાંજ પૌષધમાં ફરીથી સામાયિક લેવાનો વિધાન
છે. એમ નથી, કિંતુ ‘સેનપ્રસ્ન’ ૩૧૯ મા પ્રશ્નોત્તરના કથન મુજબ પ્રતિ-
ક્રમણ ચૂર્ણિમાં આં વિજયસિંહ સૂરિનું પણ એજ કથન છે, સેનપ્રશ્નના
એ પ્રશ્નોત્તરમાં પૂછવામાં આવ્યું છે કે-“ ખરતર પોસાતીઓ રાત્રિના
ચોથા પહોરે ફરીથી સામાયિક લિએ છે, અને તે માટે પ્રમાણ પ્રતિ-
ક્રમણ ચૂર્ણિનો આપે છે. તો આપણે કેમ સામાયિક નથી કરાવતા ? ”
એના ઉત્તરમાં આં વિજયસેનસૂરિ કહે છે કે-પ્રતિક્રમણચૂર્ણિનો
પ્રમાણ સામાયારી વિશેષનો છે. એથી અમારે એમ કરાવવાની ફરજ
પડે તેમ નથી, કારણકે બધાએ સામાયારિવિશેષો બધાઓએ અવશ્ય
કરાવજ નોંઠાએ. એવું કથન શાસ્ત્રોમાં નથી મળતું, બીજું ખરતર

ભાષા-ખરતર શ્રાવક શ્રાવિકા પડિલેહણના ખમાસમણ દીધા વગર સામાયિકમાં મુહપત્તી-કટાસણુ પડિલેહે, તે શું ? +

ગચ્છવાળાઓ ચૂર્ણિના એક કથનને માને અને ખીજા કથનને ન માને એ યુક્તિયુક્ત નથી લાગતો. જે તેમને ચૂર્ણિ માન્યજ છે તો તેમાંની બધીએ સામાચારી કેમ નથી માનતા ?”

સુર વાંચકો ! જેયું કે, પોતાનો ખચાવ કરવાને આં શ્રીએ કેવી હુશ્યારી કરી છે ? જ્યારે કે ચૂર્ણિકારને પોતે શિષ્ટ માને છે, ત્યારે એમની બધીએ સામાચારી માનવામાં શું વાધો છે ? તે કાંઈ જણાતો નથી, છતાં ન માને, એ એમની મરજીની વાત છે, પરંતુ લખે છે કે-ખરતરવાળાઓ ચૂર્ણિગત બધી સામાચારી કેમ નથી માનતા ?’ તો આચાર્યશ્રીએ સ્પષ્ટ બતાવવું તો હતું કે ‘અમુક સામાચારી ચૂર્ણિની ખરતરવાળા નથી માનતા’ જે એક પણ એવી સામાચારી કે જે ખરતરવાળા નથી માનતા, બતાવી હોત તો આચાર્ય શ્રીની સત્યતા માની શકાત. અસ્તુ !

+ તપા શ્રાવક શ્રાવિકાઓ સામાયિક, ને પોસહ લેતાં ગુરુનો આદેશ લીધા વગરજ એસણા ઉપર એસી જાય છે, અને ત્યાર બાદ સામાયિક ઉચર્યા પછી એસણાના આદેશ લે છે, આ તે કયા શાસ્ત્રની આજ્ઞા છે? તપા ઘણીઓના ધરનો આચાર છે, જે આદેશ લીધા પહેલાંજ એસણાપર એસી જવું ફીક માનો છો તો પછી સામાયિકના આદેશ લીધા પહેલાંજ સામાયિક કેમ નથી ઉચરતા ? તેમ સજ્ઞાય પણ આદેશ લીધા પહેલાંજ કેમ નથી કરતા ?

તત્રાર્થે—સામાયિકમાંહિ થેપાડા (ધોતી) તથા પાંગુરણા પડિલેહવા નથી વાવરિવા નથી. તે ભણી પડિલેહિવાની ૨ સ્વાસમણ સામાયિકધર નાપડ, પોસહતા ૨ સ્વાસમણ ‘પડિલેહણં સંદિસાવેમિ-પડિલેહણં કરેમિ’ ઇત્યાદિ રૂપ આપડ તેહનડ એ બેડં વાવરિવા થાસ્યડ, તે ભણી બેડં પડિલેહિવાજિ, સામાયિકમાંહિ ઉત્સર્ગિ પાંગુરણા લેવા નથી થેપાડા પુણિ લેવા નથી, તે ભણી ૨ સ્વાસમણ ન દેવી, તપાંનડ સામાયિકમાંહિ એ બેડં સ્વાસમણ નથી આપતા તથા સામાયિકધર શ્રાવક કીયડ ગચ્છિ ‘પડિલેહણં સંદિસાવેમિ-પડિલેહણં કરેમિ’ એ ૨ સ્વાસમણ આપતા નહીં જાણ્યા । ‘ભગવન ! પડિલેહણં કરું’ એ સ્વાસમણ ન કહીયડ, વિચારિજ્યો । વલી સામાયિકધર પોસહસાલા પ્રમાર્જતાં ‘પોસહસાલં પમજ્જેમિ’ એ સ્વાસમણ પુણિ સ્યડ નથી દેતા ? પોસહમાંહિ ‘પોસહસાલં પમજ્જેમિ’ એ સ્વાસમણ દિવગવડ છડ, એ પુણિ વિચારિવડ । ઓઢણા પડિલેહતાં ઓહિપડિલેહણની સ્વાસમણ ૨ કાં નથી દેતા ? થેપાડા પાલટતાં અંગપડિલેહણની સ્વાસમણ પુણિ દેવી થાસ્યડ, વ્યાપાર કરીયડ નડ દાણ નાગીયડ એ વ્યાપાર કિમ કરડ છડ ? વિચારિજ્યો ॥ ૩૧ ॥

ભાષા.—સામાયિકમાં ધોતી તથા પાંગુરણા પડિલેહવા નથી ને વાવ-
રવાય નથી, માટે પડિલેહવાના એ અમાસમણ સામાયિકધર ન દિયે,
(અને) પોસાતી એ અમાસમણ ‘પડિલેહણં સંદિસાવેમિ-પડિલેહણં
કરેમિ’ ઇત્યાદિ રૂપ આપે, તેને એ અન્ને વાપરવા થશે—કામ લાગશે માટે અન્ને
અવશ્ય પડિલેહવા, સામાયિકમાં ઉત્સર્ગથી પાંગુરણા લેવા નથી તેમ

ધોતી પણ (ખીજી) લેવી નથી માટે જે ખમાસમણ ન દેવા, તપાને પણ સામાયિકમાં એ બન્ને ખમાસમણ નથી આપતા, અને સામાયિકધર શ્રાવક કોઇ પણ ગચ્છમાં ‘પડિલેહણુ સંદિસાઉં-પડિલેહણુ કરૂં’ એવા આદેશ ખમાઁ પૂર્વક માગતા હોય તેમ જાણવામાં નથી આવ્યા, (ખીજી) ‘ભગવન્ પડિલેહણુ કરૂં’ એને ખમાસમણ ના કહેવાય વિચારજ્ઞે, વલી સામાયિકધર પોસહસાળા પ્રમાર્જતાં ‘પોસહસાલં પમજ્જેમિ’ એ ખમાસમણ પણ શા માટે નથી દેતા ? પોસહમાં ‘પોસહસાલં પમજ્જેમિ’ એ ખમાસમણ દિવરાવે છે, એ પણ વિચારવું, ઓઢણા પડિલેહતાં ઓહિપડિલેહણુના જે ખમાઁ કાં નથી દેતા ? ધોતી પાલટતાં અંગપડિલેહણુના ખમાસમણ પણ દેવા પડશે. વ્યાપાર કરીયે અને દાણુ ન આપીએ એ વ્યાપાર કેમ કરે ? વિચારજ્ઞે.

(તપા ખરતર ભેદ ગ્રં ૦ ૧ બોલ ૩૩, ગ્રં ૦ ૨ બોલ ૩૧-૩૩ મો)

૩૨ પ્રશ્ન—તથા સ્વરતર પોસહમાંહિ ૧૪ નિયમ શ્રાવકનદ્ ઉચરાવઈ, તે સ્યું ?

ભાષા—ખરતર પોસહમાં ૧૪ નિયમ શ્રાવકને ઉચરાવે છે, તે શું ?

તત્રાર્થે—શ્રાવકનદ્ પોસહમાંહિ ૧૪ નિયમ સંભારિવાજિ, તિહાં કિતલાએક નિયમ નિષેધ રૂપ છઈ, કિતલાએક અંગીકાર રૂપ છઈ, એ નિયમ અહોરાત્રિના છઈ, તિહાં સચિત્તાદિ ૧૦ નિયમ પ્રાયઈ પોસહમાંહિ નિષેધ રૂપ છઈ ૪ નિયમ અંગીકાર કરિવારૂપ પુણિ છઈ, દિન સંબંધઈ તથા અહોરાત્રિ સંબંધઈ જાણિવા, एवं જિમિવાનદ્ પોસહમાંહિ વિચારિવડ, જે ત્રિવિહાર ઉપવાસિ પોસહ કરઈ તેહનદ્ પાણીના દ્રવ્ય લેવા થઈ, જે પોસહમાંહિ જિમિસ્યઈ

તેહનહ દ્રવ્ય વિગઈ તંબોલની સંખ્યા થાઈ, વસ્ત્ર નવા લેવાનહ
 નિષેધ જયણા છઈ, જે પોસહ દેસાવગાસિક વ્રત કરઈ તેહનહ
 દિમિનહ પુણિ માન વરિવહ ઘટઈ, જે ભણી શ્રીઆવશ્યકવૃત્તિ-
 પંચાશકચૂર્ણિ(પૃ૦ ૧૦૩)માંહિ પોસહ દેસાવગાસિક
 સાથિ લેવા પુણિ કહ્યા છઈ, તથા—“ તં સત્તિતો કરેજ્જા,
 તવો ય જો વરિણઓ સમણધમ્મે । દેસાવગાસિણ ય, જુત્તો
 સામાદણં વા ॥૧॥” ઇત્યાવશ્યકચૂર્ણો, જે પોસહમાંહિ જિમહ
 છઈ તેહનું દ્રવ્યે વિગઈ તંબોલ અસન સાક પ્રમુલ દ્રવ્યની સંખ્યા
 જોડયઈજિ. તે ભણી પોસહમાંહિ ૧૪નિયમ યથાયોગઈ કરિવાજિ,
 પોસહમાંહિ જેઈ શ્રાવકનહ વિગઈ તંબોલ પાણી આહારની અવિ-
 રતિ છઈ, તેહ શ્રાવકનહ કાજિ અન્ન રંધાઈછઈ પાણી ફાસૂ કરાઈ
 છઈ, ઘરચી માતપાણી ગૃહસ્થ છૂટા ઉપાસરઈ આણઈ છઈ તે
 ગૃહસ્થ યતિ સરીલહ કિમ કહીઈ ? શ્રાવકની ૧૧ પ્રતિમાઅઈ
 યતિ સમાનવેષઈ ક્રિયાઈ થાઈ તે દેસાવગાસિક મ ઉચરિસ્યહ
 પુણિ પોસહતા શ્રાવક દેસાગાસિક વ્રત પોસહમાંહિ ઉચરાવઈજિ,
 એતલઈ પોસહમાંહિ ૧૪ નિયમ સિદ્ધાંતનહ ન્યાયઈ ઉચરિવા, તથા
 તપાગચ્છની સામાચારીનહ ન્યાયઈ ઉચરિવા, તથા તપાંના કીધા
 પડાવશ્યકના વાલાવબોવમાંહિ હમ લિખયહ છઈ— ‘ જે સચિત્તાદિ
 દિનાઈયા નિયમ સંજ્ઞેનીયઈ તે દેસાવકાશિક કહીયઈ ” એ પુણિ
 પાઠ વિચારિવહ ॥ ૩૨ ॥

ભાષા—શ્રાવકને પોસહમાં ચૌદ નિયમ સંભારવાળ (જોધએ),
 કારણ ? તેમાં કેટલાએક નિયમ નિષેધ રૂપ છે અને કેટલાએક

અંગીકાર રૂપ છે. એ નિયમ અહોરાત્રિના છે, તેમાં સચિત્તાદિ દશ નિયમ પોસહમાં પ્રાપ્તિ નિષેધરૂપ છે અને ચાર નિયમ અંગીકાર કરવા રૂપ પણ છે, (તે) દિન સંબંધી તથા અહોરાત્રિ સંબંધી જાણવા. આ રીતે જેમાં આહાર કરામ તે પૌષ્ઠમાં વિચારવું, જે ત્રેવિહાર ઉપવાસે પોસહ કરે તેહને પાણીનો દ્રવ્ય લેવો કહ્યો, જે પોસહમાં જમશે તેહને દ્રવ્ય વિગઢ તંબોલ સંખ્યા થાય, વસ્ત્ર નવા લેવાનો નિષેધ જાણાએ છે. જે પોસહ દેસાવગાશિક વ્રત કરે છે, તેને દિશાનો પણ પ્રમાણ કરવો જોઈએ, કારણ કે આવશ્યક ટીકા અને પંચાશકચૂર્ણિમાં પોસહ દેસાવગાસી સાથે લેવા પણ કહ્યા છે, તે આ રીતે—‘તપ કે જે શ્રમણ-ધર્મમાં વર્ણવ્યો (પ્રશંસ્યો) છે. તે શક્તિ અનુસારે દેશાવકાશિક યા સામાયિક યુક્ત કરે’ એમ આવશ્યકચૂર્ણિમાં કથન છે. જે (ઉપધાનના) પોસહમાં જમે છે તેને દ્રવ્યમાં વિગઢ તંબોલ અશન શાક પ્રમુખ દ્રવ્યની સંખ્યા હોવીજ જોઈએ. એટલા માટે પોસહમાં ચૌદ નિયમ યથાયોગે અવશ્યસંભારવા, જે શ્રાવકને પોસહમાં વિગઢ તંબોલ પાણી આહારની અવિરતિ (છૂટ) છે. તેહના નિમિત્તે અન્ન રંધાય છે ફાસૂ પાણી કરાય છે, આહારાદિ પણ છૂટા ગૃહસ્થ (પોતાના) ઘેરથી ઉપાસરે લાવે છે. તે ગૃહસ્થ યતિ સરીખો કેમ કહેવાય ? શ્રાવકોની અગ્યાર પડિમાએ યતિ સમાન વેષ અને ક્રિયા હોવાથી તે ભલે દેસાવગાસી ન ઉચરશે, પણ પોસાતી શ્રાવક પોસહમાં દેશાવગાસિ વ્રત ઉચરેજ, એટલે સિદ્ધાંતાનુસાર (તથા) તપાગચ્છની સામાચારી અનુસાર (પણ) પોસહમાં ચૌદ નિયમ ઉચરવાજ, તથા તપાના રચેલા પગાવશ્યક આલવખોધમાં એમ લખ્યું છે— ‘જે સચિત્તાદિ દિનાન્યા નિયમ સંક્ષેપીયે તે દેશાવકાશિક કહિયે’ એ પાઠ પણ વિચારવો, +

+ તપા ખં. ભેદ પૃ. ૨૨ માં બ્લેક અક્ષરે લખ્યું છે કે—“ સર્વ ઉપવાસાદિક પચક્ષણ તેના (ખરતરના) શાસ્ત્રમાં પોતાના પાછળથી જોડેલા છે, તે મત્રતા નથી, શ્રીઅભયદેવસૂરિ—જિનવંદનભસૂરિને વખતે

(તપા ખરતર ભેદ ગ્રં ૧-૨ બો ૩૪ મો)

૩૩ પ્રશ્ન—તથા खरतरांनइ संप्रदायइ श्रीजिनप्रतिमानइ स्त्री पूजा न करइ, ते स्युं ?

હમણાં જેમ પચ્ચક્રખાણુ ઉપવાસ આંખેલ આદિ કરીએ છીએ તેમજ (હતાં) ” તેમજ પૃ ૨૩ માં લખ્યું છે કે ખરતરને “ એમ પૂછજો—‘શ્રીઅભયદેવસૂરિના વખતે ઉપવાસ આંખેલ આદિક કેવી રીતે ઉચ્ચરતા હતા ? તે શાસ્ત્રમાં દેખાડો’ તે નહિ દેખાડે, તપા પચ્ચ-ખખાણુ કરે છે તે સર્વ મને છે, આવશ્યક ઉપર પચ્ચખખાણુ ભાખ્ય છે, તેની સાથે મહત્તું જાણુજો ” એટલે જણાવાનું કે— જો પૂજ્ય અભયદેવસૂરિ અને જિનવલ્લભસૂરિના વખતે જેમ હમણાં પચ્ચક્રખાણુ ઉપવાસાદિકના તપાઓ કરે છે તેમજ હતાં અને તપા જે પચ્ચક્રખાણુ કરે છે તે આવશ્યકગત પચ્ચક્રખાણુ ભાખ્યાદિ સર્વે શાસ્ત્રથી મળે છે તો જે આજે તપાઓ છઠ્ઠ અઠમાદિ યાવત્ ચઉત્તીસમહત્ત સુધી ના પચ્ચક્રખાણો એકી સાથે પચ્ચક્રખાણે છે તેમ નવકારસી આદિ ચોવિહાર પચ્ચક્રખાણોમાં પણ પાણુસ્સના આગારો ઉચરાવે છે તે શ્રીઅભયદેવસૂરિ-જિનવલ્લભસૂરિએ કયા શાસ્ત્રમાં કહ્યા છે ? તેમ આવ-શ્યકગત પચ્ચક્રખાણુ ભાખ્યની કષ્ઠ ગાથામાં કહ્યા છે ? તે પ્રમાણુ પાઠ સાથે જન્મવાચાર્ય બતાવે. અન્યથા એકાંત દષ્ટિરાગને વશ થઈ એક પણ પ્રમાણુ પાઠ આપ્યા વગરજ કેવળ કલ્પનાના ઘોડા હાંક્યે જવાથી જરા માત્ર પણ આત્મસિદ્ધિ કે મતસિદ્ધિ નથી. બલ્કે સંસારની અભિ-વ્રદ્ધિ શિવાય બીજું કાંઈય લાભ નથી. બીજું એજ તપા ખરતર ભેદ પૃ ૧૩૫ માં મૂળ લેખકના ‘પોસહિ ચારતરડ મંગઈજ છઈ’ આ વાક્યનો સીધો અર્થ ‘પોસહ ચારિત્રનો ભાંગો(ભેદ)જ છે’ એવો થાય જતા પોતાની વિદ્વત્તાના નશાથી મૂળ પાઠ ‘પોસહિ ચારતરડ મંગ[ઠ]ઈજ છઈ’ આમ લખીને જે અર્થ ‘પોસહ ચારિત્રનો-ચાર પ્રકારેજ છે’ આમ લખ્યો છે, તે પણ આગમપ્રજ્ઞતાનો નમૂનોજ છે. અસ્તુ.

भाषा:—अरतर संप्रदायमां जिनप्रतिमानी पूज्ज स्त्री न करे, ते शुं ?

तत्रार्थे—देहरइ मूलनायक जिनप्रतिमानी मध्यमवय वर्त्तमान स्त्रीनइ विलेपनरूप अंगपूजा कालनइ योगइ श्रीजिनदत्तमूरि युगप्रधानइ लाभ छहउ (?) जाणी निषेधी छइ, बालकवय वृद्धवय वर्त्तमान सुविचाणी स्त्रीनइ विलेपननी पूजा श्रीमूलनायक जिन-प्रतिमानी निषेधी नथी, अनइ मध्यम वय स्त्रीनइ पुणि अवमरइ अंगपूजा पत्वइ बीजी अष्टप्रकारी पूजा गीत नाटक धूप दीप नैवेद्य फल जल चैत्यवंदना प्रमुख पूजा निषेधी नथी, महु स्त्री घरि घरि पाटलीपुरनी पूजा वासत्तेप करी करइजि लइ, घणी जीभ वाहतां गुण नथी, जे लिख्या—‘पुरुष थकी २७ गुणी अनइ २७ अधिक स्त्रीनइ पूजाना अंतराय कीधा’ ते घणुं असंबद्ध अनार्य वचन बोल्यउ छइ ते(जे)भणी वैद्य तापवंत मनुष्यनइ जइ घी लेवउ निषेधइ तउ ते स्युं अंतरायी कहीस्यइ ? ते महा उपगारी, तेह-नइ मांद निवर्त्त्या पछी माता पिता तेहना उपगार मानी दान देई बहु मानइ, ए दृष्टांत इहां विचारिवउ, वली तीर्थकरे पुरुषां थकी २७ गुणी सत्तावीस अधिक स्त्रीनइ जे गोप्य सिद्धांत भणिवा वार्या तउ स्युं तीर्थकर तेह सर्व स्त्रीनइ ज्ञानांतरायी थया ? सहू सरीखी पुणि नथी, परं प्रवृत्ति दोष वारिवइ करी तेहनइ हितूआ थाइ तिम ए भयां प्रवृत्ति दोष वारिवा भणी हितकारी जाणिवा, एतलइ पुरुष थकी सत्तावीस गुणी स्त्रीनइ पूजांतरायना दोष तुम्हे विरते थके कह्या हता ते दोष फोक थया जाणिवा, घणी जीभ वाहतां लबाड लबाड तेहनइ सहू कहिस्यइ, जीए

ગીતાર્થે એ આચરણ' કીધી છઠ્ઠે તે જિનશામનના તથા જિનપ્રતિ-
માના સંઘના મલા મળી કીધી છઠ્ઠે, વલી દ્રૌપદી પ્રભાવતી
મૃગાંકલેલા પ્રમુખ શ્રાવિકાએ જે પ્રતિમા પૂજી તે તડેયડ મલા
કાલ હતા અથવા દ્રૌપદી કુમારી હતી. પ્રભાવતી ગીત નાટક
વાદિત્રની પૂજા કરતી દેવતાદત્ત ફૂલ કુમલાઈ નહીં, જે નિર્માલ્ય
ઝૂતારી પૂજાઈ, મૃગાંકલેલા તથા દમયંતીએ આપણી થાપી
પ્રતિમા પૂજી, પરં સૂરિમંત્રધારીની થાપી સાતિશય ન હતી, એ
વાત વિચારિણી, મૂલ પ્રતિમા સાધિષ્ઠાયક પ્રભાવડ થાઈ, જડ તેહવી
છોતિ થાઈ તડ અતિશય જાઈ, જે ગુરુનાં કહ્યા નહીં કરે તે પછડ
સહી પછતાવિસ્યડ, અતિપ્રસંગડ પૂજા કરતાં શ્રીઅહમ્મદાબાદમાંહિ
શ્રીજીરાવલા પાર્શ્વનાથજીની પ્રતિમા એહજિ છોતી કરીનડ વિલંબાણી
પછડ ભગવંત જાણડ વલી મોટે તીર્થે સ્ત્રીની પૂજાને કુણ વારડ ?
હિતૂઆં ગુરુજીના વચન કરિસ્યડ તેહનડ જય થાસ્યડ ॥ ૩૩ ॥

ભાષા:—દેરાસરમાં મૂળનાયક જિનપ્રતિમાની (કેસરાદિ) વિલેપન
રૂપ અંગપૂજા કાળના યોગે મધ્યમવયની (યુવાન) સ્ત્રીને યુગપ્રધાન
શ્રીજિનદત્તસૂરિશ્રીએ લાલાલાલ સમજી નિષેધી છે, (પરંતુ) બાલક
(અને) સુવિચારવાનું વૃદ્ધ સ્ત્રીને નિષેધી નથી. અને મધ્યમવયની
(યુવાન) સ્ત્રીને પણ અવસરે અંગપૂજા શિવાય બીજી અષ્ટપ્રકારી
પૂજા ગીત નાટક ધૂપ દીપ નૈવેદ્ય ફળ જલ ચૈત્યવંદન પ્રમુખ પૂજા
નિષેધી નથી, પાટલીપુર (પટના)ની બધી સ્ત્રીઓ ઘેર ઘેર વાસક્ષેપ
પૂજા કરેજ છે. વધારે જીલ ચલાવતાં ગુણ નથી, જે લખ્યું કે --
'પુરૂષ કરતાં સત્તાવીસ અધિક સત્તાવીસ ગુણી સ્ત્રીઓને પૂજાનો અંતરાય

ક્યુ" તે બહુ અવિચાર્યુ" અને અયોગ્ય કહ્યું છે. કારણ ? તાવવાળા મનુષ્યને વેદ યદિ ઘી લેવો નિષેધે તો શું તે અંતરાય કરનાર કહેવાશે ? (નહી), તે મહાઉપકારી (કહેવાશે), તેનો મંદવાડ મઠ્યા પછી તેના માતા પિતાઓ ઉપકાર માની દાન દધ તે વેદને બહુ માને (છે), એ દૃષ્ટાંત અહિં વિચારવો, વલી તીર્થ"કર ભગવંતોએ પુરુષોથી સત્તાવીસ અધિક સત્તાવીસ ગુણી સ્ત્રીઓને જે (છેદ ગ્રંથાદિ) ગોપ્ય સિદ્ધાંત બાળવાનો નિષેધ ક્યુ" તો શું તે તીર્થ"કરદેવો બધી સ્ત્રીઓને જ્ઞાનાંતરાય કરનારા થયા ? (નહી), તેમ બધી સ્ત્રીઓ સરીખી પણ નથી, છતાં પ્રવૃત્તિ દોષ વારવાથી તેના હિતૈષી થાય તેમ એ (આચાર્ય મહારાજ) પ્રવૃત્તિ દોષને વારવાથી હિતકારી જાણવા, એટલે પુરુષથી સત્તાવીસ અધિક સત્તાવીસ ગુણી સ્ત્રીને પૂજાંતરાયનું દોષ તમોએ (સર્વ) વિરતી થઇને કહ્યું તે નિર્થક થયું સમજવું, ઘણી જીભ ચલાવતાં બધા લોકો તેને લખાડ લખાડ કહેશે, જે ગીતાર્થે આ આચરણ કીધી છે તે જિનશાશનના તથા જિનપ્રતિમાના (તેમ) સંધના હિત માટે (નહીં કે અહિત માટે) કીધી છે, વલી દ્રૌપદી પ્રભાવતી મૃગાંકલેખા પ્રમુખ શ્રાવિકાઓએ જે જિનપ્રતિમા પૂજી તે (સત્ય છે, પરંતુ) ત્યારે કાળ સારો હતો, (તેમને ઋતુધર્મ અવવાંના ટાઇમની અનિયમિતતા નહોતી), અથવા દ્રૌપદી કુમારી હતી, અને પ્રભાવતી ગીત નાટક વાદિત્રની પૂજા કરતી, (તેમ) દેવતાદત્ત ફૂલ કમલાતા નહીં, જે ઉતારીને (તાજ ફૂલોથી) પૂજા કરાય. મૃગાંકલેખા તથા દમયંતીએ પોતાની થાપેલી પ્રતિમા પૂજી છે. પણ સૂરિમંત્રધારી (આચાર્ય) ની પ્રતિષ્ઠિત સાતિશય (પ્રતિમા) નહોતી. એ વાત

વિચારવાની. મૂળનાયક પ્રતિમા જે અધિષ્ઠાયકના પ્રભાવયુક્ત હોય તેને આવી છોત લાગવાથી અતિશય ચાલ્યો જાય છે (તેથી શાસન-પ્રભાવના અટકી જાય છે) જે ગુરૂના વચન ન માને તેને અવશ્ય પશ્ચાત્તાપ કરવો પડશે, અતિપ્રવૃત્તિએ પૂજન કરતાં અમદાવાદમાં જરાવલા પાર્શ્વનાથજીની પ્રતિમા આવી છોતના લીધેજ વિલંબાણી એટલે ખંડિત થઇ. પછી (સત્યાસત્ય) લગવાનું જાણે. + અને મોટા તીર્થોમાં

+ હમણાં ગત વીસમી સદીનોજ તાજો દાખલો લઇએ-વિં સંં ૧૯૭૧ થા ૭૨ ના વર્ષે લૌકિક ટિપ્પણમાંની સંપૂર્ણ ૬૦ ઘડીની પહેલી આઠમને સાતમ કરી ગૃહસ્થોને લીલવણીના છેદનભેદનાદિ, અને અશ્વલ્લ સેવન માટે એક તિથિની અભિવૃદ્ધિ કરી આપવાના પ્રબલ હિમાયતી અને એમાંજ ધર્મ તથા શાસન સેવા માનનારા તેમ અંતરીખજી તથા ચારૂપ વિગેરેના ઝંઘડાઓ ઉભા કરી જૈન સમાજના લાખો રૂપિયાનો પાણી કરાવી સારામાં સારી (?) નામના મેળવનાર નામાંકિત આચાર્ય સાગરાનંદ સૂરિએ પાટણના વ્યાખ્યાન પીઠપરથી સ્ત્રીઓને જિનપૂજન કરવાનો જોરદાર ઉપદેશ આપ્યો, ફલતઃ અનેકો સ્ત્રીઓએ આધા લીધી, ચૌમાસાઆદ પ્રાચીન તીર્થ ભીલડીયાજીનો સંઘ નીકલ્યો, અને ગણત્રીના દિવસોમાંજ તે સંઘ તીર્થમાં પહોંચી ગયો, પછી શું કહેવું ? એક તો નહાનો સરખો ભોંયરો કે જ્યાં તીર્થપતિ શ્રીભીલડિયા પાર્શ્વનાથની સાતિશાયિની પ્રતિમા વિરાજમાન છે, તેમાં અનેકો સ્ત્રીપુરૂષો એકી સાથે ભરાણા, અને બહુ ઉલ્લાસભાવે અહમહમિકાથી પૂજન કરી રહ્યા હતા, એટલામાં તો મૂળ ગંભારામાંથી કાળા ભમરા એવા છૂટ્યા કે જેના અંગે તરતજ બધા લોકોને આહાર નાશી આવવું પડ્યું.

આનું કારણ વિચારતાં આશાતના શિવાય ખીનું કાંઈએ સમજાતું

સ્ત્રીયોને પૂજન કરતાં કોણુ રોકે ? અને રોક્યા રહે કોણુ ? હિતોપદેશક ગુરુજીને! કહ્યો જે કરશે તે જય પામશે. ✕

નથી, બહોળા સમુદાયમાં એ જાણુ થવું તો અશક્ય છે કે-કોનાથી શું આશાતના થઈ, પરંતુ એટલું તો અવશ્ય માનવું જોઈએ કે-કોઈને કોઈ આશાતના થયા વગર અધિષ્ઠાતાનું આવું કોપ હોઈજ ન શકે.

✕ તપા ખરતર ભેદ પૃ. ૨૪ માં લખ્યું છે કે-“લોકે તો સર્વ પૂજન નિષેધી. પરં ખરતરે પણુ ઓછી નિષેધી નહિ” ઉત્તરમાં જણાવાનું કે-કાળાનુભાવે ઋતુ ધર્મની અનિયમિતતાને અંગે શાતિશય મૂળનાયક જિનપ્રતિમાના અધિષ્ઠાતાનો લોપ થઈ શાસન પ્રભાવનામાં હાનિ ન પહોંચે એવા શુદ્ધ અભિપ્રાયથી, આલ કે વૃદ્ધોને નહિં કિંતુ માત્ર યુવાન સ્ત્રીયોનેજ મૂળનાયકની કેવળ અંગપૂજનો નિષેધ કરનાર ખરતરાચાર્યોને ભલે ન જાણ્યાચાર્ય લોકાની સરખામણીમાં મૂકે, પરંતુ તપાઓ તો લોકા શું ? પણુ તેરાપંથીઓથીય મુડી ચઢી જાય તેવા છે, કારણુ ? પુરુષોથી સત્તાવીસ અધિક સત્તાવીસ ગુણી સ્ત્રીયોને દીક્ષાનો નિષેધ જે લોકા અને તેરાપંથીઓએ પણુ નથી કર્યો, તે તપા વિજયદેવ સૂરિએ સ્વપ્રકાશિત ‘સાધુમર્યાદા પદ્ધતિ’ના ૩૩ મા બોલમાં “મુખ્ય વૃત્તિએ હમણાં શ્રાવિકાને દીક્ષા ન આપવી” આવી આજ્ઞા જાહેર કરીને છ કાયના પિયર સમા સર્વવિરતિના મોટા ખંધનોજ નિષેધ કરી નાખ્યો છે, અને એથી અનંતા તીર્થંકરોએ સ્થાપિત ચતુર્વિધ સંધની પ્રણાલિકાને ખંડિત કરીને દિગંબરોની માફક ત્રિવિધ સંધજ રાખી દીધો, દિગંબરોને તો અશક્યતાના કારણે સાધ્વીસંધનો સ્વતઃ નિષેધ થયો છે,

(તપા ખરતર ભેદ ગ્રંથ ૧ બોલ ૩૫, ગ્રંથ ૨ બોલ ૩૬ મો)

૨૪ પ્રશ્ન—તથા જે સચિત્ત પરિહારી છઈ તેહનઈ રતી પાણી
ફાસૂ પીતાં ત્રિવિહાર પચક્ષાણ ભાજઈ કિં ન ભાજઈ ? ।

પરંતુ તપાઓએ તો જાણી જોઈને ધરાદાપૂર્વક સાધ્વીસંધનો નિષેધ
કર્યો છે, એ ઘણાજ મોટો ફેર પડે છે.

એજ બોલમાં આગળ લખે છે કે—“ ખાસ જરૂર લાગે તો પણ
૩૫ વર્ષની અંદરની વયવાળીને ન દેવી ” આ તમારા પરમ ગુરૂઓની
આજ્ઞાનું પાલન આજકાલના તમે તપ્પા-ગપ્પાઓ જરાએ નથી કરતા ?
અને ૧૦-૧૦ કે ૧૨-૧૨ વર્ષની બાલિકાઓને મૂંડવા ખાતર અનેકો
જાતની ધમાક કરી રહ્યા છે, તેનું કાંઈ વિચાર આવે છે ? અરે જેને
કાલદિવસે થયેલ પોતાના પરમગુરૂઓની આજ્ઞાનું એ ભંગ કરવામાં સંકોચ
નથી તેને તીર્થ કર દેવોની આજ્ઞાનું ભંગ કરવામાં સંકોચ હોયજ ક્યાંથી?

વલી એજ તપા ખરતર ભેદ પૃ૦ ૨૪ માં લખ્યું છે કે “ સ્ત્રી
અપવિત્ર છે તે માટે પૂજા નિષેધી છે, તો ઋતુધર્મ સદા પહેલાં પણ
આવતી, હમણાં પણ ઋતુ આવે છે ” ઉત્તરમાં માલમ થાય કે—
મહાશયજી ! એટલું તો વિચારવું હતું કે—“ ઋતુધર્મ x x આવતી ”
લખવું કે “ આવતો ” લખવું, કોઈ પણ કોષની અંદર ‘ ધર્મ ’
શબ્દને સ્ત્રી-લિંગમાં સાંભળ્યુંએ હતું ? અસ્તુ.

પહેલાં પણ સ્ત્રીયો ઋતુધર્મમાં આવતી એની ના કોણ કહે છે ?
પરંતુ જગ્યાચાર્ય એતો બતાવે કે સ્ત્રીયોને ઋતુધર્મ સદાથીય શું
આજકાલના માફક અનિયમિત આવતો હતો ? ખીણું જેમ

ભાષા:—સચિત્ત પરિહારી આવકને ફાસુ (અચિત્ત) પાણી પીનાં તિવિહાર પચ્ચક્ષ્ણાણ ભાગે કે નહીં ?

આજના સમયની સ્ત્રીયો સિદ્ધાયલજી જેવા પરમપવિત્ર તીર્થધામમાં ખાસ આદીશ્વર દાદાની પૂજા કરતી કરતી ઋતુવંતી થતી જેવાય સંભળાય છે, છતાં તેઓને એટલું ભાન નથી રહેતું કે—અમારી શારીરિક સ્થિતિ કેવી છે ? તેમ શું મહાસતી દ્રૌપદી, પ્રભાવતી, મૃગાંકલેખા વિગેરે પણ શું આજની માફક ખેભાન હતી ? કે જેના દૃષ્ટાંતો આપીને તમે તપાઓ દરેકે દરેક સ્ત્રીયોને જિનપૂજા કરવાની અત્યંત જોરદાર હિમાયત કરી કરીને પરમપવિત્ર તીર્થોમાં પણ અધિષ્ઠાતાના પ્રભાવનો નાશ કરી રહ્યા છો.

વળી એજ પૃં ૨૪ માં આગળ લખે છે કે—“ તે ખરતર ખાલ-વૃદ્ધા સ્ત્રી. જેને ઋતુધર્મ આવતો નથી, તે પણ પૂજા કરતી નથી, એ ઘણો મોટો ફેર પડે છે ” એટલે પૂછવાનું કે—એમ તો તપા—આવકો પણ ઘણાઓ પૂજા શું, પણ દર્શને નથી કરતા, તો શું તે તપાની માન્યતા કહી શકાય ? નજ કહી શકાય, એવીજ રીતે જે ખાલ-વૃદ્ધા સ્ત્રીયો! પૂજા નથી કરતી, એથી ખરતરાચાર્યોનો શું દોષ અતાવવા તઈયાર થયા છો ? વાહ જન્વાચાર્ય મહારાજ ! ધન્ય છે તમને અને તમારા અગ્રલેખકની વિચારધારાને.

વળી એજ પૃં ૨૪ માં મૂળ લેખકે—પુષ્પવતીને જિનપૂજાનિષેધ સૂચક જે બે ગાથાઓ લખેલ છે, તેમાં બીજી ગાથા આ પ્રમાણે છે—

“આલોચણા ન પઢઈ, પુષ્પવર્ડે જં તવં કરેઈ(ઈ)ય ।

નિયમા પયરિણ મુત્તં, અન્નં ન ગુણઈ તિન્નિ દિવસં(દિણં)॥૨॥”

તત્રાર્થે—જે દિવસહ ઉપવાસ આંવિલ નિવીના પચ્ચક્ષ્ણ પચ્ચક્ષી સચિત્તના નિયમ કરી ત્રિવિહાર પચ્ચક્ષ્ણ તે રાત્રિ ચતુર્વિહાર કરહ, અથ જેહનહ જાવજ્જીવ સચિત્ત લેવાના પચ્ચક્ષ્ણ છહ તેહનહ રાતિ ફાસૂ પાણી પીતાં પચ્ચક્ષ્ણનો મંગ ન થાહ, રાતિ પડ્યાં પાણી સચિત્ત થાતહ નથી, જેહ મળી ૩ પહર વરસાલહ, ૪ પહર સીયાલહ ૫ પહર ઉન્હાલહ ફાસૂ કીધાં પછી ફાસૂ રહહ, એવં ઉષ્ણ પાણીના પુણિ કાલ ચૂલ્હા થકા અલગા કીધાં પૂઠહ જાણિવા, તથા છૂટહ ત્રિવિહાર પચ્ચક્ષ્ણહ

આનો અર્થ જંબ્યાચાર્ય લખે છે કે—“ઋતુકાલમાં જે તપ કરે તે તે આલોચણમાં ન આવે, ત્રણ દિવસ નિયમે કરીને પ્રકીર્ણ છોડીને અન્ય ન ગણે” યદ્યપિ આ ગાથા અમુક અંશે અશુદ્ધ છે. છતાં આગમ પ્રસન્ન મોટું ટાઇટલ લગાવી આચાર્ય બનેલા જંબુસૂરિએ આટલું વિચાર ન કયું કે “પ્રકીર્ણ છોડીને અન્ય ન ગણે” તો શું પ્રકીર્ણ (પયનાસૂત્ર અથવા પ્રકરણ ગ્રંથ જીવવિચારાદિ) અટકાવવાળી પણ ગણ્યાજ કરે? વાહ જંબ્યાચાર્યજી! તમારી અગમપ્રસન્નતાની બલિહારી છે.

પૃ. ૨૫ માં લખ્યું છે કે—“અટકાવવાલી સ્ત્રીને પૂજા નિષેધી છે, બીજીને નિષેધી નથી” એતો બધાને માન્ય છે. કોઈનેય અમાન્ય નથી. પરંતુ ભલે ન પૂજા કરતી કરતી અટકાવવાલી થઈ જાય, ને એથી અધિક્ષાતાનો ચમત્કાર ભલે નાશ થઈ જાય છતાં એવી ભાન વગરની સ્ત્રીઓએ પણ જિન પૂજા કરવાનું નજ છોડવું આવો સ્પષ્ટ વિધાન શું કોઈ પણ સર્વમાન્ય શાસ્ત્રમાં છે? જે હોય તો તે પ્રમાણ જંબ્યાચાર્ય બતાવે, અન્યથા આ બધો તપાનો ગંધપુરાણ છે.

જઈ ગતિ સચિત્ત પાણી પીયડ તરહી તિવિહાર પચ્ચક્ષ્ણાણ ન
માજઈ, ત્રસ જીવની જયણા કરતાં ઘણા લાભ, એવં પરિઝેડ્યો ॥૩૪॥

ભાષા:-જે દિવસે ઉપવાસ આંખિત નિવીના પચ્ચક્ષ્ણાણ તથા
સચિત્તનો નિયમ કરી તિવિહાર પચ્ચખે તે માણસ રાત્રે ચોપિહાર કરે.
એટલે પાણાહારનો પચ્ચક્ષ્ણાણ કરીને ચારે આહારનો ત્યાગ કરે, જેને
યાવજ્જીવ સચિત્તનો ત્યાગ હોય તેને રાત્રે ફાસ પાણી પાતા પચ્ચ
ક્ષ્ણાણનો ભંગ ન થાય કારણ ? રાત્રિ પડ્યા (માત્ર) થી પાણી સચિત્ત
થતો નથી, કારણકે વરસાદામાં ત્રણ પ્રહર, મીયાદામાં ૪ પ્રહર. અને
ઉંહાદામાં પાંચ પ્રહરસુધી ફાસ પાણી અચિત્ત રહે + એવીજ રીતે

+ જાયડ સચિત્તયા સે, ગિહ્મમિત્ર પહર પંચગસ્સુવરિં ।

ચઉપહરોવરિ સિસિરે, વામ્સાસુ પુણો તિપહસ્સુવરિં ॥૮૮૨॥

વ્યા૦—‘જાયે’ત્યાદિ, જાયતે-ભવતિ સચિત્તતા ‘મે’ત્તિ તસ્ય
ઉષ્ણોદકસ્ય પ્રાસુકજલસ્ય વા (પ્રાસુકં-સ્વકાયપરકાયશસ્ત્રોપ-
હતત્વેનાચિત્તિભૂતં જલ’મિત્યસ્ય! : પૂર્વગાથાવ્યાખ્યાયા) રત્નાનાયર્થ
ધૃતસ્ય ‘ગ્રીષ્મે’ ઉષ્ણકાલે ‘પ્રહરપચ્ચકસ્યોપરિ’ પ્રહરપચ્ચકાદૂર્ધ્વ,
કાલસ્યાતિરૂક્ષત્વાચ્ચિરેણૈવ જીવમંમક્તિમદ્ભાવાત્, તથા ‘શિશિરે’
શીતકાલે, કાલસ્ય સ્નિગ્ધત્વાત્પ્રહરચતુષ્ટયાદૂર્ધ્વ સચિત્તતા ભવતિ.
વર્ષાસુ-વર્ષાકાલે પુનઃ કાલસ્યાતિસ્નિગ્ધત્વાત્પ્રાસુકીભૂતમપિ જલં ભૂયઃ
પ્રહરત્રયાદૂર્ધ્વ સચિત્તીભવતિ, તદૂર્ધ્વમપિ યદિ ધ્રિયતે તદા હ્યારઃ પ્રક્ષે-
પણીયો યેન ભૂયઃ સચિત્તં ન ભવતીતિ ૮૮૨ (પ્રવ.સા સ પા.૨૨૫-૫૫)

આ પાઠમાં ઉંહાપાણીથી જુદો જે ફાસ પાણી કહ્યો છે તે
પ્ર. સા. નીજ ૮૮૧ માં ગાથાની ટીકાના “ પ્રાસુકં-સ્વકાયપરકાય

ઉન્હાપાણીનો(પણ)કાળ ચૂકાથી નીચે ઉતાર્યા પછી જાણવો, તથા છૂટા તિવિહાર પચ્ચક્ષ્માણુમાં રાત્રે સચિત્ત પાણી પીએ તોએ તિવિહાર પચ્ચક્ષ્માણુ ભાગે નહીં, (પરંતુ) ત્રસશયની જયણા કરતાં વિશેષ લાભ (છે) આ રીતે ખીના છે. x

શસ્ત્રોપહતત્વેનાચિત્તિભૂતં જલં ” આ પાઠનુસાર વસ્તુસંયોગથી અચિત્ત થયેલ પાણી સમજવાનું.

x તપા ખરતર ભેદ પૃ. ૨૫ માં આગમપ્રજ્ઞાચાર્ય લખે છે કે- “ છુટે પચ્ચક્ષ્માણુ સાંજે તિવિહાર કરે તેને ‘ ક્ષયુ પાણી વિના ખીળું’ વપરાય નહીં’ એવું ક્યાં કહ્યું છે ? તેનો આધાર નથી, ગચ્છક્ષ્માણુ પોતાની મતિકદ્વપના છે ” એના ઉત્તરમાં જણાવાનું, કે ‘ છૂટા પચ્ચક્ષ્માણુ-વાલાને રાત્રે તિવિહાર પચ્ચક્ષ્માણુમાં કાયું પાણી પીવું કદપે’ એવું તપાના જન્મ પહેલાંના કયા સર્વમાન્ય શાસ્ત્રમાં લખ્યું છે ? તે તો આગમપ્રજ્ઞાચાર્ય પ્રમાણુ સાથે બતાવે, દિવસે ઉપવાસ તથા એકાસણા-ખિયાસણાદિના અને રાત્રે દિવસચરિમના તિવિહારમાં શું તદ્વાવત છે ? જે ત્રણ આહાર(અશન આદિમ અને સ્વાદિમ) નો ત્યાગ દિવસે ઉપવાસાદિમાં કરાય છે તેના તે ત્રણ આહારનો ત્યાગ રાત્રે દિવસચરિમમાં કરાય છે, તો શું કારણ ? કે ઉપવાસાદિ તિવિહારમાં તો કાયું પાણી ન પીવાય, ને દિવસચરિમ તિવિહારમાં પીવાય, વસ્તુતઃ ગમે તે તિવિહાર પચ્ચક્ષ્માણુમાં કાયું પાણી પીવાથી પચ્ચક્ષ્માણુ દૂષિતજ કહેવાય, એટલેજ જેમ ઉપવાસાદિ તિવિહારમાં કોઈ ગચ્છવાપી કાયું પાણી નથી પીતા કે નથી તેવો ઉદ્દેશ કરતા, એટલુંજ નહીં, પણ તેમ કરતાં તે તે

(તપા-ખરતર ભેદ ગ્રંથ ૧ બોલ ૩૬, ગ્રંથ ૨ બોલ ૩૭ મો.)

૩૫ પ્રશ્ન -નથા સ્વરતર શ્રાવક ૩ વાર પોસહમાંહિ તિવિહાર પચ્ચક્કલ્હ, તે સ્યું ?

ભાષા:-ખરતર શ્રાવક પોસહમાં ત્રણ વાર તિવિહાર પચ્ચક્કલ્હે, તે સ્યું?

તત્રાર્થે-પ્રમાતિ જે તિવિહાર આપણહ મેલિ પચ્ચક્કલ્હ તે પચ્ચક્કલ્હ આવશ્યક સાચવિવાનહ કાજિ, પછી વલી શ્રીગુરુની માલ્હિ આલોચણા સ્વામણા પચ્ચક્કલ્હાણ કરિવા મણી વીજીવાર તિવિહાર પચ્ચક્કલ્હ, પછી માગિની પડિભેહણ વેલાઈ જે વલી તિવિહાર પચ્ચક્કલ્હ, તે ઉપવાસના જે આગાર ડચર્યા હતા તેહનહ ટાલિવા મણી. શ્રીપદ્મવસ્તુકવૃત્તિમાંહિ કહ્યા છહ-જે તિવિહાર એકામણા પચ્ચક્કલ્હને જે જિમ્યાં પછહ વલી તિવિહાર પચ્ચક્કલ્હાણ કરહ તે એકામણાના આગાર વારિવા મણી, તિમ ઇહાંઈ જાણિવડ. અથવા સાંભિના છટ્ટા આવશ્યક સાચવિવા મણી દિવસચરિમ તિવિહાર પચ્ચક્કલ્હ (આવા) સાંભિ ચડવિહાર પચ્ચક્કલ્હી છટ્ટા આવશ્યક કરહ, ઇહાં અઘટતડ સ્યું જાણઅડ છડ ? વલી

પચ્ચક્કલ્હાણુનું ભંગ માને છે, તેમ અમો દિવસચરિમ તિવિહારમાં કાચું પાણી પીવાથી તે પચ્ચક્કલ્હાણુને દૂષિત માનીએ છીએ, છતાં અગમપ્રજ્ઞ એવો સર્વમાન્ય શાસ્ત્રપ્રમાણ પતાવી દે કે જેની અંદર દિવસચરિમ તિવિહારમાં કાચું પાણી પીવાની સ્પષ્ટ છૂટ હોય, જે આવો પ્રમાણ જગ્યાચાર્ય પતાવી દે તો ખરતર ગચ્છવાણા માનવાને તથ્યાર છે, પણ એવો પ્રમાણ જેજ કયાં ? આતો અગમપ્રજ્ઞ અને નેમના વડવાઆની ગચ્છર-મતિકરપનાએ ઘડીકાદેલ ધરનો આચાર છે.

શ્રાવકાંનંદ 'પન્ચકક્ષ્વ પાણાહાર' એ પાઠ ન કહીવડ, જઈ એ પાઠ શ્રાવક તિવિહાર પન્ચકક્ષ્વાણીતા કહઈ તડ તિવિહાર પન્ચકક્ષ્વાણીતા ત્રીજાઈ છૂટાઈ શ્રાવક તપારંદ 'પન્ચકક્ષ્વ પાણાહાર' હમ કાંઈ ન કહઈ ? (વસ્તુતઃ) એ પાઠ યતિયાંનંદ કહીવડ છઈ. શ્રાવક પ્રમાતિ સૂરે ઝગાએ પન્ચકક્ષ્વ સાંઝઈ (પાણાહાર) દિવસચરિમ પન્ચકક્ષ્વ એ ઘટતડજિ છઈ ॥ ૩૫ ॥

ભાષા—સવારે જે તિવિહાર પચ્ચખાણુ પોતાની મેળે કરે તે પચ્ચખાણુ નામનો આવશ્યક સાચવવા નિમિત્તે (છે). પછી વલી ગુરૂની સામે (રાધ) આલોયણુ ખામણુ પચ્ચખાણુ કરવા માટે ખીજી વાર તિવિહાર પચ્ચખે, પછી સાંજની પડિલેહણુ વેણાયે જે વલી તિવિહાર પચ્ચખે. તે ઉપવાસના જે આગારો ઉચ્ચાર્યા હતા તેને બંદ કરવા નિમિત્તે છે, પંચાસ્તુકની ટીકામાં કહ્યું છે કે—‘તિવિહાર એકાસણુ પચ્ચખીને જે જમ્યા પછી વલી તિવિહાર પચ્ચખાણુ કરે તે એકાસણુના આગારો બંદ કરવા માટે છે’ તેમ અહિં પણ જાણવું, અથવા સાંજના છટ્ટો આવશ્યક સાચવવાને દિવસચરિમ તિવિહાર પચ્ચખે, અથવા સાંજે ચોવિહાર પચ્ચખીને છટ્ટો આવશ્યક કરે. અહિં અઘટિત શું જાણો છો ? +, વલી શ્રાવકોને ‘પચ્ચખું પાણાહાર’ આ પાઠ

+ તપાઓ સવારે ચોવિહાર એકાસણું પચ્ચખીને સાંજે શું પચ્ચખાણુ કરે ? તે જન્મ્યાચાર્ય બતાવે, જે પાણુહાર પચ્ચખે તો તે અઘટતું છે. કારણકે એક આસણું જમીને ઉઠ્યા પછી ચારે આહારનો ત્યાગ સવારે એકાસણું પચ્ચકખતી વેળાએજ કરેલ છે. અને જે દિવસચરિમ ચાલનાર પચ્ચખે તો સવારે પચ્ચખેલ ચોવિહાર જે

કહેવોય ન જોઈએ, જો એ પાઠ તિવિહાર પચ્ચક્ખાણુવાળા આવક કહે તો તિવિહાર પચ્ચક્ખાણુવાળા બીજા છૂટા આવક પણ તપાના 'પચ્ચક્ખુ' પાણાહાર' એમ કેમ નથી કહેતા? (વસ્તુતઃ) એ પાઠ સાધુઓએ કહેવાનો છે, (અને) આવક પ્રભાતે 'સૂરે ઉગ્ગએ' (તથા) સાંજે (પાણાહાર) દિવસચરિમ પચ્ચક્ખે, એ ઘટિતજ છે.

બીજા દિવસના સૂર્યોદય સુધીનો છે, તે ક્યાં ગયો? એનો ઉત્તર જાંખ્યાચાર્ય શાસ્ત્ર પ્રમાણથી આપે.

બીજું આત્મસાક્ષિએ, ગુરુસાક્ષિએ અને દેવસાક્ષિએ, એમ ત્રણ વાર પચ્ચક્ખાણુ લેવાનું તો શાસ્ત્રોનાં સ્પષ્ટ વિધાન છે. તો શું તે શાસ્ત્રવિરુદ્ધ કહેવાય? નજ કહેવાય. અને ખરતરવાળાઓ તો કિયે છેજ, પરંતુ તપાઓ પણ ઉપર જતાવ્યા પ્રમાણે ત્રણ વાર ઉપરાંત ચોથી પાંચમી વાર પણ પચ્ચક્ખાણુ કિયે છે, જેમકે પહેલાં ગુરુસાક્ષિએ પચ્ચક્ખાણુ લેતાં કોઈ સામાન્ય સાધુપાસે લીધું હોય અને ત્યાર પછી જો કોઈ ઉપાધ્યાય પદવર આવી જાય તો તેની પાસે ચોથી વાર કિયે, અને ત્યાર બાદ જો કોઈ આચાર્યનો આવાગમન થાય તો તેની પાસે પાંચમી વાર પણ ખુદ તપાઓ કિયે છે. તો પછી આ રીતે એક દિવસમાં પાંચવાર લીધેલ પચ્ચક્ખાણુ કેટલા દિવસે પૂરા કરશે? આ વાતનો વિચાર થોડો પણ આવ્યો હોત તો ૫ x ૨૬ માં “એમજ વહી વહી-ફરી ફરી પચ્ચએ તે શાસ્ત્રવિરુદ્ધ છે” આમ વગર વિચાર્યે લખી દઈને આગમપ્રજ્ઞતાનું પ્રદર્શન નજ કરાવતે.

જો કહેવાય કે—સામાન્ય સાધુપાસે પચ્ચક્ખાણુ લેવા છતાં ઉપાધ્યાય કે આચાર્યનો જોગ મળતાં તેમની પાસે ફરી પચ્ચક્ખાણુ ન કિયે તો

(તપા ખરતર ભેદ ગ્રંથ ૧ બોલ ૩૭, ગ્રંથ ૨ બોલ ૩૮ મો)

૩૬ પ્રશ્ન—તથા સ્વરતર પ્રમાતિ ચડવિહાર ઉપવાસ પચ્ચક્ખી સાંખિ વત્તી ચડવિહાર કરહ, તે સ્યું ?

ભાષા:—ખરતર સવારે ચોવિહાર ઉપવાસ પચ્ચક્ખીને સાંખે વત્તી ચોવિહાર કરે, તે સ્યું ?

તત્તરથે—ઇમત્તિ ચડવિહારતત્ત પ્રશ્ન ઉત્તર જાણિવડ, એ વિશેષ-પ્રમાતિ સૂરે ઝગાણ ચડવિહાર કરહ સાંખિ દિવસચરિમ પચ્ચ-ક્રવામિ કહહ, અપરં તવાંસા યતિ ચડવિહાર ઉપવાસ પચ્ચક્ખી સાંખિ સ્યું પચ્ચક્ખણ કરહ ? તે જણાવિવડ ॥૩૬॥

ભાષા:—એમજ (જેમ તિવિહારનો કલ્હો તેમ) ચોવિહારનો પ્રશ્નોત્તર જાણવો, વિશેષ એટલું કે—સવારે ‘ સૂર ઝગાણ ’ ચોવિહાર કરે અને સાંખે દિવસચરિમ પચ્ચક્ખામિ કહે, ‘ બીજું તપાના યતિ ચોવિહાર ઉપવાસ પચ્ચક્ખી સાંખે સ્યું પચ્ચક્ખાણ કરે ? તે જણાવશો.

(તપા ખરતર ભેદ ગ્રંથ ૧ બોલ ૩૮, ગ્રં. ૨ બોલ ૪૧ મો)

૩૭ પ્રશ્ન—તથા પચ્ચક્ખણ પારતાં સ્વરતરા ‘ફાસિયં પાલિયં પૂરિયં તીરેયં કિટ્ટેયં’ इत्यादि पाठ न कहइ, ते स्युं ?

તેમનો અવિનય થાય, જાનીઓ ધર્મ વિનયમૂળ કહે છે, એટલે ઉપાધ્યાય કે આચાર્ય પાસે ફરી ની પચ્ચક્ખાણ લેવું જ જોઈએ, આમ વધારે વાર લેવાથી કાંઈ પચ્ચક્ખાણનું કાળ વધારવાની જરૂર થોડો છે ? તો ખરતર-વાળાઓ પણ સવારે લીધેલ પચ્ચક્ખાણના આગારોનું સંવરણ કરવા નિમિત્તે સાંજની પડિલેહણ વખતે ત્રીજી વાર પચ્ચક્ખાણ લિએ. તેમાં કયા શાસ્ત્રને આધ આવે છે ? તે શાસ્ત્રપ્રમાણ સાંધે જાંખ્યાચાર્ય અતાવે.

ભાષા—પચ્ચક્ષાણુ પાસ્તાં ખરતર ‘ફાસિયં પાલિયં પૂરિયં-
તીરિયં કિટ્ટિયં’ ઇત્યાદિ પાઠ નથી કહેતા, તે શું ?

તત્રાર્થે—‘ફામિયં પાલિયં પૂરિયં’ એ પાઠ પચ્ચક્ષાણ પાર્યાં
પછી કહિવડ નથી જે સ્વરતરંગના શ્રાવક એ પચ્ચક્ષાણ પારતાં
કહડ, કિન્તુ એ પચ્ચક્ષાણ કરિવાની વિધિ છડ, જે પચ્ચક્ષાણ
કાલવેલા ટાલી ગુરુનું વાંદણાં વિણ દિયાં પચ્ચક્ષવડ તે ફામિડ
કિમ કહાઈ ? તિમ વિણ કર્યાં ‘ફાસિયં’ જે કહિયડ તે મૃષાવાદથી
મહાદોષણ લાગડ છડ, એક ન કીજડ તે દોષ બોલીયડ બીજડ
સ્વોટડ કહીયડ બે મહાદોષ છડ, વલી પૂછી જોજ્યો ॥ ૩૭ ॥

ભાષા—‘ફાસિયં પાલિયં પૂરિયં’ એ પાઠ પચ્ચક્ષાણુ પાર્યાં
પછી કહેવાનું વિધાન નથિ કે જેના અંગે ખરતર શ્રાવક પારતાં કહે,
કિન્તુ એ પચ્ચક્ષાણુ કરવાની વિધિ છે, જે પચ્ચક્ષાણુ કાલવેલાને
ટાળીને ગુરુને વાંદણા દીધા વગર પચ્ચક્ષાણુ તે ફાસિયં કેમ કહેવાય ?
તેમ (પચ્ચક્ષાણુ) કર્યા વગર ‘ફાસિયં’ ને કહીયે તે મૃષાવાદથી
મહાદોષ લાગે (છે), એક ન કીજે તે દોષ અને ખીજે ખોટો કહીયે
એ બે મહાદોષ (લાગે) છે. વલી પૂછીજે ।

(તપા ખરતર ભેદ ગ્રં ૧ ખોલ ૩૯, ગ્રં ૨ ખોલ ૪૨ મો)

૩૮ પ્રશ્ન—તથા તપારંડ મૃત યતિના કલેવર ઉપાસરામાંહે
વોસિરાવડ સ્વરતર થંડિલડ જાઈ વોસિરાવડ તે સ્યું ?

ભાષા—તપા મૃત યતિના કલેવરને ઉપાસરામાં વોસિરાવે +

+ તપા ખ ભેદ પૃ ૨૮ માં લખ્યું છે કે—“આવશ્યકાદિકના વિષયે તે
ઉપાસ્રમાં વોસિરાવડ કહ્યું છે” એટલે લખવાનું કે—જો આવશ્યકિકમાં

અરતર સ્થાંડિલભૂમિએ જઈ વોસિરાવે, તે શું ?

ઉપાશ્રયમાં વોસિરાવવું કહ્યું હતું તો તે પ્રમાણ પાઠ જાળ્યાચાર્ય કે તેમના અગ્રલેખકે કેમ ન લખ્યું ? લખે ક્યાંથી ? હોય ત્યારે ન, અરે આવશ્યકવૃત્ત્યાદિકમાં તો શું હોય, પરંતુ એમના પૂર્વજીએ પણ ઉપાશ્રયમાં વોસિરાવવું નથી લખ્યું શ્મશાનમાંજ વોસિરાવવું અને સાધુઓને સાથે જવાનું જાણ લખેલ છે, જુઓ —

“દંડધરો વાયણયરિઓ સરાવસંપુડે કેમરાઈં ગિણહૃ, દુવે કપ્પતિત્થં અસંપટ્ટપાણં નિતિ । જો પઢિસ્મએ અચ્છદ્ધ સો ઉચ્ચાર-પામવણેલમત્તએ વિગિંચદ્ધ, વમહિં પમજ્જદ્ધ । જેણ ગયા તેણેવ પહેણ ન નિઅત્તિઅવ્વં, તહા પરિટ્ટવણથંડિહં પમજ્જિય તત્થ કેસરેહિં અવ્વુચ્છિન્નધારાએ વિવરિઓ ‘ક્રો’ કાયવ્વો, વાયણયરિઓ પુણ ‘એઅસ્મ અદ્ધંઓ અમુગો આયરિઓ, અમુગો અદ્ધંઓ ઉવજ્જમાઓ’ સંજદ્ધે ‘અમુગા અદ્ધંઆ પવિત્તિણી તિવિહં તિવિહેણ વોમિરિ-અમેઅંતે’ વાગતિગં મણદ્ધ । પરિટ્ટવિઅસ્મ નિઅત્તંતેહિં પયાહિણા ન કાયવ્વા, સ્વસ્થાનાદેવ નિવર્તિતત્થં । પરિટ્ટવિએ કપ્પમુત્તારસ્તા મહાપારિટ્ટાવણિઅવોમિરણત્થં કાઠસ્મગં કરિંતિ, નમુક્કાર ચિંતિત્તા મુહેણ મણંત-તિવિહં તિવિહેણ વોમિરિઅં,”

(આચારવિધિ સમાચારી, પત્ર ૩૦-૩૧)

આ પાઠમાં તપાના પૂર્વાચાર્યજી સ્પષ્ટ કથે છે કે-સાધુના મૃત કલેવરની સાથે સાધુએ શ્મશાને જવું અને ત્યાંજ એને વોસિરાવવું, એવીજ હકીકત સુબોધાસામાચારી પત્ર ૩૫ માં આજી શ્રીચંદ્રસૂરિ પણ કહ્યું છે. આ સામાચારીના ઉપક્રમમાં સાગરાનંદ લખે છે કે-“ પ્રસ્તુતા

તત્રાર્થે—યતિનાં કલેવર પરિઠવાનઙ્ કાજિ યતિ મહાથંડિલ્લહ-

ચ સામાચારી પ્રમાણતમા, યતઃ શ્રીમદ્વિર્યતિજિતકલ્પટીકાકારૈઃ શ્રીસાધુરત્નસૂરિભિરેવ સ્વવૃત્તૌ પ્રમાણતયા નિર્દિષ્ટા । ” આથી સુર વાંચકોને જણાયું હશે કે—ખાસ તપાના માન્ય પૂર્વાચાર્યો પણ ઉપાશ્રયમાં વોસિરાવવું નથી કહેતા તો પછી આવશ્યકવૃત્તિકાર વિગેરે તો કહેજ ક્યાંથી ? આ તો આવા મહાન્ શાસ્ત્રકારોના જીહ્વા નામ લખને ભદ્રજીવોને જે ભ્રમણામાં નાખવા એ તપાઓનો પરંપરાગત ધરનો આચાર છે.

વડી એજ પૃ૦ ૨૮ માં લખે છે—“ તપા ઉપાશ્રયમાં વોસરાવે છે ” ત્યારે આગળ પૃ૦ ૧૩૮ માં લખે છે કે—“ તપા ઉપાશ્રયના આરણે વોસિરાવે ” આ બે બાબતમાં સત્ય શું છે ? અને ઉપાશ્રયના આરણે વોસિરાવે તો શું મૃતકને કાઢતાં આરણમાં રોકી રાખીને એની પાસે કાઉસસગ્ગ આદિ ક્રિયા કરે કે કેમ ? તે જન્વાચાર્ય પ્રમાણ પાઠસાથે બતાવે. અને એજ પૃ૦ ૨૮ માં મૂળ લેખકે લખેલ “ સાધુ મસાણ—ભૂમિ જાઈ આરોગી ઠામ પૂંજી આપઈ ” આ વાક્યનો અર્થ— ‘ મલ્લિકાસ્થાને મલ્લિકાપાતઃ ’ કરનારા જન્વાચાર્ય લખે છે કે—“સાધુ સ્મશાનભૂમિ જઈ આરોગી ઠામ પૂંજી દે છે ” એમાં આવેલ ‘આરોગી’ શબ્દનો અર્થ શું ? એતો જન્વાચાર્યે સમજાવવું હતું, સુર વાંચકો ! ‘આરોગી’ શબ્દનો અર્થ છે ‘જમીને’. એમાં વિચારવાને અવકાશ છે કે—જ્યાં હળકા માણસો પણ જમવાનો સંકોચ રાખે તેવા સ્થાન પ્રસંગમાં સાધુ કેવી રીતે આરોગતા હશે ? એનું વિચાર મૂળ લેખકે તેમ જન્વાચાર્યે પણ નથી કયું, કરે ક્યાંથી ? પરગુણ સહિષ્ણુતા સાથે વિવેક શુદ્ધિ હોય ત્યારે ન. અસ્તુ.

તાંડ જાડ તે થંડિલ્લાની ધરતી પૂંજડ પડિલેહડ, તેહ ઊપરિ શાસ્ત્રોક્ત
અક્ષર વિન્યાસ કરી તિહાં વિધડ કલેવર પરિઢવી વોસિરાવી
કાઝસગ્ગ કરી બીજડ માર્ગિ નગરમાંહિ આવડ, એ વિધિ યતિની
શ્રીઆવશ્યકવૃત્તિ શ્રીઆવશ્યકચૂર્ણિમાંહિ ઘણું વિસ્તાર લિખી છડ,
ગીતાર્થાં નિરવિરોધીયાં પાસિ વચાવિજ્યો સાંભલિજ્યો સમમ્ભિસ્યડ,
પરં ઉપાસરડમાંહિજ કલેવર વોસિરાવિવડ નહીં સહી ॥ ૩૮ ॥

ભાષા—સાધુનો કલેવર પરડવા માટે સાધુ મહારથાંડિલ (સ્મશાન) ભૂમિએ
જઈ સ્થાંડિલ ભૂમિને પૂંજે પડિલેહે. તે ઉપર શાસ્ત્રોક્ત અક્ષર વિન્યાસ
કરી વિધિએ કલેવર પરડી વોસિરાવી (તે સંખંધી) કાઉસસગ્ગ કરી ખીન્ને
માર્ગે નગરમાં આવે, આ વિધિ સાધુની આયશ્યક ટીકા તથા ચૂર્ણિમાં ઘણા
વિસ્તારથી લખી છે, તે નિષ્પક્ષપાતી પાસે વંચાવળે સાંભળળે. તે
સમજશે. પરં ઉપાસરામાંજ કલેવર વોસિરાવવો નહીં એ નિશ્ચિત છે.
(તપા ખરતર ભેદ ગ્રંથ ૧ ખોલ ૪૦, ગ્રંથ ૨ ખોલ ૪૩ મો.)

૩૯ પ્રશ્ન—તથા સ્વરતર શ્રાવક આવશ્યક ક્રિયા કરતાં યતિની
પરડ રજોહરણ ન રાખડ તપા શ્રાવક રજોહરણ હાથિ રાખડ, તે સ્યું ?

ભાષા—ખરતર શ્રાવક પ્રતિક્રમણાદિ ક્રિયા કરતાં સાધુની માફક
રજોહરણ ન રાખે, તપા શ્રાવક રજોહરણ હાથે રાખે, તે શું ?

તત્રાર્થે—શ્રાવક સામાયિક કરતાં “ સાહુસગાસાઓ રય-
હરણ નિસેજ્જં વા મગ્ગતિ ” એહવા શ્રીઆવશ્યકચૂર્ણિના પાઠ
થકી યતિ પાસિ ઉપગ્રહિક રજોહરણ માંગી પૂંજી સામાયિક કરડ
“ અહ ઘરે તો સે ઉવગ્ગહિયં રયહરણં અત્થિ, તસ્સ અસત્તિ
પોત્તસ્સ અંતેણ ” એહવા આવશ્યકચૂર્ણિના પાઠ થકી ઘરે સામા

यिक करतां श्रावकनइ औपग्रहिक रजोहरण-चलवला (होय,ते) साथि
 पूंजी नामायिक करवुं. एवंकारिइ श्रावकनइ रजोहरणुं पूंजीवा
 भणी छइ, पुणि क्रिया करिवा भणी नथी, ते चलवलउ न हवइ
 तउ पोतानइ छेहडइ करी पूंजइ, ए विधि श्रीआवश्यकवृत्ति-चूर्णिमांहि
 कही छइ, तथा तपागच्छना कीधा श्रीआवश्यकना बालावबोध-
 मांहि इम लिख्या छइ “ जे वांदणा देतां श्रावक चलवलइ
 करी प्रमार्जिवानउ काम करइ पुणि यति महात्मानी परि मुख
 आगली धरइ नहीं ” इहां आचरणाजि प्रमाण, तथा श्राविका-
 नइ मूलथकी चलवला राखिवा निषेध्या छइ, कोइएक गरढी
 श्राविका चलवला चउखुणा ल्यइ, इम छइ-जे आपणा हठ-
 वाह्यां आपणां मूलगा गुरुना कह्या नथी मानता तेह बीजाना
 कह्या किम मानिस्यइ ? तथा चोक्तं सोमसुन्दरसूरि शिष्य
 महोपाध्याय हेमहंसगणिकृते षडावश्यक बालावबोधे- “ वांदणा
 देतउ श्रावक चलवलइ करी प्रमार्जिवानउ काम करइ पनि
 महात्मानी परि मुख आगलि न धरइ ” इत्यादि । एतलइ
 पं० हर्षभूषणकृत श्राद्धविधि(वि)निश्चय ग्रन्थनइ मेलि पुणि
 चडुलीदोष टाल्या—“ श्राविकाणां तु पूर्वदर्शिताशठाचीर्ण-
 परम्परागतसामाचारीतो मनोविपर्यासहेतुकवृत्तदणकोपे-
 तचरपलकग्रहणमपि निषिद्धयते, चरवलकस्थानीयप्रोञ्छन-
 कादिना ताः प्रमार्जयन्ति, वृद्धश्राविकास्तु वीतविकारत्वात्तमपि
 गृणहन्तीति भावः ” एतलइ वांदणाना दोष अंकुश अनइ
 अंबाड नामइ बेउं दोष श्रावक श्राविकानइ तपाना कीधा ग्रन्थनइ

मेलि टाल्या जाणिव, वली काउसगमांहि डाबइ हाथि रजोहरण जिमणइ हाथि मुहपोती ए विधि प्रवाहइ यतिनइ छइ, तथाहि-
 “ नाही करयलकुप्पर-उस्सारिय पारियम्मि थुईए ।” (इति) श्रीदेवेन्द्रसूरिकृत श्रावकदिनकृत्य सूत्रे, तस्य वृत्तौ “ प्रायः सूत्रे सर्वमप्यनुष्ठानं साधुमुद्दिश्योक्तं, अतस्तद्विशेषमाह-नाभेर-धस्ताच्चत्वार्यंगुलानि चोलपट्टः, करयलत्ति-दक्षिणतर-पाणिभ्यां मुखवस्त्रिकां रजोहरणञ्च कूर्पराभ्यां चोलपट्टो धरणीयः ।” इत्यादि पाठ थकी तपागच्छीय देवेन्द्रसूगिं नाभि थकी च्यारि आंगुले नीचउ चोलवट्टउ १, तथा जिमणइ हाथि मुहपत्ती डाबइ हाथि रजोहरण २, तथा कुहणीए बिहुं करी चोलवट्टउ राखिवउ ३, ए त्रिणह वाना काउसगमांहि यतिनइ कह्या छइ, ते पुणि श्रीहेमहंसमहोपाध्यायकृत षडावश्यकबालावबोध साथि ए अर्थ मिलतउ जाणिवउ, तथा “ खलिण-कविट्टुदुगं पुण, अगीयसेहाइयाण संभवइ । संभवइ गिहत्थाण वि,कयाइ एंगत्तभावम्मि ॥१॥” इम तपाकृत संघाचार ग्रन्थ (प० ४२०) मांहि कह्या छइ, जे काउसगना खलिन कविट्टु नामइ २ दोष ते अगीतार्थ शिष्यनइ थाइ, गृहस्थनइ पुणि एकत्व भावइ ए २ दोष लागइ, इग्यारमी प्रतिमाअइ श्रमणभूत श्रावकनइ पुणि (ए) दोष लागइ, जेह भणी इग्यारमी प्रतिमाअइ रजोहरण आदरइ छइ, तेह भणी खलिनना दोष लागइ, वली इग्यारमी प्रतिमाए चोलपट्टउ आदरइ तेहभणी चोलपट्टउ यूकादि भयइ एकतउ (?) पुणि करवाइ चोलपट्टा पखइ ठेपाडियइ पहियां एकतउ (?) दोष न

लागइ, तेह भणी गृहस्थनइ चलवलइ अणलीधां ए २ दोष काउ-
 स्सगना न लागे, ११ प्रतिमाअइ रजोहरण चोलपट्ट ए २
 श्रावक ल्यइ ते भणी ११ प्रतिमा उरइ ए २ दोष न लागइ,
 एतले श्रीदेवेन्द्रसूरिकृत श्रावकदिनकृत्य तथा (तच्छिष्य धर्मकीर्ति
 कृत) संघाचार ग्रन्थ तथा हेमहंसोपाध्यायकृत षडावश्यक बालाव
 बोध तथा पं० हर्षभूषणकृत श्रावकविधि(वि)निश्चय, तपा-
 गच्छना कीधा ए ग्रन्थ मांहोमांहि मिलता जाणिवा, एतलइ वांङ्गां
 देतां काउस्सगमांहि श्रावक श्राविकाए क्रिया करतां चलवला न
 लेवा, एवं लहुडी पोसालना तपा श्रावक वडी पोसालना तपा
 श्रावक क्रिया करतां चलवला घरतीयइ मूकइ, परं यतिनी परि
 हाथि न ल्यइ, तेहना यति पिण इमजि पूछ्यां कहइ, एवं मार्गि
 चालतां सामायिकधर तथा पोसहतानइ पुणि चलवला न लेवा,
 पूंजिवानउ कार्य निसेज्ज स्थानीय पुंछणा उपगरणइ करिवउ
 शास्त्रन्यायइ दीसइ छइ, चलवला जयणाना अंग छइ, उपासरा
 पोसहसाला घर तेह करी पूंज्याजि करउ तउईजि श्रीआवश्यक-
 चूर्णिमांहि कह्यउ जे घरे सामायिक लेइ जइ यति पासि जाइ तउ
 साधु कहा रजोहरण मांगइ इम कह्यउ पुणि रजोहरणइ साथिनइ
 लीयइ पूंजिवानउ न कहां स्या माटइ? भांजीयइ भंजावियइ, चलवलउ
 ई जयणानउ अंग छइ, पुणि शास्त्रमांहि जिम कह्युं हुवइ तिम
 करियइ, इम शास्त्रन्यायइ जाणीयइ छइ, वली जिम गीतार्थ गुरु
 कहइ ते श्रुतसाखी मानीयइ, परं मतानुराग न कीजइ, छद्मस्थ
 किहांई चूकिवाल हवइ, पुणि अत्तर दीठां कदाग्रह न कीजइ,

વિચારિ જોડ્યો, મિલ્યાં જવાબ પૂરા થાયઈ ॥૩૬॥

ભાષા— આવશ્યકચૂર્ણિ (ઉત્તરાર્ધ પૃ૦ ૨૯૯) માં પાઠ છે કે—
 “ સાહુસગાસાઓ રયહરણં નિસ્સેઝં વા મગ્ગતિ, અહ ઘરે તો સે
 ઝવગહિયં રયહરણં અત્થિ, તસ્મ અસતિ પોત્તસ્મ અંતેણં પમગ્ગતિ)”
 અર્થાત્— ‘ સાધુની પાસે રળેહરણુ (ચરવડો) યા નિષદ્ધા (પુંછણો) માંગે,
 અને ઘેર સામાયિક કરે તો તેનો પોતાનો ઔપગ્રહિક રળેહરણુ હોય
 તેનાથી પૂંજે, તે ન હોય તો ઉત્તરાસણુ આદિ લુગગના છેડાથી પૂંજે ’
 એ રીતે આવશ્યક ટીકા તથા ચૂર્ણિના કથનથી સામાયિક કરતાં શ્રાવકને
 ચરવડો પૂંજવા માટે છે નહીં કે સાધુની માફક હાથમાં રાખવાને, +

+ તપા ખરતર ભેદ પૃ૦ ૨૯ ના ટિપ્પણમાં ‘ સેનપ્રશ્ન ’ નો એક
 અવતરણુ આપેલ છે, એમાં આ. વિજયસેનસૂરિ કહે છે કે “ સાધુઓ
 પાસે કરે તો રળેહરણુ અથવા દંડાસણુ માગી લે, અને ઘેરે સામાયિક
 કરે તો તેનું રળેહરણુ હોય છે, ઇત્યાદિક આવશ્યક ચૂર્ણિ વિગેરેમાં
 રળેહરણુના અક્ષરો છે ” આમાં આચાર્યશ્રીએ “ સાધુપાસે કરે તો
 રળેહરણુ અથવા દંડાસણુ માગી લે ” એમ જે લખ્યું છે તે કેવળ
 ‘ ચરવડા વગર સામાયિકઘર આદ્યો પાછો નજ થઈ શકે ’ એવી મનઃ—
 કલ્પિત સ્વમાન્યતાની પુષ્ટિ નિમિત્તેજ લખ્યું છે, વસ્તુતઃ જે અનૃદ્ધિક
 (ગરીબ) શ્રાવક ઘેર સામાયિક લખને સાધુઓ પાસે જાય. તે ત્યાં જમને
 ગુરુસાક્ષીએ ફરીથી સામાયિક દંડક ઉચર્યા બાદ સાધુપાસે રળેહરણુદિ
 માગવાનું ચૂર્ણિકાર કથે છે, જુઓ—

જો અણિહિદ્ધપત્તો સો ચેડ્યઘરે વા સાહુસમીવે વા ઘરે વા
 પોસહસાલાણ વા જત્થ વા વીસમતિ અચ્છતિ વા ણિવ્વાવારો,

એવીજ રીતે તપગચ્છના (ઉપાધ્યાય હેમહંસગણિએ) કરેલ પત્રવચ્ચક આલાવબોધમાં લખ્યું છે કે—“વાંદણા દેતાં શ્રાવક ચલવલે કરી

મવ્વત્થ કરેઈ સવ્વં, ચત્તસુ ઠાણેસુ ણિયમા કાયવ્વં, તં જહા—
 ચેડયઘરે સાધુમૂલે પોસહસાલાણ વા ઘરે વા આવાસગં કરેતોત્તિ,
 તત્થ જઈ સાહુસગાસે કરેઈ, જઈ પરં પરમયં ણત્થિ, ઇત્યાદિ યાવત
 ઇતાણિહીણંતાં તિવિહેણ સાહુણો ણમિઠ્ઠણ પચ્છા સાહુસક્કિલ્લયં
 મામાઈયં કરેઈ ‘કરેમિ મંતે ! મામાઈયં, સાવજ્જં જોગં પચ્ચક્કલ્લામિ,
 દુવિહં તિવિહેણં, જાવ સાહુ પજ્જુવાસામિ’ ત્તિ કાઠુણં, જઈ ચેડ-
 યાઈં અત્થિ તો પઢમં ચેડયાઈં વંદઈ, સાહુણં સગાસાઓ રયહરણં
 ણિસેઝ્જં વા મગ્ગતિ, અહ ઘરે તો સે ડવગ્ગહિયં રયહરણં અત્થિ,
 તસ્સ અસતિ પોત્તસ્સ અંતેણં, પચ્છા ઇરિયાવહિણ પઢિક્કમઈ ।”

(ઉપાએલ આવશ્યકચૂર્ણિ ઉત્તરાર્ધ પૃ. ૨૯૬)

અર્થ સમજવાનું કે જો સામાયિકધર શ્રાવક ચરવલા વિના
 આમ તેમ જવા આવવાનું ન કરી શકતો હોત તો આ ધેરથી સામાયિક
 લખને આવનાર શ્રાવક પાસે ચરવલો અવશ્ય હોત, અને જો ચરવલો
 એની પાસે હોત તો પછી સાધુની પાસે માગવાનું ચૂર્ણિકાર શામાટે
 કહેતા ? એટલે ચૂર્ણિકારના ઉપરોક્ત કથનથી સ્પષ્ટ સાબીત થાય છે
 કે—સામાયિકધરને આમ તેમ જવા આવવામાં પણ ચરવલો અવશ્ય
 હોવોજ જોઈએ એવો કોઈ શાસ્ત્રીય નિયમ નથી, હાં આવશ્યકતાનુસાર
 પૂંજવા—પ્રમાજવા માટે ચરવલાની આવશ્યકતા છે જરૂર, પણ એકાંત
 એમ નથી કે—તેના વગર નજ ચાલે, સમય ઉપર તેની જોગવાઈ ન
 બની શકે તો વસ્ત્રના છેડાથીએ પૂંજવાનું ચૂર્ણિકાર પોતે ઉપયુક્ત

પ્રમાજિવાનો કામ કરે, પણ મહાત્મા (સાધુ) ની પરિ મુખ આગલી
 ધરે નહીં ' અહિં આચરણાજ પ્રમાણુ છે, તથા આવિકાને ચરવલો
 રાખવાનો સાવ નિષેધજ છે, કોઇ વૃદ્ધા આવિકા કદાચ રાખે તો ચોખ્ખો
 ચરવલો રાખે, હકીકત આ છે કે—જે સ્વાગ્રહથી પોતાના ખાસ ગુરુઓના
 કથન નથી માનતા તે બીજાના કથનને કેમ માનવાના ? જેમકે તપ
 ગચ્છાચાર્ય શ્રીસોમસુંદરસૂરિ શિષ્ય મહોપાધ્યાય હેમહંસ ગણિકૃત
 ધણવસ્યક બાળાવબોધમાં લખ્યું છે. (એનો પાઠ ઉપર બાલબોધમાં
 આપી દીધો છે) તેમ પંચ હર્ષભૂષણકૃત શ્રાદ્ધવિધિવિનિશ્ચય ગ્રંથના
 આધારે પણ ચકુલી દોષ ટાલ્યા છે, (તે આ પ્રમાણે—) “ શ્રાવિકાએને
 તો પૂર્વદર્શિત અશઠ (આત્માર્થી) આચાર્યોએ આચરેલ પરંપરાગત
 સામાચારી અનુસારે મનની વિપરીતતાનો હેતુભૂત હોવાથી ગોળ ગાંડીનો ચર-
 વલો રાખવો પણ નિષેધ કરાય છે. એટલે તેઓ ચરવલાના સ્થાને પ્રોંછનકાદિ
 (વસ્ત્રાદિ)થી પ્રમાજન કરે છે, પરંતુ વૃદ્ધાવસ્થાવાળી કે જેઓની વિકાર-
 બુદ્ધિ નષ્ટ થઇ ગઇ છે તેવીઓ ચરવલો રાખે પણ છે ” આ રીતે તપાગ-
 ચ્છના પંડિત હર્ષભૂષણકૃત ગ્રંથમાં વાંદણાના બે દોષ ‘અંકુશ’ અને અંબાડ
 નામના ઊડવાના કહ્યા છે. । વળી કાઉરસગ્ગમાં ગાયા હાથે રજેહરણ
 અને જમણા હાથે મુહપત્તી રાખવાની વિધિ મુખ્યતથા યતિઓની છે,

પાઠમાંજ ‘ તસ્સ અસતિ પોત્તસ્સ અંતેણં ’ આ વાક્યથી સ્પષ્ટ કથે છે.
 જતાં આજે જે લોકો સામાયિકધરને ચરવલા શિવાય ખસવાનું
 નિષેધ કરે છે તે શાસ્ત્રીય નહીં પણ ઘણીઓના ધરનોજ આચાર છે,
 સેનપ્રશ્ન ભાષાંતરકારે ‘નિસ્સેઝં’ શબ્દનો અર્થ જે ‘દંડસણુ’ કર્યો છે
 તે કયા શાસ્ત્રના આધારે છે ? એનો ખુલાસો જન્વાચાર્ય કરે.

જેમકે આચાર્ય દેવેન્દ્રસૂરિ (કે જેમને તપાઓ સ્વગચ્છના માને છે, તેમણે) રચિત શ્રાદ્ધદિનકૃત્યમાં લખ્યું છે કે-“ નાહીકરચલકુપ્પર-ઉરસા-રિચ પારિચમ્મિ થુઈં । ” આ પાઠની ટીકામાં લખ્યું છે કે-“ પ્રાયઃ સૂત્રે સર્વમપ્યનુષ્ઠાનં સાધુમુદિશ્યોક્તં, અતસ્તદ્વિશેષમાહ-નાભેર-ધસ્તાચ્ચત્વાર્યગુલાનિ ચોલપટ્ટઃ, ‘કરચલ’ત્તિ દક્ષિણેતરપાણિભ્યાં મુખવલ્લિકાં રજોહરણઞ્ચ કૂર્પરભ્યાં ચોલપટ્ટો ધરણીયઃ । ” ઇત્યાદિ પાઠથી તપાગચ્છીય દેવેન્દ્રસૂરિયે નાભીથી ચાર આંગળ નીચે ચોળપટ્ટો ૧, તથા જમણા હાથે મુહપત્તી અને ડાવા હાથે રજોહરણ (રાખવા) ૨ તથા બન્ને કૂણીઓએ ચોળપટ્ટો પકડી રાખવો ૩, આ ત્રણ આબતો કાઉરસગ્ગમાં સાધુને માટે કહી છે, અને આ હકીકત હેમહંસો-પાધ્યાયકૃત પગવસ્યક બાળાવબોધ સાથે પણ મળતી છે, તથા તપા (ધર્મકીર્તિ) કૃત સંઘાચાર ભાષ્ય (પાના ૪૨૦)માં ‘સ્વલિણ૦’ (ઇત્યાદિ માથા જે ઉપર બાલબોધમાં લખી છે) તેમાં કહ્યું છે-જે કાઉરસગ્ગના ‘ખલિન’ અને ‘કવિટ્ટ’ નામના બે દોષ તે અગીતાર્થ શિષ્યને લાગે છે, ગૃહસ્થને પણ એકત્વભાવે એ બે દોષ લાગે, અગ્યારમી પ્રતિમાએ શ્રમણભૂત આવકને પણ એ બે દોષ લાગે, કારણ ? અગ્યારમી પ્રતિમાએ રજોહરણ સ્વીકારે છે તેથી ‘ખલિન’ નામનો દોષ લાગે, વલી અગ્યારમી પ્રતિમાએ ચોળપટ્ટો રાખે. અને તે માટે ચોળપટ્ટો જૂ આદિના ભયથી એકતઉ (છોડી દેવાનું) પણ કરાય, ચોળપટ્ટા વગર ધોતીયું પહેરવાથી એકતઉ દોષ ન લાગે, એટલે ગૃહસ્થને ચરવલો લીધા વગર ઉપરોક્ત બે દોષ નથી લાગતા, અગ્યારમી પ્રતિમાએ રજોહરણ અને ચોળપટ્ટો આ બન્ને વસ્તુ આવક લિએ. એટલે અગ્યારમી પ્રતિમા પહેલાં ઉપરોક્ત

એ દોષ ન લાગે, એટલે શ્રીદેવેન્દ્રસૂરિકૃત શ્રાદ્ધદિનકૃત્ય તથા (તેમના શિષ્ય ધર્મકીર્તિકૃત) સંધ્યાચાર ભાષ્ય તેમજ હેમહંસોપાધ્યાયકૃત પડાવસ્યક આજ્ઞાવબોધ અને પંડિત હર્ષભૂષણકૃત શ્રાદ્ધવિધિવિનિશ્ચય. (આ બધા) તપા ગચ્છ(વાળાઓ)ના કીધા ગ્રંથો પરસ્પર મળતા છે, મતલબકે વાંદણા દેતાં (તથા) કાઉરસચ્ચમાં આવક આવિકાએ ક્રિયા કરતાં ચરવલો ન લેવો, તેમ લઘુ અને વૃદ્ધ પોશાળીયા તપાશ્રાવકો ક્રિયા કરતાં ચરવલો ભૂમીએ મૂકે છે. પરંતુ યતિની માફક હાથમાં નથી લેતા, તેમના યતિઓ પણ પૂછતાં એમજ કહે છે. એવં માર્ગે ચાલતાં સામાયિકધર તથા પોસાતીને પણ ચરવલો લેવાનો નથી. પૂંજવાનું કામ નિષદ્યા સ્થાનીય પૂંછણાથી કરવું શાસ્ત્રન્યાયે જોવાય છે, ચરવલો જ્યણાનું સાધન છે, તેનાથી ઉપાશ્રય પોષધશાળા અને ઘર પણ પૂજવા જોઈએ, એટલેજ તો આવશ્યક ચૂર્ણિમાં કહ્યું છે કે-‘ જે ઘેર સામાયિક લઈને જો યતિપાસે જાય તો સાધુ પાસેથી રજોહરણ માગે’ એમ કહ્યું છે. પણ રજોહરણ તે સાથે લઈ જાય તેનાથી પૂંજવાનું નથી કહ્યું, શા માટે? કે શાયત ભાંગે ભંગાવે, ચરવલો એ જ્યણાનો અંગ છે પણ જેમ શાસ્ત્રમાં કહ્યું હોય તેમ કરવું. એ શાસ્ત્રન્યાય છે એમ જાણીએ છીએ, વળી જેમ ગીતાર્થ ગુરુઓ કહે તેમ શાસ્ત્રાસાએ માનીએ, પરંતુ મતાનુરાગ ન કરિયે, હ્રદયસ્થ જીવ ક્યાં ને ક્યાં ચૂકનાર છે, પણ (શાસ્ત્રના) અક્ષર જોયા પછી કદાચ ન કરિયે, વિચારજો, (અર્થઝ) મળવાથી (બધા) જવાબ પૂરા થાય

(તપા ખરતર ભેદ ગ્રંથ ૧ બોલ ૪૧, ગ્રંથ ૨ બોલ ૪૪ મો)

૪૦ પ્રશ્ન-તથા સ્વરતરાંગદ્ નવતત્ત્વ જીવવિચાર પ્રમુલ્ક (પ્રકરણ)

ગ્રન્થ ઇરિયાવહી વિણ પઢિકમ્યાં ન ભણઈ ન ભણાવઈ, તે સ્યું ? ।

ભાષા:-ખરતરોને નવતત્ત્વ જીવવિચારાદિ (પ્રકરણ) ગ્રંથો ઇરિયાવહી પઢિકમ્યા વગર ભણે-ભણાવે નહીં. તે શું ?

તત્રાર્થે—જીયાં પ્રકરણાં ગુણતાં ઇરિયાવહી પઢિકમિવી છઠ્ઠ તે પ્રકરણારા નામ જીયાં ગ્રન્થાંમાંહિ શ્રીહરિભદ્રસૂરિ, શ્રીઅભયદેવસૂરિ શ્રીજિનવલ્લભસૂરિ, તથા વીજાઈ નિરવિરોધી ગીતાર્થાના કર્યા ગ્રન્થમાંહિ હવઈ તત્ત્વ દિલાલત્ત જિમ તેહ માનીયઈ, અમ્હારઈ સંપ્રદાયિ શ્રીજિનદત્તસૂરિ યુગપ્રધાનનાં કીધાં ગ્રન્થાંમાંહિ જીયાં પ્રકરણાં ગુણતાં ઇરિયાવહી પઢિકમિવી લિખી છઠ્ઠ તે તિમ ચલાવાં છાં, વલી તેહ થકી પહિલોકા ગ્રન્થ દિલાલિસ્યત્તત્ત તેહ માનિ-સ્યઈ, આપણઈ સંપ્રદાય-મતાનુરાગ નથી, પરં તેહ ગ્રન્થ વિણ દીઠે અપર મનાઈ નહી, જેહ પ્રકરણ ગુણતાં ગ્રન્થાંનઈ અનુસારિ ઇરિયાવહી પઢિકમિવી તે જણાવેજ્યો ॥ ૪૦ ॥

ભાષા:-જે પ્રકરણોને ગણતાં ઇરિયાવહી પઢિકમિવી જોઈએ તે પ્રકરણોના નામ શ્રીહરિભદ્રસૂરિ શ્રીઅભયદેવસૂરિ શ્રીજિનવલ્લભસૂરિ તેમ જીજ્ઞાસુ નિર્વિરોધી ગીતાર્થોના કરેલા ગ્રંથોમાં હોય તો તે બતાવો જેમ તે માનાય, અમારા સંપ્રદાયે યુગપ્રધાનાચાર્ય શ્રીજિનદત્તસૂરિનાં રચેલા ગ્રંથોમાં જે પ્રકરણો ગણતાં ઇરિયાવહી પઢિકમિવી લખી છે તે તેમ ચલાવીએ છીએ, જે તેથી પહેલાંનાં ગ્રંથો બતાવશે તો તે માનિશું આપણને કદાચ કદે મતાનુરાગ નથી, પરંતુ તે ગ્રંથ જોયા વિના બીજું ન મનાય, જે પ્રકરણ ગણતાં ગ્રંથોના અનુસારે ઇરિયાવહી

પડિકમવાની હોય તે જાણાવજો । +

(તપા ખરતર ભેદ ગ્રંથ ૧ બોલ ૪૨, ગ્રંથ ૨ બોલ ૪૫ મો)

૪૧ પ્રશ્ન-તથા સ્વરતરાંરહ જિણઈ તિવિહાર ઉપવામ અવ(પુરિમ)હહ

+ તપા ખરતર ભેદ પૃ૦ ૩૦/૩૧ માં લખ્યું છે કે “ ખરતર ધરિયાવહી પડિકમ્યા વિના નવતત્વ તથા જીવવિચારાદિક પ્રકરણ ગણવા ભણવા ન સૂઝે એમ કહે છે, તે અક્ષર ક્યાં છે ? ” એટલે પૂછવાનું કે આ ગ્રંથના પ્રશ્ન ૧૦ માં અને એની કુટનોટમાં બતાવ્યા મુજબ અનેક પ્રાચીન અને પરમસુવિહિત સર્વમાન્ય આચાર્યો, જેવા કે આવશ્યકાદિ ચૂલ્લિંકાર જિનદાસ ગણિ મહત્તરાચાર્ય, હર્ષિભદ્રાચાર્ય, નવાંગ ટીકાકાર અભયદેવસૂરિ, કાલિકાવસર્વજ્ઞાચાર્ય હેમચંદ્રસૂરિ આદિ સર્વમાન્ય આચાર્યોના કથનાનુસાર નવમા સામાયિક વ્રતના નામ સાથે વર્ણિત વિધિમાં સામાયિક દંડક-કરેમિ ભ તે ! ઉચર્યા બાદ ધરિયાવહિયા પડિકમવાનું વિધાન ચોક્ષુ હોવા છતાં પોતાના મતાગ્રહને પોષવા સાડ જેમાં ‘સામયિક’ એવા શબ્દનો નામ નિશાન સરખું નથી અને નવકારના પછી ધરિયાવહીના ઉપધાનનો હેતુમાત્ર બતાવનાર મહાનિશીથ સૂત્રના જે “ ગોચમા ! અપ્પ-હિકંતાણે ઇરિયાવહિયાણે ન કપ્પઈ ચેવ કાઉં કિંચિવિ ચેઈયવંદણ-મજ્ઞાયા મ્માણાઈયં” આ પાઠને આગળ કરીને જ્યારે પોકારી રહ્યા છે કે ‘ધરિયાવહિયા પડિકમ્યા વગર કાંઈ પણ ધર્મક્રિયા કરવી ન કદપે’ ત્યારે એજ મહાનિશીથ સૂત્રના ઉપરોક્ત પાઠમાં નામ સાથે બતાવેલ નવતત્વાદિ પ્રકરણ ગ્રંથોનો ભણવા-ગણવા રૂપ જે સ્વાધ્યાય, તે ધરિયાવહિયા પડિકમ્યા વગર કેમ કરી શકાય ? નજ કરી શકાય, છતાં તેમ કરવું એ શાસ્ત્રવિહિત નહીં, પણ શાસ્ત્રવિરુદ્ધ તપા ધણીઓના ઘરનો આચાર છે.

કર્યુત હવડ તે ત્રિ(વિ)હું પહરાં પછડ ન પારડ, તે સ્યું ?

ભાષા:—ખરતરોને જેણે તિવિહાર ઉપવાસ અવ(પુરિમ)ડ્ઠે x કર્યો હોય તે ત્રણ પહોર પછી પારે નહીં, તે શું ?

તત્રાર્થે—જિણડ અવ(પુરિમ)ડ્ઠનાં પન્ચકલાણ પોસહતડ કર્યા છડ તે ત્રિ(વિ)હું પહરાં પછડજિ પાણી પારડ, જે મળી અમ્હારડ એ નિયમ નથી. જે પછડ પાર્યા ન સૂમ્હજિ, તથા અવડ્ઠિ ત્રિહું પહરે ગયે થાડ, ત્રિહું પહરાં પછી સર્વ પડિલેહણા કાલ છડ, તે મળી અવ ડ્ઠ કાલ ગયાં પાણી પારી પડિલેહણ કરી દિવસચરિમ પન્ચકલાણ કરડ તડ વારુ, પડિલેહણાથી પહિલી અવડ્ઠે પારીયડ તડ નિરતડ સંચ મિલડ, અન્યથા પડિલેહણ કમતાં દિવસચરિમ પન્ચકલાણ સ્યુ કરડ ? તે વિચારિવડ છડ. તેહ મળી ૩ પહરે પૂરે થયે પડિલેહણ પહિલાં પારિયે તડ વિચારિવા મરિખડ ન થાડ ॥૪૧॥

ભાષા—જે પોસાતીએ અવ(પુરિમ)ડ્ઠના પન્ચકલાણ કર્યા છે તે ત્રણ (એ)પહોર પછીજ પાણી (પન્ચકલાણ) પારે, કારણ ? અમારે આ નિયમ નથી કે પછી પારવો નજ કલપે, પહેલાનાં ત્રણ પહોર વીત્યે અવડ્ઠ થાય, ત્રણ પહોર પછી અધો કાળ પડિલેહણાનો છે, માટે અવડ્ઠનો કાળ આવ્યે પાણી પારીને પડિલેહણ કરી દિવસચરિમ પન્ચકલાણ

x તથા ખરતર ભેદમાં અવડ્ઠનો નહીં પણ પૂરિમડ્ઠનો પ્રશ્ન છે, એટલે તે તો એ પહોરેજ પારી:લેવાનુ, તેને ત્રીજા પહોરે પારવાની શું આવશ્યકતા ? અને કદાચ અપોરે તૃપા ન લાગવાથી ન પારે, ને ત્રીજા પહોરે તૃપા લાગવાથી જે પારવા ચાહે તો તેને ન પારવાનું ખરતર ગચ્છના કયા ગ્રંથમાં લખ્યું છે ? તે પ્રમાણ પાઠ જાંખવાચાર્ય બતાવે.

કરે તો સાડું, પડિલેહણથી પહેલાં અવડદે પારીયે તો બરાબર મળતું આવે. અન્યથા પડિલેહણ કરતાં દિવસચરિમ પચ્ચદ્ધાણુ શું કરે ? તે વિચારવાનું, એટલે ત્રણ પહેલર પૂરા થયે પડિલેહણ પહેલાં પારીયે તો વિચારવા સરખું ન હોય ।

(તપા ખરતર ભેદ ગ્રંથ ૧ બોલ ૪૩, ગ્રંથ ૨ બોલ ૪૬મે)

૪૨ પ્રશ્ન—તથા સ્વરતર પદિક વાસના કોથલા (ભર્યા) રાખઈ છઈ, પ્રસ્તાવઈ ગૃહસ્થાંનઈ ઘઈ છઈ, તે સ્યું ? ।

ભાષા—ખરતર પદવીધરે વાક્ષેપના કોથળા (ભરી) રાખે છે, અને પ્રસંગે ગૃહસ્થાને આપે છે, તે શું ?

તત્રાર્થ—તપનાંદિ દીક્ષાનાંદિ મમ્યક્ત્વોચ્ચારનાંદિ વ્રતોચ્ચારનાંદિ આલોચ્ચર્યા સ્થાપનાપ્રતિષ્ઠા પુટ પાટલી પ્રતિમાપ્રતિષ્ઠા ધ્વજાપ્રતિષ્ઠાદિ માંગલ્ય કાર્ય નિમિત્તિ સૂરિમંત્ર તથા વર્દ્ધમાનવિદ્યાઈ અભિમંત્રીયઈ ધર્મધ્યાન સાધન નિમિત્તઈ વાસક્ષેપનો કાર્ય થાઈ. જે ભણી ગૃહસ્થ પાસિ વાસ થાઈ ન થાઈ, તે ભણી યતિ વામચૂર્ણ પામઈ પુણિ પ્રસ્તાવઈ રાખઈ, ધર્મનઈ કાર્યઈ ગૃહસ્થાંનઈ વાસક્ષેપ ઘઈ, પુણિ સંમાર અર્થઈ આહારનઈ કાજિ ચૂર્ણ ઘઈ તત્ત યતિનઈ દોષ થાઈ, વલી એક બોલ વિચારિવડ છઈ—તુમ્હારા પૃહ્ણા તુમ્હે ચિતારિડ્યો. જઈ યતિ ચૂર્ણ ન રાખઈ તત્ત તેહ ગૃહસ્થનઈ આપઈ સ્યું ? શાસ્ત્રનઈ ન્યાયિ વલી યતિ શ્રાવકનઈ આહારનઈ કાજિ તીર્થનિર્માલ્ય નાપઈ પુણિ રાખઈ છઈ, એતલઈ યતિ ચૂર્ણ રાખઈ ધર્માર્થઈ ગૃહસ્થનઈ ઘઈ તત્ત લાભ, આહારાર્થિ ઘઈ તત્ત દોષ લાગઈ, પરં ‘વામગ કોથલા રાખઈ’ એ બોલ લિખ્યા તે દષ્ટિરાગ, સેર યા

પાસેગઈ કોથલા કિમ કહીયઈ ? । વલી ઋષિમતીયાંગઈ સોનાની મુહર મુહમ્મદી રુપઈયા પ્રમુખ લેઈનઈ (વા) ગૃહસ્થનઈ માથઈ કબૂલા(ત) કરાવીનઈ શ્રાવક શ્રાવિકા બાલકનઈ માથઈ વાસક્ષેપ કરાવઈ તેહનઝ વિચાર કહિજ્યો, તે કેહઈ શાસ્ત્રનઝ ન્યાય છઈ ? તપા પુણિ વામ રાખઈ છઈ, વર્દ્ધમાન વિદ્યાના પુઢ પૂજઈં છઈં, તપાંરી વડી લહુડી પોસાંલિ એ ચાલિ અજીમ છઈ, જઈ ઋષિમતીએ મૂલગી એ ચાલિ છોડી ઘઈ તઝ તે જાણઈ, ધ્યાનનઝ નામ લેઈનઈ પઢદઈ- માંહિ વડીસીનઈ પુઢઈ વાસક્ષેપપૂજા કરઈ છઈ । તઝ તે જાણઈ, લોકમાંહિ તઝ ‘પૂજ્ય ધ્યાનઈ વડીઠા’ ઇમ કહાઈ છઈ । તથા શાસ્ત્ર મધ્યે બીજઈ પહરિ અર્થપૌરુષી કહાઈ પિણ ધ્યાન પૌરુષી ન કહાઈ, એ ઘણું વિચારિજ્યો, દૃષ્ટિગગ ઘણું ભલ નથી ॥૪૨॥

ભાષા:—તપસ્યા ઉચરવાની દીક્ષાની સમ્યક્ત્વાદિ પ્રતોચ્યારની નંદીમાં. આત્મોચ્છા દેતાં તથા સ્થાપના. ૫૮. પાટલી. પ્રતિમા એવં ધ્યજનની પ્રતિષ્ઠા આદિ માંગલીક કાર્યાનિમિત્તે તેમ જીજ્ઞ તેવા પ્રકારના ધર્મધ્યાન સાધનમાં સૂરિમંત્ર કે વર્દ્ધમાનવિદ્યાથી મંત્રિત વાસક્ષેપની જરૂરત પડે છે, અને ગૃહસ્થો પાસે વાસક્ષેપ હોય કે ન હોય, એટલે યતિઓ પણ પ્રસંગે વાસક્ષેપ પાસે રાખે અને ધર્મકાર્ય નિમિત્તે ગૃહસ્થને આપે પણ ખરા, પરંતુ જો સંસારના કાર્યાનિમિત્તે કે આહારનિમિત્તે ચૂર્ણ (વાસક્ષેપ) આપે તો સાધુને દોષ લાગે, વડી વાત વિચારવાની છે, તમારું પૂછ્યું તમો સંભારજો, યદિ સાધુ વાસક્ષેપ ન રાખે તો તે અવસરે ગૃહસ્થને શું આપે ? અને શાસ્ત્રના ન્યાયે આહાર નિમિત્તે શ્રાવકને તીર્થનિર્માલ્ય સાધુ ન આપે, પણ રાખે છે, એટલે યતિ વાસ

ચૂર્ણ રાખે અને ધર્મકાર્ય નિમિત્તે ગૃહસ્થને આપે તો લાભ છે, આહારદિના નિમિત્તે આપે તો દોષ લાગે, પરંતુ ‘વાસ(ક્ષેપ)ના કોથલા રાખે’ આ બોલ લિપ્ત્યા તે દષ્ટિરાગના છે, સેર કે પાસેરે કોથળા કેમ કહેવાય ? વધી ઋષિમતિઓને સોનાની મુહમ્મદી મહોર અને રૂપિયા આપી યાતો ગૃહસ્થો પાસે કબૂલાત કરાવીને શ્રાવક શ્રાવિકાઓ બાળકના માથે વાસક્ષેપ કરાવે છે તે ક્યા શાસ્ત્રનો ન્યાય છે ? સપ્રમાણ કહેજો, તપા પણ વાસક્ષેપ રાખે છે, વર્ધ્ધમાનવિદ્યાના પટ પૂજે છે, તપાની મોટી તથા છોટી પોસાલે હળુ પણ એ ચાલ છે, ઋષિમતીઓએ તે અસલની ચાલને છોડી દીધી હોય તો તેઓ જાણે (અને) ધ્યાનનું નામ લઈને પડદામાં બેસી પટ ઉપર વાસક્ષેપ કરે છે તો તે જાણે, લોકમાં તો ‘પૂજ્ય ધ્યાનમાં બેઠા (છે)’ એમ કહેવાય છે. તથા શાસ્ત્રોમાં બીજે પહોરે અર્થપૌરૂષી કહેવાય. પણ ધ્યાનપૌરૂષી નથી કહેવાતી, એ વિચારજો; ધણું દષ્ટિરાગ સાડું નથી,

(તપા ખરતર ભેદ ગ્રંથ ૧ બોલ ૪૪, ગ્રંથ ૨ બોલ ૪૭ મો)

૪૩ પ્રશ્ન-તથા સ્વર્ગતરાંનંદ શ્રીમલ્લિનાથ. શ્રીનેમિનાથ. શ્રીમહાવીર
 એ તીર્થંકરની પ્રતિમા દેહરાસગઈ પૂજાઈ નહીં, તપાનંદ જઈ, તે સ્યુ ?

ભાષા:-ખરતરોને મલ્લિનાથ, નેમનાથ. અને મહાવીર પ્રભુ, એ તીર્થંકરોની પ્રતિમા ધરદેરાસરે ન પૂજાય, તપાને પૂજાય છે. તે શું ?

તત્રાર્થે—અમ્હારડત્ત (એ) તીર્થંકર પૂજિવાનત્ત નિષેધ નથી. તથા “ મલ્લિનાથ-નેમિનાથૌ, વીરો વૈરાગ્ય કારણમ્ ।” એવા જે શ્લોક કહિવરાવડ જઈ, તે શ્લોક સ્વર્ગતરાના કીધા નથી, કિહાં(ં) વાસ્તુક શાસ્ત્રમાહિ કહ્યા હુવડ તત્ત તેહના કરણ હાર જાણડ,

અમ્હનહ એ વાતનહ સ્યું ? જે કહઈ તે જાણઈ, જે હમ કહિસ્યઈ
 ણું દાહિલા થાસ્યઈ, જાણીયઈ છઈ તે અમ્હંતાંની આશાત-
 નાથી વીહતા નથી, વલી એ ભાવ ઋષિમતીયાં જતિયાંનહ પૂછેજ્યો,
 સ્વરતરાંવતઈ એવડા બોલ ન કહાવઈ, એ બોલ અઘટતહ પૂછ્યહ,
 હિવણાં ઋષિમતી બોલતાં મૂંઢાં કરતાં દેખતા નથી. રાગદ્વેષનહ
 જોરઈ, વલી મ્લેચ્છ થકી કેતલાંએક મલાં યતિયાંનહ સંયોગઈ
 જૈન નવા દેહરા કરાવિવાના હુકમ ફુરમાન કરી ન યઈ, અનહ
 કેઈક ભારીકર્મ્મા ઋષીમતીયાંરા ઋષિ દેહરા પડાવણના ફુરમાન
 કરાવિવા વાંછઈ છઈ, વલી કેઈએક ઋષિમતિયાંના શ્રાવક દેહરા
 પડાવિવા નિમિત્તિ યતિયાંનહ દોકડા પૂરઈ છઈ, રાગ દ્વેષના વાહ્યા,
 વેષધારીયાંના પ્રેર્યા એ વાત કરતાં કરાવતાં રાગદ્વેષના વાહ્યા
 દેખતા નથી, વલી ઋષિમતીયાંની પ્રતિષ્ઠી પ્રતિમા ટાલી વીજાં
 ગચ્છવાસીયાંની પ્રતિષ્ઠી પ્રતિમા અવંદનીક કહઈ છઈ, એ મહા-
 જોર સબલ થકા જિનશાસનમાંહિ કરઈ છઈ, ગુરુપિણ જાણી
 તેહનહ સ્યું નથી પાલતા ? જાણીયઈ છઈ-તેહનહ એ વાત સુહાવઈ
 છઈ, અથવા તે કુશિષ્ય આપણા ગુરુના કહ્યા નથી માનતા, એ
 બોલ વિચારિજ્યો ॥ ૪૩ ॥

ભાષા:—અમારા સંપ્રદાયે એ તીર્થંકરોને પૂજવાનું નિષેધ નથી,
 અને “ મહિનાથનેમિનાથૌ, વીરો વૈભવ કારણમ ” આ શ્લોક જે
 કહેવાય છે તે ખરતરનો રચેલ નથી, ક્યાં એ વાસ્તુશાસ્ત્રાદિમાં કહ્યો હોય તો
 તેના કરનારા જાણે, અમને એ વાતનું શું ? જે કહે તે જાણે, (વાસ્તુસાર
 પૃ. ૯૮ ના કહેવા પ્રમાણે ઉ. સકલ્યપ્રકૃત પ્રતિષ્ઠાકલ્પમાં આવે
 નિષેધ છે) જે આ પ્રમાણે કહે શે તે ઘણા દુઃખી થશે, જાણાય છે કે

આ પ્રમાણે કહેનારાઓ અરિહંતોની આશાતનાથી ખીહતા નથી, વલી આ હકીકત ઋષિમતીઓના જતિઓને પૂછજ્યો, ખરતરોથી આવા બોલ ન કહેવાય, આ પ્રશ્ન અણુઘટતો પૂછ્યો છે, હમણાં ઋષિમતીઓ રાગદ્વેષના વશથી અયોગ્ય બોલતાં કે કરતાં જોતા નથી. અને કેટલાએક સારા યતિઓના સંયોગે જૈન દેરાસરો નવીન કરાવતા હોય તેમને યવનોથકી હુકમ ફમાન કરાવવા નથી દેતા, અને કોકોકતો ભારીકમીં ઋષિમતીઓના ઋષિ દેરાસર પડવાના કુરમાન કરાવવા વાંછે છે, તેમ કેઇક ઋષિમતીઓના શ્રાવકો રાગદ્વેષને વશ થયા દેરાસરો પડાવવા નિમિત્તે યતિઓને દોડડા પૂરે છે, વેપધારીઓના પ્રેરેલા રાગદ્વેષને વશ થઇ એવા કામ કરતાં કરાવતાં (ભાવી) જોતા નથી, વલી ઋષિમતીઓ શિવાય બીજા ગચ્છવાસીઓની પ્રતિષ્ઠિત જિન પ્રતિમાને અવંદનીય કહે છે. એ મહા જમ્બરદસ્ત (ઉત્પાત) બલવાન થઇ જિનશાસનમાં કરે છે. ગુરુઓ પણ જાણતા છતાં તેને કેમ રોકતા નથી ? જાણાય છે કે તેમને એ વાત રૂચે છે અથવા તો તે કુશિષ્ય પોતાના ગુરુનો કથન માનતો નથી. આ વાત વિચારજો.

(તપા ખરતર ભેદ ગ્રંથ ૧ બોલ ૪૫, ગ્રંથ ૨ બોલ ૪૮ મો)

૪૪ પ્રશ્ન—તથા સ્વરતરાંગ પદિક વરમાલઈ પલ્લવ વલ્લાસ વેલાયઈં બાજવટિ ન બડમડ, તે સ્યું ? ।

ભાષા:—ખરતરના પદસ્થ વર્ષાકાળ શિવાય વ્યાખ્યાન સમયે આજોટ (ચોખ્ખા નહાના પાટલા) ઉપર ન બેસે, તે શું ?

તત્રાર્થે—એ વાત ઇમજિ-જે કારણ પલ્લવ વર્ષાકાળ ટાલી શેષકાલઈ યતિનઈં પાદપીઠાદિ ન કલ્પઈ, પરં શ્રીમદ્ધારક (જે)

સૂરિમંત્રધારી તે ગણધર સ્થાનીય છૂદ, તે મળી ત્રિમ ગણધર
રાજાયઈ આણ્યા સિંહાસણ તથા પાદપીઠ ઉપર બઝસીનઈ વિચા-
લલા વિ પહર દેસના ચઢ, લોકાંના સંદેહ ફેડઈ, એહવા શ્રીબૃહ-
ત્કલ્પભાષ્યચૂર્ણમાંહિ કહ્યા છૂદ, યતઃ—“રાઓવળીયસીંહાસણે
નિવિદૂઠો આ કહતિ, તદભાવે તિત્થયર પાયવીઢોદદિટો કહતિ”
એતલઈ તીર્થકર દેવછંદઈ પધાર્યા ગણધર કાષ્ઠમય પાદપીઠ ઉપર
બઝસઈ, રાજાઅઈ આણ્યા સીંહાસણઈ બઝસઈ, એવં શ્રીઆચાર્ય પુર્ણ
ગણધર સ્થાનીય થકા પાટલઈ વચાણ કરઈ ॥ ૪૪ ॥

ભાષા:—આ વાત એમ છે કે જે કારણશિવાય વર્ષાકાળને છોડી
શેષકાળે યતિને પાદપીઠાદિ ન કલ્પે. પરંતુ આચાર્ય જે સૂરિમંત્રધારી
(તે) ગણધર સ્થાનીય છે. માટે જેમ ગણધર મહારાજ રાજના લાવેલા
સિંહાસન ઉપર અથવા તીર્થકરોના પાદપીઠ ઉપર બેસીને વચલા
એ પહોર દેશના આપે અને લોકોના સંદેહ ટાળે એમ બૃહત્કલ્પભાષ્ય
ચૂર્ણમાં કહ્યું છે. જેમકે ‘રાજના આણેલા સિંહાસનમાં અથવા
તીર્થકરોના પાદપીઠ ઉપર બેસી ધર્મ દેશના દિયે’ એટલે તીર્થકર
દેવછંદે પધાર્યા પછી ગણધર કાષ્ઠમય પાદપીઠ ઉપર બેસે, અથવા
રાજના લાવેલા સિંહાસણ પર બેસે, એવં આચાર્ય પણ ગણધર
સ્થાનીય હોવાથી પાટ ઉપર બેસી વ્યાખ્યાન કરે. +

+ તપા ખરતર પૃ૦ ૩૪ તથા ૧૪૦ માં અનુક્રમે બોલ નં. ૪૫
અને ૪૮ માં બન્ને મૂળ લેખકોએ “વચાણવેલાયઈ” આ શબ્દને
સાવ ઉઝાડી દધને ‘વર્ષાકાળના ચોમાસા શિવાય હમેશાં પાટ પાટલા
ઉપર બેસવા’નું જુદું જ દોષારોપણ કર્યું છે, આરે માસ, ને વ્યાખ્યાન

(તપા ખરતર ભેદ ગ્રંથ ૧ ખોલ ૪૬, ગ્રં. ૨ ખોલ ૪૯ મો)

૪૫ પ્રશ્ન - તથા 'સુદ્ધવિચર' શબ્દેઈ શ્રીકલ્પસૂત્રમાંહિ સ્વરત્ત

શિવાય પણ પાટ પાટલાપર પદસ્થો એસે એવી માન્યતા કે આમતરીકે ગચ્છમાં તો છેજ નહીં, પરંતુ તમારા તપાઓમાં તો પદસ્થ શિવાયતા સામાન્ય સાધુઓ પણ આખો દિવસ પાટપર પગઉપર પગ ચઢાવી બેઠેલા આજે ઘણાએ જોવાય છે, અને વ્યાખ્યાન સમયે તો પાટપર બેસવાની પ્રવૃત્તિ આજે ક્યા ગચ્છમાં કે સમુદાયમાં નથી ? શું આ બંને બોલોના મૂળ લેખકો વ્યાખ્યાન સમયે પાટ પર નહોતા બેસતા ? કે હમણાં એના અનુવાદક અને પ્રકાશક અગમપ્રજ્ઞાચાર્ય નથી બેસતા ?

આ પ્રશ્નોત્તર ગ્રંથના આ ૪૮ મા પ્રશ્નોત્તરને ખરાખર ધ્યાનપૂર્વક વાંચતાં સ્પષ્ટ જણાઇ આવે છે કે-યેન કેન ખીજને ઉતારી પાડવા માટે વિપક્ષિઓ કેવા જુદા કાવાદાવા કરે છે ? આવા આત્માઓપર ભાવદયા આવવા સાથે સાશ્વત્ત વિચાર આવે છે-આત્મહિતૈર્વિતાની બુદ્ધિએ ધરખાર કુટુંબ પરિવાર અને ધન માલ મિલકતનો ત્યાગ કરી સર્વ-વિરતિ સંયમ કે જેની અંદર સર્વથા પ્રકારે કૂડ કપટ પ્રપંચ જળ ત્યાગ કરવાનુંજ ઉપદેશ પરમતારક વીતરાગદેવોએ કરેલાં છે, તેને પ્રાપ્ત કરીને પણ જે આત્માઓ સ્વેતકર્ષના વ્યામોહમાં ફસાઇ જઇ આવા જુદા કાવાદાવા કરીને થોડા કાળના જીવન માટે કેવા અશુભ કર્મો ઉપાજી રહ્યા છે ? અને એના વિપાક કેવા પ્રકારે એ આત્માઓને ભોગવવા પડશે ? એનો પરમાર્થ કેવળીગમ્યજ માની શકાય, અસ્તુ. શાસન દેવ એવા આત્માઓને સ્વહિત સાધવાની સદ્બુદ્ધિ અને મતાગ્રહ રહિત નિષ્પક્ષપાત વૃત્તિ અર્પે કે જેથી એવા અનુચિત કર્તવ્યોથી વિરમી પોતાનું આત્મહિત સાધે. આજ એક શુભેચ્છા.

વર્ણાંતર પ્રાપ્ત કસેલાદિકના પાણી કહઈ છઈ. તપા ઉણોદક ‘સુદ્ધવિયડ’ શબ્દઈ કરી કહઈ છઈ, તે સ્યું ?

ભાષા:-કલ્પસૂત્ર સામાચારીમાંહેના ‘સુદ્ધવિયડ’ શબ્દથી અસ્તરે વર્ણાંતર પ્રાપ્ત કસેલાદિકના પાણી કહે છે. ત્યારે તપા ઉણોદક કહે છે. તે શું ?

તત્રાર્થે—‘સુદ્ધવિયડ’ શબ્દઈ શ્રીઅભયદેવાચાર્યેંન્હા પાણી ફલાયા તે પ્રમાણ ઠાણાંગવૃત્તિમાંહિ ઇમજિ (છઈ), પરં તિહાં ‘ઉસિણવિયડે’ એ શબ્દ ન છઈ, તે ભણી ઉન્હા પાણી સુદ્ધવિયડ’ શબ્દ થાઈ, પરં શ્રીકલ્પસિદ્ધાંતમાંહિ ‘સુદ્ધવિયડે’ તથા ‘ઉસિણવિયડે’ એ બિ શબ્દ પાણીનઈ આલાવઈ છઈ, તિહાં બિહું શબ્દાંના જૂજૂઆ અર્થ જોઈ-યઈ, તે ભણી શ્રીઅભયદેવાચાર્યનં સંતાનીય પરંપરાગમધારી વિધિપ્રપાકારી શ્રીજિનપ્રભસૂરિ, તિણેં ‘સુદ્ધવિયડે’નં અર્થ વર્ણાંતર પ્રાપ્ત પાણી ‘ઉસિણવિયડે’નં અર્થ ઉણપાણી, એ બિહું શબ્દાંના (અર્થ) જૂજૂઆ પરંપરાગમને મેલિ વચાળયા છઈ, શ્રીઆચારાંગ-માંહિ (પુણિ) ‘ઉસિણવિયડે’ એ પાઠ નથી ‘સુદ્ધવિયડે’ એહજિ પાઠ છઈ, તે ભણી ‘સુદ્ધવિયડે’ના અર્થ ઉણ(? ફાસુ)પાણી કહી શ્રીશીલાંગાચાર્યે વર્ણાંતર પ્રાપ્ત પાણી કહ્યા, તથા ત્રિફલાના કીધા પાણી કલ્પસૂત્રનં ન્યાયેં કીયઈ પાણીમાંહિ કહીયેં ? એ જોજ્યો, જિમ બાપની સાતીમીરાતી સંતાનીયા જાણઈ પરં પારકા પુત્ર ન જાણઈ, તિમ શ્રીઅભયદેવસૂરિ નવાંગવૃત્તિકારકના અભિપ્રાય જેહવા તેહના સંતાનીયા જાણઈ તેહવા પરપક્ષી ન જાણઈ, વલી જે જાણિવાની બાંછા કરઈ તે પૂછડ, જિમ વહરઈ સૂજઈ તુમ્હારઈ પિતાયેં અહમ્મદાવાદમાંહિ સર્વગચ્છાંની સામાચારી જોઈ

ચરચા કરી સર્વગચ્છાંના ગીતાર્થીની સાત્ત્વ શાસ્ત્રનંદ મેલી વિચારિ
ચરચીનંદ શ્રીસ્વરતર ગચ્છની ગુરુપરંપરાયાત શ્રીજિનવલ્લભસૂરિ-
ભાષિત સામાચારી આચરી તિમ તમને પુણિ ગીતાર્થીને પૂછી
સમખી સામાચારી આદરિવી, એકલ કહણી સાંભલતાં સમજિ
નથી પડતી, તે ભણી હિવડઈ વિચારિવડ, લોકનાંહિ પ્રતીતિ
પામડ, તે ભણી વિચારિજ્યો ॥ ૪૫ ॥

ભાષા—‘સુદ્ધવિયડે’ શબ્દનો અર્થ શ્રીઅભયદેવ સૂરિજીએ ઉઠો
પાણી લખ્યો તે પ્રમાણ છે, ઠાણાંગવૃત્તિ (અ ૦ ૩ ઉ ૦ ૩ +) માં એમજ
છે, પરંતુ ત્યાં ‘ઉસિણવિયડે’ એ શબ્દ છે નથી, એટલે ‘સુદ્ધવિયડે’
શબ્દનો અર્થ ઉઠો પાણી થાય, પણ શ્રીકલ્પસૂત્રમાં પાણીના અધિકારે
‘સુદ્ધવિયડે’ અને ‘ઉસિણવિયડે’ આ બન્ને શબ્દો છે, અને તે બન્ને
શબ્દોના અર્થો ભુદા ભુદા હોવા જોઈએ, એટલા માટે શ્રીઅભયદેવ સૂરિના
સંતાનીય પરંપરાગમધારી અને વિધિપ્રપા ગ્રંથના રચનારા શ્રીજિન-
પ્રભસૂરિ તેમણે (કલ્પસૂત્ર ટીકા સંદેહવિપૌષધીમાં) ‘સુદ્ધવિયડે’નો
અર્થ વર્ણાંતર પ્રાપ્ત પાણી x અને ‘ઉસિણવિયડે’નો અર્થ ઉઠો

+ ત. ખ. ભે. ૫૦ ૩૫ માં ‘શુદ્ધવિકટં-ઉલ્લોદકમ્’ આ પાઠ ત્રીજા
ઠાણાના ખીજા ઉદ્દેશમાં હોવાનું લખ્યું છે, પણ છે ત્રીજા ઉદ્દેશમાં.

x આચાર્ય શ્રીજિનપ્રભસૂરિએ આ અર્થ સ્વમતિ કલ્પનાએ નહીં,
પણ આચારાંગ શ્રુત ૦ ૨ અધ્યયન ૧ ઉદ્દેશા ૭ માની ટીકામાં ચોક્કસ
પાઠ છે કે—“શુદ્ધવિકટં-પ્રાસુકોદકમ્” અર્થાત્—“શુદ્ધવિકટ” એટલે
ત્રિકુળા-કસેલા આદિ ડોઢ પણ વસ્તુના સંયોગથી તૈયાર થયેલ પ્રાસુક
(કાસુ) પાણી” આ પ્રાચીન શાસ્ત્રકારોની વ્યાખ્યા ન માનતાં પોતાના

પાણી, એમ બન્ને શબ્દોના બુદ્ધ બુદ્ધ અર્થો પરંપરાગમાનુસાર બતાવ્યા છે, શ્રીઆચારાંગ (શ્રુ० ૨ અ० ૧ ઉ. ૭) માં ‘ઉત્તિસ્સવિયહે’

મતાગ્રહવશ ‘શુદ્ધવિકટ’ શબ્દનો અર્થ ફક્ત ઉંદો પાણીજ કરવો એ શાસ્ત્રવિરુદ્ધ તપાના ધરનો આચાર છે.

તપા ખરતર ભેદ પૃ० ૩૬ માં મૂળ લેખકના લખ્યા મુજબજ ‘માત્તિકાસ્થાને મત્તિકાપાતઃ’ની ઉક્તિને અક્ષરશઃ ચરિતાર્થ કરતા આગમ-પ્રજ્ઞાચાર્ય માત્ર ક્ષણાંગ વૃત્તિના “શુદ્ધવિકટં-ઉણ્ણોદકમ્” આ પાઠને આગળ કરી લખે છે કે—“અભયદેવ સૂરિને વખતે, જેમ તપા માને છે, તેમ માનતા હતા (હાલ) ખરતરે નવા માર્ગ કાઢ્યા છે” પરંતુ જણાય છે કે અભયદેવ સૂરિથીય પ્રાચીન અને એમને પણ માન્ય. એવા શીલાંકાચાર્ય રચિત આચારાંગ સૂત્રની ટીકાને અવલોકવાની તસ્દી આગમપ્રજ્ઞજ્યે નથી ઉઠાવી, અગર તેને જોઇ હશે તોય ‘સ્વમતા-ગ્રહના આવેશમાં એનું ભાન નથી રહ્યું’ એમ કહેતાં તો જરાજ્યે અતિશયોકિત થતી હોય તેમ નથી જણાતું, જો એમ ન હોત તો ‘ખરતરે નવા માર્ગ કાઢ્યા છે’ એમ સહસા લખી ન દેતા, મહા-શયજી ! ખરતરે તો નવા માર્ગ નથી કાઢ્યા, પણ તપાઓએજ જૈન મુનિઓને એવા યોગ્ય શાસ્ત્રવિહિત એકવીસ પ્રકારના પાણીઓ છોડી દઈ માત્ર એકજ ઉંદો પાણી, કે જે પ્રાપ્ત સાધુ-સાધ્વીઓના નિમિત્તેજ જકાયનો આરંભ કરી ગૃહસ્થો તૈયાર કરે છે. તેનેજ લેવાનો નવો માર્ગ કાઢ્યો છે. ઉંદો પાણી શિવાય બીજા પ્રાસુક પાણીનો કાળ માન ઓછો હોય છે એમ કહેવું તે ખોટું ખ્યાલ છે. કારણકે પ્રવચનસારોધ્ધાર મૂળમાં આચાર્ય શ્રીનેમિચંદ્રસૂરિ અને તેની ટીકામાં આચાર્ય શ્રીસિધ્ધસેન

એ શબ્દ નથી કિંતુ એકજ ‘સુદ્ધવિયડે’ શબ્દ છે, એટલા માટે ટીકાકાર શીલાંકાચાર્યે ‘સુદ્ધવિયડે’ શબ્દનો અર્થ વર્ણુતર પ્રાપ્ત

સૂરિ ઉત્તહા અનેકાસુ. બન્ને પ્રકારના પાણીનો ત્રણે ઋતુઓમાં સમાન કાળ-માન સ્પષ્ટતા લાખે છે. જુઓ તે પાઠ આ ગ્રંથ પૃષ્ઠ ૧૨૯ ના ટિપ્પણ માં.

વલી એજ પૃષ્ઠ પર મૂળ લેખકે ઉધ્ધૃત કરેલ નેમિચંદ્ર ભંડારી રચિત પશ્ચિશતક પ્રકરણની “ જેહ કેવિ સુકુલબહુળો, સીલં મહલંતિ કુલનામાનં । મિચ્છત્તમહમંતવિ, વિહરંત તેસુ ગુરુકેરત્તં ॥ ૧ ॥” આ ગાથા, કે જે (જે કે અમોએ તો એમણે છપાવેલ શુદ્ધિપત્રમુજબ શુદ્ધ કરીનેજ અહિં મૂકી છે છતાં) બહુલતાએ અશુદ્ધ છે, તેના વાસ્તવિક અર્થની ગમ પોતાને પડી ન હોવા છતાં આગમપ્રજ્ઞતાના મદમાં ચકચૂર બનતા લખે છે કે—“ જે કોઈ મિથ્યાત્વમતિવાલા શીલને મલિન કરતા કુલનું નામ ધરાવે છે, તેમાં ગુરુપણું કેવું ?” આવા ઢંગ ધણવગરના ઉટપટાંગ મનકાવતા અર્થ લખીને પોતાના એકાંત રાગાંધ્ર ભકતોમાં મહત્ત્વતા મેળવવાનું માનતા હશે, પણ નિષ્પક્ષ સુર જનોમાં તો આગમપ્રજ્ઞતાનો ખરેખર નમૂનોજ બતાવ્યો છે, અમો સુર વાંચકોની જ્ઞાણ ખાતર એ ગાથાનો શુદ્ધ પાઠ અને એનો વાસ્તવિક સત્ય અર્થ આ લખી બતાવીએ છીએ—

“ જહ કેવિ સુકુલબહુળો, સીલં મહલંતિ લિંતિ કુલનામં ।

મિચ્છત્તમાયરંતિવિ, વહંતિ તહ સુગુરુકેરત્તં ॥ ૧ ॥”

અર્થ—જેમ કેટલીએક ઉત્તમ કુલની વધૂ(સ્ત્રી)ઓ શીલને મલિન કરતી જતી પણ ઉત્તમ કુલનો અભિમાન ધરાવતી કુલનું નામ લે છે, તેમ મિથ્યાત્વ (શાસ્ત્રવિરૂધ્ધ આચરણ) ને આચરતા છતાં એ કેવા

કાસુ પાણી કહ્યો, ‘બીજું’ ત્રિકાળનો પાણી કદપસૂત્રોક્ત પાણીઓમાંથી કયા પાણીમાં કહેવાય ? એ વાતનો વિચાર કરજો, જેમ આપની સાતીમીરાતી-એટલે તેનો લેણુ દેણુ આદિ વ્યવહાર. તેના સંતાનીયા પરંપરાગત પુત્ર પૌત્રાદિકો જાણે પરંતુ બીજાના પુત્રે ન જાણે, તેમ નવાંગ ટીકાકાર શ્રીઅભયદેવ સૂરિના અભિપ્રાય જેવા તેના સંતાનીયાઓ જાણે તેવા પરપક્ષીઓ ન જાણે. જેને વિશેષ જાણવાની વાંછા હોય તેણે પૂછવું, જેમ તમારા પિતા સૂજ વહોરાએ અમદાવાદમાં બધા ગચ્છોની સામાચારી જોઈને તે બાબત ચરચા કરી બધા ગચ્છોના ગીતાર્થોની સમક્ષ શાસ્ત્રાનુસાર વિચાર અને ચર્ચા કરીને ગુરૂપરંપાયાત શ્રાવિનવલ્લભસૂરિ ભાષિત ખરતર ગચ્છની સામાચારી આચરી (તેમ) તમોએ પણ ગીતાર્થોને પૂછી સમજીને સામાચારી આદરવી, એકતરફી કથન સાંભળતાં સમજ નથી પડતી, માટે હવેથીય વિચારવો, (જેથી) લોકમાં પ્રતીતિ પામે, તે ભણી વિચારજો ।

સુગુરૂપણાને વહે છે ? ” આ ઉપર લખ્યા મુજબ ગાથાના શુદ્ધ પાઠ અને તેના વાસ્તવિક સત્ય અર્થને વાંચી પાઠકો સમજી ગયા હશે કે આગમપ્રજ્ઞાએ પોતાની વિદ્વત્તા બતાવવાને કેવા કપોલ કલ્પિત અર્થો લખી નાખવાના આડંબર કર્યા છે ? પરંતુ તપાસોની ધર્મક્રિયાઓ રાગદ્વેષ છોડી સમભાવે આત્મહિતને માટે નહીં, પણ કેવલ આડંબર માટે જ છે. આડંબરમાં એ લોકોએ ધર્મ માન્યો છે, જેમકે ન્યાયાચાર્ય ઉપાધ્યાય શ્રીયશોવિજયજી સીમંધર જિનના સ્તવનમાં કહે છે. ‘ધર્મ નામે ધમાધમ ચલી, જ્ઞાનમારગ રહ્યો દૂર રે,’ મહાશય આગમપ્રજ્ઞા ! આ ઉપર્યુક્ત ગાથામાં વર્ણિત હકીકત વતુતઃ આપમાંજ ચરિતાર્થ થાય છે. ઇતિશમ ।

(તપા ખરતર ભેદ ગ્રંથ ૧ બોલ ૪૭, ગ્રંથ ૨ બોલ ૫૦ મે)

૪૬ પ્રશ્ન-તથા સ્વરતરાંનંદ પડિકમણા કીધા પછડે ‘સુદ્રોપદ્રવ-ઓહડાવણ’નંડ કાઠસ્સગ્ગ ઇહલોકાર્થિ કરડે, તે સ્યું ? ।

ભાષા-ખરતરોને પડિકમણું કર્યા પછી ‘સુદ્રોપદ્રવ ઓહડાવણ’નો કાઠસ્સગ્ગ આલોકાર્થે કરે છે, તે શું ? ।

તત્રાર્થે—તપાંનંદ ‘દુઃસ્વક્ષય-કર્મક્ષય’નંડ કાઠસ્સગ્ગ કરડે, તે સ્યું ? એ સરિખુંજિ છડે, દુઃસ્વનંડ ક્ષય તે ઇહલોકાર્થિ છડે, પરં એ આપણા ૨ ગુરુની આચરણા છડે, ગુરુની આચરણાનંદ જે ચર્ચડે તે મોલા કહીયડે, ગુરુની આચરણા ઉપર શાસ્ત્ર ન જોડીયડે ॥૪૬॥

ભાષા-તપાને ‘દુઃખક્ષય-કર્મક્ષય’નો કાઠસ્સગ્ગ કરે છે તે શું ? એ સરિખુંજ છે, x દુઃખનો ક્ષય તે આ લોક નિમિત્તે છે, પરંતુ એ પોત-પોતાના ગુરુઓની આચરણા છે, ગુરુઓની આચરણાને જે ચર્ચે તે મોળા (સમજ વગરના) કહેવાય. તે ઉપર શાસ્ત્ર ન જોવાય ।

x આ કાઠસ્સગ્ગ જે તપાઓ કરે છે તેના માટે તો શાસ્ત્રપ્રમાણ આગમપ્રજ્ઞાચાર્યે શોધીજ કાઢ્યું હશે, તો તે અહિં પાઠકોને લખીને ખતાવ્યો કેમ નહીં ? વસ્તુતઃ આ કાઠસ્સગ્ગ કરવું એ શાસ્ત્રનો નહીં પણ તપાના ધરનો આચાર છે, ને એમાં જે દુઃખનો ક્ષય માગવો તે આલોક માટે નહીં તો બીજે શું છે ? બીજું આજ કાલના તપાઓ પાક્ષિક શિવાય હમેશાના પ્રતિક્રમણમાં શાંતિ અવશ્ય બેસવાનું જે માની બેઠા છે એ પણ શાસ્ત્રાનુસાર નથી તેમ જૂના તપાઓને પણ સમ્મત નથી, કિંતુ આજકાલના તપાઓના ધરનો આચાર છે, તપાના પરમપૂજ્યાચાર્ય શ્રીવિજયસેન સૂરિ ‘શાંતિ પાખીના દિવસે અવશ્ય અને બીજા (દેવસીના)

(તપા-ખરતર ભેદ ગ્રંથ ૧ ખોલ ૪૮, ગ્રંથ ૨ ખોલ ૫૧ મો)

૪૭ પ્રશ્ન—તથા સ્વરતરાંનઈ પજૂસણઈ ૭, ચડમાસઈ ૫, પાઘીયઈ ૩ જણ પઘઈ ન પઢિકમઈ, તે સ્યું ? ।

ભાષા:—ખરતરોને પજૂસણે સાત, ચોમાસીએ પાંચ અને પાખીએ ત્રણ જણ શિવાય ન પઢિકમે, તે શું ?

તત્રાર્થે—ઉત્કૃષ્ટઽ છતઈ યોગઈ એ ત્રિહું પર્વે (અનુક્રમે) ૭-૫-૩ યતિયાં સાથિ સ્વામણા કરવા છઈ, તેતલાના યોગ ન મિલઈ તડ ઓછઈઈ મેલાવઈ પઢિકમઈ, એ તપા યતિયાંનઈ પુણિ સરિસુંજિ છઈ, બે ઠાણઈ ત્રણ ઠાણઈ સંઘાડઈ કિમ પઢિકમિસ્યઈ ? પરં છતઈ યોગઈ એતલાં સાથિ સ્વામ્યું જોઈયઈજિ, અધિકાં સાથિ સ્વામિયઈ તડ ઘણડ લાભ થાઈ, પરં એતલાથી ડુણા સાથિ ન પઢિકમીયઈજિ ઇમ નથી જાણતા ॥ ૪૭ ॥

ભાષા:— ઉત્કૃષ્ટપણે ૭તે યોગે એ ત્રણે પર્વે (અનુક્રમે) ૭-૫-૩ યતિઓ સાથે ખામણા કરવા (શાસ્ત્રાશા) છે, તેટલાનો યોગ ન મળે

દિવસે ખોલવાનું નિયમ નથી ' એવું સ્પષ્ટ કથે છે. બુઝો—

તથા સર્વે: પાક્ષિકપ્રતિક્રમણે પરમ્પરયા શાન્તિરવશ્યં કથ્યતે, કૈશ્વિત્પુનરન્યસ્મિન્દિનેઽપિ કથ્યતે, તત્કિમસ્તીતિ પ્રશ્નોઽત્રોત્તરં— પાક્ષિકપ્રતિક્રમણે પરમ્પરયા શાન્તિરવશ્યં કથ્યતે, અન્યસ્મિન્દિને તુ કથનમાશ્રિત્ય નિયમો જ્ઞાતો નાસ્તીતિ ૫૭। સે. પ્ર. ઉ ૦૪, પા ૧૦૭

જ્યાં ભાન તો એટલુંએ નથી કે પોતાના પરમગુરુઓ શું કહી રહ્યા છે, ત્યાં દરેક બાબત ' તપા સૂત્ર પ્રમાણે કરે છે ' એમ નિઃસંકોચ ભાવે કહી દેવું. એ કેટલું ભારે દુઃસાહસ છે ? અસ્તુ.

તો ઓછા મેલે પણ પડિકમે, એ તપા યતિઓને પણ સરખૂંજ છે, એ કે ત્રણનાજ સમુદાયમાં (એટલાને ખામીને) કેમ પડિકમશે ? પરંતુ છતે યોગે એટલા સાથે અવશ્ય ખામવું જોઈએ, અધિક સાથે ખામિયે તો વિશેષ લાભ છે, પરંતુ એટલાથી ઓછા સાથે નજ પડિકમીએ એમ નથી જાણતા. +

(તપા ખરતર ભેદ ગ્રંથ ૧ ઓલ ૪૯, ગ્રંથ ૨ ઓલ પર મો)

૪૮ પ્રશ્ન-તથા સ્વરતર દેહગૃહ ચૈત્યવંદન કરતાં 'ભગવન્ ! ચૈત્યવંદન કરું ?' એ સ્વમાસમણ નાપડ, તે શું ? ।

ભાષા:-ખરતર દેહાસરે ચૈત્યવંદન કરતાં 'ભગવન્ ચૈત્યવંદન કરું ?' એ ખમાસમણ ન આપે, તે શું ? x

તત્રાર્થે-'ભગવન્ ! ચૈત્યવંદન કરું ?' એતલહ કહ્યહ સ્વમાસ-મણ ન થાહ, કિન્તુ 'ઈચ્છામિ સ્વમાસમણો ! વંદિતં જાવણિજ્જાણ નિસીહિયાણ મત્થણ વંદામિ' એ ૫૮ અક્કરે સ્વમાસમણ થાહ,

+ ખામવાની વાતને પડિકમવામાં લગાડી દધને મૂળ લેખકોએ પોતાની કુતુપિત ચિત્તવૃત્તિનું, ને અનુવાદકે પોતાની આગમપ્રજ્ઞતાનું ખરેખર પ્રદર્શનજ કયું છે, આવા સાવજ મિથ્યા દોષારોપણ કરીને લેખકોએ ને અનુવાદકે પણ કેવા કર્મો અર્જન કર્યા હશે, ને તેનો વિપાક કેવો આવશે ? એ તો જ્ઞાનીઓજ જાણી શકે.

x દેવસી પાખી આદિ ચારે પડિકમણાઓ થયા પછી ખમાસમણ દીધા શિવાય, ને ગુરૂપાસે આદેશ માગ્યા શિવાયજ તપાઓ 'ચઉક્કસાય'નો ચૈત્યવંદન કરે છે. તે કયા શાસ્ત્રનો ન્યાય છે ? આ તપાના ધરના ગપ્પા છે. શાસ્ત્રમાં ક્યાંએ એવું કથન નથી કે જેમાં ખમા ૦ દીધા વગર, ને આદેશ માગ્યા શિવાય ચૈત્યવંદન કરી શકાય.

પછી વલી ‘ઇચ્છાકારેણ સંદિસહ૦’ એ અક્ષર કહી આદેશ માંગીયે, જઈ દેવવાંદતાં હમ કો ન કહઈ તડ એ સ્વાસમણ કિમ કહીયઈ ?, વલી દેહરઈ જઈ ‘ભગવન્ ! ચૈત્યવંદન કરું’ હમ કિમ કહીયઈ ? ‘ભગવંત ચૈત્યવંદન કરું ?’ હમ ઘટઈ, જઈ ગુરુ આગલિ સ્વામમણ એ અક્ષર ન દીજઈ તડ સ્વાસમણનડ કહીવડ સું ? વિચારિજ્યો । તથા દેવ આગઈ તથા ગુરુ આગઈ ‘ભગવન્’ સરીસડ શબ્દ અઘટતડ છઈ, બેઠું ગુરુ-દેવ એકઈ શબ્દ કિમ બોલાઈ ? વિચારિજ્યો । જિનની સ્થાપના પછઈ ગુરુ આગલિ દેવવાંદા ન સૂઝઈ તડ ‘ભગવન્ ! ચૈત્યવંદન કરું ?’ હમ કિમ કહીયઈ ? અનઈ દેહરામાંહિ થકાં ગુરુનઈ એ સ્વાસમણ દેતાં દેવનડ અવિનય થાઈ, ઉપાસરામાંહિ પુણિ ચૈત્યવંદના તીર્થકરની થાપના આગલિ કીજઈ છઈ તડહી દેવની આશાતના, થાપનામાંહિ પંચપરમેષ્ઠિની થાપના છઈજિ, તીર્થકરની થાપના વિગરિ ચૈત્યવંદના ન થાઈજિ, એ જોજ્યો ॥ ૪૮ ॥

ભાષા—‘ભગવન્ ! ચૈત્યવંદન કરું ?’ એટલું કહેવાથી ખમાસમણ નથી થતું, કિંતુ ‘ઇચ્છામિ ખમાસમણો’ યાવત ‘મત્યએણ વંદામિ’ સુધી ૨૮ અક્ષરે ખમાસમણ થાય, ત્યાર પછી ‘ઇચ્છાકારેણ સંદિસહ૦’ ઇત્યાદિ અક્ષર કહી આદેશ માંગીયે, યદિ દેવવાંદતાં કોઈ એમ ન કહે તો (એ બૂલ છે, પણ) એ ખમાસમણ કેમ કહેવાય ? વલી દેરાસરે જઈને ‘ભગવન્ ! ચૈત્યવંદન કરું ?’ એમ કેમ કહીયે ? ‘ભગવંત ! ચૈત્યવંદન કરું’ એમ કહેવું ઘટે, જ્યારે ગુરૂની આગળ (પણ) ખમાસમણ પૂર્ણ નથી દેવાતો ત્યારે (ખીજે) તો ‘ખમાસમણનું’ કહેવું એ શું ?

વિચારજો, તથા દેવ અને ગુરૂ. બન્નેની આગળ ‘ભગવન્ !’ એ એક સરખો શબ્દ અણુધટતો છે, દેવ અને ગુરૂ. બન્ને એક શબ્દ કેમ ખોલાય ? વિચારજો, જિનની સ્થાપના શિવાય ગુરૂ આગળ દેવવાંદવા ન સૂઝે તો ‘ભગવન્ ! ચૈત્યવંદન કરું ?’ એમ કેમ કહેવાય ? અને દેરાસરમાં રહી ગુરૂને એ ખમાસમણ દેતાં દેવનો અવિનય થાય, અપાસરામાં પણ તીર્થંકરની થાપના આગળ ચૈત્યવંદન કરાય છે. તે પણ દેવની આશાનતા (એ માન્યતા હોય તો) થાપનામાં પંચપરમેષ્ઠીની થાપના છેજ. તીર્થંકરની થાપના વિના ચૈત્યવંદના નજ થાય, એ જોજો.

(તપા ખરતર ભેદ ગ્રંથ ૧ ખોલ ૫૦, ગ્રંથ ૨ ખોલ ૫૪ મો.)

૪૬-તથા સ્વરતર અક્ષની થાપના ન માંડે, તે મ્યું ?

ભાષા-ખરતર અક્ષ(શંખની એક જાતિ)ની થાપના ન માંડે, તે શું ?+

+ તપા ખ. ભેદ ૫૦ ૩૮ માં અનુયોગદ્વાર સૂત્રનો “અક્ષે વા વગાહે વા” પ્રત્યાદિ પાઠ આગળ કરીને અક્ષની થાપનાજ માન્ય કરાવવા મથનાર આગમપ્રજ્ઞાચાર્ય અને એમના અનુયાયિઓ એજ સૂત્રપાઠમાં તેમ પોતાના પૂર્વજ દેવેંદ્રસૂરિજીએ ‘ચૈત્યવંદનભાષ્ય’ની ૨૯ મી ગાથામાં ‘વગાહે’ શબ્દથી બતાવેલ ‘વરાટક’ કોડીની થાપના કેમ નથી રાખતા ? અક્ષશિવાય બીજી કોઈ પણ જાતની થાપના ન રાખી શકાય, બીજી સ્થાપના સામે આવશ્યકાદિ ક્રિયા કરવી ન કદ્યે એવો વિધાન ક્યા સર્વામાન્ય શાસ્ત્રમાં છે ? આગમપ્રજ્ઞજી બતાવે.

સદાને માટે પોતપોતાના સમુદાયમાં જે રાખવાની પ્રવૃત્તિ ચાલતી હોય તે એકજ રખાય, બધી કાંઈ ન રખાય, પરંતુ તપાઓ જેમ અક્ષશિવાયની થાપનાને અમાન્ય બતાવે છે, અને તેની આગળ આવ-

ત્રતાર્થે—‘સ્વરતગંનઈ યોગવહતાં અક્ષત્રાપના માંડઈ છઈ’ તુમ્હે
 ૫ બોલ અણજાણપણઈ લિખ્યા (છઈ, તથા કલ્પવાચતાં અક્ષનઈ
 માંડીયઈ તે ત્રાપના નિમિત્ત નહીં માંડતાં વીજઈ કાર્યઈ માંડીયઈ
 છઈ, તે વલી પૂછ્યાં લહિસ્યત, અમ્હે અક્ષની અસદ્ભાવ સ્થાપના
 માનીયઈ છઈ. જઈ અક્ષ ઉઘાડા થાઈ નવકાર કહીનઈ ત્રાપ્યા
 હોઈ તત્ત્વકાલીન ત્રાપના થાઈ, વલી અક્ષ ચલાવ્યાં ત્રાપના

સ્વકાદિ ક્રિયા કરવાનો નિષેધ કરે છે. તેમ ખરતર વાળાઓ અક્ષની
 ત્રાપનાને અમાન્ય નથી ખતાવતા એને તેની આગળ ક્રિયા કરવાનો
 નિષેધ પણ નથી કરતા, એટલુંજ નહીં પણ શાસ્ત્રકારોએ ‘કટ્થકમ્મે વા
 પોત્થકમ્મે વા’ ઇત્યાદિ તથા “અક્ષે વા વરાહે વા” ઇત્યાદિ પાઠદ્વારા
 ચર્ણિત સૂખ્ય આદિ ઉત્તમ કાષ્ઠની, ચિત્રની અથવા વર ટક-કોડીની આદિ
 કોઈ પણ જાતની ત્રાપનાને અમાન્ય ખતાવનાર વ્યક્તિ, અમુક અંશે
 ત્રાપના નિક્ષેપો ઉત્ત્રાપનાર હોવાના અંગે, તેને ટુંદીયાના ભાઈ માને છે.

૫૦ ૧૪૨ માં મૂળ લેખના અનુવાદમાં લખ્યું છે કે—‘અક્ષ’
 એટલે ‘સ્થાપનાચાર્ય’ આ અર્થ શાસ્ત્રથી તદ્દન અરખિલાઈ છે
 અનુયોગદ્વારની ટીકામાં મલધારી આચાર્ય શ્રીમાન્ હેમચંદ્રસૂરિ લખે છે કે
 “અક્ષ-અન્દનકઃ” અર્થાત્ અક્ષ એટલે ચન્દનક નામના એક જલચર
 એકદ્રિય જંતુ (એક જાતના શંખ)નો કલેવર, કે જેનો ઉપયોગ આજે
 તમામ તપાઓ ત્રાપના તરીકે કરી રહ્યા છે અને ખીજી શાસ્ત્રવિહિત
 ત્રાપનાઓનો નિષેધ કરી રહ્યા છે, ટુંદીયાઓએ તો સ્થાપના સાવજ
 ઉત્ત્રાપી દીધી, પરંતુ તપાઓએ પણ એછી નથી ઉત્ત્રાપી. એક અક્ષ
 શિવાય શાસ્ત્રોક્ત તમામ સ્થાપનાઓનો મોટો ખંધજ ઉત્ત્રાપી દીધો છે

ટલી, સાધ્વીયાંનહ અક્ષનિષદ્યા શાસ્ત્રે નિષેધી છઙ્ગ, તે અક્ષ ન
લ્યઙ્ગ, इत्यादि बोल विचारिज्यो । तथा भोली मध्ये तपांरइ अक्ष
थापना राखइ छइ ते जाण्या, परं अदीठी थापना आगलि क्रिया
कीधी न सूझइ, भोलीउं ते देखाइ परं थापनाचार्य नथी देखाता,
वली विचारिज्यो, नागोरी तपा-पासचन्दीया तेही थापना उघाडी
नइ मांढइ छइ, परं भोलीमांहि किणें गच्छि नहीं घालता, ए
विचारिज्यो । भोलीमांहि अक्ष समा तथा उपरांठा रह्या न जाणी
यइ. उपरांठा गुरु अवंदनीक थाइ, इम कहीनइ पुणि केईएक
भोलिमांहि राखी थापना अवंदनीक कहइ छइ, अम्हारइ वीटी
थापना आगलि क्रिया नथी करता, एवं जोइवउ ॥ ४६ ॥

ભાપા-‘ખરતરોને યોગવહતાં અક્ષની થાપના માંડે છે’ આ બોલ
તમોએ અગ્નણુપણે લખ્યો છે, અને કલ્પ વાંચતાં અક્ષ માંડે તે થાપના
નિમિત્તે નહીં, પણ ખીજ કામે માંડે છે, તે (ખુલાસો) વલી પૂછવાથી
પામશે, અમો અક્ષની સ્થાપના અસહભાવ માનીએ છીએ, અક્ષ યદિ
ખુલ્લા હોય અને તે અક્ષને નવકાર ગણીને થાપ્યા હોય તો ઇત્વર
કાલીન થાપના થાય, અને તે અક્ષને ચલાવ્યાં થાપના ન રહે, અને
સાધ્વીઓને અક્ષનિષદ્યા રાખવાનો શાસ્ત્રમાં નિષેધ છે, તેઓ અક્ષ ન
લિયે, ઇત્યાદિ બોલ વિચારજો, તથા તપાને અક્ષ થાપના ઝોલીમાં
રાખે છે, પરંતુ અદૃશ્ય થાપના આગળ ક્રિયા કરેલી શુદ્ધ ન કહેવાય,
(ઝોલીમાં થાપના રાખવાથી) તે ઝોલીયું દેખાય છે. પણ થાપનાચાર્ય
નથીદેખાતા તે વિચારજો. નાગોરી તપા (પાસચંદીયા) તે પણ થાપના
ઉઘાડીને માંડે છે. પરંતુ ઝોલીમાં કેંઈ ગચ્છવાળા રાખતા નથી. એ

વિચારજ્ઞે, ઝોલીમાં રહેલા અક્ષ ઉંધા છે કે સીધા તે ગાણી શકાય નહીં, એટલે ‘ઉડટા રહેલ ગુરૂ અવંદનીય થાય’ એમ કહીને પણ કેટલાંકા ઝોલીમાં રહેલી થાપના અવંદનીય કહે છે, અમારે (સંપ્રદાયે) આંધેલ થાપના આગળ ક્રિયા નથી કરતા. આ રીતે જોવું (વિચારવું).

(તપા ખરતર ભેદ ગ્રંથ ૧ બોલ પૃ. ૧, ગ્રંથ ૨ બોલ પૃ. ૫૫ મો)

૫૦ પ્રશ્ન—તથા કાંધીયા આશ્રી સામાયિક પોસહ પૂજા પ્રમુલ્લ (અંધ) રાખિવાના ભાવ લિખ્યા તે તુમ્હે અણજાણ્યાં લિખ્યા, વીજા કાંધીયાનહ લોકવ્યવહારહ ત્રેહીયા સ્નાન કીધાં પૂઠહ પૂજા કીધી સૂમ્હહ, નિશ્ચયવદ્દ સદા સામાયિક પઢિકમણા નવકાર ગુણણા સર્વ મેનમાંહિ કરહ, ત્રેહીયા સ્નાન પછી સર્વથા એ મોકલા થયા, કાંઈ ન કરહ, તેહ ઘરના દેહરામર સૂઆ ઝનાર્યા પછી ઘરના ધણી ઘરનહ પાણીયહ પલાલહ પૂજહ, અનેરા શ્રાવક વીજા ઘરનહ પાણીયહં પવિત્ર થઈ વીજા ઘરનહ પાણીયહં કરી પલાલ પૂજા કરહ, વીજા ઘરની અગ્નિ કરી ધૂપ દીપ પ્રમુલ્લ પૂજા કરહ, હમ અમ્હારા ગુરુના સંપ્રદાય લિખિત હહ, રૂયાલ (ન) હવહ તઝ ગીતાર્થ નિરવિરોધ ગુરુ પૂછીઝ્યો. જેહનહ આપણા ગુરુની પ્રતીતિ થાસ્યહ તે માનીસ્યહ, વલી હમ પુણિ લોકોક્તિ સાંભલીયહ હહ, જે ઋષિમતીયાંનહ અશુદ્ધ સ્ત્રીનહ હાથિ યતિ સૂમ્હતા એષણીય આહાર વિહરહ-લ્યહ હહ, તેહનહ ગચ્છિ એ આચરણાજિ હહ ૫૦

ભાષા:-કાંધીયા આશ્રિત સામાયિક પોસહ પૂજા આદિ (અંધ) રાખવા આપત જે અખ્યું તે તમોએ અગ્નાણતે અખ્યું છે. (ધર શિવાયના) બીજા કાંધીયાઓને લોકવ્યવહારથી ત્રેહીયા (ત્રણદિવસના.

નહીં કે ત્રણ સંખ્યાના) સ્નાન કર્યા પછી પૂજા કરવી સૂઝે, નિશ્ચયબદ્ધ સદા (નિયમવાળાઓ) સામાયિક પડિકમણું નવકાર ગણવું આદિ સર્વ મનમાં કરે, ત્રેહીયા સ્નાન પછી એ બધા કાર્યો સર્વથા ખુલ્લા થાય, એટલે સુધી કાંઈ પણ ન કરે, તે ધરના દેરાસર સૂતક કાઢ્યા પછી ધરધણી (પોતાના) ધરના પાણીથી પખાલે પૂજે, ધરધણી શિવાય અન્ય ગૃહસ્થ બીજા ધરના પાણીથી (ન્હાઈ ઘોઈ) પવિત્ર થઈને બીજા ધરના પાણીથી પખાલ પૂજા કરે અને બીજા ધરનાજ અગ્નિથી ધૂપ દીપ પૂજા પ્રમુખ કરે, એમ અમારા ગુરના સંપ્રદાયથી લિખિત (નિયમ) છે, ખ્યાલ (ન) હોય તો તે નિષ્પક્ષપાતી ગીતાર્થ ગુરુઓને પૂછજો, જેને પોતાના ગુરની પ્રતીતિ હશે તે માનશે. + વલી લોકવાયકા એમ પણ સાંભળીએ

+ તપા ખરતર ભેદ પૃઠ ૩૮ માં કાંધીયાઓને પૂજા કરવા વિષે ઉત્કૃષ્ટ ૨૪ પહોર ટાળવા બાબત લખ્યું છે કે “ એ પણ શાસ્ત્ર વિરુદ્ધ ધરનો આચાર છે, તપા તે વેળાએ કરે છે ” એટલે લખવાનું કે મૃતકને બાળી આવ્યા કે તરતજ જલચંદનાદિ પૂજા કરવાનો વિધાન કોઈપણ સર્વમાન્ય શાસ્ત્રમાં હોય તો તે જાળવાયાર્ય બતાવે. અન્યથા એ તપાના ધરનો શાસ્ત્રવિરુદ્ધ આચાર છે, એક માત્ર ‘સેનપ્રશ્ન’કે જે, જેમ હિંદુઓને મન ભગવદ્ગીતા, ઇસાઈઓને મન બાઈબલ, સિક્ખોને મન ગ્રંથસાહબ અને મુસ્લીમોને મન કુરાનશરીફ, તેમ તપાઓને મન એક પરમ માનનીય ગ્રંથ લેખાય છે, તેનો પ્રમાણ આપવો એતો સ્વમાતાના સતિત્વની સિદ્ધિ માટે પોતાના ભાઈની સાક્ષિ આપવા બરાબર છે, કારણકે ‘સેનપ્રશ્ન’ની અંદર યેન કેનાપિ સ્વપ્રવૃત્તિઓને હઠાત્ શાસ્ત્ર-સંમત મનાવવાના ફાંફા મારવા શિવાય બીજું છેજ શું ? દાખલા તરીકે—

છીએ કે અપિમતીઓને અશુદ્ધ સ્ત્રીના હાથે સૂઝતો-એપણીય આહાર
યતિઓ વોહરી હ્યે છે. તેના ગચ્છમાં એ આચરણુજ છે.

“ અદ્ભુટાદ્ભુજેસુ દીવસમુદેસુ-ત્તિ પાઠે ‘અક્ષુયાયાર’ इति
‘અક્ષયાયાર’ इति वा पाठः कथ्यते ? इति प्रश्नोऽत्रोत्तरं-‘अक्षु-
यायार’ इति पाठ आर्षत्वात् श्रीतातपादैरादिष्टोऽस्तीत्यसावेव पठनीय
इति २२८ । ३० ३ । (सेन प्रश्न पत्र ७१)

આ પાઠમાં પ્રશ્નકારે પૂછ્યું છે કે-‘અદ્ભુટાદ્ભુજેસુ’ ના પાઠમાં
‘અક્ષુયાયાર’ બોલવું કે ‘અક્ષયાયાર’ ?, ઉત્તરમાં આચાર્ય વિજયસેન
સૂરિજી ફરમાવે છે કે “ આર્ષ (ગણધર રચિત) હોવાના કારણે પૂજ્ય
ગુરુદેવોએ કહેલ છે, માટે ‘અક્ષુયાયાર’ જ બોલવું ” આથી વાંચકો સમજી
શકશે કે હારિભદ્રીય આવશ્યક ટીકામાં ચોક્કસ ‘અક્ષયાયાર’ પાઠ હોવા
જતાં તેને આર્ષ ન માનતાં પોતાની પ્રવૃત્તિ અનુસાર બોલાતા મનઃકલ્પિત
પાઠ ‘અક્ષુયાયાર’ને આર્ષમાની લેવું. એમાં છે કાંઈ રાગાંધતાની સીમા ?

કદાચિત્ કોઈના મોઢેથી અકસ્માત્ નિકળી જવાના કારણે અક્ષુ-
યાયાર’ બોલવાની પ્રવૃત્તિ પકડાઈ ગઈ હોય તો પણ જેમ અનુભૂતિ
સ્વરૂપાચાર્યે સારસ્વત વ્યાકરણ રચીને ‘પુંક્તુ’ શબ્દ સિદ્ધ કરી ખતાવ્યું
તેમ તપાઓએ ‘અક્ષુયાયાર’ સિદ્ધ કરી ખતાવ્યું હોત તો બહાદુરી
કહેવાતી, પરંતુ એટલી તાકાત ન હોવા જતાં શાસ્ત્રવિહિત શુદ્ધ પાઠ
છોડી ને મનઃકલ્પિત પાઠ બોલવાનો આગ્રહ રાખવો એનાથી વધુ
રાગાંધતા શું હોઈ શકે ?

એથીયે અધિક જોઈએ તો એજ ‘સેનપ્રશ્ન’ (ઉ. ૪ પ્રશ્ન ૧૪)માં
આચાર્યશ્રી મહાવિદેહના સાધુઓને દેવસી અને રાઘ પ્રતિક્રમણ હમેશાં

(તપા અરતર બેદ્ર ગ્રંથ ૧ બોલ પર, ગ્રંથ ૨ બોલ ૭૬ મો)

૫૧ પ્રશ્ન—તથા સ્વરતરાંનંદ જન્મનંદ સૂચ્ચંદ અશુચિકર્મ નિવર્ત્યંદ પદ્મંદ, ઇતલંદ ૧૧-૧૨ દિને ગયે થકે ઘરના દેહગામરની

હોવાનું કહે છે, એના ઉપર ટિપ્પણ કરી સાગરાનંદ લખે છે કે— ‘એ પ્રતિક્રમણ પણ હમેશાં નહીં’, કિંતુ કારણેજ હોય છે, એથી આગળ એજ ઉ. ૪ પ્રશ્નોત્તર ૬૩ માં ‘આવીસ તીર્થ’ કરના સાધુઓને કારણે પાલિકાદિક, અને હમેશાં રમ્મ દેવસી પ્રતિક્રમણે હોવાનું લખે છે. એના ઉપર પણ ટિપ્પણ કરતાં સાગરાનંદ એ પરિક્રમણાઓ પણ હમેશાં નહીં, કિંતુ કારણયોગેજ હોવાનું કહે છે, વાંચકોની બાલ ખાતર એ ઉપ-રેકત અને પ્રશ્નોત્તરોનો મૂળ સંસ્કૃત પાઠ જેમનો તેમ ઉધ્ધૃતકરીએ છીએ.

“ મહાવિદેહેષુ યે શ્રાદ્ધા દેશવ્રતિનસ્તે ઇમયકાલમાવશ્યકં કુર્વન્તિ કિંવા યતિવત્કારણે સમુત્પન્ને કુર્વન્તીતિ પ્રશ્નોઽપ્રોત્તરં— ‘દેસિઅરાઙ્ગઅપક્ષિઅ—ચરમાસિઅવચ્છરિઅનામાઅો । દુર્ણં પણ પલિકમણા, મજ્જિમગાણં તુ દો પઢમા ॥૧૥॥’” ઇતિ સપ્તતિશત-સ્થાનકસ્થગાથાઽનુમારેણ યદિ યતીનાં દૈવસિક-રાત્રિકપ્રતિક્રમણ-દ્વયકર્ણં પ્રત્યહં દૃશ્યતે, તર્હિ શ્રાવકાણાં કિં વત્તવ્યમિતિ ૧૪। ૩૦ ૪।
(સેન પ્રશ્ન ૫૩ ૧૦૩)

(૧) “ તં દુર્ણમુમયકાલં, ઇયરાણં કારણે ઇઽ મુણિણો ।’ ઇતિ પાઠાત્ મુનીનાં કારણે જાતે પ્રતિક્રાન્તાવપિ શ્રાવકાણાં ન તથા, કિન્તુ મુનીનામેવેતિ કુર્વન્ત્યેવોમયસન્ધ્યં શ્રાવકાઃ પ્રતિ-ક્રાન્તિમિતિ” (ટિપ્પિતં સાગરાનન્દેન તત્રૈવ)

“ દ્વાવિંશતિતીર્થકરવારકે ‘કારણજાણ પલિકકમણ’મિત્યુક્ત-

પૂજા ઘરનહ પાણીયહ તેહ ઘરના માણસ કરહ તે ઘરના આચાર જાણી-
યહ છહ, પરં શાસ્ત્રહ કઠેહ એ વાત નથી, તહ તે પૂજા ન કરહ, તે સ્યું ?

ભાષા-અસ્તરોને જન્મના સૂતકે અશુચિ નિવર્ત્યાં પછી, એટલે
૧૧ તથા ૧૨ દિવસ ગયાં પછી પોતાના ઘર દેરાસરની પૂજા ઘરના
પાણીથી ઘરના માણસો કરે, તે ઘરના આચાર જાણીયે છીએ. પરંતુ
શાસ્ત્રમાં ક્યાંયે એવી વાત નથી. તો પછી તે (સૂતકવાળા ઘરના
માણસો) પૂજા ન કરે, તે શું ?

તર્કાર્થે-યતિનહ જન્મનહ સૂત્રહ ‘નિઃસ્વચ્છિર અસુહજાયકમ્મકરણે,
સંપત્તે વા. સાહે દિવસે’ એવા શ્રીદશાશ્રુતાસ્કંધાદિ સિદ્ધાંતના પાઠ-
નહ ન્યાયહ ૧૨ દિને અશુચિકર્મ નિવર્તન કર્યા પછી આપણા મિત્ર
જ્ઞાતિ પ્રમુખ જિમાવ્યા, એતલહ જન્મ દિન થકી ૧૨ દિનહ ઘર
શુચિ થાહ. ૧૧ દિનતાંહ અશુચિ થાહ, તહ અશુચિમાંહિ તિયહ
પાણીયહ કિમ પલાલ પૂજા થાહ ? તથા જાત સૂતકનહ ઘરહ
યતિનહ જહ આહારનહ નિમિત્ત જાહવહ નિષેધ્યહ તહ જિનપ્રતિમા-
નહ તેહનહ ઘરહ પૂજિવહ કિમ થાહ ? તથા ચોક્તં “ જાય-

મસ્તિ તત્ત્વચ્છાનાં પ્રતિક્રમણાનાં મધ્યે કિં નામકમિતિ પ્રશ્નોડ્વોત્તરં
‘કારણજાણ પઢિક્કમણં’ એતત્પાક્ષિકાદ્યાશ્રિત્ય ગ્રાહ્યં, ઉભયકાલ
પ્રતિક્રમણં તુ સર્વેષાં ભવતીતિ બોધ્યમ્ ૬૩. ૩૦૪ (સેન પ્ર.પ. ૧૦૮)

(૧) ચિત્યમિદં, દ્વયોરપિ કારણે એવ વિધેયત્વાત્ (ટિ. સાગરા. ૦)

આથી વિચારવાનું કે જે વાત દરવર્ષે કલ્પસૂત્ર ટીકાદિમાં વંચાય
છે તે વાતનું જ ખ્યાલાત જેને ન હોય તેવાઓનો પ્રમાણ દરેક આપતમાં
આપવું, એ કેટલી બધી મોહરાગની પ્રવળતા ? અસ્તુ.

મયસૂયગાદિસુ નિજ્જૂઠા ” ઇત્યાદિ વ્યવહાર ભાષ્યે । વ્યાख्या-
 “જાતસૂતકં નામ જન્માનન્તરં દશાહાનિ યાવત્, મૃતસૂતકં-
 મૃતાનન્તરં દશાહાનિ યાવત્ ।” ઇતિ વ્યવહારવૃત્તૌ । + ‘સન્નિરુદ્ધે
 સે ગામે’ ઇતિ શ્રીપ્રથમાંગે । “ પડિકુટું કુલં ન પવિસે ” ઇતિ
 શ્રીદશવૈકાલિકે । નિશીથભાષ્ય-નિશીથચૂર્ણિ × પ્રમુખ સર્વ-
 માન્ય ગ્રંથામાંહિ જન્મસૂતકગૃહ ૧૧ દિન અપવિત્ર થાઈ, તડ તીર્થકરની
 પ્રતિમા કેમ પૂજાઈ ? મિદ્ધાર્થે રાજાનઈ અધિકારિ પુષ્પ ગંધ ધૂપ
 નૈવેદ્યાદિ અગ્રપૂજા સંભાવીયઈ, જઈ તેહનઈ ઘરઈ લોક ન
 જિમઈ, યતિ ન વિહરઈ, તે ઘર અશુચિ થાઈ, તડ તીયઈ ઘરનઈ
 પાણીયઈ ધીજિનપ્રતિમાની અંગપૂજાં કહડ કિમ થાઈ ? ઢોવણા
 પ્રમુખ અગ્રપૂજા થાઈ, પુણિ જિમ જન્મનઈ સૂઅઈ ગુલ સોપારી નાલેર
 પ્રમુખ તેહનઈ ઘરઈના લાંહણાં લોક લિયાજિ કરઈ, તિમ ઢોવણાદિ
 પૂજા ઘટઈ, હિવણાઈ જન્મના ઘર થકી દેહરઈ ધી નાલેર સોપારી
 આલોત્રીથાલ પ્રમુખ, જેહમાંહિ તેહના ઘરનડ પાણી ન પડઈ તે
 આણી ઢોઈયઈ, યતિ પિણ કારણવિશેષઈ જન્મ સૂતકનઈ ઘરના

+ લૌકિકં દ્વિધા-ઈત્વરં યાવત્કથિકં ચ, તત્રેત્વરં યત્સૂતકં મૃતકાદિ,
 (તદ્)દશાદિવસાન્ યાવદ્વર્જ્યંતે ઇતિ, યાવત્કથિકં-વરુદ-હિપકર્મકાર-
 ડુમ્બાદિ, એતે હિ યાવજ્જીવં શિષ્ટૈઃ સમ્મોગાદિના વર્જ્યન્તે ઇતિ”
 (વ્યવહાર ભા. ટી. ઉ. ૧ પત્ર ૧૦)

× “લોહઓ દુવિહો-ઈત્તરિઓ આવકહિઓ ય, ઇત્તરિઓ
 સૂયગાદિસુ દસા(ઈ)દિવસપરિવર્જણં, આવકહિઓ જહાનદુ-વરુદ-
 હિપગ-ચમ્માર-ડુંબા ય । (નિશીથ ચૂર્ણિ પરિહાર નિક્ષેપાધિકારે)

ષી ગુલ પ્રમુલ્ક લ્યઈ છઈ, તે મળી જન્મ સૂતકનઈ ઘરઈ તેહનઈ પાણી સાથિ પૂજા કરિવી નિષિદ્ધ પૂર્વાચાર્યઈ શાસ્ત્રનઈ ન્યાયઈ થાપી પ્રભૂપી, તે પ્રમાણ કરિવી, વાસ કપૂર નૈવેદ્યાદિ પૂજા નિષિદ્ધ નથી, એવં ગીતાર્થાનઈ પૂછીવડ ॥ ૫૧ ॥

ભાષા-સૂતકવાણા ઘરે સાધુને આહાર પાણી વહોરવું ન કલ્પે, કારણુકે દશાશ્રુતસ્કંધ(કલ્પસૂત્ર)માં લખ્યું છે કે- ‘આરમો દિવસ સંપ્રાપ્ત થયે, (સૂતકસંબંધી) અશુચિકર્મ નિવર્તન કર્યે છતે’ (મતલબકે) આર:દિવસે અશુચિકર્મ નિવર્તિત કર્યા પછી પોતાના મિત્ર જ્ઞાતિ આદિને જમાવ્યા, એટલે જન્મ દિવસથી આર દિવસે ઘર પવિત્ર થાય, અઆર દિવસ સુધી ઘર અપવિત્ર હોય છે, તો તે અપવિત્રતાવાળા ઘરના પાણીથી પ્રભુની પખાલ પૂજન કેમ થઈ શકે ? તથા જન્મ સૂતકના ઘરે સાધુને આહાર નિમિત્તે જવાનુંએ જ્યારે નિષિદ્ધ છે, ત્યારે તે (સૂતકવાળા)ના ઘરે (તેના પાણી વિગેરેથી) જિનપ્રતિમા કેમ પૂજાય ? એજ બાબતે વ્યવહાર ભાષ્ય અને ટીકામાં લખ્યું છે કે-‘જન્મસૂતક એટલે જન્મ પછી દશ દિવસપર્યન્ત અને મૃતકસૂતક એટલે મૃત્યુ થયા પછી દશ દિવસ પર્યન્ત (તે ઘર ત્યાજ્ય કહેવાય). +

+ વ્યવહાર ભાષ્યવૃત્તિમાંજ વલી લખ્યું છે કે-લૌકિક સૂતકના એ પ્રકાર છે-એક ઇત્વરિક (થોડા કાળનું) અને બીજું યાવતકથિક (જીવજીવનું), તેમાં જે મૃત્યુઆદિનાં સૂતક તે ઇત્વરકાલીન છે, તે ઘર દશ આદિ દિવસપર્યન્ત છોડવાના, અને યાવતકથિક તે બરુડ(ખટિકાદિ) ચમાર. છીપા કુંબ આદિ, એમની સાથે દરેક જાતનો વ્યવહાર ઉત્તમ જાનિતા લોકો યાવજીવન પર્યન્ત વર્જિત માને છે.

એમજ આચારાંગમાં કહ્યું છે કે ‘તે ગામ (સૂતકાદિથી) સન્નિર્દ્ધ-
રોકાયેલ છે’ તેમ દશવૈકલ્પિક ટીકામાં કહ્યું છે કે—‘સૂતકાદિથી
નિષિદ્ધકુલોમાં સાધુ ગોચરી પાણીયે ન જાય’ એવીજ રીતે નિશીથ-
ભાષ્ય(તથા)ચૂર્ણિમાં x આહારાદિ નિમિત્તે જવાને અયોગ્ય ધરના વર્ણનમાં
સૂતકવાળાનો ઘર પણ અયોગ્ય કહેલ છે, એવી રીતે સર્વામાન્ય
પ્રાચીન ગ્રંથોના કથનથી સૂતકવાળાનો ઘર અગ્યાર દિવસ સુધી અપવિત્ર
હોય છે (એટલે સાધુઓને આહાર નિમિત્તે તે સૂતકવાળા ઘરમાં
જવાનો નિષેધ છે), તો તેના ઘરના પાણી આદિથી જિનપ્રતિમા કેમ
પૂજાય ? સિદ્ધાર્થ રાગના અધિકારમાં (તેણે) પુષ્પ ગંધ ધૂપ નૈવેદ્યાદિ
અગ્રપૂજન (કરાવી હોય. એમ) સંભાવિત છે, જ્યારે તેના ઘરે લોકો
જમતા નથી. સાધુઓ વહાઈરતા નથી. તે ઘર (આખુંએ) અપવિત્ર છે.
ત્યારે તે ઘરના પાણીથી જિનપ્રતિમાની અંગપૂજન કહો કેમ થઈ શકે ?
હાં નૈવેદ્યાદિ અગ્રપૂજન થઈ શકે, વલી જન્મસૂતકે તેના ઘરના ગોળ
સોપારી. નાળીએર આદિ દહાણા (જેમ) લોકો લિયા કરે છે, તેમ
નૈવેદ્યાદિ પૂજન થટે છે. હમણાં પણ જન્મ (સૂતકવાળા)ના ઘર થઈ
દેરાસરે ધી. નાળેર. સોપારી. અક્ષતથાળ આદિ કે જેમાં તે (સૂતક-
વાળા)ના ઘરનું પાણી ન પડ્યું હોય. તે વસ્તુ લાવી ચડાવે છે.
સાધુઓ પણ કારણ વિશેષે જન્મસૂતકના ઘરના ધી. ગોળ પ્રમુખ લિએ
છે. માટે પૂર્વાચાર્યોએ શાસ્ત્રાનુસાર જન્મસૂતકવાળાના ઘરના પાણીથી
જિનપ્રતિમાની પૂજન નિષેધી છે તે (શાસ્ત્રાસા) પ્રમાણ કરવી, વાસ કપૂર
નૈવેદ્યાદિ પૂજન નિષિદ્ધ નથી. આ રીતે (સ્પષ્ટતાથી) ગીતાર્થોને પૂછવું.

x નિશીથ ચૂર્ણિનું પણ કથન વ્યવહારવૃત્તિથી અક્ષરેઅક્ષર મળતું છે.

(तथा अन्तर लेख ग्रंथ १ भोक्ष ५३, ग्रं. २ भोक्ष ५७ भो)

५२ प्रश्न—तथा पञ्चमणना दिनमान आश्री जे लिख्या, तत्रार्थे—आमाढ चउमासी पडिकम्यां पछी 'वासराणं सवीसइराए मासे विइककंते वासावासं पज्जोसवैति × × × अंतरावि य से कप्पइ मो से कप्पइ तं रयणि उवायणावित्तए' इत्यादि दशाश्रुतस्कंध सिद्धांतना वचन थकी एहवा जाणीयइं जे आमाढ चउमासी पडिकम्या पछी मास १ अनइ वीसे दिहाडे अतिक्रम्ये, एतलइ चउमासा थकी पंचासे दिने गये श्रीसंवत्सरी पर्वनउ पडिकमणउ करणउ, एतलइ गृहिज्ञात संवत्सरी पडिकमणइ कीधइ स्थिति जाणिवी, एतलइ इहां मासना नाम नथी, किन्तु दिननी गणना छइ, एक मासना ३० दिन थाइ, तेह ऊपरि २० दिन थाइ, मास अनइ २० दिन मिल्यां पंचास दिन थाइ, अथवा पांचे दाहके गिएयां पुणि पंचास दिन थाइ, एतलइ चउमासी पडिकम्या थकी ५० दिन गिएतां बिहुं लेखे आवइ, सिद्धांतमांहि मासना नाम नथी खार्या, इमं गिएतां (चंद्रवर्षइ) सहजइ भाद्रव मास आवइ, परं जइ सिद्धांतमांहि 'सवीसइ राए मासे' इम न कहत भाद्रव मासना नामज खार्या होत, तथा पांच (दिवसना) दश(पंच)क निर्युक्तिकाइ खार्या न होत तउ पर्युषणा भाद्रवइ तथा श्रावण वधतइ ते मास काल-चूलिकानइ मेलइ अधिकमास अणगिएतां भाद्रवासुदि चउथि आवत, परं ५० दिननी गणनामांहि मास संचार न थाइ, जइ तिथि वधती हुवइ तउ तिथि कालचूलाइ न गिएाइ, एतल्यां तिथ्यांमांहि जइ कांइ तिथि घटइ तउ 'अंतरावि य से कप्पइ' इणइ

मेलइ जणात, परं दिनगणनामांहि ३० दिन संकेलाइ नहीं, अतइ
 'अभिवद्भट्टियम्मि वीसा' ए व्यवस्था आचरणानइ मेलइ न
 मनाइ, आपणइ गीतार्थानी आचरणा मानिवी, पंचक दिन हानि
 न करवी, ते भणी चउमासा थकी ५० दिने पयुषणा गृहिज्ञात
 करिवीजि, अनइ श्रीजिनशासनइ न्यायइ आषाढ तथा पोस, ए २
 मास टाली बीजा 'दश मास वधताइ नथी. तउ कालचूला किहां
 मानीयइ छइ ? । तथा यतियइ भगवतीना छम्मासी योगवहतां
 कालचूला जूई गिणाय छइ, एवं इहां पिण लोकीक टीपणानइ
 मेलि श्रावण भाद्रवादि मास वधतांइ चउमासाथी १ मास तथा
 २० दिने. एतलइ ५० दिने पर्युषणा करिवी, तथा संवच्छरी
 पडिकम्यां पछी जघन्यइ ७० दिन तिहां रहिवउ छइ तीयइ
 स्थानकनइ, एतलइ उत्कृष्टइस्यु कारणविशेषइ अधिकाई दिन रही-
 यइ, श्रीकाती चउमासउ काती पसवाडइ श्रीछठइ अंगि श्रीज्ञाता-
 धर्मकथांगमांहि चउथइ अध्ययनि सैलक-पंथक यतियांनइ ज्ञातइ
 नाम खारीनइ लिखुं छइ, लोकव्यवहारइ दीवाली थकी १५ दिने
 कार्तिकी पूर्णिमा थाई । श्रीमहावीरना मोक्षकल्याणक वदी ३०
 थाइ, तेह थकी १५ दिने कार्तिक चतुर्मासक थाइ, वली जइयइ
 आषाढ चउमासाथकी वीसे दिने अधिक मासानइ मेलि पजूमणा
 करता तिवारइ यति पजूमणाथी १०० दिनइ काती चउमासी करता
 कि न करता ? तउ ७० दिनथी अधिकउही यति पछइ रहइ
 तेणइजि खेत्रइ, एवं इहां घणी विचारणा छइ, कितली-क इहां
 युक्ति लिखीयइ ? मुंहडामुंहडइ मिल्यां युक्ति कहाइ, पुणि सर्व

પ્રશ્ન સર્વ ઉત્તર ન લિલાઈ, તુમ્હે ડાહ્યા છૂડ, ઇતલેજિ લિલ્યા પરીછસ્યડ, પહિલઝહી પ્રશ્નોત્તરમાંહિ એ યુક્તિ લિલ્લી છૂડ, જોડ્યો ।

ભાષા:-પળુસણના દિનમાન આવત જે લખ્યું તે આવતમાં એમ છે કે-આપાઢ ચોમાસી પડિકમ્યા પછી ‘વર્ષાકાળના એક માસ અને વીસ દિવસ વીત્યે પળુસણ કરે છે x x x કારણયોગે પચાસ દિવસની અંદર પળુસણ કરવા કદપે, પણ તે પચાસમા દિવસની રાત્રિ પળુસણ કર્યા વગર ઉલંઘવી ન કદપે, ઇત્યાદિ દશાશ્રુતસ્કંધ સિદ્ધાંત (કદપસૂત્ર) ના કથનથી જણાય છે કે આપાઢ ચોમાસી પ્રતિક્રમણ કર્યા પછી એક માસ અને વીસ દિવસ વીત્યે, એટલે ચોમાસાથી પચાસ દિવસ ગયે સંવત્સરી પ્રતિક્રમણ કરવો, એટલી સ્થિતિ ગૃહિજ્ઞાત સંવત્સરી પ્રતિક્રમણ કરવાની જાણવી. એટલે અહિં ‘માસનું’ નામ નથી કિંતુ દિવસની ગણના છે, એક માસના ૩૦ દિવસ થાય તેના ઉપર ૨૦ દિવસ થાય, એક માસ અને વીસ દિવસ મળવાથી પચાસ દિવસ થાય, અથવા પાંચને દશથી ગુણ્યાં પણ પચાસ દિવસ થાય, અને હિસાબે ચોમાસી પડિક્રમણથી પચાસ દિવસ આવે, સિદ્ધાંતમાં (પળુસણ માટે) માસનું નામ નથી લખ્યું. + (છતાં) ઉપરની ગણતરીએ

+ જે લોકો નિશ્ચયચૂર્ણિમાં શાળીવાહન રાગની સમક્ષ કાલિકાચાર્યે કહેલ “મદ્વચસુદ્ધપદ્મમીએ પવ્વોસવિજ્જઈ” આ પાઠને આગળ કરીને સંવચ્છરી પ્રતિક્રમણયુક્ત ગૃહિજ્ઞાત પળુસણ કરવા માટે ભાદરવો માસ નિયત કરવા મથી રહ્યા છે, તેમનો તે પ્રયત્ન વ્યર્થનોજ છે, કારણ કે નિશ્ચયચૂર્ણિ કથિત હકીકત ચરિતાનુવાદની છે, ને તેને વર્તનમાં લેવાની તપાઓના પરમગુરૂ આ. વિજયસેનસૂરિ પોતે મના કરે છે, જુઓ-

(ચંદ્રવર્ષમાં) સહેજે ભાદ્રવમાસ આવે છે, પરંતુ સિદ્ધાંતમાં જે વીસ રાત્રિસહિત એક માસ ન કહ્યું હોત તથા ભાદ્રવ માસનું નામજ કહ્યું.

તલ્લક્ષણં પુનરેકેન કેનચિદ્વત્ક્રિયાનુષ્ઠાનમાચરિતં સ ચરિતા-
નુવાદઃ, સર્વૈર્ગપિ યત્ક્રિયાનુષ્ઠાનં ક્રિયતે સ વિધિવાદસ્તુ સર્વૈરપિ
સ્ત્રીકર્ત્તવ્ય એવ, ન તુ ચરિતાનુવાદ इति” ૮। (સેનપ્ર.ઉ. ૩ પાના ૫૪)

તેમજ “અયં ચરિતાનુવાદો, ન તુ વિધિવાદઃ, તેન નાયં
વિધિસ્ત્વૈરવ્યનુષ્ઠેય એવેતિ” ૪૫ । (સેનપ્રસ્ત ઉ. ૩ પાના ૪૪)

“ તે (ચરિતાનુવાદ અને વિધિવાદ)નું લક્ષણ આપ્રમાણે છે, જે
ક્રિયાઅનુષ્ઠાન કોઈ એકે આચર્યું તે ચરિતાનુવાદ કહેવાય અને જે ક્રિયા-
અનુષ્ઠાન અધાઓએ કરવાનું હોય તે વિધિવાદ કહેવાય, તે વિધિવાદે
અતાવેલ અક્રિયાઅનુષ્ઠાન અધાઓએ અવશ્ય કરવાનું, પણ ચરિતાનુવાદે કહેલ
ક્રિયાઅનુષ્ઠાન અધાઓએ કરવાનું નથી ” એથી સ્પષ્ટ સાબીત થયું કે—
નિશીથચૂર્ણિ કથિત હકીકત ચરિતાનુવાદની હોવાના અંગે વિધિવાદમાં
નામ્પવી સર્વથા અયોગ્ય છે. એ શિવાય બીજા કોઈ પણ સિદ્ધાંતમાં
પશુસણ માટે ભાદ્રવો નામ નથી કહ્યું, એટલેજ તો જન્મવાચાર્યના
પરમગુરૂ આત્મારામજી પણ સમ્યક્ત્વ શલ્યોદ્ધારમાં લખે છે—

હુંદીઆઓનું પ્રશ્ન—પંચમી છોડકે ચૌથકો સંવત્સરી કરતે હો ?

ઉત્તર—હમ જો ચૌથકી સંવત્સરી કરતે હૈં સો પૂર્વાચાર્યો
કી તથા યુગપ્રધાનકી પરમ્પરાસે કરતે હૈં, શ્રીનિશીથચૂર્ણિમેં
ચૌથકી સંવત્સરી કરની કહી હૈ । ઓર પંચમીકી સંવત્સરી
કરનેકા કથન સૂત્રમેં કિસી જગહ મી નહીં હૈ, સૂત્રમેં તો આષાઢ
ચૌમાસેકે આરમ્ભસે એક મહિના ઓર વીસ દિન સંવત્સરી

होत, अने निर्युक्तिद्वारे (पांय पांय द्विसना) दश पांयड न उद्धा
होत तो लादरवो या आवणु वधतां (तपाओनी मान्यताये) ते भासने

करनी, और एक महिना वीस दिनके अन्दर संवत्सरी पडिक्क-
मनी कल्पती है परन्तु उपरांत नहीं कल्पती है, अंदर पडिक्कमने
वाले तो आराधक हैं उपरांत पडिक्कमने वाले विराधक हैं, ऐसे
कहा है, तो विचार करो कि-जैन पंचांग व्यन्धेद हुए हैं,
जिससे पंचमीके सायंकालको संवत्सरी प्रतिक्रमण करते
समय पंचमी है कि छट्ट हो गई है ? तिसकी यथा स्थिती
खबर नहीं पडती है, और जो छठमें प्रतिक्रमण करिये
तो पूर्वोक्त जिनाज्ञाका लोप होता है, इस वास्ते उस कार्यमें
बाधकका संभव है, परन्तु चौथकी सायंको प्रतिक्रमणके समय
पंचमी हो जावे तो किसी प्रकारका भी बाधक नहीं है, इस
वास्ते पूर्वाचार्यों ने पूर्वोक्त चौथकी संवत्सरी करनेकी शुद्ध रीति
प्रवर्तन करी है सो सत्य ही है, परन्तु हूंढीये जो चौथके दिन
सन्ध्याको पंचमी लगती होवे तो उसी दिन अर्थात् चौथको संवत्सरी
करते हैं, न तो किसी सूत्रके पाठ से करते हैं और न युगप्रधानकी
आज्ञासे करते हैं, किन्तु केवल स्वमति कल्पना से करते हैं”

(सम्यक्त्वशल्योद्धार चौथी आवृत्ति, पाना १५८)

न्याये शास्त्रोमां कयांये विधिवादथी पञ्चसणु भाटे लादरवो उद्धोण
नथी तो पछी पढेला लादवानो के भीज आवणुनो वियारे शुं करवानो ?
अटवे पयास द्विस न्यां पूणुं थाय त्यां, गमे तो पढेला लादरवो होय
अने गमे तो भीजे आवणु होय, पञ्चसणु करवा शास्त्रसंमत छे.

કાલચૂડા માની ગણતરીમાં ન લેતાં ભાદરવા સુદી ચોથના રોજે પશુસણ આવતે. પરંતુ પચાસ દિવસની ગણનામાં (આખે એક) માસ સમાવી ન દેવાય, જે તિથિ વધતી હોય તો કાલચૂડાએ ન ગણાય, x

x કારણકે એક પક્ષમાં કોઈ પણ તિથિની વૃદ્ધિ થઈ તો બીજા યા ત્રીજા પક્ષમાં હાનિ થઈને સરવાળે વર્ષમાં છ તિથિની ખોટજ રહે છે, એથી તિથિની વૃદ્ધિ થતાં સોળ દિવસ ખોલવાની આવશ્યકતા રહેતી નથી, બીજું વૃદ્ધિ પ્રસંગે જે સોળ દિવસ ખોલવાનું સ્વીકારિયે તો તિથિક્ષય પ્રસંગે ૧૪ દિવસ ખોલવાનું પણ અવશ્ય સ્વીકારવું જોઈએ, જૈન પંચાંગોની હયાતીમાં પણ બે મહિને એક તિથિની હાનિ થતાં વર્ષમાં છ પક્ષ ૧૪-૧૪ દિવસના આવતાજ હતા. છતાં પરમતારક તીર્થંકર દેવોએ જેમ ચંદ્ર અને અભિવર્દિત વર્ષના પક્ષ અનુક્રમે ૨૪ અને ૨૬ જુદા જુદા કહ્યા તેમ તિથિની હાનિવાળા પક્ષના ૧૪ દિવસ અને વગર હાનિવાળા પક્ષના ૧૫ દિવસ. એમ જુદા જુદા ન બતાવતાં વ્યવહાર નયના હિસાબે “ગોચમા ! ઇગમેગસ્સ પક્ષસ્સ પગ્ગણરસ દિવસા પગ્ગણ્તા” એમ કહીને કેવળ પાંદર દિવસજ દરેક પક્ષના બતાવ્યા છે, એટલે સોળ દિવસ ખોલવાની કાંઈ જરૂરત નથી, પરંતુ તિથિની માફક માસની પણ હાનિ તેમ વૃદ્ધિ. બન્ને નિકટના સમયમાં થતા, હોય તો માનવાને કારણ મળે કે અધિક માસને ગણતરીમાંથી કાઢી નાખવો, પરંતુ આમ થતું નથી, યદ્યપિ લોકિક જ્યોતિષના હિસાબે ઘણે લાંબે ટાઈમ ક્ષય માસ આવે છે ખરો, પણ તે સાથે તેના તે વર્ષમાં અધિક માસ બે આવી જવાથી સરવાળે વર્ષ તો તેર માસનોજ થાય છે. જેમકે વિં સં ૧૮૭૯ માં પૌષનો, ને સં ૧૮૯૮ માં માઘનો ક્ષય

(અને) એટલી તિથિઓમાં જે કોઈ તિથિ ઘટે તો ‘અંદર કરવું કદપે’ આ હિસાબે જણાત, પરંતુ દિન ગણનામાં ૩૦ દિવસ ભેગા ન સમાવાય, અને ‘અભિવર્દિત વર્ષે’ વીસ દિવસે ગૃહિણાન પંજુસણ કરવા’ એ વ્યવસ્થા આચરણને મેળે ન મનાય, આપણા ગીતાર્થોની આચરણ માનવી, પંચક દિનહાનિ ન કરવી, તે ભણી ચોમાસાથી પચાસ દિવસે ગૃહિણાત પંજુસણ અવશ્ય કરવી, અને શ્રીગ્નિનશાસનના ન્યાયે આપાઠ તથા પૌષ એ મે માસ શિવાય અન્ય દશ માસ વધતાજ નથી. તો કાલચૂલા ક્યાંથી માનો છે? અને યનિયોને ભગવતીના છમ્માસી યોગ વહતાં કાલચૂલા જુદી ગણાય છે. * એવં અહિં પણ લૌકિક ટીપણના હિસાબે શ્રાવણ ભાદ્રવાદિ માસ વધતાં ચોમાસીથી એક માસ અને

થયો હતો. તે બંને વર્ષોમાં આસો અને ચૈત્ર. આ બે મહિનાઓ અધિક થયા હતા. સરવાળે બંને વર્ષો તેર માસ છવીસ પક્ષનાજ થયા હતા, બ્યારે અગ્યાર માસનો વર્ષ ક્યારેય આવતોજ નથી ત્યારે ૧૩ મહિનાના વર્ષમાં પણ ૧૨ માસ ૨૪ પક્ષાદિ બોલવામાં સત્યતા કેટલી છે એનો વિચારતો પાઠકોના ઉપરજ રાખવામાં આવે છે. આ બે ક્ષય માસની હકીકત જોધપુર (મારવાડ)ના રાજ દફતરમાંથી અમોએ મેળવી છે.

* કાલચૂલાને ગણત્રીમાં નહીં માનનારાઓએ ભગવતીના જોગ ૭ મહિના અવશ્ય વહેવા જોઈએ અને માસખમણનો તપ બે મહિને તેમ બે માસખમણ ત્રણ મહિને પૂર્ણ કરવા જોઈએ, અન્યથા અધિક માસને ગણત્રીમાં ન માનવા રૂપ એમની માન્યતાનો ભંગ રૂપ છે, બીજું બ્યારે કાલચૂલા ગણત્રીમાં નથી ત્યારે ભાવચૂલા પણ ગણત્રીમાં નજ માનવી જોઈએ, અને જો એમજ હોય તો પછી દશવૈકલિકના

વીસ દિવસે. એટલે પચાસ દિવસે પશુસણ કરવાં તથા સંવત્સરી પડિકમ્યાં પછી (વગર કારણે તેજ સ્થાનમાં રહેવા માટે) જઘન્યે (યોજામાં યોજા) ૭૦ દિવસ પાછળ રહેવા જોઈએ, † કારણ વિશેષે અધિક દિવસ પણ રહેવાય, કાર્તિક ચોમાસું કાર્તિક માસના અંતે કરવાનું છટૂઠા અંગ સૂત્ર શ્રીજ્ઞાતાઘર્મકથાંગમાં ચોથા અધ્યયને શૈલક-પંથક સાધુના વર્ણન પ્રસંગે નામ લખને લખ્યું છે, ‡ લોક

જોગ એની એ ચૂલિકાઓના એ દિવસ ગણિને જે પંદર દિવસના કરાય છે તેના બદલે તેર દિવસનાજ કરાવવા જોઈએ અને આચારાંગનો ખીજો શ્રુતસ્કંધ આખોય ચૂલિકા૩૫ હોવાથી તેના જોગ પચાસ દિવસ ન વહેતાં માત્ર ૨૪ દિવસજ વહેવા જોઈએ, એનો વિચાર કરવો.

† જેમકે ખરતર ગચ્છ વિભૂષણ નવાંગવૃત્તિકારક આચાર્ય શ્રીઅભયદેવસૂરિજી હાણાંગસૂત્ર પાંચમા હાણાની ટીકામાં લખે છે કે—“इय सत्तरिजहण्णा, असिईनउईवीसुत्तरसयं च । जइ वाममगसिरे, इसराया तिणिण उक्कोसा ॥१॥ (मासमित्यर्थः)। काऊण मासकप्पं, तत्थेव ठियाण तीतमगसिरे । सालंबण्णाण छम्मा-सिओ उजिद्वो-ग्गहो होइत्ति ॥२॥” હાણાંગવૃત્તિમાં ઉધ્ધૃત કરેલ કલ્પનિયુક્તિની આ બંને ગાથાઓમાં શ્રુતકેવલી આચાર્ય શ્રીભદ્રપાહુસ્વામી સંવત્સરી પછી કા. ચોમાસી ૭૦ દિવસે અવશ્ય કરવાનું નહીં, કિંતુ કા. ચોમાસી સુધી જઘન્યે ૭૦ દિવસ અને ઉત્કૃષ્ટે છ મહિના તે ક્ષેત્રમાં રહેવાનું સ્પષ્ટ કહે છે. તો શું સંવત્સરી બાદ ઉત્કૃષ્ટે છ મહિને કાં ચોમાસી કરવાનું જન્વાચાર્ય માનશે કે ?

‡ જુઓ આ રહ્યો તે પાઠ—“ ततेणं मे पंथए कत्तिय-चाउम्मासियंसि कयकाउस्सग्गे देवसियं पडिक्कमणं पडिक्कंते चाउ-

વ્યવહારે દીવાળીથી ૧૫ દિવસે કાર્તિકી પૂર્ણિમા થાય, (તેમ) શ્રીમહાવીર

મ્મામિયં પઢિક્કમિઝં કામે સેલયં રાયરિસિં સ્વામણદ્ઢય'ણ સીસેણ
પાણસુ સંઘદ્દેહ' ।” (જ્ઞાતા સૂત્ર પાના ૧૧૨.)

આ પાઠમાં કાર્તિક ચોમાસું કહેલ હોવાથી કાર્તિક મહિનો જ્યાં મળી આવે ત્યાં ચોમાસી પ્રતિક્રમણ કરવાનું, પરંતુ કાર્તિક બે થતાં પહેલા કાર્તિકમાં ચોમાસી પડિકમતાં શાસ્ત્રની કંઈ આજ્ઞાને બાધ આવે છે ? તે તો જંબવાચાર્ય બતાવી આપે, શાસ્ત્રમાં પળુસણની માફક ચોમાસી પડિકમવા માટે પણ દિવસ ગણતરી જે બતાવી હોત તો જંબવાચાર્યના કહ્યા મુજબ બીજા આસોમાં પણ ચોમાસી પ્રતિક્રમણ કરી શકતે, પરંતુ તેમ છેજ નહીં, પળુસણ શિવાયના બધાય પર્વો માસ અને તિથિઓથી નિયમિત છે. એથી પહેલા કાર્તિકમાં જ્યારે મહિનો કાર્તિક મળી રહે છે ત્યારે બીજા માસનો આગ્રહ પકડીને સદાકાળથી ચાલી આવેલ ચાર માસનું વર્ષાકલ્પ માન-વાની સિદ્ધાંત પ્રણાલિકામાં વગર કારણે શા માટે કુદારાધાત કરાય છે ? હાં શ્રાવણાદિ ત્રણ માસની વૃદ્ધિ થતાં તો જે અનિચ્છાએ પાંચ માસનો વર્ષાકલ્પ કરવો પડે છે તે અશક્યતાની વાત છે, કારણ કે ગમે તેવા પ્રતિકૂલ સંયોગોમાં પણ આસોમાં ચોમાસી પડિકમવાનું શાસ્ત્રકાર કહેતા નથી, એટલેજતો વાચના૦ વિવેકસમુદ્રકૃત પુણ્યસારકથાની પ્રશસ્તિગત

“ વર્ષે ત્રયોદશશતે ચતુરુત્તરે ચ, ત્રિંશત્તમે' (૧૩૩૪)
પ્રથમકાર્તિકપર્ણિમાયામ્ । શ્રાગ્વાચનાગણિવિવેકસમુદ્રેતાં, ચિત્રાં
કથાં વ્યધિત જેસલમેરુદુર્ગે ॥૩૪૧॥ ”

પ્રભુનો મોક્ષ કલ્યાણક કાર્તિકની અમાસે થાય, તેથી ૧૫ દિવસે

આ શ્લોકના આધારે વિ. સં. (૧૩૩૪)માં જ્યારે એ કાર્તિક થયા હતા તે વર્ષે ભીમપલ્લી (વર્તમાન ભીલડીય તીર્થ)માં ચોમાસું રહેલ તપાઓના પરમમાન્ય પૂર્વાચાર્ય શ્રીસોમપ્રભસૂરિએ પહેલા કાર્તિકમાં ચોમાસી પ્રતિક્રમણ કયું હતું, જેનો ઉલ્લેખ ખુદ મુનિસુંદરસૂરિએ અને ધર્મસાગરે પોતપોતાની પટ્ટાવલીમાં આ પ્રમાણ કરેલ છે—
‘શ્રુતાતિશાયી પુરિભીમપલ્લ્યાં, વર્ષાસુ ચાચેऽપિ હિ કાર્તિકેઽસૌ ।
અગાત્પ્રતિક્રમ્ય વિબુઞ્ચમાવિ-ભઙ્ગં પરૈકાદશસૂર્યબુદ્ધમ્ ॥૧૬૩॥

(ગુર્વાવલી મુનિસુંદરસૂરિકૃત)

“ તથા ભીમપલ્લ્યાં કાર્તિકે દ્વયે પ્રથમ એવ કાર્તિકે એકા-
દશાન્યપક્ષીયાઽઽચાર્યાઽવિજ્ઞાતં માવિનં ભંગં વિજ્ઞાય ચતુર્માસિં
પ્રતિક્રમ્ય વિહત્વન્તઃ । ” (ધર્મસાગરીય તપગચ્છ પટ્ટાવલીવૃત્તિ)

અહિં જે લોકો કહે છે કે—‘આતો તે નગરીનો ભંગ થવાનો હતો. એટલે તેઓને આમ પહેલા કાર્તિકમાં ચોમાસી પ્રતિક્રમવાની ફરજ પડી હતી’ આ તે એમનો ખોટો ખયાલ છે, કારણ કે ગમે તેવા સંયોગોમાં પણ પોતાની માન્યતાથી વિરુદ્ધ વર્તન કાઢીએ નજ કરી શકાય. એથી જો તેઓશ્રીની માન્યતાખીન કાર્તિકમાં ચોમાસી કરવાની હોત તો તેઓ વિહાર કરી જતે, પણ ચોમાસી પ્રતિક્રમણ નજ કરતે, આજના સાધુઓ પણ પ્લેગ આદિના કારણે ચોમાસામાં ઘણાય વિહાર કરે છે, તો શું તેઓ ચોમાસી પ્રતિક્રમીનેજ કરે છે ? નહીં, વગર પ્રતિક્રમ્યેય વિહાર કરે છે. એટલે આચાર્ય સોમપ્રભસૂરિએ ચોમાસી પ્રતિક્રમીને જે વિહાર કર્યો એથી સાખીત થયું કે એમની માન્યતાજ

કાર્તિક ચોમાસું થાય, વહી જ્યારે અધિક માસના યોગે આપાદ

પહેલા કાર્તિકમાં ચોમાસી પ્રતિક્રમવાની હતી, પણ પાછળના ધર્મ-સાગર જેવા આગ્રહી તપાઓએ બીજા ભાદરવામાં પશુસણ કરવાના આગ્રહને પોષવા ખાતરજ આ પ્રાચીન પ્રણાલિકાને બદલી છે. એ એમના ધરનો આચાર છે.

પહેલા ફાગણમાં અને પહેલા આપાદમાં તો ચોમાસી પ્રતિક્રમણ ત્યારે કરી શકાત કે જ્યારે શાસ્ત્રકારોએ ૧૨૦ દિવસ ઉપરાંત ચોમાસી પ્રતિક્રમણ કરવાનો નિષેધ કર્યો હોત, પરંતુ તે તો છેજ નહીં, જૈન પંચાંગોની હયાતીમાં પણ શીયાળા-ઉન્હાળાની ચોમાસીઓ પાંચ મહિને થતીજ હતી, પરંતુ વર્ષાઋતુની ચોમાસી તે સમયે ચાર માસે કાર્તિકમાં થતી હતી, એટલે પહેલા કાર્તિકમાં કાર્તિક માસ મળી રહેલા છતાં બીજા કાર્તિકમાં ચોમાસી પ્રતિક્રમવી એ તપાના ધરનો આચાર છે.

બીજા ફાગણમાં કે આપાદમાં ચોમાસી પ્રતિક્રમણ કરવાથી ‘પહેલો માસ ગણત્રીમાં નથી’ એવી માન્યતા તો શાસ્ત્રકારોની નહીં પણ તપાના ગમ્પપુરાણનીજ છે. શાસ્ત્રકારોતો પશુસણની દિવસ ગણનામાં પણ અધિકમાસને ભેગો લઈનેજ પચાસ દિવસની પૂર્તિ કરે છે, જુઓ—

“જ(इ)ति अधिमासगो पडितो तो वीसतिरायं गिहिणांतं ए कज्जति, किं कारणं ? एत्थ अधिमासगो चेव मासो गणिज्जति, सो वीसाए समं सवीसतिरातो मासो भण्णति चेव ।”

(બૃહત્કલ્પસૂત્ર ૩ જે ઉદ્દેશો)

તેમજ “સીસો પુચ્છતિ-કમ્હા અભિવદ્ધિયવરિસે વીસતિરાતં ચંદવરિસે સવીસતિમાસો ? ઉચ્યતે-જમ્હા અભિવદ્ધિયવરિસે

એમાસાથી વીસ દીવસે પળુસણ કરતા ત્યારે સાધુઓ પળુસણથી

ગિમ્હે કેવ સો માસો અતિક્રંતો તમ્હા વીસદિણા, ઇયરેસુ તિસુ
ચંદવરિસેસુ સવીમતિમાસો । ” (નિશીથયૂર્ણિ ૧૦મો ઉદ્દેશો)

એથી સ્પષ્ટતયા સિદ્ધ થયું કે અધિકમાસને ગણત્રીમાં નહી
લેવાનું કથન જૈન સિધ્ધાંતકારોનું નહીં પણ તપાઓના ગંપપુરાણનું
હોવાના અંગે એ એમનાં ધરતો આચાર છે. ખીજું જૈન શાસ્ત્રોના
અભિપ્રાયानુસાર અધિકમાસ પણ પહેલો કે વચ્ચલો નહીં પણ ખીજોજ
હોય શકે, જુઓ—

“અદિરિત્તા અહિગમાસા-ટી૦-‘અતિરિક્તા’ ઉચિતકાલાત્મ-
મધિકાઃ અધિકમાસકાઃ પ્રતીતાઃ” (દશવૈ૦ નિ. તથા ટીકા હરિ૦કૃત)

આ પાઠમાં શ્રીભદ્રબાહુસ્વામી તેમ હરિ૦સૂરિ કહે છે કે-‘ઉચિતકાલ
જે આવણ બાદ આવેલ પહેલો ભાદરવો. તેનાથી જે અધિક ખીજો
ભાદરવો તેજ અધિકમાસ કહેવાય’. એથી સ્પષ્ટ થયું કે પહેલો ભાદરવો
અધિક નથી, પણ સ્વાભાવિક છે. એવીજ રીતે—

“સદ્વિષ્ણુ અદ્યયાપ, હવદ્દહુ અધિમાસગો જુગદ્દમ્મિ । બાવીસે
પવ્વસણ, હવદ્દ વીઓ જુગંતમ્મિ ॥૧॥ વૃત્તિઃ- એકસ્મિન્ યુગે
પ્રાગ્વ્યાવર્ણિતસ્વરૂપે પક્ષાણાં પષ્ટાવતીતાયાં-ષષ્ઠિસંખ્યેષુ પક્ષેષ્વતિ-
ક્રાન્તેષ્વિત્યર્થઃ, એતસ્મિન્નવસરે યુગાર્દ્ધપ્રમાણે એકોઽધિકમાસો ભવતિ ।
દ્વિતીયસ્ત્વધિકમાસકશ્ચાન્દ્રે દ્વાવિંશત્યધિકે ‘પર્વશતે’ પક્ષશતેઽતિક્રાન્તે
‘યુગસ્યાન્તે’ યુગસ્ય પર્યવસાને ભવતિ ।” (જ્યોતિકરંડક પચત્રા ટીકા)

આ પાઠમાં પણ સ્પષ્ટ કહેવાયું છે કે-‘આવણ(યુગ અશાડ)વદ
૧ મથી શરૂ થતા પાંચ વર્ષના યુગમાં સાઠ પક્ષો વીત્યા પછી યુગના

૧૦૦ દિવસે કાર્તિક ચોમાસી કરતા કે ન કરતા ? તો પછી ૭૦ -

અડધા ભાગમાં પહેલો અને એકસો આવીસ પક્ષ વીત્યા બાદ યુગના અંતે ખીજે અધિકમાસ થાય' એથીય શાસ્ત્રકારોએ ખીજા માસનેજ અધિક માન્યો છે, કારણ કે સાઠ અને એકસો આવીસ પક્ષો વીત્યા ત્યારેજ કહેવાય કે જ્યારે પહેલો પોસ અને આપાઢ વીતી જાય, અર્થાત્ પહેલો પોસ કે આપાઢ વીત્યા પહેલાં સાઠ અને એકસો આવીસ પક્ષ વીત્યા કોઈ પણ રીતે ન કહી શકાય.

આ પ્રસંગે 'સેનેપ્રશ્ન'ના બે પ્રશ્નોત્તરો વિચારણીય હોવાના અંગે ઉપ્ધૃત કરીએ છીએ -

“ચૈત્રમાસવૃદ્ધૌ કલ્યાણકાદિતપઃ પ્રથમે દ્વિતીયે વા માસિ કાર્યતે ? इति प्रश्नोऽत्रोत्तरं—प्रथमचैत्रासितद्वितीयचैत्रासितपक्षाभ्यां चैत्रमाससम्बद्धकल्याणकादितपः श्रीतातपादैः कार्यमाणं दृष्टिमस्ति, तेन तथैव कार्यमन्यथा भाद्रपदवृद्धौ मासक्षपणादितपांसि कुत्र क्रियंत ? इति ११७ । उ० ३ ।” (સેનપ્રશ્ન પત્ર ૫૯)

આ પ્રશ્નોત્તરમાં પ્રશ્નકર્તાએ પૂછ્યું છે કે—“ ચૈત્રમાસની વૃદ્ધિ થતાં કલ્યાણકાદિ તપ પહેલામાં કરવું કે ખીજામાં ? ” ઉત્તરમાં આઠ વિજયસેન સૂરિ ફરમાવે છે કે “ ચૈત્રમાસ સંબંધી કલ્યાણકાદિ તપ-સ્યાઓ પહેલા ચૈત્રવદમાં, ને ખીજા ચૈત્રસુદમાં કરાવતાં ગુરુદેવોને જોયા છે, એટલે તેમજ કરાવવું, અન્યથા (એમ ન કરાય તો) ભાદરવાની વૃદ્ધિ થતાં માસખમણાદિ તપસ્યાઓ ક્યાં કરાય ? ” આમાં પહેલાં તો વિચારવાનું એ કે—આચાર્યશ્રીનું આ ઉત્તર કયા મહિનાના હિસાબે છે ? અમારી વિચાર ધારાએ જ્યાં સુધી જણાયું છે ત્યાં સુધી આચાર્ય.

દિવસથી અધિક દિવસ તેજ ક્ષેત્રમાં સાધુઓ રહેતાજ. આ રીતે અહિં

શ્રીનું આ ઉત્તર ગુજરાત આદિમાં પ્રચલિત અમાસીયા મહિનાના હિસાબે નહીં પણ સિદ્ધાંતોક્ત પૂનમીયા માસના હિસાબે છે, જેમકે ભગવાન ઋષભદેવ સ્વામીનું દીક્ષા કલ્યાણુક ચૈત્ર વદ ૮ મનું છે તે પહેલા ચૈત્રવદમાં અને મહાવીર પ્રભુનું જન્મ કલ્યાણુક તથા નવપદની ઓળી ખીજ ચૈત્ર સુદમાં કરવાં. આ પ્રણાલિકા પ્રાયે બધાયે ગચ્છોમાં છે, એથી વચ્ચે માસ (પહેલા ચૈત્રનો સુદ અને ખીજ ચૈત્રનો વદ ગણત્રીમાંથી કાઢી નાખ્યો છે, એમ માનવાને કાંઈ કારણ નથી, પણ ‘દેશગ્રહણે સર્વગ્રહણં’ એ ન્યાયાનુસાર બન્ને માસને ગણત્રીમાં રાખવા માટેજ સર્વસંમત પ્રાચીન આચાર્યોએ આ ઉચિત પ્રણાલિકા સ્વીકારી છે.

હવે એથી આગળ આચાર્યશ્રીનું જે કથન છે કે—“અન્યથા (ચૈત્ર માસના કલ્યાણુકાદિ તપ જે પહેલા ચૈત્રવદમાં, ને ખીજ ચૈત્ર સુદમાં કરવાનું ન માનીયે તો) ભાદરવાની વૃદ્ધિ થતાં માસખમણાદિ તપસ્યાઓ ક્યાં કરાય ? ” એના ઉપર ટુંક વિચાર કરિએ, આચાર્યશ્રીએ પ્રશ્નકર્તાના પ્રશ્નનો ઉત્તર આપવા ઉપરાંત આ વિશેષતાનું કથન શા અભિપ્રાયથી કર્યું છે ? તે કાંઈ સમજાતું નથી, શું કલ્યાણુકાદિ ખીજ તપોની માફકજ માસખમણ પણ કરાવવાનું આશય છે ? જે એમજ હોય તો તો આચાર્યશ્રીના અભિપ્રાયानુસાર માસખમણ કરવાની ભાવના-વાળાએ સદાની માફક શ્રાવણ સુદથી સર કરીને પહેલા ભાદરવા (ગુ. શ્રાવણ) વદ અમાસસુધી ઉપવાસ કરીને બાકી રહેતા ચાર કે પાંચ ઉપવાસો ખીજ ભાદરવા સુદ ૧ મથી સંવચ્છરી સુધીમાં કરી માસખમણની પૂર્ણતા કરવી જોઈએ, એમ ક્યાં શિવાય કલ્યાણુકાદિ

ઘણી વિચારણા છે, કેટલી યુક્તિઓ લખીયે ? સામાસામી મલ્યાં બધી

તપની સાથે સરખામણી થઈ શકે નહીં, તો શું આ રીતે માસખમણ કરવાની આજ્ઞા આચાર્યશ્રી ફરમાવે છે ? એ વાતનું ઉત્તર જાણવાચાર્ય જાહેર કરે. જે આવી આજ્ઞા આચાર્યશ્રીએ ઉપરોક્ત પ્રશ્નોત્તરમાં આપી હોય તો તે તપાગચ્છાચાર્યેનેજ શે.ભે.

હવે બીજા પ્રશ્નોત્તરને લઈએ તે આ પ્રમાણે છે -

“દેવકમાસિ કલ્યાણકાનિ પૂર્વે પાશ્ચાત્યે વા માસિ ક્રિયન્તે ? કેચન પરપાક્તિકા વદન્તિ-પ્રથમશ્રાવણકૃષ્ણપક્ષે દ્વિતીયશ્રાવણશુક્લ પક્ષે ચ કલ્યાણકતપો વિધીયતે, તત્સદ્ગતં વિતથં વેતિ પ્રશ્નોડોત્તરં-દેવકમાસાપેક્ષ્યા વૃદ્ધિપ્રાપ્તં માસં વિમુચ્ય કલ્યાણકતપઃકરણં યુક્તિમદિતિ ૧૫૧. ૧. ૧.” (ઉ૦ ૩ સેનપ્રશ્ન પાના ૬૩)

આમાં પ્રશ્ન કરનાર પૂછે છે કે “દેવક(અધિક)માસના પ્રસંગે કલ્યાણકો પહેલા માસમાં કરવા કે બીજામાં ? કેટલાક પરપક્ષવાળાઓ કહે છે કે-પહેલા શ્રાવણ વદમાં, ને બીજા શ્રાવણ સુદમાં કલ્યાણક તપ કરવું, તે યથાર્થ છે કે અયથાર્થ ?” ઓના ઉત્તરમાં આ૦ વિજયસેન સૂરિ કથે છે કે “દેવક (અધિક) માસની અપેક્ષાએ વૃદ્ધિ પ્રાપ્ત (વધેલા-અધિક) માસને છોડીને કલ્યાણક તપ કરવું યુક્તિયુક્ત છે.”

આમાં વિચારવું એ છે કે જ્યારે આચાર્યશ્રી વૃદ્ધિ પ્રાપ્ત (અધિક) માસને છોડીને કલ્યાણક તપ કરવું યુક્તિયુક્ત કહે છે, ત્યારે એ તો સ્પષ્ટ બતાવવું હતું કે અધિક માસ કયો માનવો ? પહેલો કે બીજો ? શાસ્ત્રકારો તો પહેલાને કે વચલાને નહીં પણ પહેલાં બતાવ્યા મુજબ જ્યોતિષકરંડક તથા દશવૈકલિક ટીકાના કથનાનુસાર બીજોજ માસ અધિક કહે છે.

યુક્તિએ કહેવાય, પણ સર્વ યુક્તિએ લખી ન શકાય, તમે ગ્રહ્યા છે, આટલું લખ્યું પૂછશે, પહેલાના પ્રશ્નોત્તરમાં એ યુક્તિએ લખી છે, બેબે.

(તપા ખરતર ભેદ ગ્રંથ ૧ બોલ ૫૪, ગ્રંથ ૨ બોલ ૫૬ મે)

૫૩ પ્રશ્ન—તથા સ્વરતરાંરૂ વીની તિથિ તૂટતાં તે તિથિના પચ્ચક્ષ્ણ પાછિલી તિથિમાંહિ કરઈ, ચવદિસિ તૂટતાં ચવદિસિ ના પચ્ચક્ષ્ણ પાછિલી તિથિ તેરમિહં ન કરઈ, તે સ્યું ?

આપા:-ખરતરોને બીજી તિથિ તૂટતાં તે તિથિના પચ્ચક્ષ્ણ પાછળની તિથિમાં કરે છે, બ્યારે ચઉદસ તૂટતાં ચઉદસનાં પચ્ચક્ષ્ણ પાછળની તિથિ તેરસમાં નથી કરતા. તે શું ?

તત્રાર્થે—સ્વરતર ગચ્છિ ચવદિસિ તિથિ તૂટતાં ચવદિસિના જે પચ્ચક્ષ્ણ હરિકાયના વિગઈ લેવાના બ્રહ્મવ્રતના પચ્ચક્ષ્ણ કર્યા હતા તે સર્વ તેરસિજિ પાલઈ, કલ્યાણકતિથિના ઉપવાસ વલી જાવજીવના જે પચ્ચક્ષ્ણ તે તેરસિહં પાલઈજિ છઈ, પાસી સમ્બન્ધી જે પચ્ચક્ષ્ણ છઈ તે ચવદિસિ તૂટતાં આગમોક્ત પાસી પૂર્ણિમા અથવા અમાવસ્યાયઈ કરિયઈ, પાસીના પોસહ પાસીના પઢિકમણા તે પૂર્ણિમા અમાવાસ્યાઈ કરઈ, ચવદિસિ જે પાસી કરિયઈ છઈ તે આચાર્યાની આચરણા છઈ, તે ભણી આચરણાની પાસી ગયાં થકાં સ્વરતરાંરૂ આગમોક્ત લ્યઈ, અનઈ જઈ આચરણાની પાસી ચવદિસિ તિથિ ઉદીક હુવઈ તઉ ૧૫ તિથિહં પાસી પઢિકમણા ન કીજઈ, જેહ ભણી આગમ તિથિ

એટલે અધિક માસની સ્પષ્ટતા કર્યા વગરજ ‘ અધિક માસને છોડીને કરવું યુક્તિયુક્ત છે ’ એમ બે કહેવું તે કાંઈ ઉત્તર કહેવાય ? નજ કહેવાય ?

થકી આચરણા તિથિ બલવંત છઠ્ઠ, પોસહ લેવા મળી ચવદિસિ તથા પનરસી તિથિ એ બેડં તિથિ પર્વ છઠ્ઠ, પોસહ કરતાં લાભ છઠ્ઠ, પરં પાક્ષી પઠિકમણ્ડ ૧૫ કરિવડ. પરં ૧૩ ન કરિવડં, ચવદિસિ તૂટતાં ૧૩ તિથિ પિણ પર્વ થાઈ, જિમ આઠમિ તૂટતાં સાતમિ પર્વ થાઈતિમ, શ્રીઠાણા ગ્રન્થમાંહિ, તપાગચ્છના આચાર્યના કીધા વિચારામૃતસંગ્રહ ગ્રન્થમાંહિ “ પક્ષિલ્યાઈણિ ચડહસીએ આયરિયાણિ, અન્નદા આગમુત્તાણિ પુણિમાએ ” એહ ગ્રન્થનહ અનુસારિ તપાનંડ પુણિ ૧૪ તિથિહ પાક્ષી આચીર્ણ લિખી છઠ્ઠ, ૧૫ પાક્ષી આગમોક્ત છઠ્ઠ, એવં પુછ્છિજ્યો, જેહ દર્શનીની પ્રતીતિ તુમ્હનહ હુવઈ તેહનહ પૂછ્છેજ્યો, મતાનુરાગી ન (હો)હ, જોઈ પૂછ્છેજ્યો, વલી શ્રીજિનપ્રભસૂરિં શ્રીવિધિપ્રપાગ્રન્થમાંહિ લિખ્યડ છઠ્ઠ જે ચડમામાની ચવદિસિ તૂટતાં ચડમાસી પૂનિમઈ કીજઈ, એ ભાવ ઇહાં જોઈવડ ॥૫૩॥

ભાષા:—ખરતર ગચ્છમાં ચઉદસ તૂટતાં ચઉદસના જે પચ્ચક્ષ્ણાણુ લીલોતરી તથા વિગયાદિ ત્યાગ તેમ બ્રહ્મચર્ય પાલનાદિ હોય તે બધા તેરસનાજ પાલે. કલ્યાણુક તપ આદિ તથા જીવજીવના જે પચ્ચક્ષ્ણાણુ તે પણ તેરસનાજ પાલે, કિંતુ પાખી સંબંધી જે પચ્ચક્ષ્ણાણુ છે તે ચઉદસ તૂટતાં આગમોક્ત પૂર્ણિમા તથા અમાવાસ્યા પર્વતિથિએ કરે છે, પાખીનું પોસહ તેમ પડિકમણું પૂર્ણિમા અમાવાસ્યાએ કરે છે, કારણ કે ચઉદસે જે પાખી કરીએ છીએ તે આચાર્યોની આચરણા છે, માટે આચરણાની પાખી ન મળતાં ખરતરોને આગમોક્ત દિએ છે, અને જે આચરણાની પાખી ચઉદસ તિથિ ઉદયની હોય તો પૂનમ. અમાવાસ્યાએ પાખી પડિકમણું નથી કરતા, કારણ કે—

આગમતિથિ કરતાં આચરણા તિથિ બલવાન છે, પોસહ લેવાને ચઉદસ તથા પનરસિ. એ બેઉં પર્વતિથિ છે, પોસહ કરતાં લાભ છે પરંતુ પાખી પડિકમણું (ઔદયિક ચઉદસ ન હોય તો) પૂનમ-અમાવાસ્યાએ કરવું પણ તેરસે ન કરવું. જેમ આદમ તૂટતાં સાતમ પર્વ થાય તેમ ચઉદસ તૂટતાં તેરસ પણ પર્વતિથિ થાય (પરંતુ પાખી પડિકમણું તેરસે ન થાય, કલિકાલસર્વજ્ઞાચાર્ય શ્રીહેમચંદ્રાચાર્યના ગુરૂ આઠ દેવચ દ્ર સૂરિરચિત) ‘શાણુ’ ગ્રંથમાં (તેમ) તપાગચ્છના (આચાર્ય શ્રીકુલમંડન સૂરિરચિત) ‘વિચારામૃતસંગ્રહ’ ગ્રંથમાં લખ્યું છે કે ‘પાખી આદિ ચઉદસે આચર્યા છે, અન્યથા આગમમાં પૂર્ણિમા-અમાવાસ્યાએ કહેલ છે” આ ગ્રંથના ઉપરોક્ત કથનાનુસાર તપાને પણ ચઉદસે પાખી આચરણાની છે, પૂનમ-અમાવાસ્યાએ આગમોક્ત છે. + આ સત્ય હકીકત છે.

+ તપાઓની માન્યતા મુજબ જે સદાકાળથીય પાખી ૧૪ નીજ નિયત શાસ્ત્રસંમત હોત તો આ ગ્રંથના (પૃ. ૬૮) ઉપર ૧૩ મા પ્રશ્નોત્તરની ટિપ્પણમાં દર્શાવ્યા મુજબ પાયચંદ્રગચ્છવાળાઓએ પૂછેલા ‘પાખી આદિ પડિકમણાઓ પચીસ કે અઠાવીસ ?’ આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં આચાર્ય શ્રીહીરવિજય સૂરિએ બેધડક થઇ નિશ્ચિત સંખ્યા ન બતાવતાં ‘શાસ્ત્રોમાં પડિકમણા તો પાંચ સાંભળ્યા છે’ એમ કહીને પ્રશ્નકારના ખાસ આશયને ઉગ્રવી કેમ દીધો ? એનો ઉત્તરતો જન્મવાચાર્ય આપે.

ખીજું ચંદ્ર પંચાંગમાં ચૌદસ બે થતાં સંપૂર્ણ અહોરાત્રિ ૬૦ ઘડીની પડતી ચૌદસને રામપંચિઓ ફલગુ કહીને અને સાગરાનુયાયિઓ તેરસ માનીને-કહીને ગૃહસ્થોને લીલવણીના છેદન-ભેદનાદિ તથા અશ્વલ-સેવનાદિના ત્યાગમાટે નહીં, પણ તેની પ્રવૃત્તિ માટે એક દિવસની વૃદ્ધિ

નમને જે સાધૂની પ્રતીતિ હોય તેને પૂછજ્ઞે, (પણ તે) મતાનુગતી ન હોય(એ) જોઈને પૂછજ્ઞે, વલી શ્રીજિનપ્રભ સૂરિએ ‘વિધિપ્રપા’ ગ્રંથમાં લખ્યું છે કે-ચોમાસાની ચઉદસ તૂટે તો ચોમાસી (પ્રતિક્રમાણુ) પૂર્ણિમાએ કરવું. એ સારાંશ અહિં જોવાનું.

કરી આપવા દ્વારા જેમ વિરાધે છે તેમ ખરતર ગચ્છવાળા વિરાધના તો નથી, તેઓ ચૌદસના દાયે સૂર્યોદયની તેરસના દિવસે આગમ કે આચરણા. એકેના હિસાબે પાખીનું સ્થાન ન હોવાના અંગે પાખી પડિક્રમાણું અને ખાસ પાખી અંગેના પચ્ચક્ષ્ણાણુ આદિ નથી કરતા. પણ ચૌદસ તિથિ નિમિત્તના વ્રત નિયમાદિ તથા પચ્ચક્ષ્ણાણુ વિગેરેનો નિષેધ તો નથીજ કરતા.

જૈન સિદ્ધાંતાનુસાર દરેક મહિને થતી અપર્વ તિથિઓ ૧૮ ના અહલે ભલે ૧૯ થઈ જાય. લીલવણીના છેદનભેદનાદિ માટે ભલે એક દિવસની વૃદ્ધિ થાય, પરંતુ ગૃહસ્થોને લીલવણી છેદનભેદનના કે અશ્વત્થ-સેવનના ત્યાગમાટે પર્વતિથિઓ ૧૨ ના અહલે ૧૩ નજ થવી જોઈએ, આવો ધર્મોપદેશ (?) તપાઓ શિવાય કોણ આપી શકે ? વાહ જન્મવા-ચાર્યજી ! ધન્ય છે તમારી અગમપ્રજ્ઞતાને અને પુનઃ પુનઃ ધન્યવાદ છે તમારા અને તમારા વડવડાઓના એવા ધર્મોપદેશ (?) ને.

તપા ખૃં ભેદ પૃં ૪૭ માં લખે છે કે-“ તત્ત્વાર્થભાષ્યમાં માસ તથા તિથિ વધે તો ખીજી લેવી કહ્યું છે, તે માટે તપા તેમજ લે છે ” એટલે પૂછવાનું કે તત્ત્વાર્થભાષ્યમાં જો ખીજી તિથિ વિગેરે લેવાનું કહ્યું છે તો તે પ્રમાણ પાઠ કેમ ન આપ્યો ? મહાશયજી ! શાસ્ત્ર પ્રમાણુ વગર મોંઢાના ગપ્પાઓનું વિદ્વત્સમાજમાં કાંઈએ મૂલ્ય નથી

(તપા ખરતર ભેદ ગ્રંથ ૧ ખોલ ૫૫, ગ્રંથ ૨ ખોલ ૮-૫૮ મો)

૫૪ પ્રશ્ન—તથા સ્વરતરાંનહ ૧૪ ઘટતાં જિમ પાચ્વી ૧૫ કરીયહ તિમજિ આઠમિ તિથિ ઘટતાં કલ્યાણકનહ મેલિ-યોગિ પર્વતિથિ ભણી નવમી તિથિહ ન ના પોસહ કાંહ ન કીજહ ? ।

ભાષા:—ખરતરોને ચઉદસ ઘટતાં જેમ પાખી પૂનમે કરાય છે. તેમજ આઠમ ઘટતાં કલ્યાણકના યોગે પર્વતિથિ હોવાથી નવમીએ અષ્ટમીના પોસહ કેમ નથી કરતા ?

તત્રાર્થે—પહિલી આગમનહ અમિપ્રાયહ ૧૫ પાચ્વી હતી. તેહ ભણી ૧૪ તૂટતાં ૧૫ પાચ્વી કીજહ, પરં ૧૫ ની પરિ કર્હયહિ આઠમિ તિથિ નવમિ તિથિહ ન હતી જે ન તૂટતાં આઠમીના કરણીય નવમિ તિથિહં કરહ, નવમિનહ કલ્યાણિકહ પોસહ કરતાં આઠમિ તથા કલ્યાણકના લાભ થાસ્યહ તિણહ આઠમિ પર્વ આરાધ્યાં નવમિના કલ્યાણક પુણિ આરાધ્યા, નવમિ તિથિ જે આરાધ્ય છહ તે કલ્યાણકનહ મેલિ છહ, ૧૫ તિથિ તે આરાધ્ય છહજિ, પરં ગીતાર્થે પાચ્વી ચડસહં આચરી તે ભણી આચરણાની તિથિજિ પ્રમાણ, આચરણા તિથિ તૂટતાં આગમોક્ત તિથિ પ્રમાણ કીજહ, જિમ પજૂસણાની ૪ તૂટતહ પાંચમિ પર્યુષણા પર્વ આરાધી-યહ, સ્વરતરાંનહ તિથિ વધતાં પહિલી પૂરી તિથિ આરાધ્ય છહ, દેવાનુપ્રિય ! હમે કહીયહ છહ—ન ઘટતાં આઠમિના કામ સાતમિ-માંહિ કીજહ પરં નવમીમાંહિ ન કીજહ, તથા ચવદિસિ તૂટતાં ચવદિસિના કામ ૧૩ દિનિ કીજહ, પરં પાચ્વીના કામ આચર-ણાની પાચ્વી ચવદિસિ તૂટતહ ૧૫ કીજહ, એવં પ્રીછિજ્યો ૫૪ ।

ભાષા:—પહેલાં આગમના અભિપ્રાયે પૂનમની પાખી હતી. તેથી ચૈદસ તૂટતાં (અમારે) પૂનમની પાખી કરે છે, પરંતુ પૂનમની પેરે આહમ તિથિ નોમમાં કયારેય નહોતી. + કે જેથી આહમ તૂટતાં આહમના કર્તવ્ય નોમમાં કરાય. નોમના કડ્યાણુકના અંગે પોસહ કરતાં આહમ તથા કડ્યાણુકના લાભ થશે. એથી આહમ પર્વ આરાધ્યાં નવમીના કડ્યાણુક પણ આરાધ્યા. નવમી તિથિ જે આરાધ્ય છે. તે કડ્યાણુકના

+ તપા ખ. ભેદ બન્ને ખોલ સંગ્રહોના લેખકો અને અનુવાદક પણ કેટલા ભારે બુધ્ધિશાળી અને વિચારવાનું છે? ક્યાં આહમ નોમ કે જેની સાથે ચૈદસ પૂનમની સરખામણી કરી રહ્યા છે, એટલું તો વિચારવું હતું કે પાખીના પોસહ જે હમણાં આવ્યરણુએ ચૈદસના કરાય છે, તે ચૈદસનો ક્ષય થતાં પૂનમ અમાસે કરાય, કારણકે પૂનમ અમાસ પાખીનું શાસ્ત્રોક્ત સ્થાન છે, પણ આહમનો પોસહ નોમમાં શા કારણથી કરાય? તેતો કહો શું આહમના પોસા નોમમાં કોઈ કાલેય થતા હતા! કડ્યાણુક પર્વને આરાધનાર તો જ્યારે આહમનો ક્ષય ન થયો હોય ત્યારે જેમ આહમ અને નોમ. બન્ને દિવસ પૌષ્ઠોપવાસ કરે તેમ આહમના ક્ષયે પણ સાતમ અને નોમ. બે દિવસ પોસહ કરે, પરંતુ જે કેવળ આહમ પર્વનો પોસહ કરતો હોય તેણે આહમના ક્ષય પ્રસંગે ઉદય આહમ ન મળતાં આહમના ભોગવટાવળી સાતમ છોડી નોમમાં કરવાનું કારણ શું? તે તો જન્વાચાર્યે બતાવવું હતું. તત્ત્વાર્થભાષ્યમાં માસ અને તિથિ બીજી લેવા કહ્યું છે તો તેનો તે પાઠ જન્વાચાર્ય બતાવે, અન્યથા આ રીતે ગ્રંથોના નામ મત્ર લખી મારવા એ આચાર્યને તો શું? સામાન્ય સાધુનેય ન શોભે.

અંગે છે. પૂનમ તિથિ તે આરાધ્ય છેજ પરંતુ ગીતાર્થાએ પાખી ચઉદસે આચરેલી તેથી આચરણની તિથિજ પ્રમાણ (મનાય), આચરણની તિથિ તૂટતાં આગમોક્ત તિથિ પ્રમાણ કરાય છે, જેમ કે પશૂસણની ચોથ તૂટતાં પાંચમે પર્યપણા પર્વ આરાધાય છે. અરતરોને તિથિ વધતાં પહેલી તિથિ કે જે સંપૂર્ણ ૬૦ ઘડી (દિવસ રાત્રિના પ્રમાણ)ની હોય છે, તે આરાધ્ય છે, દેવાનુપ્રિય ! એમ કહીએ છીએ કે-આદમ ઘટતાં આદમના કાર્યો સાતમમાં કરાય પરંતુ નોમમાં ન કરાય તથા ચઉદસ તૂટતાં ચઉદસ(તિથિ)ના કાર્યો (ઉપવાસાદિ) તેરસના દિવસે કરાય પણ પાખીના (પ્રતિક્રમણાદિ) કાર્ય આચરણની પાખી ચઉદસ તૂટતાં પૂનમે કરાય છે. આ હકીકત છે. પૂછી જોજો ।

(તથા અરતર ભેદ ગ્રંથ ૧ બોલ પદ્મ મો)

૫૫ પ્રશ્ન-તથા સ્વરતર ૮-૧૪-૧૫-૩૦ અનઈ કલ્યાણક તિથિહ પોસહ વ્રત લ્યઈ અનઈ વીજીએ તિથે પોસહ ન લ્યઈ તત્ત ઉપધાનના ૪૦ દિન પોસહ કરઈ, તે સ્યું ?

ભાષા-અરતર આદમ ચઉદસ. પૂનમ અમાસ અને કલ્યાણક તિથિએ પોસહ વ્રત લિએ છે. બીજી તિથિએ નથી લેતા તો ઉપાધાનમાં ૪૦ દિવસ (સુધી નિરંતર) પોસહ કરે છે. તે શું ?

તત્તાર્થે-૮-૧૪-૧૫-૩૦ ઇએ તિથે વિધિવાદહ પોસહ કરિવા શ્રાવકાંનઈ સિદ્ધાંતિ પ્રરૂપ્યા, ચરિતાનુવાદહ પુણિ શ્રાવકે ઇએજિ તિથે પોસહ વ્રત કીધા, તથા જીએ શ્રાવકે શ્રાવકની ઇગ્યારહ પ્રતિમા આદરી તેહનઈ પુણિ પોસહ ઇએજિ પર્વતિથે ભીગણધરે પ્રરૂપ્યા, શ્રીદશાશ્રુત તથા ઉપાસકદશાંગવૃત્તિ આવશ્યકવૃત્તિ-ચૂર્ણિ

प्रमुख ग्रन्थ जोज्यो, गीतार्थ गुरु पूछेज्यो, अनइ पर्व पखइ जे उपधान तपोविशेषमांहि पोसह करावीयइ छइ ते सहु आचार्य मम्मत पणइ १४ पाखीना पडिकमणानी परि आचरणाअइ करावीयइ छइ, सगला गच्छनी तपोविधिमांहि उपधाने पोसह कह्या, ते भणी निरविरोधीनी आचरणा सहू मानइ, पुणि किणई गच्छनइ आचार्यइ पर्व पखइ पोसह व्रत श्रावकनइ नथी लिख्या, तउ नित्य पोसह आचरणायइ किम मनाइ ? निरती नजर राखी विचारिज्यो । एवंकारइ व्रतरूप पोसह आगम ग्रन्थनइ अभि-
प्रायइ पर्वतिथइंजि श्रावक व्रतधारीनइ प्ररूप्यउ छइ, तथा भरत-
चक्रवर्तिइं तथा कृष्णवासुदेवइं तथा अभयकुमारइं तथा विजयराजायइं जे देवता साधिवानइ काजि लघुबांधवनइ काजि तथा मेघवर्षानइ काजि तथा विजलीना उपद्रव टालिवानइ काजि ३ तथा ७ दिन लगता पोसह कर्या शास्त्रे लिख्या ते पोसह व्रत रूप नथी किन्तु अभिग्रह विशेष रूप छइ, जे भणी भरत अने कृष्ण ते बेऊं अविरति ४ गुणठाणइ, तेहनइ पोसह सामायिक देशावकाशिक व्रत घटइ नहीं, अभयकुमारि वरसाति निमित्ति पूर्वसंगत देवतानइ आराधिवा निमित्ति देवताना ध्यान करतां पोसह कर्या कह्या, ते पोसह व्रत किम कहाइ ? वली जिम अठ्ठम एकठा कीधा तिम पोसह पुणि ३ एकठा ऊंचर्या हुस्यइ, पुणि ऋषिमतीयांनइ ३ पोसह एकठा न थाइ, अविधिइं पोसह लेतां देवता किम प्रसन्न थया ? ते भणी ए पोसह व्रत न थाइं, ए पोसह पांचमइ गुणठाणानउ न हुवइ, अठ्ठम पुणि पच्च-

ક્ષ્ણરૂપ ન સંભાવિયઈ કિન્તુ પોસહ શબ્દઈં ઇહાં અભિગ્રહરૂપ જાણીયઈ. પોસહમાંહિ સંસારાર્થિ ધ્યાન ગુણણ કરતાં તુમ્હે મિથ્યાત્વ જાણત છડજ, એ પુણિ પોતાની સદ્દહણા ચિતારિજ્યો, તથા વિજયરાજા વિજુલીનઈ ભયઈં ૭ દિન અભિગ્રહકરી સાતમઈ દિનઈ મધ્યાહ્નિ વિજુલી પૂતલા ઉપરિ પડ્યાં થકાં 'નમો અરિહં-તાણં' કહીનઈ પોસહસ્થાનકથી નીકલ્યા, ઇમ શ્રીવસુદેવહિણ્ડિમાંહિ સવિસ્તર કહ્યા છઈ, પરતિ કાઢીનઈ પાઠ વચાઈં જોજ્યો, એતલઈ જઈ વિજયરાજાયઈં સાત દિનના પોસહ પન્નચક્ષ્યા તડ સાતમઈ દિનઈ મધ્યાન્હિ પોસહ વિણ પાર્યાં કિમ પોસહસ્થાનકથી નીકલ્યા ? એહ સર્વ પાઠ વસુદેવહિંડિના પાઠ થકી જાણિવા ॥ ૫૫ ॥

ભાષા-વિધિવાદથી આરંભ ચઉદસ અને પૂનમ અભાસ. આ ચાર પર્વતિથિએ શ્રાવકને પોસહ કરવાનો શાસ્ત્રમાં વિધાન છે, ચરિતાનુવાદથી પણ શ્રાવકોએ એ ચાર પર્વતિથિઓએજ પોસહ કર્યા છે, તથા જેણે શ્રાવકની અગ્યાર પ્રતિમા વહન કરવી આદરી હોય તેને પણ આ ચાર પર્વતિથિએજ પોસહ કરવાનું ગણધરોએ કહ્યું છે. શ્રીદશશ્રુતસ્કંધ. ઉપાસકદશાંગ ટીકા. આવશ્યક વૃત્તિ (હારિભદ્રીયા તથા) ચૂર્ણિ આદિ ગ્રંથોને જોજો ગીતાર્થ ગુરૂને પૂછજો, અને ઉપધાનમાં + પર્વશિવાય

+ મહાતિશીય સૂત્રની અંદર ઉપધાનમાં પોસહ કરવાનું નથી કહ્યું છતાં તપા અને ખરતર. બન્ને ઉપધાનમાં પોસહ કરાવે છે, એને જો જાળ્યાચાર્ય ઉત્સૂત્ર માનતા હોય તો તેથી તપા ક્યાં છૂટી જવાના ? આવશ્યક વૃત્તિ. પંચાશક વૃત્તિ તથા ચૂર્ણિ વિગેરેમાં આહારાદિ ચારે પ્રકારનું પોસહ દેશથીને સર્વથી મળી ૮ પ્રકારે કરવાનું કહ્યું છે એ વાત તો

જે પોસહ કરાવીએ છીએ તે ચઉદસે પાખી પડિકમણાની માફક સર્વ સંમત આચાર્યોની આચરણાએ કરાવીએ છીએ. બધાએ ગમ્મોની

સોએ સો ટકા સાચી છે, પરંતુ આજના તપાઓ પોસહ દંડકમાં કેટલા પ્રકારનું પોસહ ઉચરે છે ? આનો તો વિચાર જગ્યાચાર્યે અને તેમના પૂર્વ લેખકોએ કરવું હતું, પોસહ દંડકમાં તો કેવળ આહાર પોસહજ દેશથી, ને સર્વથી. એમ બે પ્રકારે અને બાકીના ત્રણે પોસહ માત્ર સર્વથીજ ઉચરાય છે, તો આવશ્યક વૃત્તિ આદિમાં બતાવ્યા મુજબ ચારે પૌષ્ઠો દેશથી ને સર્વથી. એમ બન્ને પ્રકારે કેમ નથી ઉચરતા ? મહાનિશીથની અંદર ઉપધાનમાં નીવી, ને એકાસણું કરવાનું હોય તો તે પાઠ જગ્યાચાર્ય બતાવે.

પૌષ્ઠવિધિ પ્રકરણ ટીકા જિનવલ્લભ સૂરિની પોતાની રચેલી કોણે જોઇ હતી ? જગ્યાચાર્યે કે એમના ગુરુઓએ ? તેમ સંવત્ ૧૬૬૧ પાટણમાં નવી ટીકા એની કોણે રચી ? અને તે પ્રતિ ક્યાં ક્યાં ભંડારમાં છે ? શું જગ્યાચાર્યે કે એમના ગુરુઓએ ક્યાંએ જોઇ હતી ? પ્રિય પાઠકો ! પૌષ્ઠવિધિ પ્રકરણપર નથી તો આચાર્ય શ્રીજિનવલ્લભ સૂરિની પોતાની રચેલી વૃત્તિ કે નથી ૧૬૬૧ માં કોઇએ નવી ટીકા રચી, કિંતુ સંવત્ ૧૬૧૭ ના વર્ષે પાટણમાં યવન સમ્રાટ અકબરોપ-દેશક આષાઢીયાષ્ટાહિકા અમારી પ્રવર્ત્તાપક સમ્રાટ અકબરપ્રદત્ત યુગપ્રધાન પદધારક આચાર્ય શ્રીજિનચંદ્રસૂરિ રચિત એકજ ટીકા આજે અનેક જ્ઞાન-ભંડારોમાં ઉપલબ્ધ છે, એના શિવાય પૌષ્ઠવિધિ પ્રકરણ પર કોઇ પણ ટીકા આજ દિવસ સુધી કોઇએ રચેલ જોઇ તો શું ? પણ સાંભળીએ નથી. છતાં તપા ખરતરભેદ ૫૦ ૪૯ માં જે મનકાવતું લખ્યું છે તે કેવળ

‘પોસહ’ શબ્દથી અહિં અભિગ્રહ વિશેષજ્ઞ જાણવું. (ખીજી) પોસહમાં સંસારના નિમિત્તે ધ્યાન ગાણુ’ કંતાં તમે મિથ્યાત્વ જાણોજ છો. તે પોતાની માન્યતાને પણ સંભારજો. અને વિજયરાજ વિજળીના અયથી સાત દિવસ અભિગ્રહ કરીને (પૌષધશાળામાં રહ્યા, અને) સાતમા દિવસે મધ્યાન્હ સમયે પૂજા ઉપર વિજળી પડ્યા પછી ‘નમો અરિહંતાણુ’ કહીને પોસહ શાળામાંથી નીકળ્યા, એમ વસુદેવ હિંડીમાં વિસ્તારથી કહ્યું છે, પ્રતિ કાઢીને વચાવી જોજો, એટલે જો વિજયરાજએ સાત દિવસના પોસહ પચખ્યા (હતા) તો સાતમા દિવસના મધ્યાન્હે પોસહ પાર્યાવગર (કેવલ, ‘નમો અરિહંતાણુ’ કહીને બાહાર) કેમ નીકળ્યા ? આ અધું વિચાર વસુદેવહિંડીના પાઠથી જાણવું !

(તપા ખરતર ભેદ ગ્રંથ ૧ ઓલ ૫૭, ગ્રં. ૨ ઓલ ૫૯ મો)

૫૬ પ્રશ્ન તથા જે લિખ્યા જિકે ચતુઃપર્વી ટાલી વીજીએ તિથે પોસહ કરિવડ ન માનડ તે પજૂમણ તિથિ પોસહવ્રત કિમ કરિસ્યડ ?

ભાષા:—જે લખ્યું કે જોએ અષ્ટમ્યાદિ ચતુઃપર્વી શિવાય ખીજી તિથિએ પોસહ કરવાનું નથી માનતા તેઓ પગ્ગૂસણની તિથિએ પોસહ કેમ કરશે ?

તત્રાર્થે—શ્રીનવપદપ્રકરણવૃત્તૌ (પત્ર ૧૭૦) “ કાયઢ્વો સો નિયમા, અઢ્ઢમિમાઈસુ ન્ન સુ ॥૧૧૧॥ × ” વ્યાખ્યા—‘પુષ્’ પુષ્ટાવિત્યસ્ય ધાતોઃ પોષણં પોષઃ-પુષ્ટિઃ, પ્રક્રમાદ્ધર્મસ્ય, તં ‘ધત્તે’ કરોતી તે પૌષધઃ, પર્વદિનાનુષ્ટેયં ધર્મકર્મ, તસ્મિન્ સ एव (વા) ઉપવસનં-ઉપવાસઃ-પૌષધોપવાસઃ × × × ‘કર્ત્તવ્યો’ વિગ્રેયઃ સ ‘નિયમાત્’ નિયમેન અષ્ટમ્યાદિષુ પર્વસુ-અષ્ટમી

× ‘કર્ત્તવ્યઃ પૌષધોપવાસઃ અષ્ટમ્યાદિપર્વદિવસેષુ’ (ન.પ્ર.લ.વૃ. પત્ર ૪૭)

ચતુર્દશીપૂર્ણિમાદિષુ ઉત્સવતિથિષુ, યદુક્તં—‘પોસહ ઉવવાસો
 ઊળ, અદ્દુમિચાઉદસીસુ જન્મદિણે । નરણે નિઢ્વારણે ચાઉ-
 માસઅદ્દાહિયજ્જૂમરણે ॥ ૧ ॥” ઇત્યાદિ જાણિવડ, વલી તત્ત્વાર્થ
 ટીકામાંહિ એ પાઠ જોજ્યો ॥ ૫૬ ॥

ભાષા—નવપદ પ્રકરણની ટીકામાં લખ્યું છે કે—‘પુપ્’ ધાતુથી
 બનેલા ‘પોપ’ શબ્દનો અર્થ છે પુષ્ટિ, તે અહિં પ્રસંગવશ ધર્મની
 પુષ્ટિને ધારે-કરે તે પૌષધ, એટલે પર્વદિવસે કરવા યોગ્ય ધર્મ કાર્ય,
 તે ધર્મ ક્રિયાની સાથે ઉપવાસ કરવું તે પૌષધોપવાસ કહેવાય, અને
 તે અગ્યારમું વ્રત પૌષધોપવાસ અષ્ટમી ચતુર્દશી પૂનમ આદિ પર્વ-
 તિથિએ નિયમિત કરવું, જેમ કે શાસ્ત્રાંતરોમાં કહ્યું છે કે—પૌષધોપવાસ
 વ્રત અષ્ટમી ચતુર્દશી પર્વતિથિએ તેમ તીર્થંકર ભગવંતોના જન્મ
 (દીક્ષા) જ્ઞાન નિર્વાણ (આદિ) કલ્યાણક દિવસોમાં અને ચોમાસીના
 દિવસે તથા પજૂસણની અટ્ટહાલિના દિવસે કરવો જોઈએ’ ઇત્યાદિ વિચાર
 બાણવો, વલી (વિશેષ વિસ્તાર) તત્ત્વાર્થ સૂત્રની ટીકામાં એ પાઠ જોજો.

(તપા ખરતર ભેદ ગ્રંથ ૧ બોલ ૫૮, ગ્રંથ ૨ બોલ ૬૧ મો)

૬૭ પ્રશ્ન—તથા જે લિખ્યા સિદ્ધાંતમાંહિ નન્દમણિયારનહ
 અધ્યયનિ “અન્નથા કયાઈ અદ્મમન્તં પોસહં પગિણહૈ નન્દો”
 એતલહ પર્વપલ્લહ નન્દમણિયારહ પોસહ કીધડ, તે સ્યું ?

ભાષા—જે લખ્યું કે સિદ્ધાંતમાં નંદ મણિયારના અધિકારે ‘અન્યદા
 કામક સમયે નંદમણિયાર નામનો શ્રાવક અહમ ભક્ત-પોસહ ગ્રહણ કરે છે’
 એટલે પર્વ શિવાયની તિથિએ નંદમણિયારે પોસહ કર્યું, તે શું ?

તત્ત્વાર્થ—“ પદ્મદિયહમ્મિ કમ્મિ, અદ્દુમમન્તં પોસહં

પગિળહૈ નન્દો ।” इति श्रीआवश्यक प्रतिक्रमणचूर्णौ, तपागच्छ (पूर्व सं. ११८० मां विजयसिंहाचार्य)नी कीधी ए चूर्णिं जाणिवी, तथा “नन्दमणिकारथावको ग्रीष्मचतुर्दश्यां पोषधिको बभूव” इति नवपदप्रकरणवृत्तौ (पत्र ५४), ए टीका ओसवाल (उकेश-कमला)गच्छना गीतार्थ (यशोदेवोपाध्याय)नी कीधी, एह शास्त्रनइ न्यायइं नन्दमणियारइं १४ पर्वदिने अठमभक्त पोसह लीधा, १४ राति तृषा लागी इम जाणीयइ, अन्यथा ए शास्त्रनइं मेलइं पर्वदिवसइं पोमहनउ लेवउ किम मिलइ ? तथा उदायी राजानइ पुणि पोसह पाखीयइ कह्यउ छइ, उत्तराध्ययनटीकावाची जोज्यो, सुब्राहुनइ अध्ययनि “अन्नया कयाइ चाउदसङ्गमुद्दिपुण्ण-मासिणिसु ” एहवा पाठ छइ, एतलइ पर्वदिनेज पोसह कह्या ५७ ।

ભાષા:—‘કદાચિત્પર્વદિવસે નંદમણિયાર નામનો આવક અહમ ભક્ત પોસહ ગ્રહણ કરે છે’ આ રીતનું કથન આવક પ્રતિક્રમણ (વંદિતુ સૂત્રની) ચૂર્ણિમાં છે. તે ચૂર્ણિ તપા ગચ્છથી પૂર્વ વિ० સં ૧૧૮૦ માં વિજયસિંહાચાર્યની રચિત છે. તેમ ઉકેશ (કમલા) ગચ્છના ગીતાર્થ ઉપાધ્યાય યશોદેવ રચિત ‘નવપદ પ્રકરણ વૃત્તિ’ પત્ર ૫૪માં કહ્યું છે કે—‘નંદમણિયાર આવકે ઉન્હાણાની ચઉદસના રોજ પૌષધ લીધો છે’ આ ઉપર ખતાવેલ ગ્રંથોના આધારે નંદમણિયારે ચઉદસ પર્વદિવસે અહમભક્ત પોસહ લીધો, અને ચઉદસની રાત્રે તૃષા લાગી એમ જણાય છે. અન્યથા (ઉપર ખતાવેલ ગ્રંથોના આધારે) પર્વદિવસે પોસહ લેવાનું કેમ મળે ? તથા ઉદાયી રાગને પણ પોસહ પાખીએ કહ્યો છે, ઉત્તરાધ્યયન સૂત્રની ટીકા વાંચી જોજો, સુબ્રાહ્મ

(રાજકુમર)ના અધ્યયને પણ રૂઢિદસ-આદમ અને ઉદ્દિષ્ટ (અમાસ એવં કલ્યાણુક) નિથિ તથા પૂર્ણિમા. એ નિથિઓજ પૌષધમાટે કહી છે. એટલે પર્વદિવસોજ પેસલ કરવા કહેલ છે ? +

+ નિત્ય પોષધના હિમાયતીઓનું કથન છે કે- પૌષધ એ એક ધર્મ કાર્ય છે, એટલે જેમ સાકર ગમે ત્યારે પણ ખાવાથી ખારી કે કડવી નથી લાગતી તેમ પૌષધ પણ પર્વશિવાય પણ કરવામાં કાંઈ પાપ અંધન થોડુંય થવાનું ? કર્મ નિર્જરા રૂપ લાભજ થવાનું, એના ઉત્તરમાં જળાવાનું કે પ્રતિક્રમણો રાષ્ટ્રદેવસી તે તે ટાઢમેજ અને પાખી આદિ તે તે દિવસેજ શા માટે કરવાં ? ગમે તે ટાઢમે, ને દિવસે કરવામાં શું દોષાપત્તિ છે ? દરરોજ જો પાખી આદિ પડિકમતા રહે તો કાંઈ પાપ અંધન થોડુંય થવાનું છે ? જો કાંઈ પણ પાપની આલોચના કરતાં કર્મ નિર્જરાનું લાભજ થવાનું, એટલે દરરોજ પૌષધના હિમાયતીઓએ પાખી આદિ પડિકમણાઓ હમેશાં કરવાની હિમાયત પણ અવશ્ય કરવીજ જોઈએ, જો કહે કે નહીં, પ્રતિક્રમણો તો અધા તે તે ટાઢમે, ને તે તે દિવસેજ કરવા શાસ્ત્રકારોની આજ્ઞા હોવાથી “આણાણ ધમ્મો” આ સિદ્ધાંત મુજબ તે પ્રમાણેજ કરવાં જોઈએ, અથવા આજ્ઞાવિરૂદ્ધ હોવાથી લાભના અદલે નુકસાનજ સંલગ્નિત છે, તો એવીજ રીતે પૌષધ પણ અષ્ટમ્યાદિ પર્વદિવસેજ કરવા શાસ્ત્રકારોની આજ્ઞા છે, તેનાથી વિરૂદ્ધ થઈ સ્વચ્છંદતાએ દરરોજ કરવામાં લાભના અદલે નુકસાનજ સ્પષ્ટ છે, જોને કર્મ-સાધનજ ઇષ્ટ છે. તેને ક્યાં ખીજ કાર્યો શાસ્ત્રકારોએ નથી અતાવ્યા ? પર્વશિવાયના દિવસે જો આરંભ સમારંભ છોડવું હોય તો આખા દિવસનો દેસાવગાસી લઈ લે, શું તેમાં સાવધ ત્યાગનું લાભ નહીં થવાનું ?

(તપા ખરતર ભેદ ગ્રંથ ૧ ખોલ ૫૯, ગ્રંથ ૨ ખોલ ૬૨ મો)

૫૮ પ્રશ્ન—તથા દશાશ્રુતસ્કંધમાંહિ ત્રીજડ ઉપવાસ પછડ
અહુતજિપાણી લેવત કહ્યત છડ, વીજત ન લેવત કહ્યત છડ, પર
સ્વરતર ૩ ઉપવાસ પછી કસેલાના તાઢા પાણી પીયડ, તે સ્યું ?

ભાષા:—દશાશ્રુતસ્કંધ (કલ્પસૂત્ર)માં ત્રીજા ઉપવાસ પછી ઉન્હે
પાણીજ લેવાનું કહ્યું છે, બીજને પાણી લેવાનું નથી કહ્યું. છતાં ખરતર
તણ ઉપવાસ પછી કસેલાનું તાઢું પાણી પીયે. તે શું ?

તત્રાર્થે—અહા પાણી બિહું ડકાલાંતાંઈ મિશ્ર, ત્રીજડ ડકાલડ
ફાસુ થાયડ, તેહ ઉપવાસમાંહિ સચિત્ત પરિહારી શ્રાવક તથા યતિ
કિમ પીયડ ? આપણાં જીવ સાથિ વિમાસી જોજો, ૪ ડકાલાના
અહા પાણીજ લેવાડ છડ, જડ ઇમ તડ ? ઉપવાસિ યતિ તથા
શ્રાવક તુમ્હારડ અહા પાણી લ્યડ તે સ્યું ? પહિલડ ઉપવાસના
૩ પાણીયાંમાંહિ ૨ ઉપવાસના ૩ પાણીયાંમાંહિ અહા પાણી નર્થ
કહ્યા, તડ ૨ ઉપવાસ લગિ અહા પાણી કિમ લ્યડ છડ ?
ત્રીજડ ઉપવાસ પછડ ત્રિણહ ડકાલ્યા વલ્યા હવડ તડ અહા પાણી
લેવા છડ, અપરં ગુજરાતમાંહિ બિપહરે જિમણવેલાના કર્યા
અહા પાણી—જરવાણી વીજડ ડિહાડડ જિમણવેલાતાંઈ વાવરડ છડ,
તે મહા અનાચાર ડર્શની કરડ છડ. ૪ પહરાં ઉપરાંતિ અહાલડ,

અવસ્ય થવાનુંજ, માત્ર પૌષધના નાનાં લાભ નથી. કિંતુ રાગ દ્વેષના
અભાવે સાવધ ત્યાગથી લાભ છે, એટલે અવકાશાદિના અભાવે પર્વ-
દિવસે સંપૂર્ણ પૌષધ ન લઈ શકે અને અપર્વ દિવસે અવકાશના યોગે
દેસાવગારી લઇને સાવધ ત્યાગે તો શું ખોટું છે ? વિચારજો.

૪ પહર ઉપરાંતિ શીયાલઈ, ૩ પહર ઉપરાંતિ વરસાતિ કાલઈ
 કાલાતિક્રાંત પાણી મચિત્ત થાઈ, પરં ૬ પહર પાણી જે પીજઈ
 છઈ તે તિવિહાર પચ્ચક્ષાણીતાનઈ મચિત્તપરિહારીનઈ ન કલ્પઈ,
 અનઈ વર્ણાંતર પ્રાપ્ત પાણી પીતાં વલી વર્ણાંતર પ્રાપ્ત થયાનઈ ફાસૂ
 કહાણા, કદાચિત્ યતિનઈ રાગઈ અથવા આપનઈ પીવાનઈ કાજિ
 ફાસૂ પાણી કસેલાદિનઈ યોગઈ કરઈ તડ પુણિ અપકાયનડ
 આરમ્ભ થાઈ, પરં કેવલ યતિનઈ કાજિ ઉન્હા પાણી કરતાં છકા-
 યની વિરાધના થાઈ, વલી જઈ ત્રિહિ ઉકાલા પૂગ ન થયા હવઈ
 તડ કેતલાએક અપકાઈયા પર્યાસા અપર્યાપ્તા ઉવરઈઈ, તથાપિ
 મચિત્ત પરિહારી યતિનઈ તિવિહાર પચ્ચક્ષાણના મંગ ભણી
 તેહવા પાણી ન લેવા ન પીવા, દરૂણહારનઈ પુણિ દેતાં મહાદોષ
 છઈ, તથા કસેલાના પાણી મગલેઈ ઉપવાસે સૂખઈ, ત્રિહું ઉપવાસાં
 પછી વિકિટ્ટ મત્તીયાનઈ જે ઉન્હા ૧ પાણીજિ કહ્યા તે શ્રીકલ્પ-
 સિદ્ધાંતોક્ત ૬ પાણીયાંની અપેક્ષાયઈ છઈ, અન્યથા તપારંપોસહ-
 માંહિ ઉપવાસિતા ત્રિફલાના પાણી લૂગડા સંઘાતઈ પહિલડ
 છાણીતઈ પીયઈ છઈજિ, જઈ અણછાણયા પીયઈ તડ પચ્ચક્ષાણ
 મંગ કહ્યા છઈ, ઇમ શ્રાદ્ધવિધિવિનિશ્ચય પ્રકરણની વૃત્તિ-પડા-
 વશ્યકના બાલાવબોધ તપાંના કર્યા ગ્રન્થ જોડ્યો, જિમ તે તિમ
 યતિનઈ પિણ જાણીવડ ॥ ૫૮ ॥

ભાષા:—ઉન્હો પાણી જે ઉકાળા મુધી મિશ્ર (અને) ત્રણ ઉકાળે
 ફાસૂ (અચિત્ત) થાય, (તે પહેલાં અચિત્ત ન થાય) તે (ત્રણ ઉકાળા
 પહેલાનો પાણી) સચિત્ત પરિહારી આવક તથા યતિ ઉપવાસમાં કેમ

પાણે ? પોતાના જીવ સાથે વિચારી જોજો, ચાથા ઉકાળાનો ઉંદો પાણીજ લેવા યોગ્ય છે, જ્યારે આમ છે તો પછી એક ઉપવાસવાળા તમારા યતિ તથા શ્રાવક ઉંદો પાણીજ લિયે તે શું ? પહેલા ઉપવાસના ત્રણ પાણીઓમાં અને બીજા ઉપવાસના ત્રણ પાણીઓમાં ઉંદો પાણી નથી કહ્યો. તો પછી બીજા ઉપવાસ લગી ઉંદો પાણી કેમ લેો છો ? જેને ત્રણ ઉકાળા આવી ગયા હોય તે ઉંદો પાણી ત્રણ ઉપવાસ પછી લેવાનું (શાસ્ત્રોક્ત) છે, બીજું ગુજરાતમાં અપોરે ભોજન વેળાએ કરેલો ઉંદો પાણી બીજા દિવસે ભોજનવેળા સુધી વાપરે છે, તે મહા અનાચાર (ત્યાંના) દર્શનીઓ કરે છે, અચિત્ત પાણીનો ઉત્કૃષ્ટ કાળમાન ઉંદાળે પાંચ પહોર શીયાળે ચાર પહોર અને વર્ષાળામાં ત્રણ પહોરનું હોય છે. + તે ઉપરાંત તેનું કાળમાન અતિક્રાંત થઈ જવાથી ફરી સચિત્ત થઈ જાય, (એટલે તે કાળમાનની અંદર કદપે) પરંતુ ૯ પહોર સુધી જે ઉંદો પાણી પીવાય છે તે તિવિહાર પચ્છમાણવાળા સચિત્તપરિહારીને ન કદપે, અને વર્ષાંતર ગ્રામ પાણી પીતાં તો વર્ષાંતર પ્રાપ્ત થયોને ફાસૂ કહેવાણો, કદાચિત્ત યતિના રાગથી યા પોતાને પીવા માટે કસેલાદિકના યોગથી ફાસૂ પાણી કરે તો પણ કેવળ અપકાયનો આરંભ થાય, પરંતુ કેવળ યતિના નિમિત્તે ઉંદો-પાણી કરતાં જીએ કાયની વિરાધના થાય. વલી જે ત્રણ ઉકાળા ન થયા હોય તો કેટલાએક અપકાર્યા જીવો પર્યાપ્તા કે અપર્યાપ્તા તેમના તેમ રહી જાય છે. એટલે પણ સચિત્તપરિહારી યતિને તિવિહાર પચ્છમાણ લાંગના લયથી તેવા પાણી ન લેવા ન પીવા, દેનારને પણ

+ આનું પ્રમાણ પાઠ આ ગ્રંથના પૃ ૧૨૯ પર ટિપ્પણમાં આપેલ છે.

તેવા પાણી દેતાં મહા દોષ છે, તથા કસેલાના પાણી બધે ઉપવાસે કલ્પે, ત્રણ ઉપવાસ પછી વિગિહલતીયાને એકજ ઉન્હે પાણી ને કહ્યું તે કલ્પસૂત્રોક્ત ૯ જાતનાં પાણીની અપેક્ષાએ છે, અન્યથા તપાઓને પણ પોસહમાં ઉપવાસિતા શ્રાવકો ત્રિશ્જાનું પાણી લૂગાથી ઢાણીને પીએજ છેતો, જે અણુછાણ્યા પીએ તો પચ્ચક્રખાણુ ભંગ કહ્યા છે, શ્રાદ્ધવિધિ વિનિશ્ચયવૃત્તિ તથા પદ્યવશ્યઃ આજ્ઞાવશોધ (આદિ) તપાના કર્યા ગ્રંથ જેજે. જેમ તે (પોસાતી શ્રાવકને) તેમ યતિને પણ જાણવો.

(તપા ખરતર ભેદ ગ્રંથ ૧ બોલ ૬૦, ગ્રંથ ૨ બોલ ૬૩ મે)

૫૬ પ્રશ્ન—તથા સ્વરતર અણસણમાંહિ ઉન્હા પાણી ન પાવડ, કસેલાના પાણી પાવડ, તે સ્યું ? ।

ભાષા:-ખરતર અણસણમાં ઉન્હે પાણી નથી પાવતા અને કસેલાનું પાણી પાવે, તે શું ?

તત્રાર્થે—અણસણીયા યતિ તથા શ્રાવકનહ “ઉસ્સેહમં સંસેહમં આઝલોદગં તિલોદગં તુસોદગં જવોદગં આયામં સો વીરં સુદ્ધવિયડં” એ નવે પાણી ન લેવા, ઉષ્ણ વિકટ પાણી લેવડ, ઇતલહ શુદ્ધવિકટ અનહ ઉષ્ણવિકટના જૂજૂઆ અર્થ કરિવા, તિહાં ‘ઉસિણવિયડ’ના અર્થ ઉન્હા પાણી અને ‘સુદ્ધવિયડ’ ના અર્થ વર્ણાંતર-ગંધાંતર-રસાંતર પ્રાપ્ત પાણી વચ્ચાણીયા છહ, એતલહ ફાસૂ પાણી કસેલાદિકના કીધા તે ‘સુદ્ધવિયડ’ થાહ । અપરં અણસણમાંહિ ઉન્હા પાણી ત્રિગ્હ વેલા ઉકાલ્યા પછી ચઝથા ઉકાલાના પાણી ઊતામલા ચીંતવગ્ની પચે નથી મિલતા, અને વર્ણાંતર પ્રાપ્ત સહજહ મિલહ, તે મળી લાભ છેહડ જોઈનહ કાર-

ણઈ પાંડયઈ છઈ, વલી ઉન્હા પીતાં પીતાં ઉત્તકા ઝકામી આવઈ, અનઈ
ગોરમનઈ ઠામિ અન્ન રાંધિવાનઈ ઠામિ યદ્યપિ ઉન્હા પાણી ત્રિહું
ઝકાલાં ઝરઈહી ફાસુ થાઈ, તથાપિ તે પાણી અણમણીયા-
નઈ ન આપીયઈ તે મળી અણમણીયાનઈ સમાધિ નિમિત્તિ
પ્રાસુક વર્ણાન્તર પ્રાપ્ત પાણી છાણીનઈ પાઈયઈ છઈ, અમ્હારઈ
સંપ્રદાયિ ઉન્હા પાણીના મેલ થોડા, ગૃહસ્થ ફાસૂ વર્ણાન્તર પ્રાપ્ત
પાણી સહૂ પીયઈ અનઈ યતિ પણ અમ્હારા ફાસૂજિ પાણી પીયઈ,
પહજિ ઢાલ છઈ, ઇમ કરતાં જઈ યતિ ઉન્હા પાણી પીતા હવઈ
તઝ અમ્હારઈ કાજિ ‘અપઝલ-દુપઝલ’ નામઈ ઉન્હા કરીનઈ ગૃહસ્થ
યતિનઈ ઉન્હા પાણી આપતજિ, પરં ઇણજિ મેલિ ચિત્તમાંહિ
નિરવચ્ચ ઉન્હા પાણી યતિનઈ દોહિલા જાણીનઈ અમ્હારિ ગીતાર્થે
જે મચિત્તપરિહારી ગૃહસ્થ પીયઈ તેહજિ પ્રાસુક પાણી યતિનઈ
વાવરિવા મળી પ્રવર્તીયઝ તે મળી ઉન્હા પાણી ત્રિદંડોત્કાલિત
અણમિલતાં પ્રાસુક પાણી પીવાની ઢાલ મળી અણમણીયા યતિ
ગૃહસ્થનઈ અણમણમાંહિ સમાધિ નિમિત્તિ વર્ણાન્તર પ્રાપ્તજિ
પાણી પાઈયઈજિ, જિમ ઇર ઇપહિલેઈઈ ઝપવાસઈ ઉન્હા પાણી મિલતા!
જાણી શાસ્ત્રવિરુદ્ધહી પીજઈ છઈ, વિચારિજ્યો, સમી નિજરિ જોતાં
ચિત્તનઝ સંદેહ મિટિસ્યઈ ॥ ૫૯ ॥

ભાષા:-અણસણવાળા યતિને તેમ શ્રાવકને કલ્પસૂત્રોક્ત ઉત્સવેદિમ
(લોટથી ખરડેલ હાથ આદિ ધોયેલ પાણી) આદિ નવે પ્રકારના પાણી
નથી લેવાનું કિંતુ ‘ઉણ્ણ વિકટ’ ઉન્હો પાણી લેવાનું, એટલે
‘સુદ્ધ વીયઝ’ અને ‘ઉસિણ્ણવિયઝ’ આ બન્નેના અર્થ જુદા જુદા હોવા

જોઈએ. એથી ‘ઉસિણ વિયડ’ નો અર્થ ઉન્હો પાણી. અને ‘સુદ્ધ વિયડ’નો અર્થ વર્ણાન્તર ગંધાંતર રસાંતર પ્રાપ્ત પાણી વખાણ્યા છે, એટલે ફાસુ પાણી કસેલાદિકના કીધા તે ‘સુદ્ધ વિયડ’ થાય, બીજું અણસણમાં ઉન્હો પાણી ત્રણ વેળા ઉકાળો આવ્યા પછી એથા ઉકાળાનો એતવણી શિવાય જલ્દી મળતો નથી. અને વર્ણાન્તર પ્રાપ્ત સહેજે મળી શકે છે. માટે લાલ-હાનિ જોઈને કારણે પાછયે છીએ. વલી ઉન્હો પાણી પીતાં ૨ (કોઈને) ઉપકા વિગેરે આવે. અને ગોરસ (દહી વિગેરે) ના તથા અન્ન રાંધવાના ભાજનમાં ઉકાળેલો ઉન્હો પાણી યદ્યપિ ત્રણ ઉકાળા પહેલાંએ અચિત્ત થઈ જાય. છતાં તે પાણી અણસણીયાને ન આપીએ. તેથી અણસણવાળાને સમાધિ નિમિત્તે વર્ણાન્તર પ્રાપ્ત પ્રાસુક પાણી છાણીને પાછયે છીએ. અમારા સંપ્રદાયમાં ઉન્હા પાણીનો મેળ થોડો (અને) પ્રાયઃ અધા ગૃહસ્થો વર્ણાન્તર પ્રાપ્ત ફાસુ પાણી પીએ અને યતિઓ પણ અમારા ફાસુજ પાણી પીએ. એવો રિવાજ છે. એમ કરતાંય જો સાધુ ઉન્હો પાણી પીતા હોત તો અમારા નિમિત્તે કાચો-પાકો ઉન્હો કરીને ગૃહસ્થો વહેરાવતે. પરંતુ આ રીતે નિર્દોષ ઉન્હો પાણી દુર્લભ જાણીને અમારા ગીતાર્થોએ સચિત્તપરિહારી ગૃહસ્થ જે ફાસુ પાણી પીએ તેજ સાધુને પણ વાપરવાની પ્રવૃત્તિ રાખી છે. તેથી એટલે ત્રણ ઉકાળાનો ઉન્હો પાણી નિર્બદ્ધ જલ્દી ન મળતાં અને પ્રાસુક પાણી પીવાનો રીવાજ હોવાથી અણસણવાળા યતિ અને ગૃહસ્થને અણસણમાં સમાધિ નિમિત્તે વર્ણાન્તર પ્રાપ્તજ પાણી પાછયે છીએ. જેમ તપાને પહેલાજ ઉપવાસે ઉન્હો પાણી મલતો જાણી શાસ્ત્રવિરુદ્ધજ પીએ છે (તેમ અમારે નથી) વિચારજો. સમી નજરે જોશો તો ચિત્તનો સંદેહ ટળશે.

(તપા ખરતર ભેદ ગ્રંથ ૧ બોલ ૬૧, ગ્રંથ ૨ બોલ ૬૪ મો)

૬૦ પ્રશ્ન-તથા અણસણીયાનં રાત્રિં પાણી સ્વરતરાંનં પાઈયઈ, તે સ્યુ?

ભાષા:-અણસણવાળાને રાત્રે પાણી ખરતરો પાવે છે, તે શું?

તત્રાર્થે-સંવમમાહિવત્તિયાગારેણ ચિત્તસ્વાસ્થિનં નિમિત્તિ
આગાઢકારણં તિવિહાર પચ્ચક્ષ્ણમાંહિ પાણી પાઈયઈ છડ્ડ ॥૬૦॥

ભાષા -‘સંવમમાહિવત્તિયાગારેણ’ ના આગારથી ચિત્તની સ્વસ્થતા
સારૂ ખાસ કારણસર તિવિહાર પચ્ચક્ષ્ણમાં પાણી પાવીએ છીએ. +
(તપા ખરતર ભેદ ગ્રંથ ૧ બોલ ૬૨, ગ્રંથ ૨ બોલ ૬૫ મો.)

૬૧ પ્રશ્ન-તથા સ્વરતરાંનં ‘ભગવન’ શબ્દ ન કહીયઈ, તે સ્યુ?

ભાષા:-ખરતરને (પ્રતિક્રમણ કરતાં) ‘ભગવન’ શબ્દ નથી કહેતા, તે શું x

+ પાણી ની શી વાત છે ? શાસ્ત્રકારો તો કારણ યોગે આહાર
દેવાનું પણ કહે છે. જુઓ આજ ગ્રંથના પૃ ૮૬ પર ટિપ્પણમાં આપેલ
પ્રવચન સારોદ્ધાર સટીકનો પાઠ. તેમાં સાધુનીજ અણસણ વિધિ છે.

તપા ખ. ભેદ પૃ ૫૩ માં પચ્ચક્ષ્ણભાષ્યની જે ગાથા લખી છે
તે દેવેન્દ્ર સૂરિકૃત હોવા છતાં લેખકે જિનવલ્લભસૂરિકૃત લખી છે,
એથી જણાય છે કે લવભીરૂતાને લેખકે આભરાધ્યએ મૂકી દીધી છે.
લેખકે એનો તો ખુલાસો કરવો હતો કે જિનવલ્લભ સૂરિકૃત પચ્ચક્ષ્ણ
ભાષ્યની પ્રતિ ક્યાં છે ? વસ્તુતઃ જિનવલ્લભ સૂરિકૃત ભાષ્યે ક્યાંએ
સાંભળ્યાજ નથી. છતાં ગ્રંથકર્તાના નામ ભળતાજ લખી દેવા. એ
એમનો કુલાચારજ છે.

x તપાના પરમગુરૂ આચાર્ય જયચંદ્રસૂરિ પ્રતિક્રમણ હેતુગર્ભમાં
પ્રતિક્રમણદાવતાં, ને સમાપ્ત થતાં બન્ને વાર ચાર ખમાસમણ દધને ભગવાન

તત્રાર્થે—સંસ્કૃત ભાષાયઈ ‘ભગવન્’ થાઈ, પ્રાકૃત ભાષાયઈ ‘ભયવં’ ઇમ થાઈ, પરં ‘ભગવાન્’ એ શબ્દ બિહું પ્રકારે વિરુદ્ધ છઈ, તથા ચ્યારિ સ્વમાસમણ દેતાં પહિલી સ્વમાસમણઈ ‘ભગવન્ વાંદું’ એહ સ્વમાસમણમાંહિ ‘ભગવન્’ શબ્દઈ તુમ્હે સ્યું ભાવત છત ?

આદિને નહીં, પણ આચાર્યાદિ ગુરુઓને વંદન કરવાનું કહે છે, બુદ્ધો—

“ દેવાન્વન્દિત્વા ચતુરાદિક્ષમાશ્રમણૈઃ શ્રીગુરુન્વન્દતે, લોકે-
ऽપિ હિ રાજ્ઞઃ પ્રધાનાદીનાં ચ બ્રહ્માનાદિના સ્વસમીહિતકાર્યસિદ્ધિર્ભવતિ,
અત્ર રાજસ્થાનીયાઃ શ્રીતીર્થકરાઃ, પ્રધાનાદિસ્થાનીયાઃ શ્રીઆચાર્યાદય
ઈતિ” (પ્રતિ. હેતુ. પાના ૩, પાલણુપુર ગયરા ભં. ની પ્રતિ)

“સ્તવભજનનાન્તરં ચ ‘વરકનકે.’ત્યાદિ પઠિત્વા ચતુર્ભિઃ ક્ષમા-
શ્રમણૈઃ શ્રીગુર્વાદીન્વન્દતે ।” (પ્રતિ. હેતુ. પાના ૮, ઉપરોક્ત પ્રતિ)

“તદનુ ચતુરાદિક્ષમાશ્રમણૈઃ શ્રીગુર્વાદીન્વન્દિત્વા ક્ષમાશ્રમણ-
પૂર્વં રાઙ્ય પઠિક્કમણઈ ઠાઠું ? ઇત્યાદિ ભણિત્વા ભૂનિહિતશિરાઃ
‘સન્વસ્મ વિ રાઙ્ય’ ઇત્યાદિસૂત્રં સકલરાત્રિકાતિચારવીજમૂતં ભણિત્વા
શકસ્તવં પઠતિ ।” (પ્રતિ. હેતુ. પાના ૧૦, ઉપરોક્ત પ્રતિ)

આમાં મસ્તકભૂમિએ લગાવીને પઠિકમણું હાવાનું કહ્યું છે,
એથી આજના તપાઓ પઠિકમણું હાવતાં જે હાથ થાપી મસ્તક ઉંચું
રાખે છે તે એમની શાસ્ત્ર વિરુદ્ધ કુપ્રવૃત્તિ છે

‘તતશ્ચતુર્ભિઃ ક્ષમાશ્રમણૈઃ શ્રીગુર્વાદીન્વન્દતે ।’ (પ્ર. હે. પા. ૫ ભં.)

‘ભગવન્’ શબ્દ પૂજ્યાર્થક છે પરંતુ વિશેષ્ય નહીં પણ વિશેષણ
છે. એટલે ‘ભગવન્ આચાર્યાવાંદું’-ભગવન્ ઉપાધ્યાય વાંદું’ આ રીતે
બોલાય તો ઘાટત કહેવાય. પરંતુ એકલા ‘ભગવન્વાંદું’ કહેવું ઘટતું નથી.

ઓમવાલગચ્છના કીધા ગ્રન્થમાંહિ ‘ભગવન્’ શબ્દેઈ તીર્થંકર
વખાણ્યા છઙ્ગ, વીજે શાસ્ત્રે ‘આચાર્યાદીન્વન્દતે’ इति ललितविस्तरा-
वृत्तौ वली ‘भगवन् वांदुं’ इत्यादि ४ खमासमण देतां ‘इच्छामि
खमासमणो ! वंदितं जावणज्जाए’ ए पाठमांहि वांदिवउ आयउजि,
तउ वली ‘भगवन् ! वांदुं-आचार्यवांदुं’ ए स्युं बहिवउ ?, इम
बहतां पुनरुक्त दोष लागइ छइ, एवं विचारी बोलतां लाभ छइ ६१ ।

ભાષા - સંસ્કૃતભાષાએ ‘ભગવન્ !’ અને પ્રાકૃતભાષાએ ‘ભયવ’
થાય છે, પરંતુ ‘ભગવાન્’ એ શબ્દ બન્ને પ્રકારથી વિરૂદ્ધ છે, અને
ચાર ખમાસમણ દેતાં પહેલા ખમાસમણે ‘ભગવન્ ! વાંદુ’ એ
ખમાસમણમાં ‘ભગવન્’ શબ્દથી તમે શું વિચારો છો ? ઓમવાલ
(ઉકેશ-કંવલા)ગચ્છના કરેલા ગ્રંથોમાં ‘ભગવન્’ શબ્દથી તીર્થંકર
વખાણ્યા છે, ખીજા શાસ્ત્રોમાંથી ‘આચાર્ય આદિને વાંદે’ એમ લલિત-
વિસ્તરવૃત્તિમાં કહ્યું છે. ખીજું ‘ભગવન્ વાંદુ’ ઇત્યાદિ ચાર ખમાસમણ
દેતાં ‘इच्छामि खमासमणो’ ઇત્યાદિ પાઠમાં વાંદવાનું આવી જાય
છે. છતાં ફરી ‘ભગવન્ વાંદુ-આચાર્ય વાંદુ’ એમ કહેવાનું શું પ્રયોજન ?
એમ કહેતાં પુનરુક્ત દોષ લાગે છે. એવં વિચારીને ખોલવામાં લાભ છે,
(તપા-ખરતર ભેદ ગ્રંથ ૧ ખોલ ૬૩, ગ્રંથ ૨ ખોલ ૬૬ મો)

૬૨ પ્રશ્ન-તથા દેવવાંદતાં અમ્હારइ ‘जावंति चेइयाइं’ ए
गाथा कहीनइ विचालइ १ खमासमण देईनइ पछइ ‘जावंत केवि
साहू’ ए गाथा कहीयइ छइ, खरतरांनइ इम न करइ, ते स्युं ?

ભાષા-અમારે (તપાને) દેવવાંદન કરતાં જાવંતિ ચેઈયાઈં’ કહ્યા પછી

એક ખમાસમણ આપીને ‘જાવંત કેવિ સાહૂ’ કહે છે. ખરતરોને તેમ નથી કરતા, તે શું ?

તત્રાર્થે—એ પ્રશ્ન અણવિચાર્યાં કર્યું હૈ, શ્રીસ્વરતર ગચ્છહિ પુણિ
એ સ્વમાસમણ દિવરાવહિ હૈ, એ વાતની સમાધિ માનિજ્યો ॥૬૨॥

ભાષા—આ પ્રશ્ન વગર વિચાર્યો કર્યું છે. ખરતર ગચ્છમાં પણ
આ ખમાસમણ દેવરાય છે. એ વાતની સમાધિ માનજો.

(તપા ખરતર ભેદ ગ્રંથ ૧ બોલ ૬૪, ગ્રંથ ૨ બોલ ૬૭ મો)

૬૩ પ્રશ્ન—તથા સ્વરતરાંનહિ તિવિહાર પચ્ચક્કસ્વાણમાંહિ
કસેલાના કીધા ફાસૂ પાણી વાવરહિ હૈ, તે શું ?

ભાષા—ખરતરોને તિવિહાર પચ્ચક્કખાણમાં કસેલાનું કરેલ ફાસુ
પાણી વાવરે છે, તે શું ?

તત્રાર્થે—યદ્યપિ કસેલા સ્વાદિમ હૈ, તથાપિ તેહના ફાસૂ
પાણી છાણી તિવિહાર પચ્ચક્કસ્વાણમાંહિ શાસ્ત્રે લક્ષણ કહ્યા હૈ,
તપાગચ્છકૃત શ્રાવકવિધિ પ્રકરણ વૃત્તિમાંહિ જોજ્યો, ગીતાર્થનહિ
પૂછીજ્યો, તથા તિવિહાર પચ્ચક્કસ્વાણમાંહિ તુમ્હે પુણિ ત્રિફલાના
કીધા ફાસૂ પાણી લ્યહિ હૈ, તેહ પાણીમાંહિ હરડે બહેડાં આમ-
લાંના ન્હાના કણ હૈ તે સ્વાદિમ હૈ, જહિ તે પાણી છાણીનહિ
પીજહિ તહ પાણાહારના તિવિહાર પચ્ચક્કસ્વાણના ભંગ ન થાહિ,
અન્યથા તે પાણી પીતાં તિવિહાર પચ્ચક્કસ્વાણના ભંગ તિહાં કહ્યા
હૈ, તદ્યથા—“ત્રિવિધાદ્વારે જલમેવ કલ્પત્તે, તત્રાપિ ફૂકાનીર-
સીકરિ-કપૂર-પલા-કચ્છક-સ્વદિરચૂર્ણ-કસેલ્લક-પાઢલાજલં
નીતરિતં ગાલિતં વા, નાન્યથા” इति તપા(હર્ષભૂષણ)કૃત

શ્રાદ્ધવિધિવિનિશ્ચયપ્રકરણે, તથા ‘ ફૂંકડનીર, સં કરિવાસ્યઽ, પાડજાવાસ્યઽ, સૂંઠિનઽ પાણી, હરડાનું પાણી. ઇ જડ નીતા-રીને ગાલ્યા હુવડ તઽ સ્વાદિમ નહીં, તિવિહાર પચ્ચક્ષાણિ સૂઝડ, ઇમડ સ્વાદિમજિ જાણિવઽ ’ ઇતિ તપાગચ્છનાયક સોમસુન્દરસૂરિ શિષ્ય મહોપાધ્યાય શ્રીહેમહંસગણિકૃતે આવશ્યક બાલાવબોધે, એહજિ બાલાવબોધમાંહિ આમલા અશનમાંહિ આણ્યા છડ, તથા હરડા સ્વાદિમમાંહિ લિચ્છી છડ, કસેલઽ સ્વાદિમમાંહિ લિચ્છયઽ છડ, તઽ ત્રિફલા-હરડે, બહેડા, અનાહાર કિહાં કહ્યા છડ ? તે શાસ્ત્ર જોઈયડ, કેણેક શાસ્ત્રમાંહિ કસેલા અનાહાર પુણિ માંભલ્યા છડ, તેક જોઈસ્યડ ॥ ૬૩ ।

ભાષા:—યદ્યપિ કસેલા સ્વાદિમ છે. તથાપિ તેનાથી કરેલ ફાસુ પાણી છાણીને તિવિહાર પચ્ચક્ષાણુમાં લેવાનું શાસ્ત્રે કહ્યું છે, તપા ગચ્છના આચાર્યકૃત આવકવિધિ પ્રકરણવૃત્તિમાં જોજો. ગીતાર્થને પૂછજો. અને ત્રિફળાના કરેલા ફાસુ પાણી તમો પણ તિવિહાર પચ્ચક્ષાણુમાં લિયો છો, તે પાણીમાં હરડે બહેડાં અને આમળાના ન્હાના કણીઆઓ હોય છે અને તે સ્વાદિમ છે, જો તે ત્રિફળાનું પાણી છાણીને પીવાય તો પાણીની છૂટવાળા તિવિહાર પચ્ચક્ષાણુનો ભંગ ન થાય અન્યથા તે પાણી પીતાં તિવિહાર પચ્ચક્ષાણુનો ભંગ થાય. એમ ત્યાં કહ્યું છે. તે આ રીતે—‘ તિવિહાર પચ્ચક્ષાણુમાં ફક્ત પાણીજ કદપે, તેમાંએ ફૂકડનીર. સીકરી. કપૂર. ઇલાયચી. કચ્છક. ખેરનો ભૂકો કસેલો અને પાડલા આદિ વસ્તુઓથી બનાવેલ પાણી નીતારેલ યા ગાળેલ હોય તો કદપે, અન્યથા ન કદપે, એમ તપાગચ્છના પં ૦ ૬૫ ભૂષણકૃત શ્રાદ્ધ-

વિધિવિનિશ્ચય પ્રકરણમાં લખ્યું છે તેમજ “ ફૂંકાનો પાણી. સીકરિ તથા પાડલાથી વાસિત પાણી અને સૂંઠ વા હરડેનું પાણી જો નીતારીને ગાળેલું હોય તો સ્વાદિમ ન હોય, તિવિહાર પચ્ચક્ષ્ણમાં કલ્પે, વગર નિતાર્યું અને વગર છાણ્યું હોય તેને સ્વાદિમજ ગ્નણવું ” એમ તપાગચ્છનાયક આચાર્ય સોમસુંદરસૂરિ શિષ્ય મહોપાધ્યાય હેમહંસ ગણિકૃત આવશ્યક બાળાવબોધમાં કહ્યું છે એજ બાળાવબોધમાં આમલાને અશનમાં ગણ્યા છે. અને હરડેને સ્વાદિમમાં લખી છે. ત્રિક્ષ્ણ-હરડે બહેડા અને આમળા અણાહાર ક્યાં કહ્યા છે ? + તે શાસ્ત્ર જોધયે, કોઈક શાસ્ત્રમાં કસેલો અણાહાર પણ કહ્યો સાંભલ્યો છે તે પણ (અંથ મલ્યેથી) જોવાશે.

(તપા ખરતર ભેદ ગ્રંથ ૧ બોલ ૬૫, ગ્રંથ ૨ બોલ ૭૦ મો)

૬૪ પ્રશ્ન—તથા સ્વરતર પોસહ(ઉપવાસ)માંહિ શ્રાવકાંનંદ પાણસ્સના ૬ આગાર ન ઉચરાવઈ, તે સ્યું ?

બાપા—પોસહમાં શ્રાવકોને પાણસ્સના છ આગાર ખરતર નથી ઉચરાવતા, તે શું ?

તત્રાર્થે—જઈ શ્રાવક શ્રાવિકાનંદ પોસહ(ઉપવાસ)માંહિ સર્વ પાનક લેવા હુવઈ તડ પાણસ્સના ૬ આગાર ઉચરાવીયઈ, તે

+ ત. ખ. ભેદ ૫૦ પૃષ્ઠમાં લખ્યું છે. “ ત્રિક્ષ્ણ શાસ્ત્રમાં અનાહારી કહ્યા છે ” ભોલા ભકતોને સમજાવવા મોંઢાંના ગમ્પગોળા ચલાવ્યે જવાથી શું લાભ થવાનું ? ક્યા શાસ્ત્રમાં ત્રિક્ષ્ણને અણાહારી કહ્યા છે ? તેનો પ્રમાણ પાઠ તો આપવો હતો, વગર પ્રમાણ કેવળ મોંઢાથી ગમ્પાઓ હાંકયે જવું આતો દેવાળીયાનું કામ છે.

આગાર ડચરી લેવાડીયા ધોવણવાં(પા)ણી, સીથ સહિત પાણી, અચ્છ પાણી પ્રમુખ પાણી કાંઈ નથી લેતા ? યતિઙ એ આગાર ડચરીનઙ એ સર્વપાણી લ્યઙ છઙ, તે મળી પાણીના આગાર ડચરઙ છઙ “તહ પાણાગારેહિં, કરહિં યયાઙ હુંતે કપ્પાઙ । ઇહા ન હુંતે કપ્પા, મુત્તું ઉસિણોદગાઙયં ॥૧॥ ઇતિ પચ્ચાશક-ચૂળોં । ડન્હા પાણી પ્રમુખ પાણાગાર વિણ ડચર્યાઙ કલ્પઙ તડ ડન્હા પાણી કસેલાવાણી પ્રમુખ પાણી લેતાં પાણસ્સના ૬ આગાર શ્રાવક શ્રાવિકાનઙ કાંઈ ડચરાવીયઙ ? યતિ મિત્તાવૃત્તિ મળી સર્વ પાણી યથાલાભઙ લ્યઙ તે મળી ૬ આગાર ડચર્યાઙિ કરઙ, ંવં જાણીવડ-યતિનઙ મિત્તા સર્વસંપત્કરી છઙ, શ્રાવકનઙ પૌરુષઙ્ગી છઙ, તે મળી ૧૧ પ્રતિમા આદર્યા પછઙ શ્રાવકનઙ ૬ આગાર કલ્પ્યાઙિ કરડ, એ આગાર ૬ ડચરઙ, અનઙ તપા શ્રાવક સર્વ પાણી ન પીયઙ એ વાંકુ છઙ, જઙ ન પીજઙ તડ કાંઈ ઘણા પાણીયાંની અવિરતિ રાખીયઙ ? સ્વરતર શ્રાવક શ્રાવિકાનઙ એક પાણીની અવિરતિ. વીજા સર્વ પાણીની વિરતિ છઙ, જે મળી દ્રવ્ય ૧ જિ ડચરઙ છઙ, એતલઙ શ્રાવકનઙ ૧૪ નિયમ ડચરિવા અનઙ પાણીના ૬ આગાર ન ડચરિવા ॥ ૬૪ ॥

ભાષા-જો શ્રાવક શ્રાવિકાએને પોસહ (ઉપવાસ)માં બધી જાતના અચિત્ત પાણી લેવા હોય તો પાણસ્સના છ આગાર ઉચરાવીએ, તે આગારો ઉચરીને લેવાડીયા-ધોવણુ-પાણી. ધાન્યાદિકના કણુસહિત પાણી સ્વચ્છપાણી આદિ પાણીએ કેમ નથી લેતા ? યતિ એ આગાર ઉચરીને ઉપરોક્ત સર્વ પાણી લિયે છે એટલા માટે પાણીના આગાર

ઉચરે છે. (કહ્યું છે કે—) “ પાણીના આગારો લેવાથી એ (૨૧ પ્રકારના) પાણી લેવા કલ્પે. અન્યથા ઉન્હો પાણી આદિ શિવાયના પાણીઓ ન કલ્પે ” એમ પંચાશક ચૂર્ણિમાં લખ્યું છે, જ્યારે કે ઉન્હો પાણી આદિ તો પાણીના આગારો ઉચર્યા વિનાએ કલ્પે છે ત્યારે ઉન્હો પાણી કસેલા-વાણી આદિ પાણી લેતાં શ્રાવક શ્રાવિકાઓને પાણુરસના છ આગારો શા માટે ઉચરાવવા ? યતિઓ ભિક્ષાવૃત્તિના કારણે યથાવસરે જે મળે તે પાણી લિયે છે. માટે પાણીના છ આગારો ઉચરેજ છે. મતલબકે યતિને ભિક્ષા સર્વસંપત્કરી છે ત્યારે શ્રાવકને પોષધની છે માટે ૧૧ પડિમા વહન કરતાં શ્રાવકને છ આગાર લેવા કલ્પે. અને તપા શ્રાવકો એ છ આગારો ઉચરીને પણ બધા પ્રકારના પાણી પીતા નથી. તે વાત ઠીક નથી. કારણ ? જે ઉન્હો પાણી શિવાય બીજું કોઈ પાણી પીવું નથી તો પછી ઘણા (જાતના) પાણીની છૂટ શા માટે રાખવી ? ખરતર શ્રાવક શ્રાવિકાને એક (જાતના) પાણીની અવિરતિ (છૂટ), બીજા બધા પાણીની વિરતિ (બંદી) રહે છે, કારણ ? એકજ દ્રવ્ય ઉચરે છે, એટલે શ્રાવકે ચૌદ નિયમ ઉચરવા. અને પાણીના છ આગારો ન ઉચરવા

(તપા ખરતર ભેદ ગ્રંથ ૧ બોલ ૬૬, ગ્રંથ ૨ બોલ ૭૧ મો)

૬૫ પ્રશ્ન—તથા સ્વરતર પીપલીમૂલનહ અનાહાર કહઈ, તે સ્યું ?

ભાષા:—ખરતર પીપળામૂળને અણાહારી કહે છે , તે શું ?

તત્રાર્થ—પીપલીમૂલ અનિષ્ટાહાર મળી જિમ કિરિયાતત અણાહાર તિમ ઇ પિણ અનાહાર કહીયઈ, જઈ ગુણકારી મળી અનાહાર ન હવઈ તત કિરિયાતતઈ આહાર કાંઈ ન કહીયઈ ? તે મળી જિમ ગુણકારીયઈ કિરિયાતત અનાહાર તિમ અનિષ્ટા-

હારપણા થકી પીપલીમૂલ઼ અનાહાર, વલી જેહ (સર્વ) માન્ય ગ્રન્થ
છ઼઼તેહમાંહિ જ઼઼ પીપલીમૂલ આહાર કહ્યા હુવ઼઼ ત઼઼ જો઼઼ય઼઼ ॥૬૫॥

ભાષા-પીપળામૂળ અનિષ્ટ આહારપણાના કારણે જેમ કરિયાતું અણાહારી છે તેમ આ પણ અણાહારી કહીયે છીએ, યદિ ગુણકારી હોવાના અંગે અણાહારી ન હોય તો કરિયાતું પણ (ગુણકારી હોવાના કારણેજ) આહારી કેમ નથી કહેવાતું ? માટે (ગુણકારી હોવા છતાંએ અનિષ્ટાહારપણાના અંગે) જેમ કરિયાતું અણાહારી છે. તેમ અનિષ્ટપણાને લધને પીપળામૂળ પણ અણાહારી છે. ખીણું જે ગ્રંથ સર્વમાન્ય હોય તેમાં પીપળામૂળને જે આહારી કહી હોય તો જોઈએ. +

(તપા ખરતર ભેદ ગ્રંથ ૧ બોલ ૬૭, ગ્રંથ ૨ બોલ ૭૩ મો)

૬૬ પ્રશ્ન-તથા ત્વરતર પઢિકમણાવશ્યક કરતાં શ્રાવકાં પાંહિ
'તસ્મ ધમ્મસ્મ કેવલીપન્નત્તસ્મ' એ બારહ અન્નર ન કહાવ઼઼, તે મ્યું ?

+ તપાએો ઝેરી ટોપરાને તેમ ચોપચિણીને અણાહારી શા કારણે માને છે ? કયા સર્વમાન્ય શાસ્ત્રકારે એને અણાહારી કહ્યા છે ? એમાં કયું અનિષ્ટસ્વાદ પાણું છે ? કે જેના લીધે મોટી તપસ્યાવાળાએો આખો દિવસ મોઢો ચલાવતા ૨-૨ કે ૪-૪ તોલા ખાઈ જાય છે. મોંઢામાં નાખ્યા બાદ અમુક ટાઈમ પછી ઝેરી ટોપરાનો સ્વાદ ખરાખર ટોપરા જેવોજ જણાય છે. તેમ ચે. ચિણી પણ કાંઈ અનિષ્ટસ્વાદવાળી નહીં પણ પરમપુષ્ટિકારક હોવાના અંગે દવાએોમાં વપરાય છે. આવી સ્વાદિષ્ટ અને પુષ્ટિકારક વસ્તુએો અણહારી ત્યારેજ મનાય કે જ્યારે કોઈ પણ સર્વમાન્ય પ્રમાણિક શાસ્ત્રનો પ્રમાણ જન્મવાચાર્ય બતાવે, અન્યથા એ પણ એમનો ગમ્પપુરાણજ છે.

ભાષા:—ખરતર વંદિતુ બોલતાં શ્રાવકો પાસે “ તસ્મ ધમ્મસ્મ કેવલીપન્નત્તસ્સ ” એ બાર અક્ષરો નથી કહેવરાવતા, તે શું ?

તત્રાર્થે—એ ૧૨ અક્ષર બઝાં જે ૪૨ ગાથા વંદિતુની કહી-યઈ છઈ તેહ માંહિલા નહીં, વલી ડુમા થાઈને જે વંદિતુની ૮ ગાથા શ્રાવક કહઈ છઈ તેહ માંહિલા પુણિ નહિં, તેહ મળી ડુઠતાં મનમાંહિ પાઠમંગના દોષ વારિવાનઈ કાજિ બારે અક્ષર કહાઈ છઈ, પરં એ બાર અક્ષર સ્વરતર નિષેધતા નથી, સ્વોટ બોલ્યાનડ ‘મિચ્છામિ દુક્કહં’ દેજ્યો, અણહુંતિ વાત ન કહીયઈ, શ્રીતરુણપ્રભ આચાર્યે પુણિ એ બાર અક્ષર મનમાંહિ કહિવા પ્રરૂપ્યા છઈ, શાસ્ત્ર પાઠ જોજ્યો. પાઠીનઈ દિનઈ પુણિ શ્રાવક ડુમાં પાઠી-સૂત્ર મળાવતાં એ બાર અક્ષર ન કહઈ છઈ. આગિલી ૮ ગાથાનડ કહિવડ ન કહિવડ જે વર્ત્તમાન ગુરુ વહઈ તે પ્રમાણ, એતલઈ સ્વરતરાં ઈ શ્રાવકનડ પઢિકમળા સૂત્ર પૂરડ માનીયઈ છઈ, શ્રાવક શ્રાવિકા એ કહીયઈ છઈ, ઇમ થે ઢોલ વાજતે પ્રરૂપેજ્યો ॥૬૬॥

ભાષા:—એ બાર અક્ષરો વંદિતુની ૪૨ ગાથાં જે બેઠાં બેઠાં કહેવાય છે તે માંહેલા નથી, તેમ ઉભા થઈને જે ૮ ગાથા કહેવાય છે. તે માંહેલા પણ નથી, એટલા સાડ પાઠભંગનો દોષ ટાળવાને અર્થે અમારા શ્રાવકો એ બાર અક્ષરો ઉઠતી વખતે મનમાં કહે છે, પરંતુ એ બાર અક્ષરો બોલવાનો નિષેધ ખરતરો નથી કરતા, એટલે (તમો) જૂઠું બોલ્યાનું ‘મિચ્છામિ દુક્કહું’ દેજો. અણહુંતિ વાત ન કહેવી, તરણુ પ્રભાચાર્યે પણ એ બાર અક્ષરો મનમાં બોલવાનું કહ્યું છે. શાસ્ત્રપાઠ (એમનો સ્વેચ્છ ‘પણવશ્યક બાલાવબોધ’) જોજો. પાપીના દિવસે

પણ ઉભાં પાખીસૂત્ર ભણાવતાં આવડો એ બાર અક્ષર નથી કહેતા, આગળની ૮ ગાથાઓનું કહેવું ન કહેવું, એનો આધાર વર્તમાન ગુરૂની આજ્ઞા ઉપર છે. એટલુંજ આવડું પડિકમણ સૂત્ર ખરતરોને પૂરું મનાય છે. આવડ આવિકાઓ એ કહે છે. એમ તમે ઢોલ વાગતે ભડે કહેજો.

(તપા ખરતર ભેદ ગ્રંથ ૧ બોલ ૬૮, ગ્રંથ ૨ બોલ ૭૪ મો)

૬૭ પ્રશ્ન—તથા સ્વરતર કલ્પસૂત્રની વાચના ૧૧-૧૨-૧૪-૧૭ પજુસણઈ કરઈ છઈ, તે શું ? ।

ભાષા:—ખરતર પજુસણમાં કલ્પસૂત્રની વાચના ૧૧-૧૩-૧૫-૧૭ કરે છે. તે શું ?

તત્રાર્થ—નવ વાચના થકી જે અધિકી વાચના કરઈ છઈ તે પુસ્તકના વાચણહારના ચન્દ્રમા ભદ્રાદિ કિણેકઈ કારણં થાઈ છઈ, અન્યથા મમસ્ત સંઘસમક્ષ એ સિદ્ધાંત વાંચિવા નથી, મમાસમક્ષ કારણં વંચાઈ છઈ, મૂલતત સંવચ્છુરી પડિકમણા કીધા પછી ૧ યતિ ઝમઝ થઈ કહઈ. બીજા સાંભલઈ, એ આચાર શાસ્ત્રે હતા, પરં હિવણાં આચરણાં પાંચ દિન સમાસમક્ષ લાભ વિશેષ વિચારી વંચાઈ છઈ, કારણં જયણાં ગીતાર્થ જિમ લાભ જાણં તિમ કરઈ, એવં પરિચ્છેજ્યો, તથા પાંચાં દિનાંમાંહિ જઈ કોઈ એક તિથિ વધઈ તિવારઈ કાલચૂલિકાનં ન્યાયં તે દિન દશમા પંચકની તિથિ વાચનાનં મેલિ ગિણાં, જઈ તે દિન લેખં ન ગિણીયં તત ૧૧ વાચના થાઈ, જઈ તિથિ તે ગિણીયં તત પંચક મિટં, જ્ઞેહલા પંચક પડિવા થકી થાઈ, એતલત વિચારિવત છઈ, અધિકી વાચના કરિવાની વાત જિમ ભીગુરુજી કહે તે પ્રમાણ ૬૮

ભાષા:—નવ વાયનાથી x અધિક વાયના જે કરાય છે તે વાયવા-વાળાને ચંદ્રમા ભદ્રા આદિ કોઈ કારણને અંગે થાય છે, અન્યથા તો સમરત સંઘસમક્ષ કલ્પસૂત્ર વાયવાનું છેજ નહીં, હમણાં જે સભાસમક્ષ વંચાય છે, તે કારણે વંચાય છે, મૂળ વિધિએતો સંવચ્છરી પ્રતિક્રમણ કર્યા પછી રાત્રે એક સાધુ ઉભો થઈ કહે ને ખીખ સાધુ બધા સાંભળે એ વિધિ શાસ્ત્રોક્ત હતી. પરંતુ હમણાં લાભવિશેષનું કારણ જોઈને આચરણાએ પાંચ દિવસ સુધી સભાસમક્ષ વંચાય છે, કારણે ગીતાર્થી જેમ લાભ સમજે તેમ જયણાએ કરે, આ હકીકત છે, તથા એ પાંચ દિવસમાં જે કોઈ તિથિની વૃદ્ધિ થઈ જાય તો કાલચૂલિકાના ન્યાયે વાંચનાના મેજે તે તિથિ દશમા પંચકની ગણાય, જે તે તિથિને હિસાબમાં ન લઈએ તો વાયના અગ્યાર થાય અને તિથિ ગણાયે તો પંચક મટી જાય છે, કારણ છેલ્લો પંચક પડવાથી મનાય છે. એટલું વિચારવાનું છે, અધિક વાયના કરવાની વાત જેમ ગુરૂ કહે તે પ્રમાણ.

૬૬ પ્રશ્ન—તથા સ્વરતર સંવચ્છરી પઢિકમ્યા પછી કલ્પ વાંચે છે, તે સ્યં ?

ભાષા—સંવત્સરી પ્રતિક્રમણ કર્યા પછી ખરતર કલ્પસૂત્ર વાંચે છે, તે શું?

x “કલ્પસૂત્રં નવક્ષણૈર્વાચ્યતે પરમ્પરાતઃ અન્તર્વાચ્યે નવ-ક્ષણવિધાનાદ્ધરસદ્ભાવાન્ચેતિ” (હીરપ્રશ્ન, વેલર્ષિકૃત પ્રશ્ન ૧ નો ઉત્તર)

આ પાઠમાં આ ૦ હીરવિજય સૂરિ પણ નવ વાયનાનો રિવાજ પરંપરાથી અને કલ્પાંતર્વાચ્ય, કે જે પોતાના ગચ્છવાળાઓનો રચેલ છે, તે પ્રમાણથી હોવાનું કહે છે, પણ કોઈ સર્વમાન્ય શાસ્ત્રપ્રમાણ નથી બતાવ્યો.

તત્રાર્થે—મૂલગઈ ન્યાયઈ સંવચ્છરી પઢિકમણા કરીનઈ ૧
વેષધારી સાધુ સામાચારી કહઈ, બીજા સર્વ યતિ કાઠસ્સગ કરી
સાંભલઈ, સિદ્ધાંતમાંહિ એ ભાવ છે, તે સાંભલ્યાં પછી ‘કલ્પસમપ્પા-
વણીય કાઠસ્સગ’ સહુ યતિ કરઈ, ત્યાર પછી સભાબંધ કરી કલ્પ ન
વાંચિવડ, પછી કારણઈ ૧-૨ આગલિ જે કલ્પસૂત્ર વંચાઈ છઈ
તે યુગપ્રધાનજી આદેશઈ. તે પ્રમાણ ॥ ૬૮ ॥

ભાષા:—મૂળગે ન્યાયે સંવત્સરી પ્રતિક્રમણ કર્યા બાદ એક વેષધારી
સાધુ સામાચારી કહે, ને બીજા બધા સાધુઓ કાઠસ્સગમાં સાંભલે, આવી
વિધિ સિદ્ધાંતમાં છે, તે સાંભલ્યા પછી ‘કલ્પસમપ્પાવણી કાઠસ્સગ’
બધા સાધુઓ કરે, ત્યાર પછી સભાબંધ કરીને (સભાસમક્ષ) કલ્પસૂત્ર ન
વાંચવો, (પણ ત્યાર) પછી કારણે ૧-૨ જાણુની આગલે જે કલ્પસૂત્ર
વંચાય છે તે યુગપ્રધાનજીના આદેશથી. તે (તેમની આજ્ઞા) પ્રમાણ છે.

(તપા ખરતર ભેદ ગ્રંથ ૧ બોલ ૭૦, ગ્રંથ ૨ બોલ ૭૭ મે)

૬૯ પ્રશ્ન—તથા સ્વરતરનઈ શ્રાવક પોસહ પઢિકમણા ઠાવઈ છઈ, તે સ્યું ?

ભાષા:—ખરતરના શ્રાવક પોસહ પઢિકમણો ઠાવે છે. તે શું ?

તત્રાર્થે—જિમ પાંચમીના તપ તથા ચવદિસિ-પાચીના તપ
લેતાં પુસ્તક પૂજા કાઠસ્સગ કરીયઈ તિમ એ પુણિ આવશ્યક
સૂત્રની ભક્તિ છઈ, એ કરતાં શ્રુતજ્ઞાનની સેવા જાણિજ્યો ॥૬૯॥

ભાષા:—જેમ પંચમીનું તપ ચઉદસ-પાખીનું તપ લેતાં પુસ્તક
પૂજા તથા કાઠસ્સગ કરીયે તેમ આ પણ આવશ્યક સૂત્રની ભક્તિ છે.
આ કરવામાં શ્રુતજ્ઞાનની સેવા જાણુજો.

(તપા ખરતર બેઠ અંથ ૧ બોલ ૭૧, અંથ ૨ બોલ ૭૬ મો)

૭૦ પ્રશ્ન—તથા સ્વરતરાંનંદ ગેવાસૂત્રની ગાલ્હી શ્રાવકાંનંદ યતિ આપડ છડ, તે સ્યું ?

ભાષા:—ખરતરોને નાડાછડીની રાખડી યતિઓ શ્રાવકોને આપે છે. તે શું ?

તત્રાર્થે—સ્વરતર તે ગાલ્હી આહારનંદ નિમિત્તિ તેહનંદ આપતા નથી, પરં શાંતિકપૂજાના ગેવાસૂત્રના દોરા પાંણી સર્વ સંઘ મિલ્યાં શ્રીસંઘશ્રાવકાંનંદ શાંતિ નિમિત્ત આપડ છડ. શાંતિકનડ પાણી શ્રીદશરથ રાજાયડં પિણ રાણીયાં ભણી મૂક્યડ છડ, શ્રીવસુદેવ-હિંડીમાંહિ કહ્યડ છડ, જોજ્યો, અધિકડ બોલ્યડ ગુણ નથી અમ્હારડ યતિ ગાલ્હી કરી ગૃહસ્થનંદ આપતા નથી, શાસ્ત્રાંમાંહિ યતિનંદ રહલોકાર્થિ તીર્થનિર્માલ્ય નવકારવાલી મુહપત્તી પ્રમુલ્લ ન દેવા, ધર્માર્થંડ યતિ આપણી નિસેજ તથા ઋપગ્રહિકરજોહરણ સામાયિક કરણહાર શ્રાવકનંદ પૂંજિવાનિમિત્ત ઘડ, રમ શ્રીઆવ-શ્યકચૂર્ણિમાંહિ કહ્યા છડ, જોજ્યો ॥ ૭૦ ॥

ભાષા:—ખરતર યતિઓ તે રાખડી શ્રાવકોને આહાર નિમિત્તે નથી આપતા. કિંતુ શાંતિક પૂજના ગેવાસૂત્ર(નાડાછડી)ના ડોરા તથા પાણી શ્રીસંઘ એકત્ર થયે શ્રીસંઘની શાંતિ નિમિત્તે આપે છે, શાંતિક પૂજનું પાણી દશરથ રાજાએ પણ રાણીઓને મુક્યો વસુદેવહિંડીમાં કહેલ છે. દેખજો, અધિક બોલવામાં ગુલુ નથી. અમારે પણ યતિઓ ગૃહસ્થને રાખડી કરી આપતા નથી. શાસ્ત્રોમાં યતિને આ લોક નિમિત્તે તીર્થ નિર્માલ્ય. નવકરવાલી. મુહપત્તી આદિ દેવા નિષિદ્ધ છે, પરંતુ ધર્માર્થ નિમિત્તે પોતાની નિષદ્ધા (કટાસણું) તથા ઔપગ્રહિક રજોહરણ (દંડાસણ)

સામાયિક કરનાર શ્રાવકને પૂંજવા નિમિત્તે આપવાનું આવશ્યકચૂર્ણિ
(ઉત્તરાધર્ પૃ. ૨૯૯)માં કહેલ છે દેખજો. +

(તપા ખરતર ભેદ ગ્રંથ ૧ બોલ ૭૨, ગ્રંથ ૨ બોલ ૭૮ મો)

૭૧ પ્રશ્ન-તથા સ્વરતરાંરડ જિનગુરુ-જિનદેવનડ ઇહલોકાર્થિ
માનણા કરડ, તે સ્યું ? ।

ભાષા:-ખરતરોને ઇહલોક નિમિત્તે દેવ-ગુરુની માનતા કરે છે. તે શું?

તત્રાર્થે—જૈન શ્રાવક કેવલ ઇહલોકાર્થિ માનણા ઈચ્છણા
દેવનડ તથા ગુરુનડ ન કરડ, જડ મનની અબલતા હવડ તડ
મિત્યાત્વી દેવનડ માનણા ઈચ્છણા ન કરડ, કિન્તુ જૈન સાતિશય
દેવ-ગુરુની સ્થાપના આગડ માનણા ઈચ્છણા કરડ તડ તેહનડ
દેવગત ગુરુગત મિત્યાત્વ ન થાડ, અનડ તેહનડ તેતલડજિ ફલ,
વલી જેતલડ માન્યું છડ તેહ થકી પૂજા પ્રણામ ગીત ગાંન વાદિત્ર
ભક્તિ જે અધિકી કરડ તેહનડ અનંતા લાભ છડ, ઝિણડ પુઢી તથા
નાલેર તથા પગે જાત્રા માની છડ તેહનડ પુઢી નાલેરની પૂજાના
તિતલાજિ લાભ, પરં-સ્તુતિ સ્તવન દેવવંદના કેશર સૂકાંડ ભોગાદિ
માલા ધૂપ ધીપ દાન તીર્થોદ્ધાર નાટક ગીત ગાનાદિ પૂજાના તેહ
શ્રાવકનડ અનન્ત લાભ થાડ, તિલકાચાર્યડ પૂનિ(આગ)મીયા
ગચ્છીયડ જે શ્રીઆવશ્યકની લઢુડી વૃત્તિમાંહિ માનણા ઈચ્છણા
કોજડ થંભણાદિ તીર્થડ તે લોકોત્તર દેવગત મિત્યાત્વ કહ્યા તે
આંપણી સદ્દહણાનડ મેલિ અથવા કોઈએક સ્વસ્થાનડ મેલિ
જાણીયડ છડ, અન્યથા શ્રીઆવશ્યકની ૨૨ સદ્સત્તી ટીકામાંહિ

+ આ ગ્રંથના પૃ. ૧૪૩ પર પ્રશ્નોત્તર ૩૯ ની ટિ. માં આનો પાઠ બુઝો.

मिथ्यादर्शन शल्यनइ अधिकारि इम कांइ न लिख्यउ ?, परं दृष्टिराग घणूं भूंडा छइ, तथा खरतर मेरुसुन्दरोपाध्यायइं छटा प्रश्नोत्तरमांहि लोकोत्तर मिथ्यात्व प्ररूपतां श्रीतिलकाचार्यनी परि पाठ लिख्या छइ ते जाणीयइ २२ सहस्री आवश्यकनी बडीवृत्ति अणजोयां एहजि १२ सहस्री वृत्तिना पाठ दीधा, परं बीजा शास्त्रांना उपयोग न दीधा, तिहां वग्गुर सेठइ दीकरानइ काजि श्रीमल्लिनाथनउ देहरउ कराव्यउ तेहनी भक्ति जाणी शासन देवतायइ प्रमन्न थइ थकी तेहनइ दीकरउ दीधउ, ए मानणउ जइ मिथ्यात्व थाइ तउ ते देवता अविधि पूजायइ किम प्रसन्न थाइ ? परं तीयइ भइयइ जेतलउ मांग्यउ तेहनइ देवतायइं तेतलउजि दीधउ, एतलइ ते मिथ्यात्व न हवइ, वली श्रीवसुदेवहिंडी (लं० १८ पृ० २६७)मांहइ कामपताका नाम श्राविकायइ एहवउ ईछणउ श्रीजिनप्रतिमा आगलि कीधउ—‘जइ इये नाटकइ हुं जीपुं तउ स्वामी ! हुं ताहरी महापूजा करूं’ पछइ कामपताका श्राविका-यइ नाटक जीतउ महापूजा कीधी, ए श्राविकानी करणी कहणी ? जोज्यो, वली श्रीव्यवहारभाष्यवृत्तिमांहे कह्या छइ जे व्यवहारीए श्रावके समुद्रमांहि प्रवहणि बइठां थकां दुवाय जोगइ उत्पात थातां ए ईछणा कर्यउ—‘जइ अम्हे समुद्र थकी कुशलइं घरे पुहुचुं तउ एकइ(बेहुं)रत्नइ श्रीजिनप्रतिमा करावुं’ पछी ते समुद्र वांणीये तर्यउ, रत्ननी जिनप्रतिमा करावी, यत उक्तं—“ पडिमुप्पत्ती वणीए, उदही उप्पाय वायणं भीतो । रयणदुगे जिणपडिमाउ, करेमि जइ उत्तरेऽविग्घं ॥१॥ उप्पाउवसम उत्तर-णमविग्घं

એકક પડિમકરણં વા । દેવયછં દેણ તઓ, જાયા તિ(?) ચી)રવિ
પડિમા તો ॥૨૧॥” ઇતિ વ્યવહારમાણ્યે (૩૦ ૬ ગા૦ ૧૧૫-૧૬),
એહવા ઈચ્છણા શાસ્ત્રાંમાંહિ શ્રાવક શ્રાવિકાનઈ લિખ્યા છઙ્ગ, તેહના
પાઠ(મર્વ)નથી લિખ્યા છઙ્ગ. અર્થી થાઈ તડ પૂજેજ્યો, વલી આવશ્યક-
માંહિ “ઈટ્ટફલસિદ્ધિ-સમાહિવગ્મુત્તમં દિંતુ” ઇત્યાદિ આસંમા પ ઠ
કહીયઈ છઙ્ગ તડ એહવા ઈચ્છણા મિથ્યાત્વ કિમ હોઈ? એવં પરિચ્છેજ્યો ૭૧

ભાષા:-જૈન શ્રાવક (નિશ્ચળ મનનાળા) કેવળ આ લોકનિમિત્તે
દેવની કે ગુરૂની માનતા ન કરે, પરંતુ યદિ મનની નિર્બલતા હોય તો
મિથ્યાત્વી દેવતાઓની માનતા ન કરતાં પ્રભાવશાળી જૈન દેવ કે ગુરૂની
સ્થાપના આગળ માનતા કરે તો તેમાં તેને દેવગત કે ગુરૂગત મિથ્યાત્વ
નથી થતું અને તેને લાભ તેટલુંજ ઘણું જોટલું માનતાથી માનેલું છે,
વલી જોટલું માન્યું છે તેનાથી અધિક પ્રમાણમાં પૂજા પ્રણામ ગીત
ગાન વાદિત્રાદિથી જે ભક્તિ કરે તેનો લાભ અનંત છે, મતલબ કે-
જોણે પુડી વા નાલેર ચઢાવવા યા પગેપાળા જત્રા કરવાની માની છે
તેને પુડી નાલેરની પૂજનો લાભતો માનતા પૂરતોજ થાય પરંતુ સ્તુતિ
સ્તવન દેવવંદન તથા કેશર સુખ્ય નૈવેદ્યાદિ તેમ માલા ધૂપ દીપ દાન
તીર્થોધ્ધાર નાટક ગીતગાનાદિ પૂજનો લાભ તે શ્રાવકને અનંતો થાય,
પૂન(આગ)મીયા ગચ્છીય તિલકાચાર્યે આવશ્યક લઘુવૃત્તિમાં સ્તંભનાદિ
તીર્થોમાં થતી માનતા આદિને જે લોકોત્તર દેવગત મિથ્યાત્વ કહ્યું તે
પોતાની માન્યતાને લઘને યાતો કોઈ ઇર્ષા દ્વેષ આદિ કારણને લઘને
જણાય છે, અન્યથા આવશ્યકની મોટી ટીકામાં મિથ્યા દર્શન શલ્યના
અધિકારે એમ કેમ ન લખ્યો? પરંતુ દષ્ટિરાગ યલુજ ખરાબ છે અને

ખરતર મેરસુંદર ઉપાધ્યાયે છૂટા પ્રશ્નોત્તરમાં લોકોત્તર મિથ્યાત્વખતાવતાં તિલકાચાર્યની માફક જે લખ્યું છે તેનું કારણ જણાય છે કે આવશ્યકની મોટી ટીકા ૨૨ હજારી જોયા વગર આજ ૧૨ હજારી ટીકાનો ૫૫૬ લખ્યો છે. પરંતુ ખીજ શાસ્ત્રો તરફ ધ્યાન નથી દીધું, ત્યાં (આવશ્યક વૃત્તિ તેમ ચૂલ્હિમાં પણ) વગ્ગુર શેઠે પુત્ર પ્રાપ્તિના નિમિત્તે મલ્લિનાથ સ્વામીનું દેરાસર નવું કરાવી આપવાની માનતા કરી અને તેની ભકિતના અંગે શાસન દેવતાની પ્રસન્નતા થવાથી પુત્ર પ્રાપ્તિ થઈ અને તેણે દેરાસર નવીન કરાવ્યો, એ માનતા હતી. તે જો મિથ્યાત્વ હોત તો શાસનદેવતા પ્રસન્ન કેમ થાત ? પરંતુ તેણે જેટલું માન્યું હતું તેટલું દેવતાએ દીધું, એટલે તે મિથ્યાત્વ ન હોય, વલી વસુદેવહિંડી (લંબક ૧૮ પૃ. ૨૬૭) માં અધિકાર છે કે કામપતાકા નામની શ્રાવિકાએ જિનપ્રતિમા આગળ એવી માનતા કરી છે કે-‘હે પ્રભો ! આ નાટકમાં જો હું જીતી જાઉં તો આપની (અટ્ટહાહિ મહોત્સવ ૩૫) મહાપૂજા કર’ એ (માનતા કર્યા) પછી તે કામપતાકા નાટકમાં જીતી અને (અટ્ટહાહિ મહોત્સવ ૩૫) મહાપૂજા કરી. એ કરણી શ્રાવિકાની કહેવી કે નહીં ? વિચારજો. ખીજું વ્યવહારભાષ્ય વૃત્તિમાં કહ્યું છે કે-સમુદ્ર વ્યવહારી શ્રાવકે સમુદ્રની અંદર વહાણમાં બેઠે થકે પ્રતિકૂલ પવનના યોગથી ઉત્પાત થતાં માનતા માની છે કે-જો કુશળે ખેમે સમુદ્રથી પાર ઉતરી ઘેર પહોંચું તો એક (ખે) રત્નની જિનપ્રતિમા કરાવું’ ત્યાર પછી સમુદ્ર તરીને ઘેર પહોંચ્યો. રત્નની પ્રતિમા કરાવી. જેમકે કહ્યું છે “વણિગદ્વારા પ્રતિમાની ઉત્પત્તિ, સમુદ્રમાં ઉત્પાતનું થવું, ભયના અંગે માનતા કરે છે કે-જો નિર્વિઘ્નતયા સમુદ્ર પાર ઉતરી જાઉં તો ખે રત્નોની

જિનપ્રતિમા કરાવું ૧, માનતા કરતાંજ ઉત્પાતનું ઉપશમવું અને તે વણિકનું નિવિધને પાર ઉતરવું થયું એટલે તેણે (લોભના અંગે) એક સ્તનની પ્રતિમા બનાવરાવી. ત્યારે દેવતાના અનુભાવથી ખીજા સ્તનમાં પણ (દીપકના યોગે) પ્રતિમા દેખાવા લાગી ” આ હકીકત વ્યવહારભાષ્ય વૃત્તિમાં કહેલ છે, તો એવી માનતા તે મિથ્યાત્વ કેમ થાય, આ રીતે છે જોજો । +

(તપા ખરતર ભેદ ગ્રંથ ૧ બોલ ૭૩, ગ્રંથ ૨ બોલ ૮૦ મો)

૭૨ પ્રશ્ન—તથા સ્વરતર મદા ‘જય તિહુચ્ચણ’ તથા ‘જય મહાયસ’
 ૯ નમસ્કાર કહઈ, પારમનાથનાજિ લહુડા તવન કહઈ, તે સ્યું ?

+ તપા ખ. ભેદ પૃં ૬૧ માં લખ્યું છે કે—“ ખરતરનો ધર્મ એકાંતે આલોક તત્પર માંડેલો છે ” એટલે પૂછવાનું કે તપા સાધુઓ પણ હમેશાં પ્રતિક્રમણમાં શાંતિ બોલે છે. જેને સદા બોલવા માટે અનિયમિતપણું આ ગ્રંથના પૃં ૧૬૩ પર દિપ્પણમાં આપેલ સેનપ્રશ્નના પાઠથી સ્પષ્ટ સિદ્ધ છે. અને જેની અંદર ‘દુષ્ટગ્રહભૂતવિશાચ-શાકિનીનાં પ્રમથનાય’ આદિ પદો દ્વારા દુષ્ટગ્રહ ભૂત. વિશાચ. શાકિનીયોનો પ્રમથન (વિનાશ) કરવાની પ્રાર્થના છે. તેમ પાખી આદિના પહેલા દિવસે એવીજ પ્રાર્થનાવાળો સંતિકરં સ્તોત્ર બોલે છે, અને જેણે પ્રતિષ્ઠાનો મુહૂર્ત ચુકાવીને પોતાના ગુરૂ શાસનના પરમ પ્રભાવકાર્યાર્થ શ્રીહેમચંદ્રસૂરિનો તેમ પરમાર્હત નૃપતિ કુમારપાળનો મરણ નિપજ્જવી દીધો, એવા ગુરૂદ્રોહી રાજદ્રોહી અને ધર્મદ્રોહી બાલચંદ્રની બનાવેલ ‘સ્નાતસ્યાં’ થુધ પાખી આદિના દિવસે જે બોલે છે. તેમાં આશય આ લોકસંબંધી નહીં તો બીજે શું છે ? તપાનો આ ધર્મ કયા પરલોક તત્પર મંડાયો છે ? મહાશય ! જંબવાચાર્યજી ! પહેલાં પગતળે બળતી બુઝાવો પછી કુંગરા ઉપર બુઝાવા દોડજો.

ભાષા:—ખરતર સદાએ ‘જય તિહુઅણુ’ તથા ‘જય મહાયસ’ એ ચૈત્યવંદન અને લઘુસ્તવન પાર્શ્વનાથનાજ કહે, તે શું ?

તત્રાર્થે—શ્રીપાર્શ્વનાથ શ્રીઅમયદેવસૂરિનહ કુષ્ઠ રોગનહં ગમાઢિવહ કરી ઉપગારી થયા, તે મળી શ્રીચંમળા પાર્શ્વનાથના નમસ્કાર તથા સાંમ્નિનહ પઢિકમળહ કાઠસ્સગ કરાહ છહ, સદા સાંમ્નિનહ પઢિકમળહ લહુહા તવન શ્રીપાર્શ્વનાથના કહાહ છહ, તુમ્હારહ પુણિ પાઠીયહ ચઠમાસહ સંવચ્છરીયહં ‘સ્નાતસ્યા’જિ થુહં કહાહ છહ, તથા તવન અજિયસંતા ‘અજિયં જિય૦’ કહાહ છહ, સજ્માહ ‘ઉવસગ્ગહરં’ જિ કહાહ છહ, તીર્થંકર સહ સરસ્વાજિ, છહ, વીજા તીર્થંકરાંની થુહં તવન સજ્માય ન કહાહ, તે સ્યું ? વિચારિજ્યો

ભાષા:—તવાંગ ટીકાકાર શ્રીઅભયદેવસૂરિજીને કુષ્ઠરોગ મટાડવાના કારણે પાર્શ્વનાથ પ્રભુ (અમારે) ઉપગારી થયા. એટલે થંભણુ પાર્શ્વનાથનું ચૈત્યવંદન અને કાઠિસ્સગ સાંજના પ્રતિક્રમણમાં કરાય છે. તેમ સાંજના પ્રતિક્રમણમાં ન્હાનો સ્તવન પણ પાર્શ્વનાથનોજ કહેવાય છે, તમારે (તપાઓમાં) પણ પાખી ચોમાસી અને સંવચ્છરી પ્રતિક્રમણમાં ‘સ્નાતસ્યા’ થુધ તેમ સ્તવન અજિસંતોજ કહેવાય છે, સજ્માયમાં પણ ‘ઉવસગ્ગહરં’જ કહેવાય છે. તીર્થંકરો તો બધાએ સમાન છે, તો પછી બીજા તીર્થંકરોના સ્તુતિ સ્તવનો કેમ નથી કહેવાતા ? અને સજ્માય પણ ‘ઉવસગ્ગહરં’ શિવાય બીજી નથી બોલતા, તે શું ? વિચારજો. +

+ રાધ પ્રતિક્રમણમાં પ્રાયે બધાય ગચ્છવાસીઓ જે ‘જયઉ સામિય’ કે ‘જગચિંતામણિ’નું ચૈત્યવંદન એકનું એક દરરોજ કરે છે. તે ક્યા શાસ્ત્રના આધારે છે ? કાંઈ પણ શાસ્ત્રમાં તો આવું કથન નથી કે—

(તપા ખરતર ભેદ ગ્રંથ ૧ ખોલ ૭૪, ગ્રંથ ૨ ખોલ ૮૧ મો)

૭૩ પ્રશ્ન-તથા સ્વરતરાંનંદ સાંભડ પડિકમ્યાં પછડ કાઠસ્સગ કરી ક્રિયા વધારડ, તે સ્યું ?

ભાષા:-ખરતરોને સાંજે પડિકમાણું કર્યા બાદ કાઠસ્સગો કરી ક્રિયા વધારેડું છે તે શું ?

તત્રાર્થે-પડિકમણા પૂરા કીધા પછી દેવના ગુરુના કાઠસ્સગ કરતાં કાંડ પડિકમણાની ક્રિયા વધતી નથી, તપારડ પિણ દેવસી પાયચ્છિત્ત કાઠસ્સગ કર્યા પછી દુક્કલ્લસ્ય-કમ્મલ્લસ્ય કાઠસ્સગ ચૈત્યવંદના (?) સજ્જમાય પ્રમુલ્લ કરતાં કિમ ક્રિયા વાધતી નથી ? જે તુમ્હે અમ્હનંદ ક્રિયા વાધતીના દૂષણ લિલ્લયા, તથા સગલે ગચ્છે પડિકમણાનંદ જ્ઞેહડડ આપાંપણા ઇષ્ટદેવ ગુરુના કાઠસ્સગ

હેમેશાં અમુકજ ચૈત્યવંદન નિયમિત કરવું, અને ‘નમોઽસ્તુ વર્ધમાનાય’ આદિ પણ દરરોજ એકનુંએક નિયમિત નહીં, પણ ગમે તે, વર્ધમાન સ્તુતિ કહેવાનું શાસ્ત્રકારો કહે છે, છતાં દરરોજ એકનુંએક નિયમિત શા માટે કહેવાય છે ? શ્રુતદેવના વિગેરેની થુધઓ દરરોજ તેની તે શા માટે કહેવાય છે ? જો કહેવાય કે વૃદ્ધ પરંપરાના અંગે એ તો એના એજ દરરોજ નિયમિત કહેવા જોઈએ, તો પછી આએ અમારા ગચ્છની વૃદ્ધ પરંપરા છે કે દરરોજ ‘જય તિહુઅણુ’ ચૈત્યવંદન અને પાર્શ્વનાથનો લઘુ-સ્તવન કહેવું, અમારા ગચ્છમાં એ પરંપરા ચાલે. એથી તપા દિલમાં કેમ દુખાય છે ? પોતાની પરંપરાને માન્ય કરવી-નિર્દોષ માનવી. અને બીજાની પરંપરાને દૂષિત બતાવવી. એમાં પરોત્કર્ષાસહિષ્ણુતા સાથે દર્ષા અદેખાઈ શિવાય બીજું શું કારણ હોઈ શકે ? અસ્તુ.

કરાવડ છડ, જિમ ઓસવાલાંનડ ગચ્છિ શ્રીરત્નપ્રભસૂરિના કાઠ-
સ્સગ કરાડ છડ, જીરાડલીયડ ગચ્છિ જીરાડલા પાર્શ્વનાથના
કાઠસ્સગ કરાડ છડ, એવં થોડ દીહાં નવલાં આપ મતીયાંરડ
તેહવડ જાણીતડ ગુરુ કોઈ નહીં જાણીતડ જેહનડ તેહના શિષ્ય
નામ લેઈ કાઠસ્સગ કરડ, તરતર તેહડ થાસ્યડ, તપડ ગચ્છિ
શ્રીક્ષેમકીર્તિ આચાર્યડ ‘ગુરુતત્ત્વ પ્રદીપ’ ગ્રન્થમાંહિ કહ્યા છડ—
‘કિં તે મૃતગુરોર્મૂર્તિઃ, પૂજ્યતે ? કુસુમાદિભિઃ । હી યતઃ સંયતા-
વસ્થા, સાવદ્યાનુચિતા મતા ॥૧॥’ इति वाक्यं पहिली गुरुप्रतिमा
निषेधी हुंती, हिवड ठामि ठामि देहरड हीरविहार करी गुरुप्रतिमा
सीरोही अहम्मदावादि पाटणी, ऊने खंभाइतइं प्रतिमा थूभ पूजाइ बड,
इम पडिकमतां क्रमइं काठस्सग पिण करारस्यड, एवं जारोज्यो ७३

ભાષા:—પડિકમણું પુરું કર્યા પછી દેવતા—ગુરના કાઠસ્સગ કરતાં
પડિકમણાની ક્રિયા કાંઈ વધતી નથી, તપાઓને પણ દેવસિય-પાયચ્છિત્ત
કાઠસ્સગ કર્યા પછી દુષ્પખ્ય-કમ્મખ્ય કાઠસ્સગ ચૈત્યવંદન (?)
સન્ન્યાય આદિ કરતાં કેમ ક્રિયા નથી વધતી ? જે તમોએ અમને ક્રિયા
વધવાનો દોષ લખ્યો, બીજું પ્રાચીન યજ્ઞોમાં ગચ્છોમાં પડિકમણાના અંતે
પોતપોતાના ઇષ્ટ દેવ—ગુરના કાઠસ્સગ કરાવે છે. જેમ કે ઉકેશ (કંવજા)
ગચ્છમાં રત્નપ્રભસૂરિના અને જરાવલા ગચ્છમાં જરાવલા પાર્શ્વનાથના
કાઠસ્સગ કરાય છે. એવં થોડ દિવસના ના આપ મતીયાઓને કાંઈ
એવો જાણીતો ગુર નથી થયો કે જેનું નામ લઈને તેના શિષ્યો
કાઠસ્સગ કરે, પણ કાલાંતરે તેએ થઈ જશે, તપ ગચ્છના ક્ષેમ
કીર્તિસૂરિએ ‘ગુરુતત્ત્વ પ્રદીપ’ ગ્રંથમાં કહ્યું છે કે—“તારા મૃત ગુરની

મૂર્તિ કૃલ આદિથી શા માટે પૂજાય છે ? કારણ કે સંયતાવસ્થા સાવધ સેવન માટે નિશ્ચય અનુચિત માનેલ છે ” આ (શ્લોકોક્ત) વચનથી પહેલાં ગુરુમૂર્તિ નિષેધી હતી. છતાં હમણાં સ્થાને સ્થાને દેરાસરોમાં ‘હીરવિહાર’ અનાવી ગુરુપ્રતિમાઓ પૂજાય છે. જેમકે સીરોહી, અમદાવાદ. પાટણ. ઊના. ખંભાત આદિ અનેક સ્થાનોમાં પ્રતિમાઓ અને શ્તૂપો પૂજાય છે. અનુક્રમે પડિકમણામાં કાઉરસગ્ગ પણ કરાશે આ રીતે જાણુને.

(તપા ખરતર ભેદ ગ્રંથ ૧ બોલ ૭૫)

૭૪ પ્રશ્ન—તથા પાણી ચડમાસી સંવચ્છરીના પડિકમણા માંડતાં સ્વરતરનઈ દેવગુરુના નામ લેતાં ક્રિયા વધારઈ છઈ, તે સ્યું ?

ભાષા—પાણી ચોમાસી અને સંવચ્છરી પડિકમણું સર કરતાં ખરતરને દેવ ગુરુના નામ લેતાં ક્રિયા વધારે છે, તે શું ?

તત્રાર્થે—અજી પાણી ચડમાસી સંવચ્છરીના પડિકમણા કરિવા માંડ્યા નથી, તેહ માંડતાં નિરવિધન પડિકમણા થાવા નિમિત્તિ જઈ કોઈ નવકાર ગુણતાં તથા દેવગુરુના નામ લેવઈ તડ કિસી ક્રિયા વાધઈ ?, પાણી મુહપત્તી પડિલેહ્યાં પછી વાત ઊપરી ન કીજઈ, ‘નાસિકા ચિંતવણી કરિજ્યો, મધુર સ્વરિ પડિકમિજ્યો, છીંક મ કરિસ્યડ’ હમ કહતાં દોષ નથી, કોઈ શ્રાવક ક્રિયા કરતાં ચૂકતડ હવઈ તેહનઈ કહીયઈ તેહના દોષ નહીં, પરન્તુ સંસારની વાતચીત ન કીજઈ, એવં પરિછેજ્યો ॥ ૭૪ ॥

ભાષા:—હજુ પાણી આદિ પડિકમણા સર થયા નથી, તે પહેલાં પડિકમણું નિર્વિધનપણે પૂર્ણ થવા નિમિત્તે જો કોઈ નવકાર ગણે અને દેવગુરુના નામ લિએ તેમાં કંઈ ક્રિયા વધે છે ? પાણી (આદિ) મુહપત્તી

પડિલેહ્યા પછી વાતચીત ન કરવી, ‘નાસિકા ચિંતવણી કરજો, મધુર સ્વરે પડિકમજો, છીંક મ કરશો’ એમ કહેવામાં દોષ નથી. કોઈ શ્રાવક ક્રિયા કરતાં ચૂકતો હોય તેને તેની ભૂલ અતાવનાં દોષ નથી. પરંતુ સંસારની વાતચીત ન કરવી. આ રીતે છે.

(તપા ખરતર ભેદ ગ્રંથ ૧ બોલ ૭૬, ગ્રંથ ૨ બોલ ૮૩ મો)

૭૫ પ્રશ્ન—તથા સ્વરતર કહૈ છૈ જે શ્રીજિનદત્તસૂરિનહ યોગીનીએ વરદીયા હતા જે આજ પછીં તાહરી સાધ્વીનહ ઋતુ નહીં આવૈ, તે આવતી સાંભલીયૈ છૈ, તે કિમ ?

ભાષા:—ખરતર કહે છે કે—શ્રીજિનદત્તસૂરિજીને યોગિનીઓએ વરદાન આપ્યો હતો કે—તમારી સાધ્વીને ઋતુધર્મ નહીં આવે. તે આવતું સાંભળીએ છીએ. તે કેમ ? +

તત્રાર્થે—સાધવીયાંનહ પિણ વય જોગઈ ઋતુ આવૈ, ના નહિં, પરં દેવતાનહ વચનહ નાવૈ પુણિ, હિવણાં મંત્ર દોરા રાસડીનહ પ્રભાવૈ ટલતી ઋતુ આવૈ દેહીયૈ છૈ, એ વાતનહ સ્વચ અચંભડ ? સાધ્વીયાંનહ પુણિ ગુરુજીયૈ ગુણણા તપ પ્રમુલ્ક કરિવા કહ્યા હતા, તે અણકરતાં થકાં તે યોગિની પિણ વાચાથી

+ તપા ખરતર ભેદ પૃ. ૧૫૧ માં મૂળ લેખકે લખ્યું છે કે— ‘સ્વરતર૦ સાધ્વી ૨ તિનિ વઈ કહે છૈ તે કિમ ?’ આનો અનુવાદ જાળિયાચાર્યે કર્યો છે કે “ખરતર એ સાધ્વીને ‘વધ’ કહે છે.” એમાં માખીના સ્થાને માખી મૂકી દેવા બરાબર અનુવાદ કરી દીધું પણ એટલું તો સ્વષ્ટ જણાવવું હતું કે ‘વધ’ એટલે શું ? ક્યાંથી જણાવે. પોતાને જમ પડી હોય ત્યારે ન. વાહ ધન્ય છે આગમપ્રણાલિ ! તમારી વિચારશીલતાને.

ચૂકઈ, ઇણ વાતનહ સ્યહ દોષ, પરં તુમ્હારઈ ચિત્તમાંહિ દ્વષનહ
પરિણામઈ એ તમાસહ આવઈ છઈ, પરં રાગનહ મેલિ એ અનાહૂત
વાત નથી આવતી, જે ભગવંતનહ વારઈ એ વાત ન હુઈ ન હવઈ.
તે હિવણાં સ્વરી કિ સ્વોટી વાત થઈ સાંભલીયઈ છઈ જે ઝુના ગામઈ
શ્રીહીરવિજયસૂરિ નામ ઋષિમતીયાંના મટ્ટારક દિવંગત થાતાં
સ્માશાનની આગની ખાલ લાગતાં આંબાના વૃક્ષ બલ્યા નહિં, દવ
ખાલ્યા નહિં, સૂકા નહિં વિશેષઈ વલી તતકાલ અકાલ મર્યા
ફલ્યા, ઇમ મતાનુરાગી ઋષિમતીયાંનહ મુખઈ કહતાં સાંભલ્યા,
કાગલે એ વાત ગુરુના અતિશય લિખ્યાંણા, એ વાત તુમ્હે
પિણ સાંભાલી હુસ્યઈ, તહ તતકાલ તુમ્હારઈ ચિત્તમાંહિં એહવા
ગુરુના અતિશયની વાત આવી હુસ્યઈ, અનઈ શ્રીજિનદત્તસૂરિ
યુગપ્રધાન ગુરુના એ વર તુમ્હારઈ ચિત્તમાંહિ નાવ્યા,તે સ્યું? ‘આંપણહ
દેવ અનઈ પારકહ મોટિંગ’ એ ન્યાય થાઈ છઈ, સમી દૃષ્ટિ જોતાં
સર્વ બોલ ઠામિ પડિસ્યઈ, પરં વિરતાં માણસાંનહ વેસાસ ન પડઈ ૭૫

ભાષા:— સાધ્વીઓને પણ અવસ્થાને યોગે ઋતુધર્મ
આવે એની ના નહીં, પરંતુ દેવતાના વચનથી ન પણ આવે, હમણાંય
મંત્રિત ડોરા-રાખડી વિગેરેના પ્રભાવથી ઋતુધર્મ ટળી જતો દેખીએ
છીએ. એ વાતનું શું આશ્ચર્ય છે? (ખીજું) સાધ્વીઓને પણ
ગુરુઓ (જે) ગુણુણા તપ વિગેરે કરવા કહ્યા હતા તે ન કરતાં તે
યોગિનીઓ પણ વાચાથી ચૂકી જાય તેમાં તેનો શું દોષ? પરંતુ
તમારા ચિત્તમાં દ્વેષ પરિણામથી આ તમાસો લાગે છે, અને રાગના
કારણે આ વાત અણહુંતી નથી લાગતી કે જે વાત તીર્થ કર ભગવંતોના

વારે પણ નહોતી થઈ તેમ થતી પણ નથી. તે વાત હમણાં, ખરી-ખોટી જ્ઞાની જાણે, થયેલી સાંભળીએ છીએ કે-જિના ગામમાં ઋષિ-મતીઓના ભટ્ટારક શ્રીહીરવિજયસૂરિ દેવગત થતાં સ્મશાન ભૂમિમાં અગ્નિસંસ્કાર કરતાં અગ્નિની જ્વાળાઓ લાગવા છતાં આંખાના વૃક્ષો દાઝ્યા નહીં દવ લાગ્યા નહીં તેમ સુકાણા નહીં એટલુંજ નહીં બદકે તત્કાલ વિશેષપણે અકાલે મોર્યા અને કલ્યા, એમ મતાનુરાગી ઋષિ-મતીઓના મુખે કહેતાં સાંભળ્યા છે, કાગળોમાં ગુરના એવા અતિશયની વાતો લખાણી, તમે પણ જે આ વાત સાંભલી હશે તો તરતજ તમારા ચિત્તમાં ગુરના એવા અતિશયની વાતથી આનંદ થયો હશે અને યુગપ્રધાન ગુર શ્રીજિનદત્તસૂરિના વરદાનની વાતથી તમારા ચિત્તમાં આનંદ નથી થતો. તે શું ? ‘ખોતાનો માનેલ દેવ અને ખીજનો માનેલ ઝોટીંગ’ આ ન્યાય દુનિયામાં ચાલે છે. સમદષ્ટિએ જેતાં બધીવાત હામે પડશે. પરંતુ વિરતાં (દષ્ટિરાગી) માણસનો વિશ્વાસ ન પડે.

(તપા-ખરતર ભેદ ગ્રંથ ૧ બોલ ૭૭, ગ્રંથ ૨ બોલ ૮૪-૧૦૧ મો.)

૭૬ પ્રશ્ન-તથા સ્વરતરાંનઈ આંધા તથા અપુત્રીયા શ્રાવકનઈ સુપર્વદિવસિ તવન ધુરના આદેશ ન દીજઈ, તે સ્યું ?

ભાષા—ખરતરેને આંધળા અને અપુત્રીયા શ્રાવકને સ્તવન કે ધુરના આદેશ નથી આપતા, તે શું ?

તત્ત્વાર્થ-તથા જે આંધા મળી થાપનાનઈ તથા ગુરુનઈ ન દેખઈ તેહની ક્રિયા કીધી તેહનઈજિ સૂઝઈ, ઇમ તપાનઈ પિણ કહતાં સાંભલીયઈ હઈ, તે મળી ઘરમાંહિ સોમ્મ કરીનઈ એ પૂછિવર ઘટઈ, ઇમ અંધનઈ વીજે દિહાડેઈ જઈ તેહનર આદેશ વિચારિવર

તડ તેહને પર્વદિવસનડ સ્યું વિચારિવડ ? વલી સર્વ ગચ્છવાસી
લોક રહલોકાર્થી છડ, તુમ્હે ડાહ્યા છતાં રમ સ્યું પૂછડ ?
અપુત્રીયાનડ તવનના નિષેધ સ્વરતરાંના કીધા ગ્રન્થાંમાંહિ કિહાંઈ
નથી, હિવડ તપાનડ પર્વદિવસડ જડ આંધાનડ આદેશ દીધા તડ
તુમ્હે સાચા થાસ્યડ, પિણ રમ થાસ્યડ નહીં, એ કહિવાની વાત
છડ, પરં કરિવાની વાત નથી. વલી તવન યુદ્ધના આદેશ ગુરુનડ
હાથિ છડ, પરં ગૃહસ્થનડ હાથિ નથી, તથા ઋષિમતીયાંરડ સદા
યતિયાંરડ ઉપાસરડ ચેલા ભણિવાનડ કાજિ દીધા કરાડ છડ
તે જોગ્યો, તેહનડ સમભાવી સકડ તડ સમભાવેગ્યો, પરં સહી કહી
ન સકડ, રૂંચડ વાતડ ગચ્છવાસી મતીયાંમાંહિ ઘણું લાજડ છડ ૭૬ ।

ભાષા:-જે આંધળો હોવાના અંગે થાપના તેમ ગુરુને જ્ઞેતો નથી
(એટલે) તેની કચેલી ક્રિયા તેનેજ સૂઝે. એમ તપાઓને પણ કહેતાં
સાંભળીએ છીએ, એટલે ધરમાં તપાસ કરીને ખીજને પૂછવું યોગ્ય
ગણાય. આ રીતે આંધળાને અન્ય દિવસે પણ આદેશ દેવાનું વિચાર-
ણીય હોય છે તો પછી તેને પર્વદિવસનું શું વિચારવું ? વલી સર્વ
ગચ્છવાસી લોકો ઇલ્લોકાર્થી છે, તમે ડાહ્યા છતાં આમ શું પૂછો છો ?
અપુત્રીયાને તવનના આદેશનો નિષેધ અતરના કીધા ગ્રંથોમાં પ્રાપ્ત
નથી. હવે તપાને પર્વદિવસે આંધળાને જ્ઞે આદેશ અપાશે તો તમે
સાચા થશો પણ એમ થઈ શકશે નહીં, એ વાત કહેવાની છે પણ
કરવાની નથીતો, વલી સ્તવન યુદ્ધના આદેશ દેવા ગૃહસ્થોના હાથે
નથી પણ ગુરુના હાથે છે. ખીજું ઋષિમતીઓને યતિ(સાધુ)ઓના
ઉપાશ્રયે ચેત્તાઓને ભણવા ખાતર સદા દીધા કરાય છે. તે જ્ઞેને.

તેને સમજાવી શકો તો સમજાવજો. પરંતુ સત્ય કહી શકાય તેમ નથી. આ પાતથી ગચ્છવાસીમતીઓમાં ધાણું 'શરમાવવું' પડે છે

(તપા ખરતર ભેદ ગ્રંથ ૧ બોલ ૭૮, ગ્રંથ ૨ બોલ ૯૫ મો)

૭૭ પ્રશ્ન—તથા સ્વરતરાંરડ પ્રતિમાની પ્રતિષ્ઠા માલારોપણ શ્રીસૂરિમંત્રધારી કરડ, બીજા યતિ ન કરડ, તે સ્યું ?

ભાષા:—ખરતરોને જિનપ્રતિમાની પ્રતિષ્ઠા. માલારોપણ આદિ સૂરિમંત્રધારક (આચાર્ય) શિવાય બીજા યતિ ન કરે, તે સ્યું ?

તત્રાર્થે—શાસ્ત્રે પ્રતિમાની પ્રતિષ્ઠા સૂરિમંત્રધારીનહં કહી છડ, યથા—“રૂપ્યકચ્ચોલકસ્થેન, શુચિના મધુસર્પિષા । નયનોન્મીલનં કુર્યાત્, સૂરિઃ સ્વર્ણશલાકયા ॥ ૧ ॥” ઇતિ શ્રીઉમાસ્વાતિવચઃ તપાગચ્છીય સામાચારીગ્રન્થે ચ (પત્ર ૩૧) । “સદસેણ ધવલવત્થેણ વેદિયં વાસધૂવવત્થૂર્હિં । અભિમંતિઃ તિવારં, સૂરિણા સૂરિમંતેણ ॥૧॥” ઇતિ શ્રીસમુદ્રાચાર્યવચઃ । તથા “સૂરિઃ પ્રતિષ્ઠાં કુર્યાત્” ઇતિ નિર્વાણકાલિકાગ્રન્થે । તથા ‘પ્રતિષ્ઠામર્હતાં યો હિ, કારયેત્સૂરિમન્ત્રતઃ ॥૧॥ ઇતિ શત્રુઙ્ગયમાહાત્મ્યે । “વાસાક્ષતાઃ સૂરિમન્ત્રે-ણાભિમન્ત્ર્ય પવિત્રિતાઃ । ક્ષિપ્તાઃ (ક્ષેપ્યા) ધ્વજેષુ દણ્ડેષુ, ચૈત્યવિમ્બેષુ સૂરિભિઃ ॥૧॥” ઇતિ લઘુશત્રુઙ્ગયમાહાત્મ્યે વિક્રમાત્ ૪૭૭ વર્ષનિષ્પન્ને । ઇત્યાદિ પૂર્વાચાર્ય પરમ્પરાઅહં શ્રીસૂરિમંત્રકરી સૂરિમંત્રધારીની પ્રતિષ્ઠા જાગીવી, બીજા પાંહિ જે પ્રતિષ્ઠા કરાવડ તે જાણડ, માલારોપણ પુણિ સૂરિમંત્રધારી અમ્હારડ કરડ, શ્રીપૂજ્યજીનહં આદેશહં બીજાઈ પદિક માલારોપણ કરડ છડ, પરં જિમ ઋષિમતીયાંરડ ઉપધાન તપ અણવહ્યાં અનુજ્ઞાની નાંદી અણકીધહં જેહવા તેહવા માલારોપણ કરડ, તે સ્યું ? ૭૭ ।

ભાષા:—શાસ્ત્રોમાં જિનપ્રતિમાની પ્રતિષ્ઠા સૂરિમંત્રધારીને કહી છે, જેમ કે ઉમાસ્વાતિ વાચક કહે છે કે—“ રૂપાના વાટકામાં રહેલ પવિત્ર મધુ અને ઘીથી સ્વર્ણમય શક્તાકાવડે આચાર્ય જિનપ્રતિમાને નેત્રાંજન કરે ” એમજ તપા ગચ્છની સમાચારીમાં પણ કહેલ છે, સમુદ્રાચાર્યકૃત પ્રતિષ્ઠા કલ્પમાં કહ્યું છે કે—“ છેડાવાળા સફેદ વસ્ત્રથી આચ્છાદિત જિનપ્રતિમાને આચાર્ય મહારાજ સૂરિમંત્રવડે અભિમંત્રિત કરિ ધૂપ આદિ સહિત વાસક્ષેપ કરીને સ્થાપિત કરે ” અને નિર્વાણ કલિકામાં (આચાર્ય પાદલિપ્ત સૂરિ) કહે છે કે—“ આચાર્ય પ્રતિષ્ઠા કરે ” (ધનેશ્વરસૂરિકૃત) શત્રુજય માહાત્મ્યમાં કહ્યું છે કે “ જે (આચાર્ય) સૂરિમંત્રવડે અહ્-હ-યિંઓની પ્રતિષ્ઠા કરાવે છે ” તેમજ વિક્રમ સંવત્ ૪૭૭ માં રચાયેલ ત્ર્યુશત્રુજય માહાત્મ્યમાં લખ્યું છે કે “ સૂરિમંત્રથી અભિમંત્રિત કરીને પવિત્ર કરેલા વાસક્ષેપ મિશ્રિત અક્ષતોનો નિક્ષેપ ધ્વજઓ. ધ્વજદંડો. અને જિનપ્રતિમાઓ ઉપર આચાર્ય મહારાજે કરવો ” છત્યાદિ (ખરતર ગચ્છથી પહેલાના પણ) પૂર્વાચાર્યોની પરંપરાએ સૂરિમંત્રે કરી પ્રતિષ્ઠા સૂરિમંત્ર ધારક આચાર્ય કરાવે. એમ જાણવું. (છતાં) બીજા પાસે કરાવે (તો) તે (કરાવનાર) જાણે, માલારોપણ અમારે સૂરિમંત્ર ધારક આચાર્ય કરાવે છે, (અને પ્રસંગે) આચાર્યના આદેશથી માલારોપણ બીજા પણ પદ્મવીધરો કરાવે છે, પરંતુ ઋષિમતીઓને ઉપધાન તપ વહ્યા વગર તેમ તેની અનુજ્ઞાનંદી કર્યા વગર જેવા તેવાઓ માલારોપણ કરે છે, તે શું? (તપા ખરતર ભેદ ગ્રંથ ૧ બોલ ૭૯, ગ્રંથ ૨ બોલ ૮૬ મો)

૭૮ પ્રશ્ન—તથા સ્વરતરાંનંદ યતિ ઉપધાન વહીનંદ માલા પહિરંદ, તે શું?

ભાષા:—ખરતરોને યતિઓ ઉપધાન વહીને માળા પહેરે, તે શું?

તત્રાર્થે—ત્વરતર યતિ સાતઙ્ગ ઉપધાન તપ વહૈ “ જોગવં
 ઉદહાણવં ” ઇતિ ઉત્તરાધ્યયન (અ૦ ૧૧ ગા૦ ૧૪) વચનાત્,
 જે માલા તપ છૈ તે છાંડે ઉપધાનાનાં સમુદેશ તથા અનુજ્ઞાની
 નાંદિ છૈ, સમુદેશ તથા અનુજ્ઞા વિણ કીધાં ભણિવડ તથા
 ભણાવિવડ ન સૂમ્ઙ્ગ, ઋષિમતીયાંનંદ ઉપધાન ન વહૈ તડ માલા
 કિમ પહિરૈ ? પરં તપાના કીધા આચારપ્રદીપ ગ્રન્થમાંહિ જ્ઞાના-
 ચારનંદ અધિકારિ (મુદ્રિતે પત્ર ૧૯) યતિયાંનંદ પુણિ ઉપધાન તપ
 વહિવા કહ્યા છૈ, યથા “ તદેવં સાધુભિઃ શ્રાદ્ધૈશ્ચોપધાનતપો-
 ઽવશ્યકૃત્યતયા સમસ્તાન્યતપોભ્યઃ પ્રથમમેવ સમયગારાધ્યં ”
 ઇત્યાદિ (લિ૦) ૨૭ પત્ર જોડવડ ॥ ૭૮ ॥

ભાષા:-ખરતર યતિ સાતે ઉપધાન તપ વહે છે, ઉત્તરાધ્યયન (સૂત્ર
 અ. ૧૧ ગા. ૧૪) માં કહ્યું છે કે “ સાધુ જોગવાન અને ઉપધાનવાન
 હોય. ” (એમાં સાતમે ઉપધાન) જે માળા તપ છે તે જ્યે ઉપધાનોના
 સમુદેશ તથા અનુજ્ઞાનંદી છે, સમુદેશ તથા અનુજ્ઞા કીધા વગર ભણવું
 ભણાવવું સૂઝે નહીં, ઋષિમતીઓને ઉપધાન વહેતા નથી તો માળા
 કેમ પહેરે ? પરંતુ તપાના કીધેલા આચારપ્રદીપ ગ્રંથ (મુદ્રિત પત્ર ૧૯)માં
 જ્ઞાનાચારની આરાધનાનાં અધિકારે યતિઓને પણ ઉપધાન વહેવાનું કહ્યું
 છે. જેમકે “ એ રીતે સાધુઓએ અને શ્રાવકોએ અવશ્ય કૃત્યપણે સમસ્ત
 અન્ય તપોથી પહેલાંજ ઉપધાન તપ સારી રીતે આરાધવું ” ઇત્યાદિ જોવું.

(તપા ખરતર ભેદ ગ્રંથ ૧ ખોલ ૮૦, ગ્રંથ ૨ ખોલ ૮૭ મો)

૭૬ પ્રશ્ન—તથા ત્વરતરાંનંદ ઇરિયાવહી વિણ પઢિકમ્યાં રાઈ
 પાયચ્છિત્તના કાડસગ વિણ કીધાં સવારે ક્રિયાકાલિ પૂજિવડ ન

સૂમ્મઈ અનઈ માંમ્મઈ ઇરિયાવહી વિણ પઢિકમ્યાંજિ ઉપામરા પૂંજઈ, તપારઈ સવારે તથા માંમ્મઈ ઇરિયાવહી પઢિકમ્યાંજિ પૂંજઈ. એ સ્યું ?

ભાષા—અરતરોને સવારે (પડિલેહણાની) ક્રિયા વખતે ધરિયાવહી પડિકમ્યા વગર અને રાધ પાયચ્છિત્તનું કાઉરસગ્ગ દુર્યા શિવાય (ઉપાશ્રય) પૂંજવું નથી કલ્પતું અને સાંજે ધરિયાવહી પડિકમ્યા વિનાય ઉપાશ્રય પૂંજે છે. તપાને સવારે ને સાંજે ધરિયાવહી પડિકમીનેજ પૂંજે છે. એ શું ?

તત્રાર્થે—તુમ્હે એ પ્રશ્ન અણપરિચ્છયડ કર્યડ જાણીવડ, હિંહાં તપાં મળી મામ્મહડ પૂછિવડ છઈ. જઈ ઇરિયાવહી અણપઢિકમ્યાં પૂંજીવડ ન સૂમ્મઈ ! તડ ‘ઈરિયાવહી અણપઢિકમ્યાં કાંઈ ક્રિયા કીધી થકી ન સૂમ્મઈ’ હમ કહીયઈ છઈ, શ્રાવકદિનકૃત્યમાંહે—
“ તઓ પોસહસાલં નુ, ગંતૂણં તુ પમજ્જણ. ઠાવિત્તા તત્થ રિં નુ, તઓ સામાઈયં કરે ॥૧॥ ” ઇયઈ ગાથામાંંહ સામાયિક લેઈ પછઈ ઇરિયાવહી કહી, અનઈ અમ્હારઈ પ્રમાતિ પૂંજતાં જે ઇરિયાવહી પઢિકમીયઈ છઈ પૂંજિવાની વેલાયઈ તે રાઈપ્રાયચ્છિત કરિવાનઈ કાજિ, પરં પૂંજિવાનઈ કાજિ નથી પઢિકમતા, તે કાઉસગ કર્યડ ન સૂમ્મઈ, એવં પ્રીછેજ્યો ॥ ૭૬ ॥

ભાષા—તમોએ ઓ પ્રશ્ન વગર વિચાર્યે કર્યો જાણવો, અહિં તપાઓને સામો પૂછવાનું છે કે—જે ધરિયાવહી પડિકમ્યા વગર પૂંજવું નથી સૂઝતું તો ‘વગર ધરિયાવહી પડિકમ્યે કાંઈ પણ ક્રિયા કરવી નથી સૂઝતી’ એમ + કહેવાય છે, (જતાં) શ્રાવક દિનકૃત્યમાં “તઓ પોસહ-

+ મહાનિશીથ સૂત્રના ‘અપઢિકંતાણ ઇરિયાવહીયાણ ન કપ્પઈ ચેવ કાઉં કિંચિ(વિ) ચેડયવંદણસજ્જાયાઈયં’ આ પાઠના આધારે.

સાલં નુ” આ ગાથાથી (ઘરિયાવહી પડિકમ્યાવગર) સામાયિક લઘને પછી (ની ગાથામાં) ઘરિયાવહી (પડિકમવી) કહી છે. ✕ અને અમારે સવારના

✕ તપા ખ. ભેદ પૃ. ૬૮ માં મૂળ લેખકે સાંજ-સવાર બન્ને ટાઇમની પડિલેહણ પછી ઘરિયાવહિયા પડિકમીને કાળે કાઢવું અને કાળે પરહવ્યા પછી ફરી ઘરિયાવહિયા પડિકમવી આ તપગચ્છની સામાયારી શાસ્ત્રસંમત બતાવવા નિષ્ફળ પ્રયત્ન કર્યો છે, તેની નીચે ટિપ્પણની આદ લીટીમાં જાળ્યાચાર્ય તરફથી એમ સાબીત કરવા પ્રયાસ સેવાયો છે કે—આજે કાળે કાઢતાં જે ત્રણ વાર ઘરિયાવહી પડિકમાય છે તે તપગચ્છની સિદ્ધાંત સામાયારીથી વિરુદ્ધ છે એ વખત ઘરિયાવહી પડિકમવાનું તપગચ્છની સામાયારી કહે છે, પરંતુ પ્રાચીન શાસ્ત્રકારો અને ખાસ તપગચ્છને માન્ય આચાર્યો પણ પોતપોતાના સામાયારી ગ્રંથોમાં સવારે સંપૂર્ણ પડિલેહણ થઈ રહ્યા પછી, તે સાંજે ઉપધિ મુલપત્તી પડિલેહ્યાં પહેલાં કાળે કાઢવા કહે છે, જુઓ—

“પડિલેહિઝણ ઉવહિં, ગોમમ્મિ પમજ્જણા ઉ વસહીણ ।

અવરણહે પુણ પઢમં, પમજ્જણા તયણુ પડિલેહા ॥ ૫૬ ॥”

(પ્રવ. સા. સડીક. પાના ૧૬૬)

છોભાવંદણં કાઉં ‘ઇચ્છાકારેણ સંદિસહ પડિલેહણં કરેમિ’ પુણો વંદિય ‘પોસહસાલં પમજ્જેમિ’ ત્તિ મણિય તઓ (અ)મત્તટ્ટી ઇયરો ય દોવિ મુહણંતગં સકાયં (ચ) પડિલેહિંતિ । પચ્છા અમત્તટ્ટીઓ સ્વમાસમણદુગેણ અંગપડિલેહણં સંદિસાવેહ । તઓ પોસહસાલં પમજ્જેહ । તઓ દુસ્વમાસમણપુઠ્ઠવયં મુહણંતયં પડિલેહિય અપ્પણો ઉવહિં થંડિલે ય સંદિસાવિય વત્થકંબલાહ જાવ કહિપટ્ટયં પડિલેહેહ ।”

(પંચા. ચૂ. પૃ. ૧૦૭)

ઉપાશ્રય) પૂંજ્યાની વેલાયે જે ઇશિયાવહી પડિક્કીએ છીએ તે રાધ પાયચ્છિત્ત (કાઉસગ્ગ) કરવા માટે પડિક્કીએ છીએ, પરંતુ પૂંજ્યા

“મુહપોત્તિયં પડિલેહિત્તા સ્વમાસમણદુગેણં ઉવહિં સંદિસાવિય વત્થકંબલાઇ પડિલેહેઇ । તઓ પોસહસાલં પમજ્જિય તઓ સ્વમાસમણેણં સંદિસાવિય બીયસ્વમાસમણેણં ‘સઙ્ખાયં કરેમિ’ત્તિ મણિત્તા પચ્છા પઢઇ ગુણઇ પોત્થયં વા વાઇ સાહુસમીવે વા સિદ્ધંત-સવણં વા કરઇ ।” (સુબોધા સામા ૦ પાના ૩૬. સવારની પડિ ૦ વિધિ)

“સ્વમાસમણપુવ્વં ઉવહિમુહપુત્તિં પેહિઅ સ્વમાસમણ દુગેણ સંદિસાવિઅ વત્થકંબલાઇ પડિલેહેઇ, તઓ પોસહસાલં પમજ્જિઅ કજ્જયં ઉદ્ધરિઅ પરિટ્ઠવિઅ રીરિઅ પડિક્કમિઅ ગમણાગમ-ણમાલોઇ, સ્વમાસમણપુવ્વં મંડલીએ સાહુવ્વ સઙ્ખાયં કરેઇ, તઓ પઢઇ ગુણઇ પુત્થયં વા વાઇ જાવ પોરિસી, તઓ સ્વમાસમણપુવ્વં પુત્તિં પેહિઅ તહેવ સઙ્ખાયાઇ જાવ કાલવેલા, જઇ દેવા વંદિઅવ્વા હંતિ તો આવસિસયાપુવ્વં ચેઇહરે ગંતું દેવે વંદેઇ ।”

(સુબોધા સામા ૦ પાના ૩૭, સાંજની પડિલેહણુ વિધિ)

તઓ પોસહસાલં પમજ્જિય ઉદ્ધરિય કજ્જયં ઠવણાયરિયં પડિલેહ-ણાપુવ્વયં ઠવિય સ્વમાસમણં દાઁ મુહપોત્તિં પેહિય સઙ્ખાયં કરિય સ્વમાસમણદુગેણ ઉવહિથંડિલે સંદિસાવિય વત્થકંબલાઇ પડિલેહિઅ પુવ્વણેવ સઙ્ખાયાઇ કુણમાણો અચ્છઇ તાવ જાવ કાલવેલા ।’

(સામાચારી પ્ર. પાના ૧૨. સવારની પડિલેહણુ વિધિ.)

“ તઓ ઠવણાયરિયં પેહિઅ પોસહસાલં પમજ્જિઅ સ્વમાસ-

માટે નથી પડિકમતા, (ધરિયાવહી પડિકમ્યા વગર) તે કાઉસગ્ગ કર્યો સૂઝે નહીં, એ રીતે હકીકત છે.

મણેણ ઉવહિમુહપત્તિં પેહિઅ ××× ઉવહિં સંદિમાવિય વત્થકંબલાહ પેહિય” છત્યાદિ (સા. પ્ર. પાના ૧૨ સંધ્યા પડિલેહણુ વિધિ.)

“પ્રાતઃ પ્રેક્ષાદ્વિતયે, વિહિતે વમતિઃ પ્રમજ્યતે પ્રકટમ્ ।

અંગપ્રેક્ષાનંતર-મપરાણ્હે મૃજ્યતે વસતિઃ ॥૪૪॥”

(હેમપ્રભસૂરિકૃત સાધુદિનકૃત્ય)

આ ઉપર આપેલ બધા પાઠો સવારે પડિલેહણુ સંપૂર્ણ થયા પછી, અને સંધ્યાએ ઉપધિમુહપત્તી પડિલેહ્યાં પહેલાં કાળે કાઢવાનું સ્પષ્ટ કહે છે, છતાં આજના તપાઓ બન્ને ટાઇમ પડિલેહણુ સંપૂર્ણ થઈ રહ્યા પછીજ કાળે લેવાનું જે એકાંત હઠ પકડે છે તે એમનો મહાન્ દુરાગ્રહ છે, તેમ કાળે લેવામાં ત્રણ કે બે ધરિયાવહી પડિકમવાની ખેંચ પણ તદ્દન શાસ્ત્રવિરૂદ્ધ મનઘડત છે, કારણ કે એજ ઉપરોક્ત પાઠોમાં કાળે પરહવી વોસિરાવીને પછી એકજ ધરિયાવહી પડિકમવાનું સ્પષ્ટ વિધાન છે.

ખીજું આ પાઠોમાં દેવવંદન પણ એકજ મધ્યાહ્ન સમયના કહ્યા છે, સવારે પડિલેહણુ પછી દેવવંદન કર્યા વગરજ સજ્જાય કરવાનું, ને સંધ્યાએ પડિલેહણુ પછી દેવવંદન કર્યા વિનાજ પ્રતિક્રમણુ કરવાનું ચોક્કસ કહેલ છે, તેમ અતિયારમાં “ કાલવેલાએ દેવ ન વાંઘા ” આવું બોલવા છતાંય આજના તપાઓ સવારના કાલવેલા વીતી જવા પછી અને સાંજે પાખીના દિવસે કાલવેલા આવતાં પહેલાંજ જે દેવવંદન કરે છે તે શાસ્ત્રવિરૂદ્ધ મનકલ્પિત પોતાના ધરનો આચાર છે.

(તપા ખરતર ભેદ ગ્રંથ ૧ ખોલ ૮૧, ગ્રંથ ૨ ખોલ ૮૮ મો)

૮૦ પ્રશ્ન-તથા જે સ્વરતર શ્રાવક પોમહ લેતાં ઠેપાડા પડિલેહઈ, અનઈ મામાયિક લેતાં પહિલાં ઠેપાડા ન પડિલેહઈ, તે સ્યું ?

ભાષા-ખરતર શ્રાવક પોસહ લેતાં પહેલાં ઠેપાડા (ધોતીયું) પડિલેહે છે અને સામાયિક લેતાં નથી પડિલેહતા, તે શું ?

તત્રાર્થે - સામાયિકની ક્રિયા ઠેપાડા વિણ પડિલેહ્યાં સૂમ્મઈ પિણ પોમહની ક્રિયા ઠેપાડા વિણ પડિલેહ્યાં ન સૂમ્મઈ, જિમ ઋષિમતીની શ્રાવિકા સામાયિક કરતાં ઓઢણા પહીરણા કાંચલી પ્રમુખ ન પડિલેહઈ. પૂંછણા મુહપત્તી પડિલેહઈ, અનઈ તેહિજ શ્રાવિકા પોમહ લેતાં સર્વ ઉપકરણ પહિરણા ઓઢણા કાંચલી પ્રમુખ પહિલું પડિલેહઈ, એતલઈ સામાયિક કરતાં ઠેપાડા ન પડિલેહીયઈ, અનઈ પોમહ કરતાં તે પડિલેહીયઈ, વિચારી જોડ્યો । તથા સ્ત્રીનઈ ૧ ઓઢણા શરીર સંલગ્ન છઈ તે સામાયિક લેતાં ન પડિલેહઈ પરં બીજા ઓઢણા ઓઢઈ તડ તે વિણ પડિલેહ્યાં ઓઢ્યા ન સૂમ્મઈ, શ્રાવકનઈ સામાયિક ઓઢણા ઓઢી ન કરિવા, કારણઈ પાંગુરણા સંદિસાવી પડિલેહીનઈ ઓઢિવા ॥ ૮૦ ॥

ભાષા:-ઠેપાડા પડિલેહ્યા વગર સામાયિકની ક્રિયા સૂઝે. પણ પોસહની ક્રિયા ન સૂઝે, જેમ ઋષિમતીની શ્રાવિકા સામાયિક કરતાં ઓઢવા પહેરવાનાં લુગડાં ન પડિલેહે પરંતુ કટાસણું મુહપત્તી પડિલેહે છે, અને તેજ શ્રાવિકા પોસો લેતાં ઓઢવા પહેરવાના વસ્ત્રાદિ બધા ઉપકરણો પહેલાં પડિલેહે છે, તેમ સામાયિક લેતાં ઠેપાડા ન પડિલેહે અને પોસહ લેતાં પડિલેહે છે, વિચારી જેજે, બીજું સ્ત્રીને ઓઢવાનું એક લુગડું

જે શરીર સંત્રગ્ન (ઓદેહ) હોય તે ન પડિલેહે. પરંતુ ખીજ વધારાનાં યુગ્મ ઓઢવા હોય તો તે વગર પડિલેલાં ઓઢવા ન કહ્યે, તેમ આવકને સામાયિકમાં ઓઢવાનું નથી. છતાં કારણુ યોગે ઓઢવાનું લેવું હોય તો પાંગુરણા સંદિસાવી પડિલેહીને ઓઢવાં. +

(તપા ખરતર ભેદ ગ્રંથ ૧ ઓણ ૮૨, ગ્રંથ ૨ ઓણ ૮૯ મો)

૮૧ પ્રશ્ન—તથા ચરતર યતિ તથા શ્રાવક મધ્યાહ્નિ ૫ શક્ર-સ્તવે કરીનઈ જિમ દેવવાંદઈ છઈ તિમ પઢિકમણાની વેલાયડં સાંમિ સવારે ૫ શક્રસ્તવે દેવ ન વાંદઈ, તે સ્યું ?

ભાષા:—ખરતર યતિ અને આવક જેમ મધ્યાહ્ને પાંચ શક્રસ્તવે દેવવાંદન કરે છે. તેમ સાંજે ને સવારે પઢિકમણાની વેળાએ પાંચ શક્રસ્તવે દેવવાંદન નથી કરતા. તે શું ?

તત્રાર્થે—છૂટા શ્રાવક તપોવિશેષઈ ત્રિકાલ ૫ શક્રસ્તવે દેવ વાંદઈ છઈ, પરં પોસહમાંહિ ૨ પઢિકમણા કરતાં દેવ વાંદઈ, બિપહરે દેહરઈ પાંચ શક્રસ્તવે વાંદઈ, એ વિધિ છઈ. જડ પોસહમાંહિ શ્રાવક ત્રિકાલઈ ૫ શક્રસ્તવે દેવ વાંદઈ તડ યતિ સદા તથા તપોવિશેષઈ ત્રિકાલઈ ૫ શક્રસ્તવે દેવ કાંઈ ન વાંદઈ ? દેવ વાંદિ-વડ સહૂનઈ સરીખડ છઈ, એવં જ્ઞેયં ॥ ૮૧ ॥

ભાષા—પોસહવગર છૂટા શ્રાવકો તપસ્યાઓમાં ત્રણ કાળ પાંચ—

+ તપા શ્રાવકો પોસહ અને સામાયિકમાં ગુરૂની આજ્ઞા લેવા નિમિત્તે ‘પાંગુરણા સંદિસાઉ’ના આદેશો લીધા વગરજ મન ફાવતું ઓઢી લે છે તો પછી બેસણાના આદેશો શા માટે લિયે છે ? એનો ઉત્તર શાસ્ત્ર પ્રમાણથી જન્મ્યાચાર્ય આપે.

શકસ્તવે આઠ થોપે દેવવંદન કરે છે, પરંતુ પોસહમાં એ વેળા પડિકમણું કરતાં દેવ વાંદે અને અપોરે દેરાસરમાં પાંચ શકસ્તવે દેવ વાંદવાની વિધિ છે +, જો પોસહમાં શ્રાવક ત્રણે ડાળ પાંચ શકસ્તવે દેવ વાંદે તો પછી સાધુઓ સદા અને તપસ્યાઓમાં ત્રણ ડાળ પાંચ શકસ્તવે દેવવંદન કેમ ન કરે ? દેવવંદન અધાને સરખું છે. એમ જાણવાનું.

(તપા ખરતર ભેદ ગ્રંથ ૧ ઓણ ૮૩, ગ્રંથ ૨ ઓણ ૯૦ મો)

૬૨ પ્રશ્ન-તથા સ્વરતરાંના યતિ પુઢ (પટ) નાસ્વહ છઈં તેહ ઉપરિ વાસક્ષેપ કરઈ, તે દ્રવ્યસ્તવ યતિ કિમ કરઈ ? શ્રીમહાનિશીથમાંહિ તેહનઈ દ્રવ્યસ્તવ નિષેધ્યહ છઈ.

ભાષા:-ખરતરના યતિ પટ નામે છે ને તેનાપર વાસક્ષેપ કરે છે. તે દ્રવ્યસ્તવ યતિ કેમ કરે છે ? શ્રીમહાનિશીથમાં યતિને દ્રવ્યસ્તવ નિષેધ્યો છે.

તત્રાર્થે-તેહ પુઢનઈ વિષઈં જિનપ્રતિમા ન થાઈ, વર્દ્ધમાન વિદ્યાના મંત્ર છઈ, તેહ ઉપરિ વાસક્ષેપ કર્યાં દ્રવ્યસ્તવ ન થાઈ, તથા તીર્થંકર ભગવંત શ્રીગણધરસ્થાપના કરતાં વસક્ષેપચૂર્ણે ઇંદ્રના આણ્યા જે છઈ તેહમાંહિથી મુઢી ભરીનઈ મસ્તકીં નાસ્વહ, એતલઈ સ્યું તે દ્રવ્યસ્તવ થયા ? વલી જિનપ્રતિમા તથા સ્થાપનાચાર્યની સ્થાપના કરતાં વાસક્ષેપ કરઈ છઈ તહ સ્યું તે દ્રવ્યસ્તવ થયા ? એવં વિચારિજ્યો, વલી યોગવહતાં યતિયાંનઈ વાસક્ષેપ કરિવહ છઈ, યદુક્તં શ્રીવ્યવહારભાષ્યે-“નંદી ભાસણચુરણે, ય વિભાસા

+ સુબોધા સામાચારી તથા આચારવિધિ નામક સામાચારી પ્રકરણમાં પણ એકજ મધ્યાનહના દેવવંદન કહ્યા છે, સાંજ સવારના નથી કહ્યા, જુઓ પૃ. ૨૪૪-૨૪૫ પર ટિપ્પણમાં આપેલ આ બંને ગ્રંથોના પાડો.

હોઈ અગસુયંધે । મંગલસદ્વાજણનં, અઙ્ગયણાણં તુ વોચ્છેદો ?
 વ્યાખ્યા-અઙ્ગે શ્રુતસ્કન્ધે ચ ભવતિ અનુજ્ઞાયાં કર્ત્તવ્યાયાં નન્દી,
 ભાષણં- જ્ઞાનપાઠોચ્ચારણં, ચૂળે વિભાષા, યદિ ભવન્તિ
 વાસાઃ શિરસિ હ્લિપ્યન્તે તદભાવે કેસરાણ્યપિ, કસ્માદે-
 વમનુજ્ઞા ક્રિયતે ? इति चेत् अत आह- नन्दिभाषणे
 વાસનિક્ષેપે ચ મઙ્ગલં ભવતિ, જ્ઞાનપશ્ચવસ્ય ભાવ-
 મઙ્ગલત્વાત્)લં ? વાસનિક્ષેપસ્ય ચ દ્રવ્યમઙ્ગલત્વાત્ । તથાઽન્યેપાં
 પરમશ્રદ્ધાજનનં, યથૈકો અમુકસ્યાઙ્ગસ્યાઙ્ગશ્રુતસ્કન્ધસ્ય(વા)
 પારગત આચાર્યેણ ચૈવં સકલજનસમક્ષં પૂજિતઃ તસ્માદ્વયપિ
 ગાઢતરમુત્સાહં કુર્મઃ इति । તથા ચાધ્યયનાનાં ચાવ્ય-
 વચ્છેદો, અન્યથા ના(ન)નુજ્ઞાતમન્યેષાં દીયત इति तेषां
 વ્યવચ્છેદઃ સ્યાત્ ।” इति व्यवहारटीकायां । તથા શ્રાવક શ્રાવિ-
 કાનઈ માથઈ સહુ ગચ્છવાસી વાસક્ષેપ કરઈ છડે તે મ્યું દ્રવ્યસ્તવ
 થયત ? , एवं जोड्यो ॥८२॥

ભાષા:-તે પટની અંદર જિનપ્રતિમા નથી હોતી. વર્ધ્ધમાન
 વિદ્યાના મંત્ર લખેલ હોય છે, તે ઉપર વાસક્ષેપ કરતાં દ્રવ્યસ્તવ ન હોય.
 તીર્થંકર ભગવાંતો ગણુધરસ્થાપના કરતાં ઇન્દ્રના લાવેલા વાસક્ષેપના
 થાળમાંથી મુટ્રડી ભરીને ગણુધરોના મસ્તકપર નાંખે છે. એટલે શું
 તે દ્રવ્યસ્તવ થયું ? વલી જિનપ્રતિમા તથા સ્થાપનાચાર્યની સ્થાપના
 કરતાં વાસક્ષેપ કરે છે તો શું તે દ્રવ્યસ્તવ થાય ? એમ વિચારજો,
 વલી યોગવહતાં સાધુઓને વાસક્ષેપ કરવાનું શાસ્ત્રકારો કહે છે. જેમ કે
 વ્યવહાર ભાષ્યની “ નંદી ભાસણ ચુણ ” ઇત્યાદિ ગાથાની ટીકામાં

કહ્યું છે કે-‘ અંગ અને શ્રુતસ્કંધની અનુજ્ઞા કરવામાં નંદી કરવાની હોય છે. ભાષણ એટલે ભણવાના પાઠનો ઉચ્ચારણ કરવું, વાસક્ષેપ હોય તો મસ્તકે નાંખે. અન્યથા કેસરાઓથી પણ ચલાવાય, આ પ્રકારે અનુજ્ઞા શા માટે કરવી ? એવી શંકા કોઈ કરે તો કહે છે કે-ભણતાં વાસનિક્ષેપ કરવું મંગલ છે. જ્ઞાનપંચક ભાવમંગલ અને વાસનિક્ષેપ દ્રવ્યમંગલ કહેવાય છે. તેમ ખીજાઓને અત્યંત શ્રદ્ધા ઉત્પન્ન કરવી છે. જેમ કે એક કોઈ સાધુ અમુક અંગ કે શ્રુતસ્કંધને પૂરો ભણી ગયો તે આચાર્ય મહારાજે બધા જનોની સમક્ષ એનો સત્કાર કર્યો. માટે અમો પણ (યોગોપધાન તપમાં) અત્યંત ઉત્સાહ કરિયે, અને આવી રીતે અનુજ્ઞા કરવાથી અધ્યયનોનો વિચ્છેદ ન થાય. અન્યથા અનુજ્ઞા વગર તો ખીજાઓને અધ્યયનની વાચના દેવાય નહીં, એટલે તેનો વિચ્છેદ જ થાય’ એમ વ્યવહારસૂત્રની ટીકામાં કહ્યું છે. ખીજું બધાય ગચ્છવાસીઓ શ્રાવક શ્રાવિકાઓને માથે વાસક્ષેપ નાંખે છે, તે શું દ્રવ્યસ્તવ થયું ? આ બધી વાત જોજો-વિચારજો.

(તપા ખરતર ભેદ ગ્રંથ ૧ બોલ ૮૪, ગ્રંથ ૨ બોલ ૯૧ મો)

૮૩ પ્રશ્ન-તથા સ્વરતર શ્રીમહાવીરના ૬ કલ્યાણક માનઈ છઠ્ઠ, તે સ્યું ?

ભાષા:-ખરતર મહાવીર ભગવાનના કલ્યાણક ૭ માને છે, તે શું ?

તત્રાર્થે-શ્રીકલ્પસિદ્ધાંતમાંહિ “પંચ હત્યુત્તરે હોત્થા x x x સાઈણા પરિનિવ્વુઢે ભયવં” એહવા પાઠનઈ અનુસારિ શ્રીજિન-વલ્લભસૂરિં શ્રીમહાવીરસ્વામિના ૬ કલ્યાણક લિખ્યા, ગર્ભાપહાર કલ્યાણક દિનપણઈ ગિણ્યા, તથા શ્રીહરિભદ્રસૂરિકૃત પંચાશકનઈ મેલિ ગર્ભાપહાર કલ્યાણક તે અચ્છેરાનઈ મેલિ અણગિણતાં પાંચ કલ્યાણક પુણિ લિખ્યા છઠ્ઠ, પરં સગલે ગચ્છવાસીએ તથા

મતીએ શ્રીમહાવીરના ૬ કલ્યાણક માન્યા, આંપણાં આંપણાં
 કીધા ગ્રન્થાંમાંહિ ૬ કલ્યાણક લિખ્યા છૂડ, જિમ શ્રીપૃથ્વી-
 ચન્દ્રસૂરિકૃત કલ્પટીકામાંહિ તથા શ્રીકલ્પવૃત્તિકાર શ્રીજિનપ્રભસૂરિ
 થકી પહિલત શ્રીવિનયેદુસૂરિકૃત કલ્પનિરુક્તમાંહે તથા તપાગચ્છીય
 શ્રીકુલમંડનસૂરિકૃત શ્રીકલ્પાવચૂર્ણિમાંહિ તથા આંચર્લયાની કીધી
 કલ્પાવચૂરિમાંહિ “બહુવચનં બહુકલ્યાણકાપેક્ષં” એહવે વચને
 ગર્ભાપહારનહ કલ્યાણક નામ કહ્યત, તથા આગમીયાનહ ગચ્છિ
 શ્રીજયતિલકસૂરિકૃત સુલભા શ્રાવિકાનહ ચરિત્રમાંહે “સિદ્ધાર્થ-
 રાજાઙ્ગજ! દેવરાજ!, કલ્યાણકૈઃ પદ્મિરિતિ સ્તુતસ્ત્વમ્।”
 ઇતિ વાક્યેન મહાવીર ચરિત્ર છાએ કલ્યાણકે કરી સહિત જાણિવત,
 તથા “પુરમત્થિ વદ્ધમાણં, સુવદ્ધમાણં સિરીહિં પડરાહિં ।
 બહુવિહમહલ્લકલ્લાણ-કારણં વદ્ધમાણં વ ॥૧॥” ઇતિ શ્રીધર્મગત્ત
 પ્રકરણવૃત્તૌ શ્રીતપાગચ્છીય દેવેન્દ્રસૂરિકૃતાયાં એકોનવિંશતિતમ
 શ્રાવકગુણવર્ણનાયાં વિમલકુમારચરિત્રે, એતલહ તપહ દેવેન્દ્રસૂરિહ
 ઇએ વચને શ્રીમહાવીરને ઘણા કલ્યાણક કહ્યા છૂડ, જોડ્યો ।
 તથા “શ્ચસુ કલ્યાણકેષુ હસ્ત ઉત્તરો યાસાં તાઃ હસ્તોત્તરાઃ-
 ઉત્તરાફાલગુન્યઃ” ઇતિ તપાગચ્છીય કુલમંડનસૂરિકૃત કલ્પવૃત્તૌ,
 હમ શ્રીમહાવીરના ઝ કલ્યાણક ઘણા શાસ્ત્રન્યાયહ ગચ્છાંતરીયકૃત
 વલ્પની ટીકા તથા કલ્પનિરુક્તનહ ન્યાયહ મતીયાંનહ ન્યાયહ જાણિવા ।

તથા શ્રીસમવાયાંગ સૂત્રમાંહિ ૧૩૪ સમવાયહ દેવનંદાના
 ગર્ભ થકી જે મહાવીરસ્વામી ત્રિશલાનહ ગર્ભહ આંચ્યા તેહવહ
 વચનહ ત્રિશલાનહ ગર્ભહ ડુપના તે અટ્ટાવીસમત ભવ ગિણયત છૂડ,

छेहलउ भव ते जन्म कहीयइ, ते कल्याणक कहीयइ, आसोज-
वदि १३ दिनइ श्रीमहावीर देवानंदानी कूखि थकी त्रिशलानी
कूखि आठ्या, ते भणी ए तिथि कल्याणकनी थाइ, सहू गच्छनइ
गीतार्थ पिण ६ कल्याणक श्रीमहावीरना मान्या छइ ते विचारि-
नइजि मान्या छइ ।

अपरं जे आदीश्वरनइ अधिकारि श्रीजंबुदीवपन्नत्ती
मांहि 'पंच उत्तरासाढे-अभीइ छठे × × × परिनेव्हुडे'
एहवा पाठ छइ तिहां कल्याणकना अर्थ मिलइ नहीं, जे भणी
कल्याणक आराधीयइ ते तिथइ थाइ परं नक्षत्रनउ आराधिवउ
कल्याणक न होइ, इहां उत्तरापाढा नक्षत्र कहाउ परं तिथिनुं
नाम न खार्यउ तउ स्यइ तिथि आराधीयइ ? अभिषेक दिनइ
अरिहंत भगवंतना आराध्य छइजि परं ते दिन न कहा,
श्रीआचारांग निर्युक्तिमांहि दर्शन भावनानइ अधिकारि तीर्थकरनी
जन्माभिषेक भूमिका मान्य कही छइ, तिहां जे पहुंचइ ते सम्यक्त्व
शुद्ध करइ, जइ जन्माभिषेक भूमिका आराध्य तउ राज्याभिषेक दिन
किम आराध्य न थाइ ? पुणि ते दिन न जाणइ तउ स्युं आराधीयइ ?

तथा 'पंच हत्युत्तरे होत्था' एहना अर्थ करतां पांच स्थानक
ए पुणि थाइ, परं सगले गच्छे सगले गीतार्थे इहां पांच कल्याणकजि
कही वखाण्या छइ, पछे लोकां चचर्यां हिवइ नमनाइ, ए अर्थ
सगले गीतार्थे गच्छवासीए मान्या छइ, ए अर्थ इमजि धर्मार्थीए
सद्दहिवा, श्रीजिनवल्लभाचार्यइ श्रीमहावीर(पर्यंत सगला तीर्थकरो)ना
१२० तथा १२१ सर्व कल्याणक कहा, सगले गच्छे सगले गीतार्थे

૧૨૧ જિમ માંન્યા છઙ્ગે તિમ અમ્હે પિણ ૧૨૧ સર્વ કલ્યાણક
મહાવીર(પર્યંતના માનીયઈ, ગગદ્વેષના વાહ્યા પલ્લવગ્રાહી જે ન
માનઈ તે જાણઈ પરં આપમતી ન થકંચઈ, એવં જોડ્યો ॥૨૩॥

ભાષા:-કલ્પસૂત્રના “પંચહત્યુત્તરે હોત્યા x x x માઈણા પરિ-
નિવ્વુડે ભયવં” એવા પાઠના અનુસારે શ્રીહરિ-વલ્લભસૂરિએ શ્રીમહાવીર
સ્વામીના છ કલ્યાણક લખ્યા. ગર્ભાપહાર(ના દિવસ)ને કલ્યાણક દિવસ
ગણ્યો. અને શ્રીહરિભદ્રસૂરિકૃત પંચાશક ગ્રંથના અનુસારે આશ્ચર્યના કારણે
ગર્ભાપહાર કલ્યાણકને ભેગો ન ગણતાં + પાંચ કલ્યાણક પણ લખ્યા છે

+ કારણ કે એ શાશ્વત (સદાકાળ થતું) નથી. અને ત્યાં પંચા-
શકમાં ભગવાન્ મહાવીરના દૃષ્ટાંતથી ભૂત અને ભાવી તીર્થંકરોના પણ
કલ્યાણકો આચાર્ય શ્રીહરિભદ્રસૂરિ બતાવી રહ્યા છે, એટલે વિચારવાનું
કે જે ગર્ભાપહારને ભેગો લઈને પંચાશકમાં ભગવાન્ મહાવીરના છ
કલ્યાણકો બતાવે તો ભૂત અને ભાવી તીર્થંકરોના કલ્યાણકો કેમ મળે ?
કારણ કે તેઓને એ માતાની કૂખમાં આવવાનું થોડુંએ કાંઈ થયું કે
થવાનું છે ? એટલે ત્યાં (પંચાશકમાં) ભગવાન્ મહાવીરના પાંચ કલ્યા-
ણકો કહ્યા છે, પણ એથી ગર્ભાપહારદ્વારા દેવાનંદાની કૂખથી ત્રિશાલાની
કૂખે ભગવાનનું આવવું જે થયું તેને નીચગોત્રવિપાકરૂપ અત્યંત
નિંદનીયરૂપ આશ્ચર્યરૂપ. અશુભ. અકલ્યાણક. અકલ્યાણકભૂત વિગેરે તો
નથી કહ્યુંને ? જેમ કે તપાના પૂર્વજો વિગેરે કહે છે. જુઓ—

“નીચૈર્ગોત્રવિપાકરૂપસ્ય અતિનિન્દ્યસ્ય આશ્ચર્યરૂપસ્ય ગર્ભાપહા-
રસ્યાપિ કલ્યાણકત્વં કથનમનુચિતં ।” (કલ્પસુબોધિકા)

“ગર્ભાપહારોઽશુભઃ” (કલ્પ સુ૦ ટિપ્પણી સાગરાનંદ)

પરંતુ પ્રાયઃ અધાય ગચ્છવાસી અને મતવાળાઓએ શ્રીમહાવીર ભગવાનના છ કલ્યાણકો માન્યા છે. અને તે મુજબ પોતપોતાના ગ્રંથોમાં

‘કરોષિ ? શ્રીમહાવીરે, કથં કલ્યાણકાનિ ષટ્ ।

યત્તેષ્વેકમકલ્યાણં, વિપ્રનીચકુલત્વતઃ ॥૧૧॥’ (ગુરુતત્ત્વ પ્રદીપ)

“અકલ્યાણકમ્ભૂતસ્ય ગર્ભાપહારસ્ય” (કલ્પ કિરણાવલી)

આ ઉપરોક્ત પ્રમાણો જોતાં ૨૫૪ જણાઈ આવે છે કે સૌધર્મેન્દ્રના આદેશથી હરિણુગમેષિ દેવની મારફતે મહારાણી ત્રિશલાની દૂખે ભગવાન મહાવીરના આગમનને તપાઓ નીચગોત્રવિપાકરૂપ અતિનિંદનીય આશ્ચર્યરૂપ, અશુભ, અકલ્યાણક અને અકલ્યાણકભૂત માને છે. ત્યારે ખરતર ગચ્છવાળાઓ એને ઉચ્ચગોત્રવિપાકરૂપ અતિપ્રશંસનીય મંગલભૂત કલ્યાણકરૂપ અને શુભ માને છે, આ બંને માન્યતાઓના યોગ્યા-યોગ્યતાનો નિર્ણય તો વાંચકો સ્વતઃ કરી લે. સાથે સાથ આગળ ખતાવવામાં આવતી ખાતોનો વિચાર પણ કરવો પરમાવશ્યક છે—

ભગવાન મહાવીર દેવનું આત્મણી દેવાનંદાની દૂખથી ગર્ભાપહાર થઈ ઉચ્ચકુલીન ક્ષત્રિયાણી ત્રિશલાની દૂખે જે આવવું થયું તે જો નીચગોત્રવિપાકરૂપ મનાય તો જ્યાં સદાય નીચગોત્ર કમનૌજ ઉદય છે. એવી નરક ગતિમાંથી નિકળી રાજકુળમાં તીર્થંકરપણે જે ઉત્પન્ન થવું. એને પણ નીચગોત્રવિપાકરૂપ શા માટે ન માનવું ?

ખીજું આશ્ચર્યરૂપ હોવાના અંગે ગર્ભાપહારને જો કલ્યાણક ન મનાય તો જેમ કૃષ્ણવાસુદેવના અપરકંઠાગમનાંતર્ગત વાસુદેવ વાસુદેવનું શંખ-શબ્દથી મળવું, યાતો જેમ હરિવંશ કુલોત્પત્ત્યંતર્ગત યુગલિયાઓનું નરક-ગમન. દેહાયુઃ સંકોચન આદિ પ્રાસંગિક છે. તેમ ગર્ભાપહાર પણ પ્રાસં-

છએ કલ્યાણકો લખ્યા છે, જેમકે શ્રીપૃથ્વીચંદ્રસૂરિ કલ્પટિપ્પનમાં +, તથા કલ્પટીકા (સંદેહ વિપૌષધી) ના કર્તા જિનપ્રભસૂરિજીથી પહેલાં (સં. ૧૩૨૫) શ્રીવિનયેન્દુસૂરિકૃત કલ્પનિરૂકતમાં x તેમ તપાગચ્છીય શ્રીકુલમંડનસૂરિકૃત કલ્પાવચૂર્ણિમાં †, તથા આંચલ ગચ્છવાળાઓની

ગિક છે, ખાસ તો “લોગચ્છેરયમૂળ” ઇત્યાદિ કલ્પસૂત્રના કથનાનુસાર દેવાનંદાની ક્રૂષે આવવુંજ આશ્ચર્ય છે. તેને કલ્યાણક શા માટે માનવું ? અને એને કલ્યાણકતો ખાસ હરિભદ્રસૂરિજી સ્વરચિત પંચાશકમાં કહે છે. એજ પાઠને આગળ કરી તપાઓ પાંચ કલ્યાણકોની સિદ્ધિ કરવા તેમ એકને અકલ્યાણક-અમંગલીક મનાવવા જમીન આસ્માન એક કરવા જેવું પ્રયત્ન કરી રહ્યા છે, એવીજ રીતે એક સમયે ૧૦૮ સિદ્ધ થયેલ ભગવાન્ ઋષભદેવ સ્વામીનું નિર્વાણ કલ્યાણક શા માટે માનવું ? તેમ ભગવાન્ મલ્લીનાથ સ્વામી આશ્ચર્યરૂપ સ્ત્રીપણે અવતર્યા એટલે એનાતો પાંચે કલ્યાણકો શા માટે માનવા ?

+ ‘હસ્ત ઉત્તરો યાસાં તાઃ, બહુવચનં બહુકલ્યાણકાપેક્ષં’ इत्यत्र पञ्चसु पञ्च, स्वातौ षष्ठमेव ध्वन्यते ।

x ‘હસ્ત ઉત્તરો યાસાં તા હસ્તોત્તરા-ઉત્તરફલગુન્યો, બહુવચનં બહુકલ્યાણકાપેક્ષં, તસ્યાં હિ વિમોશ્ચયવનં ૧, ગર્ભાદ્ગર્ભસંક્રાંતિઃ ૨, જન્મ ૩, વ્રતં ૪, કેવલં ૫ ચાભવત્ । નિર્વૃત્તિસ્તુ સ્વાતૌ ૬ ।’

† ‘પંચ હૃથુત્તરે હોત્યત્તિ હસ્તાદુત્તરસ્યાં દિશિ વર્તમાનત્વાદ્-સ્તોત્તરા, હસ્ત ઉત્તરો યાસાં વા તા હસ્તોત્તરા-ઉત્તરફાલગુન્યઃ । પञ्चसु-च्यवन ૧, ગર્ભાપહાર ૨, જન્મ ૩, દીક્ષા ૪, જ્ઞાન ૫, કલ્યાણકેષુ હસ્તોત્તરા यस्य सः तथा, निर्वाणस्य स्वातौ जातत्वादिति’
(કલ્પાવચૂરિ-તપાકુલમંડનસૂરિ)

કરેલી કલ્યાણચૂરિમાં ‡ “બહુવચનં બહુકલ્યાણકાપેક્ષં” એવા વાક્યથી

આષાઢે સિતષઠ્ઠી ૧, ત્રયોદશી ચાશ્વિને ૨ સિતા ચૈત્રે ૩ ।
માર્ગે દશમી ૪ સિતવૈ-શાખે સા ૫ કાર્તિકે ચ કુહૂઃ ૬ ॥ ૧ ॥
इति वीरस्य षट्कल्याणकदिनानीति ।’

(તપા જયસુંદરસૂરિકૃત કલ્યાંતરવાચ્ય, સં૦ ૧૫૩૮માં લખેલ
પ્રતિ પાલીતાણા. આ. ક. નો. ભંડાર).

જોધપુર (મારવાડ)માં કેસરીયાનાથજીના ભંડારમાં કલ્પસૂત્રની એક
પ્રાચીન પ્રતિ ૮ મી વાચના સુધીની ઝલઝ નં૦ ૧૮ માં છે, તેમાં પણ—

‘શ્રીવર્द्धमानतीर्थाधिपतेः पंचकल्याणकानि हस्त उत्तरो-ऽग्रे
यस्मात् एवम्भूते उत्तराफाल्गुनीलक्षणे नक्षत्रे जातानि, मोक्षकल्या-
णकस्य स्वातौ जातत्वादिति ।’ આમાં ચોક્કસ ૭ કલ્યાણકો લખ્યા છે.

‘શ્રમણ-તપસ્વી ‘ભગવંત’ જ્ઞાનવંત શ્રીમહાવીરદેવ, તેહના
પાંચ કલ્યાણક ઉત્તરાફાલ્ગુની નક્ષત્રે હુઆ × × × સ્વાતિ નક્ષત્રે
મોક્ષ પહુંતા શ્રીમહાવીર દેવ । (કલ્પસૂત્ર ૮૫૦ અંતર્વાચ્ય
સં૦ ૧૬૬૭ લાહોરમાં (તપા) પં૦ શાંતિવિજય ગણિલિખિત, જોધપુર
કેસરીયાનાથજીના ભંડારમાં ઝ૦ નં૦ ૨૦ પો૦ નં૦ ૬)

‡ ‘હસ્ત ઉત્તરો-ઽગ્રેસરો યાસાં તાઃ ઉત્તરાફાલ્ગુન્યઃ, બહુવચનં
પञ्चकल्याणकापेक्षया ‘होत्था’ आसीत् । हस्तोत्तरायां प्राणतनाम
दशमदेवलोकाच्च्युतः, च्युत्वा गर्भे ‘व्युक्रान्तः’ संक्रमितः १,
हस्तोत्तरायां गर्भाद्गर्भं संहतः-गर्भाद्गर्भान्तरसंक्रमणमभूत् २,
उत्तराफाल्गुन्यां भगवान् जातः-भगवतो जन्म बभूव ३, हस्तोत्तरायां
मुण्डोऽभूत्, द्रव्यभावमुण्डितः, द्रव्यतः केशलुञ्चनाद्भावतो

ગર્ભાપહારને કલ્યાણક કહ્યું છે, અને આગમિક ગચ્છના શ્રીજયતિલક સૂરિએ સ્વરચિત સુલસા શ્રાવિકાના ચરિત્રમાં 'મિદ્ધાર્થરાજાજ્ઞજ ! દેવ-

બાહ્યાન્તરારિલોપાન્મુળ્હો ભૂત્વા 'અગારાદ્' ગૃહાન્નિષ્કમ્ય-નિસ્સૃત્ય 'અનગારતાં' યતિત્વં 'પ્રવ્રજિતઃ' પ્રકર્ષેણ ગત इत्यर्थઃ ૪, 'હસ્તો-ત્તરાયાં' ઉત્તરાફાલ્ગુન્યાં ભગવતઃ કેવલવરજ્ઞાનદર્શનં સમુત્પન્નં××૫, સ્વાતીના નક્ષત્રેણ 'પરિનિર્વૃતઃ' નિર્વાણં પ્રાપ્તઃ ૬ ।'

(અંચલગચ્છીય આન ધર્મશેખરસૂરિ શિષ્ય ઉદયસાગર રચિત કલ્પસૂત્ર ટીકા સંવત્ ૧૫૧૧ જ્યેષ્ઠ ૧૫ સોમ)

'પંચસુ જ્યવનાદિકલ્યાણકેષુ હસ્તોત્તરા-હસ્તાદુત્તરસ્યાં વિશિષ્ઠર્ત્તમાના યદ્વા હસ્ત ઉત્તરો યાસાં તાઃ ઉત્તરફાલ્ગુન્યો યસ્ય સ પંચ-હસ્તોત્તરો ભગવાન્ 'હોત્ય'ત્તિ અભૂત્ ।' ઇત્યાદિ (કંટીંપ્રતિ પત્ર ૧૫૦)

સંવત્ ૧૭૬૬ વર્ષે કાર્તિકવદિ ૧૪ શનૌ શ્રીઅંચલગચ્છે વાયના-ચાય' વાયક શ્રી ૫ શ્રીમહાવળ ગણિ શિષ્ય મુનિ માણિકર્ષિ લિખિતં । (અંચલગચ્છ ભં ૦ કચ્છમાંડવી)

'ઉપાધ્યાયાદિપદચતુષ્ટયેન નવપદસ્થાપનાદિનપ્રતિપન્નષટ્સ્વપિ મહાવીરકલ્યાણકેષુ યાવજ્જીવં વિશેષતપઃ કાર્યમ્ ।' (ઇત્યાંચલિક મેષ્ટુંગસૂરિ રચિત સૂરિમંત્રકલ્પની આગળ લખેલ વર્ધ્ધમાન વિદ્યાકલ્પ)

'ए श्रीकल्पसूत्र तण्ड प्रारम्भ जगन्नाथ श्रीमहावीर तणां छ कल्याणिक बोलीयइ, तद्यथा-तेणं कालेणं तेणं० पंच हत्थुत्तरे हुत्था-तिणइं कालि तिणइं समइ श्रमण भगवंत श्रीमहावीरहइं पंच कल्याणिक उत्तराफाल्गुनि नक्षत्रि चंद्रमा तण्ड संयोगि प्राप्त हुंतइ हूआं, तंजहा × × × साइणा परिनिव्वुए भयवं ।

ગજ !, કલ્યાણકૈઃ ષડ્ભિરિતિ સ્તુતસ્ત્વમ્' એવા વાક્યથી મહાવીરપ્રભુનું ચરિત્ર છ કલ્યાણકો યુક્ત ગણાયે છે, તથા તપાગચ્છીય (આચાર્ય શ્રીમાન) દેવેન્દ્રસૂરિ પણ (સ્વચ્ચિત) 'ધર્મરત્ન પ્રકરણ' ની ટીકામાં શ્રાવ-

ઉત્તરાફાલ્ગુનિ નક્ષત્રિ તણઇ સંયોગિ જગન્નાથરહઈ ક્યવન-
કલ્યાણિક હુડં ૧, ઉત્તરાફાલ્ગુનિ નક્ષત્રિ શ્રીમહાવીરરહઈ ગર્ભાપહાર
કલ્યાણિક ૨, ઉત્તરાફાલ્ગુનિ નક્ષત્રિ જન્મ કલ્યાણિક ૩,
ઉત્તરાફાલ્ગુનિ નક્ષત્રિ દીક્ષા કલ્યાણિક ૪, ઉત્તરાફાલ્ગુનિ નક્ષત્રિ
જ્ઞાન કલ્યાણિક ૫, સ્વાતિ નક્ષત્ર તણઈ સંયોગિ જગન્નાથરહઈ
નિર્વાણ કલ્યાણિક હુડં—મુક્તિપદ પ્રાપ્ત હૂઆ, એ સંક્ષિપ્ત વાચ-
નાઈ જગન્નાથતણાં છ કલ્યાણિક જાણિવા।' (મહેશાણા ઉપાશ્રયના
ભંડારમાં સંવત્ ૧૭૨૪ માં ઉકેશ (કમળા) ગચ્છીય ઉપા. રામતિલક
શિષ્ય ગણપતિ લિખિત ૯૧ પાનાની કલ્પસૂત્ર આળાવબોધ પ્રતિના પાના
૪ થામાં ઉપર લખ્યા મુજબ પાઠ છે.

‘શ્રીમહાવીર, તેહના પંચ કલ્યાણિક હસ્તોત્તરા નક્ષત્રમાંહિ
હુઆ, જિણિ ઉત્તરા નક્ષત્ર આગલિ હસ્ત છે, તે હસ્તોત્તરા કહિયે,
એતલે ઉત્તરાફાલ્ગુની નક્ષત્રમાંહિ પંચ કલ્યાણિક હુઆ, તે કલ્યા-
ણિક કેહા ? કહે છે—હસ્તોત્તરા નક્ષત્રમાંહિ સ્વામી ચવ્યા,
ચવીને ગર્ભિ ડપના ૧, હસ્તોત્તરા નક્ષત્રમાંહિ ગર્ભથક્કી બીજે ગર્ભિ
સાહ્યા ૨, હસ્તોત્તરા નક્ષત્રમાંહિ સ્વામી જન્મ પામ્યા ૩, હસ્તોત્તરા
નક્ષત્રમાંહિ x x x ‘કેવલ’ એકલો ‘વર’ પ્રધાન જ્ઞાન અને દર્શન,
તે ડપનો, સ્વામી કેવલી હુઆ ૪ । સાઈણા—સ્વાતિનક્ષત્રે ભગવંત
શ્રીમહાવીર નિર્વાણપદિહ પહુતા।' (આચારાંગ આબુવાળો, પાના ૨૩૯-૪૨)

કના એકવીસમા ગુણવર્ણન પ્રસંગે વિમળકુમારના ચરિત્રમાં “પુરમસ્થિ
વદ્ધમાણ” આ ગાથાથી શ્રીમહાવીર પ્રભુના ઘણા કલ્યાણકો બતાવે છે,
દેખજો, તથા તપાગચ્છના આચાર્ય શ્રીકુલમંડનસૂરિકૃત કલ્યાણવર્ણિમાં
પાઠ છે કે ‘પञ्चसु (ચ્યવન ૧, ગર્ભાપહાર ૨, જન્મ ૩, દીક્ષા ૪, જ્ઞાન ૫)
કલ્યાણકેષુ હસ્ત ઉત્તરો યાસાં તા હસ્તોત્તરા-ઉત્તગફાલ્ગુન્યઃ.”
(અર્થાત્-જેના પાંચ કલ્યાણકોમાં ઉત્તરાફાલ્ગુની નક્ષત્ર છે, એવા ભગવાન
મહાવીર), આ રીતે ઘણા શાસ્ત્રન્યાયે, ગચ્છાંતરીયકૃત કલ્પસૂત્રની
ટીકા તથા કલ્પનિરુક્તના એવં અન્યાન્ય મતવાળાઓના કથનાનુસાર
શ્રીમહાવીર પ્રભુના ૭ કલ્યાણક બાળવા.

ખીજું સમવાયાંગ સૂત્રના એકસો ચોત્રીસમા સમવાયમાં ભગવાન
મહાવીરને દેવાનંદના ગર્ભથી ત્રિશલાના ગર્ભે જે આણ્યા તે અહા-
વીસમો ભવ ગણ્યો છે. + છેલ્લો ભવ જે તીર્થંકરપણે જન્મ થયો તે

+ મતલબકે ભગવાનનું દેવાનંદ અને ત્રિશલાની કૂખે જે આવ્યું. આ
બન્નેને જુદા ભવો ગણ્યા છે. જુઓ સમવાયાંગસૂત્ર અને ટીકાનો તે પાઠ—

“સમણે ભગવં મહાવીરે તિથ્થગરભવગ્ગહણાઓ છટ્ટે પોટ્ટિલ-
ભવગ્ગહણે એગં વામકોઢિં સામણપરિયાગં પાઝણિત્તા સહસ્સારે
કપ્પે સન્વટ્ટવિમાણે દેવત્તાણ ઉવવન્ને |”

ઘ્યાલ્યા—કિલ ભગવાન્ પોટ્ટિલામિધાનો રાજપુત્રો બભૂવ,
તત્ર ચ વર્ષકોટિં પ્રવ્રજ્યાં પાલિતવાનિત્યેકો ભવઃ ૧, તતો દેવોઽમ્ભૂ-
દિતિ દ્વિતીયો ભવઃ ૨, તતો નન્દનામિધાનો રાજસૂનુઃ છત્રાગ્રનગર્યાં
જજ્ઞે ઇતિ તૃતીયો ભવઃ ૩, તત્ર ભવે વર્ષલક્ષં સર્વદા માસક્ષપણેન
તપસ્ત્વહવા દશમે દેવલોકે પુષ્પોત્તરપ્રવરપુણ્ડરીકામિધાને વિમાને

કહીયે, (અને) તે કલ્યાણુક કહીયે, આસો વદિ તેરસે શ્રીમહાવીર દેવા-
નંદાની કૂખથી ત્રિશલાની કૂખે આવ્યા એટલે આ કલ્યાણુક તિથિ
કહેવાય, અધાય ગચ્છના ગીતાર્થેએ પણ શ્રીમહાવીર પ્રભુના જે છ
કલ્યાણુકો માન્યા છે તે વિચારીનેજ માન્યા છે.

વલી આદીશ્વર પ્રમુના અધિકારે શ્રીજંબુદીવપત્તિ સૂત્રમાં “પંચ-
ઉત્તરાસાદે × × × અમ્મીદ્વદ્દે” એવો પાઠ છે, ત્યાં (રાજ્યાભિષેક

દેવોઽભવદિતિ ચતુર્થો ભવઃ ૪, તતો બ્રાહ્મણકુરુદગ્રામે ઋષભદત્તસ્ય
બ્રાહ્મણસ્ય માર્યાયા દેવાનન્દાભિધાનાયાઃ કુક્ષાવુત્પન્ન ઇતિ પચ્ચમો
ભવઃ ૫, તતસ્ત્યશીતિતમે દિવસે ક્ષત્રિયકુરુદગ્રામે નગરે સિદ્ધાર્થ-
મહારાજસ્ય ત્રિશલાભિધાનમાર્યાયાઃ કુક્ષાવિન્દ્રવચનાનુકારિણા
હરિણેગમેષિનામ્ના દેવેન સંહતસ્તીર્થકરતયા ચ જજ્ઞે ઇતિ ષષ્ઠો
ભવઃ ૬, ઉક્તભવગ્રહણં હિ વિના નાન્યદ્ભવગ્રહણં ષષ્ઠં શ્રયતે ભગવતઃ,
इत्येतदेव षष्ठभवग्रहणतया व्याख्यातं, यस्माच्च भवग्रहणादिदं
षष्ठं तदप्येतस्मात्षष्ठमेवेति सुष्ठूच्यते तीर्थकरभवग्रहणात्षष्ठे पोट्टिल-
भवग्रहणे इति ।” (આ. સં. મુ. સં. સ. પાના ૧૦૫)

આ પાઠમાં ભગવાનનું દેવાનંદાની કૂખે આવવું પોટ્ટિલના ભવથી
પાંચમો અને ત્રિશલાની કૂખે આવવું છટ્ટો ભવ ગણ્યો છે, એના
(દેવાનંદા અને ત્રિશલાની કૂખે આવવાના જુદા ભવ ગણ્યા) શિવાય
અન્ય કોઈ છટ્ટો ભવ શાસ્ત્રોમાં સંભળાતું નથી. આ રીતે ખરતર
ગચ્છવિભૂષણ નવાંગટીકાકાર શ્રીઅભયદેવસૂરિજી રૂપક કહે છે, જ્યારે કે
ત્રિશલાની કૂખે આવ્યા એજ તીર્થકર ભવ શાસ્ત્રકારો કહે છે, ત્યારે

માટે) કલ્યાણક (આરાધવા)નો અર્થ મળતો નથી, કારણકે કલ્યાણકનું આરાધન નક્ષત્રે નહીં, પણ નિથિએ થાય. જ્યારે નિથિનું નામ કલ્યાણ નથી ત્યારે કય્ઠ નિથિ આરાધીયે ? યદ્યપિ અરિહંત ભગવંતોના અભિષેકના દિવસો પણ આરાધ્યજ છે પરંતુ તે દિવસ કહ્યો નથી. શ્રીઆચારાંગ (ભાવનાધ્યયનની) નિયુક્તિમાં દર્શનભાવનાના અધિકારે અરિહંત ભગ-

ગર્ભાપહાર એટલે ગર્ભનું હરણ માત્રજ નહીં, પણ “ગર્ભસ્ય શ્રીવદ્દ-
માનરૂપસ્ય હરણં-ત્રિશલાકુક્તૌ સદ્ક્રામણં-ગર્ભહરણં ।” આ તપાના પૂર્વજ ઉ. જ્યવિજ્યશ્ચકૃત કલ્પદીપિકાના કથનાનુસાર ભગવાન મહા-
વીરનું દેવાનંદાની કૂખથી ત્રિશલાની કૂખે આવવારૂપ જે ગર્ભાપહાર તે પંચાશકની “ગઢમે જમ્મે ય તહાઠ ” આ ગાથા અને એની ટીકામાં કહ્યા મુજબ પાંચ કલ્યાણકો પૈકી ગર્ભ-ગર્ભાધાન કલ્યાણકજ છે, એટલેજ તો કલ્પસૂત્રની “एए चउदस सुमिणे, सव्वा पासेइ तित्थयरमाया । जं रयणि वक्कमई, कुच्छिसि महायसो अरहा ॥१॥” આ ગાથામાં કહેલ નિયમાનુસાર ત્રિશલા માતાએ ચૌદ સ્વપ્ન જોયાં અને એનુંજ વિસ્તૃત વર્ણન શ્રુતકેવળી ભદ્રચાહુ સ્વામીએ કર્યું, તેમ એનાજ સ્વપ્ન ઉતારવા નિમિત્તે હજારોની બોલી દર પશુસણે, ને દર ઉપાશ્રયે બોલાય છે, છતાં એ ગર્ભાપહારને કલ્યાણક ન માનતાં અશુભ નિંદનીય અને અકલ્યાણકભૂત માનનારા તપાઓના મતે સમ-
વાયાંગ સૂત્રના કથનાનુસારે ક્ષત્રિયાણી ત્રિશલાની કુખે અવતરવારૂપ તીર્થંકર ભવની અપેક્ષાએ મહાવીરના પાંચ કલ્યાણકો કેવી રીતે થઈ શકે ? તે જાંબવાચાર્ય શાખીત કરી બતાવે.

વંતોની જન્માભિષેકભૂમિ માન્ય કહી છે, + ત્યાં જનાર ભવ્યાત્મા પોતાના સમ્યક્ત્વને શુદ્ધ કરે છે, જ્યારે જન્માભિષેક ભૂમિ આરાધ્ય છે, ત્યારે રાજ્યાભિષેક દિવસ આરાધ્ય કેમ ન થાય ? (થાય) પણ તે દિવસ જાણ્યાવગર શું આરાધિયે ? †

+ “જન્માભિષેચનિક્ષમણ-ચરણનાણુપ્પયા ય નિઠ્ઠાણે ।

દિયલોયભવણમંદર-નંદીસરભોમનગરેસુ ॥૨॥”

“ઋઢાવયમુજ્જિતે, ગયગ્ગપયગે ય ધમ્મચક્કે ય ।

પાસરહાવત્તં ચિય, ચમરુપ્પાયં ચ વંદામિ ॥૩॥” (આચારાંગ નિઠ્ઠ)

† ખીણું ઋષભદેવ સ્વામીનું ચરિત્ર વર્ણન કરતાં જંબુદીવપન્નત્તીમાં રાજ્યાભિષેકને ભેગો ગણીને જેમ ‘પંચઉત્તારામાઢે’ કહ્યું કિંતુ કલ્પ-સૂત્રમાં તેમજ ન કહેતાં “ચઉત્તારામાઢે” કહ્યું છે, એટલે શાસ્ત્ર-કારોના અભિપ્રાયે રાજ્યાભિષેકને જે કલ્યાણક માનવાનું હોત તો અધે સ્થળે એક સરખોજ પાઠ “પંચઉત્તારામાઢે” કહેતા, પણ જંબુદીવ પન્નત્તીમાં “પંચઉત્તારામાઢે” કહેવા છતાં કલ્પસૂત્રમાં “ચઉત્તારામાઢે” કહેવાનું કારણ રાજ્યાભિષેકને કલ્યાણક નહીં માનવુંજ છે, જેમ રાજ્યાભિષેકને કલ્યાણક ન યતાવવા માટેજ કલ્પસૂત્રમાં “ચઉત્તારામાઢે” અને જંબુદીવપન્નત્તીમાં ફક્ત નક્ષત્ર સામ્યતા યતાવવા માટેજ સૂત્રકારે “પંચઉત્તારામાઢે” લખ્યું છે, તેમ મહાવીરપ્રભુનું ચરિત્ર વર્ણન કરતાં આચારાંગ સૂત્ર (ભાવના) અધ્યયનમાં ઢાણાંગ (પાંચમા ઢાણા)માં અને કલ્પસૂત્ર. આ ત્રણ સૂત્રોમાંથી કોઈમાં પણ “ચઉત્તરુત્તરે” ન લખતાં અધામાં એકજ “પંચહત્થુત્તરે” લખ્યું, એથી સ્પષ્ટ છે કે ભગવાન મહાવીરપ્રભુનું દેવાનંદાની કૃપથી ત્રિશક્તાની કૃપે યાવવા

બીજું “પંચહથુત્તરે” ના અર્થ કરતાં (આચારાંગ વૃત્તિના અભિપ્રાયે) પાંચ સ્થાન * પણ થાય છે. પરંતુ બધાય ગચ્છના

૩૫ ગર્ભાપહાર શુભ પ્રશંસનીય કલ્યાણકારી કલ્યાણકર્તા કહેવાય. પણ તેને અશુભ નિંદનીય અકલ્યાણક કે અકલ્યાણકભૂત માનવું એ શાસ્ત્ર-વિરૂદ્ધ તપાના ધરતો આચાર છે.

* “હસ્ત ઉત્તરો યામામુત્તરફાલ્ગુનીનાં તા હસ્તોત્તરાસ્તાશ્ચ પંચસુ સ્થાનેષુ ગર્ભાધાન-સંહરણ-જન્મ-જ્ઞાનોત્પત્તિરૂપેષુ સંવૃત્તાઃ, અતઃ પંચ-હસ્તોત્તરો ભગવાનભૂદિતિ ।” (આચારાંગટીકા ભાવનાધ્યયન) એવીજ રીતે દશાશ્રુતસ્કંધ (કલ્પ) ચૂર્ણિ (પાના ૧૦૫)ના “જો ભગવતા ઉસમ-સામિણા સેસતિથ્યગરેહિ ય ભગવતો વદ્ધમાણમામિણો ચવણાદીણં છણહં વત્થૂણં કાલો ણાતો દિદ્ઢો વાગરિઓ ય ।” આ પાઠમાં વર્ણવ્યા મુજબ અવનાદિ પાંચ વસ્તુ પણ કહેવાય છે, પણ પંચાશકના “મુવણઽચ્છેરયમ્ભૂયા, કલ્લાણફલા ય જીવાણં ।” આ કથનાનુસાર સ્થાન યા વસ્તુ પણ અકલ્યાણકભૂત અશુભ કે નિંદનીય નહિં, કિંતુ “ભુવન (જગત) માં આશ્ચર્યભૂત અને જગતના જીવોને કલ્યાણરૂપ ક્ષણના આપનાર હોવાથી તીર્થ કર દેવોનું માતાની કૃપામાં આવવું કલ્યાણ શ્રેય મંગલરૂપજ મનાય,

કલ્યાણક શબ્દની વ્યુત્પત્તિ કરતાં શાસ્ત્રકારો કહે છે કે-“કલ્યઃ” અત્યન્તં નીરુક્તયા મોક્ષઃ, તમાનયતિ (અણતિ) પ્રજ્ઞાપયતીતિ કલ્યાણઃ-મુક્તિહેતુઃ” (ઉત્તરાંગ વૃ૦ વૃ૦ પ૦ ૧૨૮), “ કલ્યં—આરોગ્યં અણન્તિ-શબ્દયન્તીતિ કલ્યાણાઃ” (સ્થાનાંગ ટીકા વહ્નમ૦ મુ૦ પાના ૪૪૦) તથા “કલ્યાણાનાં-શુભસમૃદ્ધિવિશેષાણાં હેતુત્વા-

ગીતાર્થોએ અહિં (શાસ્ત્રોમાં આદીશ્વર પ્રભુના) પાંચ જ કલ્યાણુકો કહ્યા છે. પછીથી લોકોની ચર્ચાએ હવે ન મનાયે, આ હકીકત બધાય ગચ્છવાસી ગીતાર્થોએ માની છે. એટલે ધર્માર્થી સજ્જનોએ તે એમજ સદ્દેહવી. શ્રીજિનવલ્લભસૂરિએ શ્રીમહાવીર (પર્યન્તના બધા તીર્થંકરો)ના (નિયમિત થનારા) ૧૨૦ તથા (સદાને માટે અનિયમિત ગર્ભાપહારને ભેગો ગણીને) ૧૨૧ સર્વ કલ્યાણુકો કહ્યા છે બધા ગચ્છના બધાય ગીતાર્થોએ જેમ ૧૨૧ માન્યા તેમ અમો પણ શ્રીમહાવીરપર્યન્ત બધા તીર્થંકરોના ૧૨૧ સર્વ કલ્યાણુક માનીએ છીએ, રાગ દ્વેષના કારણે પદ્મવગ્રાહીઓ ન માને તો તેઓની તે જાણે, પરંતુ (શાસ્ત્રાજ્ઞાવિરુદ્ધ) આપમતી ન થવું. + એ રીતે જોજો.

દથ્વા ‘કલ્યં’ નીરોગતામણન્તિ-ગમયન્તીતિ કલ્યાણાઃ.” તથા “ કલ્ય નામ સુખ જાનીયે, અણક બુલાના તાસ । ” અર્થાત્ કલ્યાણો એટલે કે સુખસમૃદ્ધિ વિશેષોના હેતુ, અથવા કલ્ય નામ સુખ અને નીરોગતાને પ્રાપ્ત કરાવનાર હોવાના અંગે તીર્થંકર ભગવંતોના વ્યવનાદિ કલ્યાણુકો કહેવાય, ભારે આશ્ચર્યની વાત છે કે ભગવાન્ મહાવીરનું દેવાનંદાની કૂખથી ગર્ભાપહારદ્વારા ત્રિશલાની કૂખે આવવું જે થયું તેને અકલ્યાણુકભૂત માનનારાઓને શું દુઃખ કે રોગનો ભૂત વળગી ગયો છે ? તે કાંઈ સમજાતું નથી.

+ તપા ખરતર ભેદ પૃ૦ ૭૧ માં મૂળ લેખકે આચાર્ય શ્રીજિન-વલ્લભસૂરિકૃત કલ્યાણુક સ્તોત્રની પ્રથમ ગાથા-“ સમ્મં નમિઝ્ઞણ જિણે, ચઝવીસં તસિ ચેવ પત્તેયં । વુચ્છં ચુયજમ્માણ-દિક્ખનાણનિવ્વાણ કહ્લાણે ॥૧॥” આ લખીને ત્રિશલાની કૂખે ભગવાન મહાવીરના આગમન

८४ प्रश्न—तथा अतिथिसंविभाग व्रत आश्री जे पूछ्या
तत्रार्थे—जूने आवश्यक प्रमुख शास्त्रे प्रतिनियत दिवसइं पोमह

આ ઉપરોક્ત પ્રથમ ગાથાવાળા કલ્યાણુક સ્તોત્રમાં બધા તીર્થ-
કરોના પાંચ પાંચ કલ્યાણુકોના હિસાબે ૧૨૦ જ કલ્યાણુકો બતાવ્યા
પરંતુ ભગવાન મહાવીરનું ગર્ભાપહાર કે જે પંચાશકતી “ગન્ધે જન્મે
ય તદ્વા” આ ગાથાના કથન મુજબ “ગર્ભ” અને ટીકાકારના કથના-
નુસાર ‘ગર્ભાધાન’ તેમ આચાર્ય શ્રીજિનભદ્રગણિ ક્ષમાશ્રમભણ્કૃત
બૃહત્સંત્રહણીની “અવયરણજન્મનિક્ષમણ” એ ગાથા મુજબ ‘અવ-
તરણ’ કહેવાય, તેને જેમ દશ આશ્ચર્યોના ઉત્પત્તિ ક્રમાનુસાર ‘અસંયતિ-
પૂજા’ નું નામ્બર યદ્યપિ દશમું નથી. છતાં “સૂત્રસ્ય વિચિત્રા ગતિઃ”
આ નિયમાનુસાર ગણધર ભગવંતે ઠાણાંગ સૂત્ર દશમા ઠાણાની
“ ઉવસગગન્ધમહરણ” આ ગાથામાં દશમા નામ્બરે મૂક્યું છે, અને
એથીજ આચાર્ય શ્રીહરિભદ્રસૂરિણ પણ ‘સંબોધ પ્રકરણ’ના ‘કુચુચ્ચણ’ના
નામક બીજા અધિકારની “દસમગમચ્છેરમિણં, અસાદુણો સાદુણાન્વ
પુજ્જંતિ । હોહિતિ તપ્પસાયા, દુન્નિભક્તદરિદ્રમરગણા ॥૧૫૭॥”

વ્રતનહ પારણહિજિ એ વ્રત સાચવિવા કહ્યા છહિ, સહુ ગચ્છવાસી
પિણ પોસહનહ પારણહિ એ વ્રત માનહ છહિ, અન્ય દિનહ સંવિભાગ
કહીયહ પરં વ્રત ન કહીયહ, અન્યથા પોસહમાંહિ યતિનહ પાણી
દેહ કરીનહ પાણી પીજહ તહ એહી અતિથિસંવિભાગ કહીજતા,
તેહનહ સંવિભાગ કહીયહ છહિ, પુણિ અતિથિસંવિભાગ(વ્રત)
ગચ્છવાસી કોઈ નથી કહતા, એવં વિચારિવહ ॥ ૮૪ ॥

ભાષા:-અતિથિસંવિભાગ વ્રત આશ્રી જે પૂછ્યું તે બાબતમાં
જણાવાનું કે-આવશ્યક વૃત્ત્યાદિ જૂના શાસ્ત્રોમાં પ્રતિનિયત દિવસે
પોસહ વ્રતના પારણેજ આ વ્રત સાચવવા કહેલ છે, બધા ગચ્છવાસીઓ
પણ પોસહના પારણે આ વ્રતને માને છે, અન્ય દિવસે સંવિભાગ
કહેવાય પણ વ્રત ન કહેવાય, અન્યથા પોસહમાં સાધુને પાણી વહો-
રાવીને પોતે પીયે, તો એ પણ અતિથિસંવિભાગ વ્રત કહેવાત. પણ

આ ગાથામાં ચોક્કસ દશમાશ્વર્ય કહે છે, તેમ ચ્યવન-
ગર્ભ-ગર્ભધાનાદિ પાંચ કલ્યાણકો જે દરેક તીર્થ કરોના નિયમિત થાય
છે તેથી અતિરિક્ત હોવાના અંગે છૂટું કહેવાય તે (ગર્ભાપહાર)ને
ભેગો ગણિને ૧૨૧ કલ્યાણકો ભલેને નથી બતાવ્યા, પણ તપાઓની
માફક એ (ગર્ભાપહાર)ને અકલ્યાણકભૂત વિગેરે તો નથી બતાવ્યાને.

તા. ક. આ સ્તોત્રની ગાથા ૨૬ હોવા છતાં લેખક જે વીસજ
ગાથા લખે છે. એથી વ્યક્ત થાય છે કે મૂળ લેખક યા અનુવાદક.
એમાંથી એકે પણ આ સ્તોત્રની ખાસ નકલ જોવાની તો તરદી ઉઘવીજ
નથી અને અહંભાવ, ને ઈર્ષાના આવેશમાં મનકાવતું ભરડી નાખ-
વામાંજ મહત્ત્વતા સમજી છે. અસ્તુ.

એને ગચ્છવાસી ક્રોધએ અતિથિસંવિભાગ વ્રત કહેતા નથી. માત્ર સંવિભાગજ કહે છે. એવં વિચારયું. x

(તપા ખરતર ભેદ ગ્રંથ ૧ બોલ ૮૬, ગ્રંથ ૨ બોલ ૯૪ મો)

૮૨ પ્રશ્ન - તથા પહિરાવણી આશ્રી પ્રશ્ન કર્યા, તત્ત્વાર્થે—
પહિરાવણીની પૂજા શાસ્ત્રે કહી છડ, સિદ્ધાંતે પિણ વસ્ત્રયુગલની પૂજા ત્રીજી કીજડ છડ, એક વસ્ત્ર પહિરવાનડ કલ્પીયડ એક વસ્ત્ર ઓઢિવા મળી કલ્પીયડ, એતલડ વસ્ત્રયુગલ નામડ પૂજા થાડ, વલી “ પરિધાપનિકાં પુણ્યાં, પટ્સૂત્રાદિગુપ્તિતામ્ । કારયે-
ચસ્તુ સોઽવ સ્યા—દ્વિશુદ્ધઃ સ્વર્ગકારણમ્ ॥૪૩૮॥” ઇતિ રાજ-
ગચ્છીય શ્રીધનેશ્વરસૂરિકૃત શત્રુંજયમાહાત્મ્યે પ્રથમસર્ગે । એ પૂજા થોડ દીહી ઋપિમતીએ નિષેધી છડ, પૂજાના અંતરાયના ફલ લાભાંતરાય મોગાંતરાયાદિ કહ્યા છડ, જોજ્યો. દષ્ટિરાગી મ થાસ્યડ ૮૨

ભાષા—પહેરામણીના વિષયમાં જે પ્રશ્ન કર્યો તે આવૃત્તમાં જણાવાનું કે પહેરામણીની પૂજા શાસ્ત્રોક્ત છે. સિદ્ધાંતમાં વસ્ત્રયુગલની પૂજા ત્રીજી કહી છે.

x અરે શાસ્ત્રાનુસારીઓના ઠેકાઠારો ! “ જં ચ કિર સાહૂણં ન દિન્નં તં સાવગેણ ન મોત્તઞ્વં । ” (પંચાં યૂં પાના ૧૧૨)
અર્થાત્ પૌષ્ઠના પારણે જે વસ્તુ સાધુને ન વહોરાવી હોય તે વસ્તુ શ્રાવકે ન ખાવી, આમ શાસ્ત્રકારો ચોક્કસ કહે છે તો પછી ખતાવો કે જગ્યાચાર્યના ભકતોમાં દરેક પૌષ્ઠના પારણે આ રીતે અતિથિ સંવિભાગ વ્રત કરનારા કેટલા છે ? અને પૌષ્ઠના પારણા શિવાય અન્ય દિવસે જે શ્રાવકો મુનિઓને દાન આપે તે કયા વ્રતમાં લેખાય ? આનો પણ જખાખ જગ્યાચાર્ય સર્વામાન્ય પ્રાચીન શાસ્ત્રપ્રમાણ સાથે આપે.

તેમાં એક વસ્ત્ર પહેરવાનું અને એક વસ્ત્ર ઓઢવાનું કલ્પવું, એટલે વસ્ત્રયુગલ નામે પૂજા હોય છે, વધી “ જે ભાવિક પટ્ટસૂત્રાદિકની ગૂંથેલ પવિત્ર એવી પરિધાપનિકા કરાવે છે તે ભાવિક આ ભવમાંય વિશુદ્ધ હોય છે ને ભવાંતરમાં એ પરિધાપનિકાનું કરાવવું એના માટે સ્વર્ગનું કારણ બને છે ” આ રીતે રાજગચ્છીય શ્રીધનેશ્વરસૂરિકૃત શત્રુંજયમાહાત્મ્યના પ્રથમ સર્ગમાં પરિધાપનિકા (પહેરામણી)ની પૂજા કહી છે, આ પૂજા થોડા દિવસથી ઋષિમતીઓએ નિષેધી છે. પૂજાનો અંતરાય કરવાનું ફળ શાસ્ત્રામાં લાભાંતરાય કહ્યો છે. એ જોજો. દૃષ્ટિરાગી મ થાસો.

(તપા ખરતર ભેદ ગ્રંથ ૧ બોલ ૮૭, ગ્રંથ ૨ બોલ ૯૫ મો)

૮૬ પ્રશ્ન—તથા સ્વરતરાંનૈ શ્રાવક શ્રાવિકા પચ્ચક્ષાણ આવશ્યક સાચવતાં સાંખિ સામાયિક લેતાં ચડવિહાર ઉપરાંત દુવિહાર તિવિહાર એ પચ્ચક્ષાણ કરઈ, તે સ્યું ? ।

ભાષા:—ખરતરોને શ્રાવક શ્રાવિકા સાંજે સામાયિક લેતાં પચ્ચક્ષાણ આવશ્યક સાચવતાં ચોવિહાર ઉપરાંત દુવિહાર તિવિહારનું પચ્ચક્ષાણ કરે, તે શું ?

તત્રાર્થે—દિવસચરિમ પચ્ચક્ષાણ ચડવિહાર તિવિહાર દુવિહાર થાઈ, તે મળી સામાયિક કરતાં એ પચ્ચક્ષાણ બિ આહાર છાંડિવા મળી ત્રિણિહ આહાર છાંડિવા મળી સહૂ ગચ્છવાસી કરઈ છઈ, પરં સામાયિકતાંઈ ચ્યારિ આહાર છાંડિવાનઈ કાજિ અવિરતિ દોષ વારિવાનઈ કાજિ સામાયિકતાંઈ ચડવિહાર પચ્ચક્ષાણ કરઈ ‘અન્નતથડણામોગેનં’ ઇત્યાદિ ચ્યારિ આગારસેતી એ ચડવિહાર તિવિહાર દુવિહાર. એ ૩ પચ્ચક્ષાણ કરઈ, પચ્ચ-

વ્રત્તાણના આવશ્યક સાચવિવાનહ કાજિ, સામાયિકમાંહિ પાણી પીવાનહ નિષેધ નથી જાણ્યહ “જં કહસામાહો ઉદ્દિદુકહંપિ મુંજહ” ઈતિ શ્રીનિશીથભાષ્યચૂર્ણિના પાઠ થકી સામાયિકમાંહિ ચ્યાર આહાર શ્રાવકનહ કલ્પહ, તે મળી સામાયિકમાંહિ સામાયિકતાંઈ ચહવિહાર એ પાઠોચ્ચાર ચરિમ પચ્ચક્ષ્ણાણહ કરાહ છહ, સવારનહ સામાયિકનહ નવકારસી પચ્ચક્ષ્ણાણ ચહવિહાર છહજિ, વલી પોરિસીતાંઈ પચ્ચક્ષ્ણાણ ૪ આહારના છહજિ, તે મળી સામાઈ ચહવિહાર ન કરીયહ, સાંક્ષિયહ ચરિમ પચ્ચક્ષ્ણાણહ હમ પચ્ચક્ષ્ણાણ કીજહજિ, વિચારી જોજ્યો ॥ ૮૬ ॥

ભાષા:—દિવસચરિમ પચ્ચક્ષ્ણાણુ ચોવિહાર. તિવિહાર અને દુવિહાર એમ ત્રણે પ્રકારે થાય છે, માટે (સાંજે) સામાયિક કરતાં એ (તિવિહાર દુવિહાર) પચ્ચક્ષ્ણાણુ (સમગ્ર રાત્રિ) ત્રણુ યા એ આહાર છોડવા નિમિત્તે બધાય ગચ્છવાસીઓ કરે છે. પરંતુ સામાયિકના ટાઇમ સુધી ચ્યારે આહાર છોડવાને તેમ અવિરતિ દોષ ટાળવાને “અનત્યડણાભોગેણુ” ઇત્યાદિ ચાર આગારોથી ચોવિહાર પચ્ચક્ષ્ણાણુ માત્ર સામાયિકના કાળનું કરાય છે, ચોવિહાર તિવિહાર અને દુવિહાર એ ત્રણે પચ્ચક્ષ્ણાણુ પચ્ચક્ષ્ણાણુ આવશ્યક સાચવવાને (યથાયોગ્ય) કરાય છે. સામાયિકમાં પાણી પીવાનું નિષેધ નથી જાણ્યું, કારણ કે નિશીથભાષ્ય ચૂર્ણિનું કથન છે કે “સામાયિકવાલો શ્રાવક ઉદ્દેશિક આહાર પણ ખાય” આથી સામાયિકમાં શ્રાવકને ચ્યારે આહાર કહ્યે, માટે સાંજે સામાયિકમાં તેના ટાઇમ સુધીનું દિવસચરિમ ચોવિહાર પચ્ચક્ષ્ણાણુ કરાય છે, સવારના સામાયિકમાં તો નવકારસી ચોવિહાર છેજ, અને (પોરસી

વાળાને પણ) પોરસી સુધી ચારે આહારના પચ્ચડ્ખાણુ છેજ. માટે સવારની સામાયિકમાં ચોવિહારનું પચ્ચડ્ખાણુ નથી કરતા અને સાંજના દિવસચરિત્ર ચોવિહાર કરાય છે. વિચારિ જોજો.

(તપા ખરતર ભેદ ગ્રંથ ૧ બોલ ૮૮, ગ્રંથ ૨ બોલ ૯૭ મો)

૮૭ પ્રશ્ન—તથા સ્વરતર શ્રાવક પ્રભાતિ સામાયિક કરતાં પહિલાં સકરથા(શક્રસ્તવ)કરી પછડ રાઈપાયશ્ચિત કાઉસ્સગ કરઈ, તે સ્યું ?

ભાષા—ખરતર શ્રાવક સવારે સામાયિક કરતાં પહેલાં શક્રસ્તવ (ચૈત્યવંદન) કરીને પછી રાષ્ટ્ર પાયચ્છિત કાઉસ્સગ કરે, તે શું ?

તત્રાર્થે—પ્રભાતઈ શ્રાવક પઢિકમણા પહિલડ જાગ્યાનડ સકરથડ (શક્રસ્તવ) કરઈ તથા પ્રભાતિ પઢિકમ્યાં પછી વીજડ સકરથડ કહઈ, પહિલઈ સકરથઈ વિણ કીયઈ વીજડ સકરથડ કિમ કીજઈ ? અનઈ રાઈપાયચ્છિત કાઉસગ પઢિકમણાથી પહિ-લાઈ કીજઈ પછઈ કીજઈ, અનઈ રાતિ જાગ્યા હુવઈ તડ રાઈપાય-ચ્છિત્તના કાઉસ્સગ ન કીજઈ પુણિ, તે ભણી પહિલા સકરથા કહિવાજિ, તથા યતિ તથા રાતીપોસહતા શ્રાવક પાછિલી રાતિઈ જાગઈ રાઈપાયચ્છિત્તના કાઉસ્સગ કરઈ, પછઈ સકરથા કહઈ, એ શ્રીઓઘનિર્યુક્તિ ટીકામાંહિ તથા પચ્ચાશકચૂર્ણિમાંહિ યતિનઈ તથા શ્રાવકનઈ ઇમજિ પહિલા રાઈપાયચ્છિત્તના કાઉસ્સગ કરી પછઈ શક્રસ્તવ કહઈ ઇમ લિસ્યા છઈ, તે દેસી અમ્હારા પૂર્વાચાર્ય પિણ ઇમહી આચરઈ છઈ ॥ ૮૭ ॥

ભાષા.—શ્રાવક સવારે પઢિકમણું કર્યા પહેલાં જાગવાનું શક્રસ્તવ કહે અને પઢિકમણું કર્યા પછી (પ્રતિક્રમણુ સમાપ્તિનો) બીજો શક્રસ્તવ કહે, પહેલો

શકસ્તવ કહ્યા વગર ખીજો શકસ્તવ કેમ કહેવાય ? અને રાધપાયચ્છિન્નનો કાઉ-
સ્સગ્ગ પરિક્કમણા પહેલાં તથા પછી પણ કરાય + અને જો રાત્રે જાગતા રહ્યા
હોય તો રાધપાયચ્છિન્નનો કાઉસ્સગ્ગ ન પણ કરે, માટે (પરિક્કમણા)
પહેલાં શકસ્તવ કહેવાજ તથા યતિ અને રાતપોસાતી શ્રાવક (અન્ને)
પાછલી રાત્રે જાગે (ત્યારે) રાધપાયચ્છિન્નનો કાઉસ્સગ્ગ કરીને પછી
શકસ્તવ કહે. એમ ઓધનિયુક્તિ ટીકા તથા પંચાશકચૂળિમાં યતિ
અને શ્રાવક અન્નેને રાધપાયચ્છિન્નનો કાઉસ્સગ્ગ કર્યા બાદ શકસ્તવ

+ જેમકે ‘દેવસિયપાયચ્છિન્ન’નો કાઉસ્સગ્ગ આજે બધાય ગમ્મ-
વાળાઓ દેવસી પરિક્કમણાના અંતેજ કરે છે, છતાં તપાના પૂર્વજ
આચાર્ય જયચંદ્રસૂરિ સ્વરચિત્ત પ્રતિક્કમણુહેતુગર્ભમાં દેવસી પ્રતિ-
ક્કમણુથી પહેલાં પણ કરવાનું સામાચારીના વશથી લખે છે. જુઓ—

“અયં ચ કાયોત્સર્ગઃ સામાચારીવશેન કૈશ્ચિત્પ્રતિક્રમણસ્યાંતે
કૈશ્ચિચ્ચાદૌ ક્રિયતે ઇતિ ।”

તેમ રાધ પાયચ્છિન્નનો કાઉસ્સગ્ગ પણ યથાડવસરે પરિક્કમણુથી આગળ
કે પાછળ કરવામાં કયા શાસ્ત્રને બાધ આવે છે ? તે જન્મવાચાર્ય બતાવે.

આ પાઠ જોતાં પ્રશ્ન થાય છે કે-કયા સામાચારી ગ્રંથના આધારે
દેવસી પ્રતિક્કમણુથી પહેલાં ‘દેવસિયપાયચ્છિન્ન’નો કાઉસ્સગ્ગ કરવાનું
જયચંદ્રસૂરિએ લખ્યું છે ? તે પ્રમાણુ જન્મવાચાર્ય બતાવે, અને એજ
જન્મવાચાર્ય પ્રભૃતિ તપાઓએ પોતાના પરમગુરુઓની આ આજ્ઞાને
ઉગાડી દઇ માત્ર દેવસી પરિક્કમણુની પાછળજ એ કાઉસ્સગ્ગ કરવાનું
એકાંત કેમ પકડી લીધું છે ? એનોય ઉત્તર જન્મવાચાર્ય આપે

કહેવાનું લખ્યું છે, તે દેખીને અમારા પૂર્યાચાર્યો એમજ આચરે છે. x

x તપા ખરતર ભેદ પૃં ૭૪ માં મૂળ લેખકે વદન લાખ્યની
 “ ઈરિયાકુસુમિણ ઉસ્સગ્ગો, ચિવવંદણ પુન્નિવંદણાડ્ડલોણ । વંદણ
 સ્વામણ વંદણ, સંવર ચઉત્થોમ દુસમ્માઓ ॥ ૬૮ ॥ આ ગાથા
 ટાંકીને તેમ જગ્યાચાર્યાએ પણ પૂરી ગાથાનો અર્થ ન લખતાં મન
 કાવતું લખીને કુસુમિણુ કાઉસગ્ગ કર્યા પછીજ ચૈત્યવંદન કરવાનું
 એકાંત આગ્રહ કર્યું છે, પણ સ્વસ્થ ચિત્તે થોડો વિચાર કરવો હતો
 કે ‘ આ ગાથામાં કહ્યા મુજબ બધીય વિધિ અમો (તપાઓ) કેમ નથી
 કરતા ? આ ગાથામાં કહ્યા મુજબ તો ઇરિયાવહી, કુસુમિણુ કાઉસગ
 અને ચૈત્યવંદન કરીને સીધી મુહપત્તી પડિલેહી વાંદણા દેવા જોઈએ
 અને ત્યાર પછી પણ આલોચના રૂપ વંદિતુ કહીને વાંદણા અખ્ખુદિઓ
 અને વાંદણા દેવા આદિ કરતાં છેલ્લે ૪ ખમાસમણ દીધા પછી બે
 સજ્જાય કરવા કહે છે, તે પ્રમાણે જગ્યાચાર્યાદિ તપાઓ કેમ નથી કરતા ?

ખીણું સેનપ્રશ્ન ઉં ૩ પ્રશ્ન ૧૯૨ માં પૂછવામાં આવ્યું છે કે—
 રાઘપડિકમણામાં કુસુમિણુ કાઉસગ. ચૈત્યવંદન અને સજ્જાય કર્યા
 પછી ૪ ખમાસમણાં દેવાનું પ્રતિક્રમણ હેતુગર્ભમાં કહ્યું છે, તેવી તેરી તો
 આપણામાં કરાતું નથી તેનું શું કારણ ? ઉત્તરમાં આચાર્ય વિજયસેન
 સૂરિએ ફરમાવે છે કે—યતિદિનચર્યાદિમાં સજ્જાય પછી ૪ ખમાસમણાં
 કહ્યાં છે અને શ્રાદ્ધદિનકૃત્યવૃત્તિ તેમ વંદારૂવૃત્તિ આદિમાં સજ્જાય
 પછી પડિકમણું હાવાનું કહ્યું છે. તેથી તે (ખમાસમણાં) સજ્જાય
 થી પહેલાં જણાય છે, કેવો વિચિત્ર ઉત્તર ? અરે !!! શ્રાદ્ધદિનકૃત્ય
 વૃત્તિ આદિમાં સજ્જાય પછી પડિકમણું હાવાનું કહ્યું છે પણ ૪ ખમાસ-

(તપા ખરતર ભેદ ગ્રંથ ૧ બોલ ૮૯, ગ્રંથ ૨ બોલ ૯૯ મો)

૮૮ પ્રશ્ન-તથા સ્વરતરાંનંદ ગુરુની પ્રતિમા આગઈ પાદુકા આગઈ
યતિ ઈરિયાવહી પડિકમઈ નમોત્યુણં કહઈ, તે સ્યું ? ।

ભાષા:-ખરતરેને ગુરુની પ્રતિમા તથા પાદુકા આગળ યતિ
ધરિયાવહી પડિકમે અને નમોત્યુણં કહે છે. તે શું ?

તત્રાર્થે-તેહ ગુરુ આગઈ તથા ગુરુની થાપના આગઈ નમોત્યુણં
અમ્હારઈ કોઈ નથી કહતા, ઈરિયાવહી ગુરુની સ્થાપના આગલી
પડિકમ્યાજિ કીજઈ, ગુરુના કાઉસગ્ગ પિણ કીજઈ, એ વાત
કાંઈ વિરુદ્ધ નથી, યતિયાંના થૂમ તે પહિલાઈ થાતા “થૂમસય
ખાડયાણં” ઇતિ વચનાત્ । ૪ લોગસ્મના ૧૦૦ સાસ પ્રમાણ
કાઉસગ્ગ કીજઈ ‘લોગસ્સ ઝગ્ગોઅગરે’ કહીયઈ, જેહ મણી ગુરુ
આગઈ ઈરિયાવહી પડિકમીયઈ છઈ ॥ ૮૮ ॥

ભાષા -- તે (સાક્ષાત્) ગુરુ યા ગુરુની થાપના (પ્રતિમાદિ)
આગળ નમોત્યુણં અમારે ક્રોધય નથી કહેતા, અને ધરિયાવહી ગુરુ
(યા તેમની સ્થાપના) આગળ પડિકમાય છે. (પ્રતિક્રમણમાં) ગુરુના
કાઉસગ્ગ દરાય છે. અને સાધુઓના થુભો પહેલાં પણ થતાં હતાં, ભરત
ચક્રવર્તિએ પોતાના સો ભાઈઓના થુભ અનાન્યાનો ઉલ્લેખ શાસ્ત્રમાં
છે, (ખીજું) ચાર લોનસ્સ-એકસો શ્વાસોશ્વાસનો કાઉસગ્ગ કરી પ્રકટ લોગસ્સ

મણાં દેવાનું સજ્જાયથી પહેલાં તો નથીને કહ્યું ? તો પછી યતિદિનચર્યા
વિગેરેથી વિરુદ્ધ થઈ સજ્જાયથી પહેલાં ૪ ખમાસમણાં દેવાનું કયા
વિશેષ માન્ય શાસ્ત્રના આધારે આચાર્યશ્રીએ ફરમાવી દીધું ? એનો
ઉત્તર જગ્યાચાર્ય સર્વમાન્ય શાસ્ત્ર પ્રમાણ સાથે આપે.

કહેવાય છે કારણ ? ગુરૂની આગળ ધરિયાવહી (બધાય ગચ્છોમાં) પડિકમાય છે. (જેમ તેમાં કાઉસગ્ગ લોગસ્સનો તથા પ્રકટ લોગસ્સ કહેવાનું થાય છે. તેમ ગુરૂના કાઉસગ્ગમાં પણ લોગસ્સનો ચિંતન કથન કરવામાં શું હરકત છે ?)

(તપા ખરતર ભેદ ગ્રંથ ૧ બોલ ૯૦, ગ્રંથ ૨ બોલ ૧૦૦ મો)

૮૬ પ્રશ્ન—તથા સ્વરતરાંરઙ્ગ પર્વદિવસિ વહ્ગાગિ ગીત ચઙ્ગી ન ગાંઙ્ગયઙ્ગ, તે સ્યું ?

ભાષા—ખરતરોને પર્વદિવસે વૈરાગના ગીત ચોપાઠ આદિ નથી ગાતા. તે શું ?

તત્રાર્થે—અમ્હારઙ્ગ ગચ્છિ સર્વ પર્વદિર્વાસ વયરાગી ગીત ચઙ્ગપર્ઙ્ગ ગાવતાં પાલતા નથી. શ્રાવક ઝાંપણઙ્ગ મેલિ વૈરાગના ગીત તથા ચઙ્ગપર્ઙ્ગ ગાવઙ્ગ અથવા મ ગાવઙ્ગ, જિમ દાઙ્ગ આવઙ્ગ તિમ કરઙ્ગ, પરં તપારંઙ્ગ પ્રમાતિ ગૌતમસ્વામીનઙ્ગ રાસ ભાવ ગીત કવિત્ત ગાવતાં શ્રાવક શ્રાવિકા દીસઙ્ગ છઙ્ગ, પુણિ ગયસુકુમાલ-ઢંઢળા-કુમાર ધન્ના અણગારના ગીત કાં નથી ગાવતા ? તે મળી તિહાંઙ્ગ ઇહલોકાર્થજિ ધર્મ દીસઙ્ગ છઙ્ગ, પ્રમાતિ જિમ ગૌતમસ્વામીની નવ-કરવાલી ગુણઙ્ગ છઙ્ગ તિમ તુમ્હાંઙ્ગ ધન્ના અણગારની નવકરવાલી ગુણતા હુસ્યઙ્ગ ? પરં તિતલું બોલીયઙ્ગ જિતલઙ્ગ આપમાંહિ ન વહઙ્ગ, આપ રાલી રમીયઙ્ગ ॥ ૮૯ ॥

ભાષા:—અમારા ગચ્છમાં બધાય પર્વદિવસે વૈરાગના ગીત. ચોપાઠ ગાતાં નિષેધતા નથી, શ્રાવક શ્રાવિકાઓ પોતાની મેળે ગાવો ન ગાવો. મન આવે તેમ કરો, પરંતુ તપાના શ્રાવક શ્રાવિકાઓ સવારે ગૌતમ સ્વામીના રાસ ભાસ ગીત કવિત્ત ગાવતા સંભળાય છે. પણ ગજસુકુમાલ

કે હંદણકુમાર ધનાઅણુગારના ગીત કેમ નથી ગાતા ? માટે ત્યાં પણ આ લોકાર્થેજ્ઞ ધર્મ દેખાય છે, અને સવારે જેમ ગૌતમસ્વામીની નવકરવાલી ગણો છો તેમ તમે ધના અણુગારની પણ નવકરવાળી ગણતા હશે ? (મનુષ્યે વિચારપૂર્વક) તેટલું બોલવું કે જેટલું બોલવાથી પોતાના ઉપર રેલો ન આવે. (એટલે) પોતાનું બચાવ કરીને રમવું. +
(તપા-ખરતર ભેદ ગ્રંથ ૧ બોલ ૯૧, ગ્રંથ ૨ બોલ ૯૮ મો)

૬૦ પ્રશ્ન—તથા સ્વરતર શ્રાવક શ્રાવિકા પ્રમાતૈં સામાયિક

+ તપા ખ. ભેદ પૃ૦ ૭૫ માં લખ્યું છે કે—“ ખરતર, જેમાં વૈરાગ્ય લાગ્યા હોય તેવા વૈરાગી સાધુ મહાત્માનાં ગીત સજાય ચોપાઇ વિગેરે ચોમાસી પર્યુષણ વિગેરે મોટા પર્વદિવસે પણ ગણતા નથી તે ક્યાં કહ્યું છે ? તપા મોટે પર્વે પણ વિશેષ વૈરાગી સાધુની જોડો કહે છે, ખરતર નથી કહેતા, તેમનો ધર્મ ઇહલૌકિક ઉપર મારેલો છે ” એટલે પૂછવાનું કે તપાઓ તો પાખી આદિના દિવસે અજિયસંતા શિવાય હરકોઈ સ્તવન કહેતા હશે ? અને સજાયમાં પણ ‘સંસારદાવા’ અને ‘ઉવસગ્ગહર’ શિવાય હરકોઈ મુનિ મહાત્માઓની સજાયો કહેતા હશે ? પાખી આદિના પહેલા દિવસે ‘સંતિકર’ શિવાય બીજો કોઈ પણ સ્તવન કે સ્તોત્ર ન બોલવો. આ તે તપાનો ધર્મ ક્યા લોક ઉપર મંગાયેલો છે ? શું બીજા હર કોઈ ભગવાનનું સ્તવન કે સ્તોત્ર તે દિવસે બોલવામાં તપાઓને કાંઈ પાપદોષ લાગી જાય છે ? કે એમનો કાંઈ ગ્રાસ લૂટાઈ જાય છે ? તે કાંઈ સમજતું નથી. પોતાની આચરણ-પ્રવૃત્તિઓ તો બધીએ સારી શાસ્ત્રાનુસારી અને બીજાની બધીએ શાસ્ત્રવિરૂદ્ધ ખોટી બતાવવી એ તપાનો પરંપરાગત કુલાચાર છે.

કરીનહ આચાર્યાદિ ૪ સ્વમાસમણ ન થઈ, સજ્જાય મંદિમાયાં
પસઈ સજ્જાય કરઈ, તે સ્યું ?

ભાષા:—અતર શ્રાવક શ્રાવિકાઓ સવારે સામાયિક લઈને આચાર્યાદિ
ચાર ખમાસમણાઓ નથી દેતા અને સજ્જાય સંદિસાઉં આદિ
આદેશો માંડ્યા વગર સજ્જાય ઠરે છે તે શું ?

તત્રાર્થે—આચાર્યાદિકનત્ર વાંદિવત્ર સજ્જાયના સ્વમાસમણ
સામાયિક કરતાં વર્યા છઈ, પછઈ વલી ૪ સ્વમાસમણનત્ર દેવત્ર
એ સામાયિક ક્રિયામાંહિ નથી. જે મળી વેલા જાણી આચાર્યા-
દિક પડિકમણા ઠાવતા હુવઈ તત્ર આચાર્યાદિ વાંચાનત્ર, તથા
તેહીજ આચાર્યાદિ સાથિ પડિકમણા ઠવઈ તત્ર શ્રાવકનો શ્રીઆચા-
ર્યાદિકનહ વાંદિવાનત્ર સ્યત્ર પ્રયોજન થાઈ ? વિચારી જોજ્યો,
ચારિત્રીયા પુણિ પ્રમાતિ ઝમા સજ્જાય કરી પછઈ વલી સજ્જાયના
સ્વમાસમણ નહી દેતા, પહિલોકેઈજિ સ્વમાસમણે બઈસી સજ્જાય
કરઈ છઈ, પૂછી જોજ્યો, તથા શ્રીઆચાર્યાદિ યતિ વિચ્ચમાન થાઈ
તત્ર વલી વાંદી બઈસીયઈ, પહિલોકી સજ્જાયની સ્વમાસમણજિ
બઈસીનહ પડિકમણવેલા જઈ સવાર હુવઈ તત્ર સજ્જાય નવ-
કારાદિ ગુણીયઈ, અનહ જઈ પડિકમ્યાં પછી સામાયિક પારઈ તત્રહી
સજ્જાય સંદિસાવ્યાનત્ર કામ કોઈ ન થાઈ, એવં વિચારિજ્યો ૯૦ ।

ભાષા—આચાર્યાદિકને વાંદવું અને સજ્જાયના ખમાસમણ દેવાં એ
સામાયિક લેતાં ક્યું છે. પછીથી વલી ચાર ખમાસમણ દેવાં સામા-
યિકની ક્રિયામાં નથી, કારણ ? (પ્રતિક્રમણની) વેલા બાણીને આચાર્યાદિ
પડિકમણું ઠાવતા હોય તો આચાર્યાદિ વાંદવાનું તથા તેજ આચાર્યા-

દિકની સાથે પરિક્રમણું હાવે તો શ્રાવકને આચાર્યાદિ વાંદ્યાનું શું પ્રયોજન હોય ? વિચારી જોજો, સંયમી સાધુઓ પણ સવારે ઊભા સજ્જાય કરીને વલી સજ્જાયના ખમાસમણા નથી દેતા, પહેલાનાજ ખમાસમણે ખેસીને સજ્જાય કરે છે, પૂછી જોજો. શ્રીઆચાર્યાદિ યતિ વિદ્યમાન હોય તો વલી વાંદીને ખેસે અને પહેલાના (સામાયિક લેતી વેલાએ આપેલ ખમાસમણે ખેસીને જો સવારના પ્રતિક્રમણની વેલા હોય તો સજ્જાયના નવકાર આદિ ગણે અને જો પરિક્રમ્યાં પછી સામાયિક પારે તોય સજ્જાય સંદિસાઉં આદિ આદેશ લેવાની કાંઈ જરૂર નથી. આ રીતે વિચારજો.

(તપા ખરતર ભેદ ગ્રંથ ૧ ખોલ ૯૨, ગ્રંથ ૨ ખોલ ૧૦૨ મો)

૬૧ પ્રશ્ન—તથા સ્વરતર યતિ સદા સદા વિગઈ વિહરે, અનહ તપા યતિ સદા સદા ન વિહરઈ, તે સ્યું ?

ભાષા:—ખરતર યતિ હમેશાં વિગઈ વહોરે છે. અને તપા યતિ હમેશાં નથી વહોરતા, તે શું ?

તત્રાર્થ—અમ્હારઈ પુણિ સદા સદા કારણ પશ્વઈ યતિ વિગઈ નથી વિહરતા, જે સ્વપ કરી વિગઈ સદાઈ લ્યઈ તે પાપ-શ્રમણ ન કહાઈ, નિપટ દષ્ટિરાગ ન કીજઈ ॥ ૬૧ ॥

ભાષા:—અમારે પણ યતિઓ વગર કારણે સદા વિગઈ નથી વહોરતા અને કારણ વિશેષતા અંગે ખપ કરીને જે સદા વિગઈ વહોરે તે પાપશ્રમણ નથી કહેવાતા. + એકાંત દષ્ટિરાગ ન કરવું.

+ તપા ખ. ભેદ પૃ ૭૭ માં ઉત્તરાધ્યયન સૂત્ર ૧૭ મા પાપ-શ્રમણીય અધ્યયનની ૧૫ મી ગાથા કે જેમાં દૂધ આદિ વિગઈઓ

(તપા ખરતર ભેદ ગ્રંથ ૧ બોલ ૯૩, ગ્રંથ ૨ બોલ ૧૦૩ મો)

૬૨ પ્રશ્ન—સ્વરતર યતિ ત્રિવેલા ગોચરચરી કરઈ તપા ન કરઈ, તે સ્યું ?
ભાષા:—ખરતર યતિ એ વેળા ગોચરી જાય. અને તપા ન જાય, તે શું ?

વારંવાર લેનારને પાપશ્રમણ કહ્યો છે, તે ટાંકીને લખ્યું છે કે—“ તપા-
તિથિએ કારણુ વિના છ વિગધઓ લેતા નથી, ખરતર સદાય લે છે ”
એથી લેખક અને સાથેજ અનુવાદક જન્મવાચાર્યનો પણ હાર્દ એ
જણાય છે કે ‘ વિગધઓ સદા લેવાના અંગે ખરતર સાધુઓ પાપશ્રમણ
અને તપાસાધુઓ તિથિશિવાય તો ભલેને ગમે તેમ લિએ, પણ તિથિએ
કારણુ વગર નથી લેતા એટલે સુશ્રમણ છે ’ પરંતુ આપવામાં
આવેલ ગાથામાં ‘ તિથિએ વગર કારણુ છ વિગધઓ ન લેવી ’ આવો
વિધાન છેજ ક્યાં ? તે ગાથામાં તો પર્વ કે અપર્વ, ગમે તે દિવસે
પણ વારંવાર વિગધઓ લેનારને પાપશ્રમણ કહ્યો છે, જુઓ—

“ દુદ્ધ-દહી વિગઈઓ, આહારેઈ અભિક્ષણં । અરઈ ય
તવોકર્મમે, પાવસર્માણત્તિ વુચ્ચઈ ॥૨૫॥ ” (ઉત્તરાધ્ય૦ અધ્ય૦ ૧૭)

‘ વ્યાખ્યા—દુગ્ધં ચ દધિ ચ દધિ-દુગ્ધં, પ્રાકૃતત્વાત્સૂત્રે
વ્યત્યયઃ, વિકૃતિહેતુત્વાદ્વિકૃતી, ઉપલક્ષણાદ્ઘૃતાદ્યશેષવિકૃતિપરિગ્રહઃ,
આહારયત્યભીક્ષણં વારંવારં, તથાવિધપુષ્ટાલંબનં વિનાઽપીતિ ભાવઃ,
અતઃપ્રતિષ્ઠા-પ્રીતિમાંશ્ચ તપઃકર્મણ યઃ, મ પાપશ્રમણ इत्युच्यते’
(ઉત્ત૦ સર્વાર્થસિદ્ધિટીકા૦ પાના ૧૦૫)

આ પાઠને અવલોકતાં સ્પષ્ટ જણાય છે—કોઈ પણ ખાસ કારણુ
વિના જે સાધુ વારંવાર છએ વિગધઓનું ભક્ષણુ કરે છે, ને એથીજ
તપસ્યા ઉપર અશ્ચિ રાખે છે, તે પાપશ્રમણ છે ’ એમ સૂત્રકાર અને
ટીકાકારનો સ્પષ્ટ અભિપ્રાય છે. પણ ‘તિથિએજ વગર કારણુ વિગધઓ

તત્રાર્થે—યતિ ગોચરચરી ૧ વાર ૨ વાર ૩ વાર જિવારહ
સ્વપ હુવહ તિવારહ જાયાજિ કરહ, જિવારહ આહાર લ્યહ તિવારહ

ન લેવાનું તો સૂચન સરખુંય નથી, છતાં જગન્નાથાર્ય પોતેજ હંમેશા
કે પર્વ નિધિએ કેટલી વિગતઓ ત્યાગે છે ? તે સાચા હૃદયે જાહેર
કરી દે. શું તેઓ સાદાએ નિવી કરે છે ? જો નથી કરતા તો શું
કારણ ? શું તેઓ સદાય બિમાર રહે છે ? જો સદા બિમાર નથી
રહેતા તો પોતાના પૂર્વજોના તેમ પોતાના પણ કથનને ડોકરે મારી
શા માટે સદા નિવી નથી કરતા ? આતો “ આપ ગુરુજી ખાય કાંદા,
ને બીજાને દિયે આધા ” ની લોકોક્તિને ચરિતાર્થ કરવીજ છે.

બીજું સાધુ-સાધ્વીયોને સૂત્રોના જોગ, જે શ્રુતજ્ઞાનની આરાધના
નિમિત્તે કરાવાય છે, તેનાં હૃષ્ટ પુષ્ટ યુવાન બલવાન સાધુ-સાધ્વીયોને પણ
વગર કારણે જ્યાં આધાકર્મી આહાર સાધુ સાધ્વીયો માટે શાસ્ત્રકારો
સદાય ગોમાંસ તુલ્ય વર્જનીય બતાવે છે. ત્યાં ખાસ એડર મુજબ ગૃહસ્થોએ
નિપજ્નવેલ છએ વિગતઓના આધાકર્મી ૩૦ નિવિચિતાઓ સાધુ-
સાધ્વીયો લિયે છે આ તે કાંઈ જોગ કે ભોગ ? ઉપધાનવાહીયોને પણ
નિવિનો પચ્ચદ્ખાણ કરાવીને વિવિધ માલ મસાલાઓ ખવરાવાય છે,
જે શ્રાવકને વર્ક્ષમાન તપની ઓળી ૭૦ લગભગ થઈ ગઈ હોય. તેને
પણ છાસ કે તેનાથી બનેલ ઘેંસ લેવાની સખ્ત મનાઈ કરાવાય અને
સાધુ-સાધ્વીયોને જોગમાં પહેલાજ દિવસે ખાસ તેનાજ નિમિત્તે બનાવેલ
ઘેંસ વિગેરે આંબિલમાં દેવરાવાય, આ તે કયા શાસ્ત્રનો આચાર છે ?
એથીય વધુ નવપ્રસૂતા (નવી વ્યાએલી) ગાયના દૂધની બલહી કે જે
છૂટા સાધુને શું ? શ્રાવકનેય અલક્ષ્ય મનાય છે, તે જોગવાહીયોને
લેવાનું તપાની જોગવિધિમાં કહેલ છે, જુઓ—

ગોયરચરી કરૂં, એ માર્ગ છૂં, ચતુર્થમન્ત્રીયા યતિનંદ્ર એક ગોયરચરિનંદ્ર કાલ, જડૂં તેતલંદ્ર ન સરૂં તંદ્ર ૨ ગોયરચરી કાલ, છટ્ટમન્ત્રીયા યતિનંદ્ર ૨ ગોયરચરીના કાલ, અટ્ટમન્ત્રીયા યતિનંદ્ર ૩ ગોયરચરીના કાલ, વિકિઠમન્ત્રીયા યતિનંદ્ર “ સત્વે ગોયરકાલા ” કહ્યા છૂં, જિવાંડૂં જોડ્યંડૂં તિવારંડૂં ગોયરચરી કરૂં, પુર્ણ એક ટંક વિહરીનંદ્ર વીજા ટંકનંદ્ર જાણી આહાર ગણંદ્ર નહીં, જે એક ટંકના વિહરી રાખીનંદ્ર વીજડૂં ટંકિ જિમંદ્ર તેહનંદ્ર કાલાતિક્રાંત નામંદ્ર દોષ શ્રીભગવતીમાંહિ કહ્યા છૂં, તપાં-રંદ્ર પ્રભાતિ મહૂ પદમાલી તદ્દંદ્ર આહાર લ્યંડૂં, વિપદરંદ્ર ગોયર-ચરીની હીંડી કરૂં, વલો થાકતંદ્ર આહાર રાખી મહૂ આંપાંપણંદ્ર મેલિ આહાર કરૂં છૂં, સ્વરતંગાંડૂં જડૂં આહાર જોડ્યંડૂં તંદ્ર વલી માંઘિંડૂં જાડૂં ઇષણાશુદ્ધંદ્ર વિહરી આહાર લ્યંડૂં, વલી તપાંરંદ્ર જાલોરી સાચોરી દેમમાંહિ ૨ વેલા ગોયરચરી કરૂં પુર્ણ છૂં, કરીનંદ્ર ઓલવીયંડૂં તે મહાદોષ છૂં, પૂછી જોડ્યો, પરમાર્થંદ્ર શાસ્ત્રનંદ્ર ન્યાયંદ્ર રાખીનંદ્ર આહાર લીયાનંદ્ર દોષ છૂં, વીજડૂં

“ દિનત્રયપ્રસૂતગોદુગ્ધાદિ (પ્રહર ગણીને લીજે) ”

(આચાર વિવિ નામક સામાચારી પ્રકરણ, પાના ૩૮)

આ પ્રકરણ ઝવેરી મંછુભાઈ શ્રવણભાઈ સુરતવાળા તરફથી સાગરાનંદ્રે પ્રકાશિત કરેલ છે. આ ઉપર અતાવેલ બાબતો કયા શાસ્ત્રના આધારે કરે છે તે સર્વમાન્ય પ્રાચીન શાસ્ત્રનો પ્રમાણ જાણવાચાર્ય અતાવે. નહીં તો તપાનો ધર્મ બધો દેહપોષણ ઉપરજ મંડાયેલ છે.

ટંકડ વિહરી જિમ્યાં દોષ નહીં, હમ જાણિજ્યો, કારણહ જયણા
કરિવી એ મૂલ માર્ગ છઠ્ઠ ॥ ૬૨ ॥

ભાષા:- યતિ ગોચરી એક એક ત્રણ વાર. જ્યારે ખપ હોય ત્યારે જવાબ કરે. એટલે કે જ્યારે આહાર લિયે ત્યારે ગોચરી જાય, એ માર્ગ છે, એકાંતરે ઉપવાસ કરનાર ચઉત્થભત્તીયા સાધુને ઉત્સર્ગે એક વેળા ગોચરી જવાનું, જે એક વાર જવાથી ન સરે તો બીજી વેળા ગોચરી જાય. અમે ઉપવાસે આહાર લેનાર છઠ્ઠભત્તીયા સાધુને એ વેળા અને ત્રણ ત્રણ ઉપવાસે આહાર લેનાર અઠ્ઠભત્તીયા સાધુને ત્રણ વેળા ગોચરી જવાનું, અને ત્રણ ઉપવાસથી વધુ ચાર ચાર કે પાંચ પાંચ આદિ ગમે તેટલા ઉપવાસે આહાર લેનાર વિગિઠ્ઠભત્તીયા સાધુને “ સઠ્ઠે ગોચરકાલા ” અર્થાત્ જ્યારે તેની ઇચ્છા આહાર કરવાની હોય ત્યારે તેને ગોચરી જવાનું કહ્યું છે, પરંતુ એક ટંક વહોરીને બીજા ટંક માટે આહાર રાખી ન મૂકે, જે એક ટંક વહોરીને રાખી મૂકે અને બીજા ટંકે વાપરે તેને કાલાતિક્રાંત નામનો દોષ ભગવતી સૂત્રમાં કહ્યો છે. તપાઓને સવારે અધાય (સાધુ-સાધ્વીઓ) પઢમાલીએ તાઢો આહાર લિયે અને અપોરે ગોચરી જાય. (તેમાં) વલી (વધારે લાવીને) વધેલ આહાર રાખી મૂકે, ને સાંજે પોતપોતાને મેળે (મંડળી વગર) આહાર કરે છે. ત્યારે ખરતરોને સાંજે જે આહારની ખપ હોય તો વલી સાંજે એપણાની શુદ્ધિએ વહોરીને આહાર લિયે છે. તેમ તપાઓને પણ જાલોરી-સાયોરી પ્રાંતમાં એ વેળા ગોચરી કરે પણ છે. પૂછી જેજે. કરીને છુપાવ્યું. મહાદેવ છે. વસ્તુતઃ શસ્ત્રીતિએ રાખી મૂકીને આહાર લેવામાં દોષ છે પરંતુ બીજા ટંકે વહોરીને આહાર કરતાં

દોષ નથી. + એમ જાણવો. કારણે જ્યાંના કરવી એ મૂલ્ય માર્ગ છે.

(તપા ખરતર ભેદ ગ્રંથ ૧ ખોલ ૯૪, ગ્રંથ ૨ ખોલ ૧૦૪ મો)

૯૧ પ્રશ્ન તથા સ્વરતરાંનંદ રાતં અર્થપૌરુષી યતિ ન મળાવડ, તે સું ?

ભાષા:-ખરતરના યતિ રાત્રે અર્થ પોરસી નથી ભણાવતા, તે સું ?

+ એ વખત ગોચરી જવામાં જો દોષ હોત તો શ્રુતકેવળી શ્રીભદ્ર-
આદુરવામી કલ્પસૂત્રમાં ચતુર્થભક્તીયા સાધુને એક વેળાથી અણસરતે
ખીજી વેળા. તેમ છટ્ટ-અટ્ટમભક્તીયાને ઉત્સર્ગે એ ત્રણ વેળા ગોચરીનો
કાળ શા માટે અતાવ્યો ? અને વિગિટકભક્તીયા માટે “ સર્વે ગોચર-
કાલા ” કહીને જ્યારે પણ વાપરવાની ઇચ્છા થાય ત્યારે ગૃહસ્થના ઘેર
ગોચરી જવાનું શા માટે અતાવ્યું ? ‘ એકજ વખત લાવીને રાખી
મૂકવી અને જ્યારે ઇચ્છા થાય ત્યારે એમાંથીજ વાપરી લેવું ’ એમ
કેમ ન કહ્યું ? જેને જેટલી વાર વાપરવું હોય તેણે તેટલી વાર ગૃહસ્થના
ઘેર ગોચરી જવાનું કહેવાથી સ્પષ્ટ છે કે સાધુને ખીજી વાર ગોચરી
જવામાં દોષ નથી, ખીજું લોકમાં એક વખત ગોચરી લાવવાનું અતાવવું
કહેવું અને ખાવું એ ત્રણ વખત. આ તે કાંઈ સુવિહિત મુનિઓનો
આચાર કહેવાય ? ના જરાય નહી, આ તો યથાઈંદ્ર પાસત્યાઓનો
યા તો તેરાપંથિઓનો છે, જેમ તેરાપંથીઓ એક વેળા ભરી લાવીને
સાંજસુધી ખાતા રહે છે તેમ તપાઓનો પણ આ ઢંગ છે ઉપરના બોલને
તેમ આધુનિક સાધુઓની રહેણી કહેણીને જોતાં જાણે તપાઓનોજ
વારસો તેરાપંથીઓએ લીધો હોય એમ ભાસ થાય છે. ખીજું ચ્હાય
દેવીના ખાસ ઉપાસક અનેલા આજના સાધુ-સાધ્વીઓના તરપણા
ગૃહસ્થોના ઘેર દિવસમાં કેટલી વેળા પહોંચે છે ? એનો ખ્યાલાત તો

તત્રાર્થે—સાંક્ષિકા આવશ્યક કર્યા પછી સદા જે ‘મહ્માયં સંદિમાવેમિ’ इतादि खमाममण दीजइ छइ ते सूत्रपौरुषी भणाविवानी खमामण छइ, परं तपा पहर गति गयां पठइ, ‘बहु पडिपुण्णा पोरिसी’ ए शब्द पखइ बीजी अर्थपौरुषीनी किसी खमाममण आपी अर्थपौरुसी भणावइ छइ ? ते जणा-विवउ, अम्हारइ पुण पहर गति गयां पठइ यति सदा ‘बहु पडिपुण्णा पोरिसी’ एहवउ कहइ छइ, जइ तपानइ किरणएकइ बीजइ शब्दइ करी अर्थपौरुषी भणावता हवउ तउ विचारीयइ । अनइ जइ दीहइ ‘उग्घाडा पोरिसी’ तथा ‘बहुपडिपुण्णा पोरिसी’ ए अर्थपौरुषीनउ खमाममण छइ तउ पहर गति गयां पठइ ए पाठ किम कहाइ छइ ? परं जाणीयइ छइ ‘उग्घाडा पोरिसी’ अनइ ‘बहुपडिपुण्णा पोरिसी’ परमार्थइ एकजि छइ, दिनइ पउण पोरिसीगइ तुम्हारइ ‘बहुपडिपुण्णा पोरिसी’ कही भणा-

આ ઉપરના બોલનો અનુવાદ કરતાં જન્મ્યાચાર્યે જરાસરખોય નથી કર્યો, કામે શું ? ખ્યાલાત કરવાનું, જેમ બિલાડી દૂધતરફ નજર રાખે છે પણ ખડેપગે ઉભો રહેલ દૂધમાલિકના હસ્તગૃહીત લટ્કની તરફ નજર થોડીય રાખે છે ? તેમ યેન કેનાપિ ખરતરોને જીલ્લા નિન્દવ અતાવવાના મનોરથોમાં ગરકાવ બનેલા જન્મ્યાચાર્ય પણ આગમપ્રજ્ઞાતાની ધૂનમાં શા માટે ખ્યાલાત રાખે ? કચ્છ માંડવીમાં જન્મ્યાચાર્યના વડીલાચાર્ય રામસૂરિના ચોમાસા દરમ્યાન અમુક સંભાવિત શ્રાવકોના ઘેર નિયમિત તરપણીઓ દોડતી હતી, અને નિત્ય વ્યાખ્યાન પહેલાં નિયમિત રસોઇ તૈયાર થતી હતી, જે હજુય માંડવીના શ્રાવકો સંભારે છે.

वीयइ छइ अम्हाइ 'उगघाडा पोरिसी' कही भणावीयइ छइ, परं पच्चक्खाणभाष्यमांहि- 'नाहुवयणं उगघाडा पो'रिसी' इम क्हा छइ, ते तुम्हे दठना वाह्या जइ गुरुना क्हा नथी मानता तउ अम्हारा क्हा किम मानिस्यउ ? अर्थपौरुषीना खोटा आडम्बर करी उपासरामांहि श्रावक श्राविकांरा मेला थाइ छइ, घणा असमंजस थाता सांभलीयइ छइ, अन्इ जइ तुम्हारइ दीदइ अर्थपौरुषीनइ भणाविवा भणी बीजउ शब्द नथी तउ ए प्रश्न तुम्हे कर्यउ ते स्युं ? परमार्थइ 'उगघाडा पोरिसी' तथा 'बहुपडि-पुण्णा पोरिसी' ए बिहुं शब्दनउ ए अर्थ-जे सूत्र पौरुषी पूरी थइ छइ । वली तुम्हारा भगवन् दीदइ अर्थपौरुषी भणावीनइ यतियां भणी किसी राथानउ अर्थ कहइ छइ ? जे रातिइ गुरु कन्हालि यति गाथा वखाणावइ ए वात पृछीनइ साबती करीज्यो, ए वात नउ आडम्बर घणउ कराइ छइ पु'ण उत्तरनी वेलायइं जणाम्यइ । अपरं राति अर्थपौरुषी सांभलिवानइ मिसइं भार्व क श्राविका पुणि आवती सांभलीयइ छइ ऊंची नीची रही अर्थपौरुषी सांभलइ छइ, वली तिहां मोटा पदिक आगलि अर्थपौरुषीना मेलावा करनां भला भूंडा मनुष्य जाणिवानइ काजि कर्या दीवानइ योगिइं अग्निकाय-नउ आरम्भ महाविषिद्ध जे छज्जीर्वानकायना महाशस्त्रभूत, ते थाइ छइ, तपांनी पोमालि ए महारम्भ नथी, ऋषमतीयांनइ पिण हिवणां श्रीहीरविजयसूरिनइ परिवारमांहि ए अनर्थ प्रवर्त्तइ छइ, परं दृष्टिगगना वाह्या तु.हां सितधर्मार्थी पुणि देखता नथी, बाहा थकाई इहां भोला थाउ छउ, ए गच्छवासीयां यतियांमांह

પર્ગચ્છીયાંમાંહિ મતીયાંમાંહિ લોવાંમાંહિ મહા અપવાદ જાઈ
છડ, એવી અર્થપૌરુષીનડ સ્યડ લાભ ? એવં જાણેજ્યો ॥૬૩॥

ભાષા:-સાંજે હમેશાં પ્રતિક્રમણ કર્યા પછી ‘સજ્જાયાં સંદિસાવેમિ’
મત્યાદિ જે ખમાસમણ દેવાય છે તે સત્રપોરસી ભણાવવાના ખમાસમણ
છે, પરંતુ તપાઓ પહોર રાત ગયા પછી ‘બહુપડિપુણા પોરિસી’ આ
શબ્દ શિવાય અર્થપોરસીનો ખીજો કયો ખમાસમણ દઈને અર્થપોરસી
ભણાવે છે ? તે જણાવશો. અમારે પણ પહોર રાત વીત્યે સાધુઓ
હમેશાં ‘બહુ પડિપુણા પોરિસી’ કહે છે, આ શિવાય જે કોઈ ખીજો
શબ્દ કહી તપાઓ અર્થપોરસી ભણાવના હોય તો વધી વિચારીયે,
અને જે દિવસે ‘ઉગ્ધાડા પોરિસી’ તથા ‘બહુપડિપુણા પોરિસી’
એજ અર્થપોરસીના ખમાસમણ છે તો પછી પહોર રાત વીત્યે આ પાઠ
કેમ કહેવાય છે ? પરંતુ જણાય છે કે ‘ઉગ્ધાડા પોરિસી’ અને ‘બહુ-
પડિપુણા પોરિસી’ એ પરમાર્થે એકજ અર્થમાં વપરાયો છે. દિવસે
પોણી પોરસીએ તમારે ‘બહુ પડિપુણા પોરિસી’ અને હમારે
‘ઉગ્ધાડા પોરિસી’ કહીને ભણાવાય છે, + પરંતુ પચ્ચક્રખાણ ભાષ્યમાં
પાઠ છે કે “સાહુવયણં ઉગ્ધાડા પોરિસી” તમે જ્યારે સ્વહૃદના
વશે પોતાના ગુરુનોય કથન નથી માનતા ત્યારે અમારો કથન કેમ
માનશો ? આ અર્થપોરસીના ખોટા આડંબર કરીને અપાસરામાં શ્રાવક

+ પંચવસ્તુક ટીકા પાના ૮૩ માં પાઠ છે કે-“સાહુવયણં સાહુણો
મણંતિ ઉગ્ધાડા પોરિસી” વિચારવાનું કે બધી જગોએ જે ‘બહુ
પડિપુણા પોરિસી’ કહેવું તો પછી ઉપરના પાઠમાં કહ્યા મુજબ ‘ઉગ્ધાડા
પોરિસી’ કયાં કહેવું ? એનો જુવાળ જાંખ્યાચાર્ય આપે.

શ્રાવિકાઓના મેળા થાય છે. અને ઘણા અનુચિત વર્તનો થતા સાંભળીએ છીએ. અને જે દિવસે અર્થપોરસી ભણાવવા માટે તમારે બીજાને શબ્દ નથી તો પછી આ પ્રશ્નજ્ઞ શા માટે ક્યું ? વસ્તુતઃ ‘ઉદ્યાગ પોરસી’ અને ‘બહુ પડિપુણ્ણ પોરસી’ આ બંને શબ્દનો અર્થ એકજ છે કે-સૂત્રપોરસી સમાપ્ત થઈ છે, વલી તમારા પૂજ્યો દિવસે અર્થપોરસી ભણાવીને યતિઓને કદા ગાથાનો અર્થ કહે છે ? જે રાત્રે ગુરૂપાસે યતિઓ ગાથાનો વખાણ કરાવે, એ વાત પૂછીને નકી કરજો. એ (અર્થપોરસીની) વાતનો આડંબર ઘણો કરાય છે પણ ઉત્તરની વેદાયે જણાશે, બીજું રાત્રે અર્થ પોરસી સાંભળવાના બહાને ભાવિક શ્રાવિકાઓ પણ આવતી સાંભળીએ છીએ, ઉપાશ્રયમાં ઉપર નીચે રહીને અર્થ પોરસી સાંભળે છે. અને તેમાંય મોટા પદવીધરોની આગળ અર્થપોરસીના મેળાવડ કરતાં ભડા ભૂંડ મનુષ્યોની તપાસ માટે કરવામાં આવતા દીપકના યોગે અગ્નિકાયનો આરંભ. કે જે છ જીવ નિકાયનો મહાન્ શસ્ત્રભૂત હોવાના અંગે સર્વથા નિષિદ્ધ છે. તે થાય છે, તપાઓની પોસાળે આ મહારંભ નથી, ઋષિમતીઓને પણ હમણાં શ્રીહીરવિજય સૂરિના પરિવારમાં એ અનર્થ ચાલી રહ્યો છે. પરંતુ દષ્ટિરાગના વશે તમે સ્વચ્છ ધર્મથી હોવા છતાં દેખતા નથી. ડાહ્યા થકા પણ આ બાબતમાં ભોળા થાઓ છો. એના અંગે ગચ્છવાસી યતિઓમાં, પરગચ્છીઓમાં, તેમ મતીઓમાં અને લોકોમાં મહા અપવાદ થઈ રહ્યો છે, એવી અર્થપોરસીનું લાભ શું ? એમ સમજજો,

(તપા ખરતર ભેદ ગ્રંથ ૧ બોલ ૮૫, ગ્રંથ ૨ બોલ ૧૦૬ મો)

૬૪ પ્રશ્ન—તથા સ્વરતર શ્રાવક શ્રાવિકા સામાયિક લેતાં ?
૧૧ સ્વમાસમણ ઘડ, તમા ૮ સ્વમાસમણ ઘડ, તે રુ ?

ભાષા:—ખરતર શ્રાવક શ્રાવિકા સામાયિક લેતાં અગ્યાર ખમાસમણુ આપે છે ત્યારે તપા આઠ ખમાસમણુ આપે છે. તે શું ?

તત્ત્વર્થે-સ્વમાસમણ દેઈ 'માણવક'નહ ન્યાયહ આદેશ પાંમી વલી સ્વનામમણ દેઈ વાંદહ, જિમ ઠાકુમાં કન્હાલિ જુદાર કરી આજ્ઞા માંગીનહ જાતાં વલી જુદાર કરીયહ તિમ સામાયિક મુહપત્તી પડિલેહવાની ૨ સ્વમાસમણ, સામાયિક સંદિસાવતાં ૩ સ્વમાસમણ હરિયાવહી પડિકમવાની ૧ સ્વમાસમણ, સઙ્ખાય સંદિમાવણની ૩ સ્વમાસમણ, બહમણહ સંદિમાવણની ૩, એવં સાંભિ ૧૧ સ્વમાસમણ થાહ, પ્રમાતિ સામાયિક લેતાં ૧૦ સ્વમાસમણ થાહ, અપવાદહ પાંગુરણ ની ૩ સ્વમાસમણ દેતાં તેહથી ૩ સ્વમાસમણ સાંભિહં તથા સવારહં સામાયિક કરતાં અધિકી થાહ છહ, હમ પોસહમાંહિ પિણ ૧૬ સ્વમાસમણ થાહ છહ શ્રીજિનવલ્લભસૂરિજીની સામાચારીનહ મેલિ, તથા તુમ્હારહ 'પોસહ સંદિસાડં' તથા 'પોસહ ઠાડં' એ સ્વમાસમણ આપહ છહ તે શ્યું ? તપાની સામાચારી ગ્રન્થમાંહિ 'પોસહં સંદિસાવેમિ-પોસહે ઠામિ' એહવા પાઠ છહ, અન્યથા 'હરિયાવહિયં પડિક્કમામિ' એહવા પાઠ કહહ હહ પરં 'હરિયાવહી પડિક્કમું' એ પાઠ નથી કહતા, એ વિચારી જોજ્યો, એવં 'સામાહય સંદિસાડં' સર્વ સ્વમાસમણ સ્વોટી દિવરાહ છહ ॥૬૪॥

ભાષા:—માણવક ન્યાયે ખમાસમણુ દધને આદેશ લીધા પછી ફરી ખમાસમણુ દધને વાંદે, જેમ રાજાદિકને પાસે નમસ્કાર કરી આજ્ઞા માંગીને જાતાં ફરીથી નમસ્કાર કરે. તેમ સામાયિક મુહપત્તી પડિલેહવાના

એ ખમાસમણ, x અને સામાયિક સંદિસાવતાં ત્રણ, ઇચ્છિયવહી પડિ-
કમવાનો એક સજ્જાય સંદિસાવવાના ત્રણ ને ત્રણે એસણે સંદિસાવવાના.

x નૌપધત્રિધિના પ્રસંગે પંચાશકથૂર્ણિ પાના ૧૦૪ માં પાઠ છે કે
“હોમવંદગણં વંદિય ‘દ્વચ્છા’ સં૦ પોત્તિયં પડિલેહેમિ’ત્તિ મણિય
સ્વમા૦ પુઠ્ઠવયં પોત્તિયં પડિલેદિય સ્વમાસમણેણ પોમહં સંદિમાવિય
વીયસ્વમાસમણેણ પોસહે ઠામિત્તિ મણિત્તા સ્વમામમણં દાઉં ઉદ્ધટ્ઠિઓ
હંમિં ઓણયકાઓ ગુરુવચણમણુમ સંતો નમોક્કારમુચ્ચરિય મણદ્
કરેમિ મંતે ! પોમહં” આ પાઠમાં ખમાસમણ પૂર્વક મુહપત્તિ
પડિલેહવાનો આદેશ માગ્યા બાદ ફરીથી બીજો ખમા૦ દધને મુહપત્તિ
પડિલેહવાનું અને ખમા૦ પૂર્વકજ “પોસહં સંદિસાવેમિ” તથા
‘પોસહે ઠામિ’ કહ્યા બાદ ફરી ત્રીજો ખમા૦ દધને નવકાર ગણી પોસહ
દંડક ઉચરવાનું ચોક્કસ કથન છે, અને પૌરુષ દંડક ઉચર્યા બાદ સામા-
યિક લેવા માટે પણ ખમાસમણ પૂર્વક મુહપત્તિ પડિલેહવાનો આદેશ
માગી ફરી બીજો ખમાસમણ દધને મુહપત્તિ પડિલેહવાનું તેમ ખમા૦
પૂર્વકજ ‘સામા૦ સંદિ૦—સામાધ્યમે ઠામિ’ આ મે આદેશો માંગી ફરી
ત્રીજો ખમા૦ દધ નવકાર ગણીને સામાયિક ઉચરવાનું કહેલ છે, જુઓ—
‘પુણો પોમહર્વિહિણા સામાદ્યમુહપોત્તિં પેહિત્તા સ્વમાસમણેણ સંદિ-
માવિય વીયસ્વમાસમણપુઠ્ઠવં સામાદ્યે ઠામિત્તિ મણિત્તા સ્વમા૦ પુઠ્ઠવં
અદ્ધાવણયગત્તો પંચમંગલં કહ્ઠિત્તા મણદ્-કરેમિ મંતે ! સામાદ્યં’

આ ઉપર ટાંકેલ પાઠોથી સ્પષ્ટ જણાય છે કે દરેકે દરેક ક્રિયાના
આદેશો માગવા પહેલાં ને પછી. બન્ને તરફ ખમાસમણ અવશ્ય
દેવા જોઇયે, એથી તપાઓ જે આદેશ માગવા પહેલાંજ માત્ર એક

એવં સરવાળે ૧૧ ખમાસમણા સાંજની સામાયિક વિધિમાં હોય છે અને સવારના ૧૦ ખમાસમણા હોય છે, અપવાદે (તાદ આદિના કાન્હે) પાંગરણાના ત્રણ ખમાસમણા દેતાં સવારે ને સાંજે ત્રણ ત્રણ ખમાસમણા અધિક હોય, એટલે સવારના ૧૩ અને સાંજના ૧૪ ખમાસમણા થાય છે, તે શ્રીજિનવલ્લભ સૂરિજીની સામાયારીના અનુસારે છે. પણ તમારા શ્રાવકો ખમાસમણા દહને “ પોસહ સંદિસાઉં-પોસહ ઠાઉં ” જે કહે છે તે

ખમાસમણા દિએ છે, ને પાછળનો ખમાસમણા નથી આપતા તે એમનો શાસ્ત્રવિરુદ્ધ કપોલકલ્પિત ધરના ચાચાર છે, આ રીતે તપાઓ જ્યાં ત્યાં ઉજાજા ધર્યે જાય છે, શાસ્ત્રમર્ગે ચાલવાની તો નિયત છેજ નહીં.

તપા ખ ભેદ પૃ. ૮૧ માં લખ્યું છે કે “ ખરતર પોસહ લેતાં જ ખમાસમણા દે છે x x x તપા ચાર આપે છે ” એનો ઉત્તર પણ ઉાર ટાંકલ ચૂણિં પાકથી રૂપૃ મળી આવે છે કે ખરતર શ્રાવકો જ ખમાસમણા જે અપે છે તે તો ચૂણિંના પ્રમાણથી આપે છે, પણ તપાઓ ચારજ ખમાસમણા કયા સર્વમાન્ય શાસ્ત્રના પ્રમાણથી આપે છે ? તે જાગ્યાચાર્ય સાખીત કરી બતાવે, વળી એજ પૃ. ૮૧ માં આગળ ચાલતાં લખે છે કે “ ખરતરો ત્રણ ખમાસમણા સામાયકમાં વધારે અને બે પોસહમાં વધારે કરે છે, તેનો અધિકાર બિદકુલ નથી ” આ લખાણથી આ બોલના મૂળ લેખકને તેમ એના અનુવાદકાગમાત્ર જાગ્યાચાર્યને પંચાશક ચૂણિંનું સાવ અનભિજ્ઞ-પણજ જાહેર કરે છે. જે ઉપલક્ષ દષ્ટિએ એનું અવલોકન માત્ર પણ એમણે કયું હોત નો “ તેનો અધિકાર બિદકુલ નથી ” આવો હડહડતું જુટૂડું સહસા લખી ન નાખતા. અસ્તુ.

શું છે ? અર્થાત્ કયા શાસ્ત્રાનુસાર છે ? (આ તમારા ધરતો કે ધાટનો એકથી રહિત આચાર છે) કારણ કે તોના સામાચારી ગ્રંથોમાં ‘પોસહ’ સંદિસાવેભિ-પોસહે હામિ’ એવો પાઠ છે. અન્યથા ‘ઠરિયાવહિયં પડિક્કમામિ, એમ કહો છો પણ ‘ઠરિયાવહી પડિક્કમુ’ એમ તો નથી કહેતા. આએ વિચારી જોજો, આવી રીતે ‘સામધ્ય સંદિસાઉ’ મત્યાદિ મધ્યા આદેશો ખોટા કહેવાય છે (સમાચારી ગ્રંથોમાં ક્યાંય નથી. કિંતુ તમારા ધરતો કપોલકલ્પિત આચાર છે.)

(તપા ખરતર ભેદ ગ્રંથ ૧ ખોલ ૯૭, ગ્રંથ ૨ ખોલ ૧૦૭ મો)

૬૨ પ્રશ્ન—તથા જે શ્રાવક દિન ડગ્યાં પછઙ્ગ પોસહ લ્યહ તે તપાંરડ પોસહ લેહ પછઙ્ગ પચ્ચક્ષણ કરી પછઙ્ગ પડિકમણા કરહ, અનહ સ્વરતરના શ્રાવક પોસહતા પહિલું પડિકમી પછઙ્ગ પચ્ચક્ષણ કરહ, તે સ્યું ? ।

ભાષા:—જે શ્રાવક દિવસ ઉગ્યા આદ પોસહ લિયે છે તે તપાઓને પોસહ લીધા પછી પચ્ચક્ષણ કરીને પડિકમણું કરે છે, ને ખરતરના શ્રાવક પોસાતી પહેલા પડિકમણું કરીને પછી પચ્ચક્ષણ કરે. તે શું ?

તત્રાર્થે—શ્રીમહાવીરનહ શામનિ છમ્માસી તપમાંહિ કાઝમ્મિગિ જે તપ કરિવડ સંભાવ્યડ હવહ તે તપ ૨ વાંદણા દેઈનહ કરિવડ છહ, પહિલડં તપ કરીનહ સ્યડ તપ ચિતારીયહ ? અનહ સ્યડ તપ કરીયહ ? અનહ છ આવશ્યકમાંહિ જે છેહલડ આવશ્યક પચ્ચક્ષણ તે પહિલું વાંદણા વિણ લીધાં કિમ કરહ ? , યોગો-પધાનમાંહિ પુણિ નવકારસી પચ્ચક્ષણ વેલા સુચ'વ્યાનહ કર-ણહ પહિલું પડિકમતાં કરીયહ, મૂલગા પચ્ચક્ષણ વાંદણા

દેઈ પછ્ઠઈ કરાઈ છઈ, અપરં જઈ પહિલા ગુરુમુખિ ત્રિ વાંદણા
 દેઈ પન્ચક્રવાણ કર્યા તડ પીઢ્ઠલોકા પન્ચક્રવાણ વાંદણા
 છમ્માસીતપ ચિંતવણા નિરર્થા થયા. સાંમ્નિનઈ આવશ્યકઈ
 પન્ચક્રવાણ આવશ્યક પહિલાજિ જિવારઈ દિવસચરિમ પન્ચક્રવા
 તિવાગ્ઝિ થયા, વીજા પાંચ આવશ્યક ક્રમઈ પછ્ઠઈ કર્યાજિ
 કરડ, પ્રમાતિ પછ્ઠઈજિ વાંદણા દેઈ પન્ચક્રવાણ મનમાંહિ ત્રેવડ્યા
 જે છઈ તે કરિવા, પન્ચક્રવાણ જે છઠા આવશ્યક કહીયઈ તે
 પ્રમાતના આવશ્યકના મેલિ લિખ્યા છઈ, સાંમ્નિનઈ આવશ્યકઈ
 પહિલા કાલવેલા ભણી પન્ચક્રવાણ આવશ્યક કરાઈ છઈ, સાંમ્નિનઈ
 પઢિકમણઈ જે છેહલા ૨ વાંદણા દિવરાઈ છઈ તે મંગલ નિવેદના
 નિમિત્તિ છઈ, પુણિ પન્ચક્રવાણ આવશ્યક ભણી નથી, જોડ્યો ૯૫ ।

ભાષા:-શ્રીમહાવીર પ્રભુના શાસનમાં છમ્માસીતપમાંથી જે તપ
 કરવા કાઉસગ્ગમાં વિચાર્યો હોય તે તપ એ વાંદણા દધને કરવાનું છે.
 પહેલાં તપ કરીને શું તપ ચિતારે? અને શું તપ કરે? અને જ
 આવશ્યકોમાં જે છેલ્લો આવશ્યક પચ્ચક્રખાણ છે તે વાંદણા દીધા
 વગર પહેલાં કેમ કરાય? યોગ તથા ઉપધાનમાં પણ નવકારસી પચ્ચ-
 ક્રખાણ વેળા સૂચવવાને કારણે પહેલાં પઠિકમણું કરતાં કરાય છે.
 પરંતુ મૂળગા પચ્ચક્રખાણ વાંદણા દધને કરાય છે. ખીનું જે પહેલાં
 ગુરુમુખે એ વાંદણા દધને પચ્ચક્રખાણ કર્યા તો પાછળના. પચ્ચક્રખાણ
 વાંદણા છમ્માસી તપ ચિંતવના નિર્નર્થક થઈ, સાંજના આવશ્યકે
 પચ્ચક્રખાણ આવશ્યક પહેલાંજ ન્યારે દિવસચરિમ પચ્ચક્રખો ત્યારેજ
 થઈ ગયો, ખીજ પાંચ આવશ્યક અનુક્રમે પછીથી કર્યાંજ કરો, સવારે

પડિકમણા પછીજ વાંદણા દધને મનમાં ધ રેલ પચ્ચદૂખાણુ કરવું, પચ્ચખાણુ જે છોડો આવશ્યક કહેવાય છે તે સવારના આવશ્યકના હિસાબથી કહેવાય છે, સાંજના આવશ્યકે કાલવેલાના કારણે પચ્ચદૂખાણુ આવશ્યક પહેલા કરાય છે, અને સાંજના પડિકમણામાં જે છેલ્લા એ વાંદણા દેવાય છે. તે મંગલ નિવેદન માટે છે પણ આવશ્યક માટે નથી, જેને (તપા ખરતર ભેદ ગ્રંથ ૧ ખોલ ૬૮, ગ્રંથ ૨ ખોલ ૧૦૮ મો)

૧૦ પ્રશ્ન-તથા તપાનંદ શ્રાવક દિન ડગ્યાં પછી પોમહ લેતાં પહિલાં બહુવેલંના સ્વામસમણ દેઈ પછઈ પડિકમણું કરઈ, સ્વરતગં-નંદ પડિકમણા કરી પછઈ બહુવેલંના સ્વામસમણ ઘઈ છઈ, તે સ્યુ ?

ભાષા-તપાના શ્રાવક દિન ડગ્યા બાદ પોસહ લેતાં પહેલાં બહુ વેલંના ખમાસમણા દધને પછી પડિકમણું કરે છે. તે ખરતરના શ્રાવક પડિકમણું કરીને બહુવેલંના ખમાસમણ દિયે છે. તે શું ?

તત્રાર્થે—જઈ યતિ પ્રમાતિ પડિકમણાં કીધાં પછીજિ બહુ-વેલંના સ્વામસમણ ઘઈ તત્ત શ્રાવકનંદ સ્યું પૂછિવત ? અન્યથા યતિ પુણિ પડિકમણા થકી પહિલાંજિ એ સ્વામસમણ કાં નથી દેતા ? તથા શ્રાવક પુણિ પહિલા પડિકમણા કરી બહુવેલ સંદિ-સાવી પછઈ પોસહ કાંઈ નથી લેતા ? પરં જેહના જે પ્રસ્તાવ થાઈ તિવારઈ તે સ્વામસમણ દિવરાઈ, એવં ઘણત વિચારિજ્યો ॥૬૬॥

ભાષા:—જ્યારે યતિઓ સવારે પડિકમણું કર્યા પછીજ બહુવેલંના ખમાસમણા દિયે છે ત્યારે શ્રાવકને શું પૂછવાનું ? અન્યથા (શ્રાવક-જે પડિકમણા પહેલાં બહુવેલંના ખમાસમણા દિયે તો) યતિ પણ પડિકમણાથી પહેલાંજ એ ખમાસમણા કેમ નથી દેતા ? + તેમ શ્રાવક

+ સાગરાનંદે છપાવેલ ‘ આચારવિધિ ’ નામક સામાચારી પાના

પણ પહેલાં પડિક્કમણું કરી બહુવેલાંના ખમાસમણા દધને પછીથી પોસહ કેમ નથી લેતા ? પરંતુ જેનો જે અવસર હોય તે અવસરેજ તે ખમાસમણાઓ દેવરાય. આ રીતે ખૂબ વિચારજો.

(તપા ખરતર ભેદ ગ્રંથ ૧ બોલ ૯૯, ગ્રંથ ૨ બોલ ૧૦૯ મો)

૬૭ પ્રશ્ન—તથા સ્વરતર પોસહ-સામાયિકમાંહિ પાંગુરણા સંદિમાવહ છર્ડે, તે સ્યું ?

૧૨ માંના “તત્ત્રો પડિક્કમણં કર્કરત્ત સ્વમાસમણદુગેણ બહુવેલં સંદિમાવિય” આ પાઠથી તેમજ “एवं रात्रिकप्रतिक्रमणं विधाय साधुः कृतपौषधः श्राद्धश्च क्षमाश्रमणद्वयेन ‘भगवन् ! बहुवेलं संधिमावेमि- बहुवेलं करेमि’ इति भणति” આ પાઠમાં કહ્યા મુજબ પડિક્કમણું કર્યા પહેલાં નહીં પણ પછીથીજ બહુવેલાંના આદેશો માગવા ચોક્કસ કહે છે ?

તપા ખ. ભેદ પૃ ૮૪ માં લખ્યું છે કે—“તપા દિવસ ઉઝ્યા પહેલાં કાલવેલાએ જ્યારે પ્રતિક્રમે ત્યારે અનુક્રમે પ્રતિક્રમ્યા પછી બહુવેલ સંદિસાવે, દિવસ ઉઝ્યા પછી કરે તો પહેલા સંદિસાવે છે” એટલે પૂછવાનું કે આવું કયા શાસ્ત્રકારનું કથન છે ? તે સર્વામાન્ય શાસ્ત્ર-પ્રમાણ જન્વાચાર્ય ખતાવે, અન્યથા પડિક્કમણું કર્યા પહેલાં બહુવેલાંના ખમાસમણ આપવા શાસ્ત્રાનુસાર નહીં પણ તપાના ઘરનો આચાર છે, પોતાની સામાચારી બાબત પોતાને માન્ય અને તે પણ અમુદ્રિત નહીં કિંતુ છપાઇને જાહેર થઈ ગયેલ સામાચારી ગ્રંથોમાં શું લખ્યું છે ? એનું જ જેમને જ્ઞાન નથી. એવા જન્વાચાર્ય આગમપ્રજ્ઞનું મોટું ટાઇટળ લગાવીને તપા ખ. ભેદ ખતાવવા બાહાર પડ્યા છે. એનો અર્થ શું ? એ તો વાંચકો સ્વયં વિચારી લે.

ભાષા:-ખરતર પોસહ અને સામાયિક લેતાં પાંગરણના આદેશ લિયે છે. તે શું ?

તત્રાર્થે—તે ઠેપાડા પૂંછણા મુહપત્તી થકી અધિકા ઉપગરણ કારણ વિશેષહ લેવા મળી ઓઢણા કાંદલાં કાંબલી પ્રમુલ્લ લેવાની સ્વાસમણ આપહ છહ, એ સ્વાસમણ જહ ન દીધી હવહ તહ અધિક ઉપગરણ સામાયિકમાંહિ-પોસહમાંહિ લેવા ન સૂમહ, ‘વાવારગ માઈ વોસિરહ’ ઇતિ વચનાત્, કુંડકોલીયહ સામાયિક લેતાં પાવારગ-વસ્ત્ર મૂંક્યા પુણિ છહ, અપરં કારણહ સામાયિકમાંહિ પુણિ એ સ્વાસમણ દિવગવહ છહ, તથા સામાયિકધર ઠેપાડા ન પાલટહ, જહ પાલટહ તહ અંગપડિલેહણ પુણિ સંદિસાહવી થાહ તથા તપાના સામાચારી ગ્રન્થમાંહિ પહિરણું સંદિસાવણની સ્વાસમણ પોસહવિધિમાંહિ લિખી છહ “જહ વાસારત્તો તો કટ્ઠાસણં સેસડટડમાસેસુ પાઉંછળગં-પહિરણગં સંદિસાવિય સ્વાસમણદુગેણ સજ્ઞાયં કરેહ” ઇત્યાદિ પાઠ જોહવહ, પાંગુરણા-પહિરણાં સરસાજિ છહ એ અધિકી સ્વાસમણ કિહાંથી આવી ? એતલહ પાંગુરણાની સ્વાસમણ વિણ દિયાં જે પોસહ-સામાયિકમાંહિ ઠેપાડા પાલટહ છહ ઓઢહ છહ તેહનહ દોષ છહ, પાંગુરણાની સ્વાસમણ દીયહ ને સર્વ દેષ ટલહ ॥૧૭॥

ભાષા-સામાયિકમાં ઉત્સર્ગથી લેવાતા ઉપકરણો, જેવા કે ધોતીયું કટાસણું મુહપત્તી. શિવાય અધિક ઉપકરણો કારણ વિશેષે વાપરવાને લેવા સાર પાંગરણા એટલે દુપટ્ટો કાંમલા કાંમલી વિગેરે લેવા ખાતર પાંગરણાના ખમાસમણ દેવાય છે, એ ખમાસમણ જો ન દીધા હોય તો સામાયિકમાં ઉચેરોક્ત ધોતીયું કટાસણું અને મુહપત્તી શિવાય

અધિક ઉપકરણ લેવા ન કદ્યે (કારણ ? આવશ્યક ચૂર્ણિ વગેરેનું)
 “ પાત્રાગમમાદૈ વોમિરઈ ” (ઓઢવા આદિના વસ્ત્રો છોડી દે) આવું
 કયન છે તેમ કુંડોલિક નામના શ્રાવકે સામાયિક લેતાં ઓઢવાના વસ્ત્રો
 છોડ્યા પણ છે. બીજું કારણે સામાયિકમાં તે વસ્ત્રો લિયે પણ ખરા કારણ ?
 પોસહમાં સામાયિક વ્રત પણ છે, માટે કારણે સામાયિકમાં પણ એ
 ખમાસમણાઓ દેવરાય છે. બીજું એ પણ છે કે સામાયિકમાં (લીધા
 પછી) ધોતીયું અદત્તવું નથી, જે અદલે તો અંગપડિલેલણના પણ
 આદેશો લેવા પડે, તથા તપાના સામાચારી ગ્રંથમાં પહેરણું સંદિસાઉં
 આદિ આદેશો લેવા પોસહવિધિમાં લખ્યા છે, (જેમકે) ‘ જે વર્ષાઋતુ હોય
 તો કદાસણું સંદિસાઉં આદિ અને શેષ કાળના આઠ માસમાં બેસણું
 તથા પહેરણું સંદિસાઉં આદિ આદેશો લઈને બે ખમાસમણ દહ
 સજ્જાય કરે ’ ઇત્યાદિ પાઠ તપાની સામાચારીમાં જોઈ લેવો. પાંગરણાં
 ને પહેરણાં સરખાંજ છે, આ અધિક ખમાસમણ ક્યાંથી આવ્યે ?
 એટલે પાંગરણાના આદેશ લીધા વગર પોસહ કે સામાયિકમાં જે કદાઈ
 ધોતીયું અદલે કે વસ્ત્ર કંબલાદિ ઓઢે તેને (ગુરૂ અદત્તાદિ) દોષ છે
 ને પાંગરણાના આદેશ લેવાથી ને અથા દોષો ટળી જાય છે. ‡

‡ તપા ખં બેદ પૃ ૮૪ માં લખ્યું છે કે-“ ખરતર સામાયક
 પોસહમાં બે ખમાસમણ દહ ‘ પગરણા સંદિસાઉં-પગરણા ઠાઉં ’ એમ
 ગુરૂના આદેશ માગી વસ્ત્ર ઓઢવા માટે લે છે ” આ લખાણ લખ
 નારાઓને ખરતર સામાચારીનું તો પુરૂં જ્ઞાન છે નહીં અને બેદ
 બતાવવા બહાર પડ્યા એ વિચારણીય છે, વાંચકોને જણાવાનું કે-જેમ સાધુ
 ઓને ઓઢવાનું ન્હાનું કપડું ‘ પાંગરણી ’ કહેવાય છે તેમ પોસામાં ઓઢવા

(તપા ખરતર ભેદ ગ્રંથ ૧ ખોલ ૧૦૦, ગ્રંથ ૨ ખોલ ૧૧૦ મો)

૯૮ પ્રશ્ન-તથા સ્વરતરાંરહ સાધુ-સાધ્વી શ્રાવક શ્રાવિકા પઢિકમણ્ડ
ઠાવતાં દેવસી પ્રમુખ પઢિકમિણ્ડ ઠાઉં એ સ્વમાસમણ ન થે, તે સ્યું ?

સાર લેવાતા કપડાને ‘ પાંગરણું ’ કહેવાય છે, તે માટે એ ખમાસમણુ દષ્ટ આદેશો લેવાય છે, તેમાં ખીજા ખમાસમણામાં ‘ ઠાઉં ’ નહીં પણ ‘ પડિગણું ’ કહેવાય છે, ખીજું લજ્જનીય અંગને ઢાંકવા ખાસ ઉપયોગી ધોતીયું તેમ મુહપત્તિ કટાસણું આદિ ઉપકરણો શિવાય ટાઢ આદિથી શરીરની રક્ષા માટે લેવાતા કપડા કાંખળી આદિ વાપરવા માટે પાંગરણાના આદેશો લેવાની જરૂરત જો ન હોય તો પછી તપાઓએ ખેસણાના આદેશો શા માટે લેવા જોઈએ ? ખીજું એ પણ વિચારવાનું કે તપાશ્રાવકો પહેલાંથીજ કટાસણું બિછાવી તેનાપર ખેસી જાય છે અને તે પછી ધરિયાવહિયા પઢિકમવા પૂર્વક સામાયિક ઉચર્યા પછી ખેસણાના આદેશો લે છે તે બહુજ અદ્યતિત છે, કારણ કે ગુરૂની આજ્ઞા પ્રાપ્ત કરવા માટેજ આદેશો માગવાના છે, એથી જો કટાસણાપર ખેસી ગયા પછી ખેસણાના આદેશો માગવા યોગ્ય ગણાતા હોય તો પછી તપાઓ સજ્જાય કર્યાબાદ સજ્જાયના, અને સામાયિક ઉચર્યાબાદ સામાયિકના આદેશો શા માટે નથી માગતા ? ખરતર તો બધે એકસરખુંજ કરે છે, એટલે જેમ સામાયિકના આદેશો માગીને સામાયિક ઉચરે અને સજ્જાયના આદેશો માગીને સજ્જાય કરે છે તેમજ ખેસણાના પણ આદેશો માગ્યા પછીજ કટાસણા ઉપર ખેસે છે. તપાઓ તો એમ પણ ઉજડ ચાલવા જેવુંજ કરે છે, ઘટવું કરવાની તો નિયત રાખતાજ નથી.

તપા ખ. ભેદ પૃ. ૧૫૮ માં લખ્યું છે કે “ તપા કહે છે-પગરણા

ભાષા —ખરતરોને સાધુ-સાધ્વી શ્રાવક શ્રાવિકાઓ પડિકમણું કરતાં દેવસી કે રાઘ પડિકમણું ઠાઉં એમ નથી કહેતા, તે શું ?

તત્રાર્થે—સાધુ સાધ્વી શ્રાવક શ્રાવિકાનહ એ સ્વમાસમણ દેવી ન ઘટઈ, જઈ ઠાવિવાની સ્વમાસમણ દેસ્યત તત્ત પહિલું સામાઈયં-પોમહં-વૈસણં સંદિસાવેમિની પરિ ‘પડિકમણં સંદિસાવેમિ’ એ પુણિ સ્વમાસમણ દેવી પડિસ્યઈ, તે તત્ત તપાંરઈઈ સ્વમાસમણ નહીં દિવરાતી, તત્ત એ સ્વમાસમણ કિમ દિવરાસ્યઈ ? વલી ભગવંતાંનહ ‘દેવસી પડિકમણં સંદિસાવહ’ એ જવાબ ‘સામાઈયં સંદિસાવહ’ની પરઈ દેવત પડિસ્યઈ, તે તત્ત ઉત્તર નથી અપાતત, વલી પછઈ પાસી ચત્તમાસી સંવચ્છરી પડિકમણત ઠાવઁ એ સ્વમાસમણ નથી દિવરાતી, વલી “ઈચ્છામિ ઠાવઁ જો મે દેવસિઓ અરિયારો કઓ” ઇત્યાદિ પાઠ દેવસી પડિકમણ ઠાવિવાના આદેશ માંગિવાનત થાઈ કિ ન થાઈ ? એવં વિચારીનહ બોલતાં લાભ છે ॥૬૮॥

ભાષા:—સાધુ સાધ્વીને તેમ શ્રાવક શ્રાવિકાને ખમાસમણ દહં ‘પડિકમણે ઠાઉં’ આ આદેશ લેવું ઘટતું નથી. યદિ ઠાવાનું ખમાસમણ દહને આદેશ માગશે તો સામાયિક-પોસહ-એસણાની માફક ખમાસ-

કટાસણા સર્વ ઉપધિમાં આવે ” તે શું જગ્યાચાર્ય સ્વભકતોને સામાયિક-પોસહ લેતાં “ઉપધિ સંદિસાઉં-ઉપધિ પડિગહું” એ આદેશો લેવરાવે છે ? કે જેના અંગે ઉપધિમાં પાંગરણા-કટાસણાનો સમાસ થઈ જવું કહે છે, વાંચકો ! જેયું ને કેવી સરસ વિચારધારા જગ્યાચાર્યની ? પોતાના સમાજમાં શું પ્રવૃત્તિ ચાલી રહી છે ? ને શું ખીજને લખી રહ્યા છે ? જ્યાં એટલુંય ખ્યાલ નથી ત્યાં ખીજ બાજતોનું શું કહેવું ?

મણુ દઢને ‘પડિકમણુ’ સંદિસાઉ’ એ આદેશ પણ પહેલાં માગવું પડશે, તે તો તપાને પણ મગાવતા નથી. તો પછી આ આદેશ કેમ મગાય ? ખીજું ગુરૂએને પણ ‘દેવસી પડિં સંદિસાવહ’ એ ઉત્તર ‘સામાયિક સંદિસાવહ’ ની પેરે દેવો પડશે, તે તો ઉત્તર નથી અપાતો, વલી (દેવસી પડિકમણુ’ હાયા) પછી પાખી ચોમાસી કે સંવચ્છરી ‘પડિકમણુ હાઉ’ એ આદેશો નથી માગતા, વલી (જેમ ‘દેવસિય’ આલોઉ’ કહીને ‘ધચ્છ’ આલોએમિ જેમે દેવસિચો ’ કહેવાય છે. તથા ‘પદ્ધિય’ પડિકમુ’ કહીને ‘ધચ્છામિ પડિકમિઉ’ જેમે પદ્ધિચો’ ઇત્યાદિ કહેવાય છે, તેમ) દેવસી પડિકમણુ’ હાવાનો આદેશ માંગ્યા બાદ ‘ધચ્છામિ હાઉ’ જેમે દેવસિચો અઘ્યારો કચો’ ઇત્યાદિ પાઠ બોલવાનું હોય કે નહીં ? આ રીતે વિચારીને બોલતાં લાભ છે. +

+ તપા ખ. ભેદ પૃં ૮૬ માં લખ્યું છે કે—“ખરતરો જ્યારે વળી પખ્ખી ચોમાસી સંવચ્છરી પ્રતિક્રમે છે ત્યારે પહેલાં ગુરૂનો આદેશ લઈ મુહપત્તી પડિલેહી પછી પ્રતિક્રમણુ સ્થાપે છે” એટલે પૂછવાનું કે પાખી આદિ પ્રતિક્રમણુ સ્થાપવાનો વિધાન ખરતરના કયા સામાચારી ગ્રંથમાં જન્વાચાર્યે જેયું હતું ? તે ગ્રંથનો પ્રમાણ જાહેર કરે, અન્યથા આ અસત્ય લખાણનું મિચ્છામિ દુક્કડં આપે, વગર જાણ્યે કાવે તેમ ભરડયે જવામાં શું મહત્વતા મળવાની હતી ? અસત્ય પ્રજ્ઞાપ કરતાં થોડું તો ભય રાખવું હતું, અસ્તુ,

વળી એજ પૃં ૮૬ માં આગળ ચાલતાં લખ્યું છે કે “ખરતરની સામાચારી પોતાની મનની કલ્પિત લાગે છે ” એટલે પૂછવાનું કે-જે તપાચો રાઇ-દેવસી પડિક્રમણું હાવાનો આદેશ આગ્રહ કરે છે

(તપા ખરતર ભેદ ગ્રંથ ૧ ખોલ ૧૦૧, ગ્રંથ ૨ ખોલ ૧૦૯ મો)

૯૯ પ્રશ્ન- તથા સ્વરતરાંરઙ્ગ વર્ષા કાલઙ્ગ શ્રાવક શ્રાવિકા સામાયિક તથા પોસહમાંહિ છતઙ્ગ યોગિ 'કઠાસણં સંદિસાવેમિ-કઠાસણં ઠાઈમિ' એ સ્વમાસમણ દ્યઈ, શેષકાલઙ્ગ 'પુંછણં સંદિસાવેમિ-પુંછણં ઠાઈમિ' એ સ્વમાસમણ દ્યઈ, તપાંનઙ્ગ ન દ્યઈ, તે સ્યું ?

ભાષા:-ખરતરોને શ્રાવક શ્રાવિકા વર્ષાકાળે સામાયિક પોસહ લેતાં છતે યોગે 'કઠાસણું સંદિસાઉં-કઠાસણું ઠાઉં' એમ આદેશ માગે અને શેષકાળે 'પુંછણું સંદિસાઉં-પુંછણું ઠાઉં' એમ આદેશ માગે, તપાને એમ ન માગે. તે શું ?

તત્રાર્થે-તપાંરા કીધા 'આચારમયં વીરં' એ ગાથા મૂલક સમાચારી ગ્રન્થમાંહિ શ્રાવક શ્રાવિકાનઙ્ગ વરસાતિ કઠાસણા શેષકાલિ પુંછણા સંદિસાવિવા લિલ્હયા છઙ્ગ, વચાવી જોડ્યો । હિવઙ્ગ ગીતાર્થે

તેજ તપાઓ પોતે પાખી આદિ પડિઙ્ગમણાઓ કેમ નથી હાવતા ? પોતે કરવું નહીં, ને બીજાપર અસદ્વેષારોપણ કરવું આવા માયા મૃષાનો આશ્રય શા માટે લેવાય છે ? પ્રતિઙ્ગમણુ હાવાના આદેશો બે પ્રતિઙ્ગમણુમાં માંગવા. ને ત્રણમાં ન માગવા. આ તપાની સામાચારી કેવી ઘટતી અને શાસ્ત્રથી મળતી છે ? કોઈ પણ શાસ્ત્રની આવી આજ્ઞા હોય કે હાવાના આદેશો બે પડિઙ્ગમણુમાં માંગવા, ને ત્રણમાં ન માગવા, તો તે પ્રમાણુ જગ્યાચાર્ય બતાવે, પરંતુ યાદ રહે કે પોતાનાજ પૂર્વજ્ઞેનો પ્રમાણુ પ્રમાણુભૂત મનાશે નહીં, એટલે આચાર્ય શ્રીહરિભદ્રભૂરિ. નવાંગટીકાકાર શ્રીઅભયદેવસૂરિ તેમ હેમચંદ્રસૂરિ જેવા સર્વામાન્ય પ્રમાણિક આચાર્યોનું પ્રમાણુ બતાવવું.

‘બૈસણં સંદિસાવેમિ’ इत्यादि पाठइ करी कठासणा तथा पुंछणा ए बेउं सूचिन्व्या जाणैवा, यति पुणि अम्हारइ सहू आषाढ चउमासानइ पडिकमणइ ‘पीठफलक संदिसाउं ?’ ए खमासमण २ आपी कठासणउ ल्यइ, ते भरी श्रावकने पुणि कठासणइ लेतां उच्चासणनी आशातना न थाइ, एवं परिछेज्यो ॥ ९६ ॥

ભાષા:—તપાના રચેલા “આચારમયં વીરં” એ ગાથાથી શરૂ થતા સામાચારી ગ્રંથ (પાના ૧૨)માં શ્રાવક શ્રાવિકાને વર્ષાકાળે ‘કઠાસણુ’ અને શેષકાળે ‘પુંછણુ’ સંદિસાવાનું લખ્યું છે, x વંચાવી જોજો. હવે ગીતાર્થેએ ‘એસણું સંદિસાઉં’ ઇત્યાદિ પાઠ કરીને ‘કઠાસણુ’ અને ‘પુંછણું’ બન્ને સૂચવ્યા જાણુવા, અમારે સાધુઓ પણ આષાઢ ચોમાસીના પડિકમણે એ ખમાસમણુ દધ ‘પીઠફલક સંદિસાઉં’ કહીને કઠાસણુ (પાટ-પાટલાઓ) લિએ છે. એટલે શ્રાવકોને પણ કઠાસણુના આદેશ લેતાં ઉચ્ચાસણુની આશાતના ન લાગે. આ હકીકત છે.

(તપા ખરતર ભેદ ગ્રંથ ૧ બોલ ૧૦૨, ગ્રંથ ૨ બોલ ૧૧૧ મો)

૧૦૦ પ્રશ્ન—તથા દેવસી તથા રાઈ પડિકમણા ઠાવતાં સહૂ ગચ્છવાસી ૪ સ્વમાસમણ આપइ छइ, पुणि खरतरांनइ पहिली

x આ રહ્યો તે પાઠ “જઈ વાસારત્તો તો કદઠાસણં, સેસડ-ઢઠમાસેસુ પાઉંછણગં સંદિસાવિન્ન” ઇત્યાદિ, તેમજ પંચાશકચૂર્ણિ પાના ૧૦૫ માં “વાસારત્તે કદઠાસણં, ઉબઢ્ઢે પાઉંછણગં વા પમજ્જિય” ઇત્યાદિ, આ બન્ને પાઠોથી સાખીત થાય છે કે-વર્ષાકાળમાં કઠાસણુના આદેશો અવશ્ય લેવા, છતાં તપાઓ તે આદેશ નથી લેતા એટલે તેઓ પ્રાચીન આચાર્યોના કથનને ઉત્થાપે છે.

સ્વમાસમણિ ‘ભગવન્ વાંદું’ ઇમ ન કહીયઈ, તે મ્યું ?

ભાષા:—દેવસી, ને રાષ્ટ્ર પડિકમણું હાવતાં અધાય ગચ્છવાળા ચાર અમાસમણાઓ આપે છે, પણ અસ્તરો પહેલા અમાસમણે ‘ભગવાન્ વાંદું’ એમ નથી કહેતા, † તે શું ?

તત્રાર્થે—શ્રીઆચાર્ય તે સાધુ, ઉપાધ્યાય તે પુણિ સાધુ, જે વર્તમાન ગુરુ તે પુણિ સાધુ, एवं સર્વસાધુ. એતલઈ મુનિવંદન થાઈ, જિનવંદન તે ચૈત્ય વાંચા, પરં ‘ભગવાન્ વાંદું’ એ પહિલી સ્વમાસમણ તપા જે આપઈ છઈ તે કેહા યતિનઈ વાંદઈ છઈ ? તે પૂજેજ્યો, આચાર્ય ઉપાધ્યાય સાધુથી ઉપરાંત કોઈ યતિ નથી જેહનઈ વાંદઈ છઈ, જિન મુનિ સગલા વાંચા છઈ, વલી તપારઈ મુલ્લિવિહારિયાં યતિયાંનઈ ‘ભગવન્’ કહીનઈ બોલાયઈ

† આજના તપાઓ તો ‘ભગવાનહં’ કહે છે. પણ એમના માન્ય આચાર્ય જયચંદ્રસૂરિ ‘પ્રતિક્રમણ હેતુગર્ભ’ માં આચાર્યાદિ ગુરુઓને વાંદવાનું ચોક્કસ લખે છે, જુઓ આ ગ્રંથના પ્રશ્ન ૬૧ ની ટિપ્પણમાં આપેલા પ્રમાણપાઠો, તે પ્રમાણપાઠોમાં ભગવાનને નહીં પણ આચાર્યાદિ ગુરુઓને વાંદવાનું કહ્યું છે, એથી આજના તપાઓ જે ‘ભગવાનહં’ કહીને વાંદે છે તે કપોલકલ્પિત એમના ધરનો આચાર છે.

બીજું એજ પ્રતિક્રમણ હેતુગર્ભના “શ્રાવકસ્તુ તદનુ ઇચ્છકારી સમસ્તશ્રાવકો વાંદું” આ પાઠમાં કહ્યા મુજબ શ્રાવકે શ્રાવકને વાંદવાનું ઉગ્રડી દબ પોતાના પરમગુરુઓનીય આજ્ઞાને આજના તપાઓ કેમ ઠોકરે મારી રહ્યા છે ? આ રીતે તપાઓની સામાચારી બધીએ કપોલકલ્પિત છે.

છઠ્ઠી પરં તે આચાર્ય ઉપાધ્યાય થકી પહિલત તેહનહ કિમ વંદાઈ ?
 एवं घण्टुं विमासेज्यो १०० ॥

ભાષા:—આચાર્ય તે સાધુ છે, ઉપાધ્યાય પણ સાધુ છે અને જે વર્તમાન ગુરૂ તે પણ સાધુ છે, એવં સર્વસાધુ (તે પણ સાધુ) છે, એટલે (આ ચાર ખમાસમણથી) મુનિવંદન થાય છે, અને જિનવંદન તે (ચૈત્યવંદન કરી દેવ) વાંછા છે, પરંતુ ‘ભગવાન્ વાંદુ’ કહી પહેલો ખમાસમણો જે તપાઓ આપે છે તેથી ક્યા યતિ-મુનિને વાંદે છે ? તે પૂછજો, આચાર્યોપાધ્યાય અને સાધુથી અધિક કોઈ યતિ-મુનિ નથી કે જેને વાંદો છો, જિન અને મુનિ બધાને વાંછા છે, વાલી તપાઓને મુખ્યવિહારી બધાય યતિયોને ‘ભગવન્’ કહીને બોલાવે છે. (એટલે સંભવ છે કદાચ તેને ‘ભગવન્ વાંદુ’ શબ્દથી વાંદતા હો) પરંતુ આચાર્ય-ઉપાધ્યાયથી પહેલા તેને કેમ વંદાય ? એમ ખૂબ વિચારજો.

(તપા ખરતર ભેદ ગ્રંથ ૧ બોલ ૧૦૩, ગ્રંથ ૨ બોલ ૧૧૩ મો)

૧૦૧ પ્રશ્ન—તથા સ્વરતરાંનહ જિણહ ગુરુથી જુદા આલોયા તે માંડલીમાંહિ ન મિલઈ, તે સ્યું ?

ભાષા:—ખરતરોને જેણે ગુરૂથી જુદા આલોયા હોય તે માંડલીમાં ન મળે, તે શું ?

તત્રાર્થે:—આલોચણા, પઢિકમણા, સ્વામણા, એ શ્રીગુરુજીની સાથિ કરવા, તેહનહ ગુરુજી આલોચતાં ‘આલોચહ-પઢિકમહ સ્વામહ, ઇત્યાદિ કહઈ, તે એક મંડલી આવશ્યક મંડલીમાંહે થાઈ, જે જુદા આલોચઈ તે એક માંડલી કિમ થાઈ ? વિચારિજ્યો, જિણહ આવશ્યક જૂઆ પઢિકમ્યા હુવઈ તે શ્રાવક પઢિકમ્યાં પછી

૬ વાંદણાં દેઈ આલોઈ ત્વામિ પચ્ચક્ષ્ણ કરઈ, એ વ્યવસ્થા છૂદ ૧૦૧

ભાષા:—આયલોણા પડિકમણા અને ખામણા. એ ગુરૂમહારાજની સાથે કરવાના છે, તે (સાથે કરનાર) ને આલોવતાં પડિકમતાં અને ખામતાં) ગુરૂમહારાજ ‘આલોયહ પડિકમહ ખામહ’ ઇત્યાદિ કહે છે. તે એક મંડલી આવશ્યક મંડલીમાં હોય છે જે જુદા આલોવે તે એક મંડલી કેમ થાય ? તે વિચારજો, જેણે આવશ્યક (પ્રતિકમણ) જુદું ક્યું હોય તે શ્રાવક (તેમ સાધુ પણ) પડિકમણું પૂરું કર્યા બાદ છ વખત વાંદણા દઈ આલોવી ખામીને પચ્ચક્ષ્ણ (ગુરૂ મુખે) કરે, એ વ્યવસ્થા છે.

(તપા—ખરતર ભેદ ગ્રંથ ૧ બોલ ૧૦૪, ગ્રંથ ૨ બોલ ૧૧૨ મો)

૧૦૨ પ્રશ્ન—તથા खरतरानंइ बेला तेला २-३ उपवामानंइ कहीयइ, छट्ट अट्टम न कहीयइ, ते स्युं ?

ભાષા:—ખરતરો એ ને ત્રણ ઉપવાસોને છઠ્ઠ અટ્ટમ ન કહેતાં બેલા તેલા કહે, તે શું ?

તત્રાર્થે:—ઉપવાસના નામ અમત્તટ્ટ છૂદ ૧૦ પચ્ચક્ષ્ણમાંહિ, પરં છટ્ટ અટ્ટમ પચ્ચક્ષ્ણ નથી. એક અમત્તટ્ટં ચત્થ કહીયઈ બિ અમત્તટ્ટ કર્યાં છટ્ટ કહીયઈ, ત્રિહું અમત્તટ્ટે અટ્ટમ કહીયઈ, ૪ ઉપવાસનું દશમ કહીયઈ, જિમ બિ પૈસાનઈ ટંકડ કહીયઈ પાંચે પીરોજીએ ટંકડ કહીયઈ, પરં કોઈ ટંકડ નાણડ નથી, એવં જાણેજ્યો । “ ચતુર્થેતીયં ચોપવાસસ્ય સંજ્ઞા, एवं षष्ठादि-रुपवासद्वयादेरिति ” શ્રીજ્ઞાતાધર્મકથાવૃત્તૌ, તે મળી છટ્ટમત્તં અટ્ટમમત્તં-દશમમત્તં પચ્ચક્ષ્ણમિ’ એમ પચ્ચક્ષ્ણ ન કરિવડ, ઇમ અણપચરુપાંઈ યુગલીયાંનઈ શાસ્ત્રે ચત્થ-છટ્ટ અટ્ટમ વહ્યા

छइ, एकंतर दिनइ जे जिमइ ते चउत्थ बि(दिननइ)अंतरे जे जिमइ तेहनइ छट्ट कहा छइ, त्रिहुं दिनांनइ आंतरइ जे जुगलीया जिमइ तेहनइ अट्टम कहा छइ, एलइ ते युगलीया स्युं पचखाणीया थया ? सिद्धांतमांहि युगलीया “निष्पच्चखाण-पोमहोववासा” कहा छइ. ते भणी चउत्थ छट्ट अट्टम ए पच्चखाण पचखाण नहीं, किन्तु ‘सूरे उगगर अभत्तट्टं पच्चखामि’ इम पचखीयइ, जइ ‘छट्टभत्तं पच्चखामि’ एम पचखाण करी छट्ट पचखीयइ तउ ‘चउत्थभत्तं पच्चखामि’ इम कही १ उपवास कांइ न पचखउ ? शास्त्रांमांहि दशमा पंचखाण ‘अभत्तट्ट’ कहा छइ पुणि ‘चउत्थ छट्टादि’ नथी कहा, तपा श्रीदेवेन्द्रसूरिना कीधा पच्चखाणभाष्य जोज्यो, ‘अंबिल ६ अभत्तट्ट १० चरिम य’ इति भाष्य पाठः । तथा चउत्थभत्ती ते कहाइ जे च्यारि भक्त छेदइ, यथा पारणइ उत्तरवारणइ १ वेला जिमइ, उत्तर वारणइ १ भक्त छेदइ उपवासइ २ भक्त छेदइ पारणइ १ भक्त छेदइ ते चउत्थभत्ती कहीयइ, चउत्थभत्ती छट्टभत्ती यतिनइ २ वार आहार लेवउ दशाश्रतम्कंधमांहि कहउ छइ, ते किम घटइ ? ते भणी चउत्थ छट्टादि संज्ञामात्रजि छइ, परं पचखाण ते अभत्तट्ट जाणीवउ, जिम बिहुं आंबिले ‘आयंबिल छट्ट’ कहीयइ तिम बि उपवासे ‘छट्ट’ कहीयइ, श्रीभगवती प्रांते तथा श्रीउत्तराध्ययनवृत्तौ चतुर्थाध्ययने “जइ आयंबिल-छट्टेणं एगोवि आलावगो एइ आयरिणि भरणइ जइ न उट्टेइ ता अज्झयणं असंखयमणुणविज्जइ” इत्यादि, एतलइ

જઈ બિહું આંબિલાંનઈઈ છટ્ઠ કહીયઈ તડ ૨ ઉપવામાંનઈ છટ્ઠ
 કાંઈ ન કહીયઈ ? આંબિલ ૨ જિમ જૂજૂઆ પચ્ચલીયઈડનઈ છટ્ઠ
 કહીયઈ તિમ જૂપ બિહું અમત્તટ્ઠે છટ્ઠ કાંઈ ન કહીયઈ ?
 જોજ્યો । વીજાનઈ વિયલ્લડ શાસ્ત્રે કહ્યડ છઈ ‘ડિલ્લ-ડુલ્લરુઅર્થે’
 ઇતિ પ્રાકૃત સૂત્રાત્, તે મળી વિયલ્લઓ-તિયલ્લઓ કહાઈ છઈ,
 એવં સાચ જાણિવડ, જહા એગલ્લઓ ॥ ૧૦૨ ॥

ભાષા:-દશ પચ્ચખાણોમાં ‘અભત્તટ્ઠ’ પચ્ચખાણુ છે, જે એક ઉપ-
 વાસનું નામ છે, પરન્તુ છટ્ઠ-અટ્ઠમ ઓદિ પચ્ચખાણો નથી એક અભ-
 ત્તટ્ઠે ચઉત્થ કહિયે, જે અભત્તટ્ઠે છટ્ઠ અને ત્રણ અભત્તટ્ઠે અટ્ઠમ અને
 ચાર અભત્તટ્ઠે દશમ કહિયે, જેમકે જે પદસાનો ટક્કો કહેવાય અને
 પીરેજીયા (તે સમયનો એક નાણો) પાંચનો (પણુ) એક ટક્કો કહેવાય,
 પરન્તુ ટક્કો એ કોઈ નાણો નથી, એવીજ રીતે એમાં જાણી લેવું.
 જ્ઞાતાધર્મકથાંગની ટીકામાં કહ્યું છે-‘ચઉત્થ એ ઉપવાસની સંજ્ઞા
 (નામ) છે, ‡ એમજ જે ઓદિ ઉપવાસોની સંજ્ઞાઓ ‘છટ્ઠ’ ઓદિ છે’.

‡ આગમોદય સમિતિદ્વારા પ્રકાશિત જ્ઞાતાસૂત્ર પાના ૭૩ માં
 ખરતર ગચ્છ વિભૂષણુ નવાંગ ટીકાકાર શ્રીઅભયદેવસૂરિજી મહારાજ લખે
 છે કે “ ચત્વારિ મક્કાનિ યત્ર ત્યજ્યન્તે તત્ત્વતુર્ય ” અર્થાત્ ‘જેમાં
 ચાર ભક્તોનો ત્યાગ કરાય તે ચતુર્થભક્ત કહેવાય’. આ અર્થ કેવળ
 ‘ચતુર્થ ભક્ત’ એ શબ્દની વ્યુત્પત્તિ માત્રનો છે, વાસ્તવિક રીતે તો
 હમેશાં એકાસણા સાથે એકાંતરે ઉપવાસ કરનારને પણ લાગટ ચાર
 ભક્તો નહીં, કિંતુ ત્રણ ભક્તોનાજ ત્યાગ થઈ શકે છે. હાં જે ઉત્તર
 પારણે પોરસીથી અને પારણે અવધૂથી એકાસણું કરે તો જરૂર ચાર

એટલા માટે ‘છટ્ટ લત્ત-અટ્ટમ લત્ત-દસમ લત્ત’ એમ પચખાણુ

લકતનો ત્યાગ થઈ શકે ખરું, પણ એમ કરવા જતાં ચતુર્થલકત નિત્ય નથી બની શકતું, અને કલ્પસૂત્ર સામાચારીમાં એકાંતરે ઉપવાસ કરનારને ચતુર્થલકત ચોક્કસ કહેલ છે, એટલુંજ નહીં પણ તેને માટે ગોચરીના કાળ પણ બે બતાવ્યા છે, બુઝો—

“વાસાવાસં પજ્જોસવિયસ્સ ચત્થમત્તીઅસ્સ મિક્કુસ્સ અયં એવહિ એ વિસેસે-જં સે પાઓ નિક્કમ્મ પુવ્વામેવ વિયહગં મુચ્ચા પિચ્ચા, પહિગ્ગહગં સંલિહિય સંપમજ્જિય સે ય સંથરિજ્જા, કપ્પહ સં તદ્વિસં તેણેવ મત્તટ્ઠેણં પજ્જોસવિત્તે, સે ય નો સંથરિજ્જા, एवं સે કપ્પહ દુચ્ચંપિ ગાહાવહિકુલં મત્તાએ વા પાણાએ વા નિક્કમિત્તે વા પવિસિત્તે વા ॥૨૧।”

અર્થાત્ ‘જે સાધુ ચતુર્થ લકત (એકાંતરે ઉપવાસ) કરતો હોય તેના માટે અપવાદથી બીજો ટાઇમ પણ ગોચરીનો ઉપરના પાઠમાં સ્પષ્ટ કહેલ છે, તેમ છતાં તેને ‘ચતુર્થલકિક’ કહેલ છે, વસ્તુતઃ એક ઉપવાસનું નામજ ચતુર્થલકત છે. એટલેજ તો જ્ઞાતાસૂત્ર પાના ૭૩ માં આઠ અભયદેવ-સૂરિ મહારાજજી લખે છે કે “इयं चोपवासस्य संज्ञा, एवं षष्ठादिरुप-वासद्वयादेरिति” અર્થાત્ ‘ચતુર્થ એ ઉપવાસનું નામ છે અને એવીજ રીતે ‘છટ્ટ’ આદિ બે આદિ ઉપવાસોના નામો છે, પણ એથી કાંઈ ચત્થ-છટ્ટ આદિ પચખવાના નથી, કારણ કે આવશ્યકચૂર્ણિ તથા તેની મોટી ટીકા. પંચવસ્તુક ટીકા. પંચાશક ટીકા, અને આચાર્ય યશોદેવસૂરિકૃત ‘પ્રત્યાખ્યાન સ્વરૂપ’ તેમ ખાસ દેવેન્દ્રસૂરિ રચિત ‘પ્રત્યાખ્યાન ભાષ્ય’ માં પણ અલકત (ઉપવાસ) નોજ પચ્ચખાણુ

ન કરવાં, (કિંતુ રોજના રોજ અભત્તટ્ઠં નો પચખાણુ લેવું,

કહેલ છે, પણ ચઉત્થભત્ત-છટઠ ભત્ત આદિ પચ્ચખાણુ શાસ્ત્રોમાં ક્યાંએ જોવાતા નથી, એટલેજ તો આચાર્ય શ્રીવિજયસેન સૂરિજીને લખવું પડ્યું છે કે—

“ યદા એકાશનસહિતોપવાસં કરોતિ તદા ‘સૂરે ઉગ્ગણ ચઉ-
ત્થમત્તં અમત્તટ્ઠં’ પ્રત્યાખ્યાતિ, યદા પુનરેકાશનરહિતં કરોતિ તદા
‘સૂરે ઉગ્ગણ અમત્તટ્ઠં’ પ્રત્યાખ્યાતીદ્વગવિચ્છિન્નપરમ્પરા દૃશ્યતે,
ષષ્ઠપ્રમુખપ્રત્યાખ્યાને તુ પારણકે ઉત્તરપારણકે ચૈકાશનં કરોત્યથવા
ન કરોતિ તથાપિ ‘સૂરે ઉગ્ગણ છટ્ઠમત્તં-અટ્ઠમમત્તં’ इति
પ્રત્યાખ્યાતીયમપ્યવિચ્છિન્નપરમ્પરા દૃશ્યતે । તથા પારણકે ઉત્તર-
પારણકે ચૈકાશનકં વિનાऽપિ ‘ચઉત્થમત્તં-છટ્ઠમત્તં-અટ્ઠમમત્તં’ इति
કથ્યતે, તદ્દત્તારાણ તુ શ્રીકલ્પસૂત્રસામાચારીમધ્યે સન્તીતિ બોધ્યમ્ ૫૮
(સેન પ્રશ્ન ૭૦ ૪ પાના ૧૦૭)

આ પાઠમાં આચાર્ય શ્રી ફરમાવે છે કે “જ્યારે પારણુ ને ઉત્તર
પારણુ એકાસણું કરે ત્યારે ‘ સૂરે ઉગ્ગણે ચઉત્થભત્તં અભત્તટ્ઠં ’ પચખે
અને જ્યારે એકાસણું ન કરે ત્યારે ‘ સૂરે ઉગ્ગણે અભત્તટ્ઠં ’ પચખે.
આવી (તપાની) અવિચ્છિન્ન પરંપરા છે, અને છઠ આદિ પચ્ચખાણુમાં
તો પારણુ ઉત્તરપારણુ એકાસણું કરે યા ન કરે, તો પણ ‘ છટ્ઠભત્તં
અભત્તટ્ઠં ’ પચખે, આ પણ (તપાની) અવિચ્છિન્ન પરંપરા છે’
આ કથનથી એક ખાણુ આચાર્યશ્રી પોતાના પૂર્વજોની પ્રવૃત્તિરૂપ
સામાચારીના સમર્થનમાં કોઈ પણ શાસ્ત્ર પ્રમાણુ ન મળતાં અવિચ્છિન્ન
પરંપરાના નામે પણ તે પ્રવૃત્તિઓને ટકાવી રાખવા જ્યારે

એમ ટાગટ બે આદિ ઉપવાસે છૂટ્ઠ આદિ કહેવાય એમાં તો શંકાય

નથી રહ્યા છે. ત્યારે બીજી બાબુ બીજી ગચ્છોની પ્રવૃત્તિઓને આવ-
શ્યકચૂર્ણ. તેની મોટી છોટી ટીકા. પંચાશક ટીકા. યોગશાસ્ત્ર ટીકા.
આદિ પ્રાચીન તેમ સર્વામાન્ય અનેક શાસ્ત્રોથી સમર્થન મળવા છતાં
એના તરફ પોતાની સર્વથા અશ્ચિ બતાવી રહ્યા છે. બુઝો—

“સ્વાદ્યસ્તનિકાદીનાં પ્રતિક્રમણકરણોદીરણા ક્રિયતે ત્રિવારં
સામાયિકદંડકં ચોચ્ચાર્યતે, તદ્યુક્તમયુક્તં વા! इति प्रश्नोऽत्रोत्तरं-
स्वाद्यस्तनિકાदीनां प्रतिक्रमणकરणोदीरणाकरणं तु न युक्तं, यदि
च ते स्वयं प्रतिक्रमणं कुर्वन्ति पौषधादिदंडकं त्रिवावरमुच्चरन्ति
तदा द्रव्यक्षेत्रकालभावानुसारेणानुकूलादिगुणसंभवः स्यात्तदोच्चार्यते,
यस्माच्छास्त्रेऽप्येवं दृश्यते—‘जम्हा सव्वाणुन्ना, सव्वनिसेहो य
पवयणे नत्थि’ इति ४२०।” (સેન પ્રશ્ન ઉં ૩ પાના ૯૩)

આ પ્રશ્નોત્તરમાં આચાર્યશ્રી ફરમાવે છે કે “ખરતરવાળા આદિ-
ઓને પ્રતિક્રમણ કરવાની પ્રેરણા ન કરવી, કદાચિત્ તેઓ પોતાની મેળે
(આપણી સાથે) પ્રતિક્રમણ કરે, ને પૌષધાદિ દંડક ત્રણ વાર ઉચરે તો
દ્રવ્ય ક્ષેત્ર કાળ ભાવ બોધ અનુકૂળતાનો સંભવ હોય તો ઉચરાવવા”
અર્થાત્ અનુકૂળતા એટલે આપણી માન્યતામાં ભળી જવાનો સંભવ
ન હોય તો ન ઉચરાવવા, જ્યારે આચાર્યશ્રી પૌષધાદિ દંડક ત્રણવાર
ઉચરાવવામાંય દોષ માને છે. ત્યારે પોતે નિત્ય સંથારા પોરસીમાં
સામાયિક સૂત્ર—કરેમિ ભંતે! ત્રણ વાર શા માટે બોલે છે? અને બો
દ્રવ્ય ક્ષેત્રાદિની અનુકૂળતાના સંભવે પૌષધાદિ દંડક ત્રણ વાર ઉચરા-
વવામાં દોષ નથી તો પછી તેવીજ દ્રવ્ય ક્ષેત્રાદિની અનુકૂળતાના

શાની હોય. પણ) શાસ્ત્રોમાં વગર પચખાણેય યુગલીયાને ચઉત્થ
 છટ્ટ અઠમ કહ્યા છે, એકાંતરે જમનારને ચઉત્થ. એ દિવસને આંતરે
 જમનારને છટ્ટ. અને ત્રણ દિવસના આંતરે જે યુગલીયાઓ જમે છે
 તેમને અટ્ટમ કહ્યા છે, એટલે શું તે યુગલીયાઓ પચ્ચક્ખાણી થયા ?
 શાસ્ત્રમાં યુગલીયાઓને ‘અપચ્ચખાણી અપૌષ્ઠોપવાસી (અવિરતી)’
 કહ્યા છે, માટે ચઉત્થ છટ્ટ અઠમ એ પચ્ચક્ખાણુ પચ્ચખવા નહીં,
 કિંતુ ‘સૂરે ઉગ્ગએ અભત્તટ્ટ’ પચ્ચક્ખામિ’ એમ પચ્ચક્ખવા, જે
 ‘છટ્ટભત્ત’ પચ્ચક્ખામિ’ એમ કહીને છટ્ટ પચખીયે તો ‘ચઉત્થ
 ભત્ત’ પચ્ચક્ખામિ’ એમ કહીને ૧ ઉપવાસ કેમ નથી પચખતા ?
 શાસ્ત્રોમાં (અધ્ધા પચ્ચખાણોના અધિકારે) દશમો પચ્ચખાણુ ‘અભત્તટ્ટ’

સંભવે કલ્પસૂત્ર પણ ખીજી ત્રીજી વાર ખીજીઓને સંભળાવી દેવામાં
 દોષ શા માટે મનાય છે ? આને દોષ માનવાના એકાંત હકના કારણેજ
 ગયા (ગુ. ૨૦૦૮ ને) વર્ષે કચ્છ માંડવીમાં ચોમાસું રહેલ જંગ્વા-
 ચાર્યાના આતુર્ય શિષ્ય ઉ. ધર્મવિજયજી આદિ સાધુઓને એ ત્રણ
 કલાકની નજર કેદની માફક મેડી ઉપર બેસી રહેવું પડ્યું એટલુંજ
 નહીં કિંતુ તેમની હયાતીમાં એકજ ધર્મશાળામાં અંચલ ગચ્છવાળા-
 ઓએ પોતાના ગચ્છની સાધ્વીઓ પાસે કલ્પસૂત્ર (બારસા) સાંભલ્યું,
 એમાં તે સાધુઓનું શું મહત્વ રહ્યું ? અને એથી શાસનની કંઈ
 મહાન્ પ્રભાવના કરી દીધી ? લાલ એ પ્રાપ્ત કર્યો કે કચ્છના અમુક
 ક્ષેત્રોમાં ફરવાની ઇચ્છા હોવા છતાંએ રણુ ઉતરીને દેશપાર થવું પડ્યું.
 એના શિવાય એવો હઠાગ્રહ પકડવામાં ખીજો શું લાલ છે ? તે તો
 જંગ્વાચાર્ય કે તે એમના પૂર્વજો જાણે.

કહ્યો છે. પણ ચઉત્થ છટ્ટાદિ નથી કહ્યા, તપગચ્છાયાય' દેવેન્દ્રસૂરિજી રચિત પચ્ચક્રખાલુભાષા જોજો. ત્યાં 'અભત્તટ્ટ' ને છેલ્લો (દશમો) પચ્ચક્રખાલુ કહ્યો છે, બીજું 'ચઉત્થભત્તિ' તે કહેવાય કે જે ચાર ભક્ત (ભોજનના ટાઇમ) ને છેદે, મતલબ કે પારણે અને ઉત્તરવારણે એક વેળા જમે, એટલે ઉત્તરવારણે એક ભક્ત. ઉપવાસે બે ભક્ત અને પારણે પણ (એકાસણું કરી) એક ભક્ત જે છેદે તે 'ચઉત્થભત્તિ' કહેવાય. અને એમ કરતાં ચઉત્થભત્તિ છટ્ટાભત્તિ સાધુને બે વાર આહાર લેવું દશાશ્રુતરકંઘ (આહમું અધ્યયન કલ્પસૂત્રની સામાચારી) માં જે કહ્યું છે, તે કેમ મળે? માટે ચઉત્થ છટ્ટા આદિ સંજ્ઞા (નામ) માત્રજ છે, પરંતુ પચ્ચખાલુ તેમાં અભત્તટ્ટજ જાણવો, જેમ બે આંખિલે આંખિલનું છટ્ટા કહેવાય છે તેમ બે ઉપવાસે ઉપવાસનું છટ્ટા કહેવાય, શ્રીભગવતીસૂત્રના પ્રાંતે તથા ઉત્તરાધ્યયન ટીકા ૪ થા અધ્યયનમાં પાઠ છે કે “જઈ આયંવિલક્ષટ્ટેણં ઇગો વિ અલાવગો ઇઈ આયરિઈહિં મળણઈ, જઈ ન ડટ્ટેઈ તા અઝ્ઝયણં અસંત્વયમણુન્નવિઝ્ઝઈ” એમાં આંખિલનો છટ્ટા રપટ્ટ કહેલ છે) એટલે જો બે આંખિલનો છટ્ટા કહેવાય તો બે ઉપવાસનો છટ્ટા કેમ ન કહેવાય? જેમ આંખિલ બે જુદા પચખીને પણ (આંખિલનું) છટ્ટા કહેવાય તેમ જુદા પચખેલા બે ઉપવાસે ઉપવાસનું છટ્ટા કેમ ન કહેવાય? જોજો શાસ્ત્રોમાં બીજાને 'બિયલ્લઓ' કહ્યો છે, “હિલ્લહુલ્લસ્વાર્યે” આ પ્રાકૃત સૂત્રથી જેમ એગલ્લઓ સિદ્ધ થાય છે, તેમ બિયલ્લઓ તિયલ્લઓ આદિ પ્રયોગો સિદ્ધ થાય છે. એનેજ ભાષામાં બેલા તેલા કહે છે. એ સત્ય જાણવું.

(તપા ખરતર ભેદ ગ્રંથ ૧ બોલ ૧૦૫ , ગ્રંથ ૨ બોલ ૧૧૪ મો)

૧૦૩ પ્રશ્ન—તથા છમ્માસી તપ ચિતવિવાની વેલાઇયં સ્વ-
તરાંરૂ ૨૪ નવકાર ચિતવડ જેહનડ તપ ચિતવતાં નાવડ, અનડ
તપારૂ ૪ લોગસ્સ ચિતવડ, તે સ્યું ?

ભાષા:-તપ ચિંતવણીના કાઉસ્સગ્ગમાં ખરતરોને જેને છમાસી
તપ ચિંતવણું ન આવડતું હોય તે ૨૪ નવકાર ચિંતવે છે. ને તપાને
૪ લોગસ્સ ચિંતવે છે. તે શું ?

તત્રાર્થે—તપાંનડ ૪ લોગસ્સ ચિંતવિવાના અક્ષર પૂછીજ્યો, પરં
અક્ષર નહીં નીકલડ, તડ સ્યું પૂછીયડ ? જેહનડ જેહ ગુરુની
પ્રતીતિ થાડ તેહનડ તેહના કહ્યા કરિવા, છમ્માસી તપ ચિતવિવાની
વેલાનડ કાજિ ૨૪ નવકાર તથા ૪ લોગસ્સ છડ, વલી જડ
સ્વપ હુવડ તડ છમ્માસી તપ ચિતવણની વેલા સાથિ (૪)લોગસ્સ
તથા (૨૪) નવકાર ગુણી વેલાની નિરતિ કરેજ્યો નિરવિરોધ
પણડ, તે વલી વેલા જે પહુંચડ તે પ્રમાણ, આસર છમ્માસી તપ
ચિંતવિવડ છડ, અથવા ૪ લોગસ્સે ૧૦૦ સ્વાસોસ્વાસ થાડ, તથા
૨૪ નવકારે ૧૬૨ સ્વાસ થાડ, તે જોજ્યો. તપ ચિંતવિવા સાથિ
મેલવિજ્યો, જેહડડ એ પરમાર્થ-ગુરુ પાર્યા પૃઠડ પારીયડ ॥૧૦૩॥

ભાષા:-૪ લોગસ ચિંતવવાનો શાસ્ત્ર પ્રમાણ તપાઓને પૂછજે.
પરંતુ શાસ્ત્ર પ્રમાણ મળવાનોય નથી તો પૂછવાનું શું ? જેને જે
ગુરુની પ્રતીતિ હોય તેણે તે ગુરુના કહ્યા મુજબ કરવું. વસ્તુતઃ ૪
લોગસ કે ૨૪ નવકાર ગણવા એ છમાસી તપ ચિંતવવાની વેલા પૂર્ણ
કરવા માટે છે. છતાં વિશેષ નકી કરવાની ઇચ્છા હોય તો છમાસી

તપ ચિંતાવવાના ટાઇમ સાથે ૪ લોગસ્સ તથા ૨૪ નવકાર ગણિને નિર્વિરોધ પણે નિશ્ચય કરી લેજો, તેમાં જે ટાઇમ અરાબર હોય તે પ્રમાણ (કરવું જોઈએ). આખરે જમાસી તપ ચિંતવવું છે, અથવા તો ૪ લોગસ્સે એકસો શ્વાસોશ્વાસ થાય અને ૨૪ નવકારે ૧૯૨ શ્વાસોશ્વાસ થાય, તેનો હિસાબ જોજો, તપ ચિંતવવા સાથે મેળવજો, અંતે પરમાર્થ એ છે કે-કાઉસસગ્ગ ગુરૂના પાર્યા પછી પારવાનું. +

+ જેને જમાસી તપ ચિંતવવાની વિધિ ન આવડતી હોય તેણે ૪ લોગસ્સ અને ૨૪ નવકાર ગણવા રૂપ ભિન્ન માન્યતા તો તપા-ખરતર ગરજની છે. પણ જમાસી તપ ચિંતવવાની વિધિમાંય બધા આચાર્યો એકમત નથી, જેમ કે ભાવદેવસૂરિ કે જેઓ “ સિરિકા-લિયસૂરિણં, વંસુબ્ધવભાવદેવસૂરિહિ । ” આ ગાથાર્થથી પોતાને કાલિકાચાર્યના સંતાનીય કહે છે, તેમણે રચેલ ‘યતિદિનચર્યા’ ની ટીકામાં જમાસીમાંથી એક દિવસ ઓછો કર્યા પછી એકી સાથે ‘એ-ત્રણ-ચાર અને પાંચ’ એમ કહી ચાર દિવસ કમતી કરે, ને ત્યાર પછી ૬ થી ૧૦, ૧૧ થી ૧૫, આ રીતે ૫-૫ દિવસની હાનીએ આખો મહિનો ઘટાડે, એવીજ રીતે પાંચ-ચાર-ત્રણ અને એ માસીમાં ૫-૫ દિવસની હાની કરતાં છેલ્લે એક માસીમાં ૧૩ દિવસની હાની કરીને ૩૪ ભકતાદિના ક્રમથી એકેક દિવસના બધે ભકત છોડવાનું કહેલ છે, જુઓ આ રહ્યો તેનો પાઠ—

“ શ્રીવર્દ્ધમાનવિહિતં ષાણમાસિકતપો યતિરેવં ચિન્તયતિ
હે પ્રાણિન્ ! શ્રીવર્દ્ધમાનતીર્થે વર્તમાન[અત]સ્તદ્વિહિતં ષાણમાસિકં તપઃ
ક્તું સમર્થો ન વા ? પ્રાણી પ્રાહ-ન શક્નોમિ, તર્હિ એકેન દિનેનોનં

(તપા ખરતર ભેદ ગ્રંથ ૧ ખોલ ૧૦૬, ગ્રંથ ૨ ખોલ ૧૧૫ મો)

૧૦૪ પ્રશ્ન—તથા खरतर श्रावक प्रभाति सामायिक पडि-
कमणउ करी पछइ सामायिक पारतां सज्जाय विन संदिसायां

षाण्मासिकं कर्तुं शक्नोऽसि ? प्राणी प्राह-न शक्नोमि, तर्हि-
द्वित्रिचतुःपञ्चदिनो नं षाण्मासिकं तपः कर्तुं शक्नोषि ? पुनर्वदति-
न शक्तोऽस्मि । तर्हि षट्सप्तः-नवदशदिनो नं षाण्मासिकं कर्तुं
शक्तोऽमि ? , पुनर्वदति-न शक्तोऽस्मि, एवमेकादशादि । ततः
पञ्चपञ्चदिनवृद्ध्या क्रमेण मासं यावच्चिन्तनीयं, अथ पुनः पंचमे
मासे सैव युक्तिः, आद्यमासवच्चिन्तनीयं, एवं चतुर्थे मासे सैव
युक्तिः, एवं तृतीये द्वितीयेऽपि, ततः प्रथमे मासे ततस्त्रयोदशदिनं
यावत्, त्रयोदशदिनो नं मासं कर्तुं शक्तोऽसि न वा ? तत्रापि
वदति-न शक्तोऽस्मि, ततस्त्रयोदशदिनोर्ध्वं चतुस्त्रिंशदादि ऊनं
चिन्तयेत्, कथं ? द्वयहान्या द्वयहान्या, यथा-चतुस्त्रिंशत् द्वात्रिंशत्
त्रिंशत् अष्टाविंशतिः षड्विंशतिः चतुर्विंशतिः द्वाविंशतिः, एवं
चतुर्थं यावच्चिन्तयति, ततोऽप्याचाम्लादि नमस्कारसहितं यावत्
यत्तपः तद्दिने कर्तुमुद्यतः तत्तपः चेतसि निधाय पश्चाद् गुरुसमक्षं
आगारशुद्ध्या प्रत्याख्याति ।” (यतिदिनयर्था ५० १०)

જ્યારે ભાવદેવસૂરિકૃત ‘યતિદિનયર્થા’માં ઉપરોક્ત રીતિ બતાવી છે
ત્યારે તપગચ્છાયાય શ્રીજયચંદ્રસૂરિ સ્વકૃત ‘પ્રતિક્રમણુહેતુગર્ભ’ પાના
૨૦ માં પ્રાચીન શાસ્ત્રાંતરની ચાર ગાથા ટાંકીને બરાબર ખરતરગચ્છનોજ
અનુકરણ કરતા થકા પહેલાના પાંચે મહિનાઓમાં એકેક દિવસના
ક્રમથી ૨૯-૨૯ દિવસ અને છેલ્લા એક માસમાં પણ ૧-૧ ના

મઝ્ઝાયા વિણ કીધાં સામાયિક પારહ, તે સ્યું ?

ભાષા:—ખરતર શ્રાવક સવારે સામાયિક પાઠક્રમણું કરીને

ક્રમથીજ ૧૩ દિવસ ઘટાડ્યા આદિ ચોત્રીસ ભક્તિદિ વિચારવાનું કહે છે, જેમણે આ રહ્યો તેનો પાઠ—

“ તત્થ ય ચિંતઈ સંજમ-જોગણ ન હોઈ જેણ મે હાગી ।

તં પઢિવજ્ઞામિ તવં, હ્રમ્માસા તા ન કાઝમલં ॥૧॥ ”

“ ઇગાઈગુણતીસૂણિ-અં પિ ન સહો ન પંચમાસમવિ ।

એવં ચઝ-તિ-દુમાસં, ન સમત્થો ઇગમાસંપિ ॥ ૨ ॥ ”

“ જા તંપિ તેરસૂણં, ચઝતીસમાઈ તો દુહાણીએ ।

જાવ ચઝત્થં તોઅં-બિલાઈ જા પોરિસી નમો વા ॥૩॥ ”

“ જં સક્કઈ તં હિયએ, ધરિત્તુ પારિત્તુ પેહએ પુત્તિ ।

દાઝં વંદણમસદ્ધો, તં ચિય પચ્ચક્કવએ વિહિણા ॥૪॥ ”

(શ્રાદ્ધવિધિ પા. ૧૪૫ માં રત્નશેખરસૂરિ પણ એજ ગાથાઓ ટાંકે છે).

આ પાઠમાં કાઉરસગ્ગમાં ધારીને નિર્ણિત કરેલ પચ્ચક્કવણુ પણ જણ આવશ્યકની મુદપત્તી પડિલેહી વાંદણા દધને તે સમયે ધારી રાખવાનુંજ નહીં પણ કરી લેવાનું સ્પષ્ટ કહેલ છે, તેમ જયવંદ્રસૂરિ પોતે પણ પ્રતિક્રમણુ હેતુગર્ભ પૃ. ૨૦ માં એ વાતનેજ ટેકો આપે છે—

“ મુક્તવસ્ત્રિકાદિપ્રતિલેખનાપૂર્વં વન્દનકં દત્ત્વા મનશ્ચિન્તિતં પ્રત્યા-
હ્યાનં વિધત્તે ” એથી સમજવાનું કે આજના તપાઓ જે રાષ્ટ્ર
પ્રતિક્રમણુમાં પચખાણુ પચખી ન લેતાં ‘ પચખાણુ ધાર્યું ’ છેજ એમ
કહે છે. તે શાસ્ત્રોક્ત નહીં. પણ એમના ધરનો કલ્પિત આચાર છે

જ્યારે આ ઉપરોક્ત બન્ને ગ્રંથકારો એક ખીજથી લિખ રીતિએ

સામાયિક પારતાં સજ્જાયના આદેશો લીધા વગર અને સજ્જાય કર્યા વગર સામાયિક પારે છે, તે શું ?

તપ ચિંતવન વિધિ બતાવી રહ્યા છે ત્યારે “ इदं तृतीयं ” એ ન્યાયનો અનુસરણ કરતા આજના તપાઓ ભિન્ન રીતિએજ કરી રહ્યા છે, એમની રીતિ આ છે કે પહેલાં જમાસીમાં તો એકેકના ક્રમથી ૨૯ દિવસ ઘટાડે, ને ત્યાર પછી પાંચ-ચાર-ત્રણ અને એ માસીમાં ૧ થી ૫, ૬ થી ૧૦, ૧૧ થી ૧૫, આ રીતે દરેક દિવસના માત્ર આંકડા બોલીને ૫-૫ દિવસ ઘટાડે છે, અને ત્યાર પછી બાકી રહેલ એક માસીમાં ફરી એકેક દિવસના ક્રમથી ૧૩ દિવસ ઘટાડીને ચોત્રીસમ ભક્તાદિ ચિંતવે છે. આ ત્રણ પ્રકારોમાંથી કયો પ્રકાર યોગ્ય અને સર્વામાન્ય શાસ્ત્ર સંમત છે ? એનો ઉત્તર જગ્યાચાર્ય આપે.

બીજું એ પણ વિચારવાનું કે યતિદિનચર્યાની ટીકાના કથન મુજબ પહેલાં ૧ દિવસ, ને પછી ૪ દિવસ ઘટાડવા, અને તે પછી પાંચે મહિનામાં બધે ૫-૫ દિવસ ઘટાડવા, તેમ આજના તપાઓની પ્રવૃત્તિ મુજબ પહેલાં જમાસીમાં એકેક કરીને ૨૯ દિવસ ઘટાડવા અને ત્યાર બાદ પાંચથી એમાસી સુધી યતિદિનચર્યામાં દર્શાવેલ રીતિએ ૫-૫ દિવસ ઘટાડીને છેલ્લે એકમાસીમાં ફરી એકેક દિવસ ઘટાડવા. એનું કારણ શું છે ? જ્યારે કે સમય થોડો લાગવાને માટે ૫-૫ દિવસનો વર્ગજ ઘટાડવો છે તો પછી દરેક દિવસના આંકડા બોલવાની જરૂર શું છે ? સીધા ૫-૫ દિવસજ કેમ ન ઘટાડવા ? અને આ ત્રણમાંથી કઈ તપ ચિંતવન વિધિ પ્રાચીન અને સર્વામાન્ય એવા કયા શાસ્ત્રમાં છે ? આ બધી બાબતોનો યોગ્ય ઉત્તર શાસ્ત્રપ્રમાણ સાથે જગ્યાચાર્ય આપે.

તત્રાર્થે—સઙ્ગાય વિણ કીધાં સામાયિક ન પારીયડે એ નિયમ નથી, સૂર્ય વિણ ઝગાં પડિલેહણ વિણ કીયાં કાજડ વિણ ઉદ્ધર્યાં કાલવેલાયડે શ્રાવક સઙ્ગાય કિમ કરડે ? એ વિચારિવડ, જડે સામાયિકધર સવારે સઙ્ગાય પોરુષી યતિની પરિ કરડે તડ સાંઘિ પુર્ણ સઙ્ગાય પડિલેહણ વેલાચરડે જતિની પરિ સ્વમાસમણ ૨ દેડનડે સઙ્ગાય કરિસ્યડે ? ઇમ કરતા નથી જાણ્યા, વલી સ્વબરિ કરિજ્યો, પોસહધર શ્રાવક સવારડે તથા સાંઘિ સઙ્ગાય સંદિસાવી સઙ્ગાય કરેજિ છડે, વલી પૂછી નિરતિ કરેજ્યો ॥ ૧૦૪ ॥

ભાષા:—સઙ્ગાય કીધા વગર સામાયિક ન પારીયે એવો નિયમ નથી, સૂર્યનો ઉદય થયા વગર અને પડિલેહણ કર્યા વિના તેમ કાળે ઉદ્ધર્યા શિવાય કાલવેલાયે શ્રાવક સઙ્ગાય કેમ કરે ? એનો વિચાર કરવો, જે સામાયિકધર શ્રાવક સવારે યતિની માફક સઙ્ગાય (સૂત્ર) પોરસી કરે તો સાંજે પણ પડિલેહણના ટાઇમે યતિની માફક બે ખમાસ-મણ દહને સઙ્ગાય કરશે કે ? એમ કરતા જાણ્યા નથી, છતાં તપાસ કરજો. પોસહધર શ્રાવક સવારે ને સાંજે બન્ને ટાઇમ સઙ્ગાયના આદેશો લઈ સઙ્ગાય કરેજ છે, વલી પૂછી ને નિશ્ચય કરજો. +

+ તપા ખરતર ભેદ પૃઠ ૯૨ માં મૂળ લેખકે લખેલ “ જેથ તેથ ઝમ્મડ ધમે, પરં સાસત્રે નીત નથી ” એ વાક્યનો વાસ્તવિક અનુવાદ “ જ્યાં ત્યાં ઉજડ ધસે (ચાલે) છે, પરંતુ શાસ્ત્રમાર્ગે ચાલવાની નીત (ભાવના) નથી ” એવો હોવો જોઈએ, એના બદલે જંખ્યાચાર્યે “ જેમ સુઝે તેમ આંખો મીચી કરે છે, પણ શાસ્ત્રમાં આવી નીતિ નથી ” આવો અનુવાદ કર્યો છે, એ જોતાં જણાય છે કે

(તપા ખરતર બેઠ અંથ ૧ બોલ ૧૦૭, અંથ ૨ બોલ ૧૧૬ મો)

૧૦૫ પ્રશ્ન-તથા તપા શ્રાવક પાઘી ચઝમાસી સંવચ્છરીના પઢિ-
કમણા કરઈ ત્યારઈ ૧૨ વ્રતાંના ૧૨૪ અતીચાર વિસ્તારનું આલોવઈ,
સ્વરતર શ્રાવક વિસ્તર પણઈ સર્વ અતીચાર આલોવઈ નહીં, તે સ્યું ?

ભાષા-તપા શ્રાવક પાખી ચોમાસી અને સંવચ્છરી પઢિકમણું
કરે ત્યારે ૧૨ વ્રતાના ૧૨૪ અતિચાર વિસ્તારથી આલોવે છે, ખરતર
શ્રાવક વિસ્તારથી સર્વ અતિચાર નથી આલોવતા. તે શું ?

તત્રાર્થે—સ્વરતર શ્રાવક ૧૨૪ અતીચાર આલોવણા ઢંડકનઈ
પાઠઈજિ કરી આલોવઈ છઈ, તથા આવશ્યકમાંહિ શ્રાવકનઈ
વિસ્તર આલોવણના પાઠ ‘પવિત્રયં આલોવમિ’ एह થકી જુદા
નથી લિખ્યા, કીયે ગચ્છવાસી સ્થાવિરે પાઘીસૂત્રના પાઠના પરિ
લિખ્યા પણ નથી, જે પાઠ મળીનઈ શ્રાવક આલોવઈ પઢિક-
મઈ, શ્રાવકનઈ વંદિત્તુજિ પાઘીસૂત્રનઈ ઠામિ છઈ, જઈ અધિકા

એમને મૂળ લેખની ગતાગમે નથી પડી એથી જોમ મનમાં આવ્યું તેમ
ભરડી નાખ્યું છે, એટલુંજ નહીં, પણ પોતાના ગચ્છની ચાલુ પ્રવૃત્તિનું
પણ ખ્યાલાત નથી રાખ્યું, શું વર્તમાનમાં તપા શ્રાવકો સવારની
સામાયિક પડિલેહણ અને સજ્જાય કરીનેજ પારે છે ? અને જો
‘શાસ્ત્રમાં આવી નીતિ નથી’ તો કેવી નીતિ છે ? તે બતાવવી તો
હતી, કયા શાસ્ત્રમાં આ નીતિ લખી છે કે ? ‘પડિલેહણ, ને સજ્જાય
કર્યા વગર સવારની સામાયિક નજ પારી શકાય’ એ બાબતનો પ્રમાણ
જાગ્યાચાર્યે તેમ એમના પૂર્વજોએ બતાવેલો હતો, બતાવે ક્યાંથી ?
હોય તો ને, કેવળ મોંઢાના ગપા મારતાં શું જોર પડ્યાનું હતું ?

આંપણા મનના માન્યા જે આલોવડ પડિકમડ તે નાગોરી
લૂંકાની પરિ નવા પાઠ કલ્પી આલોયાજિ કરડ, જગતનડ કોડ
પટૂ નથી, વલી જડ વંદિત્તુ ગણ્યાંઈ શ્રાવક જૂઆ અતીચાર આલોવડ
તડ યતિ પુણિ પાઘીસૂત્ર થકી જૂઆ પાંચ આચારના અતીચાર
કાંઈ ન આલોવડ ? પરં આલોવતા કોઈ યતિ દીસતા નથી ૧૦૫

ભાષા:—ખરતર શ્રાવક ૧૨૪ અતિચાર આલોચણ દંડકના
પાઠથીજ આલોવે છે, અને આવશ્યક સૂત્રમાં શ્રાવકને વિસ્તર આલો-
ચણનો પાઠ ‘પદ્ધિયમ આલોચેમિ’ એનાથી જુદો નથી લખ્યો,
કોઈ ગચ્છવાસી સ્થવિરે પણ પાપીસૂત્રના પાઠની માફક નથી લખ્યા
કે જે પાઠ ભણીને શ્રાવક આલોવે પડિકમે, શ્રાવકને પાપી સૂત્રના
કામે વંદિત્તુ છે. છતાં જે પોતાના મનમાન્યા અધિકા આલોવે પડિકમે.

તે નાગોરીલૂંકાઓતી માફક નવા કલ્પીને આલોયાજ કરો, જગતને
કોઈ રોકનાર નથી, ખીજું વંદિત્તુ ગણવા છતાંય શ્રાવક જે જુદા
અતિચાર આલોવે તો યતિ પણ પાપીસૂત્રથી જુદા પાંચ આચારોના
અતિચાર કેમ ન આલોવે ? પરંતુ આલોવતા કોઈ યતિ દેખાતા નથી.

(તપા ખરતર ભેદ ગ્રંથ ૧ બોલ ૧૦૮, ગ્રંથ ૨ બોલ ૧૧૭ મો)

૧૦૬ પ્રશ્ન—તથા તપા શ્રાવક પાઘી પડિકમતાં પાઘીસૂત્ર-
વંદિત્તુ ગુણાવી છેહડઈ ‘સુયદેવયા ભગવઈ’ એ ગાથા કહઈ, સ્વરતર
શ્રાવક ન કહઈ, તે શું ?

ભાષા:—તપા શ્રાવક પાપી પડિકમતાં પાપી સૂત્ર વંદિત્તુ ગણ્યા બાદ
‘સુયદેવયાભગવઈ’ એ ગાથા કહે છે ને ખરતર શ્રાવક નથી કહેતા, તે શું?

તત્રાર્થે—એ ગાથા વંદિતુ માંહિલી નથી, વલી કિનેહી શાસ્ત્રે કહિવી પિણ નથી કહી, જઈ કહી હુવઈ તડ વલી જોઈ-યઈ, તથા તપા પાખીનઈ શ્રુતદેવતાના કાઉસગ્ગ ન કરઈ થુડ પુણિ ન કહઈ, તે સ્યું ?

ભાષા—‘ સુયદેવયા ’ એ ગાથા વંદિતુમાંહેની નથી, બીજી એ ગાથા કહેવાનું કોઈ શાસ્ત્રમાં કહ્યું પણ નથી, જો કહ્યું હોય તો વલી જોઈએ, † તથા તપા પાખી (આદિ ત્રણે) માં શ્રુતદેવતાનો કાઉસગ્ગ નથી કરતા તેની થુધ પણ નથી કહેતા, તે શું ?

(તપા ખરતર ભેદ ગ્રંથ ૧ બોલ ૧૦૯, ગ્રંથ ૨ બોલ ૧૧૮ મો)

૧૦૭—પ્રશ્ન—તથા પાખીયઈ સમાપ્તિ સ્વામણઈ કરતાં ૩ નવકાર સ્વરતર શ્રાવક કહઈ, તપા ૧-૧ નવકાર ૪ વાર કહઈ તે સ્યું ?

ભાષા—પાખીએ સમાપ્તિ ખામણા કરતાં ખરતર શ્રાવક ત્રણ નવકાર કહે અને તપા એક એક નવકાર ચાર વખત કહે, તે સ્યું ?

તત્રાર્થે—એ આંપણા આપણા સંપ્રદાયઈ પામીયઈ, પરં એહવા અક્ષર ન લાભઈ, અનઈ યતિના સ્વામણાના જે પાઠ છઈ તે શ્રાવકનઈ કહતાં મિલઈ નહીં, તેહ મળી યતિના સ્વામણા કરવાની વેલા અતિક્રમ કરિવડ છઈ ॥૧૦૭॥

ભાષા:—એ બધી બાબતો પોતપોતાના સમુદાયથી મળે, પરંતુ

† ‘ તપા કહે છે ’ એટલા માત્રથી કોઈ પ્રમાણભૂત ન માની લેવાય, કિંતુ જો કોઈ સર્વમાન્ય શાસ્ત્રકારેએ કહ્યું હોય કે ‘ શ્રવકે પાખીસૂત્રના સ્થાને વંદિતુ કહીને ઉપર ‘ સુયદેવયા ’ થુધ કહેવી ’ તો તે પ્રમાણ જગ્યાચાર્ય બતાવે, અન્યથા આય તપાના ધરનો આચાર છે.

એના માટે શાસ્ત્ર પ્રમાણ ન મળે, ‡ અને સાધુના ખામણાનો જે પાઠ છે તે શ્રાવકને કહેવું ઘટે તેમ નથી, માટે (ગમે તો ત્રણ, ને ગમે તો ૧ નવકાર ગણી) સાધુના ખામણા કરવાની વેળા ઉલ્લંઘવી છે.

(તપા ખરતર ભેદ ગ્રંથ ૧, બોલ ૧૧૦ મો)

૧૦૮ પ્રશ્ન—તથા તપા પોસહતા સતઘડીયઈ જિવારઈ દેવ વાંદઈ તિવારઈ પહિલા ઇરિયાવહી પઢિક્રમઈ, તે મ્યું ?

ભાષા—તપા પોસાતી સાતઘડીએ જ્યારે દેવવાંદે ત્યારે પહેલા ધરિયાવહી પઢિક્રમે. તે શું ?

તત્રાર્થે—“ સવકત્યઓ ય ઇરિયા, દુગુ ગિય ચિયવં ણા ય તહ તિરિણ । થુન્ન-પણિહાણ-સવક-ત્યઓ ય ઇય પંચ સવકત્યયા ॥૧॥” इति तपागच्छीय सोमसुन्दरसूरिकृत चैत्य-वंदनाभाष्यवृत्तौ । इये अक्षरे तपांरइ शास्त्रि इरियावही शक्रस्तव थकी पछइ पडिकमिवी कही छइ, विचारी जोज्यो ॥१०८॥

ભાષા:—તપા ગચ્છીય આં શ્રીસોમસુંદરસૂરિએ ચૈત્યવંદન ભાષ્યની ટીકામાં “ સવકત્યઓ યં ” ઇત્યાદિ ગાથાથી શક્રસ્તવ (નમુત્યુણું) કહીને પછીથી ધરિયાવહી પઢિકમવી કહી છે x વિચારી જોજો.

‡ એક નવકાર ગણવાનું કોઈ સર્વમાન્ય પ્રમાણ જાળ્યાચાર્ય બતાવી દે. તો પછી ત્રણ નવકારનોય પ્રમાણ બતાવવા પ્રયત્ન કરાશે.

x પ્રવચન સારોદ્ધારની ટીકા પાના ૨૦ માં આચાર્ય સિદ્ધસેનસૂરિ પણ ધરિયાવહી પઢિકમ્યા પહેલા શક્રસ્તવ કહેવાનું કહે છે, જુઓ—“યોગમુદ્રયા જિનમમ્મુક્ષં શક્રસ્તવમસ્ત્વલિતાદિગુણોપેતં પઠતિ, તદનુ ઇર્યા-પથિકીપ્રતિક્રમણં કરોતિ, તતઃ પચ્ચવિંશત્યુચ્છવાસમાનં કાયોત્સર્ગં

(તપા અસ્તર બેઠ અંથ ૧ બોલ ૧૧૧, અંથ ૨ બોલ ૧૨૧ મો)

૧૦૬ પ્રશ્ન—તથા સ્વરતર કલ્યાણક તપઃ ૧૭૮ ઉપવાસ કરઈ, તપા ૧૨૦ ઉપવાસ કરઈ, તે સ્યું ?

ભાષા:—કલ્યાણિક તપમાં અસ્તર ૧૭૮ અને તપા ૧૨૦ ઉપવાસ કરે, તે સ્યું ?

તત્રાર્થે—જઈ કલ્યાણક દિન આરાધઈ તત ૧૨૧ દિન ઉપવાસ કરઈ, જઈ કલ્યાણક તપ આરાધઈ તત જઈ શક્તિ થાઈ તત ૨૨ તીર્થકરાંના ૨૨ માસસ્વમણ કરઈ, આદિનાથના મોક્ષ ચત્વદસમ તપિ, એવં મહાવીરના છટ્ટ તપઈ મોક્ષ થયા, એ તપ કરત, જઈ શક્તિ ન થાઈ તત માસનઈ ઠામિ ૧-૧ ઉપવાસ કરત, વીજા જિમ જેતલે ઉપવાસે, (ઈમ) કરતાં ઉપવાસ સર્વે એતલા થઈ, ઈમ યથાશક્તિ તપ કરીયઈ, પરંતુ દષ્ટિરાગઈ પારકત અધિકતઈ તપ ચિત્તમાંહિ નાવઈ, આંપણત ઓછઈ તપ ચિત્તમાંહિ આવઈ તત સ્યું કહીયઈ ? જિમ ઋષિમતીયાંનઈ પાંચમી શ્રાવકની પ્રતિમા વહતાં હિવર્ણાં ગતિ ૪ પહરાંનાં કાતસ્સગનઈ ઠામિ પહરિ પહરિ

કૃત્વા પારયિત્વા ‘લોગસ્સુજ્જોયગરે’ इत्यादि परिपूर्णं भणित्वा जानुनी च भूमौ निवेश्य योजितकरकुशेशयस्तथाविधसुकविकृत-जिननमस्कारभणनपूर्वं शक्रस्तवादिभिः पञ्चभिर्दण्डकैर्जिनमभिवंदते, चतुर्थस्तुतिपर्यन्ते पुनः शक्रस्तवमभिधाय द्वितीयवेले तेनैव क्रमेण वन्दते, तदनु चतुर्थशक्रस्तवभणनानन्तरं स्तोत्रं पवित्रं भणित्वा ‘जय वीरराय’ इत्यादिकं च प्रणिधानं कृत्वा पुनः शक्रस्तवमभिधत्ते इति । એથી ૨૫૪ જાણાય છે કે શક્રસ્તવ કહ્યા વગર પહેલાંજ ધરિયાવહી પડિકમવી શાસ્ત્રાધારે નહીં પણ તપાના ધરનો આચાર છે.

લોગસ્મ ૨૪ ના કાઝસ્સગ શ્રાવકનહ કરાવહ છહ, તે પ્રતિમાનહ લેવહ પડહ, પરં મામનહ ઠામિ ૧ ઉપવાસ લેવહ ન ઘાલોયહ, જોવહ દૃષ્ટિગગ એહવા દીપ્યા છહ ॥ ૧૦૯ ॥

ભાષા—જ્યારે કલ્યાણુક દિવસ આરાધે ત્યારે ૧૨૧ દિવસ ઉપવાસ કરે છે. + અને જ્યારે કલ્યાણુક તપ આરાધે ત્યારે શક્તિ હોય તો (નિર્વાણમાં) આવીસ તીર્થ કરોના આવીસ માસખમણ અને આદીશ્વર ભગવાનના ૬ ઉપવાસ, તેમ મહાવીર સ્વામીના બે ઉપવાસ કરે અને જો શક્તિ ન હોય તો માસખમણના અદલે ૧-૧ ઉપવાસ કરે. x

+ કારણ કે ભગવાન મહાવીર દેવ બે માતાના ગર્ભમાં ગર્ભપણે આવ્યા, અને માતાઓએ તીર્થ કરે ભગવંતનું આગમન સૂચક કલ્યાણુ-મંગલકારી ચૌદ મુપનાઓ જોયા છે, તેમ બીજી માતા ત્રિશલાની દૂધમાં આવવાનું દિવસ પણ આસો (ગુ. ભાદરવા) વદ ૧૩ કલ્પસૂત્ર તેમ આચારાંગમાં સ્પષ્ટ કહેલ હોવાથી તેને કલ્યાણુક દિવસ માનવામાં કોઈ શાસ્ત્રકારનો નિષેધ નથી. એટલે “ કલ્યાણાનાં-શુભસમૃદ્ધિ-વિશેષાણાં હેતુત્વાત્ ” આ સિદ્ધાંત નિયમાનુસાર ‘કલ્યાણુક’ શુભ-સમૃદ્ધિઓનો હેતુ હોવાના અંગે દેવાનંદના ગર્ભથી ત્રિશલાના ગર્ભમાં આવવાના દિવસને ગર્ભધાન કલ્યાણુક દિવસ તરિકે માનવાથી ૧૨૧ કલ્યાણુકો બરાબર થાય છે.

x જેમ કે સાગરાનંદસૂરિએ છપાવેલ ‘ આચાર વિધિ ’ નામક સામાયારી પ્રકરણમાં એકેક માસખમણના ૩-૩ ઉપવાસ કહેલ છે તેમ અમારા પૂર્વાચાર્યોની સામાયારીથી ૧-૧ ઉપવાસ કરાય છે, એમાં કઈ શાસ્ત્રાજ્ઞાને આધ આવે છે ? તે તો જન્મ્યાચાર્ય તાવે.

ખીજી (દીક્ષા અને જ્ઞાન) કલ્યાણકો જેમને જેટલા ઉપવાસે (થયા હોય તેમ) કન્ટાં સર્વ ઉપવાસ એટલા થાય, † એમ યશ્નશક્તિ તપ

† અર્થાત્ દીક્ષા જ્ઞાન અને નિર્વાણ કલ્યાણકોના ૧૩૦ ઉપવાસ થાય છે, તેની સાથે વ્યવન અને જન્મના, જોકે તીર્થંકર ભગવંતોને એ સમયે કાંઈ પણ તપ હોતું નથી. છતાં પાંચે કલ્યાણકોની આરાધના થવા નિમિત્તે પૂર્વાચાર્યોની પરંપરાએ એકેક ઉપવાસ લેતાં ૪૮ ઉપવાસ થાય, તેને ૧૩૦ ની સાથે ભેળવતાં ૧૭૮ ઉપવાસ ખરાબર થાય છે, અને આમ કરવામાં કઈ શાસ્ત્રાજ્ઞાને બાધા આવે છે ? તે જાંબ્યાચાર્ય બતાવે.

ખીજી આ કલ્યાણક તપની વિધિ ભિન્ન ભિન્ન શાસ્ત્રોમાં ભિન્ન ભિન્ન પ્રકારે બતાવી છે, જેનો વાસ્તવિક અનુભવ જાંબ્યાચાર્યને તો શું ? પણ એમના પૂર્વ લેખકોનેય નથી. જુઓ એક વિધિતો ૧૭૮ ઉપવાસની આ ગ્રંથકારેજ ઉપર બતાવી છે, એ શિવાય ખીજી વિધિ છે સ્મગરાનંદસૂરિએ છપાવેલ ‘આચાર વિધિ’ નામક ‘સામાચારી પ્રકાશ’ પાના ૬ માં બતાવેલ ૨૨૬ ઉપવાસ, ને એક એકાસણીની, જુઓ આરહો તેનો પાઠ—

“ ઉપવાસ ૨૪ ચ્યવનતપઃ ૩૯ । ઉપવાસ ૨૪ જન્મતપઃ ૪૦ । સુમતેર્દીક્ષાદિને એકાસનં ૧, વાસુપૂજ્યસ્ય ઉપવાસ ૧, મહેઃ ઉપ૦ ૩ પાર્શ્વસ્ય ઉપ૦ ૩, શેષર્તાર્થકૃતાં પ્રત્યેકં ઉપ૦ ૨, एवं ઉપ૦ એકાસનં ૧, દીક્ષાતપઃ ૪૧ । ઋષભનેમિમલ્લિપાર્શ્વાણાં પ્રત્યેકં ઉપ૦ ૩, વાસુપૂજ્યસ્ય ઉપ૦ ૧, શેષર્તાર્થકૃતાં ઉપ૦ ૨, एवं ઉપ૦ ૫૧ ઉદ્યાપનેજ્ઞિનપૂજા, કેવલ (૦તપઃ) ૪૨ । ઋષભસ્ય ઉપ૦ ૬, વીરસ્ય ઉપ૦ ૨, શેષર્તાર્થકૃતાં પ્રત્યેકં ઉપ૦ ૩, ઉદ્યા૦ તિલક

થાય છે, પરંતુ દષ્ટિરાગના કારણે બીજાનું અધિક તપ પણ નજરમાં નથી આવતું અને પોતાનું થોડુંય વાલું દેખાય તેનું શું કહેવું ?

૨૪ જિનાનાં સંઘપૂજા ચ, નિર્વાણતપઃ ૪૩ ”

આ વિધિમાં માસખમણના બદલે ૩ ઉપવાસ જે કહ્યા છે. તે પણ અમુક સર્વમાન્ય શસ્ત્રાધારે કહ્યા હોય તેમ નહીં પણ સ્વપૂર્વાચાર્યોની પરંપરાએજ કહ્યા છે.

આચારદિનકર કે જે અનેક વિધિવિધાનોનો એક મહાન્ ખગ્ગનો છે, તેમાં ઉપગૃહ્યત અને વિધિઓથી ભિન્ન બે પ્રકારની વિધિઓ બતાવી છે, તેમાંની પહેલી વિધિએ તો દરેકે દરેકે કલ્યાણકે એકાસણું અને બીજી વિધિએ ચ્યવન તથા જન્મ કલ્યાણકે એકેકે ઉપ૦ અને દીક્ષાદિ ત્રણમાં જે જે કલ્યાણકે જે જે તપ તીર્થ કરે ભગવંતોએ કયું હોય તજ તપ કરવા કહેલ છે, બેધ લો આ રહ્યો તેનો પણ પાઠ—

“ यस्यां यस्यां तिथौ आगमवचनेन जिनानां कल्याणकमायाति, तच्च च्यवन-जन्म-दीक्षा-ज्ञान-निर्वाणलक्षणं, तद्दिने एकस्मिन् कल्याणके एकभक्तं, द्वयोर्निर्विकृतिकं, त्रिष्वाम्लं, चतुर्षूपवामः, पञ्चकल्याणकमङ्गमे प्रथमदिने उपवासो द्वितीयदिने एकभक्तं । ‘एग उववासो दो अं—बिलाइं निन्विवाइं तेरस हवन्ति । एगामणाइं चुलसी, कल्लाणगतवस्स परिमाणं ॥१॥’ एवं वर्ष सम्पूर्य वर्षमप्तमेवमेव कुर्यात् । × × × अथवा जिनानां च्यवन-जन्मदिनेषु प्रत्येकमेकैकोपवासः, दीक्षा-ज्ञान-निर्वाणेषु येन तीर्थ-करेण यादृक्तपो रचितं तादृगेवैकान्तरोपवासरीत्या विधीयते, इयं द्वितीया कल्याणकतपोरीतिः ।” (આચાર દિનકર પાના ૩૪૦)

જેમકે હમણાં ઋષિમતીઓને શ્રાવકની પાંચમી પ્રતિમા વહતાં રાત્રે ચાર પહોરના કાઉસગના અદલે દરેકે દરેક પહોરે ચોવીસ ચોવીસ લોગસના કાઠસસગ કરાય છે, તે તો પ્રતિમાના હિસાબે ગણત્રીમાં આવી જાય પરંતુ માસખમણના અદલે એક ઉપવાસ ગણત્રીમાં ન આવે. જુઓ તો દષ્ટિરાગ કેવા વધ્યા છે.

(તપા ખરતર ભેદ ગ્રંથ ૧ બોલ ૧૧૨, ગ્રંથ ૨ બોલ ૧૨૨ મો)

૧૧૦ પ્રશ્ન-તથા સ્વરતરાંનઈ એકાસણા ચઝવિહાર ઘી લાંડ સેતી કરીયઈ છઈ તેહને અમૃતઆંબિલ કહીયઈ, તે સ્યું ?

ભાષા:-ખરતરોને ધી. ખાંડથી ચોવિહાર એકાસણા થાય છે. તેને અમૃતઆંબિલ કહે છે. તે શું ?

તત્રાર્થે-તે ચઝવિહાર એકાસણાજિ કહીયઈ, થોડા દ્રવ્ય થોડી વિગઈ લ્યઈ એહજિ લાભ, પછી ચઝવિહારના લાભ થાઈ, તે પચ્ચક્ષણ કાંઈ ન માનીયઈ, અનઈ કેવલ રૂહલાકાર્થિ તેહ કરતાં તેહનાજિ લાભ ॥ ૧૧૦ ॥

ભાષા:-તે ચોવિહાર એકાસણોજ કહેવાય છે, થોડા દ્રવ્ય લેવા અને વિગઈ પણ થોડી લેવી એજ એને લાભ છે. પછીથી ચોવિહારનો લાભ થાય, (પણ જેમ તપાઓ + છાસની ઘેંસ ખાઈનેય આંબિલનો

એથી ફલિનાર્થ એ થયું કે માસખમણના સ્થાને ૧-૧ ઉપવાસની ગણત્રીએ પાંચે કલ્યાણકોના મહી ૧૭૮ ઉપવાસના તપને શાસ્ત્રાવરૂદ્ધ બતાવના પ્રયાસમાં સફળતા જાળ્યાચાર્ય અને તેમના પૂર્વ લેખકો પાણી વલોવવા જેટલીજ મેળવી શક્યા છે. અસ્તુ.

+ આંબિલ માટે હારિભદ્રીય આવશ્યક વૃત્ત્યાદિ સર્વમાન્ય પ્રાચીન

અને સીરા પુડી લાડવા ઘેવર દુધપાક વાસુંદી શ્રીખંડ આદિ માલ-મલિદા ખાધનેય નીવીનો પચ્ચખાણુ માને છે તેમ અમારે) તે પચ્ચખાણુ (આંખિલનો) કાંઈ નથી માનતા. અને તે પણ કેવલ ઇહ-લોકાર્થે કરતાં લાભ પણ તેટલુંજ છે.

શાસ્ત્રોમાં સર્વાત્ર એક દ્રવ્ય અનાજનો અને ખીજો દ્રવ્ય પાણીનો, એમ બે દ્રવ્યો શિવાય અધિક દ્રવ્યો લેવાનો વિધાન અંશ માત્રથીય નથી. તેમ નિશીથયૂર્ણિમાં “ દોહિં દવ્વેહિં અંબિલં ” એવો સ્પષ્ટ ઉલ્લેખ છે. અને પરમસુવિહિત ખરતર ગચ્છવિભૂષણુ સર્વમાન્ય નવાંગ ટીકાકાર શ્રીઅભયદેવમ્હરિ રચિત અનુત્તરોપપાતિ સૂત્રની ટીકામાં “ આયંબિલં શુદ્ધૌદનાદિ ” આવે. સુસ્પષ્ટ કથન છે. એ બધીય શાસ્ત્રાજ્ઞાઓને ટોકરે મારીને આંખિલમાં સેંકડો વાનીઓ અનાજની તેમ શૂક લૂણુ (મીઠું) કાળામરી હીંગ આદિ રસોત્પાદક અનેક વસ્તુઓ ખાવી-ખવરાવવી. એ તપા(ગપ્પા)ઓના ધરનો આચાર છે.

વર્દ્ધમાન આયંખિલ તપની ૭૦૮૦ થીય ઉપરની ઓળીઓમાં પણ ગૃહસ્થને તો જાસની કદી કે ઘેંસ લેવી ન કલ્પે અને સાધુ સાધ્વીઓને વડી દીક્ષાના માંડવીયા જોગ. કે જે માત્ર મહિના ભરનાજ હોય છે, તેમાંય જાસની કદી ને ઘેંસ લેવી કલ્પે. આએ તપાના ધરનો આચાર છે.

સાધુ સાધ્વીયોને સૂત્રોના જોગોમાં અને શ્રાવક શ્રાવિકાઓને ઉપધાનમાં નીવીનો પચ્ચખાણુ કરાવીનેય પ્રત્યક્ષ આધાંકર્માદિ વિવિધ દોષોથી દૂષિત અનેકો પ્રકારના માલ મસાલા ખાવા, ખવરાવવા સર્વમાન્ય શાસ્ત્રે ક્યાંય નથી. જે ક્યાંએ શાસ્ત્રોમાં હોય તો તે પ્રમાણુ જંખ્યાચાર્ય બતાવે. અન્યથા આએ તપાના ધરનો આચાર છે.

(તપા-ખરતર ભેદ ગ્રંથ ૧ ખોલ ૧૧૩, ગ્રંથ ૨ ખોલ ૧૨૩ મો.)

૧૧૧ પ્રશ્ન—તથા તપારંદ સામાયિકમાંહિ વલી વીજડ મામાયિક કરતાં શ્રાવક સજ્ઞાયની સ્વમાસમણ ન દૃઢ અનદ્ વડસણાની સ્વમાસમણ દૃઢ, અનદ્ સ્વરતરાંનદ્ સજ્ઞાય તથા વડસણાની બેડં સ્વમાસમણ દૃઢ, તે સ્યું ?

ભાષા—તપાના શ્રાવકો અક પછી તેમાંજ ખીજ સામાયિક લેતાં સજ્ઞાયના આદેશો નથી માંગતા, ને બેસણાના માગે છે. ત્યારે ખરતરના શ્રાવકો સજ્ઞાય અને બેસણા. બન્ને આદેશો માગે છે. તે શું ?

તત્રાર્થ—એ ઘણું અઘટતડ હૃદ, વીજડ સામાયિકજ જડ બેસણાની સ્વમાસમણ વલી દીજડ તડ સજ્ઞાયની સ્વમાસમણ વલી કાંડ ન દીજડ ? વલી જડ તિણદ્વિજ સજ્ઞાયની સ્વમાસમણદ્ સજ્ઞાય કીજડ તડ તિણદ્વિજ વડસણાની સ્વમાસમણદ્ વડસિવડ કાંડ ને કીજડ ? વલી જડ વડસણદ્ વિણ ઠાયાં વડમવડ ન સૂફડ તડ સજ્ઞાય વિણ સંદિસાયાં વલી સજ્ઞાય કિમ સૂક્ષિસ્યદ્ ? ઓછી સામાયિકની ક્રિયા કરતાં તે વીજાં સામાયિક કિમ થાઈ ?, એવં દૃષ્ટિરાગ છાંડી સમીનજરિ કરી જોજ્યો સહી સમક્ષિ પડિસ્યદ્ ॥ ૧૧૧ ॥

ભાષા:—(ખીજ સામાયિકમાં સજ્ઞાયના આદેશો ન માંગવા) એ બહુ અઘટિત છે. ખીજ સામાયિક લેતાં બ્યારે બેસણાના આદેશો માગાય છે ત્યારે વલી સજ્ઞાયના કેમ ન માગાય ? વલી બે પહેલી સામાયિકમાં માગેલા આદેશોથીજ સજ્ઞાય કરાય તો પછી બેસણાના પણ તેજ આદેશોથી બેસણાપર બેસવાનું કેમ નથી કરતા ? ખીજું

જો ખેસણો હાયા વગર ખેસવું નથી કહ્યતું તો સજ્જાયાના આદેશો લીધા વિના સજ્જાય કરવો કેમ કહ્યશે ? (પહેલી) સામાયિકની ક્રિયા પૂર્ણ કર્યા વગર બીજી સામાયિક કેમ થઈ શકે. આ રીતે દષ્ટિરામ છોડીને સમી દષ્ટિએ જોજો. બરાબર સત્ય સમજાશે.

(તપા ખરતર ભેદ ગ્રંથ ૧ ખોલ ૧૧૪, ગ્રંથ ૨ ખોલ ૧૨૪ મો)

૧૧૨ પ્રશ્ન—તથા સ્વરતરાંનદ્ જિમિનદ્ પોસહ ન લ્યદ્, તે સ્યું ?

ભાષા:—ખરતરોને જમ્યા આદ પોસો નથી લેતા, + તે શું ?

+ આ પ્રશ્ન પુનરુક્ત છે, કારણ કે આ ગ્રંથમાં તેમ તપા ખરતર ભેદમાં સંગ્રહીત બનને ખોલે સંગ્રહના ત્રીજા ખોલમાં એજ બાબત પૂછાઈ છે, એટલે એનો વિશેષ વિવેચન અહિં ન કરતાં આ ગ્રંથમાં પ્રશ્નોત્તર ૧ ની પહેલી કુટનોટ જોવા વાંચકોને ભલામણ છે. છતાં એટલું લખી દેવું અયોગ્ય નહીં ગણાયકે તપા ખરતર ભેદ પૃ ૦ ૯૬ માં લખ્યું છે કે “જો ખરતર દિવસે જમ્યા હોય તે ચતુષ્પવી પણ રાત્રિ પોસહ લેના નથી, અને શ્રીઉત્તરાધ્યયનમાં ભગવાને એમ ફરમાવ્યું છે કે ‘જો આવક દિવસે પોસહ ન લઈ શકે તો પણ રાત અફલી. અર્થાત્ પોસહ લીધા વિના ગુમાવે નહીં’ ” એટલે જન્વાચાર્યને પૂછવાનું કે ‘ઉત્તરાધ્યયનના ફરમાન મુજબ જો એક પણ રાત પૌષધ વિના આવક ન ગુમાવે’ તો શું તપા આવકો દરરોજ પોસહ વર્તમાનકાળમાં કરે છે ? કે ભૂતકાળમાં કરતા હતા ? એનો ઉત્તર શાસ્ત્ર પ્રમાણ સાથે જન્વાચાર્ય આપે. અને ત્યાં ઉત્તરાધ્યયનમાં શું ગમે તેટલી વાર જમીને પણ રાતે પોસહ કરવાનું ભગવાંને ફરમાવ્યું છે કે ? જો ફરમાવ્યું હોય તો તે પ્રમાણ જન્વાચાર્ય બતાવે, અન્યથા આય આચાર તપાના ધરનો છે.

તત્રાર્થ—પૌષધોપવાસ નામ ૧૧(મો)વ્રત જે કીજઈ તે ઉપ-
વાસ કીધઈજિ થાઈ, જઈ દિનઈ ઉપવાસ તિવિહાર તથા ચઝવિહાર
કરઈ તઝહીજ તે પોસહ વ્રત થાઈ, અનઈ જઈ દીહઈ જિમ્યાંઈ
પોસહ વ્રત થાઈ તઝ શતકાદિ શ્રાવકે પાઁલીનઈ ઢિહાડઈ જિમીનઈ
પોસહ વ્રત કાંઈ ન કીધઝ ? તેહી શ્રાવક ‘લઢ્ઢુડ્ઢા ગહીયડ્ઢા-
પુચ્છિયડ્ઢા વિણિચ્છિયડ્ઢા’ હતા, તથા વલી જઈ જિમીનઈ
પોસહ લેવઝ થાત તઝ શંખ શ્રાવકઈ શતકાદિ સાવત્થી નગરીના
સાહમ્મીયાંનઈ ઇમ કાંઈ કહ્યઝ ? જે આજ જિમતાં માહમ્મીયાંનઈ
પોસિવારૂપ-સાહમ્મીવાત્મલ્યરૂપ પોમહ કરિસ્યાં, અથવા ભોજન
કર્યા પછી ચતુર્વિધ પોમહમાંહિલા અઁયાપાગપોમહ કરિસ્યાં,
પરં પૂગ પોમહ લેસ્યાં ઇમ કાંઈ ન કહ્યઝ ? એવં જઈ જિમ્યાં
પછી પોમહ વ્રત(ન)લેવાઈ તઝ જિમીનઈ પોમહ કિમ લીજઈ ? એવં
પ્રિચ્છેઝ્યો, શતકા(શંખાદિ)દિ શ્રાવકાંનઈ જીમતાં ત્રિણિહ કામે થાત-
પોમહ થાત—જિમણા થાત-પર્વતિથિ પૂર્ણિમા આગધી થાત, વલી
શંખાદિકસું મિચ્છામિ ઢુક્કડં દેવો ન થાત, તે પિણ ઢાહા
હતા, જઈ ઇમઈ પોસહ વ્રત થાત તઝ સ્યઈ ન જિમ્યા ? પરં
જિમીનઈ પોસહ ન લીજઈ, તેહ ભણી પોસહ ન કીધા જાણીયઈ
છઈ. તથા ‘પોસહં ઢુહઓ પચ્ચં, ઁગરાઈં ન હાયઁ’ ઇતિ
શ્રીઉત્તરાધ્યયનનીવૃત્તિના વ્યાખ્યાનન્યાયઈ જઈ ઉપવાસીતાનઈ
કામકાજનઈ મેલિ પર્વદિવમઈં દિનઈં પોમહ ન કરાણઝ તઝ
પર્વની રાતિનઝ પોમહ શ્રાવક કરઈ, ઁ ભાવ જાણિવઝ, વલી
ઉપવાસીતઝ શ્રાવક સાંખિ પોસહ વ્રત ચઝવિહાર કરીનઈ લ્યઈ

એ કુળ શાસ્ત્રનુચિત ન્યાય છૂટ ? હાં આચરણાંજિ પ્રમાણ છૂટ,
અન્યથા પોમહ ઠીક જઈ જિમીયઈ તડ પાણી પીધાનડ સ્યડ
વાંક ? વલી જઈ જિમી પોમહ કરીયઈ તડ નડકારસી કરી
પડુણ પહરિ જિમી પછઈ સવારે અહોરાત્રિના પોમહ કાંઈ ન
કીજઈ ? એવં જ્ઞેયં ॥ ૧૧૨ ॥

ભાષા-અગ્યારમાં વ્રતનું નામ જે પૌષધોપવાસ છે તે ઉપવાસ
કર્તાથીજ થાય, વગર ઉપવાસે (પૌષધોપવાસ) ન થાય, મતલબ કે જે
દિવસે તિવિહાર કે ચોવિહાર ઉપવાસ કરે તોજ તે (આહાર શરીર
સત્કાર, અશ્વલ્લચર્ય, અને વ્યાપાર, એ ચાર આયતોના ત્યાગરૂપ અગ્યારમો)
પોસહ વ્રત થાય, અને જે દિવસે જમ્યા છતાં પોસહ વ્રત થઈ શકે ?
તો શતકાદિ આવકોએ પાખીના દિવસે જમીને પોસહ વ્રત કેમ ન કર્યો ?
તે પણ આવકો ‘લહટ્ટા’ આદિ ચાર વિશેષણો યુક્ત તત્ત્વના બાણકાર
હતા, (એટલે જે જમીને પોસહ વ્રત શાસ્ત્રાન્તા મુજબ થતો હોત તો
તેઓ અવશ્ય કરત), વલી જે જમીને પોસહ વ્રત લેવાનું થઈ શકતો
હોત તો શાંખ આવકે સાવત્રી નગરીના શતકાદિ સાધર્મી આવકોને
એમ કેમ કહ્યું કે-આજે આપણે જમતા છતાં સાધર્મીઓને પોષવારૂપ-
સાહમ્મી વચ્ચલ રૂપ પોસહ કરીશું અથવા ભોજન કર્યા પછી ચતુર્વિધ
પોસહમાંહેલા અવ્યાપાર પોસહ કરીશું ? x અને ‘પ્રાણુ’ (ચારે પ્રકારે)

x નવાંગત્રીકાકાર શ્રીઅભયદેવસૂરિજી મહારાજ લગવતી સૂત્ર
શ. ૧૨ ઉ. પહેલામાં લખે છે કે—“ પક્ષે-અર્દ્ધમાસિ ભવં પાક્તિકં
‘પૌષધં’ અવ્યાપારપૌષધં ‘પ્રતિજાગ્રતઃ’ અનુપાલયન્તઃ ‘વિહરિણ્યામઃ’
સ્થાસ્થ્યામઃ ” મતલબ—પક્ષે એટલે અર્ધમાસે (૧૫ દિવસે) આવનાર

પોસહ લઘુશું' એમ કેમ ન કહ્યું ? આ રીતે જો જમ્યા પછી પોસહ વ્રત (શાસ્ત્ર દૃષ્ટિએ ન) લેવાય તો પછી જમીને પોસહ કેમ લીજિયે ? આ હકીકત પૂછજો, શતકા(શંખા)દિ શ્રાવકોને જમીને પોસહ લેવાથી ત્રણ કામ થાત, એક તો પોસહ વ્રત ખીજું જમવાનું અને ત્રીજું પર્વ તિથિ પૂનમની આરાધના થાત, અને શતકાદિકથી મિચ્છામિ દુક્કડં દેવું ન પડત, તેઓ પણ ગાહ્યા (સમજદાર) હતા એટલે એમ (જમીને) પણ જો પોસહ વ્રત થતું હોત તો (શંખ શ્રાવકે) જમવાનું શા

અમાવસ્યાએ અને પૂર્ણિમાએ જે કરાય તે પાક્ષિક, પૌષધ એટલે આહારાદિ ચાર પ્રકારનો નહી, પણ અવ્યાપાર પૌષધનો પાલન કરતા વર્તિશું', એથી આગળ ફરી લખે છે કે “ અન્યે તુ વ્યાચક્ષતે-
 इह किल पौषधं-पर्वदिनानुष्ठानं, तच्च द्वधा-इष्टजनभोजनदानादि-
 रूपमाहारादिपौषधं च, तत्र शंख इष्टजनभोजनदानरूपं पौषधं
 कर्तुं कामः सन् यदुक्तवांस्तद्दर्शयतेदमुक्तं 'तएणं अम्हे तं विउलं
 अमणपाणखाइमसाइमं आत्साएमाणा' इत्यादि ” આ પાઠનો મતલબ છે કે “ ખીજા આચાર્યો કહે છે કે—પર્વદિવસે કરવા યોગ્ય જે અનુષ્ઠાન તે પૌષધ કહેવાય, તેના બે ભેદ છે—પહેલો ઇષ્ટજનોને ભોજન દેવા રૂપ અને ખીજો આહારાદિ ચતુર્વિધ પૌષધ, તેમાંથી ઇષ્ટજનોને ભોજન દેવારૂપ પૌષધ કરવા ચાહતા શંખ શ્રાવકે શતકાદિને કહ્યું છે કે—‘આપણે બધા ચારે પ્રકારનો આહાર કરતા છતાં (ઇષ્ટજન ભોજન દાનરૂપ) પાક્ષિક પૌષધનું પાલન કરતા વિચરશું’” એમ શતકાદિ શ્રાવકોને કહ્યા પછી સંવેગભાવનાની વિશેષતાના કારણે ઇષ્ટ જન ભોજન દાનરૂપ પહેલા પૌષધથી જેનો મન નિવૃત્ત થઈ ગયો છે.

માટે ન ક્યું ? પરન્તુ (શાસ્ત્રાસા મુજબ) જમીને પોસહ ન લેવાય એટલેજ (શતકાદિ આવકેએ) પોસહ નથી કર્યા એમ જણાય છે. (અને) ઉત્તરાધ્યયનના “ પોમહં દુદ્ધઞ્ચો પક્ષ્વં, એગરાઈં ન હાયણ ” આ પાઠની ટીકાના અભિપ્રાય મુજબ ‘ ઉપવાસીતો આવક કામકાજ (ની વ્યવસાય) ના કારણે અષ્ટમ્યાદિ પર્વતિથિના દિવસે જો પોસહ ન કરી શક્યો હોય તો તે પર્વતિથિની રાત્રિનો પોસહ (અવશ્ય) કરે (પરન્તુ બન્ને પક્ષની અષ્ટમ્યાદિ પર્વતિથિઓમાંની એકે તિથિને પોસહ વગર ન જવા દે) એ મતલબ જાણવો, વલી ઉપવાસીતો આવક સાંજે ચોવિહાર કરીને પોસહ વ્રત લિયે. એ કયા શાસ્ત્રનો ન્યાય છે ? અહિં

એવો શંખ આવકજ વિચારે છે કે “ આજે પાખીના દિવસે મહારે જમીને ઇષ્ટજન ભોજન દાન રૂપ પોસહ ન કરતાં પૌષ્ઠશાળામાં જઈ (સર્વથા) આહારનો ત્યાગ. અભ્યર્ચનો પાલન કરવા વડે તેમ ભૂષણાદિ તથા શસ્ત્રાદિના ત્યાગ વડે. ચતુર્વિધ પૌષ્ઠ વ્રત કરીને વર્તિપું યોગ્ય છે ” જુઓ આ રહ્યો ભગવતીસૂત્રનો મૂળ પાઠ—

“ તણ શં તસ્મ સંત્વસ્મ સમણોવાસગસ્સ અયમેયારૂવે અબ્ભત્થિણ જાવ સમુપજ્જિત્થા-નો સ્વલુ મે સેયં તં વિઝલં અસણં જાવ માહમં આસ્માણ્ણસ્મ ઇ પક્કિસ્યં પોસહં પઢિજાગરમાણસ્સ વિહરિત્તે । સેયં સ્વલુ મે પોમહમાલાણ પોસહિયસ્સ બંભયારિસ્સ ઉમ્મુકકમણિસુવણ્ણસ્સ વવગયમાલાવન્નગવિત્તેવણ્ણસ્સ નિર્વિકલ્લ-સત્થમુમલમ્મ એગમ્મ અઘ્ઘીયસ્સ દબ્બસંથારોવગયસ્મ પક્કિસ્યં પં.સહં પઢિજાગરમાણમ્મ વિહરિત્તેત્તિ કદ્દુ એવં સંપેહેતિ ।”

(ભગવતીસૂત્ર શૃ ૧૨, ઉ૦ ૧ પાના ૫૫૩)

આચરણાજ પ્રમાણ છે, અન્યથા પોસહ ઉચરીનેય જે જમે તો પાણી પીવાનું શું કસૂર ? વલી જે જમીને પોસહ કરાય તો નોકારસી કરીને પોણા પહોરે (?) જમ્યા પછી સવારતા અહોરાત્રિનો પોસહ કેમ નથી કરતા ? એમ સમજવાનું.

(તપા ખરતર ભેદ ગ્રંથ ૧ બોલ ૧૧૫, ગ્રંથ ૨ બોલ ૧૨૫ મો)

૧૧૩ પ્ર—અપરં પોસહમાંહિ ૧ દ્રવ્ય ઉચરાવ્યાં અફીણ કિમ લ્યંઈ ?

ભાષા:—પોસહમાં એક દ્રવ્ય ઉચરાવ્યા છતાં અફીણ કેમ લિયે છે ?

તત્રાર્થ—તેહનઈ ૨ દ્રવ્ય કારણઈ ઉચરાવીયઈ, અફીણ અણા-
હાર છઈ અનિષ્ટપણા થકી, કિરિયાતાની પરિ કારણ જોડવડ,
તથા જેહનઈ જે સદઈ તેહ જઈ આહાર કહીયઈ તડ તપાંનઈ
તિવિહાર ઉપવાસમાંહિ અફીણ કિમ લેવાઈ છઈ ?, અણસણ-
માંહિ પિણ અફીણ કિમ દિવરાઈ છઈ, જોડ્યો ॥ ૧૧૩ ॥

ભાષા:—અફીણ લેનારને કારણના અંગે એ દ્રવ્યો ઉચરાવીએ છીએ,
અનિષ્ટપણાના અંગે અફીણ આણાહાર છે, (પણ) કિરિયાતાની માફક
કારણ જેવું, ખીજું જે વસ્તુ જેને સદતી (અનુકૂલ) હોય તે જે
આહાર કહેવાય તો તપાઓને તિવિહાર ઉપવાસમાં અફીણ કેમ લેવાય
છે ? અને આણસણમાં પણ અફીણ કેમ દેવાય છે ? જેજે.

(તપા ખરતર ભેદ ગ્રંથ ૧ બોલ ૧૧૬, ગ્રંથ ૨ બોલ ૧૨૬ મો)

૧૧૪ પ્રશ્ન—તથા જે લિખ્યા સ્વરતરાંનઈ પોસહધર તથા
સામાયિકધર દેહરા—ઉપાસરામાંહિ ઇહલોકાર્થિ ગુણણા કરઈ વલી
આંબિલ કરઈ કરાવઈ, તે સ્યું ?

ભાષા:—ખરતરોને પૌષધ અને સામાયિકવાળા દેરા—ઉપાસરામાં
આલોક નિમિત્તે ગણણા ગણે છે તેમ આંબિલ કરે કરાવે છે, તે શું ?

तत्रार्थे—श्रावक श्राविका केवल संमार्गार्थि गुणणा तथा कुगुरु कुदेवना ध्यान न करइ, धर्मार्थिइ गुणणादिक करइ पिण, तथा कृष्णइ पोसहशालामांहि इहलोकार्थिइ भाईनइ काजि अट्टम तपइ देवतानउ ध्यान कीधउ, तथा अभयकुमारइ पोसहशालामांहि मेहनइ काजि अट्टम तपइ ध्यान कीधउ, अभयकुमारना पोसह, पुणि तपा रत्नशेखरसूरिइं प्रतिक्रमणसूत्रनी वृत्तिमांहि पोसह व्रत करी लिख्या छइ, ए पोसहमांहि इहलोकार्थि तप ध्यान क्हा छइ, विचारिज्यो, आपणउ बेटउ पारकउ झोटींग न कहीयइ, तथा क्षायिक मय्यक्त्वधारीयइ कृष्णइ द्वारिकाना उपद्रव वारिवानइ काजि तप आंवल जिनपूजा प्रमुख कराया श्रीउत्तराध्ययन टीका मांहि क्हा छइ, ए इहलोकार्थि छइ, वली श्रीभद्रबाहुस्वामीयइ संघना उपद्रव वारिवा भाणि संघनइ ‘उवसग्गहरं पासं’ एह श्रीपार्श्वनाथस्तवन करी दीधा क्हा छइ, अनइ श्रीमानदेवाचार्यइ संघना उपद्रव वारिवानइ काजि शांतिस्तवन शांतिमंत्र गभित गुणणा निमित्त करी दीधा छइ, ए पिण इहलोकार्थि जाणिवा, तथा श्रीहरिभद्रसूरिकृत ललितविस्तरा वृत्तिमांहि (अनइ) श्रीअभय-देवसूरि श्रीपंचाशकवृत्तिमांहि “ इष्टफल सिद्धि ” एह पदनी व्याख्यानइ अधिकारि “ इष्ट[फल]सिद्धि-रभिमतार्थनिष्पत्ति-रैह्यलौकिकी, ययोपगृहीतस्य चित्तस्य स्वास्थ्यं भवति, ततश्च धर्मवृद्धिः ” इति पंचाशकवृत्ति तथा “ इष्टफलसिद्धी-इहलोकइ जीणइ छतइ आजीविकाना आहट दोहट गाढा न हवइ ते धनादिकनी प्राप्ति थाज्यो ” ए तपा श्रीसोम-

સુન્દરસૂરિ શિષ્ય મહોપાધ્યાય હેમહંમગણિકૃત ષડાવશ્યકના બાલાવબોધમાંહિ છૈઃ । એક નવકાર અને એક ઉવસુગ્ગહરં ઇમ કરી જે ગુણીયૈ તે સ્વીચડી કહીયૈ, તથા સંમાગિક નિમિત્તિ માનણા ઈછણા કરતાં મિથ્યાત્વ ન થાઈ, તથા દુઃસ્વસ્વયનૈ કાજિ કાઉસગ કરતાં તુમ્હનૈ મિથ્યાત્વ કિમ ન થાઈ ? (કેવલ) કર્મક્ષય નિમિત્ત કાઉસગ સ્યૈ નથી કરતા ? હિયામાંહિ ઘણું વિમાસિજ્યો, અમ્હેૈ ઇમજિ કહીયૈ છૈ, કેવલ સંસારજનૈ અર્થિ ગુણણા પોમહમાંહિ ન કરણા, વિજયરાજાચૈ આંપણા ઉપદ્રવ ટાલિવાનૈ કાજિ ૭ દિન અભિગ્રહ કરી અવ્યાપાર (પોમહમાં) આહાર પરિહાર કરી રહ્યા છૈ; તેહનૈ પોસહ વ્રત તપા કહૈ છૈ, અમ્હે તેહનૈ પોસહ વ્રત. ન કહ્યું, તડ તુમ્હે આપણા ઘર રાખી કાંઈ નહીં રમતા ? ઘરના સોમ્ક કરિજ્યો, એ સીલ તુમ્હે સાં સૂજા વહગના બેટા તે મળી દીજૈ છૈ, પરં એ કહણીમાં સાહસ પાક્ષીયાંની છૈ, કહણા જુદા છૈ કરણા જુદા છૈ, જોજ્યો ॥ ૧૧૪ ॥

ભાષા:—કેવળ સંસારના અર્થે ગણણું તથા કુદેવકુચુરનો ધ્યાન શ્રાવક-શ્રાવિકાઓ ન કરે અને ધર્મ નિમિત્તે કરે પણ ખરા, બીજું કૃષ્ણ વાસુદેવે આલોકના કાળે ભાષની પ્રાપ્તિ માટે પોસહસાલામાં અટૂમના તપથી (દેવતાનું) ધ્યાન કર્યું છે, અભયકુમારે વર્ષાદ માટે પોસહસાલામાં અટૂમના તપથી (દેવતાનું) ધ્યાન કર્યું છે, તે અભય-કુમારના પોસહને પણ તપા રત્નશેખર સૂરિએ પ્રતિક્રમણ સૂત્ર વૃત્તિમાં પોસહ વ્રત તરીકે લખ્યો છે, આ પોસહમાં આલોક નિમિત્તેજ તપ અને ધ્યાન કહ્યા છે, વિચારજો, ‘પોતાનું છોકરું બીજાનું ઝોટીંગ’

એ ન્યાયનું અનુસરણ ન કરવું. તથા ક્ષાયિક સમ્યક્ત્વધારી કૃષ્ણ-
વાસુદેવે દ્વારિકાનો ઉપદ્રવ ટાળવા માટે આંખિલનું તપ અને જિનપૂજા
આદિ કરાવાનું ઉત્તરાધ્યયનની ટીકામાં કહ્યું છે, આએ આલોકાર્થે છે,
વલી ભદ્રાહુસ્વામીએ સંઘનો ઉપદ્રવ ટાળવા ખાતર પાશ્વનાથ પ્રભુનો
સ્તોત્ર ‘ઉવસગ્ગહરં’ બનાવી સંઘને ગણવા આપ્યાનું કથન
(શાસ્ત્રોમાં) છે. અને માનદેવાચાર્યે સંઘનો ઉપદ્રવ નિવારવાને શાંતિ
મંત્રથી ગર્ભિત શાંતિસ્તવ બનાવી સંઘને ગણવા આપ્યો છે, આએ
આલોક નિમિત્તેજ છે, તથા શ્રીહરિભદ્રસૂરિકૃત લલિતવિસ્તરાવૃત્તિમાં
અને શ્રીઅભયદેવ સૂરિજીએ પંચાશકની ટીકામાં “ઈદ્રૂઠફલસિદ્ધિ”
એ પદની વ્યાખ્યાના અધિકારે “ ઇદ્રૂલસિદ્ધિ એટલે આ લોકસંબંધી
ઇચ્છિત કાર્યની પ્રાપ્તિ થાય છે. જેના લીધે ચિત્તની સ્વસ્થતા હોય છે.
અને તેથી ધર્મવૃદ્ધિ થાય છે ” આ રીતે પંચાશકની ટીકામાં કથન છે,
તથા “ઈદ્રૂઠફલસિદ્ધિ” જેના હોવાથી આલોકમાં આજીવિકાના
દુઃખ સંતાપ અધિક ન હોય તે ધનાદિકની પ્રાપ્તિ થાને ” એમ તપા-
ગચ્છીય આચાર્ય શ્રીસોમસુંદરસૂરિ શિષ્ય મહોપાધ્યાય હેમહંસ ગણિકૃત
પ્રણવશ્યકના બાળાવબોધમાં લખેલ છે, (એક મણકા ઉપર) એક
નવકાર, ને એક ઉવસગ્ગહરં. એમ જે ગણુવું તે ખીચડી કહેવાય છે.
તથા સંસારિક ઇચ્છાનિમિત્તે માનતા કરતાં મિથ્યાત્વ ન થાય, (જે એમ
હોય તો) દુઃખના ક્ષય નિમિત્તે કાઉસ્સગ્ગ કરતાં તમને મિથ્યાત્વ કેમ
નથી થતું ? (કેવળ) કેમકે ક્ષય નિમિત્તે કાઉસ્સગ્ગ શા માટે નથી કરતા ?
હૃદયમાં ખૂબ વિચારજો, અમો પંજ એમજ કહીયે છીએ, કેવળ
સંસારનાજ કારણે ગણુણ પોસહમાં ન કરવા, વિજય રાગએ પોતાનો

ઉપદ્રવ ટાળવા માટે સાત દિવસનો અભિગ્રહ કરીને અવ્યાપાર (પોસહમાં) આહારનો ત્યાગ કર્યો છે. તેને પોસહ વ્રત તપાઓ કહે છે. અમો તેને અભિગ્રહ કહીયે (પણ) પોસહ વ્રત ન કહીયે. ત્યારે તમો પોતાનો ધર રાખીને કેમ નથી રમતા ? એટલે ધરની સોજ + કરજો, તમો શાહ

+ તપા ખરતર ભેદ પૃઠ્ઠ માં લખ્યું છે કે “આમ કરી ગુરુ પોતાનો ઘટાટોપ. આડંબર વધારે છે, પરંતુ જિન શાસનમાં આવા આંધળાં લોકસમાધી ગણુણાં ભણુવાં તે કયાંય કહ્યાં નથી, જે કદાચ કોઈ કરે તો ‘દુઃખ ક્ષય કર્મ ક્ષય યોધિ લાભ નિમિત્તે’ કરે, પરંતુ નિયાળાં આશંસા કરે નહિં અને આવાં ગણુણાં આલોક સમાધિમાટે પોસહ સામાયકમાં કરવાં પણ નહિ.” તો પછી સામાયિક પોસહમાં શ્રાવકો તેમ યાવજીવની સર્વવિરતિ સામાયિકમાં રહેલ સાધુ સાધ્વીઓ પણ નિત્ય પ્રતિક્રમણમાં જે ન્હાની શાંતિ બોલે છે, તેમાં “દુષ્ટ ગ્રહભૂત-પિશાચ-શાકિનીનાં પ્રમથનાય ॥૫॥” એવા પાઠોથી, તથા પાખી આદિમાં મોટી શાંતિ બોલે છે, તેમાં “ૐ પ્રહાશચન્દ્રસૂર્યાંઙ્ગારક-બુધવૃહસ્પતિશુક્રશનૈશ્વરરાહુકેતુસહિતાઃ સલોકપાલાઃ સોમયમવરુણ-કુબેરવાસવાદિત્યસ્કંદવિનાયકોપેતા યેચાન્યેઽપિ ગ્રામનગરક્ષેત્રદેવ-તાદયસ્તે સર્વે પ્રીયંતાં પ્રીયંતાં, અક્ષીણકોશકોષ્ટાગારા નરપતયશ્ચ ભવંતુ સ્વાહા । ૐ પુત્રમિત્રભ્રાતૃકલત્રસુહૃત્સ્વજનસંબંધિબંધુવર્ગસહિતા નિત્યં ચામોદપ્રમોદકારિણો ભવંતુ, અસ્મિંશ્ચ ભૂમંડલાયતનનિવાસિ-સાધુસાધ્વીશ્રાવકશ્રાવિકાણાં રોગોપસર્ગવ્યાધિદુઃસ્વદુર્ભિન્નદૌર્મન-સ્યોપશમનાય શાંતિર્ભવતુ ।” x x x શત્રવઃ પરાઙ્મુસ્વા ભવંતુ સ્વાહા ।” ઇત્યાદિ પાઠોથી કષ્ટ પરલોક-મોક્ષની આશંસાઓ કરાય છે ?

સૂઝ વહોરાના બેટા છે એટલે આ સિખામણ દઈએ છીએ, પરંતુ આ કથનમાં પક્ષવાળાઓનો સાહસ છે કહેવું જુદું ને કરવું જુદું છે, જોજો.

અરે એથીય વધુ શાંતિ સ્નાત્ર લણાવતાં સાધુઓ પણ “ૐ ભવણ-
વશવાણવંતર-જોડસવાસી વિમાણવાસી ય । જે કેવિ દુટ્ટદેવા,
તે સવ્વે ડવસમંતુ મમં સ્વાહા ॥૧૨॥” આ ગાથા જોરશોરથી બોલીને
કંઈ પરલોક-મોક્ષશાંતિની પ્રાર્થના કરે છે ? નવરમરણો ગણતાં
‘સંતિકર’ની “इअ तित्थरक्खणरया, अन्नेवि सुरासुरी य चउ-
हावि । वंतरजोडणिपमुहा, कुणंतु रक्खं मया अम्हं ॥११॥” તેમ
તિજ્યપહુતની “० । गहभूअरक्खमाइणी-घोरुवसगं पणासेउ ॥३॥”
“० । बाहिजलजलणहरिकरि-चोगरिमहाभयं हरउ ॥५॥” “० ।
रक्खंतु मे सरीरं, देवा सुरपणमिया सिद्धा ॥५॥” આ ગાથાઓમાં
તથા કલ્યાણકર્મદિના “त्रायस्व देव ! करुणाहृद ! मां पुनीहि,
सीदंतमद्य भयदव्यमनांबुराशेः ॥४१॥” આ શ્લોકાર્થમાં આલોકની
આશંસા શિવાય બીજો શું છે ?

કહો જંખ્યાચાર્યજી મહારાજ ! આ ઉપરમાં કહ્યા મુજબ ‘દુષ્ટ
ગ્રહ ભૂત પિશાચ અને શાકિનીયોનો મથન કરનાર’ એવો વિશેષણ
પ્રભુને લગાડવાનું શું પ્રયોજન ? નવગ્રહ તથા લોકપાલો સહિત ગામ
નગર અને ક્ષેત્ર દેવતાઓને સંતોષિત થવાની પ્રાર્થના, રાજ્યોને
ખળના અને ધાન્યના કાઠારોથી અખૂટ થવાની અભ્યર્થના અને તેમનેજ
પુત્રાદિ પરિવારસહિત હમેશાં આમોદ પ્રમોદ કરનારા થવાની યાચના,
અને ભૂમંડળપર રહેતા સાધ્વાદિ ચતુર્વિધ સંઘના માટે રોગાદિકની
શાંતિ થવાની તેમ શત્રુઓને શત્રુભાવથી રહિત થવાની પ્રાર્થના કરવી.

(તપા ખરતર ભેદ ગ્રંથ ૧ ખોલ ૧૧૭, ગ્રંથ ૨ ખોલ ૧૨૭ મો)

૧૧૫ પ્રશ્ન-તથા સ્વરતર રોટી વાસી અણ ચોપડી લ્યઈ, તે શું ?

ભાષા:-ખરતર વાસી રોટલી વગર ચોપડેલી કિયે છે. તે શું ?

આ બધા લોકસમાધિના ગણણા આંધળા છે કે સૂઝતા ? આપના લખવા મુજબ તેમ આપની માન્યતા મુજબ આ બધા પ્રત્યીન આચાર્યોના કથન શું શાસ્ત્રવિરૂદ્ધ છે કે ? જો એમજ હોય તો પછી આજના તમો તપાઓ, જે કહેવા માત્રથી આ લોકને માટે કાંઈય નહીંજ કરવાનો ઈગ્ગરો લઈ બેઠા છે. શા માટે ઉપરોક્ત સ્તોત્રાદિ ગણો છો ? પુત્ર મિત્ર કલત્રાદિનો સર્વથા ત્યાગ કરીને સર્વવિરતિ સ્વીકાર્યા છતાં દરરોજ તેમની શાંતિ પ્રાર્થવા દ્વારા શા માટે વ્યામોહ વધારો છો ? પાક્ષિકાદિ પર્વદિવસે નરપતિઓને અક્ષીણ કોશ કોશગારપણાની પ્રાર્થના કરવાથી શું આત્મકલ્યાણ થવાનું ? સવારે કલ્યાણમંદિર અને સાંજે ભક્તામર ન ગણવાની માન્યતા તપાઓની શા માટે છે ? શું તે તે સમયે તે તે સ્તોત્રો ગણવાથી કાંઈ અકલ્યાણ થાય છે કે ?

આ ઉપરના અવતરણોમાં બતાવ્યા મુજબ તમામ આલોકની સુખશાંતિની પ્રાર્થનાગર્ભિત ગણણા કરતા તપાઓની જે પ્રવ્રજ્યા છે તે તપા ખરતર ભેદ પૃ. ૯૮ માં ઠાણાંગ સૂત્રનો પાઠ ટાંકીને બતાવેલ ૪ પ્રકારની પ્રવ્રજ્યાઓ પૈકી પહેલા નંબરની કેવળ ઇહલોક પ્રતિબદ્ધ પ્રવ્રજ્યાજ છે એમ બધા વિચક્ષણોથી સ્પષ્ટ જોવાય છે. એટલે ભાગ્ય-શાળીઓ ! પગમાં બળતીને બુઝાવ્યા વગર હુંગરાની બુઝાવા દોડવા જેવું ન કરતાં પહેલાં પોતાની સામાયારી-પ્રવ્રત્તિઓને સુધારો. પછી બીજાઓને કહેવા તથ્યાર થાઓ. ઇતિશમ્.

તત્રાર્થે—સિદ્ધાંતમાંહિ યતિ વિરસહારી કહ્યા છઈ, વાસી આહાર લેતા કહ્યા , પંતાહારી કહ્યા, પંતાહાર વાલ ચિણા રાત્રિના વસ્યા, એતલઈ જઈ વિણઠા ન હવઈ તડ રાતિના વસ્યા વાલ ચિણા પુણિ લિયાજિ કરઈ, એ સિદ્ધાંતનો ન્યાય છઈ, વાસી ટુંબરથિ સિકૂરીયા ચાવલાદિ તપાઈ લ્યઈ છઈ, કુહ્યા અણકુહ્યા પૂછતા નથી જોતા નથી, એ આચાર નહીં, તે મળી વાસીનડ વિશેષ નહીં, જઈ આહાર વિણઠા હવઈ તડ ન લીજઈ, જઈ વિણઠા ન હવઈ તડ લીયાજિ કીજઈ, તથા વાસી રોટીમાંહિ ત્રસજીવની સંસક્તિ જાણીયઈ તડ ન લીજઈ અન્યથા લેતાં દોષ કો નથી, તે વાસી બાટી સચિત્ત ન કહીયઈ જેહનડ સંઘટ્ટડ ટાલીયઈ, જં ઇયઈ વિંઠી ન લીજઈ, ગીતાર્થે પિંડનિર્યુક્તિમાંહિ ત્રસસંસક્ત માતૃ પ્રમુલ્લ આહાર લેવાની વિધિ (કહી છઈ), જેહ યતિની પ્રતીતિ આવઈ તેહનઈ એકાંતે લેઈ સિદ્ધાંતના પાઠ વચાવિજ્યો, સર્વ સમક્ષિ પડિસ્યઈ ‘વા સીયપિંડં પુરાણકુમ્માસં’ એ સિદ્ધાંત વાક્ય વિચારિજ્યો, ડડદ તે કઠડલમાં થાઈ, જઈ તેઈ વાસી વિન્ટા ન હવઈ તડ પહિલોંકા યતિતડ લેતા, એવં વિચારિજ્યો, મતાનુરાગી મત થાડ, સમક્ષિજ્યો, તપાના કીધા યોગવિધિ ગ્રન્થમાંહિ ચોપડી-વાસી રોટી તપ યોગમાંહિ યતિનઈ ડઘાડી લેણી કહી છઈ, અનઈ ૨૨ અમદ્યામાંહિ વિન્ટા આહાર અમદ્ય કહ્યા પુણિ વાસી આહાર અમદ્ય નથી કહ્યા, જોજ્યો ॥ ૧૧૫ ॥

ભાષા:-સિદ્ધાંતમાં યતિને વિરસાહારી પંતાહારી કહ્યા છે. વાસી આહાર લેતા કહ્યા છે, પંતાહાર તે કહેવાય કે જે વાલ કે ચણા

રાત્રિયે રહેલ હોય, એટલે જે ખરાબ થયા ન હોય તો રાત્રે રહેલ વાલ ચણા પણ સાધુઓ લિયા કરે. આ સિદ્ધાંતનો આદેશ છે, x

x ‘પંતાહારે’નો અર્થ શાસ્ત્રકારો ‘પર્યુષિત(રાત્રિવાસી)અન્ન’ એવો કરે છે, જુઓ—“અંતાહારેત્તિ, અન્તે ભવમન્ત્યં—જઘન્યધાન્યં વલ્લાદિઃ, પંતાહારેત્તિ—પ્રકર્ષેણાન્ત્યં વલ્લાદેવ, મુક્તાવશેષં પર્યુષિતં વા” (ઉવવાઈ સૂત્ર ટીકા પાના ૪૦), તથા “અંતેહિયત્તિ-અરસતયા સર્વધન્યાન્તવર્તિભિર્વલ્લચનકાદિભિઃ, પંતેહિયત્તિ-તૈરેવ મુક્તાવશેષત્વેન પર્યુષિતત્વેન વા પ્રકર્ષેણાન્તવર્તિત્વાત્પ્રાન્તૈઃ” (ભગવતીસૂત્ર ટીકા પાના ૪૮૬), તેમજ “અન્તેહિયત્તિ-અન્તૈર્વલ્લચનકાદિભિઃ, પ્રાન્તૈ-સ્તૈરેવ મુક્તાવશેષૈઃ પર્યુષિતૈર્વા” (શાતાસૂત્ર ટીકા પાના ૧૧૩)

આ પ્રમાણેના પાઠો અનેક શાસ્ત્રોમાં છે, એથી ફલિતાર્થ એ થયું કે—સાધુઓને રાત્રિવાસી આહાર બધોય અકલ્પનીય નથી. કિંતુ જેમાં જીવોત્પત્તિની સંભાવના હોય તેવો આહાર ન લેવો, પરંતુ આજના જીવો કેવા છે? ગૃહસ્થ ગમે તેવી વસ્તુની નિમંત્રણ કરે છે કે તરતજ સાધુ કદ્યાકદબ્યનો વિચાર કરનારતો કોઈ વિરલાજ હોય, ને વધારે ભાગ તેનો વિચાર કર્યા વગરજ લેવા તથ્યાર રહેનાર હોય છે, એટલે પ્રાયઃ આખાંયે મૂર્તિપૂજક જૈન સમાજમાં હમણાં વાસી રોટલી આદિ લેવાની પ્રવૃત્તિ યદ્યપિ બિલ્કુલે નથી, છતાં પૂર્વકાળના ગીતાર્થો કે જેઓ શાસ્ત્રજ્ઞ અને ભયભીર હતા તેઓ ગવેષણાશુદ્ધિથી તપાસ કરીને જીવસંસકિન્નઆદિના અભાવે લેતા હોય તેને આકાંતે દૂષિત માનવાને કયો પ્રમાણ છે? જે કોઈ પણ શાસ્ત્રમાં આચાર્ય હરિભદ્રસૂરિ જેવા પ્રમાણિક અને સર્વમાન્ય આચાર્યો એમ લખ્યું હોય કે ‘રોટલી વિગેરે કોઈ

વાસી હુંખરથી (ખાંડેલ ખાજરી આદિની ઘેંસ) સિફૂરીયા (દહી ઊસ આદિથી સંસ્કારિત) ચાવલ આદિ તપાઓ પણ લિએ છે, કોહ્યા

પણ પર્યુષિત (રાત્રિવાસી) આહાર સાધુએ સર્વથા નજ લેવો ' તો તે પ્રમાણ જાંખ્યાચાર્ય બતાવે.

શાસ્ત્રોમાં વાસી આહારનો નિષેધ ક્યાંય જોવાતો નથી, પ્રત્યુત ભગવાન મહાવીરદેવે ચંદનખાળા પાસેથી ઉડદના બાકળા વાસી લીધાનો ઉલ્લેખ શાસ્ત્રોમાં સ્પષ્ટ જોવાય છે, જુઓ—“દિટ્ઠા પવ્વજુસિયા કુમ્માસા, તે ચ સુપ્પકોણે પક્કિત્તચિયા સમપ્પિયા તીસે x x x ઉત્તમ-ગુણત્રહુમાણાતો જં પુણ હોઈ તં હોઉત્તિ ચિંતયંતીએ મણિયં-‘મયવં ! કપ્પઈ ? મગવયા પાણી પસારિઓ, દિન્ના તીએ, પારિયં મગવયા ।”

(આ. જિનેશ્વરસૂરિ રચિત કથાકોશ પાના ૭૦-૭૧)

આમાં ચંદનખાળાએ ભગવાન મહાવીરપ્રભુને ઉડદના વાસી બાકળા વહોરાવ્યાનો સ્પષ્ટ કથન છે, તેમ શાસ્ત્રોમાં ખારે માસ કોઈ પણ પ્રકારનો વાસી આહાર લેવાનો જો એકાંત નિષેધજ હોત તો તપાગચ્છના આચાર્ય રત્નશેખર સૂરિ સ્વકૃત શ્રાદ્ધવિધિ ટીકા પાના ૧૫૮ માં “પર્યુષિતદ્વિદલિપૂષિ કાપર્પટવટકાદિશુશ્કશાકતન્દુલીયકાદિપત્રશાક-દુપ્પરકલારિકીલ્વર્જૂસ્વણ્ડશુશ્ક્યાદીનાં ફુલિકુંથિલિકાદિસંસક્તિ-સમ્ભવાત્યાગઃ, ઔષધિકાર્યે તુ સમ્યક્શોધનાદિયતનયૈવ તેષાં ગ્રહણં ।” આ પાઠથી ચોમાસી અભિગ્રહ, નહીં કે ખારે માસને માટે, અને તે પણ ગમે તે પ્રકારની નહીં, પણ વિદ્વ (કઠોલ) ની પુડીઓ આદિના ત્યાગનો અભિગ્રહ કરવા શા માટે કહેતા ? ખારે માસ વાસી આહાર માત્રનો એકાંત નિષેધ કેમ ન કયું ? એનો ઉત્તર જાંખ્યાચાર્ય આપે.

અણુકોહ્યા (અગજ્યા-અણુઅગજ્યા) પૂછતા કે જોતા નથી, એ સાધુનો આચાર નથી, માટે વાસીની વિશેષતા નથી, જે આહાર અગજ્યો હોય તો ન લેવો. અને અગજ્યો ન હોય તો લિયાજ કરો, વાસી રોટલીમાં ત્રસજીવની સંસક્રિત જણાય તો ન લઈએ અન્યથા લેતાં કામ દોષ નથી, તે વાસી રોટલી સચિત્ત નથી જેનો સંઘટ્ટો ટાલીયે, જોઈએ અગડી ન હોય તો લઈયે, ગીતાર્થોએ પિંડનિર્ધુક્તિમાં ત્રસજીવથી સંસક્રિત સાતુ આદિ આહાર લેવાની વિધિ (બતાવી છે), જે યતિની પ્રતીતિ આવે તેની પાસે એકાંતમાં સિદ્ધાંતના પાઠ વંચાવી લેજો, બધી સમજ પડશે. “વા સીયપિંડં પુરાણકુલ્માસં” આ સિદ્ધાંત પાઠને વિચારી જોજો. + ઉડદ કોળમાં હોય છે તે જો વાસી અગજ્યા ન હોય તો પહેલાના યતિઓતો લેતા, આ રીતે વિચારજો. મતાનુરાગી મત થાઓ. સમજજો. તપાના કીધા યોગવિધિ ગ્રંથમાં ચોપડેલી વાસી રોટલી યોગની તપશ્યામાં યતિને લેવી સ્પષ્ટ કહેલી છે. x અને

+ ટીકાકાર શ્રીશીલાંકાચાર્ય મહારાજ લખે છે કે-“શીતપિંડં વા પર્યુષિતમક્તં તથા ‘ પુરાણકુલ્માસં વા ’ બહુદિવસસિદ્ધસ્થિતકુલ્માસં” (આચારાંગટીકા પાના ૩૧૩) આ પાઠમાં શીતપિંડનો અર્થ રાત્રિ-વાસી આહાર અને ‘પુરાણ કુલ્માસં’ નો અર્થ ઘણા દિવસના રંધાઈ રહેલ ઉડદ કર્યો છે, તેમજ ‘પરિજુસિયત્તિ પર્યુષિતં’ રાત્રિપરિવ્રજિતં, તેન મમ્પન્નઃ પર્યુષિતમમ્પન્નઃ ઇદ્ઙરિકાદિઃ ” (શાણ્દાંગ ટીકા પાના ૨૧૯) અર્થાત્ રાત્રિવાસી રહેલ જે ઇદ્ઙરિકાદિ તે પર્યુષિત આહાર કહેવાય.

x “વાસી મોદ્ઞમત્રિલ્લયમંડય-મોદ્ઞમત્રિલ્લયકુલ્લરિ ઘોલસિહરણિ તિલવટ્ટિકરંબાઈ છટ્ટજોગાઓ આરઓવિ કપ્પઈ.”

(આચારવિધિ સામા. પ્ર. પાના ૨૫)

આવીસ અલક્ષ્યોમાં બગડેલ આહારને અલક્ષ્ય કહ્યો છે. પણ વાસી આહારને અલક્ષ્ય નથી કહ્યો. † જોજો.

બીજું તપાના ખાસ માન્ય આચાર્ય વિજયદાન સૂરિજીના શિષ્ય વીર વિમળ કૃત સંજ્ઞાયની “રાંધ્યું બિદલ રહૈ પુહર ચ્યાર, ઓદન આઠ પોહર ચિતધાર । સોઝ પહુર દધિકાંજિ છામિ, વિણસ્યૈ પ્રહિં જીવની રામિ ॥૪॥” આ ગાથામાં ચાવળનો કાળ આઠ પહોર ચોક્કસ કહ્યું છે. તો પછી દરેક વસ્તુ રાત્રિવાસી નજ લેવાનું કયા શાસ્ત્રકાર કહે છે ? તે પ્રમાણ જાળવવાચાર્ય બતાવે.

† “તુચ્છફલં ૨૧ ચલિયરસં ૨૨, વજ્જઈ વજ્જાણિ બાવીસં ૨૪૬”

ટીકા—“તુચ્છં-અસારં ફલં-મધૂકબિલ્વાદેઃ, ઉપલક્ષણત્વાચ્ચ પુષ્પમરણિશિષ્ઠમધુકાદેઃ પત્રં પ્રાવૃષિ તણ્ડુલિકાદેઃ बहुजीवसम्भि-
શ્રત્વાत्, यद्वा तुच्छफलं-अर्धनिष्पन्नकोमलचवलकशिम्बादिकं, तद्भक्षणे हि तथाविधा तृप्तिरपि नोपजायते दोषाश्च बहवः सम्भवन्ति । तथा चलितरसं कुथितान्नं, उपलक्षणत्वात्पुष्पितौदनादि, दिनद्वयातीतं च दधि वर्जनीयं, जीवसंसक्त्या प्राणातिपातादिलक्षण-
दोषसम्भवात् ।” (પ્રવ૦ સા૦ ટીકા પાના ૫૮)

આમાં આવીસમો અલક્ષ્ય ‘ચલિતરસ’ કહ્યો છે. એટલે જેના વર્ણાદિ બગડી ગયા હોય તેવો આહાર, ભલે રાત્રિવાસી ન હોય, સવારનો સાંજે પણ નજ લેવો. પરંતુ ‘રાત્રિવાસી આહાર ન લેવો’ એમ નથી કહ્યું, કાંઈ પણ પ્રમાણિક શાસ્ત્રમાં આમ કહ્યું હોય તો જાળવવાચાર્ય બતાવે એજ બાબતને લગતો સેનપ્રશ્નનો નીચે લખેલ પ્રશ્ન વિચારવા જોવો છે—

तथौपपातिकसूत्रे ‘पंताहारे’ इत्यस्य वृत्तौ पर्युषितं वल्लक्षण-

(તપા ખરતર ભેદ ગ્રંથ ૧ બોલ ૧૧૮, ગ્રંથ ૨ બોલ ૧૨૮ મો)

૧૧૬ પ્રશ્ન—તથા સ્વરતર શ્રાવક વધારી રાબ તથા વધારીયા સાલણા વાસી લેવડ, તપા ન લેવડ, તે સ્યું ?

કાઘાહારયન્તીતિ વ્યાખ્યાતમસ્તિ, તત્ર ‘પર્યુષિત’ શબ્દેન કિમુચ્યત
ઈતિ પ્રશ્નોઽત્તરં—પ્રભાતરાદ્વલ્લચણકાદિદ્વિદલં મધ્યાન્હાદિષુ
શીતલં નીરસં વિનષ્ટં ચ ભવતિ તત્પર્યુષિતશબ્દેનોચ્યતે, કોઽર્થઃ ?
શીતલં વિનષ્ટં વલ્લચણકાદિ પયુષિતમિત્યર્થઃ । યદુક્તં બૃહત્કલ્પ-
ભાષ્યે ‘નિષ્કાવચણગમાઈ, અંતં પંતં ચ હોઈ વાવન્નં ।’ એતદ્વૃત્તૌ
‘વાવન્નં’ વિનષ્ટમિતિ વ્યાખ્યાતમસ્તિ । તસ્માદન્તાહારાદૌ સર્વત્ર
સ્વાભિનિવેશં મુક્ત્વા સમ્યગ્ વિભાવ્યાર્થયોજના કાર્યેતિ જ્ઞેયમ્ ૫૮
૩૦ ૩ । પાના ૫૨ ।

શાસ્ત્રોમાં આવેલ પંતાહારે શબ્દનો પર્યાય ટીકાકારોએ જે
પર્યુષિત મૂકેલ છે. તેના સ્થાને આ પ્રશ્નોત્તરમાં આચાર્ય શ્રીવિજય-
સેનસૂરિજી બૃહત્કલ્પભાષ્યનું ‘નિષ્કાવચણગમાઈ, અંતં પંતં ચ હોઈ
વાવન્નં ।’ આ ગાથાર્ધટાંકીને પર્યુષિતનો અર્થ વિનષ્ટ થયેલ આહાર
કહે છે. એટલું જ નહીં બલકે પર્યુષિત શબ્દનો અર્થ રાત્રિવાસી
કરનારાઓને અભિનિવેશ છોડવાનું ઉપદેશ છે. પરંતુ અભિનિવેશ કોનો
છે ? તેનો તે ગાથાર્ધનો ટીકાપાઠ લખ્યો હોત તો જણાઈ આવતો.
જુઓ આ રહ્યો તે પાઠ—

‘નિષ્પાવા’ વલ્લાશ્રણકાઃ—પ્રતીતાઃ, આદિશબ્દાત્કુલ્માષાદિકં,
આન્તમિત્યુચ્યતે । પ્રાન્તં પુનસ્તદેવ ‘વ્યાપન્નં’ વિનષ્ટં કુથિતમિત્યર્થઃ ।

(બૃહત્કલ્પ ૦ ભાગ ૨ પાના ૪૧૪)

ભાષા:—વધારેલી રાગ તથા વધારેલા સાલણા વાસી ખરતર લે છે, ને તપા નથી લેતા, તે શું ?

તત્રાર્થે—વાસી સમ્મોલા વઘાર્યા સાલણા. વાસી વઘારી રાગ લેતાં શસ્ત્રનહ ન્યાયહ દોષ નથી જાણ્યા, કાંજીના વઢા ઘારડા લેવા, ૨૪ પહર ઉપરાંતિ ન લેવા ॥ ૧૧૬ ॥

ભાષા—(છાસ આદિના) ઝોલ (૨સ) વાલા વધારેલા સાલણા (શાક) તથા વધારેલી રાગ વાસી લેતાં શાસ્ત્રના ન્યાયે દોષ હોય તેમ જાણ્યું નથી. કાંજીના વડા, ને ધારડા લેવાય છે, ચોવીસ પહોરના ઉપરાંત તે ન લેવાય.

(તપા ખરતર ભેદ ગ્રંથ ૧ ખોલ ૧૧૯, ગ્રંથ ૨ ખોલ ૧૨૯ મો)

૧૧૭ પ્રશ્ન—સ્વરતરાંરહ પ્રમાતિ ‘ઝઘાડા પોરિસી’ કહીયહ, માંમ્મિ બહુ-પડિપુણ્ણા પોરિસી’ કહીયહ, પહર રાતિ ગયાં ‘બહુપડિપુણ્ણા પોરિસી’ કહીયહ, તપાંનહ ત્રિહું ઠામે ‘બહુપડિપુણ્ણા પોરિસી’ કહીયહ એ સ્યું ?

ભાષા:—ખરતરોને સવારે પોરસી ભણાવતાં ‘ઝઘાડા પોરિસી’ કહે, ને સાંજે પડિલેહણની શરૂઆતમાં તથા રાત્રે સંધ્યા પોરિસી ભણાવતાં ‘બહુપડિપુણ્ણા પોરિસી’ કહે છે, અને તપાઓ ત્રણેય સ્થાને ‘બહુપડિપુણ્ણા પોરિસી’ કહે, તે શું ?

તત્રાર્થે—‘સાહુણો મળંતિ, ઝઘાડા પોરિસી’ इति आव-

આ પાઠથી સ્પષ્ટ જણાય છે કે પંતાહારેનો અર્થ પર્યાવૃત્ત માં લગાડી દેવું એ આચાર્યશ્રીનું પોતાનું અભિનિવેશ અને એક પ્રકારે છેતરપિંડીજ છે. એથી રાત્રિવાસી કોઇ પણ આહાર નજ લેવું એવું કથન કોઇ પણ સર્વામાન્ય શાસ્ત્રકારનું નથી. કિંતુ આહાર અગરૂયો ન હોય તે જોઇ તપાસીને લેવુંએ સિદ્ધાંત છે.

શ્યકવૃત્તૌ. શ્રીઆવશ્યકચૂર્ણિ(ભાગ ૨ ને પાના ૩૧૬)માંહિ પુણિ
 ઇમજિ કહ્યુઝ છઠ્ઠ. તથા ‘સાધુવયણં-ઉગ્ધાડા પોરિસી’ ઇતિ
 શ્રીદેવેન્દ્રસૂરિકૃત પચ્ચક્ષણભાષ્યે । તથા તપા મુનિચન્દ્રસૂરિકૃત
 આવશ્યકસત્તરીવૃત્તિ ‘ઉગ્ધાડાપોરિસી-જાવ રાઈ આવસ્સથ-
 ચુણ્ણીય । વવહારાભિષ્પાયા પુણ, જાવ પુરિમદ્દં-ઉદ્ધાટ્યતે-
 ડ્યોડસ્યામિત્યુદ્ધાટા-દ્વિતીયઃ પ્રહરઃ, તાં મર્યાદીકૃત્ય, ન
 પુનરભિધ્યાપ્ય ઇતિ’ એતલઈ પહિલઈ પહરિ ઉગ્ધાડા પોરિસી
 થાઈ, તથા ઓઘનિર્યુક્તિવૃત્તિમાંહે પહર રાત્રિ ગયાં ‘બહુપડિપુરણા
 પોરિસી’ કહી છેઈ, પાઠઃ-‘આચાર્યસ્ય સમીપે મુખવસ્ત્રિકાં
 પ્રતિલેખયિત્વા ભળતિ-બહુપડિપુરણા પોરિસી, સંદિશત
 સંસ્તારકે તિષ્ઠામિ’ ઇમ અક્ષર જોડે વિચારિવડ, સગલે ઠામે
 ‘વહુપડિપુરણા’ શબ્દ કિમ કહાઈ ? એતલઈ ‘બહુપડિપુરણા’
 રાતિ ભણાવીયઈ, પુણિ દિવસઈ એ શબ્દ ન કહીયઈ ॥૧૧૭॥

ભાષાઃ-આવશ્યક ટીકામાં કહ્યું છે કે “સાધુઓ ઉગ્ધાડા પોરિસી
 કહે” આવશ્યક ચૂર્ણિમાં (તેમ પંચયસ્તુક ટીકા પાના ૮૨ માં) પણ
 એમજ કહ્યું છે, તથા પચ્ચક્ષણભાષ્યમાં દેવેન્દ્રસૂરિજી કહે છે કે-
 “સાધુઓનો વચન ઉગ્ધાડાપોરિસી” (એવો સાંભળીને પોરસી આવી
 ગઈ સમજી લે), અને તપા મુનિચન્દ્રસૂરિ પણ આવશ્યકસત્તરીની
 “ઉગ્ધાડાપોરિસી” ઇત્યાદિ ગાથાની ટીકામાં “ઉદ્ધાટ્યતેડ્યોડસ્યાં”
 ઇત્યાદિ પાઠથી દિવસના પહેલા પહેરે બહુપડિપુરણા નહીં કિંતુ
 ઉગ્ધાડાપોરસી થાય એમ કહે છે, તથા ઓઘનિર્યુક્તિની ટીકામાં પહેર
 રાત્રિ ગયે સંથારા પોરસી ભણાવતાં “બહુપડિપુરણા પોરિસી” કહેવાનું

કહ્યું છે. + (તેમજ અન્ય ગ્રંથાંતરનો) આચાર્યસ્ય સમીપે ” ઇત્યાદિ ઉપરોક્ત પાઠ જોઈને વિચારવો, અર્થે સ્થાને ‘બહુપડિપુણ્ણા’ શબ્દ કેમ કહેવાય ? એટલે રાત્રે ‘બહુ પડિપુણ્ણા’ (કહીને સંચારા પોરસી) ભણાવીયે પણ દિવસે એ શબ્દ ન કહીયે. ✕

+ “પઢમપોરિમિં કાઠુણંં બહુપડિપુણ્ણાણ પોરિસીણ ગુરુ સગાસંં ગંતૂણ ભણંતિ-ઈચ્છામિ સ્વમાસમણો ! વંદિતંં જાવણિજ્જાણ નિસીહિયાણ મત્થણ વંદામિ સ્વમાસમણ ! બહુપડિપુણ્ણા પોરિસી”
(ઓધ નિ. પાના ૮૩)

✕ સવારની પોરસી ભણાવિને સૂત્રનો અર્થ ઉઘાડવામાં આવે છે. અર્થાત્ આચાર્ય મહારાજ શિષ્યોને અર્થની વાચના આપે છે, એથી એનું નામ ‘ઉઘાડા પોરિસી’ છે. આ વાત પ્રસ્તુત ગ્રંથકાર મહારાજે આપેલ આવશ્યક સત્તરીના ટીકા પાઠથી સ્પષ્ટ બાણવા મળે છે, તેમ ઓધનિયુક્તિ પાના ૭૪ ના “પાદોનપૌરુહ્યાં પાત્રકાણિ ઉદ્ગ્રાહ્ય” આ પાઠથી પાત્રાઓને પડિલેહવા માટે ઉઘાડવા(ખોલવા)માં આવે છે. એથી પણ એનું નામ ઉઘાડાપોરિસી કહેવાય છે. બીજું એનું કાળમાન પણ એક પહોર નહીં, પણ પોણો પહોર દિવસ ચલ્યે આવે છે. એટલેજ એનું નામ પાદોન(પોણી)પોરસી પણ શાસ્ત્રકારે કહે છે. જુઓ-ઓધનિયુક્તિનો પાઠ જે ઉપર આપેલ છે. તેમ “ઉદ્ગ્રાટ-પૌરુહ્યાં-પાદોને પ્રહરે ‘પાત્રનિર્યોગઃ’ પાત્રપરિકરઃ સપ્તવિધઃ પ્રતિજ્ઞેસ્વનીયઃ ।” (યતિદિનચર્યા. ભાવદેવસૂરિ. પાના ૨૭) તેમ ‘તત્રો પઞ્ચપોરિસીણ સ્વમાસમણેણ સંદિસાવિય સ્વમાસમણપુલ્લમેવ

(તપા ખરતર ભેદ ગ્રંથ ૧ બોલ ૧૨૦, ગ્રંથ ૨ બોલ ૧૩૧ મો)

૧૧૮ પ્રશ્ન-તથા સાંક્ષિપ્ત કાલિ સામાયિક લેતાં સ્વરતર શ્રાવક

પડિલેહણં કરેમિન્તિ ભણિય મુહણંતગં પડિલેહિત્તા સંભવિ મંડો-
વગરણં પડિલેહેઈ ;' (પંચાશકયૂર્ણિ પાના ૧૦૬)

ઉપર દર્શાવેલ શાસ્ત્રપ્રમાણોનો ફલિતાર્થ એ થયો કે સવારની પોરસી પોણા પહોર દિવસ ચઢ્યે જ્યારે ભણાવવી ત્યારે ‘બહુપડિપુણ્ણા’ પોરિસી’ કહેવું કાંઈ પણ રીતે યોગ્ય નથી, કારણ કે શાસ્ત્રકારોએ દરેક સ્થળે ‘બહુપડિપુણ્ણા’ શબ્દનો પ્રયોગ અમુક અંશે પૂર્ણતામાં નહીં, કિંતુ સર્વથા પૂર્ણતામાં કરેલ છે. જેમ કે કલ્પસૂત્રાદિમાં પાઠ છે કે-“ નવમહિના માસાણં બહુપડિ-પુણ્ણાણં અદ્વદ્વદ્ધમાણં રાઈંદિયાણં વિઙ્કંતાણં ” અર્થાત્ ‘નવમહિના સર્વથા પરિપૂર્ણ થયે, ને ઉપર સાગ્રસાત દિવસ વીત્યે છતે ભગવાનનો જન્મ થયો ” અહિં જે ‘બહુ’ શબ્દ ‘પ્રાય’ અર્થનો સૂચક હોત તો અદ્વદ્વદ્ધમાણં રાઈંદિયાણં વિઙ્કંતાણં ” કહેવાની જરૂર શું હતી ? ‘પ્રાય’ અર્થ ત્યારેજ થઈ શકે કે જ્યારે નવમહિના ઉપર કાંઈ પણ દિવસ ન હોય, કિંતુ ઉપરના દિવસો હોવા છતાં જે ‘બહુ’ શબ્દ લગાડવામાં આવે છે તે કેવળ પ્રાકૃત યા સૂત્ર રચનાની શૈલિએ વાક્ય શોભા નિમિત્તે છે, ને એનો અર્થ ‘બહુળતાએ પરિપૂર્ણ’ નહીં પણ ‘સર્વાંશે પરિપૂર્ણજ’ ધટી શકે, આ ઉપર દર્શાવેલ ‘બહુપડિપુણ્ણા’ શબ્દનો અર્થ માત્ર અનુમાન કે કલ્પનાનુંજ નથી, કિંતુ તપાગચ્છના ઉપાધ્યાય શાંતિચંદ્રજી સ્વકૃત ‘જંબુદીવપત્તતી’ની ટીકા પાના ૧૫૮ માં સ્પષ્ટ લખે છે કે-“ એકં પૂર્વલક્ષં ‘બહુપ્રતિપૂર્ણ’ દેશેનાપિ ન ન્યૂન મિતિ યાવત્ ” અર્થાત્ ભગવાન ઋષભદેવ પ્રભુએ કિંચિત્ માત્ર

સામાયિકની ક્રિયા આધી મૂકી વિચાલઈ મુહપત્તી પડિલેહી વાંદણા દેઈ પચ્ચવસ્ત્રાણ કરી પછઈ વલી થાકતી ક્રિયા કરઈ, તે સ્યું ?

ભાષા—સાંજે સામાયિક લેતાં ખરતર શ્રાવક સામાયિકની ક્રિયા અધૂરી છોડીને વચમાં મુહપત્તી પડિલેહી વાંદણા દિયે ને પચ્ચવસ્ત્રાણ કરે. ત્યાર પછી બાકી રહેલ સામાયિકની ક્રિયા કરે, તે શું ?

તત્રાર્થ—જેતલઈ મુહપત્તી પડિલેહી સામાયિક સંદિસાવી સામાયિક દંડક ઝૂચર્યા એતલઈ સામાયિકની ક્રિયા, પછી જે ઇરિયાવહી પડિકમીયઈ તે આગિલી ક્રિયા, સજ્ઞાયનઈ કરિવડ વાંદણાનડ (દેવડ) પચ્ચવસ્ત્રાણનડ કરિવડ-બડસિવાદિકનઈ કાજિ, તપાંનઈ પુણિ પહિલડ સામાયિક લેતાં ઇરિયાવહી પડિકમઈ તે સામાયિક ક્રિયામાંહિ નથી ઘાલતા, કરેમિ મંતે ! ઝૂચર્યા પછઈ સામાયિક ગિણઈ છઈ, જિમ પોસહ વ્રતિ પોસહ દંડક ઝૂચર્યડ એ પોસહની ક્રિયા થઈ, પછી સામાયિકની ક્રિયા, પોસહ લેતાં જે પહિલી ઇરિયાવહી પડિકમી તે પડિલેહણ ક્રિયા નિમિત્તિ, એવં સામાયિક દંડક ઝૂચર્યા સામાયિકની ક્રિયા પૂરી થઈ, પછી સાંઘિના

પણ ન્યુનતા (ઓછાસ) રહિત, એટલે કે સર્વથા પરિપૂર્ણ એક લાખ પૂર્વ વર્ષનો શ્રામણ્ય પર્યાય પાલ્યો. આ પરિસ્થિતિમાં પૂર્ણ પહોર રાત્રિ વીત્યે સંચારાપોરસી ભણાવતાં તેમ બરાબર પહોર દિવસ શેષ રહેતે પડિલેહણ કરતાં ‘બહુપડિપુણ્ણા પોરિસી’ કહેવું બ્યાજબી કહેવાય પણ જે ઉધાડપોરસી પોણા પહોર દિવસે ભણાવાય, તેમાંય ‘બહુપડિપુણ્ણા પોરસી’ કહેવું કેવી રીતે બ્યાજબી કહી શકાય ? એનો સમાધાન જગ્યાચાર્ય કરે.

પચ્ચક્ષ્ણાણ આવશ્યક સાચવિવા ભણી વાંદણા દેઈ પચ્ચક્ષ્ણાણ કરઈ, જિમ્યા ન હુવઈ તઝહી જઘન્ય વાંદણઈ વાંદી પચ્ચક્ષ્ણાણ કરઈ પછઈ, સજ્ઞાયની સ્વમાસમણ દેઈ ઝમાં ૮ નવકારની સજ્ઞાય કરઈ, પછઈ બડસણા સંદિસાવી વેલા જાણઈ તઝ સજ્ઞાય બડસી કરઈ, એતલઈ કરતાં સામાયિકની ક્રિયા વિચાલઈ સી વીજી ક્રિયા થઈ ? જે તુમ્હે ચર્ચઝ છઝ, વિમાસિજ્યો । શ્રીદેવેન્દ્રસૂરિ નામ તપઈ આચાર્યઈ ‘શ્રાવકદિનકૃત્ય’માંહિ કહ્યું જે “ વંદિત્તુ સૂરિમાઈ, સજ્ઞાયાવસ્સયં કુણઈ । ” એતલઈ સામાયિક ક્રિયા કીર્ધા પછી સાંક્ષિનઈ આવશ્યકિ સૂરિ પ્રમુખ ભણી વિસ્તર વાંદણઈ તથા જઘન્ય વાંદણઈ વાંદી સજ્ઞાય કરી આવશ્યક કરઈ, ઘરની સોમ્મી કરિજ્યો ॥ ૧૧૮ ॥

ભાષા:—મુહુપત્તી પડિલેહી એ આદેશ લખને સામાયિક દંડક ઉચરવા સુધી સામાયિકની ક્રિયા છે, પછી જે ધરિયાવહી પડિકમવી તે આગળની ક્રિયા છે, (તેમ) સજ્ઞાય કરવી. વાંદણા દેવા. પચ્ચખાણુ કરવું (આદિ ક્રિયાઓ) જેસવા આદિને માટે છે, તપાને પણ સામાયિક લેતાં પહેલાં જે ધરિયાવહી પડિકમે છે તે સામાયિકની ક્રિયામાં નથી ગણતા, કરેમિ લાંતે ઊચર્યાં પછી સામાયિક ગણાય છે, જેમ પોસહ વ્રતમાં પોસહ દંડક ઊચર્યાં પોસહની ક્રિયા થઈ, પછી સામાયિકની ક્રિયા (કહેવાય) અને પોસહ લેતાં પહેલાં જે ધરિયાવહી પડિકમી તે પડિલેહણુ (?) ક્રિયા નિમિત્તે છે, એ રીતે સામાયિક દંડક ઊચર્યાં સામાયિકની ક્રિયા પૂરી થઈ, પછી સાંજે પડિકમણુ આવશ્યક સાચવવાને વાંદણા દેન પચ્ચખાણુ કરે, જમ્યા ન હોય તો પણ (ખમાસમણુ દેવા૩૫)

જઘન્ય વંદનાએ વાંદીને પચ્ચખાણુ કરે, પછી સજ્જાયના આદેશો માંગી ઉભા થકા આઠ નવકારની સજ્જાય કરે, પછી બેસણાના આદેશો લખને ટાઇમ હોય તો બેસીને સજ્જાય કરે, આ રીતે કરતાં સામાયિકની ક્રિયા વચે ખીજી ક્રિયા શી થઈ? જે તમો ચર્ચો છો, વિચારજો, તપા ગચ્છાચાર્ય શ્રીદેવેંદ્રસૂરિ ‘આવકદિનકૃત્ય’માં કહે છે કે—“વંદિત્તુ સૂરિમાર્ગે, સજ્જાયાવસ્મયં કુણ્ણ ૧ ।” આ પ્રમાણથી સામાયિકની ક્રિયા પછી સાંજના આવશ્યકમાં આચાર્ય આદિને વિસ્તાર કે જઘન્ય વંદનાએ વાંદીને સજ્જાય કરે, ને તે પછી સજ્જાય તથા આવશ્યક (પ્રતિક્રમણ) કરે, ઘરની સોજ કરજો. +

+ તપા ખરતર ભેદ પૃ. ૧૦૨ માં લખ્યું છે કે ‘સજ્જાય સંદિસાવા ઠાવાનાં ખમાસમણુ તથા બેસણે સંદિસાવા ઠાવાનાં ખમાસમણુ પણ દે છે’ એના ઉત્તરમાં જણાવાનું કે ખરતરમાં તો શું? પરન્તુ ખીજે ક્યાંય પણ સજ્જાય ઠાવાનું ખમાસમણુ દેતાં જોયા કે સાંભલ્યા નથી છતાં જંખ્યાચાર્ય દેતાં દેવરાતા હોય તો એઓ જાણે. ફરી એજ પૃષ્ઠમાં લખ્યું છે કે “તપા તો સામાયિક પૂરી લખને તેની સઘળી ક્રિયા કરીને પછી વાંદણા દઘ પચ્ચખાણુ કરે છે. પરન્તુ સામાયિક અધુરી લખને વચમાં ક્રિયા કરતા નથી. જેઓ સામાયિકની એક ક્રિયા છોડીને વચે ખીજી ક્રિયા કરે છે તેમને વિરોધ આવે છે” એટલે જણાવાનું કે કોઇ પણ શાસ્ત્ર પ્રમાણુ આપ્યા વગર પોતાની ગચ્છ રૂઠીએ કરાતી જે સામાયિક વિધિ. એજ પૂરી છે એમ કેમ માની લેવાય? અને સજ્જાય આદિના આદેશો માગ્યા શિવાય પચ્ચખાણુ આદિ કરવાના નિષેધ માટે પણ કોઇ સર્વામાન્ય શાસ્ત્ર પ્રમાણુ આપ્યા વગર કેવળ જંખ્યાચાર્યના મોંઢે કહેવા માત્રથી કોણુ માની લેવાનું?

(તપા ખરતર ભેદ ગ્રંથ ૧ બોલ ૧૨૧, ગ્રંથ ૨ બોલ ૧૩૩ મે)

૧૧૬ પ્રશ્ન-તથા સ્વરતરાંરહ પોસહમાંહિ કરેમિ મંતે ! ઊચરતાં
'જાવ પોસહં પજ્જુવાસામિ' ઇમ પાઠ ન કહહ, તે સ્યું ?

ભાષા:-ખરતરને પોસહમાં ' કરેમિ ભંતે ' ઉચરતાં "જાવ પોસહં
પજ્જુવાસામિ" એમ નથી કહેતા, તે શું ?

તત્રાર્થે—પોસહમાંહિ પિણ સામાયિક દંડક ઊચરતાં 'જાવ
નિયમં પજ્જુવાસામિ' એહવોજિ મૂલગત સામાયિક પાઠ કહીવડં,
અન્યથા દેહરહ સામાયિક ઊચરતાં 'જાવ ચેઇયં પજ્જુવાસામિ'
યતિયાં પાસિ સામાયિક લેતાં 'જાવ સાહ પજ્જુવાસામિ' પાઠ
થાઇ, ઘરે સામાયિક કરતાં 'જાવ નિયમં પજ્જુવાસામિ' એ પાઠ
નિયત હૈ, પિણ 'જાવ પોસહં પજ્જુવાસામિ' એ પાઠ શાસ્ત્રે
નથી દીસતડ, તિહાં 'નિયમ' શબ્દં સામાયિકનડ કાલ જઘન્યહ
મુહૂર્ત-૨ કાચી ઘડી, ઉત્કૃષ્ટડ જાં સીમ સોપયોગી થકડ ન
પારહ તાં સીમ 'નિયમ' શબ્દં કહાહ, "તત્સામાયિકં છિન્નકાલં
દ્વિગ્રટિકાદિમાનં" ઇતિ વિશેષાવશ્યકવૃત્તૌ । તથા 'સામાયિકં
તદિત્વરં મુહૂર્ત્તાદિમાનં 'ગૃહિણઃ' શ્રાવકસ્યે'તિ દશમપચ્ચાશક
વૃત્તૌ, એવં પરિહિવડ, જહ 'નિયમ' શબ્દં કાચી ૨ ઘડી-
નડહીજ માન આવહ તડ પોસહ પસહ જે સામાયિકધર શ્રાવક
પઢિકમિવા મણિ આવ્યા હૈ તે પજૂમણા પર્વના પઢિકમણા
કરતાં કિતલીવાર ફેરી ૨ સામાયિક વ્રત ઊચરિસ્યહ ? અનહ
વિધિસ્યું સંવચ્છરીનહ પઢિકમણડ કરતાંનહ સામાયિક તીનનડ
કાલ માજનહ મહ લાગહ હૈ તડ વિચાલહ વિચાલહ ૩ ઘર

સામાયિક વ્રત ડચરિવાની ક્રિયા તે કાંડ ન કરે ? જે ભણી તેહનડં સામાયિકનડ કાલ ૨ ઘડીજિ છડ, જિમ વરિસાલડ ફાસૂ ફાણીનડ કાલ ૩ પહર છડ, તે ભણી ૩ પહર પછડ નવીદા વલી ફાસૂ પાણી કરડ છડ, તે ભણી સામાયિક ડચરતાં ‘જાવ નિયમં’ કહતાં જિતલી વેલા સામાયિકમાંહિ રહડ પારડ નહીં તાં સીમ સામાયિક છડજિ, અન્યથા ‘જાવ સંવચ્છરીં પઢિ-વકમામિ’ કહિવડ થાસ્યડ, તે ભણી પોસહમાંહિ જે સામાયિક દંડક ડચરીયડ તિહાં ‘જાવ નિયમં’ કહીયડ, જડ વલી ‘જાવ પોસહં પજ્જુવાસામિ’ ઇમ કહતાં પોસહ પાર્યાં સામાયિક પારાણડ, તડ વલી સામાયિક જુદા પારડ તે સ્યું ? વલી પોસહ ડચર્યા છડ ‘જાવ દિવસં’ તડ દિવસ આથમ્યડ પોસહ પૂરા થયા, અનડ સામાયિક લીજતાં જે કહીયડ છડ ‘જાવ પોસહં પજ્જુવાસામિ’ તડ પોસહ પૂરડ થયડ સામાયિક પૂરડ થયડ તેડં વલી જુદા કિમ સામાયિક પારડ ? ઇતલડ ડચરતાં ‘જાવ પોસહં પજ્જુ-વાસામિ’ ઇ પાઠ કિમ કહાડ ? વિમાસી જોજ્યો । ‘જાવ નિયમં’ કહતાં કિસડં વિરોધ ન થાડ, અમ્હારડ તડ જાં સીમ સામાયિક ન પારડ તાં સીમ સામાયિક તેહનડ છડજિ, પછડ છતડ સામાયિક પારડ છડ ।

ભાષા:—પોસહમાં પણ સામાયિક દંડક ડચરતાં સામાયિકનો મૂળ પાઠ “ જાવ નિયમં પજ્જુવાસામિ ” ડેવ કહેવો. + અન્યથા દેરાસરે

+ ડાપેલ પંચાશક સૂચિના પૃ ૧૦૪ માં પૌષધ વિધિના અધિકારે સામાયિક દંડકમાં ‘ જાવ નિયમં ’ ડેવોળ પાઠ છે. અને ખીજા આચાર્યોના મતાંતરે ‘ જાવ પોસહં ’ કહેવા કહેલ છે, નહિં કે

સામાયિક લેતાં “ જાવ ચેઇયં પજ્જુવામામિ ” સાધુઓ પાસે લેતાં “ જાવ માહૂ પજ્જુવાસામિ ” અને ઘેર લેતાં “ જાવ નિયમં પજ્જુવસામિ ” એવા પાઠો શાસ્ત્રોમાં નિયત છે પરંતુ “ જાવ પોસહં પજ્જુવાસામિ ” એવો પાઠ શાસ્ત્રોમાં નથી દેખાતો, ત્યાં ‘ નિયમ ’ શબ્દથી સામાયિકનો કાળ જઘન્યે એક મુહુર્ત (કાચી બે ઘડી) અને ઉત્કૃષ્ટે જ્યાં સુધી ઉપયોગસહિત રહ્યો થકો પારે નહીં ત્યાં સુધી કહેવાય, વિશેષાવશ્યક વૃત્તિમાં કહ્યું છે કે— ‘ તે સામાયિકનો છિન્ન (ધૂટો) કાળ બે ઘડી આદિ પ્રમાણવાલો છે ’ તથા દશમા પંચાશકની ટીકામાં લખ્યું છે કે— ‘ તે ઇત્વર (થોડા ટાઇમનો) સામાયિક મુહુર્તાદિ પ્રમાણનો આવકને છે ” આ રીતે શાસ્ત્રોનો કથન છે. (એટલે કે ઇત્વર સામાયિકનો કાળમાન એકજ મુહુર્તનો નહીં કિંતુ મુહુર્તાદિ વધારે ટાઇમ પણ ‘ નિયમ ’ શબ્દથી લેવાય છે). યદિ ‘ નિયમ ’ શબ્દથી કાચી બે ઘડીનોજ કાળમાન લેવાય તો પોસહ શિવાય જે સામાયિક ધર આવક પડિકમણું કરવા આવેલ હોય તે સંવચ્છરી પડિકમણું કરતાં કેટલી વખત ફરી ફરીને સામાયિક ઉચરશે ? અને વિધિથી સંવચ્છરી પડિકમણું કરતાંને ત્રીણ સામાયિકનો કાળ સહેજે સદા લાગી જાય છે, તો પછી વચ્ચે વચ્ચે ત્રણ વાર સામાયિક વ્રત ઉચરવાની ક્રિયા કેમ નથી કરતા ? કારણ કે તેની સામાયિકનું કાળ (નિયમ શબ્દથી) બે ઘડીજ છે, જેમ વર્ષાઋતુમાં ફાસુપાણીનું કાળ ત્રણ પહોરનું છે, તેથી ત્રણ પહોર આદ નવેસર ફાસુ પાણી કરીએ છીએ. એટલા માટે

સિદ્ધાંતના મત પ્રમાણે, જુઓ તેજ ચૂલ્હિનો પાઠ— “ અન્ને પુણ્ણં ઇહ ઠાણે ‘ જાવ પોસહં પજ્જુવાસામિ ’ મળાવેતિ ” પૃ. ૧૧૫.

સામાયિક ઉચરતાં ‘જવ નિયમ’ કહેવાથી જેટલી વેલા સુધી સામાયિકમાં રહે અને પારે નહીં, તેટલી વેલા સુધી સામાયિક છેજ, જે એમ ન માનીએ તો (સંવચ્છરી પડિકમણા અવસરે) ‘જવ સંવચ્છરી પડિક્કમામિ’ કહેવું પડશે, એટલે પોસહમાં જે સામાયિક દંડક ઉચરીએ તેમાં ‘જવ નિયમ’ કહીએ, વલી જે ‘જવ પોસહ’ પજ્જુવાસામિ’ કહીએ તો પોસહ પારવાની :સાથે સામાયિક પારાઈ ગયું તો વલી સામાયિક જુદો પારે તે શું ? વલી પોસહ ઉચર્યો છે ‘જવ દિવસ’ તો દિવસ અસ્ત થયે પોસહ પૂરો થયો, અને સામાયિક લેતાં કહે છે ‘જવ પોસહ’ પજ્જુવાસામિ’ તો પોસહ પૂરો થયાં સામાયિક (પણ) પૂરો થાય, તો પછી સામાયિક જુદો કેમ પારે છે ? એટલે સામાયિક ઉચરતાં ‘જવ પોસહ’ પજ્જુવાસામિ’ એ પાઠ કેમ કહેવાય ? વિચારી જેજે. ‘જવ નિયમ’ કહેતાં કાઠ પણ જાતનો વિરોધ નથી આવતો, અમારે તો જ્યાં સુધી સામાયિક ન પારે ત્યાં સુધી તેને સામાયિક છેજ અને પછી છતો સામાયિક પારે છે.

(તપા ખરતર ભેદ ગ્રંથ ૧ બોલ ૧૨૨ મો)

૧૨૦ પ્રશ્ન—તથા ત્વરતર પર્વેજિ પોસહ શ્રાવકાંનંદ કરિવડ માનંદ તડ દિહાહિ દિહાહિ ‘સામાયિક પોસહ સંઠિયસ્સ’ ફંચદ્દ ગાથાચંદ્દ સામાયિક પારતાં પોસહ અણહુંતડ કાંદ પારદ ?

ભાષા—ખરતર શ્રાવકને પર્વેજ પોસહ કરવાનું માને છે તો પછી હમેશાં સામાયિક પારતાં “સામાયિક પોસહ સંઠિયસ્સ” આ ગાથાએ પોસો અણહુંતો શા માટે પારે છે. +

+ ખુદ આગમપ્રજ્ઞનાં પૂજ્ય પૂર્વજ આચાર્ય રત્તશેખરસૂરિજી સામાયિક પારવાની વિધિમાં ‘સામાયિક પોસહ સંઠિયસ્સ’ ધ્યાદિ

તત્રાર્થે—‘સામાઈયપોસહ સંઠિયસ્સ’ એ ગાથા સામાયિક પોસહ પારિવાની નથી, કિન્તુ સુકૃત-પુણ્ય અનુમોદનની છઠ્ઠી, નડકાર કહ્યા તે પચ્ચક્કલાણ પારિવાના સૂત્ર છઠ્ઠી x બીજાઈ

ગાથાઓ બોલવા કહે છે. તો એમણે આ ગાથાથી અણહુંતો પોસહ પારિવાનું શા માટે કહ્યું ? એનો ખુલાસો આગમાપ્રસંગ કરે. ખીણું એજ સ્તનશેખરસૂરિજી “સામાયવયજુત્તો” આ ગાથા બોલવાનું નથી કહેતા છતાં તપાઓ પોતાના એ પૂ. પૂર્વજ્ઞેની આજ્ઞાનું ઉલ્લંઘન કરવા સાથે તેમણે બોલવા ખતાવેલ ‘છઝમત્થો મૂઢમણો’ અને ‘સામાઈય પોસહ સંઠિયસ્સ’ આ બે ગાથાઓ ઉગાવી દધને ‘સામાઈયવયજુત્તો’ એ ગાથા બોલે છે તે ખરેખર આજ્ઞના તપાઓના ધરતોજ આચાર છે.

x પંચાશકચૂર્ણિ પૃષ્ઠ ૧૦૯ માં પાઠ છે કે—“જયા પુણ પોસહં પારિઝકામો તયા ત્વમાસમણદુગેણ મુહપોત્તિ પહિલેહિઝ્ઞણ ત્વમાસમણદુગેણ સામાઈયં વ પોસહં પારેઈ, પુણ મુહપોત્તિપેહણ-પુવ્વં સામાઈયં પારિત્તા ‘છઝમત્થો મૂઢમણો’ ઇચ્છાઈ ગાહાઓ મણઈ.” આ પાઠમાં પોસહ પારતાં “સાગરયંદો” તેમ સામાયિક પારતાં ‘સામા-ઈયવયજુત્તો’ કહેવાનું કહ્યું નથી. પણ પોસહ પાર્યાં પછી કોઈ પણ ગાથા કહ્યા વગરજ સામાયિક પારીને “સામાઈયવયજુત્તો” નહીં, કિન્તુ “છઝમત્થો મૂઢમણો” ઇત્યાદિ ગાથાઓ બોલવાનું કહ્યું છે, તપા સ્તનશેખરસૂરિ પણ ઉપર આથી પહેલાની ટિપ્પણમાં જણાવ્યા મુજબ શ્રાદ્ધવિધિમાં એજ ગાથાઓ બોલવા કહે છે. એથી આજ્ઞના તપાઓ જે આ ગાથાઓ નથી કહેતા અને ‘સામાઈયવયજુત્તો’ આદિ ગાથાઓ કહે છે, એ એમના ધરતો આચાર છે.

पञ्चक्खाण तथा पोसह नवकार गुण्यइ पूरा थाइ, विचारी जोज्यो, जिम विजयराजा 'नमो अरिहं नाणं ति निर्गओ' ए अक्षर जोइवा, जिम नवकार गुणी सामायिक पोसह लीधा हता तिम पारतां नवकार गुण्यां सामायिक पोसह पार्या कहीयइ, एहलइ जइ 'सामाइय पोसह संठियस्स' ए गाथा पारिवानी नथी तउ स्युं पूछउ ? वली जइयइ सागरचन्द्र दशार्णभद्र सुदर्शन थूलभद्रादि न हता तइयइ पोसह सामायिक किम पारता ? ते भणी नवकारइजि पारिवानउ पाठ छइ, अनुमोदनानउ पाठ जे महानुभाव थया तेहना नाम लेई अनुमोद्याजि करउ, वली 'सव्वेसु कालपव्वेसु, पसत्थो जिणमए तवोजोगो । अट्टमिपन्नरसीसु य, नियमेण हवज्जि पोसहिओ ॥१॥' ए गाथा आवश्यकचूर्णि (भाग २०० पाता ३०४) मांहि छइ परं 'अट्टमी चउइसीसु य' ए पाठ नथी, जेह भणी श्रीउत्तराध्ययननी शांत्याचार्यकृत वृत्तिमांहि नवमइ अध्ययनि 'सर्वेष्वपि तपोयोगाः, प्रशस्ताः कालपर्वसु । अष्टम्यां पञ्च-दश्यां च, नियतं पौषधं वसेत् ॥१॥' इति श्रीआससेनकृतः श्लोकः पौषधाधिकारे लिखितोऽस्ति, परं तपा रत्नशेखरसूरिकृत वंदित्तुनी वृत्ति (पाता १३६) मांहि 'अट्टमी चउइसीसु य, नियमेण हविज्ज पोसहिओ ॥१॥' ए पाठ निर्मूल लिख्यो छइ, बीजाई गीतार्थ पूछि जोज्यो, ग्रन्थ पूर्वाचार्यकृत जोज्यो, तत्त्वार्थ भाष्यनइ विषइ पौषधोपवास शब्दइ 'पौषध' कहतां पर्व, तेहनउ उपवास ते पौषधोपवास, ते पौषधोपवास-पर्वदिवसनउ उपवास ते अष्टम्यादि पर्वनइ विषइ नियतपणइ करिवुंजि, बीजीए तिथिए

પ્રતિપદાદિકે કીજઈ ન કીજઈઈ, પર્વતિથિનંતર ઉપવાસ પર્વતિથિએ કરિવડ, વીજીએ તિથિએ ઉપવાસ કરતાં પાલ્યડ નથી, એ અર્થ, તત્ત્વાર્થવૃત્તિકારે પૌષધોપવાસના અર્થે પર્વ દિને પોસહ નામ વ્રતનંતર કરિવડ કહ્યડ, એતલઈ વૃત્તિકારઈ અનંતર ભાષ્યકારઈ ‘પૌષધોપવાસ’ શબ્દના અર્થ જૂજૂઆ લિખ્યા, ઠાણાંગ સૂત્રમાંહિ ૪ આસાસાનંતર ઠામિ સૂત્રમાંહિ તથા વૃત્તિમાંહિ ઇમંજિ પૌષધોપવાસના જૂજૂઆ અર્થ કહી કહી આસાસ કહ્યા, એતલઈ વ્રતરૂપ પોસહ પર્વતિથિએ કરિવડ, વીજડ ઉપવાસ રૂપ પોસહ પર્વતિથિએ કરિવડ વીજીએ તિથિએ ઉપવાસ કરતાં કોઈ પાલતડ નથી. એ તત્ત્વાર્થભાષ્યકારનંતર અભિપ્રાય છઈ, તે ગ્રન્થનંતર પાઠ લિખ્યડ નથી ગ્રન્થ ગૌરવ ભય થકી, યતિનંતર ‘પક્ષિલય-પોસહિએ સમાહિપત્તાણં’ એતલઈ યતિનંતર પોસહ તે ઉપવાસ જાણિવા, એકલા વ્રત્તચર્યનંતર પુણિ પોસહ કહીયઈ ‘જયા એગસસ વંભવેરપોસહો ઇયરસસ પારણઓ’ ઇતિ શ્રીઆવશ્યકવૃદ્ધવૃત્તૌ । વલી ઇહાં તુમ્હે લિખ્યા જે સુબાહુનંતર અપર્વેઈ અઢમ પોસહ કહ્યડ છઈ, તત્ત્વાર્થે-તિહાં અઠમ પોસહ કરતાં ચતુર્દશી પ્રમુલ પર્વના નામ લિયા છઈ, તથા નન્દમણિયારનંતર અધિકારિ પ્રતિક્રમણ-ચૂર્ણિમાંહિ ‘પન્થદિયહમ્મિ કમ્મિ, અઠમભત્તં પગિપહઈ નન્દો’ એહવડ પાઠં નંદમણિયારં પુણિ શાસ્ત્રનંતર ન્યાયઈ પર્વનંતરજિ પોસહ કીધડ, તથા નવપદપ્રકરણવૃત્તિ ઓસવાલાંની કીધી છઈ, તિહાં નંદનંતર ગ્રીષ્મ વાલં ચડસિની રાત્રિ તૃષા લાગી કહી છઈ, એતલઈ પોસહ દિન પર્વનંતર છઈ ઇમ નિયમ થયડ ઉદાયિન રાજાનંતર અધિકારિ ઉત્તરાધ્યયનની વૃત્તિમાંહિ પાસીનંતર દિનંતર ઉદા-

થિન ગજાઈં તીર્થકરનડ આગમન પોમહમાંહિ વાંઢ્યડ, એહવડ પોમહ પર્વનડ થયડ છડ. અમયકુમારં મેઘવર્ષાનડ કાજિ અમિપ્રહ કર્યડ, પરં તે પોમહવ્રત ન થાઈ. મોક્ષાર્થ નહીં. એવં વિજયગજાના કૃષ્ણના ભગતના અવિગતી રૂહલોકાર્થ મળી પોસહ (વ્રત) ન કહણા, વલી તપા પોમહમાંહિ રૂહલોકના ગુણના ધ્યાન કરતાં મિથ્યાત્વ માનડ તડ ભગત કૃષ્ણ અમયકુમારગદિ સર્વ મિથ્યાત્વી થાઈ, મિથ્યાત્વીનડ પોમહ કિમ થાઈ ? જોજ્યો, એતડ તુમ્હાગડ કથન ઉપર લિખ્યડ છડ, મિલ્યાં યુક્તિ પૂછાઈ કહાઈ પુણિ, એવં સમમ્ભિજ્યો, એહ પ્રશ્નનડ વિસ્તરવિચાર પોમહછત્રી-સીની વૃત્તિ થકી જોડવડ, સમી દાંષ્ટ્ર જોવતાં જિમ વહગ સૂજાનડ સમમ્ભિ થઈ તિમ થાઈ, ઘરે વિચારિજ્યો ॥ ૧-૦ ॥

ભાષા-“સામાય પોસહ સંઠિયસ્સ” આ ગાથા સામાયિક પારવાની નથી, કિંતુ સુકૃત-પુણ્ય અનુભોદનની છે, નવકાર ગણ્યા તે પચ્ચખાણુ પારવાના સૂત્ર છે, ખીન્ન પણ પચ્ચખાણુ તથા પોસહ નવકાર ગણ્યેજ પૂરા થાય છે, વિચારી જોજો. જેમ વિજય રાજા “નમો અરિહંતાણુ” કહી (પૌષ્પ શાળાથી આહાર) નીકલ્યો” એવા શાસ્ત્રાક્ષરો (વસુદેવહિંડી આદિના) જેવા, ખીન્નું જેમ નવકાર ગણીને સામાયિક-પોસહ લીધા હતા (તેમ) પારતાં નવકાર ગણ્યે, સામાયિક પોસહ પાર્યા કહેવાય, મતલબ કે જ્યારે ‘સામાય પોસહ સંઠિયસ્સ’ એ ગાથાઓ પારવાની છેજ નહીં ત્યારે પૂછો છો શું ? વલી જ્યારે સાગરચંદ્ર દશાર્ણભદ્ર સુદર્શન અને થૂલભદ્રાદિ થયા નહોતા ત્યારે સામાયિક વા પોસહ કેમ પારતા હશે ? માટે વસ્તુતઃ પારવાનો પાઠ નવકારજ છે, અનુભોદનનો

પાઠ (ભૂતકાળમાં જે) મહાનુભાવ થયા તેહના નામ લેઈ અનુમોદાજ કરે. વલી “ સઙ્ગેસુ કાલપઙ્ગેસુ, પસત્યો જિણમણ તવોજોગો । અદ્ઠમિપન્નરસીસુ ય, નિયમેણ હવિઙ્ગ પોસહિઓ ॥ ૧ ॥ ” આ ગાથા આવશ્યક ચૂર્ણિ (ભા. ૨ પાના ૩૦૪) માં છે, પરંતુ “અદ્ઠમિ-ચઢહસીસુ ય ” એવો પાઠ નથી, કારણ કે શાંત્યાચાર્યકૃત ઉત્તરાધ્યયન ટીકાના નવમા અધ્યયનમાં (પણ) “સર્વેઽપિ તપોયોગા; પ્રશસ્તાઃ કાલ-પર્વસુ । અષ્ટમ્યાં પચ્ચદશ્યાં ચ, નિયતં પૌષધં વસેત્ ॥૧॥ ” આ ક્વિ આસસેન કૃત સ્લોક પૌષધના અધિકારમાં લખેલ છે. (જે ઉપરોક્ત આવશ્યકચૂર્ણિની ગાથાથી અક્ષરે અક્ષર મળતો છે) છતાં (દષ્ટિરાગને વશ પ્રાચીન પાઠને ફેરવી દેધને) તપા રત્નશેખરસૂરિકૃત વંદિતુ સૂત્રની ટીકા (પાના ૧૬૫) માં “ અદ્ઠમિચઢહસીસુ ય, નિયમેણ હવિઙ્ગ પોસહિઓ ॥૧॥ ” આવો નિર્મૂલ પાઠ લખી દીધો છે, બીજા ગીતાર્થેને પણ પૂછજો, પૂર્વાચાર્યકૃત ગ્રંથોને જોજો, તત્ત્વાર્થભાષ્યમાં પાપધોપવાસ શબ્દથી ‘પૌષધ’ એટલે પર્વ, તેનો ઉપવાસ તે પૌષધોપવાસ, તે પૌષધોપવાસ-પર્વદિવસનો જે ઉપવાસ તે અષ્ટમ્યાદિ પર્વને દિવસે નિયતપણે કરવોજ, બીજી પ્રતિપદાદિ (અપર્વ) તિથિએ કરવો ન કરવો (અનિયત છે), પર્વતિથિનો ઉપવાસ પર્વતિથિએ કરવો, (પણ) બીજી તિથિએ ઉપવાસનું નિષેધ નથી, મતલબ કે તત્ત્વાર્થવ્રત્તિકારે પૌષધોપવાસના અર્થથી પર્વદિવસે પોસહવ્રત કરવું કહ્યું, એટલે વ્રત્તિકારે અને ભાષ્યકારે ‘પૌષધોપવાસ’ શબ્દના અર્થ જુદા જુદા કર્યા. ઠાણાંગ સૂત્રમાં ચાર આસાસાના અધિકારે મૂળમાં તથા ટીકામાં એમજ જુદા જુદા અર્થ ‘પૌષધોપવાસ’ શબ્દના કરીને આસાસા કહ્યા છે,

એટલે (અગ્નિરમો) વ્રતરૂપ પોસહ (અષ્ટમ્યાદિ) પર્વતિથિએ કરવો (અને) બીજાં ઉપવાસરૂપ પોસહ પર્વતિથિએ કરવો (પણ) બીજા (અપર્વ) તિથિએ ઉપવાસ કરતાં કોઈ રોકતો નથી. એ તત્ત્વાર્થભાષ્યકાર (તેમ વૃત્તિકાર)નો અભિપ્રાય છે. ગ્રંથ વિસ્તૃત થવાના ભયથી તેનો પાઠ નથી લખ્યો, સાધુના અધિકારમાં “ પવિત્ર્યપોસદ્દિષ્ સમાદિ પત્તારાં ” આવા પાઠથી સાધુને પોસહ તે ઉપવાસ સમજવાનો, એકલા બ્રહ્મચર્યને પણ શાસ્ત્રોમાં પોસહ કહેલ છે. જેમ કે આવશ્યક બૃહદ્વૃત્તિમાં પાઠ છે કે “ જયા એગસ્મ વંભચેરપોમહો ઇયરસ્સ પારણાઓ ” (અર્થાત્ જ્યારે એકને બ્રહ્મચર્ય પૌષધ હોય ત્યારે બીજાને પારણો હોય.) વધી તમોએ જે લખ્યું કે સુબાહુકુમારને માટે અપર્વમાં અહમથી પોસહ કહ્યું છે. તેના ઉત્તરમાં સમજવાનું કે—ત્યાં અહમથી પોસહ કરતાં ચતુર્દશી પ્રમુખ પર્વના નામ લીધા છે. તથા નંદમણિયારના અધિકારમાં પ્રતિક્રમણ ચૂર્ણિના “ પઠ્વાદિયહમ્મિ કમ્મિ અદ્દઠમમત્તં પગિરહ્હં નંદો ” આ પાઠથી નંદમણિયારે પણ શાસ્ત્રદષ્ટિએ પર્વતિથિએજ પોસહ કર્યો છે, તથા ઉકેશ ગચ્છવાળાઓની કરેલી નવપદ પ્રકરણની ટીકામાં ‘ ઉન્હાળાની સીઝનમાં ચઉદસની રાત્રિએ નંદમણિયારને તૃષા લાગી ’ એમ કહેલ છે. એટલે ‘પોસહનો દિવસ પર્વ છે’ એમ નિશ્ચિત થયું, ઉદાયન રાજાના અધિકારે ઉત્તરાધ્યયનની ટીકામાં કથન છે કે—પાખીના દિવસે પોસહમાં ઉદાયન રાજાએ તીર્થંકર ભગવાન શ્રીમહાવીર દેવનું આગમન વાંચ્યું, એથી તેનો (પણ) પોસહ પર્વદિવસે થયો છે. અભયકુમારે મેઘવર્ષા નિમિત્તે અભિગ્રહ કર્યો છે. પરંતુ તે પોસહ વ્રત ન હોય, (કારણ ?) મોક્ષનિમિત્તે નથી, આ રીતે વિજયરાજાનાં કૃષ્ણ-વાસુદેવનાં

ભરત ચક્રવર્તિનાં (પોસહ તે) અવિરતિપણાને અંગે તેમ આલોક સંબંધિયા (મનોરથ) નિમિત્તે હોવાથી પોસહ (ત્રત) ન કહેવા, વલી તપા પોસામાં આલોક સંબંધિ ગણાણું કે ધ્યાન કરતાં મિથ્યાત્વ માને છે તો (તપાની માન્યતા મુજબ) ભરત ચક્રવર્તિ કૃષ્ણ વાસુદેવ અને અભયકુમારાદિ યધા મિથ્યાત્વી થાય, અને) મિથ્યાત્વીને પોસહ કેમ થાય ? તે વિચારજ્ઞે. તમારા કથન ઉપર (સૂચન માત્ર) આટલું લખ્યું છે, (અરૂ અરૂ) મળવાથી યુક્તિ પ્રયુક્તિ પૂછાય અને કહેવાય પણ, એમ સમજજ્ઞે. આ પ્રશ્નનો ઉત્તર વિસ્તારથી જોવું હોય તો પોસહછત્રીસીની રીકાથી જોવું, સમદષ્ટિએ જોતાં જેમ સૂગ્ત વહોરાને સમજ થઈ તેમ (તમને પણ) થશે. (માટે) ઘરમાં (સ્થિર ચિત્તે) વિચારજ્ઞે. +

+ તપા ખરતર ભેદ પૃ. ૧૦૬ માં લખ્યું છે કે “ શાસ્ત્રોમાં પૌષ્ઠ દેશથી અને સર્વથી કહ્યા છે (પણ ‘અપવી’એ ન થાય’ એમ ક્યાંય કહ્યું નથી) આમ છતાં જે પૌષ્ઠ ઉત્થાપે છે તેને વિરોધ આવે છે ” એટલે પૂછવાનું કે-લૌકિક પંચાંગ કે જેનાપર આખાય જૈન સમાજની તિથ્યાદિ માન્યત નો આધાર છે, તેમાં લૌકિક જ્યોતિષના દિસાએ થયેલ પાંચમ-આઠમ આદિ પર્વતિથિઓની વૃદ્ધિ પ્રસંગે સૂર્યના ઉદય અને અસ્ત ખન્નેના ભોગવટાવાળી ૬૦ ઘડીની પરિપૂર્ણ પહેલી પાંચમ-આઠમ આદિ પર્વતિથિઓને ‘ નહીં’ ધરના કે નહીં ઘાટના’ એ ન્યાયાનુસાર જાળવાચાર્યના પૂર્વજ્ઞે એ ચોથ-એ સાતમ આદિ કરીને તેમ જાળવાચાર્ય પણ તે પહેલી પાંચમ આઠમ આદિને પહેલી પાંચમ આઠમ આદિ માનવા કહેવા છતાં તેને ફલ્ગુ કહીને પૌષ્ઠને શું ? પણ લીલવણીના છેદન ભેદનાદિના ત્યાગ અને બ્રહ્મ-

(તપા ખરતર બેઠે અથ ૧ બોલ ૧૨૩ મો)

૧૨૧ પ્રશ્ન—વલી લિખ્યા સ્વરતરાંનઈ ડગ્યારમા વ્રત પોમહ તથા ચારમા વ્રત અતિથિસંવિભાગ, એ બેઉં વ્રત જે પર્વતિથિયં તથા પર્વતિથિરઈ પારણરઈ દિનઈ કરિવા અનેરી તિથિએ ન કરિવા તડ મદાર્ઠે ગત્રિં તથા દીહં પઢિકમણા કરતાં ઇયાં ચિહું વ્રતાંના અતિચાર ૫ ૫ સ્યા માટઈ આલોઅઈ છઈ ? ।

ભાષા—ખરતરને અગ્યારમો તથા આરમો વ્રત પોસહ તથા અનિધિસંવિભાગ. આ બન્ને વ્રતો પર્વતિથિએ અને પર્વતિથિના પારણના દિવસે કરવા અને બીજી તિથિએ ન કરવા (એમ માન્યતા છે) તો હમેશાં રાત્રે અને દિવસે પ્રતિક્રમણ કરતાં આ બન્ને વ્રતોના પાંચ પાંચ અતિચાર શા માટે આલોવે છે ?

તત્રાર્થે—સહુ તપાંગ શ્રાવક રાતિનઈ પઢિકમણઈ કરતાં અતિથિસંવિભાગના અતિચાર ૫ સ્યા મળી આલોવઈ છઈ ? ગત્રિંતડ અતિથિસંવિભાગ નથી થાતડ, તથા સંલેખનાના દોષ

ચર્ચના પાલન સુધાને જે ઉત્થાપે છે. તે કયા શાસ્ત્રથી અવિરોધી છે ? બીજી દેશથી અને સર્વથી ક્યાં માત્ર આહારપૌષ્ઠજ કહ્યું છે ? શાસ્ત્રોમાં તો ચારે પૌષ્ઠો દેશથી અને સર્વથી કહેલ છે તો પછી પોસહ દંડકમાં માત્ર આહારપૌષ્ઠજ ‘દેસઓ સવ્યઓ વા’થી અને બીજા ત્રણે પૌષ્ઠો ‘સવ્યઓ’થીજ ઉચરવાનું શું કારણ ? તેમ બીયાસણ તથા એકાદિ વિગતના ત્યાગસુધાને પણ શાસ્ત્રકારોએ દેશથી આહાર પૌષ્ઠ કહેલ છતાં તપાઓ પૌષ્ઠમાં એકાસણ સુધીજ કરવાનું માને છે. તેનું શું કારણ ? એનો ઉત્તર સર્વમાન્ય પ્રાચીન શાસ્ત્રપ્રમાણો સાથે જગ્યાચાર્ય આપે.

સ્યા ભણી કહઈ છઈ ? એ વિચારિજ્યો, મમન્નિ પડિસ્યે, તિહાં પૂછ્યા માટઈ કહીયઈ છઈ-એકતડ આવશ્યક સૂત્રના પાઠભંગ વારિવાનઈ કાજિ તથા અમદ્દહણા-વિપરીત પ્રરૂપણાનઈ મેલિ સદાઈ અતિચાર લાગઈ ઋઈ તેહ આલોવતાં લાભ છઈ, ઇમ કરતાં વ્રતના દોષ ટલઈ એ મહાલાભ વિચારિવડ, અમ્હે તુમ્હને ડાહા જાણતા, એહવી નિપગી માંજઘડિ કરતા જાણીનઈ ઇમ જાણાં છાં તુમ્હે વ્યુદગ્રાહ્યા છડ, અથવા ધર્મથકી ડમગા છડ, જે દેખતાં અદેખતા થાઅડ છડ, તે ભણી વિચારિજ્યો, એવં દિન પ્રતિ સમક્રિત મહિત વાગ વ્રતના ૧૨૪ અતિચાર આલોવતાં ઘણા લાભ થાસ્યઈ ૧૨૧।

ભાષા-તપાના અધાય આવકો રાષ્ટ પડિમાણું કરતાં અતિથિ સંવિભાગના પાંચ અતિચાર શા માટે આલોવે છે ? કારણ ? રાત્રે તો અતિથિ સંવિભાગ થતો નથી, વડી સંલેખનાના દોષ શા માટે કહે છે ? એ વિચારજો. સમજ પડશે, ત્યાં (તમોએ) પૂછ્યું એટલે કહીએ છીએ કે- એક તો આવશ્યક સૂત્રનો પાઠભંગ નિવારવા માટે તેમ અસહ્યુલ તથા વિપરીત પ્રરૂપણાના અંગે અતિચાર સદાય લાગે છે, તે આલોવતાં જ્ઞાલ છે. એમ કરતાં વ્રતના દોષો ટળે એ મહાલાભ (છે તે) વિચારવો, અમો તમને ગ્રહ્યા જાણુતા હતા (પરંતુ) એવી વગર પગની ભાંજગડ કરતા જાણી એમ જાણીએ છીએ કે તમો વ્યુદગ્રાહિત થયા છો અથવા ધર્મથી ઉભર્યા છો જે દેખતાય વગર દેખતા થાઓ છો, માટે વિચારજો આ રીતે હમેશાં સમક્રિત સહિત આરેય વ્રતોનાં ૧૨૪ અતિચારો આલોવતાં ઘણો લાભ થશે +

+ તપા ખરતર ભેદ પૃ. ૧૦૮ માં પર્વાશિવાયના દિવસોએ

(તપા ખરતર ભેદ ગ્રંથ ૧ બોલ ૧૨૪ મો)

૧૨૦ પ્રશ્ન-તથા તપાંનંદ પડિકમણા ઠાયા પછ્ઠ 'ઈચ્છામો અણુસદ્ધિં' તાંં ક્રિયા કરતાં ન બોલઈ, સ્વરતરાંનંદ વિચાલઈ બોલઈ, તે મ્યું ?

ભાષા:-તપાને પડિકમણું ઠાયા પછી 'ઈચ્છામો અણુસદ્ધિં' કહેવા સુધી વચમાં બોલતા નથી અને ખરતરને વચે બોલે છે, તે શું ?

તત્રાર્થે-જે તપાંનંદ પડિકમણાં આલોચણાનંદ તથા સ્વામણા-
નંદ પાઠ પચ્ચક્ષ્ણાણનંદ પાઠ અણબોલ્યાં ગુરુનંદ અણસંભલાયાં
કીજઈ છઈ, તે મહાદોષ છઈ, ગુરુ પુર્ણ 'આલોચહ-સ્વામહ'

પૌષ્ઠ અને અતિથિસંવિભાગ ન કરવાથી આ બન્ને વ્રતોનાં અતિચારો
આલોચવામાં જે વિરોધ દર્શાવ્યું છે. તે તો વ્રત રહિત એવા બધાને
સમાન છે, કારણ કે તેમને તો એક વ્રત છે નહીં, તો પછી તેવા
અવ્રતધારી તપાઓ ખારે વ્રતોના અતિચારો શા માટે આલોચે છે ?
તેમ વ્રતધારીઓ પણ રાત્રે તો અતિથિસંવિભાગ કરતા નથી છતાં
રાત્ર પડિકમણામાં એના અતિચારો આલોચે છે તે શા માટે ? જે ગામે
ન જવું તેનો રસ્તો પૂછવા જેવું આ હાસ્યાસ્પદ કામ. તપાઓ શા માટે
કરે છે ? આનો ઉત્તર સર્વમાન્ય શાસ્ત્રપ્રમાણથી જગ્યાચાર્ય આપે.

ખીણું પૃ. ૧૦૬ માં લખ્યું કે-“ ખરતર પોસહ અતિથિ સંવિભાગ
ઉત્થાપે છે ” એટલે લખવાનું કે-ખરતર તો જરાએ ઉત્થાપતા નથી
કિંતુ શાસ્ત્રકારોની આજ્ઞાનુસારજ બધું કરે છે, પરંતુ આ ગ્રંથના પૃ. ૧૫-૧૬ તથા ૩૬૪ ની ટિપ્પણમાં દર્શાવ્યા મુજબ પહેલી આદ્ય ચૌદસ
આદિ પર્વતિથિઓમાં પૌષ્ઠાદિ ધર્મસાધન માત્રને તપાઓજ ઉત્થાપે છે.
તે શા માટે ? આનો ઉત્તર સર્વમાન્ય શાસ્ત્રપ્રમાણથી જગ્યાચાર્ય આપે.

પ્રમુખ શબ્દ ન કહઈ તડ ગુરુનઈ પુણિ એ દોષ છઈ । ‘મૂક’ નામ વાંદણાનડ દોષ છઈ, તે અણબોલતાંનઈ લાગઈ, તે ભણી પઢિકમતાં મધુરસ્વરિ પઢિકમીયઈ પરં એક જણ આવશ્યકના પાઠ ગુણાવઈ बीजा न गुणइ ए दोष छइ, નમસ્કાર થુઈ તવન ગુરુનઈ આદેશઈ શ્રીશાસ્ત્રનઈ ન્યાયઈ એક જણ કહઈ बीजा काउमगमांहि तथा वात विकथा विनोद प्रमाद अणकरता जिनमुद्राअइ योग-मुद्राअइ मुत्तासुत्तिमुद्राअइ અણબોલ્યાં સાંભલઈ, પરં સર્વ ક્રિયા મૌનઈ કરઈ ઇમ શાસ્ત્રે નથી । કોઈ ક્રિયા કરતાં ભૂલે તેહનઈ સમજાવીયઈ સંમારિક વાત ન કરીયઈ અનઈ આવશ્યક સૂત્રપાઠ ઊચરીયઈ, જઈ ન બોલીયઈ તડ “પઢિકમે વાઙ્યમ્સ વાયાએ ।” એ પાઠ કિમ મિલઈ ? તે ભણી આવશ્યક પાઠ મધુરસ્વરિ બોલીનઈ ઊચરીયઈ ॥ ૧૨૨ ॥

ભાષા:-તપાઓને પડિકમણું કરતાં આલોચણા. ખામણ તથા પચ્ચક્રખાણના પાઠો વગર બોલ્યાં તેમ ગુરુને સંભળાવ્યા વિના જે (પડિકમણું) કરે છે તે મહાદોષ છે, ગુરુ પણ “આલોચહ-પડિકમહ-ખામહ” આદિ શબ્દો જો ન કહે તો ગુરુને પણ દોષ છે, વાંદણાનો દોષ ‘મૂક’ નામનો જે છે, તે વગર બોલતાંને લાગે છે, માટે પડિકમણું કરતાં મધુરસ્વરથી પડિકમે પરંતુ એકજણ પડિકમણું લણાવે, તે બીજા મનમાં ન ગણે તે મહાદોષ છે, નમસ્કાર થુધ સ્તવન ગુરુના આદેશથી અને શાસ્ત્રના આધારે એક જણ (બોલે તે બીજા) કાઠિસગમાં રહ્યા થકા (તથા કાઠિસગ વગરના) વાત વિકથા વિનોદ પ્રમાદ ન કરતા છતા જિનમુદ્રા યોગમુદ્રા કે મુક્તાશુકિતમુદ્રાએ વગર બોલ્યે સાંભળે, પરંતુ બધી

ક્રિયાઓ મૌનથી કરે એવું કથન શાસ્ત્રમાં નથી, ક્રિયા કરતાં બીજા કોઈ ભૂલતા હોય તો તેને સમગ્નવીયે, સંસારિક વાત વિકથા ન કરીયે, અને આવશ્યક સૂત્રો ઉચારીયે, જો નજ બોલીયે તો “પડિક્કમે વાધયસ્સ વાયાએ” (અર્થાત્ વચન સંબંધી અતિચારોથી વચનવડે પાછો નિવર્તુ) આ પાઠ કેમ મળે ? માટે આવશ્યક સૂત્રો મધુસ્સ્વરે બોલીને પડિક્કમણું કરીયે.

(તપા ખરતર ભેદ ગ્રંથ ૧ બોલ ૧૨૫ મો)

૧૨૩ પ્રશ્ન—તથા સ્વરતર પ્રભાતિ પડિક્કમણાનઈ પ્રાંતિ જિમ ‘કમ્મભૂમિહિ’ (કહી) તીર્થંકર સાધુ ચૈત્ય સર્વ વાંદઈ, તિમ સાંમ્મિનઈ પડિક્કમણઈ કીધાં પછી તીર્થંકર ચૈત્ય ન વાંદઈ, તે સ્યું ?

ભાષા—ખરતર રાષ્ટ્ર પ્રતિક્રમણના અંતે “કમ્મભૂમિહિ” કહી જોમ બધા તીર્થંકર સાધુ ચૈત્યોને વંદન કરે છે તેમ સાંજે દેવસી પ્રતિક્રમણના અંતે તીર્થંકર ચૈત્યોને નથી વાંદતા, તે શું ?

તત્રાર્થ—શાસ્ત્રે કહ્યા છઈ જે સાંમ્મિ પડિક્કમણાથી પહિલત પ્રભાતિ પડિક્કમણાથી પછઈ ચૈત્ય ન વંદઈ તત્ત દોષ, તે મળી તિમ વાંદીયઈ છઈ, તપાંરઈ પુણિ સાંમ્મિનઈ પડિક્કમણાનઈ પ્રાંતિ ‘અઢ્ઢાઈજ્જેસુ’ ઇત્યાદિ પાઠમાંહિ પુણિ સર્વ તીર્થંકર સર્વજિન-પ્રતિમાની વંદના નથી દીસતી, સમસ્ત સાધુ વાંદતાં શ્રીઆચાર્ય શ્રીઉપાધ્યાય સર્વસાધુ. એ યતિ વંદાઈ છઈ, એ ક્રિયા સ્વરૂપ સગલે ગચ્છે સરીસડ છઈ, વલી જીયઈ પાઠઈ કરી તપાંરઈ સાંમ્મિના પડિક્કમણ! કીધા પછી શ્રાવક તથા યતિ જિન તથા જિનના ચૈત્ય-જિનપ્રતિમા સમસ્ત વાંદઈ તે પાઠ જણાવિજ્યો,

આપાંપણા ગચ્છની ક્રિયા કરીયડ પુણિ કેહનડ અક્ષરાં(શાસ્ત્રપાઠ)
પસડ હીલીયડ નહીં, તપા યતિ સાંમડ પઢિકમણા કરી એ
પાઠ છેહડડ કહડ છડ કિ નહીં કહતા ? તે જણાવેજ્યો, ઘરની
સોમ્મિ કરીનડ વીજાનડ પૂછીયડ, વલી જીયડ ગ્રન્થમાંહિ કહ્યા
હવડ જે સાંમ્મિ યતિ શ્રાવક ઈયડ પાઠડ સર્વ ચૈત્ય જિન યતિયાંને
વાંદિવા તે જાણાવેજ્યો ॥ ૧૨૩ ॥

ભાષા-શાસ્ત્રોનું કથન છે કે-સાંજે પડિકમણાથી પહેલાં અને સવારે
પડિકમણાથી પછી (જો) દેવવંદન ન કરે તો દોષ છે, એટલે તે મુજબ
વાંદીએ છીએ. તપાઓને પણ દેવસી પડિકમણાના અંતે (ખોલાતા)
“અશ્લઘ્નજેસુ” ઇત્યાદિ પાઠમાં પણ બધા તીર્થંકર કે જિનપ્રતિ-
માની વંદના નથી દેખાતી, સમસ્ત સાધુને વાંદતાં આચાર્ય ઉપાધ્યાય
અને સર્વસાધુ. એ (બધાએ) યતિઓ વંદાય છે, આ ક્રિયાની હકીકત
બધા ગચ્છોમાં સમાન છે, વલી જે પાઠથી તપાને દેવસી પડિકમણું
કર્યા પછી શ્રાવક તથા સાધુ તીર્થંકર તથા જિનપ્રતિમાઓને વાંદે તે
પાઠ બતાવજો, પોતપોતાના ગચ્છની ક્રિયા કરિયે પણ શાસ્ત્રપ્રમાણ વગર
કોઈનીય નિંદા કરવી નહીં, તપા યતિઓ દેવસી પડિકમણું કર્યા પછી
છેલ્લે આ (અશ્લઘ્નજેસુ) પાઠ કહે છે કે નથી કહેતા ? તે જાણવજો,
(પહેલાં) ઘરની તપાસ કરીને પછી ખીજાને પૂછવું જોઈયે, ખીજું
જે ગ્રંથમાં કહ્યું હોય કે “દેવસી પડિકમણાના અંતે સાધુ શ્રાવક બંનેએ
આ (અશ્લઘ્નજેસુ) યા ખીજા કોઈ પણ) પાઠથી સર્વજિન ચૈત્ય અને
સાધુઓને વાંદવા તે જણાવજો. x

x તપા ખરતર ભેદ પૃ. ૧૧૦ માં લખ્યું છે કે-“ખરતર સવારના

(તપા ખરતર ભેદ ગ્રંથ ૧ ખોલ ૧૨૬ મો)

૧૨૪ પ્રશ્ન—તથા સ્વરતર સાંખદ તથા સવારદ પડિકમણદ ઠાવતાં આચાર્યાદિ ૪ સ્વમાસમણ ચદ, વલી બિહું પડિકમણા પૂરા કરતાં ૩-૩ સ્વમાસમણ દીજદ, વર્તમાન ગુરુ વાંદિવાની સ્વમાસમણ ન ચદ, તે સ્યું ? ।

ભાષા:-ખરતર રાષ્ઠ તથા દેવસી પડિકમણું ઠાવતાં આચાર્યાદિ ૪ ના ખમા૦ આપે છે, ને આ બન્ને પડિકમણું પૂર્ણ થતાં ત્રણ ત્રણ ખમા૦ આપે છે, વર્તમાન ગુરુ વાંદિવાનો ખમા૦ નથી આપતા, તે શું ?

પ્રતિકમણને છેડે પૂરું કર્યા પછી ‘કમ્મભૂમિ’ કહી તીર્થ કર, સાધુ, પ્રતિમા વાંદે, પણ સાંજને પ્રતિકમણે ‘કમ્મભૂમિ’ કહેતા નથી, તપા દેવસી-રાઈ બન્ને પ્રતિકમણમાં કહે છે, ખરતર સાંજના પ્રતિકમણમાં ન કહે તેને પૂછજો-‘કેમ નથી કહેતા ?’ સવારે પ્રતિકમણે કહો, સાંજે ન કહો તે કયા શાસ્ત્રનો ન્યાય છે ? તે દેખાડો, તપા બેય વખત ‘કમ્મભૂમિ’ ના સ્થાને ‘અડ્ઠાધજેસુ દીવસમુદ્દેસુ’ કહે છે તે એજ માટે” આ લખાણમાં ઉપરતો કહે છે કે-‘કમ્મભૂમિ’નો પાઠ તપા “બન્ને પ્રતિકમણમાં કહે છે” અને નીચે કહે છે કે-“કમ્મભૂમિના સ્થાને ‘અડ્ઠાધજેસુ દીવસમુદ્દેસુ’ કહે છે” આ રીતે એકજ સ્થળે પોતાના કથનમાં આવતા વિરોધનોય જોને ખ્યાલાત નથી. તેમ ‘કમ્મભૂમિ’ નો પાઠ રાષ્ઠ પડિકમણાના પ્રારંભમાં તો પ્રાપ્ત બધાય બોલે છે. કિંતુ અંતે તો ખુદ તપાઓ પણ નથી કહેતા, એનુંય જોને જ્ઞાન નથી. એવા ભાગ્યશાળીઓ પણ સ્વપર માન્યતાનો ભેદ કેવો બતાવી શકે ? એનો નિર્ણય કરવાનું કામ તો સુરજીવાંચકોને સોંપીએ છીએ.

તત્રાર્થે—ત્રિહું પઢિકમણે ઠાવતાં વર્ત્તમાન ગુરુનહ વાંદિવાનહ
 આલોવતાં આમતાં પ્રયોજન વિશેષે હતહ, પરં પઢિકમણા પૂગ
 થયાં પછી સર્વસાધુ વાંદ્યા જોડ્યહ, તે સર્વસાધુ આચાર્ય ઉપા-
 ધ્યાય સર્વસાધુ થકી જૂઆ કો નથી, જે છહ તે રૂંયાંજિ ત્રિહું-
 માંહિ છહ, તે મળી એ ૩ સ્વમાસમણ બેડં પઢિકમણાંનહ છેહહહ
 દિવરાહ છહ, એ માવ જાણીયહ છહ, વલી શ્રીયુગપ્રધાનજી
 કહહ તે પ્રમાણ, પરં તપાંને મગવન્ વાંદું' એહવહ મેલિ પઢિ-
 કમણા કરતાં ૪ સ્વમાસમણ આપહ છહ તે સ્યું ? શાસ્ત્રે
 'આચાર્યાદિન્વન્દતે' રમ લલિવિસ્તરા નામ ગ્રન્થમાંહિ છહ, પરં
 'મગવાનાદિન્વન્દતે' રતિ કીયહ ગ્રન્થહ નહીં તે સ્યું ? આચાર્ય
 થકી તીર્થકર પસહ વડહ કો નથી જેહનહ પહિલા વાંદીયહ,
 વલી ચૈત્યવંદના કરી જિન વાંદ્યા પછી મુનિ વાંદ્યા જોડ્યહ
 'જિણમુણિવંદણે' રત્યાદિ માણ્યકારના પાઠ થકી, એ બોલના
 ઉત્તર દીધા જોડ્યે, એ ૪ સ્વમાસમણ વિચારીનહ કહિસ્યહ તહ
 સર્વસમમ્મિ પઢિસ્યહ, તપાંનહ ગચ્છહ સહૂ યતિનહ 'મગવન' નામહ
 કરી બોલાવીયહ છહ, તેને આચાર્યા થકી પહિલા નહીં વાંદીજતા,
 વિચારીનહ એ વાત ઠામિ પાડિજ્યો ॥ ૧૨૪ ॥

ભાષા:—અને પઢિકમણા ઠાવતી વખતે વર્તમાન ગુરુને વાંદવાનું
 પ્રયોજન આલોવતાં આમતાં વિશેષતયા હતું, પરંતુ પઢિકમણા પૂરા
 થયા પછી સર્વ સાધુ વાંદવા નોંધએ, અને સર્વ સાધુ તે આચાર્ય
 ઉપાધ્યાય તથા સર્વ સાધુથી જુદા કોઈ નથી, જે છે તે એ ત્રણમાંજ
 છે, એટલા માટે અને પઢિકમણાના અંતે (વર્તમાનગુરુ શિવાયના)

આ ત્રણે ખમાસમણાઓ દેવરાય છે, આ મતલબ જણાય છે. વલી યુગપ્રધાન (શ્રીજિનયંદ્રસૂરિ)જી (મં) કહે તે પ્રમાણુ, પરંતુ તપાને પડિ-કમણું કરતાં ‘ભગવન્ વાંદુ’-(હમણાં ‘ભગવાનહ’) આ રીતે (જે) ચાર ખમાસમણા આપે છે તે શું ? (એટલે ક્યા શાસ્ત્રાનુસારે છે ?), શાસ્ત્રમાં તો ‘આચાર્યાદિકને વાંદે’ એમ લલિતવિસ્તારા (વૃત્તિ તથા પ્રતિક્રમણુહેતુ ગર્ભ) માં કહ્યું છે, પરંતુ ‘ભગવાન આદિને વાંદે’ એમ કોઇ પણ ગ્રંથમાં કહ્યું નથી તે શું ? આચાર્યાદિકથી મોટો તીર્થ કર શિવાય ખીજો કોઇ નથી કે જેને પહેલાં વાંદીયે, વલી “જિણમુણિ વંદણે” ઇત્યાદિ ભાષ્યકારના પાઠ થકી દેવવંદન કરી જિનેશ્વરને વાંદ્યા પછી મુનિને વાંદવા જોઇએ, આ વાતનો ઉત્તર દેવો જોઇશે. આ ચાર ખમાસમણા વિચારીને કહેશે તો બધી સમજ પડશે, તપા ગચ્છના બધા સાધુઓને ‘ભગવન્’ નામથી ઓલાવાય છે (પણ) તેઓ આચાર્યોથી પહેલાં નથી વાંદાતા, વિચારીને આ વાત ઠામે પાડજો.

(તપા-ખરતર ભેદ ગ્રંથ ૧ બોલ ૧૨૭ મો)

૧૨૫ પ્રશ્ન—તથા સ્વરતર શ્રાવક પોસહ તથા સામાયિક પારતાં સ્વમાસમણ અણદીધાં મુહપત્તી પઢિલેહૈ, તે સ્યું ?

ભાષા-ખરતર શ્રાવક પોસહ તથા સામાયિક પારતાં ખમાસમણ દીધા વગર મુહપત્તી પડિલેહે, તે શું ?

તત્રાર્થે—સ્વમાસમણ દેહ મુહપત્તી પઢિલેહીયહ તે આચાર, જે સ્વમાસમણ ન હૈ તે પ્રમાદ છૈહ, પ્રમાદ વરજહ તે મલા, સ્વમાસમણસેતી વંદના કરિવીજિ, પરં ‘સામાયિક પારિવા મુહપોત્તિ પઢિલેહેમિ’ હમ ન કહીયહ ॥ ૧૨૫ ॥

ભાષા-ખમાસમણા દધને મુહપત્તી પડિલેહીયે તે આચાર છે, અને જે ખમાસમણા ન દિયે તે પ્રમાદ છે, પ્રમાદ છોડે તે સારું, ખમાસમણા દધને વંદના કરવીજ જોઈએ પરંતુ ‘સામાયિક પારવા મુહપત્તિં પડિલેહીમિ’ એમ ન કહે. +

(તપા ખરતર ભેદ ગ્રંથ ૧ બોલ ૧૨૮ મો)

૧૨૬ પ્રશ્ન—તથા સ્વરતર (શ્રાવક) પ્રમાતિ સામાયિક લેતાં બઢસણાની સ્વમાસમણ દેઈ પછઈ સજ્ઞાયની સ્વમાસમણ ઘઈ, પડિલેહણ પછી પહિલી સજ્ઞાયની સ્વમાસમણ દેઈ પછી બઢસણાની સ્વમાસમણ ઘઈ, તે સ્યું ?

ભાષા:-ખરતર (શ્રાવક) સવારે સામાયિક લેતાં ખેસણાના આદેશો લઇને પછી સજ્ઞાયના આદેશો લિયે, સાંજની) પડિલેહણ પછી પહેલાં સજ્ઞાયના આદેશો લીધા બાદ ખેસણાના આદેશો લિયે, તે શું ?

તત્રાર્થે—સામાયિક કરતાં જાં સીમ સજ્ઞાય કરિવાની વેલા જાણઈ તાં સીમ બઢસણ સંદિસાવી સજ્ઞાય કરઈ, સજ્ઞાય કરવાની વેલા વટતી જાણઈ તડ પહિલી બઢસણ સંદિસાવીનઈ

+ તપાએ સામાયિક પારવાના નવકાર ગણ્યા પહેલાંજ ‘સામાયિક પાયુ’ કહીને જે ભૂતકાળનો નિર્દેશ કરે છે તે કયા શાસ્ત્રના આધારે કરે છે ? જ્યાં સુધી હાથ થાપીને સામાયિક પારવા નિમિત્તે નવકાર ગણ્યા નથી ત્યાં સુધી ‘સામાયિક પાયુ’ એમ કેવી રીતે કહી શકાય ? સામાયિક પાર્યા વગરજ ‘સામાયિક પાયુ’ કહેતાં સામાયિકવાળાને મૃષાભાષણનું દોષ લાગે કે નહીં ? એનો સમાધાન સર્વમાન્ય શાસ્ત્ર પ્રમાણથી જગ્યાચાર્ય કરે.

બૈસણઝ ઠાઈનઈ પઘ્ઝ સજ્ઞાય કરઈ, એતલઈ જઈ વેલા વટતી (ન) જાણઈ તઝ બૈસણઝ સંદિસાવી સજ્ઞાય સંદિસાવઈ અનઈ જઝ સજ્ઞાય વેલા વટઈ તઝ પહિલઝ સજ્ઞાય કરઈ પઘ્ઝ બૈસણઝ ઠાઈ ॥૧૨૬॥

ભાષા:—સામાયિક કરતાં જ્યાં સુધી સજ્ઞાય કરવાની વેલા જાણે ત્યાં સુધી એસણાના આદેશ લઈને સજ્ઞાય (ના આદેશો લિયે અને સજ્ઞાય) કરે, (પરન્તુ) સજ્ઞાય કરવાની વેળા વીતતી જાણે તો પહેલાં એસણાના આદેશો લઈ એસણા હાઈને પછી સજ્ઞાય કરે, મતલબ કે જો ટાઈમ હોય તો એસણાના આદેશ લઈ બિછાવીને સજ્ઞાયના આદેશ લિયે અને જો સજ્ઞાયની વેલા વીતી જતી હોય તો પહેલાં સજ્ઞાય કરે પછી એસણું હાવે. x

(તપા ખરતર ભેદ ગ્રંથ ૧ બોલ ૧૨૯ મો)

૧૨૭ પ્રશ્ન—તથા સ્વરતર શ્રાવક જિમ્યાં પછી સામાયિક કરતાં જે શકસ્તવ કહઈ, તે સ્યઝ શકસ્તવ કહીયઈ ?

ભાષા:—ખરતર શ્રાવક જમ્યા પછી સામાયિક કરતાં જે શકસ્તવ કહે છે તે શા માટે કહે છે ?

તત્રાર્થે—સામાયિક કરતાં રાઈ પાચચ્છિત્તના કાઝસ્સગ સાથિ જે જિમ્યાં પહિલા સકરથા કહઈ તે જાગ્યાંના શકસ્તવ ૧ અનઈ દેવ જુહારતાં જિમ્યાં પહિલા સકરથા કહઈ તે દેહરાના

x તપાઓ એસણાપર એસી જઈને એસણાના આદેશો લિયે છે. તે ક્યા શાસ્ત્રના આધારે છે ? જે એસણાના આદેશો પછી લિયે છે તેજ તપાઓ સામાયિક અને સજ્ઞાયના પણ આદેશો તે તે ક્રિયાઓ ક્યાં પછીજ કેમ નથી લેતા ?

બીજા સકરથા, જિમ્યાં પહિલા પચ્ચક્ષ્ણાણ પારી સકરથો જે કહીયઈ તે ભોજનના ત્રીજા સકરથા કહીયઈ, પછઈ જિમીનઈ સકરથા કહીયઈ તે સંવરણનહ ૪, પછઈ ઉભયકાલિ પઢિ-કમવાનહ ૫-૬, પછી સુઈવાનહ ૭, એવં, તે મળી જિમ્યાં પછી પહિલઈ સામાયિક કરતાં સકરથા કહણા, પછઈ સામાયિક કરતાં સાંમ્મિના પઢિકમણા સીમ શકસ્તવ ન કહણા, જે કહઈ સકરથા કહણા તેહનઈ પૂછિયઈ-તે શકસ્તવ ૭ શકસ્તવાં માંહિલા કેહના શકસ્તવ કહીયઈ ? વલી જઈ અવડ્ઢના પચ્ચક્ષ્ણાણ કિયા હવઈ તહ સાંમ્મિની પઢિલેહણ પછઈહી સંવરણના સકરથા કરીયઈ, ઇહાં સાંમ્મિની પઢિલેહણના નિયમ નથી, પઢિલેહણ પછઈઈ સકરથા જિમ્યાં પછી થાઈ, એવં પરીછિજ્યો “પઢિકકમણે ૧ ચેઈહરે ૨, ભોયણસમયમ્મિ ૩ તહ ય સંવરણે ૪ । પઢિકકમણ ૫ સુયણ ૬ પઢિ-બોહ ૭ વંદણં સત્તહા જઈણો ॥૧॥ પઢિકક મત્ત્રો ગિહિણો વિહુ” ઇત્યાદિ શાસ્ત્ર વચન થકી શ્રાવકનઈ યતિનઈ સાત શકસ્તવ કરિવા લ્હઈ, એવં વિચારીજ્યો ॥૧૨૭॥

ભાષા-(સવારે)સામાયિક કરતાં રાઈ પાયચ્છિત્તના કાઉસ્સગ કરીને જે શકસ્તવ કહે છે તે નિદ્રા ત્યાગનું શકસ્તવ, અને જમ્યા પહેલાં મંદિરમાં દેવવંદન કરતાં જે શકસ્તવ કહે તે ખીણું દેરાસરનું, જમ્યા પહેલાં પચ્ચક્ષ્ણાણ પારીને જે શકસ્તવ કહે તે ત્રીણું ભોજનનું, જમ્યા પછી (ચૈત્યવંદન કરીને) જે શકસ્તવ કહે તે સંવરણ (ભોજન ત્યાગ)નું, ચોથું, અને ટાઢમ પઠિકમણના અંતનું ૫-૬, (અને સંધારા પોરસી ભણાવતાં) સુવાનું ૭ (આ રીતે દિવસ અને રાત્રિમાં સાત ચૈત્યવંદન

સાધુ શ્રાવકને કરવાના છે), એટલે જમ્યા બાદ પહેલી સામાયિક કરતાં શકસ્તવ કહેવો, પછી બીજી ત્રીજી સામાયિક કરતાં સાંજના પડિકમણા સુધી શકસ્તવ ન કહેવા, જે (બીજી ત્રીજી સામાયિકમાં પણ) શકસ્તવ કહેવાનું કહે તેને પૂછવું કે-તે શકસ્તવ સાત શકસ્તવોમાંથી કયું કહેવાય ? વત્રી જે અવડ્ડનું પચ્ચદ્ધાણુ કયું હોય તો સાંજની પડિલેહણુ કર્યા પછી પણ શકસ્તવ કહે, અહિં સાંજની પડિલેહણુનો નિયમ નથી (એટલે પડિલેહણુ કર્યા બાદ જમે તો શકસ્તવ ન કહેવું એમ નહીં, કિંતુ) પડિલેહણુ કર્યા પછી જમીને શકસ્તવ થાય, આ હકીકત છે, (સાત ચૈત્યવંદનો શાસ્ત્રોમાં આપ્રમાણે બતાવ્યા છે) ‘પડિક્કમણે’ (ઇત્યાદિ ગાથા, અર્થ- સવારે પડિકમણાના અંતે પચ્ચદ્ધાણુ કરીને ‘પરમસમય’ નું ૧, મંદિરમાં ૨, આહાર કરવાના ટાઈમે પચ્ચદ્ધાણુ પારવાનું ૩, આહાર કર્યાબાદ આહાર સંવરણનું ૪, સાંજે પડિકમણાના અંતે ‘ નમોડ્ડત્તુ’ નું ૫, સંશારા પોરસી ભણાવતાં “ ચત્તકસાય” નું ૬, સવારે પડિકમણાની સરૂઆતનું ૭, આ રીતે સાત ચૈત્યવંદન સાધુઓને તેમ પ્રતિક્રમણુ કરનાર ગૃહસ્થોને પણ થાય) આ પ્રકારના શાસ્ત્રવચનોથી સાધુશ્રાવક બન્નેને સાત વાર ચૈત્યવંદન કરવાના છે. આ હકીકત છે,

(તપા ખરતર ભેદ ગ્રંથ ૧ બોલ ૧૩૦, ગ્રંથ ૨ બોલ ૧૧૯ મો)

૧૨૮ પ્રશ્ન-તપા સાક્ષાત ગુરુનદ સંયોગ વિના વાંદણા દેતાં શ્રાવક ચલવલા ઉપરિ તથા [ચરવલાના અભાવે કટાસણા ઉપર] આધી આઠવડી આધી ચત્તવડી મુહપત્તી ઉપરિ વાંદણા થઈ, સ્વરતર શ્રાવક ચત્તવડી મુહપત્તી ઉપરિ વાંદણા થઈ, તે સ્યું ? ।

ભાષા—સાક્ષાત ગુરૂના અભાવે વાંદણા દેતાં તપા શ્રાવક ચરવલા ઉપર રાખેલી અડધી આઠવડી અને અડધી ચોવડી મુહપત્તી ઉપર વાંદણા દિયે અને ખરતર શ્રાવક ચોવડી મુહપત્તી ઉપર વાંદણા દિયે, તે શું ?

તત્રાર્થે—અવિષમ કૂર્માકાર સમશ્રેણિસ્થિત બિહું ગુરુજીના પગાં ઉપરિ વાંદણા દેવા, તે મળી સમી (આધી) ચડવડી મુહપત્તી ઉપરિ ચરતરાંને સંપ્રદાયઈ વાંદણા દિવરાઈ છૂઈ, મુહપત્તી તે ગુરુજીના ચરણ યુગલ કરી જાણીયઈ, જઈ બિવડી મુહપત્તી ઉપરિ વાંદણા ચઈ તડ વિષમસ્થિત પદ થાઈ, વિચાલઈ મુહપત્તીનઈ સલઈ કરી બિહું પગાંના અંતરાલ પિણ જણાઈ, જિમ યતિનઈ રજોહરણ વિચાલઈ દોરડઈ કરી બિહું ગુરુના પગાંની કલ્પના થાઈ, તેહજિ મળી શ્રાવકનઈ ચલવલા ઉપરિ વાંદણા (તપાની) વડી પોસાલના લહુડી પોસાલના યતિ ન દિવરાવઈ છૂઈ, એવં પરિછિજ્યો ॥૧૨૮॥

ભાષા—અવિષમ કૂર્માકાર સમશ્રેણિસ્થિત ગુરૂના અન્ને ચરણોપર વાંદણા દેવાના છે, માટે ખરતર સંપ્રદાયમાં સમી રાખેલ (અડધી) ચોવડી મુહપત્તી ઉપર વાંદણા દેવરાય છે, મુહપત્તીના બે વિભાગને ગુરૂના બે ચરણ કરીને જાણીએ છીએ, અને બે એવડી (અડધી ચોવડી ને અડધી આઠવડી) મુહપત્તી ઉપર વાંદણા દઈએ તો ચરણો વિષમસ્થિત થાય છે, (અને એમ રાખેલ) મુહપત્તીના વચગાળે સળ હોવાના અંગે અન્ને ચરણોના અંતરાલ પણ જાણાઈ આવે, જેમકે સાધુઓના ઓધાની વચગાળે આંધેલ ડોરાથી ગુરૂના બે ચરણોની કલ્પના થાય છે, એજ કારણને લઈને (તપાની) ન્હાની તથા મોટી પોસાળના યતિઓ શ્રાવકને ચરવલા ઉપર વાંદણા નથી દેવરાવતા, એ રીતે તપાસ કરજો.

(તપા ખરતર ભેદ ગ્રંથ ૧ બોલ ૧૩૦ મો)

૧૨૬ પ્રશ્ન—મુહપત્તી પડિલેહતાં સંહારઈ સ્વરતર પડિલેહઈ ? જે હમ લિખ્યા તે સ્યઈ મેલિ લિખ્યા ? તે સમખાતત નથીજિ, સમજીનઈ ઉત્તર લિખીયઈ, વલી પૂછ્યાં જણાસ્યઈ, અમ્હે પ્રવચન સારોદ્ધારની વડી ટીકા જોઈ, તિહાં વિસ્તાર પણઈ મુહપત્તીની ૨૫ પડિલેહણ તથા શરીરની ૨૫ પડિલેહણ છઈ, જિમ તેહમાંહિ લિખી છઈ તિમ શ્રીસ્વરતરનઈ કરાઈ છઈ, વલી થેઈ જોજ્યો ॥૧૨૬॥

ભાષા—‘ મુહપત્તી પડિલેહતાં ખરતર સંહારે પડિલેહે ’ એમ જે લખ્યું તે શું અભિપ્રાયથી લખ્યું છે ? તે કંઈ સમખાતત નથી. સમજીને ઉત્તર લખાય, વલી પૂછ્યેથી જણાશે, અમોએ પ્રવચન-સારોદ્ધારની મોટી ટીકા બેઠ છે, ત્યાં મુહપત્તી અને શરીરની ૨૫-૨૫ પડિલેહણનો વર્ણન વિસ્તારથી છે, તેમાં જેમ પડિલેહણની વિધિ લખી છે તેમ ખરતરને કરાય છે. વલી તમો પણ બેજો. +

(તપા ખરતર ભેદ ગ્રંથ ૧ બોલ ૧૩૧, ગ્રંથ ૨ બોલ ૧૪૭ મો)

૧૩૦ પ્રશ્ન—તથા તપારંઈ શ્રાવિકા ચાતિયાંનઈ જીમણઈ છેહ-હઈ કરી વાંદઈ, અનઈ સ્વરતરાંનઈ શ્રાવિકા ડાવઈ છેહહઈ કરી ચાતિયાંનઈ વાંદઈ, તે સ્યું ?

ભાષા—તપાની શ્રાવિકા યતિયોને જમણા છેડથી વાંદે છે, ને ખરતરની શ્રાવિકા ડાવા છેડથી યતિયોને વાંદે છે, તે શું ?

+ તપા ખરં ભેદ પૃં ૧૧૪ માં લખ્યું છે કે—“ ખરતર મુહપત્તી જમણા પાસેથી લઈ પચીસ બોલે પડિલેહણ કરતાં ગમે અંગે સૃષ્ટિવિરહ-ઉંધું ઉતારે છે ” એટલે પૂછવાનું કે—આ રીતે ઉંધું ઉતારવાનું ખરતરના કયા સામાચારી ગ્રંથમાં લખ્યું છે ? તે પ્રમાણ જન્વાચાર્ય બતાવે.

તત્રાર્થે-ઉત્તરાસંગ કરતાં શ્રાવક સગલે જિમ વાંદઈ છઈ તિમ શ્રાવિકા પુણિ યતિયાંનઈ ડાવડ છેહડડ લેઈ વાંદઈ દેવ જુહારઈ, એ વિધિવંદના કહીયઈ, તથા ગુજરાતિનઈ દેશઈ શ્રાવિકા સહૂઅઈ એકલંગ ઓઢણા પહિરણા પહિરઈ, તેહવઈ ઓઢણઈ ઓઢતાં ડાવડ ઓઢણાનડ છેહડડ પહિરણા સાથિ મેલી રાઘઈ, તિણઈ જિમણુજિ ઓઢણાનડ છેહડડ હાથિ લાગઈ, તે મળી ડાવઈ છેહડઈ વાંદી ન મકઈ. પિણ સદહણા સમી જોડયઈ ॥ ૧૩૦ ॥

ભાષા—અધા ગચ્છોમાં ઉત્તરાસંગ કરતાં શ્રાવક જન્મે વાંદે છે તેમ શ્રાવિકા પણ (ઓઢણાનો) ડાવે છેડા લઈને યતિઓને વાંદે. દેવભુહારે. એ વિધિવંદના કહેવાય તથા ગુજરાત દેશમાં અધીય શ્રાવિકાઓ ઓઢવા-પહેરવાને એક સંલંગ સાડી રાખે છે, તેવો ઓઢણો ઓઢતાં ઓઢણાનો ડાવે છેડા પહેરવાની ધાધરી સાથે મેલવી રાખે છે, એટલે ઓઢણાનો જમણોજ છેડો હાથમાં આવે, માટે ડાવે છેડાથી વાંદી ન શકે. પણ સદહણા સીધી જોઈયે. x

x તપા શ્રાવિકાઓનું જમણા છેડાથી વાંદવું શાસ્ત્રસંમત ત્યારેજ મનાય કે જ્યારે એના સમર્થનમાં કોઈ પણ સર્વમાન્ય શાસ્ત્ર પ્રમાણુ આપ્યો હોત, પરંતુ તે તો આપવાને મળ્યો નથી. તો પછી ક્રકત મોંઢાની વાતોનું મૂલ્ય શું ? બીજું મારવાડ આદિની ખરતર શ્રાવિકાઓનું ડાવે છેડેથી વંદન જો શાસ્ત્ર વિરુદ્ધ છે તો પછી તમામ દેશોના શ્રાવકો ઉત્તરાસનના ડાવે છેડાથી વંદન શા માટે કરે છે ? અને ગુજરાત આદિની માફક મારવાડ આદિની પણ તપા શ્રાવિકાઓ જમણા છેડાથી વંદન કરે છે કે કેમ ? એનો ઉત્તર જન્વાચાર્ય આપે.

(તપા ખરતર ભેદ ગ્રંથ ૧ બોલ ૧૩૨ મો)

૧૩૧ પ્રશ્ન—તથા તપા શ્રાવક તથા શ્રાવિકા ગુરુવાંદતાં અનઇ થાપનાનઇ વાંદતાં સ્વમાસમણ ૨ ઘડ, સ્વરતર થાપનાનઇ સ્વમાસમણ દેઇ વાંદઇ નહીં, ગુરુના ૩ સ્વમાસમણ ઘડ, તે કિહાં કહ્યા છઇ?

ભાષા—તપા શ્રાવક શ્રાવિકાઓ ગુરુને તથા થાપનાને વાંદન કરતાં બે ખમાસમણ દિયે છે, ને ખરતર થાપનાને ખમાસમણ દધને વાંદતા નથી તેમ ગુરુને (વાંદતાં) ત્રણ ખમાસમણ દિયે છે, તે કયાં કહ્યા છે ?

તત્રાર્થ—સ્વરતર ગુરુ આગલિ તથા થાપના આગલિ ૨ સ્વમાસમણ દેઇનઇ સામાયિક મુહપત્તી પહિલેહઇ છઇ, સ્વમાસમણ ૨ ની સદહણા પુણિ છઇ, જે મળી સામાયિકના કરણહાર શ્રાવક પહિલત સ્થાપનાચાર્યનઇ નવકાર ૩ કહણ પૂર્વક ઠવી “ ઇચ્છામિ સ્વમાસમણો ” એ પાઠ ૨૮ અક્ષર પ્રમાણ સ્વમાસમણ દેઇ વાંદઇ છઇ, પરં થાપનાનઇ ‘ઇચ્છકારિ સુહરાઇ-દેવસી’ પ્રમુખ વિદ્યમાન ગુરુની પરં નહીં કહતા, તથા બીજા કિણિ ગચ્છિ નથી પૂછીજતત, એવં પરીછેજ્યો ॥ ૧૩૧ ॥

ભાષા—ખરતર ગુરુ તથા થાપના, બન્નેની આગળ બે ખમાસમણ દધને સામાયિક મુહપત્તી પહિલેહે છે (અને આ બન્ને) ખમાસમણ દેવાની સદહણા પણ છે, કારણ કે સામાયિક કરનાર શ્રાવક પહેલાં ત્રણ નવકારથી સ્થાપનાચાર્ય સ્થાપીને “ ઇચ્છામિ ખમાસમણો ” ઇત્યાદિ અઘ્યાવીસ અક્ષર પ્રમાણ ખમાસમણ દધને વાંદે છે, પરંતુ વિદ્યમાન ગુરુની પેઠે સ્થાપનાચાર્યની આગળ “ ઇચ્છકારિ સુહરાઈ ” આદિ નથી કહેતા, તેમ બીજા પણ કોઇ ગચ્છમાં નથી કહેવાતા, આ રીતે છે.

(તપા ખરતર ભેદ ગ્રંથ ૧ બોલ ૧૩૩ મો)

૧૩૨ પ્રશ્ન—તથા દુઃખર્મા કાલિ ૨૦૦૪ યુગપ્રધાન આશ્રી લિખ્યા તે જાણ્યા, પરં તત્રાર્થે—શ્રીસુર્માસ્વામી આદિ દેઈ દુષ્પમહ સૂરિતાંઈ યુગપ્રધાન તુમ્હારૂ ગુરુ શ્રીદેવેન્દ્રસૂરિં લિખ્યા તે જાણ્યા, પરં એહવા વિચાર કિણઈ જૂને ભાષ્ય ચૂર્ણિ વૃત્તિ પ્રમુખ ગ્રન્થે હરિભદ્રસૂરિ શ્રીશીલાંકાચાર્ય પ્રમુખ ગીતાર્થે લિખ્યા હવડ તડ મનાઈ. અન્યથા તેહના જે સંતાનીયા હુવડ તે માન્યાજિ કરઈ, તથા શ્રીમહાવીરના પ્રથમ ગણધરનડે ઈયડ ‘દૂસમદંડિકા’ ગ્રન્થનડ મેલિ યુગપ્રધાન કહીયડ કિ ન કહીયડ ? શ્રીમહાવીર મોક્ષ પહુંતા પછી ૧૧ વર્ષ શ્રીગૌતમસ્વામિં તીર્થ ચલાવ્યડ શામ્ત્રે કહ્યડ છડે, એ ભાવ વિચારિવડ. અપરં શ્રીસુધર્માસ્વામિ તથા શ્રીવયરસ્વામિ પશ્વડે ઈયડ દૂસમદંડિકાનડ મેલિ જિ કોઈ યુગપ્રધાન જાણ્યા હવડ તડ નામ લેઈ જણાવેજ્યો જિમ તેહનડે યુગપ્રધાનાંની ઓલિમાંહિ ગિણીજડ, તેહવડ અતિશયવંત આચાર્ય જ્ઞાની કોઈ ઈયડ લેવિ નહીં જાણીતડ, જે કેહનડે આપણ માનીયડ તે અતિશયવંત કહ્યાઈ સદહ્યા.

વલી કોઈ સમકિતધારી દેવતા આરાધ્યડ થકડ યુગપ્રધાન નામ સ્વારી આચાર્યનડ કહડ તડ મનાઈ, આંપણ વિશેષડ ન જાણીયડ અનડ યુગપ્રધાનના વિરહ પુણિ આંપણવતડ કહ્યા ન જાઈ, જ્ઞાન તપ ચારિત્ર અતિશયના ઘણા ૨ ફેર દીસડ છડે તડ કિમ મમકિ પડડ ? તથા વયરસ્વામીના શિષ્ય શ્રીવયરસેન તેહની ઇન્દ્ર ચન્દ્ર નાગેન્દ્ર નિર્વૃત્તિક નામડ ચારિ શાસ્ત્રા થઈ તેહમાંહિ કોઈ

युगप्रधान किणई अतिशयवंत यतियइ तथा किणइ एक देवता-
अइ कह्यउ हवइ तउ जोईयइ, बीजाना कहा कोइ मानता नथी,
जिम श्रीजिनदत्तसूरिजीना नाम श्रीयुगप्रधान गुरुना गवेषक
अंबड (नागदेव) श्रावक भणी अट्टम तपइ आकर्षायइ देवताअइ युग-
प्रधान एहवइ शब्दइ करी कहा, परं ते अहंकारना बाह्या घणा मानता
नथी अनइ बीजा केहनइ देवताअइ युगप्रधान एहवइ नामइ
कहा पुणि जाण्या नथी, जइ कहा हउत तउ तेहनाइ चेला
अम्हारी परइ आंपांपणा गुरुनइ युगप्रधान कही बोलावत, आंपां-
पणी पट्टावलीमांहि तेहना नाम लिखत, परं न कीयइ देवताअइ
कहा न लिख्या इम संभावीयइ छइ ।

सहू शिष्य आंपणा २ गुरुना रागीजि थाइ, परं निराधारी
विद्या न चालइ, वली 'त्रिशतरंगिणी' नामि तपागच्छना कीधा
ग्रन्थमांहि ३०० (मा) श्लोके 'श्रीदेवसुन्दरयुगोत्तमसूरिराजाः' तथा
तत्रैव ग्रन्थे ३१० (मा) श्लोके "पद्माख्यदंडपरिकर-चिन्हैरूपलक्ष्य
सूरयो वन्द्याः । भवता युगप्रधानाः, शिवदा इत्यादितद्वयनमम् ॥
३१० ॥" इत्यादि वचननइ मेलि तपांरइ गच्छइ पुणि आंपणा
गुरुनइ युगप्रधान करी बोलाव्या छइ, परं जाणीयइ छइ तुम्हनइ
ए शास्त्रनउ सांभलीवउ न थयउ जइ ए शास्त्र सांभल्या होत
तउ इम न पूछत, सहूयइ रमतउ आप राखी रमइ, एवं आंपां-
पणा आचार्यानइ रागना बाह्या तेहना रागी युगप्रधान कही
बोलावइ छइ तउ तुम्हे इहां युगप्रधान कहतां कांइ दोहिला

થાઅત્ છત્ ? જે ભણી શ્રીહેમાચાર્યનહ 'કલિકાલકેવલી' એ વિરુદ્ધ કહાઈ છઈ, એવં પરીછેજ્યો ।

હિવણાં શ્રીલાહોરમાંહિ શ્રીઅકબર જલાલદીન વાદમાંહિ શ્રીબૃહત્સ્વરતરગચ્છનાયક શ્રીજિનમાણિક્યસૂરિપટ્ટાલંકાર શ્રીજિન-ચન્દ્રસૂરિજીનહ યોગ્યતા જાણી ખુસી થઈનહ યુગપ્રધાન નામઈ કરી બોલાવ્યા, શ્રીકર્મચન્દ્ર મન્ત્રીશ્વરહ યાચકાંનહ નવ હાથીના દાન આપ્યા, ૫૦૦ ઘોડા દાન આપ્યા, નવ ગામ સવા કોડિના દાન સર્વ યાચકાંનહ દીધા, મહામહોત્સવ કીધા, લાહોરમાંહિ અમારિ ઘોષણા ગજાવી, પાતીસાહી નવપતિ વજાઈ, શ્રીયુગપ્રધાન નામ દેતાં શ્રીપાતિસાહિજીનહ શ્રીકર્મચન્દ્રમુહુતહ ૧૨૦૦૦ રૂપઈયા ૧૨ હાથી ૧૨ ઘોડા ૨૭ કસવીના તુકકસ પેસ કીધા, તેહમાંહિ થકી શ્રીજીયહ ૧૨ રૂપઈયા ખુસી થઈ લેઈ બીજા સર્વ કર્મચન્દ્ર મુહુતાનહ વકસ્યા, इत्यादि મહોચ્છવ કરી સર્વ લોક સમક્ષ શ્રીયુગ પ્રધાન નામ થયા, તત્ તેહના શિષ્ય જઈ તેહના શ્રાવક તેહનહ યુગપ્રધાનહ કહઈ તત્ સ્યત્ દોષ થાઈ ? દેવતાના દીધા નામ મહાવીર માતા પિતાના દીધા નામ વર્દ્ધમાન, ગુરુના દીધા નામ કુમુદચન્દ્ર ટાકુરના દીધા નામ નગદલમિલક રાયરાણા મહતા પ્રમુખ મનાઈ છઈ, ત્રાલકાંના દીધા કોણિક તથા પિતાના દીધા શ્રેણિકના નામ મંભાસાર इत्यादि નામ સહુ માનઈ છઈ, તે ભણી શ્રીયુગપ્રધાનનહ નામિ તુમ્હે દૂહવાઅત્ તે સ્યું ?

વલી આજ પ્રમુ શ્રીમહાવીરરહ શાસનિ કિયઈઈ આચાર્યના 'જગતગુરુ' એહવા નામ કહ્યા હવઈ તત્ જોઈયહ, તત્।તુમ્હારા

ઋષિમતીના મદ્યારકનહ 'જગતગુરુ' એહવહ નામહ બૈરાં ગીતાંમાંહિ
ગાવહ છહ ત્યારહ તુમ્હારહ ચિત્તમાંહિ હર્ષ થાહ છહ, અનહ શ્રીજિન-
ચન્દ્રસૂરિના નામ 'યુગપ્રધાન' સાંભલી તુમ્હે દૂહવાઅહ તે સ્યું ?
શ્રીપાતિસાહિ પશ્વહ બીજાનહ દરીયાનહ 'જગતગુરુ' કહી ન બોલા-
વીયહ, જહ સાહિબ એ નામ સાંભલહ તહ તેહનહ ફજીત કરહ,
શ્રીશેખ અબ્દુલ ફજલ હજૂર અમ્હારહ 'જગતગુરુ' નામના (ઉપરિ)
ઋષિમતી પંઠ માનુચન્દ્ર સાથિ જવાવ થયા છહ, શેખહ જિમ ગુસ્સા-
માંહિ કહ્યા તે માનુચન્દ્ર જાણહ છહ, વલી લોકાંના કહ્યા 'તપા'
એહવા નામ કાંઈ માનહ છહ ? એવં વિચારતાં તુમ્હનહ એ પ્રશ્ન
પૂછતાં અજાણપણહ જણાહ છહ, જોડ્યો ॥ ૧૩૨ ॥

ભાષા—પંચમ કાળમાં જે હજાર અને ચાર યુગપ્રધાન બાબત જે
લખ્યું તે જાણ્યું, ઉત્તરમાં જણાવાનું કે—તમારા પૂર્વ ગુરૂ શ્રીદેવેન્દ્રસૂરિએ
શ્રીસુધર્માસ્વામીથી લખેને દુષ્પસદસૂરિપર્યંત (જે) યુગપ્રધાન લખ્યા તે
જાણ્યા, પરંતુ એવા વિચાર ભાષ્ય ચૂર્ણિ વૃત્તિ આદિ કોઈ પણ પ્રાચીન
ગ્રંથોમાં હરિભદ્રસૂરિ શ્રીશીલાંકાચાર્ય પ્રમુખ ગીતાર્થોએ લખ્યા હોય તો
મનાય અન્યથા જે તેના સંતાનીયા હોય તે માન્ય કરે, તથા એજ
દુષ્પસદિકા ગ્રંથના હિસાબે શ્રીમહાવીર પ્રભુના પહેલા ગણધરને યુગ-
પ્રધાન કહેવા કે નહીં ? શ્રીમહાવીર પ્રભુન નિર્વાણ પછી બાર વર્ષ
સુધી શ્રીગૌતમસ્વામીએ તીર્થ ચલાવ્યો એમ શાસ્ત્રોમાં કહેલ છે, આ
બાબત વિચારવી, બીજું આ 'દુષ્પસદિકા'ના હિસાબે શ્રીસુધર્મા
સ્વામી તથા શ્રીવજ્રસ્વામી શિવાય બીજા કોઈ યુગપ્રધાન જાણવામાં
આવ્યા હોય તો તેના નામ બતાવજો જેથી તેમને યુગપ્રધાનોની શ્રેણીમાં

ગણી શકાય, તેવો અતિશયવંત જ્ઞાની આચાર્ય કોઈ આ ક્ષેત્રમાં જણાતો નથી. જે કોઈને આપણે માનીએ અતિશયવંત કહ્યાજ સદ્દેશ છે.

વહી આરાધેલ સમકિતધારી દેવતા કોઈ આચાર્યને યુગપ્રધાન તરીકે કહે તો માની શકાય, આપણે વિશેષ ન જાણીએ અને યુગપ્રધાનનો વિરહ પણ આપણાથી ન કહેવાય, જ્ઞાન તપ અને ચારિત્ર સંબંધી અતિશયોનો તકાવત ઘણો જોવાય છે એટલે શું સમજ પડે ? તથા વજ્રસ્વામીના શિષ્ય વજ્રસેનસૂરિના ચાર શિષ્યો (નામે) ઇન્દ્ર ચન્દ્ર નાગેન્દ્ર અને નિર્વૃત્તિના નામથી ચાર શાખાઓ (કુલો) પ્રવૃત્ત થઈ, તેમાં કોઈ અતિશયવંત યુગપ્રધાન થયા એમ કોઈ અતિશયવંત સાધુએ લખ્યું હોય અથવા કોઈ દેવતાએ કહ્યું હોય તો જોઈએ, બીજાના કહ્યા પ્રમાણે કોઈ માનતો નથી, જેમકે યુગપ્રધાન ગુરૂના ગવેષક અંબડ (ઉકે નાગદેવ) શ્રાવકને અટૂઠમની તપસ્યાથી આકર્ષિત થએલ (ગિરનાર-નેમિજિના-ધિષ્ઠાતૃ અંબિકા) દેવીએ શ્રીજિનદત્તસૂરિજીનું નામ યુગપ્રધાન તરીકે કહ્યું, પરંતુ અભિમાનના વશથી કેટલાકો તે વાતને નથી પણ માનતા. અને બીજા કોઈ આચાર્યને દેવતાએ યુગપ્રધાન કહ્યા હોય તેવું જાણવામાં નથી આવ્યું, યદિ કહ્યા હોત તો તેમના ચેલાઓ અમારી માફક પોતપોતાના ગુરૂઓને યુગપ્રધાન કહીને બોલાવતા પોતપોતાની પદાવલીઓમાં તેના નામ યુગપ્રધાન તરીકે લખતા, પણ કોઈ દેવતાએ ન કહ્યા એટલે કોઈએ લખ્યા નહીં એમ સંભવિત છે.

બધાએ શિષ્યો પોતપોતાના ગુરૂઓના રાગીજ હોય પરંતુ નિરાધારી વિદ્યા નથી ચાલતી, તપગચ્છના આચાર્ય મુનિસુંદરસૂરિ રચિત ‘ત્રિદશતરંગિણી (ગુર્વાવલી)’ ના શ્લોક ૩૦૦ માં “શ્રીદેવસુન્દર-

યુગોત્તમસૂરિરાજા ” (આ પદ્ધતી) તેમ તેજ અંથના “પદ્માશ્વયંદ-
પરિકર-ચિન્હૈરુપલક્ષ્ય સૂરયો વંદ્યાઃ । ભવતા યુગપ્રધાનાઃ, શિવદા
ઈત્યાદિ તદ્વ્યનમમ્ ॥૩૧૦॥ શ્લોકે । ધૃત્યાદિ પ્રમાણથી તપા ગચ્છમાં
પણ પોતાના ગુરુને યુગપ્રધાન કહીને બોલાવ્યા છે. પરંતુ જાણાય છે કે
તમને તે અંથનું સાંભલવું નથી થયું, જે થયું હોત તો એમ ન
પૂછતા, રમ્મત રમતાં બધાએ પોતાનો અચાવ કરીને રમે છે, એ રીતે
પોતપોતાના આચાર્યોને તેઓના રાગીઓ રાગવશે યુગપ્રધાન કહીને
બોલાવે છે તો તમે તેમાં શા માટે દુઠાવો છો ? જે ભણી (ભૂતકાળમાં
થએલ) શ્રીહેમચંદ્રાચાર્યને ‘ કલિકાલ કેવલી ’ એ અિરૂદ કહેવાય છે,
હમણાં શ્રીબૃહત્ અરતરગચ્છનાયક શ્રીજિનમાણિક્યસૂરિ પદ્માલંકાર
શ્રીજિનચંદ્રસૂરિજીને લાહોરમાં અકબર આદશાહે યોગ્યતા જાણી ખુશી
થઈને ‘ યુગપ્રધાન ’ નામ કહી બોલાવ્યા અને તે નિમિત્તે મંત્રીશ્વર
શ્રીકર્મચંદ્ર વચ્છાવતે યાચકોને નવહાથી. પાંચસો ઘોડા. અને નવગામ.
એવં સવાકોડનો દાન આપી ભારે ઓચ્છવ કર્યો હતો. લાહોર આખામાં
અમારી ઘોષણા કરાવી. આદશાહે નૌઅત વગડાવી. તેમ આ પ્રસંગે
આદશાહને પણ મંત્રી કર્મચંદ્રે ૧૨૦૦૦) રૂપીયા ૧૨ હાથી ૧૨ ઘોડા ૨૭
કસબીના નુકસ ભેટ કર્યા તેમાંથી માત્ર બાર રૂપીયા આદશાહે ખુશી
થઈને લીધા, બાકીની બધીએ વસ્તુઓ મંત્રી કર્મચંદ્રને પાછી બફસીસ
કરી, એવા મહોચ્છવની સાથે સર્વલોક સમક્ષ યુગપ્રધાન પદ થયો એટલે
તેમના શિષ્યો તેમ શ્રાવકો તેમને યુગપ્રધાન કહે તો શું દોષ છે ?

દેવતાનું દીધું નામ મહાવીર (અને) માતાપિતાનું દીધું વર્દમાન,
ગુરુએ દીધેલ નામ કુમુદચંદ્ર, હાકુરના દીધા નગદલમિલક. રાય રાણા

મહેતા આદિ નામ મનાય છે, આળકોએ આપેલ નામ કોણિદ્ર તથા પિતાએ દીધું (અશોક તથા) શ્રેણિકરાગ્નનું નામ ભંભાસાર. ઇત્યાદિ અધાય માને છે. માટે યુગપ્રધાનના નામે તમે દુહવાઓ છો, તે શું ? +

+ તપા ખરતર ભેદ પૃ૦ ૧૧૫ માં દુષ્પમાસ્તોત્રની ૧૬-૧૭ અને ૧૮ મી ગાથાઓ ટાંકીને પૃ૦ ૧૧૬ માં લખ્યું છે કે-“ યુગપ્રધાન સર્વ એકાવતારી તથા પ્રાવચ્ચનિકાદિક આઠ ગુણના ધરનારા કહ્યા છે, અને યુગપ્રધાન હોય ત્યાં અઢી યોજનમાં સાત ઇતિ. ઉપદ્રવો ન થાય, યુગપ્રધાન તો શાસ્ત્રમાં આવા કહ્યા છે. હમણાંના સમયે જે ખરતર કહે છે તે બે હજાર ને ચાર માંહેના નહીં, પણ કોઈ બીજનજ છે ” એટલે પૂછવાનું કે ત્રેવીશે ઉદયોના અધા ૨૦૦૪ યુગપ્રધાનોના નામે આ ત્રણ ગાથાઓમાં તો શું હોય ? પણ આખા દુષ્પમાસ્તોત્રમાંએ છે ખરા કે ? જેના આધારે ખરતર ગચ્છના યુગપ્રધાનાચાર્યોને બે હજાર ને ચારથી જુદા માની શકાય, બીજું આ ત્રણ ગાથાઓમાં વર્ણવેલ યુગપ્રધાનના અતિશયો ખરતર ગચ્છના યુગપ્રધાનાચાર્યોમાં નહોતા એમ માનવાને ક્યા સર્વમાન્ય પ્રમાણભૂત ગ્રંથનો આધાર છે ? તે જ૦૦ બતાવે.

ખરતર ગચ્છવાળાઓ જેમને ૨૦૦૪ માંહેના યુગપ્રધાન માને છે તેમના ચરિત્રનું અવલોકન કરનારને સારી રીતે જાણમાં છે કે એ યુગપ્રધાનાચાર્યોના એકાવતારીપણાની સાક્ષિ દેવતાઓએ આપેલ છે. તેમ એમના વિહાર પ્રદેશોમાં કેવા કેવા ભયંકર મહામારી આદિ ઉપદ્રવો. કે જેનું યથાસ્થિત વર્ણન કરવું આ ક્ષુદ્ર બેખિનીની શક્તિ આહારનો વિષય છે, તે પણ નામૂદ થઈ ગયાં છે. તેમ એમના જીવનકાળમાં અપવાદ રૂપે એકાદ પણ એવો દાખલો નથી જડતો કે જેમાં ક્યાંએ

વલી આ પંચમકાળના સમયે પ્રભુ શ્રીમહાવીરના શાસને કાઠ પણ આચાર્યને ‘જગતગુરુ’ ના નામથી કહ્યા હોય તો જોઈએ, (એટલે

પણ એ યુગપ્રધાનાચાર્યોના વિહાર દરમ્યાન આજની માફક કલેશાગ્નિનો નવાત્રામુખી ફાટી નીકલ્યો હોય,

ખીજું દુષ્પમાસ્તોત્રની ગાથા ૧૮ મીમાં વર્ણવેલ પ્રાવચનિકત્વ ધર્મકથિકત્વાદિ પોતાના ૮ પ્રભાવક ગુણોના અંગે એ યુગપ્રધાનાચાર્યોએ હજારો જૈનેતરોને અનેક પ્રકારે પ્રભાવિત કરીને વિશુદ્ધ જૈનધર્મી બનાવ્યા, એટલુંજ નહીં બદકે તેને વિધર્મી જાતિઓ સાથેનો તમામ સંબંધ છોડાવીને ખીરનીરની માફક જૈનજાતિમાં સંમિલિત કરી દીધા કે જેથી તેઓ પોતાની વંશપરંપરા સુધી પણ જૈન ધર્મથી વિમુખ ન થઈ શકે, જેમકે આચાર્ય શ્રીજિનદત્તસૂરિજી કે જેમનો યુગપ્રધાન પદ અંખિકા દેવીએ પ્રસિદ્ધ કર્યાનો નિર્દેશ આ ગ્રંથકારે સ્વયં ઉપરના પ્રશ્નોત્તરમાં કર્યો છે, તેમ એમના ચરિત્રોમાં પણ વર્ણિત છે, એમણે એક લાખ અને ત્રીસ હજાર જૈનેતરોને પ્રતિબોધી એસવાળ જાતિમાં ભેળવીને ગુલેછા. ભૂરા. બાફણા. ભણસાળી પારેખ આદિ એનેકો ગોત્રપણે સ્થાપિત કર્યા છે. ચૈત્યવાસીઓના મતના પ્રખર ઉચ્છેદક અકલ્યાણક-વાદનિર્મૂલક આચાર્ય શ્રીજિનવલ્લભસૂરિએ લગભગ દશ હજાર જૈનેતરોને જૈનધર્માવલંબી બનાવ્યા, આચાર્ય જિનપતિસૂરિજી કે જેમણે અનેકા ઉદ્ધતવાદીઓ સાથેના વિવાદોમાં રાજસભા સમક્ષ વિજય પ્રાપ્ત કરી જૈનેન્દ્ર પ્રવચનની અતિશય મહાન્ પ્રભાવના કરી. આવા મહાન્ શાસન પ્રભાવક આચાર્યોમાં પણ યુગપ્રધાનના ગુણોનો અભાવ માનવો એતો ચન્દ્રમંડળમાં શીતલતાનો અને સૂર્યમંડળમાં ઉષ્ણતાનો અભાવ માનવા

પૂર્વાચાર્યેનિ કોઠનેય 'જગતગુરુ' નથી કહ્યા) તો તમારા ઋષિમતીના ભદ્રારકને 'જગતગુરુ' નામથી (ન્યારે) ઐરાઓ ગીતોમાં ગાવે છે ત્યારે તમારા ચિત્તમાં હર્ષ થાય છે, અને શ્રીજિનયન્દ્રસૂરિનું નામ 'યુગપ્રધાન' એવું સાંભળી તમો દુહવાઓ તે શું? (ખીજી) આદશાહ શિવાય ખીજ કોઠનાય દરીખાને 'જગતગુરુ' કહીને ન બોલાવાય, જે સાહિબ (તે દરીખાનાનો માલિક) સાંભળે તો તેની ક્રોધેતી કરે, શેખ અખ્દુલ ક્રોધને ત્યાં અમારી સમક્ષ 'જગતગુરુ' નામની (આખતમાં) ઋષિમતી પં૦ ભાનુચન્દ્ર સાથે (સવાત્ર) જવાખ થયા છે, શેખે ગુસ્સામાં આવીને જે શબ્દો કહ્યા છે તે ભાનુચન્દ્ર જાણે છે, વલી લોકોનો કહેલ 'તપા' એ નામ કેમ માનો છો? આ રીતે વિચાર કરતાં જણાય છે કે આ પ્રશ્ન પૂછતાં તમને એ આખતનું અજાણપણું છે, જોજો.

(તપા ખરતર ભેદ ગ્રંથ ૧ બોલ ૧૩૪ મો.)

૧૩૩ પ્રશ્ન-તથા સ્વરતર યતિ કહિ દોરા ન બાંધઈ, તે સ્યું?

ભાષા:- ખરતર યતિઓ કંબરે કંદોરો નથી બાંધતા, તે શું?

તત્રાર્થે-કારણ વિશેષઈ ઇચ્છઈ કાલિ સ્વરતરાંનઈ પુણિ કણદોરા બાંધીયઈ છઈ, માનીયઈ છઈ, નિકારણઈ કણદોરા બાંધઈ તત્ત્વ દોષ છઈ, 'બંધઈ કહિપટ્ટમકજ્જો' ઇતિ વચનાત્ । શ્રાવકાંનઈ કણદોરા શરીરસંલગ્ન છઈ, શ્રાવિકા અનઈ સાધ્વીયાંનઈ કણદોરા નથી, દૃઢ બંધન છઈ, પહિલત યતિ ચોલપટ્ટત્ત્વ ન બાંધતા 'અગ્ગોચરઓ'

ખરાખરજ છે તેમ એમનામાં અસદ્દોષારોપણ કરી જે અવગુણ ખતાવવા એ છે. દુધમાં પોરા ખતાવવા ખરાખર, એમ કરવામાં કાળાનુભાવે બહુજતાએ વૃદ્ધિ પામેલ પરોત્કર્ષાસહિષ્ણુતા દેવીના સામ્રાજ્યનો મહાન્ પ્રભાવ છે.

યતિ કરતા, હિવણં કિત્તેલેકે ગચ્છે દોરડઈ કરી ચોલપટ્ટુ બંધાઈ છઠ્ઠ, કેતલેકે ગચ્છે કસુંટી સોડયઈ છઠ્ઠ, એ વાતનંડ સ્યું પૂછિવડ ? ૧૩૩

ભાષા—કારણ વિશેષે આ પંચમ કાળમાં ખરતરોને પણ કંદોરો અધાય છે તેમ આંધવાનું મનાય છે, વગર કારણે કંદોરો આંધવામાં દોષ છે, શાસ્ત્રના “ બંધઈ કહિપટ્ટમકજ્જો ” આવા વાક્યોથી આ વાતનું સમર્થન થાય છે, શ્રાવકોને કંદોરો શરીરસંલગ્ન હોય છે, શ્રાવિકા અને સાધ્વીઓને કંદોરો નહીં પણ મજબૂત અંધન હોય છે, પહેલાં યતિઓ ચોલપટ્ટો આંધતા નહીં કિંતુ ‘ અગ્ગોયરઓ ’ કરતા. એટલે બંને કૂણીઓથી ચોલપટ્ટાને ધારણ કરતા, હમણાં કેટલા એક ગચ્છોમાં ડોરાથી ચોલપટ્ટો અંધાય છે અને કેટલા એક ગચ્છોમાં કસુંટી ખોંસાય છે એટલે પાટલી દેવાય છે, એ વાતનું પૂછવું શું ? x

(તપા ખરતર ભેદ ગ્રંથ ૧ બોલ ૧૩૫ મો)

૧૩૪ પ્રશ્ન—તથા સ્વરતરાંનંડ પાક્કી ચૌમાસી સંવચ્છરીના તપ ચડત્થ છટ્ટુ અટ્ટમ સમપ્પિ સ્વામણં કીયાં પછઈ કહઈ, પાક્કી ચડમાસી સંવચ્છરીની આલોચણાની વેલાઅઈ ન કહઈ, તે સ્યું ?

ભાષા—ખરતરોને પાખી ચોમાસી અને સંવચ્છરીના ચડિત્થ છટ્ટુ

x તપા ખરતર ભેદ પૃ. ૧૧૬ માં લખ્યું છે કે “ શ્રીજિનપ્રતિમાને પણ કંદોરો હોય છે ” એટલે પૂછવાનું કે જિન પ્રતિમાને કંદોરો હોય છે કે કછોટો ? જો કંદોરો હોય તો શું કંદોરાથી પુરૂષચિન્હ ઢંકાય ખરું કે ? જો ન ઢંકાય તો પછી ‘ જિન પ્રતિમાને પણ કંદોરો હોય છે ’ એમ ક્યા આધારે માની શકાય ? એનો ઉત્તર પ્રમાણિક ગ્રંથના આધારે જાણવાયાર્ય આપે.

અને અટ્ટમ તેની આલોઅણાની વેલાએ ન કહેતાં સમાપ્તિ ખામણાના ટાઇમે કહે છે, તે શું ?

ત્રાર્થ—ખરતરાંનઈ ત્રિહું પર્વના તપ આલોઅણાની વેલાયઈ
‘ચઉત્થેણં પઢિક્કમહ’ ઇમ પાચીનઈ દિનઈ, ‘છટ્ટેણં પઢિક્કમહ’
ઇમ ત્રિહું ચઉમાસે કહઈ, સંવચ્છરીયઈ ‘અટ્ટમેણં પઢિક્કમહ’ ઇમ
કહાઈ છઈ, સમાપ્તિ ચામણાની વેલાઅઈ પડિ ઠી વલી ચિતારિવા
મણી અશક્તને જણાવિવા મણી ? ઉપવાસ અથવા ૨ આંબિલ
અથવા ત્રણ નીવી. ૪ એકાસણા (બેવિયાસણા) અથવા ૨ સહસ્ર
સજ્ઞાય કરી તે પડિ ઠી વિધિ પૂરિજ્યો. ઇમ કહીયઈ છઈ એવં
પરીછિજ્યો, વિણ પૂઠ્યાં એ ભાવ કિમ જણાઈ ? ॥૧ ૪॥

ભાષા—ખરતરાંને ત્રણે પર્વના તપ આલોઅણાની વેલાએ પાખીના
દિવસે “ચઉત્થેણં પઢિક્કમહ” ત્રણે ચોમાસીઓએ ‘છટ્ટેણં પઢિક્કમહ’
સંવચ્છરીએ “અટ્ટમેણં પઢિક્કમહ” એમ કહેવાય છે, અને સમાપ્તિ
ખામણાની વેલાએ પેઠને ફરીથી સ્મરણ કરવા તેમ અશક્તને જાણ કરવા
માટે “એક ઉપવાસ, બે આંબિલ, ત્રણ નીવી ચાર એકાસણા (આઠ
બિયાસણા) અને બે હજાર સજ્ઞાય કરી તે પેઠ પૂરજો” એમ કહીયે
છીએ. † આ રીતે છે. વગર પૂછ્યે એ હકીકત કેમ જણાય ?

† તપાઓ પાખી આદિ પઠિક્કમવાના ટાઇમેજ એક ઉપવાસ
આદિ કહે છે તે જો કાંઈ સર્વામાન્ય પ્રમાણિક અંથના આધારે હોય
તો તે પ્રમાણ જાળવાયાર્ય અતાવે અન્યથા આવા રાંડોલીઓના ઝગડા
કરીને સમય બરબાદ અને કર્મબંધન તથા જૈન સંઘના પદસા બરબાદ
કરવા શિવાય શું લાભ થવાનું ? તે જાળવાયાર્ય સમજાવે.

(તપા ખરતર ભેદ ગ્રંથ ૧ ખોલ ૧૩૭, ગ્રંથ ૨ ખોલ ૧૬૦ મે)

૧૩૫ પ્રશ્ન-શ્રીજિનશાસનિ વડરાગઈ દીક્ષા દીજઈ અનઈ સ્વતરાં-
નઈ સ્વરીદ-મોલના લીધા ચેલા દીલાઈ છઈ, તે સ્યું ?

ભાષા:-શ્રીજિનશાસનમાં વૈરાગ્યથી દીક્ષા દેવાય છે. અને ખરતરોને
મૂલ્યથી ખરીદી લીધેલાઓને દીક્ષા દેવાય છે. તે શું ?

તત્ત્વ—શ્રીજિનશાસનમાંહિ ભાવ પશ્વઈ દીક્ષા ન દિવરાઈ,
હિવઈ તે દીક્ષાના ભાવ વડરાગઈ થાઈ તથા આહારાદિનઈ અર્થિ
પુણિ સંપ્રતિ રાજાના જીવ પૂર્વભવના રાંકની પરઈ મૂલ્ય સંતાવ્યાં
પુણિ દીક્ષાના ભાવ થાઈ, શ્રીગુરુ પુણિ લાભ જાણી દીક્ષા આપઈ,
એવં લાજઈ મયઈ ભાવઈ (દીક્ષા)થાઈ, શ્રીઠાણાંગસૂત્રમાંહિ ‘મૂઆવડ્તા
બૂયાવડ્તા’ ઇત્યાદિ દીક્ષા દેવાના વિશેષ કહ્યા છઈ, શુદ્ધપ્રરૂપક
ગીતાર્થનઈ પૂછિજ્યો, તે મલી પરિ સહુ કહિસ્યઈ, તે ભાવ લિલા-
અઈ નહીં, મુહામુહ મિલ્યાંજિ કહ્યા જાઈ, શિષ્યનઈ નસાઈ દીક્ષા
દીજઈ? પીડા ઊપજાવી દીક્ષા દિવરાઈ? એવં પરિછેજ્યો, તથા ગૃહસ્થે
આપણઈ કાજિ સ્વરીદ કીધા હવઈ તેહનઈ જઈ ભાવ થાઈ તડ
તેહનઈ ચારિત્રીયા દીક્ષા દીયાજિ કરઈ, ચન્દનબાલાનઈ મગવંતઈ
દીક્ષા દીધી, છેહડઈ ભોળહારનઈ દીક્ષાના ભાવ જોડ્યઈ, દીક્ષાના
ભાવ પશ્વઈ ન દીક્ષીયઈ, પરં મલી શુદ્ધજાતિ જોઈ દીક્ષીયઈ, વલી
ઈમ સાંમલીયઈ છઈ શ્રીઆણંદવિમલસૂરિ નવઈ ગચ્છ કરતાં
પરિવાર થોડા જાણી ચારણ કનડા રજપૂત પ્રમુલ્ક શિષ્ય દીલ્યા,
વડી પોસાલના યતિયાંનઈ તેહના નામ જાતિ પ્રમુલ્ક વિસ્તર લિલ્યા
છઈ, નવી પ્રરૂપણા તેહની કીધી લિલ્યા છઈ, જઈ ભાવ હવઈ તડ

પૂજ્યો, ઋષિમતિયાને પુણિ માતા પિતાનહ નિર્વાહ નિમિત્તિ
શ્રાવક શ્રાવિકા દ્રવ્ય દેઈનહ તેહના દીકરાનહ દીક્ષા દિવરાઈ છડ,
દષ્ટિરાગ છાંડિનહ જોજ્યો, શુદ્ધિ લહિસ્યહ ॥૧૩૫॥

ભાષા-શ્રીગિનશાસનમાં ભાવ વગર દીક્ષા નથી દેવાતી, હવે
તે દીક્ષાના ભાવ વૈરાગ્યથી થાય તથા આહારાદિના નિમિત્તે સંપ્રતિરાગના
છવ પૂર્વભવના રાંકની પેરે ભૂખથી સંતાવ્યાં પણ દીક્ષાના ભાવ થાય,
ગુરુમહારાજ પણ લાલ જાણીને દીક્ષા આપે, એવં લગ્નમથી ભયથી
અને ભાવથી (દીક્ષા) થાય, શ્રીદાણાંગ સૂત્રના મૂળ પાઠમાં “ મૂઝાવ-
હત્તા વૂયાવહત્તા ” ઇત્યાદિ વિશેષ (પ્રકાર) દીક્ષા દેવાના કહ્યા છે.
તે શુદ્ધ પ્રપંક ગીતાર્થને પૂછજો, તે સારી રીતે બધી હકીકત કહેશે, તે
હકીકત લખાય નહીં અરુચિ મલ્લેજ કહેવાય, (ખીજી) શિષ્યને નસાડી
ભગડી (તેમ લાગતા વળગતાઓને) પીડા ઉપજવીને દીક્ષા દેવાય કે ?
આ રીતે હકીકત છે, તથા ગૃહસ્થે પોતાને માટે જે ખરીદેલા હોય
તેના જે ભાવ થાય તો તેને સંયમીઓ દીક્ષા આપેજ છે અંદનખાણાને
ભગવંતે દીક્ષા દીધી છે, અંતે લેનારના ભાવ દીક્ષા લેવાના હોવા
જોઈએ. લેનારના ભાવ શિવાય દીક્ષા ન દેવાય, પરંતુ જાતિ
શુદ્ધતા આદિ જોવી જોઈએ, વલી એમ સાંભળીએ છીએ કે શ્રીઆ-
ણુંદવિમલસૂરિએ નવીન ગચ્છ (સ્થાપન) કરતાં પરિવાર થોડો જાણી
ચારણુ-ભાટ-રજપૂત વિગેરેને દીક્ષિત કરી શિષ્ય કર્યા હતા, (જે)
વડી પોસાણનાં યતિઓએ તેના નામ જાતિ આદિ વિસ્તારે લખ્યા છે,
નવી પ્રપણા પણ તેની લખી છે. જે (જાણવાના) ભાવ હોય તો
પૂછી જોજો, ઋષિમતીઓને પણ માતા પિતાને નિર્વાહ નિમિત્તે શ્રાવક

શ્રાવિકાઓ દ્રવ્ય આપીને તેના છોકરાઓને દીક્ષા દેવારવે છે, + દષ્ટિરાગ છોડીને જોજો. સત્ય હકીકત જડશે.

+ આજે પણ દીક્ષા લેનારના માતા પિતા યા સ્ત્રિયાદિના નિર્વાહ નિમિત્તે યા કરજદારી ફિટાવવા નિમિત્તે ભક્તજનો દ્વારા ચેલાઓના લોભવશે હજારો રૂપિયા તપાઓ શું નથી અપાવતા ? એના વિચારમાં ભવભીરતા ધારણ કરીને અન્યત્ર ક્યાંય ન જતાં સ્વસમુદાયનોજ વિચાર સ્વસ્થચિત્તે જાળવાયાર્થ કરી લે.

ખીજું શાસ્ત્રોમાં કરજદારને દીક્ષા દેવાની સખ્ત મનાઇ છે. છતાં વિજયચન્દ્ર કે જે વસ્તુપાલ તેજપાલનો ગુમાસ્તો હતો અને નામામાં ઘોટાળો કરવાના અંગે કરજદાર હોવાથી જેને વસ્તુપાલે કેદ કર્યો હતો, તેને તપાના મૂળપુરૂષ જગચ્ચન્દ્રસૂરિએ દીક્ષા દઇને આચાર્યપદ અર્પણ કર્યાનો ઉલ્લેખ આઠ મુનિસુન્દરસૂરિ ગુર્વાવલીમાં આ રીતે કરે છે—

પુરા વિજયચન્દ્રોઽમૂ-દ્વસ્તુપાલસ્ય મન્ત્રિણઃ ।

સચિવો લેખ્યકે દેયે, ક્ષિપ્તઃ કારાગૃહેઽન્યદા ॥૧૧॥

દેવભદ્રગણીનાં સ, દ્વિધા શિષ્ણાકૃતેઽર્પિતઃ ।

નામ્ના વિજયચન્દ્રોઽમૂત્, પ્રાક્તદાઽપ્યાપ્તશાસ્ત્રવિત્ ॥૧૨૩॥

(દેવભદ્રગણીન્દ્રૈઃ સ, બોધિતો મન્ત્રિગજતઃ ।

વિમોચ્ય શ્રીજગન્નચન્દ્ર-સૂરિપાર્શ્વેઽગ્રહીદ્વમ્ ॥૧૨૩॥ પાઠાંતર)

શ્રીજગન્નચન્દ્રગન્ધર્વૈઃ, શિષ્યવાત્સલ્યશાલિભિઃ ।

ન્યસ્તઃ સૂરિપદે દેવ-ભદ્રગણ્યુપરોધતઃ ॥ ૧૨૪ ॥

આ રીતે કરજદારને. તે પણ કેદીને દીક્ષા દેવાનું કયા શાસ્ત્રમાં કહ્યું છે ?

(તપા ખરતર ભેદ ગ્રંથ ૧ બોલ ૧૩૯, ગ્રંથ ૨ બોલ ૮૨ મો)

૧૩૬ પ્રશ્ન-સ્વરતર શ્રીમહાવીરનહ જન્મનહ અધિકારિ ગુલી અણાવહ છહ, તે ચડાવા કરી લ્યહ પુણિ છહ, તે પૂછિવહ છહ ?

ભાષા:-શ્રીમહાવીર પ્રભુના જન્મ વાંચનના પ્રસંગે ખરતરોને ગુણી અણાવે છે અને તે ચડાવો કરીને લિયે પલુ છે, તે પૂછવાનું છે ?

તત્રાર્થે-તપાંરી વડી પોસાલિ તથા તપાંની લહુડી પોમાલિ હિવણાંડે મહાવીરનહ જન્મ પરમ્પરા અહલાં (?) ગુલી વધારી લિવરાવહ છહ, પરં ઋષિમતીએ નવહ ગચ્છિ માંડનાં તે છાંડી, જિમ નાગોરીતપાના પોસાલીયા મહાતમાનહ જન્મહ ગુલી લીજહ છહ, અનહ પાસચંદહ નવી પ્રરૂપણા કરતાં ગુલી નિષેધી છહ તિમ હહાં પિણ આપમતીપણહ દીસહ છહ, વિચારી જોજ્યો, વલી ગુલીની પરિ ઋષિમતીયાંનહ પાઘીયહ ચહમાસહ સંવચ્છરીયહ અજિયસંતા માંહોમાંહિ ચડાવહ કરી વેચાહ છહ, મહારાગદ્વેષના મૂલ જાણીયહ છહ, પરં કિયહઈવતી તે વાત મિટતી નથી, યતિનહ એહવહ ઠામિ મૌન કરી રહિવહ ઘટહ, વલી વિચારિજ્યો, તથા તપાં ઋષિમતીયાંનહ કલ્પપોથાના રાતીજગા ન થાતા, હિવહ દેલાદેલી કલ્પપોથાના રાતીજગા (કરિવા લાગા છહ, વલી) કલ્પપોથા ઘર થકી ગાજાવાજા કરી નાણતા, હિવહ તેહ થાહ છહ, તપાંરહ રાતિ કિયહઈ મહાતમાની પોસાલિ દીવા ન કીજતા, હિવણાં રાતિ ઉપાસરામાંહિ દીવા કીજહ છહ, શ્રાવક જે હહ તે પુણિ તાર્થીયા બલદની પરિ કાંહ કહી સકતા નથી, એ કલિ-કાલના દોષ, પ્રવૃત્તિ દોષ કિયહવતહ વાર્યો ન જાસ્યહ, જાતે

દીહે એહી ધોલપંથમાંહિ પડિસ્યઇ, એવં વિચારિજ્યો, જઇ મૂલગો
ગચ્છ મૂંકી કુમત કુસદ્દહણા મૂંકી ધર્મર્થ પ્રવર્ત્યા તડ કોઇ
એક સદ્દહણા સૂચી રાલડ તડ લોકાંમાંહિ ધર્મની નિન્દા ટલડ,
એવં વિચારિજ્યો ॥ ૧૩૬ ॥

ભાષા:—તપાની ન્હાની તથા મોટી પોસાળમાં પરંપરાએ મહાવીરના
જન્મપ્રસંગે હમણાં પણ ગુલી વધાવીને લેવાય છે, પરંતુ ઋષિમતીએ
નવો ગચ્છ ચલાવતાં તે છોડી દીધી છે, જેમ નાગેરીતપાના માહાત્માઓને
વીર જન્મપ્રસંગે ગુલી લેવાય છે, અને પાર્શ્વચન્દ્રસૂરિએ નવી પ્રપણા
કરતાં ગુલી નિષેધી છે, તેમ અહિં પણ આપમતીયાપણું દેખાય છે,
વિચારી જોજો, ખીજું ગુલીની પરે ઋષિમતીઓને પાખી ચોમાસી અને
સંવચ્છરીએ અનિતશાંતિસ્તવ પણ આપસમાં ચઢાવો કરી વેચાય છે.
તે મહા રાગદ્વેષના મૂળ અને છે છતાં કોઈ પણ રીતે તે વાત મટતી
નથી, યતિને આવા પ્રસંગે મૌન રહેવું ઘટે, વલી વિચારજો, તથા
તપા ઋષિમતીઓને કદપપુસ્તકનું રાત્રિજાગરણ પહેલાં નહોતું થતું,
પણ હવે દેખાદેખી કરવા લાગ્યા છે, અને પહેલાં કદપપુસ્તક ઘેરથી
વાળગાળ કરી નહોતા લાવતા, હવે તે પણ થાય છે, તપાઓને કોઈ પણ
યતિના ઉપાશ્રયે રાત્રિનાં દીવા પહેલાં નહોતા થતાં. હમણાં તે થાય છે,
આવકો પણ નાથીયા બળદની માફક કાંઈ કહી શકતા નથી, આ
કલિકાળનો દોષ છે, પ્રવૃત્તિ દોષ કાષ્ઠથીએ રોકાશે નહીં અને જતે
દહાડે એજ ધોખપંથમાં પડી જશે, આ રીતે વિચારજો, જો મૂળ
ગચ્છને મૂકી તેમ કુમત-કુસદ્દહણા મૂકી ધર્મ નિમિત્તે પ્રવર્ત્યા છો
તો કોઈ પણ એક સદ્દહણા સૂચી રાખો તો લોકોમાં ધર્મની નિંદા
ટળે. આ રીતે વિચારજો,

(તપા ખરતર ભેદ ગ્રંથ ૧ બોલ ૧૩૮, ગ્રંથ ૨ બોલ ૧૫૨ મો)

૧૩૭ પ્રશ્ન—જે સ્વરતરગચ્છિ પંચનદી સાધઈ છઈ ? ક્ષેત્ર-પાલ યોગિની નદી ધર્માર્થિનઈ સાધણી નહીં કહી, ઇહાં ઘણા જીવાંરી વિરાધના થાઈ છઈ, તે મળી એ સ્વરતરાંરઈ મટારક ૫ નદી સાધઈ છઈ, તે સ્યું ?

ભાષા—ખરતર ગચ્છમાં પંચનદી સાધે છે, પણ શાસ્ત્રોમાં ક્ષેત્રપાલ યોગિની નદી વિગેરે સાધવી ધર્માર્થિને માટે મના કરી છે, કારણ કે એમાં ઘણા જીવોની વિરાધના થાય છે. અને ખરતરોને ભટારક પંચનદી સાધે છે, તે શું ?

તત્રાર્થે—શ્રીસંઘનઈ સમાધાન નિમિત્તિ શ્રીયુગપ્રધાન શ્રીજિન-દત્તસૂરિજીએ પાંચાં નદીયાંના દેવતા સૂરિમંત્રનઈ ગુણણઈ કરી તપસંયમઈ કરી સંતોષ્યા હતા, દેવતાએ પુણિ સંતુષ્ટ થયે થકે વાચા લીધી હતી જે રૂપેઈ દેશમાંહિ જે તુમ્હારા સૂરિમંત્રધારી ગચ્છનાયક આવઈ તે ઇહાં નદીનઈ એકઠઈ મેલિ થયઈ સૂરિમંત્ર જાપ કરઈ, અમ્હે પુણિ સંઘના વિઘન નિવારિસ્યાં, એતલઈ વર દીધઈ થકઈ શ્રાવક શ્રાવિકા લોકઈ તેહ દેવતાનઈ બલિબાકુલની પૂજા સાહમ્મી મળી કીધી, એતલઈ મેલઈ હિવણાંઈ એ પંચનદી સધાઈ છઈ, સંઘનઈ કાર્યઈ ગુરુ પુણિ ૫ નદીનઈ મેલઈતાંં પ્રવહણનઈ મેલિ પહુંચઈ, ગુણણા પાંચાં નંદીના અધિષ્ઠાયકનઈ મેલિ જૂજૂઆ કરઈ, એક એક જૂજૂઆ અધિષ્ઠાયક એકઠા ગુણણા ન માનઈ, એ ચાલિ છઈ, અનઈ શ્રીઠાણાંગ સિદ્ધાંતમાંહિ પાંચમઈ ઠાણઈ પાંચ મહાનદીનઈ વિષઈ કારણવિશેષઈ જાઈવડ કહ્યવ

છંદ, ‘ ઉત્તરિત્તાં વા સંતરિત્તાં વા ’ એહવા પાઠઈ કરી તેહનહ વિષઈ તરિવડ વારમ્વાર તરિવડ કારણ વિશેષઈ કહ્યડ છંદ, તિહાં પુણિ નીલફૂલણિ સંભવઈ ત્રસજીવ પુણિ હુવઈ વા લહઈ, તેહ ઉતરિવાના પ્રાયશ્ચિત્ત ઇરિયાવહી પ્રમુખ જે આગમમાંહિ કહ્યા હવઈ તે વિચારીયઈ, અસંબદ્ધ બોલ ન બોલીયઈ ।

વલી ક્ષેત્રદેવતા તથા ભવનદેવતા પ્રમુખ દેવતાના કાઠ-સગ્ગ સાંખિનહ પઢિકમણઈ તથા પાઘી ચડમાસી સંવચ્છરીનહ પઢિકમણઈ કરતાં દેવતાના કાઠસગ્ગ થુઈ પ્રમુખ સહુ ગચ્છવાસી કરઈ છંદ, એવં દૃષ્ટિરાગ છાંડિ વિચારિજ્યો, જાણીયઈ છંદ સમખિ પડિસ્યઈ, કિવારેક ગુણણા સમા ન થાઈ તડ ઉપદ્રવ પુણિ તે દેવતા જણાવઈ, જે ભણી લોક કહાવતઈ સાંભલીયઈ છંદ-તપાં ઋષિમતીયાંનહ ગચ્છિ થોડદીહા શ્રીહીરવિજયસૂરિં સંઘનહ ગચ્છ-નહ ઉદય નિમિત્તિ ઉચ્છિષ્ટચંડાલિની દેવતા મડલઈ પ્રકારઈ સાધિવી માંઢી હતી. પરં કિણઈકઈ મેલિ દેવતા ન સધાણી કિન્તુ કોપિત થઈ, પછી યતિ શત ૨ તથા અઢીશત શત (?) યતિના યાન કીધા, પછઈ વલી ફેરીનહ ઉચ્છિષ્ટા દેવતા રૂઢઈ મેલિ નવીદા સાધી, પછી તે ભઈયાની ગચ્છની પ્રતિષ્ઠા વિશેષઈ વાધી, ઇહાં પછઈ અધિકા ઓછા કૂડ સાચ કેવલી જાણઈ, એવં ગીતાર્થ ગુરુ સંઘનહ ઉદયનહ નિમિત્તિ દેવતાનહ સાધઈ આરાધઈ, એવં કૂઢી મતિ સાથિ વિચારીનહ એહવા કુબોલ ન બોલીયઈ. જે ચિતવીયઈ પર તે પડઈ ઘરિ, એવં જાણી સમેક્ષી બોલીયઈ તડ લાભ થાઈ ।

વલી ‘ ધાણધાર ’ દેસઈ ‘ મગરવાડ ’ ગામિ પાલ્હણપુરનહ

પાસિ 'માણિભદ્ર' નામિ લોકપ્રસિદ્ધ ક્ષેત્રપાલ છઠ્ઠ, સિન્દૂર તેલ તિલવટિં પૂજાઈ છઠ્ઠ, તિહાં લહુડી પોસાલના તપા આચાર્ય પદસ્થાપનાનઈ અધિકારિ સવા મણની ગુલપાપડી કરી પૂજી એકરાતિ ગુણણા કરી તેહનઈ આરાધઈ છઠ્ઠ । પાતિસાહ પાસિ જાતાં શ્રીહીરવિજયસૂરિં પુણિ તેતલી ગુલપાપડી પાલ્હણપુરના શ્રાવકાં પાંહી કરાવી પૂજા ગુણણા કરી શ્રીપાતસાહજી પાસે પહુંતા, સમહત થીયા, એ વાત માંહિલા માણસ પાસિ જાણિ સાંભલી, એ વાત સહુ જાણઈ છઠ્ઠ, એ દોષ લોકમાંહિ પ્રસિદ્ધ છઠ્ઠ, વલી જે ગરજૂ હવઈ તે પાલ્હણપુરના તપા યતિયાંનઈ પૂછેજ્યો, એ વાત બર્ણાઈનઈ કહિસ્યઈ, પરં દૃષ્ટિરાગવતઈ પૂછાસ્યઈ નહીં, એવં પ્રીછેજ્યો ॥ ૧૩૫ ॥

ભાષા—શ્રીસંઘના સમાધાન નિમિત્તે યુગપ્રધાન શ્રીજિનદત્તસૂરિજીએ સૂરિમંત્રના જાપથી તેમ તપ સંયમના પ્રભાવથી પાંચે નદીઓના દેવતાઓને સંતોષ્યા હતા, દેવતાઓએ પણ સંતુષ્ટ થઈને વચન લીધા હતા કે જે કોઈ તમારા ગચ્છનાયક સૂરિમંત્રધારક આ દેશમાં આવે તે અહિં પાંચે નદીઓના સંગમસ્થાને સૂરિમંત્રનો જાપ કરે, અમે પણ સંઘના વિઘ્ન નિવારણ કરશું. એવા વર દેવાથી શ્રાવક શ્રાવિકાઓએ સાધર્મી તરીકે તે દેવતાઓની અગ્નિઆકુલ દષ્ટને પૂજા કરી, એટલા માટે હમણાં પણ પાંચનદી સધાય છે સંઘના કાર્યે ગુરૂપણ પાંચનદીના સંગમસુધી જહાજમાં એસી જાય અને પાંચે નદીઓના અધિષ્ઠાયકો નિમિત્તે એકેકના જુદા જુદા ગણણા કરે છે, જુદા જુદા અધિષ્ઠાયકો એકજ ગણણા ન માને. આ રિવાજ છે, અને શ્રીશાળાંગ સૂત્રના પાંચમા

કાણામાં પાંચ મહાનદીઓ વિષે કારણવિશેષે જવું કહ્યું છે, “ઉત્તરિત્તે વા સંતરિત્તે વા” આવા પાટથી કારણવિશેષે એક કે અનેક વાર ઉતરવું કહ્યું છે, ત્યાં પણ નીતકૂત્ર સંભવે છે તેમ ત્રસ જવો પણ હોય છે, તેને ઉતરવાનો પ્રાયશ્ચિત્ત ધરિયાવહી આદિ જે શાસ્ત્રમાં કહ્યા હોય તે વિચારિયે, અસંબદ્ધ બોલ ન બોલીયે.

વલી ક્ષેત્રદેવતા ભવનદેવતા આદિના કાઉસ્સગ્ગ તથા થુઇ કહેવાનું દેવસી તથા પાખી આદિ પડિકમણાઓમાં ગધાય ગચ્છવાસીઓ કરે છે. આ રીતે દષ્ટિરાગ છોડી વિચારજો. જાણીએ છીએ કે સમજ પડશે, કોઇ વાર ગણુજી અરાઅર ન થાય તો ઉપદ્રવ પણ તે દેવતા કરી એસે, જેમ કે લોકવાયકાએ સાંભલીએ છીએ કે-તપા ઋષિમતીઓનાં ગચ્છમાં થોડા દિવસ (પહેલાં) શ્રીહીરવિજયસૂરિએ સંધ તેમ ગચ્છના ઉદય નિમિત્તે ઉન્નિષ્ઠયંગલિની દેવતાને તેવા પ્રકારે સાધવા માંડી હતી પરંતુ કોઈ કારણને અંગે તે દેવતા સિદ્ધ ન થતાં કોપિત થઇ ગઇ એટલે અસોથી અઢીસો યતિઓના યાન કીધા, ત્યાર પછી ફરીથી તે દેવતાને અરાઅર વિધિએ સાધી એથી ભાઇસાહેબના ગચ્છની પ્રતિષ્ઠા વિશેષ વધી, આ રીતે લોકવાયકા સાંભળેલ છે. પછી એમાં ઓછાઅધિકાનું યા સત્યાસત્યનું જ્ઞાની જાણે. પરંતુ સંધના ઉદય નિમિત્તે ગીતાર્થ ગુરૂઓ દેવતાનું સાધન આરાધન કરે, એ કંઈ અનુચિત નથી, એ રીતે અયોગ્ય-મતિએ વિચારીને એવા અનુચિત બોલ ન બોલીએ, જે બીજાને માટે વિચારીએ તે પોતાના ઉપર પડે, એમ સમજીને બોલીયે તો લાભ છે.

વલી પાલણુપુર પાસે મગરવાડા ગામમાં ‘માણિભદ્ર’ નામે લોક-પ્રસિદ્ધ ક્ષેત્રપાલ છે, જે સિંદૂર તેલ તલવટીથી પૂજાય છે, ત્યાં ન્હાની

પોસાળના તપા આચાર્ય પદસ્થાપનાના પ્રસંગે સવામણની ગોળપાપડી કરવા પૂર્વક પૂજાને એક રાત્રિ ગણુણું ગણીને તેને આરાધે છે. આદશાહ પાસે જતી વખતે શ્રીહીરવિજયસૂરિએ પણ પાલણપુરના શ્રાવકો પાસે તેટલી ગોળપાપડી કરાવીને પૂજા અને ગણુણું કરી આદશાહ પાસે ગયા મહત્વના પામ્યા, આ વાત અંદરના ખાનગી માણસો પાસે સાંભળી જાણી છે, અધાય લોકો ઘણેભાગે જાણે છે, તેમ લોકમાં પ્રસિદ્ધ છે, જેને જાણવાની ઇચ્છા હોય તેણે પાલણપુરના તપા યતિઓને પૂછવું. તેઓ વાત બનાવીને યરાચર કહેશે, પરંતુ દષ્ટિરાગના કારણે (તમારાથી) પૂછાશેજ નહીં, આ હકીકત છે.

(તપા અસ્તર ભેદ ગ્રંથ ૧ ઓક્ત ૧૪૦, ગ્રંથ ૨ ઓક્ત ૧૫૦ મો)

૧૩૮ પ્રશ્ન—તથા સ્વરતરાંરં પાશ્વી ચૌમાસી સંવચ્છરીય દિનિ નમસ્કાર થુઈ સ્તવન પ્રમુલ્લ જે કહઈ છઈ તેઈજિ કહઈ, વીજા ન કહઈ, તપાંરં જેહનઈ શ્રીગુરુજી આદેશ થઈ તે કહઈ, એ કિમ છઈ?

ભાષા—અસ્તરોને પાખી ચૌમાસી અને સંવચ્છરીના દિવસે ચૈત્યવંદન થુઈ સ્તવનાદિ જે કહે તેજ કહે. એટલે હમેશાને માટે જે નિયત વ્યક્તિઓને આદેશ આપેલ હોય તેજ કહે, બીજા ન કહે, તપાઓને ગુરુ જેને આદેશ આપે તે (અનિયત વ્યક્તિઓ) કહે, તે કેમ છે?

તત્ત્વાર્થ—સ્વરતરાંરં પુણિ શ્રાવક તવન થુઈ પ્રમુલ્લ સર્વ શ્રીગુરુજીનઈ આદેશઈજિ કહઈ છઈ, આપણઈ મેલિ કો નર્થી કહતા, પહિલોકે ગુરુની આજ્ઞા લોપી નહીં, સમસ્ત સંઘઈ પુણિ ગુરુના બોલ કબૂલ કીધા, પછઈ તેહના કુદુમ્બ ગોત્રમાંહિ જેહનઈ વર્તમાન ગુરુ આદેશ થઈ તે શ્રાવક ગુરુના આદેશઈ તવન થુઈ

કહૈ. તે મળી વાતનહ વિચારિવા સરીખહ કાંઈ નથી, પરં જે શ્રાવક ગુરુના આદેશ પશ્વઈ કેસર વધારી સાહમ્મિયાં સાથિ વહમ કરી જે તવન થુઈ પ્રમુખ કહૈ તે અમ્હે ઘણું અયુક્ત જાણી-યઈ છૈ, વલી જેહનઈ જે ચિત્તમાંહિ આવઈ તે જાણઈ ॥૧૩૮॥

ભાષા—ખરતરોને પણ શ્રાવક સ્તવન થુઇ આદિ બધુંય ગુરુ-મહારાજના આદેશથીજ કહે છે, પોતાની મેળે કોઇ નથી કહેતા, તેમ પહેલાના ગુરુની આજ્ઞા લોપી નથી, સમસ્ત સંધે પણ ગુરુના વચન કબૂલ કીધા, પછી તેના કુટુંબ યા ગોત્રમાંથી જેને વર્તમાન ગુરુ આદેશ દિએ તે શ્રાવક ગુરુના આદેશથી તવન થુઇ કહે, એટલે આ વાતમાં વિચારવા જેવું કાંઇ નથી પરંતુ જે શ્રાવક ગુરુના આદેશ વિના કેસર વધારીને. એટલે ધી વિગેરેની બોલી બોલીને, સાધમીઓ સાથે હાવાદ કરીને તવન થુઇ વિગેરે કહે છે. તેને અમો બહુ અયુક્ત સમજીએ છીએ. વલી જેના ચિત્તમાં જે આવે તે જાણે.

(તપા ખરતર ભેદ ગ્રંથ ૧ બોલ ૧૪૧ મો)

૧૩૯ પ્રશ્ન—તથા તપારંદ વાંદણા દેતાં સ્વમાસમણ દેઈનઈ મુહપત્તી પડિલેહઈ, સ્વરતારંદ મુહપત્તી પડિલેહતાં સ્વમાસમણ ન થઈ, તે સ્યું ?

ભાષા:—તપાને વાંદણા દેતાં ખમાસમણા છઠને મુહપત્તી પડિલેહે છે, અને ખરતરોને મુહપત્તી પડિલેહતાં ખમાસમણા નથી દેતા, તે શું ?

તત્રાર્થે—જિમ તપારંદ વાંદણાં દેતાં સ્વમાસમણ દેઈનઈ મુહપત્તી પડિલેહી વાંદણા થઈ છઈ તિમ અમ્હારંદ પુણિ પચ્ચ-કલાણના વાંદણા દેતાં સ્વમાસમણ દેઈ મુહપત્તી પડિલેહીનઈ વાંદણા દીજઈ પચ્ચકલાણ કીજઈ, ઇમ સદ્દહણા છઈ, પઢી

પ્રમાદના વાહ્યા સ્વમામમણ કોઈ ન ચડેઈ એ પ્રમાદપંથ સહૂનઈ
સરીખત છંદે, પરં સદ્દહણા સમી જોડેયઈ, પૂછીયાં સમત કહીયઈ.
કરીવત તે વીર્યાનગય કર્મનઈ ક્ષયોપશમનઈ હાથિ છડ, એવં પરિદ્રેજ્યો ।

ભાષા—જેમ તપાને વાંદણા દેતાં ખમાસમણો દબને મુદ્ધપત્તી
પડિલેહી વાંદણા દિયે છે તેમ અમારે પણ પચ્ચદ્ધખાણુના વાંદણા દેતાં
ખમાસમણો દેઈ મુદ્ધપત્તી પડિલેહીને વાંદણા દેવા. પચ્ચદ્ધખાણુ કરવા
એમ સદ્દહણા છે, પછી પ્રમાદના કારણે કોઈ ન પણ દિયે, આ પ્રમાદ
પંથ અધાને સરખો છે, પરંતુ સદ્દહણા અરાબર જોઈએ, પૂછ્યાં
સાચું કહીયે, કન્ટું તે વીર્યાન્ટરાય કર્મના ક્ષયોપશમના હાથે છે,
આ રીતે હકીકત છે.

(તપા અરતર બેદ ગ્રંથ ૧ બોલ ૧૩૬, ગ્રંથ ૨ બોલ ૧૩૬-૧૪૫ મો)

૧૪૦ પ્રશ્ન—તથા તુમ્હે લિખ્યા જે શ્રીઅભયદેવસૂરિં
શ્રીનવાંગીવૃત્તિ તથા પંચાશકની વૃત્તિ(માંહિ) આંપણા ગુરુ ગુરુભાઈ
વૃત્તિ કગવણ ઉત્તરસાધકના નામ લિખ્યા, પરં આંપણા ગચ્છના
નામ સ્વરતર ન લિખ્યા, તે સ્યું ?

ભાષા—તમોએ લખ્યું જે અભયદેવસૂરિએ નવાંગસૂત્રો તથા પંચાશક
વૃત્તિમાં પોતાના ગુરુ ગુરુભાઈ અને વૃત્તિકરાવતાં ઉત્તરસાધક(સહાયક)ના
નામો લખ્યા પણ પોતાના ગચ્છનું નામ અરતર ન લખ્યું, તે શું ?

તત્રાર્થે—ચન્દ્રકુલ વૈરીશાસ્ત્ર શ્રીવર્દ્ધમાનસૂરિ શ્રીજિનેશ્વરસૂરિ
શ્રીબુદ્ધિમાગરસૂરિ इत्यादિકના કહીવડ કરી શ્રીઅભયદેવસૂરિ
શ્રીસુધર્માસ્વામિની પરમ્પરાના જાણણા, ત્યાર પછી કુલ શાસ્ત્ર
ગણનઈ મેલિ પૂર્વપરમ્પરાયઈ સાવતા (૧) થયા અનઈ શ્રીવર્દ્ધમાન-

सूरि आरण्यक थया तेहना शिष्य (श्रीजिनेश्वरसूरि तथा श्रीबुद्धि सागरसूरि शिष्य) श्रीअभयदेवसूरि पुणि आरण्यक थयाजि जाणिवा, पछी श्रीअणहिल्लवाडइ पाटणमांहि पंचांगसइ पाडइ मठपतियां साथि १०८० संवच्छरइ श्रीदुर्लभराजा समक्ष श्रीसुविहित यतिना आचारनी मांहोमांहि शास्त्रसंमत विचारणा करतां यतियांनइ चैत्यवास निषेधीनइ श्रीजिनेश्वरसूरिजीए वसतिवास थाप्यउ, श्रीदुर्लभराजा संतोषाणा, पछी यति राज समक्ष वसतिवासी थया, चैत्यवासपणउ राजसमक्ष निषेधाणउ, राजाअइं श्रीजिनेश्वरसूरिजीनइ क्रिया आचार करीवा थकी (स्वरतर) अति आकरा कही वखाण्या, पछी लोके पुणि श्रीगुरुजीनइ स्वरतर बोलाया, मठपतियांनइ कुंला कहाणा, इम प्रवाद सांभलीयइ छइ।

पछइ श्रीजिनेश्वरसूरिनइ बीजे सगले गच्छवासीए वसतिवासी सुविहित स्वरतर एहवइ बिरुदइं करी बोलाया, ते भणी बीजां गच्छवासीयांना कह्या श्रीस्वरतर बिरुद श्रीअभयदेवसूरिजीए नवांगीवृत्ति करतां न लिख्या, परं बीजे गच्छवासीए गच्छना प्रभाविक श्रीआचार्यांनी गणनामांहि विशेषपणइ श्रीस्वरतरगच्छ वखाण्या, वली श्रीजगच्चन्द्रसूरि विशिष्ट तपोविशेषइ करी लोकांमांहि तपागच्छनउ नाम बिरुद लाधउ, परं श्रीदेवेन्द्राचार्य नवा ग्रन्थ करतां श्रीचित्रावालगच्छना नाम आण्या, पुणि लोकांना कह्या तपा नाम ग्रन्थांमांहि लिख्या नहीं, पछी तरतर (?)

तुम्हारइ तपागच्छ अम्हारइ श्रीस्वरतरगच्छ कहाणा, तिहां पहिलोके तपांने गच्छवासीए आपणा २ ग्रन्थांमांहि नाम लेइ

શ્રીસ્વરતરગચ્છ તથા શ્રીસ્વરતરગચ્છના આચાર્ય શ્રીઅમયદેવસૂરિ
શ્રીજિનવલ્લભસૂરિ. શ્રીજિનદત્તસૂરિ. શ્રીજિનપ્રભસૂરિના નામ લેઈ
વચ્ચાણ્યા છૂડ, તથા :—

“પુરા શ્રીપત્તને રાજ્યં, કુર્વાણે ભીમભૂપતૌ ।

અભૂવન્ ભૂતલે ર્યાતાઃ, શ્રીજિનેશ્વરસૂરયઃ ॥૧॥”

“સૂર્યોઽમયદેવાચ્યા-સ્તેષાં પદ્મે દિદીપિરે ।

યેશ્ચઃ પ્રતેષ્ટામાયન્નો, ગચ્છઃ સ્વરતરાભિધઃ ॥૨॥”

ઇતિ તપાગચ્છીય શ્રીસોમસુન્દસૂરિ શિષ્ય ઉપાધ્યાય
શ્રીચારિત્રરત્નગણિ શિષ્ય પ્રજ્ઞાંશ સોમધર્મ (ગણિ) વિરચિત ઉપ-
દેસસત્તારિ ગ્રન્થે, એતલઈ શ્રીઅમયદેવસૂરિ નવાંગીવૃત્તિકારક
શ્રીસ્વરતરગચ્છમાંહિ ઉદ્યોતકારી કહ્યા, એતલઈ ‘શ્રીસ્વરતર વિરુદ્ધ
લાઘાં પછી શ્રીઅમયદેવસૂરિ થયા’ ઇમ તપાગચ્છના ગીતાથં
કહ્યું, વલી તપાગચ્છીય હેમહંસસૂરિકૃતે કલ્પાંતરવાંચ્યે “સ્વરતગચ્છે
નવાંગી વૃત્તિકારક શ્રીઅમયદેવસૂરિ થયા, જિયે શાસનદેવીના
વચનથી શ્રીથંભણા ગ્રામઈ શ્રીસેઢીનદીનઈ ઉપકંઠિ શ્રીપાર્શ્વનાથતણી
સ્તુતિ ‘જયતિહુઅણં’ બત્તીસી નવીન સ્તવના કરી શ્રીપાર્શ્વનાથજીની
મૂર્તિ પ્રગટ કીધી, શ્રીધરણેન્દ્ર પ્રત્યક્ષ કીધડ, શરીરનડ કોઢ રોગ
ઉપશમાવ્યડ, નવઅંગની ટીકા કીધી, તેહના શિષ્ય શ્રીજિનવલ્લભસૂરિ
થયા, જિયે નિર્મલ ચારિત્ર સુવિહિત સંવેગપદ્ધ ધારણ કરી અનેક
ગ્રન્થ તણડ નિર્માણ કીધડ, તચ્છિષ્ય યુગપ્રધાન શ્રીજિનદત્તસૂરિ
થયા, જિયે ઉઝૈની-ચિત્તોડના મંદિરથી વિદ્યાપોથી પ્રગટ કીધી,
દેશાવરોમાં વિહાર કરી રાજપૂતાદિકને પ્રતિબોધીને સવા લાલ્લ

जैनी श्रावक कीधा, इणइ अनुक्रमइ श्रीखरतर पत्ते मूरिवर अनेक मातिशय थया ” इत्यादि जोज्यो, बली—

“ व्याख्याताऽभयदेवसूरिरमलप्रज्ञो नवांग्याः पुनः,
प्रौढिं श्रीजिनवल्लभो गुरुरधः ज्ञानादिलक्षया पुनः ।
भक्त्यानां जिनदत्तसूरिः ददाद्दीप्तां सहस्रस्य तु,
ग्रन्थान् श्रीतिलकश्चकार विविधांश्चन्द्रप्रभाचार्यवत् ॥१॥”

इति श्रीतपागच्छीय श्रीमुनिसुन्दरसूरिकृत त्रिदशतरंगिणी ग्रन्थे श्रीपूर्वाचार्यवर्गनाधिकारे २०/२१ तरंगे । तथा श्रीनवांगी-वृत्तिकारक श्रीअभयदेवसूरिना शिष्य श्रीजिनवल्लभसूरिना कीधा ए दउढसइया कर्मग्रन्थ, तेहनी वृत्ति श्रीचित्रावाल गच्छीय श्रीधने-श्वरसूरिनी कीधी, श्रीदउढसइया कर्मग्रन्थनी टीकाना पाठनउ धार्त्तिक करी लिखयउ छइ । तथा दीवालीकल्प ग्रन्थमांहि (जिनसुन्दरसूरिए) लिखयऊ छइ “जे वर्द्धमानस्वामीयइ इम कह्यउ छइ-श्रीखरतरगच्छु १२०४ वर्षइ थास्यइ ” ए भावार्थ छइ, तउ खरतर गच्छनइ तुम्हे धर्मसागररा किया बाहीरमूँदा ग्रन्थांनी साखि लेई कांइ दूषवउ छउ ? विचारी जोज्यो, घणउ स्यु लिखीयइ ?

बली तत्त्वतरंगिणीनी वृत्तिमांहि दृष्टिरागइ करी भूलइ थकइ तपइ धर्मसागर उपाध्यायइ बिहुं ठामे जूजूआ इम लिखया छइ—“ श्रीअभयदेवसूरिमुखात् परमानन्दनाम्ना विनेयेन खरतर सामाचार्या पौषधाधिकारे प्रथमपत्रे ” एतलइ श्रीअभयदेवसूरिनइ वारइ परमानन्द नाम शिष्यनइ खरतर नाम कहा छइ, विचारी जोज्यो, ए तपइ धर्मसागर उपाध्यायनइ एतला भोलपणा थया,

।रं परमाथइ तेह सामाचारी ग्रन्थना करणहार खरतर न हवई,
घणाइ गच्छि गच्छि अभयदेवसूरि थया छइ, परं ते भइयइ
बिडालनी परि दही दीठउ पुणि लगुडना प्रहार न दीठा,
सामाचारी खरतरांनी ए जाणी अभयदेवसूरिनइ खरतरपणउ
अणगमतउ आव्यउ न जाणयइ, वली—

स्वास्ति श्री सं० १६१७ मिते कार्तिकसुदि ७ दिने शुक्र-
वारे श्रीपाटणनगरे श्रीखरतरगच्छनायक वादिकंदकुहाल भट्टारक
श्रीजिनचन्द्रसूरि चौमासी कीधी । तिवारइ ऋषिमती धर्मसागर
कूडी चरचा मांडी, जउ अभयदेवसूरि नवांगीवृत्तिकर्ता श्रीथंभणा
पार्श्वनाथ प्रगटकर्ता, ते खरतरगच्छे न हुआ । एहवी बात
सांभली तिवारै श्रीजिनचन्द्रसूरि समस्त दर्शन एकठा कीधा, पछं
समस्त दर्शननइ पूछ्यो जे श्रीअभयदेवसूरि नवांगी वृत्तिकर्ता
थंभणा पार्श्वनाथ प्रगटकर्ता किसै गच्छइ हुआ ? तिवारै समस्त
दर्शन मिली अनै घणा ग्रन्थ जोया । पछं इम कह्यो—जे श्रीअभय-
देवसूरि खरतरगच्छे हुआ मही सत्यं. समस्त दर्शन घणा ग्रन्थ
जोइनइ सही कीधी, सही वार १०८ । अत्र साखि—

भट्टारक श्रीक(ध)र्मसुन्दरसूरि मतं १, सिद्धांतीया वडगच्छा
श्रीथिरचन्द्रसूरि मतं २, जावडीया गच्छे श्रीहर्षविनय मतं ३,
निगमीया तपागच्छे श्री भ० कल्याणरत्नसूरिमतं ४, बृहत्तपागच्छे
श्रीसिद्धसूरिमतं ५, बिवंदगीक बारैजिया खडखडता तपागच्छे
श्रीपरमानंदसूरि मतं ६, सिद्धांतीया वडगच्छा श्रीमहीसागर-
सूरि मतं ७, काछेला पूनमीयागच्छे उदयरत्नसूरि मतं ८,

पीपलियागच्छे विमलचन्द्र मतं ६, त्रांगडीया पूनमीयागच्छे श्रीविद्याप्रभसूरि मतं १०, ढंढेरिया पूनमीयागच्छे श्रीसंयमसागर-सूरि मतं ११, कुतुबपुरा तपागच्छे श्रीविनयतिलकसूरि मतं १०, बोकडीयागच्छे देवानन्दसूरि मतं १३, सिद्धांतियागच्छे पंन्यास प्रमोदहंस मतं १४, पाल्हणपुरागच्छे वा० विनयकीर्ति मतं १५, पाल्हणपुरीशाखा तपागच्छे वाचक रंगनिधान मतं १६, अंचल-गच्छे पं० भावरत्न मतं १७, छापरिया पुनमीयागच्छे पं० उदयराज मतं १८, साधुपूनमीयागच्छे पं० वाचक नगा मतं १९, मलधारी-गच्छे पं० गुणतिलक मतं २०, ओसवाल(उकेश-कमला)गच्छे पं० रत्नहर्ष मतं २१, धवलपर्वीया आंचलीयागच्छे पं० रंगा मतं २२, चित्रवाल गच्छे वा० क्षेमा मतं २३, चिन्तामणीया पाडा वा० गुण-माणिक्य गणि मतं २४, आगमीया उपाध्याय श्रीसुमतिशेखर मतं २५, बेगडा खरतर (गच्छे) पं० पद्ममाणिक्य मतं (३० धर्ममेरु मतं) २६, बृहत्खरतर (गच्छे) वा० मुनिरत्न मतं २७, चित्रवाल जोगी-वाडई पं० राजा मतं (मुनि जयराम मतं) २८, कोरंटवालगच्छे चेला हांसा मतं २९, बिवंदनीक खिरालुआ चेला मोकल मतं ३०, आगमीया मोकल मतं ३१, खरतर उपाध्याय श्रीजयलाम मतं ३२।

एवं कार्तिक सुदी ७ शुक्रवार दिने सर्व दर्शनी मिली सर्व संघ समुदायई मजलस करी, धर्मसागर तेडाव्यउ, पुणि दर्शनमांहि नाव्यउ, वार तीन मजलस करी धर्मसागर तेडाव्यउ, पुणि नाव्यउ, पछइ कार्तिक सुदि १३ दिने सर्व दर्शन मिली चरचाये खोटउ कीधउ, जिनदर्शन बाहिर कीधउ, सर्व दर्शन सम्मत श्रीअभयदेव

સૂરિ નવાંગી વૃત્તિકારક તે સ્વરતર ગચ્છઈ હૂઆ સમસ્ત દર્શનીને માલિ સહી પત્તનીય સમસ્તદર્શનિભિઃ વિચાર્ય મતં લિલ્લિતં ।

(આ વાતનો સમર્થન કરતા ગ્રંથો)—શ્રીતપાગચ્છીય શ્રીહેમ-
હંસસૂરિકૃત કલ્પાંતર્વાચ્યે ૧, ભાવહડા કૃત ગુરુપદપ્રભાવકગ્રન્થે ૨,
શ્રીતપાપદ્મ લઘુશાલા પટ્ટાવલ્યાં ૩, કુતુબપુગ તપા કૃતાંતર્વાચ્યે ૪,
તપાકૃત આચારપ્રદીપગ્રન્થે સંદેહદોલાવલી ગ્રન્થ સ્વરતરકૃત,
તેહની સાલિ દીધી છઈ ૫, શ્રીજિનવલ્લભસૂરિકૃત દડઢમડ્યા
કર્મગ્રન્થવૃત્તૌ શ્રીચિત્રવાલગચ્છીય શ્રીધનેશ્વરસૂરિકૃતાયાં પરમ્પરા
સાધવત્ત્વેન ૬, તપા કલ્યાણગત્તનસૂરિપ્રબન્ધગ્રન્થે ૭, તપા
શ્રીકલ્યાણગત્તનસૂરિવગાણાં ચિરંતન ટિપ્પનકદ્વયે ૮-૯, સાધુપૂર્ણિમા
(ગુર્વાવલી) ગ્રન્થે પટ્ટાવલ્યાં ૧૦, છાપરીયા પૂનમીયા પટ્ટાવલ્લ્યાં
૧૧, શ્રીગુરુપર્વાવલીગ્રન્થે ૧૨, તપાકૃતોપદેશસપ્રતિકાયાં ૧૩,
પ્રભાવકચરિત્રે (પ્રભાચન્દ્રસૂરિકૃતે) ૧૫ (૧૩) સર્ગે શ્લોક ૫૫ થકી
૯૫ શ્લોક લગઈ શ્રીઅભયદેવસૂરિચરિત્રં ૧૪, શ્રીપહ્લીવાલગચ્છીય
મટ્ટારક શ્રીઆમદેવસૂરિકૃતે પ્રભાવકચરિત્રે ગદ્યમયે ૧૫, પીપલીયા
શ્રીઉદયરત્નસૂરિ પ્રારંભિતાયાં)ભેણ (?) શ્રીજીવાનુશાસનવૃત્તૌ ૧૬ ।

મૂલ સ્વત સમસ્ત દર્શનનડ લિલ્લિયડ શ્રીપાટણનઈ મંડારિ
છઈ, તેહ ઉપરિ યથાસ્થિત નચ્ચજિ કરી લિલ્લિયડ છઈ. એતલઈ
મગલે જૈન દર્શનીએ શ્રીનવાંગી વૃત્તિકાર શ્રીઅભયદેવસૂરિ સ્વરતર
ગચ્છનાયક કહ્યા તડ તુમ્હે નથી વિચારતા ? જે એતલા ગચ્છના
ગીતાર્થ તથા તપાગચ્છીય ગીતાર્થના લિલ્લિયા નથી માનતા તે મ્યું ?
વલી તપા શ્રીસોમસુન્દરકૃત સાઠિમયા ગ્રંથના બાલાવબોધમાંહિ શ્રીજિન-

વલ્લભસૂરિના ગુણ પાઠબંધઈ કરી લિખ્યા છઠ્ઠે તે જોજ્યો × । શ્રીરસ્તુ.

ભાષા:—ચંદ્રકુલ વધરિશાખા (આદિ તેમાં) શ્રીવર્ધમાનસૂરિ. જિનેશ્વરસૂરિ. બુદ્ધિસાગરસૂરિ. ઇત્યાદિ કહેવાથી શ્રીઅભયદેવસૂરિ. શ્રીસુ-ધર્માસ્વામીની પરંપરાના બાણવા, ત્યાર પછી કુલ શાખા અને ગણના

× અજ્ઞવિ ગુરુણો ગુણિણો, સુદ્ધા દીસંતિ તડયડા કેવિ ।

પુણ જિણવલ્લહસરિસો, પુણોવિ જિણવલ્લહો ચેવ ॥૧૦૭॥

અજી ઇણં કાલિ કેતલાએક સુગુરુ ગુણવંત તપનિયમિં કરીં કડકડા દીસં છઠ્ઠે, પુણ પ્રભુ શ્રીજિનવલ્લભસૂરિ સરીસ્વં જિનવલ્લભજિ હૂઝ, બીજૂ એહઝ સુદ્ધપ્રરૂપક ચારિત્રિઝ ન હૂઝ ।

વયણે વિ સુગુરુ જિણ-વલ્લહસ્સ કેસિં ન ઉલ્લસઈ સમ્મં ।

અહ કહ દિણમણિ તેઅં, ઉલુઆણં હરઈ ? અંધત્તં ॥૧૦૮॥

એહાઈ શ્રીજિનવલ્લભસૂરિ સુગુરુનં વચનં કેટલાંનં સમ્યક્ત્વ ન ડપજં, અથવા સૂર્યનૂં તેજ ઉલૂક-ધૂયડરં અંધપણું કિમ ફેડઈ ?, જિમ સૂર્ય ડગં ધૂઅડ ન દેસં તિમ કેતલાંનં એહાં ગુરુનં વચનિં ધર્મ ન ઉલ્લસઈ ।

દિઢાવિ કેવિ ગુરુણો, હિયએ ન રમંતિ મુણિયત્તણં ।

કેવિ પુણ અદિદુઠ્ઠિચય, રમંતિ જિણવલ્લહો જેમ ॥૧૦૯॥

કેતલાએક ગુરુ દીઠાઈ હૂંતા તત્ત્વના જાણનઈ હીં ન રમઈ, જાણ હૂઈ કાંઈ હર્ષ ન કરઈ, કેતલાએક અણદીઠાઈ હૂંતા હીં હર્ષ કરઈ, જિમ શ્રીજિનવલ્લભસૂરિ ।

(ષષ્ટિશતક ટિવાર્ય ૧૫૬૧ વર્ષે. તપા રત્નશેખરસૂરિ પ્રશિષ્ય પ્રશિષ્ય ઇન્દ્રશીલ ગણિ લિખિત) ।

હિસાબે પૂર્વપરંપરાગત શ્રીવર્ધ્ધમાનસૂરિ આરણ્યક (વનવાસી) થયા, તેના શિષ્ય [શ્રીજિનેશ્વરસૂરિ, તથા બુદ્ધિસાગરસૂરિ તેના શિષ્ય] શ્રીઅભયદેવસૂરિ પણ આરણ્યક થયાજ ગણવા, પછી આણહિલપુર ખાટણ પંચાસરાપાડામાં સંવત્ ૧૦૮૦ માં મહારાજા દુર્લભરાજની સમક્ષ સુવિહિત યતિઓના આચાર આપતમાં મહાપતિ (ચૈત્યવાસી)ઓ સાથે શાસ્ત્રસંમત વિચારણા (શાસ્ત્રાર્થ) કરતાં શ્રીજિનેશ્વરસૂરિએ સુવિહિત યતિઓને માટે ચૈત્યવાસ નિષેધીને વસતિવાસ થાપ્યો, એથી દુર્લભરાજ સંતુષ્ટ થયા, ત્યાર પછી યતિઓ રાજસમક્ષ વસતિવાસી થયા, ચૈત્યવાસીપણું નિષેધાણું, દુર્લભ રાજાએ શ્રીજિનેશ્વરસૂરિજીને આચાર ક્રિયાએ અતિ આકરા હોવાથી ખરતર કહી વખાણ્યા એટલે લોકોએ પણ ગુરૂમહારાજને ખરતર કહી ખોલાવ્યા, મહાવાસીઓ કંવલા (દીલા)ના નામથી કહેવાણા એમ પ્રવાદ સાંભળીએ છીએ.

ત્યારથી ખીજા બધાય ગચ્છવાસીઓએ શ્રીજિનેશ્વરસૂરિજીને વસતિ-વાસી સુવિહિત ખરતર એવા બિરૂદથી ખોલાવ્યા, એટલે (રાજા તથા) ખીજા ગચ્છવાસીઓએ કહેલ ખરતર બિરૂદ શ્રીઅભયદેવસૂરિજીએ નવાંગી વૃત્તિ કરતાં નથી લખ્યો પરંતુ ખીજા ગચ્છવાસીઓએ ગચ્છના પ્રભાવિક આચાર્યોની ગણનામાં (શ્રીઅભયદેવસૂરિજીના પ્રસંગે) ખરતર ગચ્છને વિશેષપણે વખાણ્યો છે, વહી શ્રીજિગચ્ચંદ્રસૂરિએ વિશિષ્ટ તપસ્યા કરીને લોકોમાં ‘તપાગચ્છ’ નામનો બિરૂદ પ્રાપ્ત કર્યો પરંતુ (તેમના શિષ્ય) શ્રીદેવેંદ્રસૂરિજીએ સ્વરચિત ગ્રંથોમાં શ્રીચિત્રવાલ ગચ્છ લખ્યો છે, +

+ ‘તત્ર ક્રમેણ ‘ચિત્રા-વાલક’ગચ્છો બભૂવ મુવિ વિદિતઃ ।

‘શ્રીમુવનચન્દ્રસૂરિ’-સ્ત્રામૂઢ્ઢવ્યપદ્મરવિઃ ॥૬॥ તચ્છિષ્યરત્નમભવદ્-

पणु दोडोनो डडेव 'तपा'ये नाम स्वकृत ग्रंथोभां नथी वप्पुं, त्थार

भुवनप्रसिद्ध-आरित्रपात्रमखिलश्रुतपारमाप्तः । गाम्भीर्यमुख्यगुण-
रत्नमहासमुद्रः, 'श्रीदेवभद्र'गणिमिश्रसुनामधेयः ॥७॥ तत्पादाम्बुज-
रोलम्बा, निरालम्बा वपुष्यपि । अभूवन् भूरिभावाढ्याः, श्रीजग-
च्चन्द्रसूरयः ॥८॥ देवेन्द्रसूरिसंज्ञ-स्तेषामाद्यो बभूव शिष्यलवः ।
श्रीविजयचन्द्रसूरि-स्तथा द्वितीयो गुणैस्त्वाद्यः ॥९॥ चक्रे भव्याव-
बोधाय, सम्प्रदायात्तथाऽऽगमात् । सच्छाद्धदिनकृत्यस्य, वृत्ति-
देवेन्द्रसूरिभिः ॥१०॥ ” (श्राद्धदिनकृत्य टीका)

“क्रमशश्चैत्रावालक-गच्छे कविराजराजिनभसीव । श्रीभुवन-
चन्द्रसूरि-गुरुहृदियाय प्रवरतेजाः ॥४॥ तस्य विनेयः प्रशमै-
कमिन्दरं देवभद्रगणिपूज्यः । शुचिसमयकनकनिकषो, बभूव भुवि
विदितभूरिगुणः ॥५॥ तत्पादपद्मभृङ्गा, निस्सङ्गाश्चङ्गतुङ्गसंवेगाः ।
संजनिताशुद्धबोधा, जगति जगच्चन्द्रसूरिवराः ॥६॥ तेषामुभौ
विनेयौ, श्रीमान् देवेन्द्रसूरिरित्याद्यः । श्रीविजयचन्द्रसूरि-द्वितीय
कोऽद्वैतकीर्त्तिभरः ॥७॥ स्वान्ययोरुपकाराय, श्रीमद्देवेन्द्रसूरिणा ।
धर्मरत्नस्य टीकेयं, सुखबोधा विनिर्ममे ॥८॥ ” (धर्मरत्न प्र० टीका)

“चित्तावालयगच्छि-क्कमंडणं जयइ भुवणचंदगुरु । तस्स
विणेओ जाओ, गुणभवणं देवभद्रमुणी ॥७॥ तप्पयभत्ता
जगचंद-सूरिणो तेसि दुणिण सीसा । सिरिदेविन्दमुणिन्दो, तहा
विजयचन्दसूरिवरो ॥८॥ इय सुदरिसणाइ, कहा णाणतवचरण-
कारणं परमं । मूलकहाओ फुडऽत्था, लिहिया देविन्दसूरिहिं ॥९॥”
(सुद्धं सण्णायरिय)

પછી ધીરે ધીરે—કાલક્રમે તમારે ‘ તપા ગચ્છ ’ અને અમારે ‘ ખરતર

આ ત્રણે અંથોની પ્રશસ્તિમાં સત્યકથક આચાર્ય શ્રીદેવેન્દ્રસૂરિએ પોતાના ગુરુ જગચ્ચન્દ્રસૂરિજીને ચિત્રાવાલક ગચ્છના આં શ્રીભુવનચન્દ્ર સૂરિના શિષ્ય વાં દેવભદ્રગણિના શિષ્ય લખ્યા છે, પણ ‘ તેઓ મણિ-રત્નસૂરિના શિષ્ય હતા ’ કે તેમને તપા બિરૂદ મળ્યાનો નામનિશાણે નથી, અને જે કર્મઅંથની પ્રશસ્તિના “ ક્રમાત્પ્રાપ્તપાચાર્યે-ત્યભિશ્યા ભિક્ષુ-નાયકાઃ । સમભૂવન્ કુલે ચાન્દ્રે, શ્રીજગદ્ચન્દ્રસૂરયઃ ॥૪૥॥ ” આ શ્લોકથી એમને તપા બિરૂદ મળ્યાનો સમર્થન કરાય છે, તે નિષ્કુળ છે, કારણ કે બીજી કોઇ પણ કૃતિમાં એમ ન લખતાં માત્ર એકજ કૃતિમાં તે તે પણ દરેકે દરેક પ્રકરણમાં આમ લખવું એમનું (દેવેન્દ્રસૂરિનું) સંભવતું નથી, કિંતુ પાછળના કોઇ આગ્રહીએ લખેલ હોય તો કાંઇ અસંભવ જેવું નથી, કારણ એ છે કે—આ એકજ શ્લોક કર્મવિપાકાદિ જીએ પ્રકરણો કે જે એકજ કર્મઅંથના પેટાવિભાગો છે, તે દરેકની પાછળ લખેલ છે. એટલેજ આ શ્લોક લખનારનો હૃદયગત આગ્રહ, ગચ્છની પ્રાચીનતા સાબીત કરવાનો યા અન્ય કોઇ પણ બાબતનો સૂચિત કરે છે.

અગર કોઈ કહે કે ‘ શ્રાદ્ધદિનકૃત્ય ’ ટીકાદિ અંથો રચ્યાબાદ તપાબિરૂદ મળ્યો હશે. એટલે તે તે અંથોમાં તેનો ઉલ્લેખ ન કરતાં કર્મઅંથમાં કયો છે ’ તો એનો પણ બાધક મૌજૂદ છે કે—દેવેન્દ્રસૂરિનાજ ન્હાના ગુરુભાઈ વિજયચન્દ્રસૂરિના શિષ્ય ક્ષેમકીર્તિસૂરિ પણ જગચ્ચન્દ્રસૂરિને તપાબિરૂદ મળ્યાનો સૂચન સરખોય ન કરતાં ચિત્રાવાલક ગચ્છના ઉપાધ્યાય દેવભદ્ર ગણિનાજ શિષ્ય લખે છે, જુઓ આ રહ્યો તે પ્રમાણ પાઠ—

“શ્રીજૈનશાસનનભસ્તલતિગ્મરશ્મિઃ, શ્રીસદ્ગચાન્દ્રકુલપદ્મવિકાશ-કારી । સ્વજ્યોતિરાવૃતદિગમ્બરહમ્બરોઽમૂત્ , શ્રીમાન્ ધનેશ્વરગુરુઃ

ગચ્છ' કહેવાણા, ત્યાં પહેલાંના તપાગચ્છીય મુનિઓએ પોતપોતાના

પ્રથિતઃ પૃથિવ્યામ્ ॥૭॥ શ્રીમચ્ચૈત્રપુરૈકમણ્ડનમહાવીરપ્રતિષ્ઠાકૃત-
સ્તસ્માચ્ચૈત્રપુરપ્રબોધતરણેઃ શ્રીચૈત્રગચ્છોઽજનિ । તત્ર શ્રીમુવનેન્દુ-
સૂરિસુગુરુર્ભૂષણં ભાસુરન્જ્યોતિઃ મદ્ગુણરત્નરોહણગિરિઃ કાલક્ર-
મેણા ભવત્ ॥૮॥ તત્પાદામ્બુજમણ્ડનં સમભવત્ પદ્મદ્વયીશુદ્ધિમાન્ ,
નીર-ક્ષીરમદ્દદૂષણ-ગુણત્યાગ-ગ્રહૈકવ્રતઃ । કાલુષ્યં ચ જડતોદ્ભવં
પરિહરન્ દૂરેણ સન્માનસ-સ્થાયી રાજમરાલવદ્ગણિવરઃ શ્રીદેવભદ્ર-
પ્રભુઃ ॥૯॥ શસ્યાઃ શિષ્યાસ્ત્રયસ્તત્પદસરસીરુહોત્સન્નશૃન્ગારશૃન્ગા,
વિધ્વસ્તાનન્નસન્નાઃ સુવિહિતવિહિતોત્તુન્નરજ્ઞા વમુવુઃ । તત્રાદ્યઃ
સચ્ચરિત્રાનુમતિકૃતમતિઃ શ્રીજગચ્ચન્દ્રસૂરિઃ, શ્રીમદેવેન્દ્રસૂરિઃ
સરલતરલસચ્ચિત્તવૃત્તિર્દ્વિતીયઃ ॥૧૦॥ તૃતીયાંશિષ્યાઃ શ્રુતવારિવાદ્યઃ,
પરીષહાક્ષોભ્યમનસ્સમાધયઃ । જયંતિ પૂજ્યા વિજયેન્દુસુરયઃ,
પરોપકારાદિગુણૌઘભૂરયઃ ॥૧૧॥ × × × તત્પાણિપદ્મજરજઃપરિપૂત-
શીર્ષાઃ, શિષ્યાસ્ત્રયો દધતિ સમ્પ્રતિ ગચ્છભારમ્ । શ્રીવજ્રસેન
ઈતિ સદ્ગુરુરાદિમોઽત્ર, શ્રીપદ્મચન્દ્રસુગુરુસ્તુ તતો દ્વિતીયઃ ॥૧૨॥
તાર્તીયીકસ્તેષાં, વિનેયપરમાણુરનણુશાસ્ત્રેઽસ્મિન્ । શ્રીક્ષેમકીર્તિસૂરિ-
ર્ત્રિનિર્મમે વિવૃતિરલ્પમતિઃ ॥૧૩॥ શ્રીવિક્રમતઃ ક્રામતિ, નયનામ્નિ-
ગુણેન્દુપરિમિતે(૧૩૩૨)વર્ષે । જ્યેષ્ઠશ્વેતદશમ્યાં, સમર્થતૈષા ચ હસ્તાર્કે ।
(બૃહત્કલ્પસૂત્ર ટીકા)

આને મળાતીજ હકીકત તપા ગચ્છની એક બીજી ૩ પાનામાં
અમેત્ર શ્લોકઅદ્ધ પદ્માવલી, કે જે આ• વિજયવીરસૂરિ જૈન જ્ઞાનમંદિર

રાધનપુરમાં સુરક્ષિત છે, અને જેમાં કેટલાક પદો બૃહદ્દેવ પ્રશસ્તિનાંજ અમુક પરિવર્તન કરીને જેમનાંતેમ ઉદ્ધૃત કરેલ છે, તેમાંએ મળી આવે છે, જુઓ—

આ રીતે જેમ આજના તપાઓ માને છે, તેમ આચાર્ય જગ-
ચ્યન્દ્રસૂરિને આંખિલની તપાસ્યાના નિમિત્તે અમુક રાગ કે રાણા દ્વારા તપા
ગિરદ મળ્યો અથવા મણિરત્નસૂરિના શિષ્ય હતા. આ વાત ઉપરોક્ત
પ્રમાણોથી જરાએ સાખીત થતી નથી, છતાં આજના તપાઓ જગ-
ચ્યન્દ્રસૂરિને તપા ગિરદ મળાવું અને મણિરત્નસૂરિના શિષ્ય હોવાનું ક્યા
પ્રમાણથી માને છે ? તે સર્વામાન્ય અતિહાસિક પ્રમાણોથી જાંખવાચાર્ય
સાખીત કરી બતાવે. પણ એવો પ્રમાણ મળવાનોજ ક્યાં છે ?

મુનિમુન્દરસુરિરાચિત ગુર્યાવલી, કે જે વિ. સં. ૧૪૬૬ માં,
એટલે આજના તપાએની માન્યતા મુજબ તપાની ઉત્પત્તિથી વીસ ક્રમ

વલ્લભસૂરિ. શ્રીજિનદત્તસૂરિ. શ્રીજિનપ્રભસૂરિ આદિના નામ લઈ વખાણ કર્યા છે, તે આવી રીતે—

અરસો વર્ષ પછી રચાયેલ છે, તેના સિવાય ખીજું કોઈ પ્રમાણ હોય તેમ લાગતું નથી. અને ગુર્વાવલીનું કથન પ્રમાણભૂત માની શકાય તેમ નથી, કારણ કે ગુર્વાવલીમાં પહેલાં તો “શ્રીદેવમદ્રામિધવાચ-કેન્દ્રં, તં શ્રીજગન્નન્દ્રગુરુઃ પ્રબુદ્ધઃ । અથોપસમ્પદ્વિધિના પ્રપદ્ય, સ તદ્વિત્તીયો ધુરમસ્ય દધે ॥૮૮॥” આ શ્લોકથી ‘જગન્નન્દ્રસૂરિએ વાયક દેવભદ્ર ગણિ પાસે ઉપસંપદા લેવા’નું કહ્યું છે, ઉપસંપદા શબ્દનો અર્થ કરતાં નવાંગટીકાકાર શ્રીઅલયદેવસૂરિજી મહારાજ કહે છે કે— “ઉપસમ્પત્-ક્રતો ભવદીયોઽહમિત્યભ્યુપગમઃ.” (દાણાંગ ટીકા પાના ૫૦૧) અર્થાત્ ‘આજથી હું તમારો છું એમ સ્વીકારવાનું નામ ઉપસંપદા છે’ એથી ફળિતાર્થ એ થયું કે-ગુર્વાવલીના કથનાનુસાર જગન્નન્દ્રસૂરિ પણ ઉપસંપદા લઈને વાયક દેવભદ્ર ગણિના શિષ્ય થયા, છતાં આગળ ચાલતાં એજ ગુર્વાવલીમાં “દેવમદ્રગણિન્દ્રોઽપિ, સંવિગ્નઃ સપરિચ્છદઃ । ગણેન્દ્રં શ્રીજગન્નન્દ્ર-મેવ મેજે ગુરું મુદા ॥૧૦૩॥” આ શ્લોકથી કહે છે કે-‘સંવિગ્ન ભાવનાવાળા વાં દેવભદ્ર ગણિ પણ પોતાના શિષ્યાદિ પરિવારસહિત ગણનાયક શ્રીજગન્નન્દ્ર ગુરૂનેજ સહર્ષ ભજવા લાગ્યા એટલે એમનો આશ્રય લીધો’ અહિં વિચારવાનું કે-જે માણસ ઉપસંપદા લેવાવડે પોતાનો શિષ્ય અન્યો તેની નિશ્રામાં ઉપસંપદા દેનાર પોતે પોતાના શિષ્યાદિ પરિવાર સહિત રહે એ વાત સંભવેજ કેમ ? જમે તેવો અદ્વૈત પણ પોતાનો આશ્રય લેનારની નિશ્રામાં રહેવા કદી પણ તથ્યાર થાય ખરો કે ? કદીય નજ થાય.

“ પહેલાના સમયે. એટલે સં. ૧૦૮૦ માં, (અણહિલપુર) પાટણમાં (જ્યારે) રાજા ભીમદેવ રાજ્ય કરતો હતો. ત્યારે આચાર્ય

તો પછી જે મહાન્ સમર્થ પુરૂષ કે જેના માટે ખુદ ગુર્વાવલીકાર પણ—

“ સંવેગરઙ્ગામ્બુધિ ધૌતબુદ્ધિ, જિનાગમાત્મલૂપચરિત્રશુદ્ધિમ્ ।

વિધીયમાનાર્હતધર્મવૃદ્ધિ, શુદ્ધૈર્ગુણૈઃ પ્રાપ્તજગત્પ્રસિદ્ધિમ્ ॥૮૬॥

અધીતિનં સારજિનાગમાનાં, સૂત્રેષુ ચાર્થેષુ ચ વેદિનં ચ । આમ્ના-

તિનં સાધુવિશુદ્ધમામા-ચાર્યાઃ પ્રવૃત્તં ચ. યથાવદસ્યામ્ ॥ ૮૭ ॥ ”

આ શ્લોકો વડે “ જેની બુદ્ધિ સંવેગરંગરૂપ સમુદ્રમાં ધોવાઈને નિર્મલ થએલ છે, જિનાગમથી કરી છે ચારિત્રની શુદ્ધિ જેણે, જેઓ આર્હત ધર્મની વૃદ્ધિ કરી રહ્યા છે, પોતાના શુદ્ધ ગુણો વડે પ્રાપ્ત કરી છે જગતમાં પ્રસિદ્ધિ જેમણે, જિનાગમના સાર-તત્ત્વને જાણ્યો છે જેમણે, સૂત્રથી ને અર્થથી સમગ્ર સિદ્ધાંતના જેઓ જ્ઞાતા છે, તેમ વિશુદ્ધ સાધુ સામાચારીને ગુર્વામ્નાયથી જેમણે જાણી છે અને તે મુજબ પ્રવૃત્તિને કરનાર છે” આવા વિશેષણો લગાડી જે દેવભદ્ર ગણિની પ્રશંસા કરી છે, તેને પણ જગચ્ચન્દ્રસૂરિ કે જે ઉપસંપદા લઈ પોતાના શિષ્ય બનેલા છે, તેની નિશ્રામાં રહેવાનું લખવું એ કેટલું વાહ્યાત અસમંજસ-અનુચિત છે ? આવા મહાન્ ગુણી પ્રસિદ્ધિપાત્ર હોવા છતાં તેમને શું ખામી હતી કે જેના લીધે જગચ્ચન્દ્રસૂરિની નિશ્રામાં રહેવાની જરૂર પડી ? કેવળ પોતાના પૂર્વજેની મહત્ત્વતા બતાવવાના ઇરાદાથી નરી મનઘડત કદપનાથી ઉપજાવી કાઢેલ ઉપરોક્ત ગુર્વાવલીનું કથન કૃતદ્વંતા ભયું છે. એમ માનવામાં લેશમાત્ર પણ કાંઈ વાંધો નથી.

બીજું વંદાવૃત્તિના ઉપક્રમમાં સાગરાનંદ જે લખે છે કે—

“ શ્રીમદ્ધિર્યદા શ્રાદ્ધદિનકરવૃત્તિધર્મત્નવૃત્ત્યાદયઃ કૃતાસ્તદા નાવાપ્તં

શ્રીજિનેશ્વરસૂરિજી ભૂતલમાં ખૂબ પ્રસિદ્ધ થયા ૧, તેમના પાટે (નવાંગી

તપોવિરુદ્ધ તતો નોલ્લેલ્લસ્તસ્ય તયોઃ, પરં શ્રીમદ્ધિરેવ વિહિતાયાં
સ્વોપજ્ઞકર્મગ્રન્થવિવૃત્તૌ ‘ક્રમેણાત્તતપાભિરુચે’તિ પ્રશસ્તિવાક્યં
દૃષ્ટ્વા કો દૃષ્ટિમાન્ ન શ્રદ્ધીત શ્રીમતાં તપોગણવર્તિતાં, ન ચૈવ-
મલીકાલાપેન સ્વરતરાણામસદ્ભૂતાં શ્રીજિનેશ્વરસૂરેસ્ત્પત્તિમનુમન્યેત
કોઽપિ તપોગણીયોઽન્યોઽપિ ને(ચે)તિ તદાગ્રહરસિકૈરાલોચ્યં, યતો
વિહાય જિનવલ્લભીયાન્ ન કોઽપિ શ્રીજિનેશ્વરસૂરિપરમ્પરાગતઃ
શ્રીજિનેશ્વરસૂરિણાં સ્વરતરતામાખ્યાતિ” એ તેમના દુરાગ્રહ અને દ્વેષ
બુદ્ધિનોજ પરિચાયક છે, કારણ કે વંદાશ્વરત્તિ પ્રશસ્તિના “ઇત્યેવ-
મલ્પરુચિસત્ત્વવિબોધનાય, શ્રાદ્ધપ્રતિક્રમણસૂત્રવિવૃત્તિરેષા । કિંચિ-
ન્મયા પ્રકટિતાઽત્ર ચ વિસ્તરાર્થો, જ્ઞેયો બૃહદ્વિવૃત્તિતો વરચૂર્ણિ-
તશ્ચ ॥૧૧॥” આ શ્લોકથી વૃત્તિકારે કોઈ ગચ્છાદિનું નામસુધાં ન કહેવા છતાં
“ શ્રીમત્તપાગણત્રિપથગાપ્રવાહિમવત્સાનુપ્રભ ” જેવું વિશેષણ
લખતાં લેશમાત્ર ન સંકોચાવું અને સ્વયં જિનવલ્લભસૂરિજી
સ્વકૃત ગ્રંથોમાં અભયદેવસૂરિજીની ચારિત્રોપસંપદા લેવાનું સ્વીકારવા
છતાં અને ખુદ અભયદેવસૂરિજીએ લખેલ સ્વપરંપરા ખરતરગચ્છની
પદ્માવલીમાં મળતી હોવા છતાં તેનો અપલાપ કરવો એથી વધુ ધણતા શું
હોઈ શકે ? એજ એમના દુરાગ્રહ અને દ્વેષબુદ્ધિનું પ્રદર્શન છે. અસ્તુ.

તપા ખ. ભેદ પૃ. ૧૧૮ માં લખ્યું છે કે-“ શ્રીજિનેશ્વરસૂરિથી
ખરતર બિરુદ્ધ મલ્યાનું જે કહે છે તે સંવત ૧૨૦૪ સુધી તો નથી,
પછી જિનવલ્લભસૂરિ કે જિનદત્તસૂરિએ પણ કહ્યું નથી, ગણધર સાધ
શતકની ટીકામાં પણ નથી, છતાં જે કહે છે તે જાણે, તે પહેલાં

ટીકાકાર) શ્રીઅભયદેવસૂરિજી દીપ્તિમંત થયા, જેમનાથી (નવઅંગ-

ખરતર યિરૂદ્ધ હોત તો કહેત.” એના ઉત્તરમાં લખવાનું કે-એક તો જ્યારે જિનવલ્લભસૂરિજીનો અસ્તિત્વ કાળજ સં. ૧૧૬૭ સુધીનો છે ત્યારે ‘૧૨૦૪ પછી જિનવલ્લભસૂરિ કે જિનદત્તસૂરિએ પણ નથી કહ્યું” એમ લખનાર જાણ્યાચાર્ય એવં એમના પૂર્વજોમાં કેટલી વિચારશીલતા ઉભરાઈ રહી છે ? એનો વિચાર પાઠકો સ્વયમેવ કરી લે.

ખીજું ખુદ યુગપ્રધાનાચાર્ય શ્રીજિનદત્તસૂરિજી પોતાના રચેલ ગુરુ-પારતંત્ર્ય સ્તોત્રની “પુરઑ દુલ્લહમહિવ-લ્લહસ્સ ઋણહિલ્લવાડણ પયડં । મુક્કા વિચારિઝણં, સીદ્ધેણ વ દન્વલિંગિગયા ॥ ૧૦ ॥” આ ગાથાથી દુર્લભરાગની સમક્ષ દ્રવ્યલિંગી-ચૈત્યવાસીઓને હરાવ્યાનું કહેવા દ્વારા આચાર્ય જિનેશ્વરસૂરિજીનો વિજય સ્પષ્ટ સૂચવે છે. તે સાથે તેમને ખરતર યિરૂદ્ધ મલ્યાનું સૂચન પણ અર્થાપત્તિએ અવશ્ય કરેલ છતાં પક્ષપાતના ઉપનેત્રોથી આવૃત નેત્રવાળા જાણ્યાચાર્યને ૧૨૦૪ સુધીમાં ખરતર યિરૂદ્ધ મલ્યાનો ઉલ્લેખ જોવા ન મળ્યો તો કાંઈ નહીં, પણ વીસ કમ ખરસો વર્ષ પછીની લખાયેલ ગુર્વાવલી સિવાય યા તો સં. ૧૩૩૨ સુધીમાં કોઈ પણ પ્રમાણભૂત વિશ્વસનીય તાત્કાલિક પ્રમાણ ન હોવા છતાં દેવેન્દ્રસૂરિ જેવા મહાન સમર્થ ગ્રન્થકાર અને બૃહત્કલ્પસૂત્ર જેવા મહાન ગંભીરાર્થ શાસ્ત્રના ટીકાકાર ક્ષેમકીર્તિસૂરિ જેવા મહાન આચાર્યોના નામે પોતાના ગચ્છની મહત્વતા બતાવવાના લોભવશ જાણ્યાચાર્યાદિજ લગભગ ખરસો વર્ષ પછી રચાએલ ગુર્વાવલીના આધારે જ્યારે એ વાતને નફૂકર સત્ય તરીકે માને છે ત્યારે અભયદેવસૂરિ જિનવલ્લભસૂરિ વિગેરેએ ન લખ્યું. છતાં

સૂત્રોની ટીકા કરવાના અંગે તેમ શાસનદેવીના આદેશથી ‘જયતિહુઆણુ’ સ્તોત્રની રચના વડે સ્તંભનપાર્શ્વનાથની સાતિશાથી પ્રતિમા પ્રકટ કરીને પોતાનો કુળરોગ મટાડવાના અંગે) ખરતર ગચ્છ પ્રતિષ્ઠાને પામ્યો ૨” x

ખરતરગચ્છની પાછળની પટ્ટાવલીઓમાં લખ્યા મુજબ સં. ૧૦૮૦ માં આચાર્ય જિનેશ્વરસૂરિને ગૂર્જરનરેશ દુર્લભરાજ તરફથી ખરતર ખિરદ મહાની વાતને સત્ય માનતાં જન્વાચાર્ય તેમ એમનાં પૂર્વજોનું પેટ શા માટે દુખે છે ?

ખીજું એ પણ વિચારવાનું કે—જેમ દેવેન્દ્રસૂરિ અને ક્ષેમકીર્તિસૂરિએ સ્વઅન્થોમાં પરંપરા પણ મણિસ્તનસૂરિની ન લખતાં ચિત્રાવાલગચ્છની લખી, તેમ જિનદત્તસૂરિ વિગેરેએ ગણધર સાર્ધશતકાદિમાં ઉદ્યોતનસૂરિ વર્ધમાનસૂરિ, જિનેશ્વરસૂરિ, બુદ્ધિસાગરસૂરિ, જિનચંદ્રસૂરિ, અભયદેવસૂરિ, જિનવલ્લભસૂરિ જિનદત્તસૂરિ પયંતની પરંપરા ખીજી નથી લખી, પરંતુ જન્વાચાર્યના પૂર્વજ ગુર્વાવલીકારે તો દેવેન્દ્રસૂરિ આદિની લખેલ સત્ય પરંપરાનેજ ઉડાવી દઇને મનઘડંત કલ્પિત પરંપરા ખડી કરી દીધી. આ કેટલું અસત્ય પોષણ ? છે કાંઇ મહામતનું ઠેકાણું કે ભવભીરતા ?

x સં. ૧૦૮૦ માં ખરતર ખિરદ પ્રાપ્ત ન થવાના કારણોમાં તે સમયે દુર્લભ રાજ રાજગાદી ઉપર ન હોવાનું બતાવવું વજૂદ વગરનું છે. કારણ ? યદ્યપિ દુર્લભરાજ સં. ૧૦૭૮ માં ભીમદેવને રાજગાદીએ ખેસાડી પોતે તીર્થયાત્રાએ ગયાનો ઉલ્લેખ પ્રયંધચિંતામણિ આદિ ઐતિહાસિક ગ્રંથોમાં મળે છે, પરંતુ એવો તો ઉલ્લેખ ક્યાંય નથી જડતો કે સં. ૧૦૭૮ માંજ તેમનું અવસાન થઇ ગયું, કે જેના આધારે તેમની હયાતી ૧૦૮૦ માં પાટણમાં સર્વાથ નહોતી એમ માની

આ રીતે તપા ગચ્છીય આચાર્ય શ્રીસોમસુંદરસૂરિ શિષ્ય ઉપાધ્યાય શ્રીચારિત્રરત્નગણિ શિષ્ય પ્રજ્ઞાંશ સોમધર્મ ગણિ વિરચિત ઉપદેશસમ-

શકાય, પ્રત્યુત રાયખહાદુર હાથીભાઇ ગોવિંદભાઇએ લખેલ ‘ગુજરાતનો પ્રાચીન ઇતિહાસ’ ના કથન મુજબ સં. ૧૦૮૦ માં સોમનાથનો ભંગ કરી જ્યારે પાટણ ઉપર મુસલમાનોએ આક્રમણ કર્યું ત્યારે ભીમરાજ રાજગાદી છોડી ભાગી ધૂલ્યો, એટલે મુસલમાનોએ સત્તા જમાવી. ને જ્યારે પાછા ગિજની જવાને તઇયાર થયા ત્યારે પાટણની રાજગાદીએ દુર્લભરાજ મૌજૂદ હતો છતાં કદાચિત્ એમ માની લઇએ કે સં. ૧૦૮૦ માં પાટણની રાજગાદી ઉપર દુર્લભરાજ નહીં, પણ ભીમરાજ હતો, તોય હરકત નથી, કારણ કે ‘દુર્લભરાજ તીર્થયાત્રા કરીને પાછો પાટણ આવ્યોજ નહીં’ એમતો કોઇ પણ ઇતિહાસકાર કહેતો નથી, એટલે સંભવ છે કે તીર્થયાત્રાથી પાછા આવ્યા બાદ રાજચિંતામાં ન પડતાં પોતાનું પાશ્ચાત્ય જીવન ધર્મારાધનમાંજ વીતાવવાનું નિશ્ચય કર્યું હોય. અને રાજગાદીનો અધ્યક્ષ ભલેને ભીમરાજ હોય, છતાં આ ધાર્મિક વિવાદના પ્રસંગે તેણે આ સભાનું અધ્યક્ષ પદ સ્વીકારીને રાજસિંહાસનને અલંકૃત કર્યું હોય તો શું અસંભવ છે ?

આ રીતે જ્યારે સં. ૧૦૮૦ માં પાટણની રાજગાદીએ દુર્લભરાજની હયાતી સિદ્ધ થાય છે ત્યારે તે સમયે રાજ દુર્લભ તરફથી આચાર્ય જિનેશ્વરસૂરિજીને ખરતર ખિરદ મળવાનું અસંભવ કેમ માની શકાય ?

પાછળના કેટલાએક લેખકોના પ્રમાદ યા અનાભોગાદિ ગમે તે કારણે પાછળની કેટલીએક પટ્ટાવલી તથા પ્રશસ્તિઓમાં લખાએલ ૧૦૨૪ યા ૧૦૮૪ ના સંવતને આગળ કરી સત્ય વસ્તુને ઊઝાવી દેવાના

તિકા ગ્રંથમાં આવેલ આ એ શ્લોકોની અંદર નવાંગી ટીકાકાર શ્રીઅભય-
દેવસૂરિજી ખરતર ખિરદ મત્યા પછી થયા અને તેઓ શ્રી ખરતર ગચ્છનો

પ્રયત્ન કરવા એ મોહરાગનુગ્ન માહાત્મ્ય છે. કોઈ એક એ વ્યક્તિઓએ
સામેલ સંવતની અવ્યવસ્થિતતાના અંગે બહુલતાએ લખાએલ ૧૦૮૦ નો
સંવત્ અસત્ય ન મનાય, સેંકડો વર્ષના આંતરે લખાતિ બાબતોમાં તો
આવો પાઠભેદ વિભિન્ન કૃતિઓમાં થઈ જવો કાંઈ આશ્ચર્યકારક નથી.
પણ તપાની ગુર્વાવલીમાં તો એકજ કૃતિમાં વિદ્યાનંદસૂરિના સૂરિપદ
મહોત્સવના સંવતો ૧૩૦૩ અને ૧૩૦૪ આમ બે લખ્યા છે. અને
ત્યાર પછી લખે છે કે “વિશેષનિર્ણયં તુ વિશેષજ્ઞા વિદંતિ” અર્થાત
‘વિશેષ નિર્ણય તો વિશેષજ્ઞો જાણે’ એમ કહીને પોતાને માટે જ્યારે
સમાધાન કર્યું છે. ત્યારે ખરતર ખિરદ પ્રાપ્તિના સંવત માટે પણ એજ
સમાધાન લેવાને જગ્યાચાર્યનો મન કેમ તથ્યાર નથી થતું ?

વળી એક વાત ખાસ વિચારવા જેવી છે તે એ કે-ખરતર ખિરદ
તો મેળવનાર આચાર્ય જિનેશ્વરસૂરિ અને આપનાર રાગ દુર્લાભ આ
એકજ હકીકત બીધી પટ્ટાવલીઓ તેમ પ્રશસ્તિઓમાં મળે છે, આ
બાબતમાં ખરતર ગચ્છના બધાય લેખકો એકમત છે, પણ તપાઓમાં તો
એ બાબતમાં અનેક મત છે, જેમકે મુનિસુન્દરસૂરિ સ્વકૃત ગુર્વાવલીમાં
“તદાદિબાણંદ્વિપમાનુ (૧૨૮૫) વર્ષે, શ્રીવિક્રમાત્પ્રાપ તદીયગચ્છઃ ।
બૃહદ્ગણાઘ્નોઽપિ તપેતિ નામ, શ્રીવસ્તુપાલાદિભિરર્ચ્યમાનઃ ॥૧૬॥”
આ શ્લોકમાં સં. ૧૨૮૫ માં આંબિલની તપસ્યાના અંગે સ્વતઃ ‘તપા’
એવા નામની પ્રસિદ્ધિ થયાનું લખે છે, પણ અમુક રાગએ કે રાણાએ
દીવાનું સૂચન સરખુંય નથી, પ્રત્યુત ચોથા પદથી સ્પષ્ટ કહે છે કે

ઉઘોત કરનાર થયા એમ કહ્યું છે, એટલે ખરતર ગિરદ મલ્યા પછી શ્રીઅભય દેવસૂરિ થયા ' એમ તપાગચ્છના ગીતાર્થે કહ્યું છે. વલી તપાગચ્છીય

'તપાગચ્છ મંત્રિ વસ્તુપાલાદિકથી પૂજિત છે' જે કોઈ પણ રાજા કે રાણાએ તપા ગિરદ આપેલ હોત તો મંત્રિ વસ્તુપાલાદિકથી પૂજિત લખવાનું કાંઈ કારણ નહોતું.

એ સિવાય ખીજી અનેકો પદ્માવલી આદિમાં ઉદયપુરના રાણાએ તપા ગિરદ આપ્યાનું લખેલ છે, પણ અમુક રાણાએ આપ્યું એવો નામનિર્દેશ તો કોઈ પણ પદ્માવલી યા ઐતિહાસિક ગ્રંથમાં લખેલ હોય એમ આજ દિવસ સુધી સાંભળવામાં નહોતું આવ્યું છતાં આજે જાહેર પેપરોમાં રાણાનું નામ સ્પષ્ટતથા જાહેર કરવામાં આવે છે તે કયા ઐતિહાસિક પ્રમાણના આધારે કરાય છે? એતો કરનારાઓ જાણે.

ત્રીજું એવો પણ ઉલ્લેખ. જોકે હમણાં હાજર ન હોવાના અંગે તેનો પાદ ઉધ્ધૃત નથી કરી શકતો, છતાં ભાષાની એક જાપેલ પુસ્તકની અંદર વાંચવામાં આવ્યું નિશ્ચિતતથા સ્મરણમાં છે, જેની અંદર કોઈ રાજા-રાણાએ નહીં, પણ અમુક રાણીએ તપા ગિરદ આપ્યાનું ઉલ્લેખ હતો, એ સિવાય મહેશાણા શહેરના મોટા ઉપાશ્રયના ભંડારમાં એક તપા ગચ્છની પદ્માવલી ૧૪ પાનાની છે, જે સં. ૧૮૮૧ માં ચન્દ્રવિજયે લખેલી છે તેમાં ચોક્કસ લખ્યું છે કે-“ એણે આચાર્ય જવજીવ આંગિલ તપ કર્યા, આરે વરસે વિહાર કરતાં માંડવગઢને વિષે રાણી દેખી 'તપા' ગિરદ દિધો. વિક્રમાત્ સંવત્ ૧૨ પંચ્યાસી વરસે ” તેમ ખીજી એક પુસ્તકમાં એમ પણ વાંચેલ સ્મૃતિમાં છે કે-રાણાએ 'મહાતપા' કહીને ખોલાવ્યા ત્યારે મંત્રિએ તેમાંથી 'મહા'શબ્દ કઢાવી નંખાવ્યો. તે ફક્ત 'તપા' ના નામથીજ ખોલાવ્યા.

આં હેમહંસસૂરિ કૃત કલ્પાંતર્વાચ્યમાં લખ્યું છે કે (ખરતર ગચ્છમાં) નવાંગીવૃત્તિકારક શ્રીઅભયદેવસૂરિ થયા, જેમણે શાસન દેવીના કહેવાથી (ખેડા માતરની પાસે) થાંભણા ગ્રામે સેદી નદીના કાંઠે ‘જય તિહુઅણુ’

એ ઉપરાંત ચોથો ઉલ્લેખ એવો મળે છે કે જેની અંદર કોઇ પણ રાજા-રાણા કે રાણીએ નહીં તેમ જગચ્ચન્દ્રસૂરિને પણ નહીં, કિન્તુ વાચક દેવભદ્રગણિને પદ્માવતી દેવીએ તપા બિરૂદ આપ્યાનું લખેલ છે, જુઓ—“ વર્ષે સપ્તશરાક્ષચન્દ્રગણિતે (૧૫૫૭) ચૈત્રસ્ય ચાદ્યે દિને, સયોગે મૃગુરેવતીભુવિ બલાચ્છ્રીદેવગુર્વો ગિરઃ । મંદેનાપિ મયા મમથિતમિદં વૈધેયધીહેતવે, વિજ્ઞૈશ્ચેદિહ દૂષણં મયિ કૃપાં કૃત્વૈવ તચ્છોધ્યતામ્ ॥૫૦॥ સ્વચ્છ્રે શ્રીચન્દ્રગચ્છ્રેઽજનિવત પરમાઃ પાઠકાશ્ચૈત્રશાસ્ત્રા-વિરૂયાતા દેવમદ્રાઃ સુવિહિતશિરસિ સ્ફારકોટીરતુલ્યાઃ । આચામામ્લાનિ કૃત્વા સતતમભિરતૈરાગમોક્તક્રિયાયાં, પદ્માવત્યા પ્રદત્તં સ્ફુટમિહ વિરુદં યૈગૃહીતં તપેતિ ॥૫૧॥

(તપા ઉદયસાગરસૂરિશિષ્ય લખ્ધિસાગરસૂરિ રચિત પૃથ્વીચન્દ્ર ચરિત્ર)

એની પ્રતિ સં. ૧૫૬૮ ભાદરવા વદ ૧૩ શુક્રવારની લખેલ કેસરીયાનાથજીનો ભંડાર જોધપુરમાં છે. એજ મતલબનો એક બીજો પણ ઉલ્લેખ મળે છે, હુકમમુનિ જ્ઞાનભંડાર સુરતમાં એક કુટકર પાનામાં એક ગાથા જોઇ. જેની અંદર લખ્યું છે કે—“ તવોમયં દેવમદ્વાત્રો ” અર્થાત્ ‘ તપા મત દેવભદ્રથી થયો ’.

પ્રિય પાઠકો ! જોયું કે ? તપા બિરૂદની પ્રાપ્તિના લિખ્ત લિખ્ત ઉલ્લેખો, તપાની પોતાની પદ્માવલિઓમાંજ કેવા વિલિખ્ત પ્રકારનાં ઉલ્લેખો છે ? આવા વિલિખ્ત ઉલ્લેખો ખરતર ગચ્છની પદ્માવલિઓમાં નથી.

સ્તોત્રની નવીન રચના કરી ભગવાન પાર્શ્વનાથ પ્રભુની સ્તુતિ કરી સ્તંભન પાર્શ્વનાથની મૂર્તિ (ભૂમિમાંથી) પ્રગટ કીધી, ધરણેન્દ્રને પ્રત્યક્ષ કીધો, પોતાના શરીરનો કોઈ રોગ ઉપશમાવ્યો, નવઅંગ (સૂત્રો)ની ટીકા કીધી, તેમના શિષ્ય શ્રીજિનવલ્લભસૂરિ થયા, જેમણે નિર્મલ ચારિત્ર [(પાલનાથ આ. શ્રીઅભયદેવસૂરિજીની ઉપસંપદા લઈને) સુવિહિત સંવેગપક્ષ ધારણ કરી અનેક ગ્રંથો નિર્માણ કર્યા, તેમના શિષ્ય યુગપ્રધાન શ્રીજિનદત્તસૂરિજી થયા, જેમણે ઉજ્જૈન અને ચિતોડના મંદિરમાંથી (ગુપ્ત રહેલ) વિદ્યાપુસ્તક પ્રગટ કરી. દેશવિદેશમાં વિચરી (જૈન ધર્મના તત્ત્વોપદેશવડે) અનેક રાજપૂતાદિને પ્રતિબોધી સવા લાખ (એક લાખ ત્રીશ હજાર નવા) જૈનધર્મીં આવક કીધા, આ અનુક્રમે શ્રીખરતર ગચ્છમાં અનેક સાતિશય સૂરિવરો થયા ” ઇત્યાદિ જોજો. વળી—

“નવઅંગના વ્યાખ્યાતા અને નિર્મલ બુદ્ધિવાલા શ્રીઅભયદેવસૂરિ થયા, તેમના શિષ્ય આચાર્ય શ્રીજિનવલ્લભસૂરિ ગુરુ-જ્ઞાનાદિ લક્ષ્મી વડે પ્રૌઢતાને ધારણ કરનારા થયા, તેમના પાટે લક્ષ્મીના તિલક સમાન આચાર્ય શ્રીજિનદત્તસૂરિ થયા કે જેમણે હજારો ભવ્યાત્માઓને દીક્ષા આપી તેમ ચન્દ્રપ્રભાચાર્યની માફક વિવિધ ગ્રંથોની રચના કરી? ”

આ રીતે તપાગચ્છીયાચાર્ય મુનિસુન્દરસૂરિ કૃત ‘ત્રિદશતરંગિણી’ ગ્રંથમાં પૂર્વાચાર્ય વર્ણનાધિકારે ૨૦૧૨ માં તરંગમાં કહ્યું છે, તથા નવાંગટીકાકાર શ્રીઅભયદેવસૂરિના શિષ્ય શ્રીજિનવલ્લભસૂરિના રચેલા ‘સૂક્ષ્માર્થ વિચારસાદ્શતક’ નામના કર્મગ્રંથની ટીકા કે જે (તપા ગચ્છના પૂર્વાચાર્ય) ચિત્રવાલ ગચ્છીય ધનેશ્વરસૂરિની રચેલ છે, તેનો ખલાવબોધ કરેલ છે. તેમાં અભયદેવસૂરિજીને ખરતરગચ્છના અને

તેમના શિષ્ય ગિતવદ્ધલસૂરિજીને લખ્યા છે. તથા દીવાલીકલ્પમાં (ગિતસુન્દરસૂરિએ) લખ્યું છે જે ‘ભગવાન્ મહાવીર સ્વામી કહે છે કે—સં. ૧૨૮૪ માં ખરતર ગચ્છ થશે’ (એવા ગચ્છતો પૂર્વે અનેક થયા છે) તો પછી તમે (કલેશમૂર્તિ) ધર્મસાગરના રચેલા શાસ્ત્રખાલ્ય ગ્રંથો (કે જે ગ્રંથોને કલેશનું મૂળ સમજી તેના ગુરુઓએજ સંઘસમક્ષ પાણીમાં ઝોળી દીધા, તે) ની સાક્ષિ લઈને ખરતર ગચ્છને દ્વિપિત શા માટે કરો છો ? વિચારી જોજો. વધારે શું લખીએ ?

વલી તત્ત્વતરંગિણીની ત્રીકામાં દષ્ટિરાગના કારણે ભૂલ કરીને તપા ધર્મસાગર ઉપાધ્યાયે જુદા જુદા બે સ્થાને શ્રીઅભયદેવસૂરિના શિષ્ય ‘પરમાનંદ’ નામના તે ખરતર નામ લખ્યા છે વિચારી જોજો. આ તપા ધર્મસાગર ઉપાધ્યાયનું એટલું ભોળાપણું થયું છે, પરંતુ પરમાર્થથી તે સામાચારી ગ્રંથના કરનારા (પરમાનંદ) ખરતર ન હોય, ગચ્છેગચ્છમાં ઘણાય અભયદેવસૂરિ થયા છે, પરંતુ તે ભાઈસાહેબે જેમ ખિલાડી દહી કે દૂધને જીએ છે પણ માથે પડતા લાકડીના પ્રહારોને નથી જોતી, તેમ આ સામાચારી ખરતરની જાણીને અભયદેવસૂરિને પણ ખરતરપણું પોતાને અલુગમતુંય આવ્યું ન જાયું. +

+ તપા ખરતર ભેદ પૃ. ૧૧૮ ના ટિપ્પણમાં જન્વાચાર્ય લખે છે કે—“ શ્રીઅભયદેવસૂરિજી મહારાજને ખરતરગચ્છમાં ખેંચી જવા માટે ખરતરગચ્છીઓ જે અનેક કૂટ પ્રયાસ કરે છે, તેનો આ જીવાખ છે.” એટલે જણાવવાનું કે શ્રીઅભયદેવસૂરિજી મહારાજને ખરતરગચ્છમાં ખેંચી જવાની ખરતરગચ્છવાળાઓને જરાય આવશ્યકતા નથી, કારણ કે જે પરમ્પરા ગુરુશિષ્યાદિની શ્રીઅભયદેવસૂરિજીએ પોતે નવાંચ

વલી સંવત્ ૧:૧૭ ના વર્ષે જ્યારે યુગપ્રધાનાચાર્ય શ્રીજિન-

ડીકા આદિમાં લખી છે તેની તે પરંપરા ખરતરગચ્છવાળાઓ
લખી માની રહ્યા છે. તો પછી એમને એ માટે કૂટ પ્રયાસ
કરવાની જરૂરત શું છે એવા કૂટ પ્રયાસો તો જન્મ્યાચાર્યના
પૂર્વજોને મમત્વવશ કરવા પડ્યા છે, જેના અંગે દેવેન્દ્રસૂરિ
અને ક્ષેમકીર્તિસૂરિ જેવા સમર્થ આચાર્યોને તપામાં ખેંચી જવાના
મમત્વથી દેવેન્દ્રસૂરિ અને ક્ષેમકીર્તિસૂરિએ લખેલ ચિત્રાવાલ ગચ્છની
ગુરૂપરંપરા છોડી દહને કલ્પિત પરંપરા ઉભી કરવી પડી. એટલુંજ
નહીં, કિંતુ જગચ્ચંદ્રસૂરિને ઉપસંપદા આપવા વડે પરમોપકારી દેવ-
ભદ્રગણિના ગુરૂપદને ઉગાવી દહ ઉઠતા ગુર્વાવલીના “દેવભદ્રગણીન્દ્રો-
ર્ઽપિ, સંવિગ્નઃ સપરિચ્છદઃ । ગગેન્દ્રં શ્રીજગચ્ચન્દ્ર-મેવ મેજે
ગુરું મુદા ॥ ૧૦૩ ॥” આ શ્લોકમાં દેવભદ્રગણિને જગચ્ચંદ્રસૂરિના
આજ્ઞાનુયાયી બનવાનું લખી દીધું, પાઠકો ! જુઓ તો ખરા. છે કાંઈ
કૂટ પ્રયાસ કરવામાં ઓછાસ ?, અરે આવા કૃતક્ષતા ભર્યા પોતાના
પૂર્વજોના કૂટ પ્રયાસોને ખીજના ઉપર ઢોળી દેતાં થોડાય કાંઈ વિચાર
જન્મ્યાચાર્યને આવે છે ? જ્યારે જન્મ્યાચાર્યના પૂર્વજોનાંજ આવા
કૂટ પ્રયાસો પ્રમાણુ સિદ્ધ છે ત્યારે “ખરતરગચ્છીયો જે અનેક કૂટ
પ્રયાસો કરે છે. તેનો આ જુવાળ છે” આ વાક્યો જન્મ્યાચાર્ય ક્યા
મોઢે કહી રહ્યા છે ? અને આમાં જુવાળ શું આપ્યો છે ? શું કોઈ
શાસ્ત્રીય પ્રમાણુ એવું એક પણ આપ્યું છે ? કે જેના આધારે
અભયદેવમંરિજીની પરંપરાથી ખરતર ગચ્છવાળાઓની પરંપરા લિન્ન
માની શકાય, જ્યારે લિન્ન પરંપરા સાખીત કરનાર કોઈ પ્રમાણુ છે
નહીં, ત્યારે જવાળ શું આપ્યો ? એતો જન્મ્યાચાર્ય સમજાવે !

ચન્દ્રસૂરિજીએ પાટણમાં ચોમાસું કયું ત્યારે ઋષિમતી ધર્મસાગરે જુડી ચરચા ઉભી કરી કે—નવાંગી વૃત્તિકાર અને થંભણુપાર્શ્વનાથની પ્રતિમા પ્રગટ કર્તા આં શ્રીઅભયદેવસૂરિજી ખરતર ગચ્છમાં નથી થયા ' આ વાત સાંભળતાં યુગપ્રધાન શ્રીજિનચન્દ્રસૂરિજીએ કાર્તિક સુદ ૭ ના દિવસે તે સમયના બધા ગચ્છવાસીઓની સભા ભરીને બધાની સમક્ષ અનેક અંથોના પ્રમાણુ આપીને સાબીત કરી બતાવ્યું હતું કે—નવાંગી ટીકાકાર અભયદેવસૂરિજી ખરતર ગચ્છમાંજ થયા છે, તેમ તેમની ગુરૂ શિષ્ય પરંપરા ખરતર ગચ્છમાંજ મળે છે. એ વાત બધા ગચ્છવાસીઓએ મંજૂર કરીને સર્વ સંમતીએ એક લખત કયું, તેમાં—‘ અભયદેવસૂરિજી ખરતર ગચ્છમાં નથી થયા ' આ વાતની ચર્ચાના ખાસ ઉત્પાદક ધર્મ-સાગરને ત્રણ ત્રણ વાર બોલાવ્યા છતાં સભામાં ન આવવાથી તેને ખોટો ઠેરાવ્યો. અને તે લખાણના નીચે બધાય ગચ્છવાસી આચાર્ય ઉપાધ્યાયોએ પોતાના હસ્તાક્ષરો કર્યા છે. તે લખતની અસલ નકલ પાટણના ભંડારમાં રાખી. તે લખાણની ઉપરથી જેમની તેમ બરાબર નકલ કરીને આ અંથકારે (તથા સામાચારીશતકકારે પણ) મૂકી છે. x

x આ લખાણની બાબતમાં તપા ખં ભેદ પૃં ૧૧૮ નીજ ટિપ્પણમાં લખે છે કે—“વિચાર પૂર્વક તપાસી જોતાં એ આખુંખ ખતપત્ર બનાવટી હોવાનું માલુમ પડ્યું છે. અને એવા કેમ બનાવટી ઉલ્લેખો પોતાના ગચ્છમતવથી ખરતરોએ કરેલા છે, માટે તે માનવા લાયક નથી” આવીજ હકીકત કંઈક વિસ્તારથી ‘સાસન સુધાકર’ના સંચાલક હંસસાગરજીએ પણ ખૂબ જોરશોરથી લખી છે, એટલે લખવાનું કે—કોઈ પણ વસ્તુને બનાવટી કહેવામાં કેવળ જખાની

સાક્ષિ તરીકે અપાએલ ગ્રંથોની યાદી નીચે આપવામાં આવે છે-
તપા ગચ્છીયાચાર્ય હેમહંસસૂરિ કૃત કલ્પાંતર્વાચ્ય ૧, ભાવહડા કૃત

જમાખચર્યથી કામ ચાલતું નથી, પરંતુ ખેદની વાત છે કે-તેવું એક
પણુ પ્રમાણુ નથી તો મળ્યું જંખ્યાચાર્યને કે નથી મળ્યું હંસસાગરને,
તો પછી ‘આ ખતપત્ર બનાવડી છે, એમ કહેવાની ધણતા કેમ કરાય છે.

આવી રીતે બનાવડી ઉલ્લેખો બનાવી દેવાનો વારસોતો તમારા
તપા-ગપાનોજ છે, જેમકે રત્નશેખકસૂરિએ પર્વસિવાયના પૌષધની
સ્વમાન્યતાના મમત્વવશ આવશ્યકવૃત્તિના નામે “દિવૈવ બ્રહ્મચારી ન તુ
ગત્રૌ” આવેા તદ્દન કલ્પિત પાઠ વંદિત્તુની ટીકા અર્થદીપિકામાં લખી
દીધું છે, તેમ સદ્વથી પાખી ચઉદ્ધસની સાખીત કરવાના મમત્વથી
“સઠ્ઠેસુ કાલપઠ્ઠેસુ” ઇત્યાદિ ગાથાની અંદર આવશ્યકચૂલિ
ભાગ ૨ પૃ ૩૦૪ માં “અટ્ટમી પન્નરસીસુ ચ” એવો સ્પષ્ટ પાઠ
હોવા છતાં તેને ફેરવીને “અટ્ટમી ચઢ્ઠસીસુ ચ” કરી દીધું છે, એવી
રીતે હેમચંદ્રાચાર્યના ગુરુ દેવચન્દ્રસૂરિરચિત ‘દાણા પ્રકરણુ’ની ટીકામાં
“પક્કસીચારિણિ ચઢ્ઠસીચ આચરિયાણિ” એવો પાઠ પ્રતિઓમાં
મોજૂદ હોવા છતાં કોઇએ પોતાની માન્યતાનાજ મમત્વથી તેને
ફેરવી દધને “ચાઢ્ઠમાસિયાણિ ચઢ્ઠસીચ આચરિયાણિ” કરી
દીધું. આવી રીતે પોતાના પૂર્વજો અનેક ફૂટ પ્રયાસો કરી ગયા છે
તેમ વર્તમાનમાં પોતે પણુ કરી રહ્યા છે છતાં તે નજરમાં નથી
આવતા અને ખીજના ઉપર કોઇ પણુ પ્રમાણુ કે સાખીતિ વગરજ
કેવળ મોઢ્ઠથીજ જેમ કાવે તેમ અસદ્બોધારોપણુ કરતાં જંખ્યાચાર્યે
થોડી તો ભવભીરતા કે લજ્જા રાખી હતી. અસ્તુ.

ગુરૂપર્વ પ્રભાવક ગ્રંથ ૨, તપા લઘુપોશાલિક પટ્ટાવલી ૩, કુતુબપુરા તપા કૃત(કલ્પ)અંતર્વાચ્ય ૪, તપા રત્નશેખરસૂરિ કૃત આચારપ્રદીપ ગ્રંથમાં 'સંદેહદોલાવલી " ખરતર કૃત " એમ તેની સાક્ષિ આપેલ છે ૫, શ્રીજિનવલ્લભસૂરિ રચિત સૂક્ષ્માર્થ વિચાર સાદ્દશતક વૃત્તિમાં ચિત્રવાલ ગચ્છીય ધનેશ્વરસૂરિએ એજ પરંપરા લખી છે ૬, તપા કલ્યાણુરત્ન-સૂરિ કૃત પ્રખ્યન્વ ગ્રંથમાં ૭, તપા કલ્યાણુરત્નસૂરિના ચિરંતન એ ટિપ્પનોમાં ૮, સાદ્દપૂનગીયાની ગુર્યાવલી-પટ્ટાવલીમાં ૯-૧૦, છાપરીયા પૂનમીયા પટ્ટાવલીમાં ૧૧, ગુરૂપર્વાવલી ગ્રંથમાં ૧૨, તપા સોમધર્મ ગણિકૃત ઉપદેશસમ્પતિકામાં ૧૩, પ્રભાચંદ્રસૂરિ કૃત પ્રભાવકચરિત્ર સર્ગ (૧૩) ૧૫^૧શ્લોક ૫૫, થી ૬૫ લગે, અભયદેવસૂરિ ચરિત્રમાં ૧૪, પદ્મીવાલ ગચ્છીય ભટ્ટારક આમદેવસૂરિ રચિત ગદ્યખંડ પ્રભાવક ચરિત્ર ૧૫, પીપલીયા ઉદયરત્નસૂરિ પ્રારંભિત જીવાનુશાસનવૃત્તિ ૧૬. વગેરેમાં, જ્યારે આટલા બધા જૈન ગચ્છવાસીઓએ શ્રીઅભયદેવસૂરિને ખરતર ગચ્છનાયક કહ્યા. ત્યારે તમો નથી વિચારતા અને આટલા ગચ્છોના ગીતાર્થો તથા તપાગચ્છના ગીતાર્થોનું લખ્યું નથી માનતા તે શું ? વલી તપાગચ્છના આચાર્ય સોમસુંદરસૂરિએ ષષ્ટિશતકના બાલાવબોધમાં જિનવલ્લભસૂરિના ગુણવર્ણન વિસ્તારથી કર્યા છે. તે જોજો. ઇતિશમ્ ।

(તપા ખરતર ભેદ પૃ૦ ૧૨૩ માં પહેલા બોલ સંગ્રહનો ઉપસંહાર કરતાં મૂળલેખકના લખાણ મુજબ જંજ્વાચાર્ય લખે છે-“ આટલા વાનાં ખરતર જુદા છે. શાસ્ત્રરહિત છે. નિન્હુવમાં છે, સૂત્ર ઉલ્લંઘ છે. તપા સૂત્રપ્રમાણુ કરે ” એટલે લખવાનું કે-જો તપાઓ

અથા વાના સૂત્ર પ્રમાણે કરે છે તો પળુસણની દિન ગણનામાં અધિક માસને ગણત્રીમાં ન લેવું, ધરિયાવહિયા પડિકમાનેજ સામાયિક ઉચરવાનું, ભગવાન મહાવીર પ્રભુનું દેવાનંદાના ગર્ભથી ત્રિશલાના ગર્ભમાં આવવું જે થયું તે ૩૫ ગર્ભાપહારને અકલ્યાણકબૂત અશુભ નિંદનીય માનવું કહેવું, સંપૂર્ણ અહોરાત્રિ (૬૦ ઘડી)ની પર્વતિથિ ને અપર્વતિથિ જનાવી અથવા તે! ફલ્યુ કહીને તે પર્વતિથિએ પણ પૌષધાદિ તમામ ધર્મકાર્યોનો નિષેધ કરવાવડે વિરાધવા અથવા જૈન સિદ્ધાંતાનુસાર, ૧૮ અપર્વ તિથિઓના અદ્વે લલેને ૧૯ થઈને ગૃહસ્થોને આરંભાદિ સેવન માટે ૧ તિથિ વધે. પણ તે ગૃહસ્થોને આરંભાદિના ત્યાગ માટે પર્વતિથિઓ ૧૨ ના અદ્વે ૧૩ ન થવા દેવી. આદિ આદિ પોતાની કપોલ કલ્પિત માન્યતાઓ શાસ્ત્રસંમત સિદ્ધ કરી અતાવવા એક પણ પ્રાચીન અને સર્વામાન્ય શાસ્ત્રનો પ્રમાણ પાદ તો રણુ કરવો હતો, પ્રમાણ તો એકે મળે નહીં અને કેવળ જ્યાની માત્રથી કહી દેવું કે “ તપાસૂત્ર પ્રમાણે કરે છે ”, એની કિંમત શું છે ? અસ્તુ)

ૐ શાંતિ: શાંતિ: શાંતિ:

અનુવાદક-પ્રશસ્તિ—

ગચ્છે સ્વરતરેભૂવન્ , સતક્રિયોદ્ધારકારકાઃ ।

શ્રીમનૂમોહનલાલાશ્યા, વાચંચમપુરંદરાઃ ॥૧॥

તદ્વિનેયવિનેયાનાં, મુખ્યાણાં સાધુધર્મસુ ।

શ્રીકેશરમુનીશાનાં, શિષ્યેણ બુદ્ધિસિન્ધુના ॥૨॥

વિહિતોઽનુવાદોઽયં, ગ્રન્થે પ્રશ્નોત્તરાભિધે ।

નિધિસ્વશૂન્યયુગ્મેઽબ્દે, મુજદ્રંગે પ્રમોદતઃ ॥૩॥

પરિશિષ્ટ

તપા ખરતર ભેદમાં સંગ્રહીત બોલસંગ્રહ પહેલામાં લખેલ ૧૪૧ બોલો અને બીજામાં લખેલ ૧૬૧ બોલો તે પૈકી ૧૪૧ બોલો કે જે બન્ને સંગ્રહમાં એક સરખા છે, તે બધાનો ઉચિત ઉત્તર પ્રાયઃ અનેક શાસ્ત્રપ્રમાણો સાથે મહોપાધ્યાય શ્રીજયસોમજી ગણિએ પ્રસ્તુત ગ્રંથમાં ૧૪૦ પ્રશ્નોત્તરથી સચેત આપી દીધો છે, એના સિવાય બીજા બોલસંગ્રહમાં જે વધારાના બોલો લખ્યા છે. જે કે તે બધાય પુનરુક્ત પ્રાયઃ હોવાના અંગે પિષ્ટપેષણ જેવા છે, અને તે બધાના ઉત્તરો પણ આ ૧૪૦ પ્રશ્નોત્તરોમાં આવી જાય છે. છતાં પાઠકોની જિજ્ઞાસા પૂર્તિ નિમિત્તે તે તે વિશેષ બોલોના સામાન્ય ઉત્તરો પ્રશ્નોત્તર પદ્ધતિએ આ પરિશિષ્ટમાં અપાય છે.

પ્રશ્ન-તપા ખં ભેદ પૃ. ૧૪૮ બોલ ૭૨ માં ‘ખરતર આવક તિવિહાર ઉપવાસના પચ્ચખાણુમાં રહી પાણી છોડે ત્યારે ચોવિહાર કરે, તેમના યતિ પાણાહાર કરે તે કેમ ?’ એમ લખે છે, તે કેમ ?

ઉત્તર-તપાએને પૂછવાનું કે જેમ ચોવિહાર એકાસણું કર્યા બાદ સાધુ-આવક બધાએ સાંજે આગારોના સંવરણ માટે દિવસચરિમં પચ્ચખે છે, તેમ, અથવા જેમ તિવિહાર એકાસણું કરીને ઉઠતી વેળાએ ફરીથી તિવિહાર પચ્ચખવામાં આવે છે. તેમ તિવિહાર ઉપવાસમાં પણ આગારોના સંવરણ માટે આવકો દિવસચરિમં ચોવિહારનો પચ્ચખાણુ લિએ તેમાં ક્યા શાસ્ત્રને બાધ આવે છે ? તે જન્મવાચાર્ય બતાવે.

પ્રશ્ન-તપા ખં ભેદ પૃ. ૧૬૬ બોલ ૧૩૨ માં ‘ખરતર

સવારે કાલવેલાની નવકારશી કર્યા પછી સૂર્યોદય પહેલાંની ઘડી ૧ તથા સૂર્ય ઉઝ્યા પછી ઘડી એક. એમ બે ઘડી કાચી રાખે છે, તપા સવારે કાલવેલા પચ્ચક્રખાણુ કરી સૂર્ય ઉઝ્યા પછી બે ઘડી રાખે' એમ લખે છે, તે કેમ ?

ઉત્તર—આમાં લેખકે પરના ઉપર અસદ્ગોષારોપણની પોતાની સ્વાભાવિક ધર્ષા બુદ્ધિનોજ પરિચય આપેલ છે, કારણ કે આવી રીતે ખેંચી તાણીને પચ્ચક્રખાણુ મેળવવાની પ્રથા ખરતરનાં બિદકુલ દેજ નહી. પણ તપાઓ ઉપધાનવાળાઓને નીવીનું પચ્ચક્રખાણુ કરાવી એકાસણાથીએ મુદી ચઢી જાય એવા માલ મલીદા ખવરાવીને, તેમ તે નીવીમાં કરાના પુરિમદ્દને જુદું ગણી નવકારના ૧૨ ઉપવાસની પૂર્તિ કરી માને છે, એવી રીતે ખેંચીતાણીને ઉપધાન તપસ્યાની પૂર્તિ કરવી તે ક્યા સર્વમાન્ય શાસ્ત્રનો આચાર છે ? તે જગવાચાર્ય બતાવે.

પ્રશ્ન—તપા ખં ભેદ પૃ૦ ૧૬૭ બોલ ૧૩૫ માં “ખરતર ‘જય વીયરાય’ ‘આલવં’ સુધી કહે, તપા પૂરી કહે છે” એમ લખે છે તેનો શું ?

ઉત્તર—આવસ્યકસૂત્ર, તથા આચાર્ય હરિભદ્રસૂરિ રચિત લલિત-વિસ્તરાવૃત્તિ તથા પંચાશક પ્રકરણ, એવં કલિકાલ સર્વજ્ઞ આચાર્ય હેમચંદ્રસૂરિરચિત યોગશાસ્ત્ર ટીકામાં ‘જય વીયરાય’ આલવમખંડા સુધીજ પૂર્ણ બતાવેલ છે, તેમ તપાઓના માન્ય આચાર્ય દેવેન્દ્ર-સૂરિજીએ પણ ‘ચૈત્યવંદનભાષ્ય’માં ‘જવંતિ ચેષ્ઠયાઘં—જવંત કેવિસાહુ’ અને ‘જય વીયરાય’ આ ત્રણે પ્રણિધાન સૂત્રોના ૧૫૨ અક્ષર બતાવ્યા છે. એથીય ‘જય વીયરાય’ આલવમખંડા સુધીજ સંપૂર્ણ છે એમ સ્પષ્ટ જણાય છે. ‘વંદાવૃત્તિ’માં ટીકા પણ એટલાનીજ કરી છે. એથી

સાખીત થાય છે કે-‘જય વીરાય’ એસલથી ‘આલવમખંડ’ સુધી પુરૂંજ થાય છે. છતાં તેને અડધું કહેવું અને સ્વેચ્છાએ વધારેલી ગાથાઓને મેળવીને પૂરું કહેવું કે માનવું, એ પ્રત્યક્ષ માયામૃષાવાદનું સેવન છે.

પ્રશ્ન-તપા ખ૦ ભેદ પ૦ ૧૬૭-૬૮ માં અનુક્રમે બોલ ૧૩૭-૧૩૮ અને ૧૪૦ માં “ખરતર મધ્યાનહનો કાળે કાઢીને ‘કાલ કાઢ્યો’ કહે છે, સ્થાપના પડિલેહીને ‘સ્થાપનાચાર્ય’ જયણા કરી’ કહે છે, સાધુને પહેલાં ઘીનુંજ દાન આપે, પછી અન્ન બહોરાવે” એમ લખે છે, તેનો શું ?

ઉત્તર-ખરતરના કયા ગ્રંથમાં લખ્યું છે કે-‘મધ્યાનહના કાળને કાલ કહેવું, સ્થાપનાચાર્ય પડિલેહાને ‘જયણા કરી’ કહેવું, અને ‘સાધુને પહેલાં ઘીનુંજ દાન આપવું, અને પછીથી અન્ન વહોરાવવું’ તે જન્મવાચાર્ય ખતાવે, અન્યથા ખીજ પર અસદ્વિષારોપણ કરવું એતો એમનો કુલક્રમથી આવેલ આચાર છે.

પ્રશ્ન-તપા ખ૦ ભેદ પ૦ ૧૬૮. બોલ ૧૩૯ માં ‘ખરતર શ્રાવક સ્થાપના પડિલેહતાં ઉભા થાય. તે ક્યાં કહ્યું છે ?’ એમ લખે છે તેનો શું ?

ઉત્તર-સ્થાપના પડિલેહતાં ઉભાથવામાં કોઇ દોષ અથવા ઉભાથવાનું નિષેધ કોઇ શાસ્ત્રકારે ક્યું હોય તો તે પ્રમાણ જન્મવાચાર્ય ખતાવે.

પ્રશ્ન-તપા ખ૦ ભેદ પ૦ ૧૬૮ બોલ ૧૪૧ માં ‘ખરતર પાંચમા આરામાં નવકદ્ધી વિહારને નિષેધે છે’ આમ લખે છે તેનો શું ?

ઉત્તર- પાંચવસ્તુક ગ્રંથ ૨૭૯ મી ગાથાની ટીકાના “અવલં-
બિકુણ કજ્જં, જં કિંચિ સમાયરંતિ ગીયત્થા । થોવાવરાહબહુગુણ,
સર્વેસિં તં પમાણં તુ ॥ ૨૭૯ ॥ વ્યાખ્યા- અવલંબ્યાશ્રિત્વ
ચત્કિંશ્ચિદાચરન્તિ-સેવન્તે, ગીતાર્થ-આગમવિદ્ઃ, સ્તોકાપરાધં

બહુગુણં માસકલ્પાવિહારવત્, સર્વેષાં જિનમતાનુસારિણાં તત્પમા-
 ગમેવ, ઉત્સર્ગાપવાદરૂપત્વાદાગમસ્યેતિ ગાથાર્થઃ ।” આ પાઠથી
 આચાર્ય હરિભદ્રસૂરિજી માસકલ્પનો અવિહાર કહે છે, જ્યારે માસકલ્પનો
 અવિહાર છે. એટલે કે માસ કલ્પનો અભાવ છે ત્યારે નવકલ્પી
 વિહાર રહ્યોજ ક્યાં ? ફલિતાર્થ એ થયું કે નવકલ્પી વિહારને ખરતર
 નથી નિષેધતા. કિંતુ ઉપર લખેલ પાઠ મુજબ આં હરિભદ્રસૂરિજેવા
 પ્રમાણિક આચાર્યો નિષેધે છે, છતાંય તેના હિમાયતી તપાઓ આજે
 કેટલા નવકલ્પી વિહાર કરી રહ્યા છે ? વસ્તુતઃ શાસ્ત્રકારોએ નવકલ્પી
 વિહાર તે કહેલ છે કે એક ક્ષેત્રમાં માસકલ્પ કરી વિહાર કર્યા બાદ ફરી
 તે ક્ષેત્રમાં બે મહિના સુધી બિલકુલ આવવુંજ નહીં, અરે એકજ ક્ષેત્ર
 અને ઉપાશ્રયમાં કેટલાએ ચોમાસાઓ લાગટ કરતા રહેવું, એટલુંજ
 નહીં બંદકે સ્થાનના મમત્વથી મુંબઈ-લાલબાગ જેવા સ્થાનને આજે
 ૨૦/૨૦ વર્ષો થયા એક દિવસ પણ રામસેનાના સાધુઓ વગર ખાલી રહે-
 વાજ ન દેવું, અને ખોટી હિમાયત કરવી બરાબર માસકલ્પ કરવાવડે
 નવકલ્પી વિહારની, આતો શાસ્ત્રનો નહી, કિંતુ તપાનાજ ધરનો આચાર છે.

પ્રશ્ન-તપા ખ. બેદ ૫૦ ૧૬૮-બોલ ૧૪૨ માં “ખરતર સાધ્વી
 પુરૂષ આગળ વ્યાખ્યાન કરે છે. તપાની ન કરે” એમ લખે છે તેનો શું ?

ઉત્તર-પહેલાં તો ‘તપાની ન કરે’ એમ લખવું તદ્દન અસત્ય છે. એ વાત
 જનતાના ધ્યાન બહાર નથી કે આજે તપાની અનેક સાધ્વીઓ
 જાહેર વ્યાખ્યાનો કરી રહી છે. આ ગયા ચોમાસાની અંદર કલકત્તામાં
 રામસૂરિની હયાતીમાંજ તપાની સાધ્વીજી શીલવતીશ્રીજી મૃગાવતીશ્રી
 જીએ હજારોની મેદિની વચ્ચે પણસણના તેમ જીજી દિવસોમાં પણ

વ્યાખ્યાનો વાંચેલા જગજહેર છે, ખીજું તપ ગચ્છના માન્ય આચાર્ય શ્રીહીર વિજયસૂરિ ‘હીર પ્રશ્નોત્તરમાં ૨૫૪ કથે છે કે—
“દશવૈકાલિકવૃત્તિપ્રમુલ્લખ્યમધ્યે ‘યતિઃ કેવલશ્રાદ્ધીસમાગ્રે વ્યવ્યાનં ન કરોતિ, રાગહેતુત્વાદિત્યુક્તમસ્તિ, એતદનુસારેણ સાધ્વ્યપિ કેવલશ્રાદ્ધસમાગ્રે વ્યવ્યાનં ન કરોતિ, રાગહેતુત્વાદિતિ જ્ઞાયતે ।”
(હીર પ્ર૦ ૩ પ્રકાશ)

અર્થાત્: રાગનો હેતુ હોવાના અંગે કેવલ શ્રાવિકાઓની સલા આગળ સાધુ વ્યાખ્યાન ન કરે, એમ દશવૈકાલિક ટીકા આદિ ગ્રંથોમાં કહેલ છે, એના અનુસારે સાધ્વી પણ ‘રાગનો હેતુ હોવાના અંગે કેવલ શ્રાવિકાની સલા આગળ વ્યાખ્યાન ન કરે’ એમ જણાય છે. હીરવિજયસૂરિજીના આ કથનનું ફલિતાર્થ એ થયું કે—શ્રાવિકામિશ્રિત શ્રાવિકો (પુરૂષો) ની સલા આગળ સાધ્વીનું વ્યાખ્યાન શાસ્ત્રવિરૂદ્ધ નથી, આ રીતે પોતાના પરમગુરુઓના કથનને પણ ઠોકરે મારીને પુરૂષમાત્રનાય આગળ સાધ્વીના વ્યાખ્યાનનો જે એકાંત નિષેધ કરવો, તે ધર્મા મહાદેવીનો જ મહાત્મ્ય છે.

વળી એજ બોલપર ટિપ્પણ કરી જંખ્યાચાર્ય લખે છે કે “તપગચ્છમાં સાધ્વી વ્યાખ્યાનનો નિષેધ છે, ખરતરગચ્છવાળા કરે છે, તે શાસ્ત્રવિરૂદ્ધ છે, આના સમર્થનમાં જીઓ હીરપ્રશ્નોત્તર ત્રીજા પ્રકાશનો પ્રશ્ન ૧૩” એના ઉત્તરમાં જણાવવાનું કે જે તપગચ્છમાં સાધ્વી વ્યાખ્યાનનો નિષેધ છે. અને ખરતરગચ્છવાળાઓ કરે છે તે શાસ્ત્ર વિરૂદ્ધ છે. તેમ હીરપ્રશ્નોત્તર ત્રીજા પ્રકાશના ૧૩ મા પ્રશ્નોત્તરથી જે એ વાતનું સમર્થન થતું હોય તો પછી હીરવિજયસૂરિ જેવા

તપગચ્છનાજ માન્ય આચાર્ય ઉપર દર્શાવેલ પ્રશ્નોત્તરથી સાધ્વી વ્યાખ્યા-
નની અનુમતિ કેમ આપે છે ?

પ્રશ્ન-તપા ખ. ભેદ પૃં ૧૬૯ બોલ ૧૪૩ માં “અરતરમાં પખ્ખી
દિવસે સજ્જાયમાં ‘ઉવસગ્ગહર’ ગુણુધર ગોત્રના શ્રાવક કહે, સાધુ
ન કહે, તે પૂછવું, તપામાં ગુરુ કહે” એમ લખે છે તે કેમ ?

ઉત્તર-આ લખવું તદ્દન અસત્ય છે, કારણ કે અરતર શ્રાવકને
કોઈ પણ પ્રતિક્રિયામાં સજ્જાય કહેવાનું છે જ નહીં, તો પછી
સાધુની વિદ્યમાનતામાં તો તેને બોલવાનું હોય જ ક્યાંથી ? અને
સાધુને પણ પાખ્ખીના દિવસે ‘ઉવસગ્ગહર’ નહીં, કિંતુ ‘ધમ્મો
મંગલ’ની સજ્જાય કહેવાની છે, વગર જાણે આવા ઉટપટાંગ બોલો
લખીને લેખકે, ને અનુવાદકે પોતાના હૃદયની કલુષિતતાજ નહર કરી છે.

પ્રશ્ન-તપા અરતર ભેદ પૃં ૧૬૯ બોલ ૧૪૪ માં “અરતર ચન્દ્ર
ગચ્છી ન હોવા છતાં પોતાને ચન્દ્રગચ્છી કહેવાડાવે. તે પૂછવું, ‘ચન્દ્ર-
ગચ્છી’ તે કહેવાય કે જેમની પદ્માવલીમાં વજ્જસ્વામી, પછી વજ્જસેન,
પછી ચન્દ્રસૂરિ થયા હોય, અરતરની તે નથી ” એમ લખે છે, તે કેમ ?

ઉત્તર-લેખકે, ને અનુવાદકે ક્યા પ્રમાણથી જાણ્યું કે ‘અરતર
ચન્દ્ર ગચ્છી નથી, અને વજ્જસ્વામી, વજ્જસેનસૂરિ તેમ ચન્દ્રસૂરિ અરતર
ગચ્છની પદ્માવલીમાં નથી, વગર પ્રમાણે મન ફાવતું ભરડયે જવું એ
તો જાખ્ખાચાર્ય જેવાઓનો કુલાચારજ છે.

પ્રશ્ન-તપા અરતર ભેદ પૃં ૧૭૦ બોલ ૧૪૬ માં “અરતર
સ્નાત્રવિધિ શાસ્ત્રથી જુદી કરે’ એમ લખે છે, તે કેમ ?

ઉત્તર-અમુક સર્વમાન્ય શાસ્ત્રમાં સ્નાત્રવિધિ આ રીતે કહેલ

છે, તેનાથી ખરતરની સ્નાત્રવિધિ વિરૂદ્ધ છે' એમ પ્રમાણ સાથે જાંખવાચાર્યે સાખીત કરી બતાવ્યું હોત તો લેખક અને અનુવાદકની બહાદુરી કહેવાતે, તેમ ન હોવા છતાં એજ બોલપર ટિપ્પણ કરી જાંખવાચાર્ય લખે છે કે ' આથી જેઓ શ્રીમદ્ દેવચન્દ્રજીનું સ્નાત્ર લણાવતા હોય તેઓએ હવેથી તે છોડીને શ્રીવીરવિજયજી આદિનું તપાગચ્છીય લણાવવા લક્ષ આપવું' ” આ ટિપ્પણમાં જેમ દેવચન્દ્રજીનું સ્નાત્ર લણાવતા હોય તે છોડીને તપા ગચ્છીય લણાવવા સલામણ કરવામાં આવી છે. તથા જેમ અનેકા સ્થળે પ્રતિક્રમણમાં દેવચન્દ્રજીના સ્તવનો બોલતાને તપાસાધુઓ વિગેરે તરફથી હઠાત્ અટકાવવામાં આવે છે. તેમ ખરતર ગચ્છવાળા નથી કરતા, રામપંથી આદિ તપાઓનો આમ કરવામાં શું હેતુ છે ? તે કાંઈ સમજતું નથી, શું દેવચન્દ્રજી કૃત સ્નાત્ર તથા સ્તવનોમાં પોતાના કે પોતાના ગુર્વાદિકોના મનઘડંત અસહ્યૂત ગુણગ્રામ છે ? કે જેના લીધે એમને હઠાત્ અટકાવવાની ફરજ તપાઓને પડે છે ? બુઝોતો સહી. છે કાંઈ અભિનિવેશનની સીમા મર્યાદા ? અસ્તુ.

પ્રશ્ન-તપા ખરતર ભેદ પૃ. ૧૭૦ બોલ ૧૪૮ માં “ ખરતર ગુરનો કરેલો ધીસહિત ચૂરમાનો પીંડ નીવીમાં ગુર આપે તે સાધુ લે, સાધુને કલ્પે-ખપે (એમ માને) ” એમ લખે છે, તે કેમ ?

ઉત્તર-કોઈ પણ ખાસ કારણ વગરતો ગુર આપેજ નહીં, પણ સંયોગે ગુરએ આપતાં છતાંએ સાધુએ ન લેવાનું કયા શાસ્ત્રમાં કહ્યું છે ? તે જાંખવાચાર્ય બતાવે, અન્યથા ‘ પારિટ્ટાવણિયાગારેણું ’ વિગેરે આગારો ખાસ સાધુનાજ નિમિત્તે શા માટે રાખવામાં આવ્યા છે ?

પ્રશ્ન—તપા ખરતર ભેદ પૃ૦ ૧૭૦ બોલ ૧૪૯ માં “ ખરતર શ્રાવકે યોજેલું જોડેલું ધૃતભોજન નીવીમાં વાપરે ! ” એમ લખે છે તે કેમ ?

ઉત્તર—ખરતરતો એવો ધૃતભોજન નીવીમાં કદીય લેતા નથી, પણ તપાઓ યોગોદ્ધત અને ઉપધાનની નીવીમાં એક ધતભોજન શું પણ જ્યે વિગધઓનું ભોજન જે લે છે તે જગજહર છે, એટલુંજ નહીં, કિંતુ આંખીત્રમાં પણ જાસની ઘેંસ અને કઢી છડેચોક લે છે, તેના માટે કયા સર્વામાન્ય શાસ્ત્રનો આધાર છે ? તે પણ જન્મવાચાર્ય ખતાવે.

પ્રશ્ન—તપા ખ. ભેદ પૃ૦ ૧૭૧ બોલ ૧૫૧માં લખે છે “ ખરતર સાધુ સવારમાં સજ્જાય સર્વે માંડલીમાં નથી કરતા, તે પૂછવું ” એનો શું ?

ઉત્તર—સજ્જાય તો સાધુઓને ચાર વેળા કરવા શાસ્ત્રકારો કહે છે, તો પછી એક સવારનીજ સજ્જાય માંડલીમાં કરવી, ને બીજી ત્રણ સજ્જાયો માંડલીથી બહાર સ્વેચ્છાએ કરવી એવો કયા શાસ્ત્રનો લેખ છે ? તે જન્મવાચાર્ય ખતાવે. બીજું સવારની પણ સજ્જાય આજના તપાઓ બધાએ માંડલીમાંજ કરતા હશે ને ? એ તો બધી દુનીયા જોઈ રહી છે.

પ્રશ્ન—તપા ખરતર ભેદ પૃ૦ ૧૭૨ બોલ ૧૫૪ માં “ ખરતર એક કોટિક ગણુ, બીજી વૈરીશાખા, ત્રીજું ચન્દ્રકુલ, આ ત્રણ પ્રકારથી બહાર છે, કારણ ? ખરતર પદ્માવલીમાં એ ત્રણના સ્વામી—શ્રીસુસ્થિત સૂરિ કોટિક ગણુના, શ્રીવજ્રસેન વૈરીશાખાના, શ્રીચન્દ્રસૂરિ ચન્દ્રકુલના, એ ત્રણ નથી ” એમ લખે છે તે કેમ ?

ઉત્તર—આ ઉપરનો લખાણુ સ્પષ્ટ કહી આપે છે કે જન્મવાચાર્ય તો શું. પણ તેમના પૂર્વ લેખકે પણ ખરતરની પદ્માવલી નજરે જોઇય નથી. જો થોકું ઘણું પણ ખરતર પદ્માવલીનું જ્ઞાન હોત તો સહસા એમ

લખી ન મારતે, કેવળ મોઢે કહેવા માત્રથી કોઈ કોઈથી બહાર થઈ શકતું નથી. જન્મ્યાચાર્યે કોઈપણ સર્વમાન્ય પ્રમાણ આપ્યું હોત તો તેનાપર વિચાર થાત, પરંતુ ગમે તેમ મન ફાવતું ભરડી મારવું એ એમનો કુલાચાર છે. અસ્તુ.

પ્રશ્ન—તપા ખરતર ભેદ પૃ. ૧૭૩ બોલ ૧૫૫ માં “શ્રીઅભયદેવ-સૂરિની પાટે શ્રીવર્ધમાનસૂરિ છે, ખરતર ‘જિનવલ્લભ સૂરિ’ કહે છે, તે અસત્ય છે, કારણ શ્રીગણધર સાર્ધશતકની ટીકામાં (વર્ધમાનસૂરિ હોવાનું) કહ્યું છે, અને જે ‘પ્રસન્નચન્દ્ર સૂરિને કાનમાં કહ્યું’ એમ કહે છે, તે કલ્પિત બાણ્યું” એમ લખ્યું છે, તેનું શું ?

ઉત્તર—અમે પણ કહીએ છીએ કે તપાના મૂળ પુરૂષ જગ-ચ્ચન્દ્રસૂરિ ચિત્રવાત્ર ગચ્છીય દેવભદ્રોપાધ્યાયના પાટે છે, આજના તપાઓ જે મણિરત્નસૂરિના પાટે કહે છે તે તદ્દન અસત્ય છે, કારણ જગ-ચ્ચન્દ્રસૂરિના ખાસ શિષ્ય શ્રીદેવેન્દ્રસૂરિએ ‘શ્રાદ્ધદિનકૃત્ય ટીકા’ આદિમાં તેમજ તેમના પ્રશિષ્ય ક્ષેમકીર્તિસૂરિએ બૃહત્કલ્પસૂત્રની ટીકામાં એમજ (ચિત્રવાત્રગચ્છીય દેવભદ્રોપાધ્યાયના પાટે હોવાનું) કહેલ છે, મુનિસુંદરસૂરિ કૃત ગુર્વાવલી આદિનું જે કહેવું કે ‘ઉપસંપદા લઈને પોતાના શિષ્ય બનેલા જગચ્ચન્દ્રસૂરિને દેવભદ્રોપાધ્યાય ગુરૂ તરીકે માનવા લાગ્યા’ તે તદ્દન કલ્પિત બાણ્યું.

પ્રશ્ન—તપાખર. ભેદ પૃ. ૧૭૩ બોલ ૧૫૬ માં “આટલા બોલ મુદ્દસા થકી મેં બહુમા તે લખ્યા, બીજી યોગની વિધિ. યોગની ક્રિયા વિધિ, ઉપધાન ક્રિયા વિધિ, તેનો શાસ્ત્રથી બચ્ચો ફેર છે, અને તપાસ્ત્રું પશ્યુ તેનો મને પૂરો નિર્ણય નહિં માટે લખ્યો નથી, પ્રવીણ મસજી લે જો” એમ લખ્યું છે, તે કેમ ?

ઉત્તર—ભારે આશ્ચર્ય છે, એક બાબુ તો લેખક લખે છે કે ‘શાસ્ત્રથી ઘણો ફેર છે’ અને ખીજી બાબુ લખે છે કે ‘મને પૂરો નિર્ણય નહીં’ આ બન્ને વાતો કેમ સંભવે ? જો ‘શાસ્ત્રથી ઘણો ફેર છે’ એમ સમજાયું તો પોતાને પૂરો નિર્ણય કેમ નહીં ? અને જો પોતાને પૂરો નિર્ણય નથી તો પછી ‘શાસ્ત્રથી ઘણો ફેર છે’ એમ કેવી રીતે સમજાવું ? વસ્તુતઃ અસ જનતાને બ્રાંતિમાં નાખવાની આ બધી પ્રપંચગળ છે.

પ્રશ્ન—તપા ખર. ભેદ પૃ. ૧૭૪ બોલ ૧૫૭ માં “ખરતર કહે— ‘અમે શ્રીઅભયદેવસૂરિના છીએ’ અને રૂઢોલીયા—રૂપલ્લીય છે, તે પણ કહે—અમે શ્રીઅભયદેવસૂરિના છીએ’ પણ તેમની પટ્ટાવલીમાં ફેર ઘણો છે, રૂઢોલીયાને શ્રીઅભયદેવરિથી પહેલાં સઘલી ક્રિયા ચંદ્રગચ્છની મંડાઈ છે, ખરતરને એજ ક્રિયા બુદી મંડાઈ છે” એમ લખે છે તે કેમ ?

ઉત્તર—આ બોલ લખનારની બુદ્ધિ ભારે અલૌકિક છે, આજના બધાએ ગચ્છવાસીઓ શું સુધર્માસ્વામીના કે ઉદ્ધોતનસૂરિના ન કહી શકાય ? અવશ્ય કહી શકાય, તો એવીજ રીતે રૂપલ્લીય કે ગમે તે પણ ખરતર શાખાના સાધુઓ અભયદેવસૂરિ, જિનવલ્લભસૂરિ, જિનદત્તસૂરિ આદિ એક પરંપરાના હોવાથી બધાએ અભયદેવસૂરિના કેમ ન કહી શકાય ? એમની પટ્ટાવલીમાં શું ફેર છે ? તે કાંઈ પણ અતાવ્યું હોત તો જન્મવાચાર્યની હુસ્નારી માલમ થાત, રૂઢોલીયા (રૂપલ્લીય) ને અભયદેવસૂરિથી પહેલાં કંઈ સઘલી ક્રિયા ચંદ્રગચ્છની મંડાઈ છે ? અને ખરતરને કંઈ એજ ક્રિયા બુદી મંડાઈ છે ? તેની સ્પષ્ટતા તો કરી અતાવવી હતીને ! કે જેથી તેના પર કાંઈક વિચાર

કરી શકાત. તફાવત બતાવ્યા વગર શું વિચાર કરી શકાય ?

પ્રશ્ન-તપાખર. ભેદ પૃ. ૧૭૪ બોલ ૧૫૮ માં “ખરતર સાધુ ક્રાંતિ સંચારો સાંજે ગૃહસ્થને આપે, તે કુવા તલાવે ધાલી સચિત્ત પાણીમાં ધાલી ધોવે” એમ લખે છે, તે કેમ ?

ઉત્તર-ક્રાંતિ સંચારો કેવો હોય છે ? અને તે ગૃહસ્થોને આપવાનું કારણ શું ? કે જેથી તે ગૃહસ્થો તેને કુવે તળાવે સચિત્ત પાણીમાં ધોવે. આ બાબતને ખુદ જન્વાચાર્ય પણ યથાવત્ સમજ્યા હોય તેમ જણાતું નથી, જે સમજ્યા હોત તો આવી રીતે માખીના સ્થાને માખી મૂકવા જેવું ન કરતાં બરાબર સ્પષ્ટતા કરી બતાવતે, અને એમ સ્પષ્ટતા કરી બતાવી હોત તો તેના પર ઉચિતાનુચિતતાનો કાંઈપણ વિચાર કરી શકાત.

પ્રશ્ન-તપાખર ભેદ પૃ ૧૭૪ બોલ ૧૫૮ માં “ખરતર સાધુ પડલાં ન માને, ન રાખે, વહોરવા જતાં હાથ ઉપર ન નાખે, તપા સાધુ રાખે-વાપરે, શાસ્ત્રે ચૌદ ઉપકરણમાં કહ્યાં છે” એમ લખે છે તે કેમ ?

ઉત્તર-“ખરતર સાધુ પડલાં ન માને” આ લખવું હડહડતું અસત્ય છે, કોનો દિનમાન ઉડી ગયો છે ? કે જે શાસ્ત્રકારોએ સાક્ષાત્ બતાવેલ પડલાંઓને ન માને, પરંતુ લાલાલાભનો વિચાર કરી કાળાનુભાવે આત્મ(સ્વદેહ)પ્રમાણ કલ્પ (ચદર આદિ) થી નિભાવ ન થવાના અંગે કલ્પનું પ્રમાણ વધારીને જે કામ ઝેલી પાત્રા ઢાંકવાનું પડલાંઓથી કરાતું તે કલ્પથીજ પતાવી લઈને ઉપકરણ લઘુતાને માટે પડલાં નહીં રાખવાની આચરણ ગીતાઓએ ક્યાંના ઉલ્લેખ પંચલિંગી ટીકામાં સ્પષ્ટ છે, બુઝો—

“ગીતાર્થે: પ્રમાદબાહુલ્યકાલાદિદોષાદાગમોક્તમપિ ‘પ્રતિષિદ્ધ’
નિવારિતં યતીનાં સમ્પ્રતિ માસવિહારાત્માદિપ્રમાણકલ્પધારણ-
પટલાદિગ્રહણપ્રભૃતિ, માસકલ્પપ્રાયોગ્ય ત્રાદ્યભાવેન યતીનાં ધૃતિ-
સંહનનાદિવૈકલ્યેન શૈક્ષામીતાર્થાદીનાં ભિદ્ધાદિષુ મર્યાદાલોપેન ચ
ગીતાર્થેદ્રવ્યતો માસકલ્પવિહારાદિ પ્રતિષેધેનાચરણાકલ્પવ્યવસ્થાપનાત્

આ પાઠમાં કહ્યું છે કે—આગમોક્ત હોવા છતાં પ્રમાદની બહુલતા
તેમ જાળાદિ દોષના અંગે હમણાં સાધુઓને માસકલ્પથી વિહાર,
આત્માદિ પ્રમાણ કલ્પધારણ અને પડલાં આદિ ગ્રહણ કરવાનું ગીતા-
ર્થોએ નિષેધ કર્યો છે, અર્થાત્ માસકલ્પ કરવા યોગ્ય ક્ષેત્રાદિના અભાવે,
ધૃતિ સંહવન આદિ ન હોવાના અંગે, તેમ અગીતાર્થ શિષ્યાદિકોને
લિક્ષાચર્યાદિમાં મર્યાદા દોષના કારણે ગીતાર્થોએ માસકલ્પાદિનો નિષેધ
કરી આચરણને કલ્પતયા સ્થાપન કરેલ છે’ એથી સાબીત થયું કે
પડલાં ન રાખવા એ ગીતાર્થોની આચરણ છે, એટલેજ તે શાસ્ત્ર-
વિરુદ્ધ નથી, કારણુ ? તે સમયના શાસન ધુરંધર ગીતાર્થોમાંથી કોઈએ
પણ એ આચરણનો વિરોધ નથી કર્યો, છતાં ચારસો વર્ષ પછી થએલ
અને સ્વયંચર્યાદિથીએ બહિષ્કૃત થવાનું સન્માન પામેલ ધર્મસાગર
જેવા કલેશપ્રિયો પોતાના ઇર્ષાલુ સ્વભાવે જો ખોટો વિરોધ કરે તો
સુસજ્જનોમાં તેની શું કિંમત છે ?

ખીજું પડલાં શાસ્ત્રોક્ત હોવાથી ‘ન રાખવા’ એને જો એકાંત દૂષિત
મનાય તો કલ્પ (ચદ્વર-કાંબળી) આત્મપ્રમાણ ન રાખતાં સ્વેચ્છા
મુજબ રાખવું કેમ દૂષિત નથી મનાવું ?

પ્રશ્ન—તપા અરતર ભેદ પ્ર૦ ૧૭૪ બોલ ૧૬૦ માં “અરતર

સાધુ ગુચ્છા પાત્રસ્થાપનિકા ન રાખે, તપા રાખે, દશવૈકાલિકમાં કહ્યાં છે ” એમ લખે છે, તે કેમ ?

ઉત્તર—લેખકે કયા પ્રમાણથી લખ્યું છે ? કે ‘ખરતર સાધુ ગુચ્છા પાત્રસ્થાપનિકા ન રાખે’ કોઈ એકાદ વ્યક્તિ પોતાના પ્રમાદને લેઈ ન રાખે તો તે દૂષણ આપ્યા સમાજ પર કેમ લગાડી દેવાય ?

પ્રશ્ન—તં ખં ભેદ પૃ. ૧૭૫ ખેલ ૧૬૧ માં “ખરતર ઉપદેશ માળાની પહેલી ગાથા ન ભણે, તે પૂછવું” એમ લખે છે તેનો શું ?

ઉત્તર—આ લખવું તદ્દન અસત્ય છે, પહેલી ગાથા ભણવાનો નિષેધ ખરતર જરાએ નથી કરતા, પણ ‘સજ્જાયમાં નથી ગણતા’ એમ કહે તો વાસ્તવિક છે, પરંતુ સજ્જાયમાં પહેલી ગાથા ગણવાની આવશ્યકતાજ શું છે ? કારણ કે તેમાં મંગલ નિમિત્તે પ્રભુને નમસ્કાર તથા ગ્રંથના અભિધેયાદિ માત્રનુંજ કથન છે, અને મંગલ તો સજ્જાય કરનારે પ્રારંભમાં નવકાર ગણિને કરી લીધું છે. એટલે પહેલી ગાથા નથી ગણતા, એમ છતાં પહેલી ગાથા ન ગણવામાં દોષ માનતા હો તો દશવૈકાલિક ૧૭ ગાથાની સજ્જાય કરતાં ત્રીજા અધ્યયનની એકજ ગાથા કેમ કહેવાય છે ? એનો ખુલાસો જગ્યાચાર્ય કરે, ઇતિશમ્ ।

શુદ્ધિ પત્રક

પૃષ્ઠ	લી.	અશુદ્ધ	શુદ્ધ
૪૫	૧	૫૩	૨૨-૨૩
૫૬	૧૩	ધર્મ પ્ર.	ધર્મવિધિ પ્ર
૧૧૭	૧૨	૩૩	૩૨-૩૩
૧૭૭	૧	૫૭	૫૭-૬૬
૨૪૦	૩	૯૫	૬૯-૯૫
૨૪૨	૨૦	૮૭	૨૮-૮૭-૧૩૪
૩૪૦	૧	૧૨૭	૧૨૦-૧૨૭

આ સિવાય પૃ. ૫૬ માં લીટી ૧ લી (તપા. ખ. ભેદ ગ્રંથ ૧-૨ બોલ ૧૧ મો.) તેમ પૃ. ૨૨૪ માં લીટી ૧૪ મી (તપા ખ. ભેદ ગ્રંથ ૧ બોલ ૬૯, ગ્રંથ ૨ બોલ ૭૫ મો.) આમ સુધારીને ગ્રંથબુ.

पूण्योपार्जन से प्राप्त कीया हुआ धनका
दान, सुपात्र दान देने-के लिये अवश्य

श्री जिनदत्तसूरि ब्रह्मच

पार्श्वीताणा : (सोराष्ट्र)

रु.

भेट देनेकी योजना

- ५०१ देनेवालेकी ओरसे उस रकमके व्याजमेसे नियत तिथिको मिष्टान्न भोजन दिया जायगा।
- ३१ देनेवालेकी ओरसे उस रकमके व्याजमेसे नियत तिथिको दो टंकका सादा भोजन दिया जायगा।
- १५१ देनेवालेकी ओरसे उस रकमके व्याजमेसे नियत तिथिको एक टंकका सादा भोजन दिया जायगा।
- २५१ सं ज्यादा रकम देनेवाले सदगृहस्थका नाम आरसकी तख्ती पर लिखा जायेगा।
- ४१ प्रतिवर्ष देनेवालेकी ओरसे नियत तिथिको मिष्टान्न भोजन दिया जायगा।
- ३१ प्रतिवर्ष देनेवालेका आरसे नियत तिथिको दो टंकका सादा भोजन दिया जायेगा।
- २५ प्रतिवर्ष देनेवालेकी ओरसे नियत तिथिको एक टंकका सादा भोजन दिया जायेगा।
- ११ प्रतिवर्ष देनेवालेके नामसे नियत तिथिको सुबह दूध और खाखरा दिया जायेगा।



वाइन्डोफ का नार : कीर्तिकुमार हालचंद घोरा थरादवाला